मक्सिम गोर्की

मां



मक्सिम गोर्की

माँ

उपन्यास

दो भागों में

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

अनुवादक : मुनीश सक्सेना
डिज़ाइनर : व० इल्यूश्चेन्को

М. Горький
МАТЬ
на языке хинди

M. Gorky
MOTHER
in Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित

Г $\frac{4702010200-596}{031(05)-85}$ без объявления

ISBN 5-05-000621-X

भाग १

१

मज़दूरों की बस्ती की धुआंरी और गन्दी हवा में हर रोज़ फ़ैक्टरी के भोंपू का कांपता हुआ कर्कश स्वर गूंज उठता और उसके आवाहन पर छोटे-छोटे मटीले घरों से उदास लोग सहमे हुए तिलचटों की तरह भाग पड़ते। वे नींद पूरी करके अपने थके हुए अंगों को आराम भी नहीं दे पाते थे। ठिठुरते झुटपुटे में वे कच्ची सड़क पर फ़ैक्टरी की ऊंची-सी पत्थर की इमारत की तरफ़ चल पड़ते, जो बड़े निर्मम तथा निश्चिन्त भाव से उनकी प्रतीक्षा करती रहती थी और जिसकी तेल से चिकनी दर्जनों चौकोर आंखें सड़क पर प्रकाश करती थीं। उनके पैरों के नीचे कीचड़ की छप-छप होती थी। वे अलसाई हुई आवाज़ में चिल्लाते और हवा में उनकी गंदी गालियां गूंज उठतीं और दूसरी आवाज़ें—मशीनों की गड़गड़ाहट और भाप की फक-फक हवा में तैरती हुई आकर इन आवाज़ों में मिल जातीं। ऊंची-ऊंची काली चिमनियां, जो बहुत कठोर और निराशापूर्ण मालूम होती थीं बस्ती के ऊपर मोटे-मोटे मुगदरों की तरह अपना मस्तक ऊंचा किये खड़ी रहती थीं।

शाम को जब डूबते हुए सूरज का थका-थका प्रतिबिम्ब घरों की खिड़कियों में दिखायी देता तो फ़ैक्टरी इस लोगों को अपने पाषाण उदर से उगल देती, मानो वे साफ़ की गयी धातु का बचा हुआ कचरा हों और वे फिर सड़क पर चल पड़ते... गंदे, चेहरों पर कालिख, भूखे, दांत चमकते हुए और शरीर से मशीन के तेल की दुर्गंध आती हुई। इस समय उनके स्वर में उत्साह होता था, उल्लास होता था क्योंकि काम का एक दिन और ख़त्म हो चुका था और घर पर रात का खाना और विश्राम उनकी बाट जोह रहा था।

दिन को तो फ़ैक्टरी निगल गयी थी; उसकी मशीनों ने जी भरकर मज़दूरों की शक्ति को चूस लिया था। दिन का अन्त हो गया था; उसका एक चिन्ह भी बाक़ी नहीं रहा था और मनुष्य अपनी क़ब्र के एक क़दम और निकट पहुंच गया था। परन्तु इस समय वह विश्राम

की, और धुएं से घुटे हुए शराबख़ाने की सुखद कल्पना कर रहा था और उसे संतोष था।

इतवार को छुट्टी के दिन लोग दस बजे तक सोते थे और फिर शरीफ़ विवाहित लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर गिरजाघर जाते थे और नौजवानों को धर्म के प्रति उनकी उदासीनता के लिए डांटते-फटकारते थे। गिरजे से लौटकर वे घर आते, क़ीमे के समोसे खाते और फिर शाम तक सोते।

बरसों की संचित थकान के कारण उनकी भूख मर जाती थी इसलिए शराब पीकर वे अपनी भूख चमकाते, तेज़ वोदका के घूंटों से अपने पेट की आग को भड़काते।

शाम को वे सड़कों पर घूमते-फिरते। जिनके पास रबड़ के जूते होते, वे ज़मीन सूखी होने पर भी उन्हें पहनते और जिनके पास छतरियां होतीं, वे आसमान साफ़ होने पर भी उन्हें लेकर चलते।

दोस्तों से मिलते तो फ़ैक्टरी की, मशीनों की और अपने फ़ोरमैन की बातें करते; वे ऐसी चीज़ के बारे में न तो कभी सोचते थे और न बात ही करते थे जिसका उनके काम से संबंध न हो। उनके जीवन के नीरस ढर्रे में कभी-कभी इक्का-दुक्का भटकते हुए विचारों की मद्धिम चिंगारियां चमक उठतीं। जब ये लोग घर वापस लौटते तो अपनी घरवालियों से झगड़ते और बहुधा उन्हें पीटते। नौजवान लोग शराबख़ानों में या अपने दोस्तों के घर जाते, जहां वे अकार्डियन बजाते, गंदे गीत गाते, नाचते, गालियां बकते और शराब पीकर मदहोश हो जाते। कठोर परिश्रम से चूर होने के कारण नशा भी उनको जल्दी चढ़ता और एक अज्ञात झुंझलाहट उनके सीनों में मचलती और बाहर निकलने के लिए बेचैन रहती। इसी लिए मौक़ा पाते ही वे दरिन्दों की तरह एक-दूसरे पर टूट पड़ते और अपने दिल की भड़ास निकालते। नतीजा यह होता कि खूब मारपीट और खून-खराबा होता। कभी-कभी किसी को बहुत सख़्त चोट लग जाती और कभी तो इन लड़ाइयों में किसी की जान भी चली जाती।

उनके आपस के संबंधों में शत्रुता की एक छिपी हुई भावना छायी रहती। यह भावना उतनी ही पुरानी थी जितनी कि उनके अंग-अंग की बेहद थकान। आत्मा की ऐसी बीमारी वे अपने बाप-दादा से उत्तराधिकार में लेकर पैदा होते थे और यह परछाईं की तरह क़ब्र तक उनके साथ लगी रहती थी। इसके कारण वे ऐसी बेतुकी क्रूर हरकतें करते थे कि घृणा होती थी।

छुट्टी के दिन नौजवान लोग बहुत रात गये घर लौटते; उनके कपड़े फटे होते, मिट्टी और कीचड़ में सने हुए, आंखें चोट से सूजी हुई और नाक से ख़ून बहता हुआ। कभी वे बड़ी कुत्सा के साथ इस बात की डींग मारते कि उन्होंने अपने किसी दोस्त को कितनी बुरी तरह पीटा था और कभी उनका मुंह लटका होता और वे अपने अपमान पर ग़ुस्सा होते या आंसू बहाते। वे शराब के नशे में चूर होते, उनकी दशा दयनीय, दुःखद और घृणास्पद होती। बहुधा माता-पिता अपने बेटों को किसी बाड़ के पास या शराबख़ाने में नशे में चूर पड़े पाते। बड़े-बूढ़े उन्हें बुरी तरह कोसते, उनके नरम, वोदका के कारण शिथिल हुए शरीरों पर घूंसे लगाते, फिर उन्हें घर लाकर किंचित स्नेह के साथ बिस्तर पर सुला देते ताकि जब मुंह-अंधेरे ही काली नदी की तरह भोंपू का कर्कश स्वर हवा में फिर गूंजे तो वे उन्हें काम पर जाने के लिए जगा दें।

वे अपने बच्चों को कोसते और बड़ी निर्ममता से पीटते थे, पर नौजवानों की मारपीट और उनकी दारू पीने की लत को स्वाभाविक माना जाता था। इन लोगों के पिता जब ख़ुद जवान थे तब वे भी इसी तरह लड़ते-झगड़ते और शराब पीते थे और उनके माता-पिता भी इसी तरह उनकी पिटाई करते थे। जीवन हमेशा से इसी तरह चलता आया था। जीवन का प्रवाह गंदे पानी की धारा के समान बरसों से इसी मंद गति के साथ नियमित रूप से जारी था, दैनिक जीवन पुरानी आदतों, पुराने संस्कारों, पुराने विचारों के सूत्र में बंधा हुआ था। और इस पुराने ढर्रे को कोई बदलना भी तो नहीं चाहता था।

कभी-कभी फ़ैक्टरी की बस्ती में कुछ नये लोग भी आकर बस जाते थे। शुरू-शुरू में तो उनकी ओर ध्यान जाता, क्योंकि वे नये होते, फिर धीरे-धीरे केवल इस कारण उनमें हल्की और ऊपरी सी दिलचस्पी बनी रहती कि वे उन जगहों के बारे में बताते, जहां पहले काम कर चुके थे। परन्तु शीघ्र ही उनका नयापन ख़त्म हो जाता, लोग उनके आदी हो जाते और उनकी ओर विशेष ध्यान देना छोड़ देते। ये नये आये हुए लोग जो कुछ बताते उससे इतना स्पष्ट हो जाता कि मेहनतकशों का जीवन हर जगह एक जैसा ही है और यदि यह सच है तो फिर बात ही क्या की जाये?

पर कुछ नये आनेवाले ऐसी बातें बताते जो बस्तीवालों के लिए अनोखी होतीं। उनसे बहस तो कोई न करता, पर वे उनकी अजीब-अजीब बातें शंका के साथ सुनते। वे जो कुछ कहते, उससे कुछ लोगों

को झुंझलाहट होती, कुछ को एक अस्पष्ट-सा भय अनुभव होता और कुछ के हृदय में आशा की एक हल्की-सी किरण जगमगा उठती और इसी कारण वे और ज़्यादा शराब पीने लगते ताकि जीवन की गुत्थी को और उलझा देनेवाली आशंकाओं को दूर भगा सकें।

किसी नवागन्तुक में कोई असाधारण बात नज़र आने पर बस्तीवाले इसी कारण उससे असंतुष्ट रहने लगते और जो कोई भी उनका जैसा न होता उससे वे सतर्क रहते। उन्हें तो मानो यह डर लगता कि वह उनके जीवन की नीरस नियमितता को भंग कर देगा जो कठिनाइयों के बावजूद कम से कम निर्विघ्न तो था। लोग इस बात के आदी हो गये थे कि जीवन का बोझ उन पर हमेशा एक जैसा रहे और चूंकि उन्हें छुटकारा पाने की कोई आशा नहीं थी, इसलिए वे यह मानते थे कि उनके जीवन में जो भी परिवर्तन आयेगा वह उनकी मुसीबतों को और बढ़ा देगा।

नये विचार व्यक्त करनेवालों से मज़दूर चुपचाप कन्नी काटते रहते। इसलिए ये नवागन्तुक वहां से कहीं और चले जाते। अगर कुछ यहीं रह जाते तो वे या तो धीरे-धीरे अपने साथियों जैसे ही हो ज़ाते, या फिर कटे-कटे रहते...

कोई पचास वर्ष तक इसी प्रकार का जीवन बिताने के बाद आदमी मर जाता।

२

मिख़ाइल व्लासोव भी इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करता था, वह अक्खड़ स्वभाव का मिस्तरी था। उसके चेहरे पर हर दम उदासी छायी रहती थी और उसकी घनी भवों के नीचे से उसकी छोटी-छोटी आंखें संदेह और तिरस्कार के भाव से चमकती रहती थीं। वह फ़ैक्टरी का सबसे अच्छा मिस्तरी और बस्ती का सबसे तगड़ा आदमी था। चूंकि अपने मालिकों से उसकी हमेशा ठनी रहती थी, इसलिए कमाता बहुत कम था। हर छुट्टी के दिन वह किसी न किसी को पीट देता। इसी लिए सभी लोग उसे नापसंद करते थे और उससे डरते थे। उसकी पिटाई करने की भी कोशिश की गयी, मगर बेकार। व्लासोव जैसे ही लोगों को अपने पर झपटने के लिए आते देखता, वह कोई पत्थर या तख़्ता, या लोहे की छड़ उठा लेता, टांगें फैलाकर खड़ा हो जाता और चुपचाप अपने शत्रुओं की प्रतीक्षा करता। बालों से ढकी हुई भुजाएं और आंखों

से लेकर गरदन तक फैली घनी काली दाढ़ीवाला चेहरा दिलों में दहशत पैदा करते थे। लोगों को सबसे ज़्यादा डर तो उसकी आंखों से लगता था... छोटी-छोटी और पैनी, बर्मों की तरह लोगों को चीरती हुई। उससे आंख मिलानेवाले को यही लगता कि वह किसी ऐसी दानवी शक्ति के सामने खड़ा है जो उस पर बिना किसी भय या दया के वार करने को तैयार है।

"ख़बरदार, जो आगे बढ़े, कुत्ते के पिल्लो," वह गरजकर कहता और उसके बड़े-बड़े पीले दांत उसकी दाढ़ी में चमक उठते। लोग डरकर पीछे हट जाते और जाते-जाते कायरों की तरह उस पर गालियों की बौछार करते जाते।

"कुत्ते के पिल्लो!" वह पीछे से बस इतना ही कहता और तिरस्कार से उसकी आंखों में खंजर की सी तेज़ी आ जाती। फिर वह अपना सीना तानकर उनका पीछा करता और ऊंची आवाज़ से ललकारता:

"आ जाओ, कौन मरना चाहता है?"

कोई भी मरना नहीं चाहता था।

वह बहुत कम बोलता था और "कुत्ते के पिल्ले" उसका तकिया-कलाम था। वह पुलिसवालों, अफ़सरों और फ़ैक्टरी में अपने मालिकों को भी यही संज्ञा देता। और बीवी को भी हमेशा कुतिया कहता।

"अरी कुतिया, तुझे दिखायी नहीं देता कि मेरा पतलून फट गया है?"

जब उसका बेटा पावेल चौदह बरस का था एक बार उसने उसके बाल खींचने की कोशिश की थी। मगर पावेल ने एक भारी-सा हथौड़ा उठाकर बस इतना कहा था:

"ख़बरदार जो हाथ लगाया!"

"क्या कहा?" पिता ने पूछा और लम्बे तथा छरहरे बदन वाले बेटे की तरफ़ इस तरह बढ़ा जैसे बादल की छाया भोजपत्र के वृक्ष की तरफ़ बढ़ती है।

"बहुत हो चुका," पावेल बोला। "अब मैं और बर्दाश्त नहीं करूंगा।" और इतना कहकर उसने हथौड़ा तान लिया।

पिता ने एक बार उसे घूरकर देखा और बालों से ढके अपने हाथ पीठ के पीछे छुपा लिये।

"अच्छी बात है," उसने ज़रा हंसकर कहा और फिर एक गहरी आह भरकर बोला: "अरे, कुतिया के पिल्ले..."

इसके कुछ ही समय बाद उसने अपनी घरवाली से कहा :

"अब मुझसे कभी पैसे न मांगना, पावेल तुम्हारा पेट पालेगा।"

"और तुम अपनी सारी कमाई शराब में उड़ाया करोगे?" उसने पूछने का साहस किया।

"तुझे इससे क्या मतलब है, कुतिया! कोई रखैल रख लूंगा!"

रखैल तो उसने नहीं रखी, पर लगभग दो वर्ष, अपने मरने के दिन तक, उसने बेटे की ओर न तो कभी ध्यान दिया और न कभी उससे बात ही की।

उसके पास एक कुत्ता था, उसकी ही तरह बड़े डील-डौल का और झबरीला। वह हर सुबह उसके साथ फ़ैक्टरी तक जाता और शाम को फाटक पर उसकी प्रतीक्षा करता। व्लासोव छुट्टी का दिन एक शराबख़ाने से दूसरे शराबख़ाने में पीते-पिलाते ही काट देता। वह किसी से भी न बोलता और लोगों के चेहरों को ऐसे घूरकर देखता मानो किसी को ढूंढ़ रहा हो। और कुत्ता अपनी झबरी दुम हिलाता हुआ दिन-भर अपने मालिक के पीछे-पीछे लगा रहता। जब व्लासोव नशे में चूर घर लौटता और खाने बैठता तो कुत्ते को भी अपने प्याले से ही खिलाता। वह उसे न तो कभी गाली देता, न कभी पीटता, पर न कभी पुचकारता ही। खाना खा चुकने पर अगर उसकी बीवी को मेज़ साफ़ करने में ज़रा भी देर हो जाती तो वह तश्तरियां फ़र्श पर पटक देता और अपने सामने वोदका की बोतल रखकर दीवार के साथ पीठ टिकाकर बैठ जाता और फटी आवाज़ में आंखें मूंदकर तथा मुंह फाड़कर कोई उदासी-भरा गीत गाने लगता। करुण बेसुरी आवाज़ें उसकी दाढ़ी में उलझकर रह जातीं और उसमें फंसे हुए रोटी के टुकड़े नीचे गिर पड़ते; गाते समय वह अपनी दाढ़ी और मूंछों पर हाथ फेरता रहता। उसके गीत के शब्द समझ में न आते और गीत की धुन भी जाड़ों में भेड़ियों के चिल्लाने की याद दिलाती। जब तक वोदका की बोतल चलती, वह गाता रहता और फिर वहीं बेंच पर लोट जाता या मेज़ पर सिर टिकाकर भोंपू बजने तक सोता रहता। कुत्ता भी उसी के बग़ल में लेटा रहता।

हर्निया के कारण उसकी मृत्यु हुई। वह पांच दिन तक बिस्तर पर पड़ा तड़पता रहा; उसका चेहरा काला पड़ गया था, उसकी आंखें बंद रहती थीं और वह अपने दांत पीसता रहता था। कभी-कभी वह अपनी बीवी से कहता :

"मुझे थोड़ा-सा संखिया दे दे... ज़हर दे दे!.."

डाक्टर ने पुलटिस बांधने को कहा, पर साथ ही यह भी जोड़ दिया कि मिखाइल का आपरेशन ज़रूरी है और उसे उसी दिन अस्पताल ले जाया जाये।

मिखाइल ने उखड़ी-उखड़ी सांसें लेते हुए कहा, "भाड़ में जाओ तुम! मैं तुम्हारी मदद के बिना ही मर जाऊंगा, कुत्ते के पिल्ले!"

जब डाक्टर चला गया और उसकी बीवी ने आंखों में आंसू भरकर आपरेशन करवा लेने की विनती की तो उसने उसकी तरफ़ घूंसा तानकर कहा:

"अच्छा हो गया तो तुम्हारी ही ज़्यादा शामत आयेगी!"

सुबह जब फ़ैक्टरी का भोंपू बज रहा था, उसकी मृत्यु हुई। जब वह ताबूत में लेटा हुआ था, तो उसका मुंह खुला था और भवें ग़ुस्से से तनी हुई थीं। उसकी बीवी, बेटे, कुत्ते, दनीला वेसोवश्चिकोव (पुराना शराबी और चोर जिसे फ़ैक्टरी से निकाल दिया गया था) और बस्ती के कुछ भिखमंगों ने उसे दफ़न किया। उसकी बीवी थोड़ा रोयी, सो भी चुपके-चुपके। पावेल बिल्कुल नहीं रोया। जनाज़ा ले जाते वक़्त रास्ते में मिलनेवाले बस्ती के लोगों ने रुककर सीने पर सलीब का निशान बनाया और बोले:

"पेलागेया तो बहुत ही खुश होगी कि यह चल बसा।"

दूसरों ने सही करते हुए कहा, "चल नहीं बसा, कुत्ते का दम निकल गया!"

ताबूत को दफ़न करके लोग तो चले गये, पर कुत्ता वहीं ताज़ी खुदी हुई मिट्टी पर चुपचाप बैठा क़ब्र को सूंघता रहा। कुछ दिन बाद किसी ने कुत्ते को मार डाला...

३

अपने पिता के मरने के दो हफ़्ते बाद एक इतवार को पावेल व्लासोव नशे में चूर घर वापस आया। वह लड़खड़ाता हुआ घर में घुसा और घिसटता हुआ मेज़ के सिरेवाली कुरसी पर जा बैठा, बाप की तरह ज़ोर से मेज़ पर मुक्का मारा और चिल्लाकर मां से कहा:

"खाना!"

मां बेटे के पास आकर बैठ गयी, उसके गले में बाहें डाल दीं और उसका सिर अपने सीने से लगा लिया। पर उसने मां को दूर

हटाते हुए चिल्लाकर कहा :

"लाओ, मां! जल्दी करो!"

"नादान बच्चे," उसकी मां ने उदास होकर बड़े स्नेह से उसे अपने साथ सटाते हुए कहा।

"और मैं तम्बाकू के कश भी लगाऊंगा! मुझे पिता का पाइप ला दो!" मुश्किल से अपनी जीभ हिलाते हुए पावेल ने बुदबुदाकर कहा।

उस दिन उसने पहली बार शराब पी थी। वोदका से उसका शरीर तो शिथिल हो गया था, पर उसकी चेतना नष्ट नहीं हुई थी और उसके मस्तिष्क में यह प्रश्न रह-रहकर उठता था :

"मैं नशे में हूं? नशे में हूं क्या?"

मां के स्नेह से उसे झेंप महसूस हो रही थी और उसकी आंखों की व्यथा उसका मर्म छू रही थी। उसे रोना आ रहा था और अपने आंसुओं पर क़ाबू पाने के लिए वह सचमुच जितना नशे में था, उससे कहीं ज़्यादा जताने का प्रयत्न करने लगा।

मां उसके पसीने से तर और उलझे हुए बालों को सहलाते हुए धीरे से बोली :

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पावेल को मतली होने लगी। बड़ी क़ै होने के बाद मां ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके माथे पर तौलिया भिगोकर रख दिया। इससे पावेल का कुछ नशा उतरा, लेकिन उसके नीचे और आस-पास सभी कुछ मानो घूम रहा था, उसकी पलकें इतनी भारी हो गयी थीं कि उन्हें खोलना भी कठिन हो रहा था। उसके मुंह का स्वाद बहुत बुरा-बुरा हो रहा था; उसने दबी नज़र से मां के बड़े-से चेहरे को देखकर सोचा :

"मेरा ख़्याल है कि मैं अभी बहुत छोटा हूं। और लोग भी पीते हैं, उन्हें कुछ नहीं होता, मगर मेरा जी बुरा हो गया है..."

कहीं बहुत दूर से उसे अपनी मां का कोमल स्वर आता सुनायी दिया :

"अगर तुमने पीना शुरू कर दिया तो मेरा पेट कैसे पालोगे?"

"सभी तो पीते हैं," उसने आंखें कसकर बंद करते हुए उत्तर दिया।

मां ने गहरी आह भरी। ठीक ही तो कहता था। वह जानती थी कि शराबख़ाना ही तो एक ऐसी जगह है, जहां लोगों को कुछ ख़ुशी नसीब होती थी। फिर भी उसने यही कहा :

"मगर तुम न पिया करो, तुम्हारे बाप ने तुम दोनों के लिए काफ़ी पी ली है। उसके हाथों ही काफ़ी मुसीबत झेल चुकी हूं। तुम भी अपनी मां पर तरस नहीं खाओगे?"

दुख में डूबे हुए ये प्यार-भरे उदास शब्द सुनकर पावेल को आभास हुआ कि पिता के जीवनकाल में उसने अपनी मां के अस्तित्व की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया था... हमेशा बेहद चुप-चुप अपनी पिटाई के डर से सहमी हुई। बाप की नज़र से बचने के लिए वह स्वयं भी जहां तक संभव होता घर से बाहर ही रहता था और इसलिए अपनी मां से भी दूर हो गया था। अब नशा कुछ कम होने पर वह ग़ौर से अपनी मां को देखने लगा।

लम्बा क़द, कुछ झुकी हुई कमर और कठोर परिश्रम तथा पति की मार के कारण बिल्कुल चूर शरीर। वह एक ओर को कुछ झुकती हुई ऐसे संभल-संभलकर चलती थी, मानो हमेशा डरती रहती हो कि कहीं किसी चीज़ से टकरा न जाये। बस्ती की अधिकांश औरतों की तरह भय और व्यथा से भरी हुई उसकी काली आंखें कुछ-कुछ लटकी त्वचा और झुर्रियोंवाले चौड़े से लम्बोतरे चेहरे को आभा प्रदान करती थीं। उसकी दाहिनी भौंह पर चोट का एक गहरा-सा निशान था, जिसके कारण वह भौंह कुछ ऊपर को खिंच गयी थी और ऐसा लगता था कि उसका दाहिना कान उसके बायें कान से कुछ ऊंचा है। इसी कारण उसके चेहरे का भाव ऐसा रहता था मानो वह हमेशा किसी चिन्ता के कारण सतर्क रहती हो। उसके घने काले बालों में सफ़ेद बालों की धारियां चमकती थीं। वह ममता, उदासी और भीरुता की साकार मूर्ति थी...

उसके गालों पर धीरे-धीरे आंसू ढलक रहे थे।

"रोओ नहीं," बेटे ने धीरे से अनुरोध किया। "मुझे प्यास लगी है।"

"मैं तुम्हारे लिए बर्फ़ का पानी लाती हूं।"

लेकिन मां के लौटने तक वह सो गया था। वह क्षण-भर अपने बेटे को निहारती रही। सुराही उसके हाथ में कांप रही थी और बर्फ़ के टुकड़े उसमें इधर-उधर टकरा रहे थे। सुराही मेज़ पर रखकर वह चुपचाप देव-प्रतिमाओं के सामने घुटने टेककर बैठ गयी। बाहर से शराबियों की आवाज़ें खिड़की के शीशों से आकर टकरा रही थीं। शरद ऋतु की रात्रि की नमी और अंधेरे में अकार्डियन किकिया रहा था, कोई फटी हुई आवाज़ में गा रहा था, कोई लगातार गंदी गालियां

बकता हुआ निकल गया और औरतों की उकताहट-भरी झुंझलायी हुई आवाज़ें आ रही थीं...

छोटे-से व्लासोव-परिवार में जीवन पहले की अपेक्षा अधिक शान्ति और चैन से, दूसरे घरों की अपेक्षा कुछ अलग ढंग से व्यतीत हो रहा था। उनका घर बस्ती के सिरे पर एक कम ऊंचे मगर बहुत ढालू पुश्ते पर स्थित था। पुश्ता दलदल तक चला गया था। घर के एक-तिहाई हिस्से में रसोई थी: इसी में आड़ लगाकर एक कमरा अलग कर दिया गया था, जिसमें मां सोती थी। बाक़ी दो-तिहाई हिस्सा दो खिड़कियों-वाला चौकोर कमरा था। इस कमरे के एक कोने में पावेल का पलंग था और दूसरे कोने में एक मेज़ और दो बेंचें। घर का बाक़ी सामान यह था: कुछ कुर्सियां, एक नीची अलमारी जिस पर छोटा-सा आईना लगा हुआ था, एक संदूक जिसमें कपड़े थे, दीवार पर एक घड़ी और कोने में ताक़ पर दो देव-प्रतिमाएं।

एक नौजवान आदमी से जो कुछ आशा की जा सकती थी वह सब कुछ पावेल ने किया: उसने अपने लिए अकार्डियन, कलफ़दार क़मीज़, भड़कीली टाई, रबड़ के जूते और एक छड़ी ख़रीद ली। इस प्रकार वह अपनी उम्र के दूसरे लड़कों की तरह हो गया। वह शामों को अपने दोस्तों की महफ़िलों में जाता, उसने क्वैड्रिल और पोल्का नाच सीख लिये थे और हर इतवार को वह शराब पिये हुए घर वापस आता। पर वोदका पीकर उसकी तबीयत हमेशा ख़राब हो जाती थी। सोमवार को सुबह जब वह उठता तो उसके सिर में दर्द रहता, दिल में जलन होती, चेहरा पीला और मुरझाया हुआ होता।

"कल रात ख़ूब मज़ा रहा?" मां ने एक बार उससे पूछा।

"बहुत बुरा हाल है," उसने मुंह लटकाकर झुंझलाहट के साथ कहा। "इससे अच्छा मैं मछलियां पकड़ने जाऊंगा। या फिर बंदूक़ ख़रीद लूंगा और शिकार खेलने जाया करूंगा।"

वह काम बड़ी मेहनत से करता था, कभी कामचोरी नहीं करता था और न कभी उस पर जुर्माना ही हुआ था। वह बहुत कम बोलता था और उसकी, मां की आंखों की तरह बड़ी-बड़ी तथा नीली आंखों में एक असंतोष भरा था। उसने न तो बंदूक़ ही ख़रीदी और न वह मछलि-यों के शिकार को ही गया, पर शीघ्र ही इतना अवश्य स्पष्ट हो गया कि वह उस रास्ते से अलग जा रहा था जिस पर दूसरे सभी लोग चलते थे। उसने महफ़िलों में जाना कम कर दिया था। इतवार को वह ग़ायब

ज़रूर हो जाता, पर हमेशा शराब पिये बिना घर लौटता। मां की पैनी दृष्टि को यह भांपते देर न लगी कि उसके बेटे का सांवला चेहरा और भी दुबला होता जा रहा है, उसकी आंखों में ज़्यादा गंभीरता आ गयी है और वह अपने होंट हमेशा कसकर बंद किये रहता है। वह ज़रूर मन ही मन किसी बात पर कुढ़ता होगा या शायद कोई बीमारी उसके शरीर को घुलाये दे रही है। पहले उसके दोस्त अक्सर उससे मिलने आते थे, पर अब उन्होंने आना छोड़ दिया था क्योंकि वह कभी घर पर होता ही नहीं था। मां को इस बात की ख़ुशी थी कि उसका बेटा कार-ख़ाने के दूसरे नौजवानों की तरह नहीं था, पर ज़िन्दगी के उस अंधेरे रास्ते से हटकर, जिस पर सब लोग चलते थे, अपना अलग रास्ता निकालने के लिए बेटे को कितना कठिन प्रयास करना पड़ रहा था, इस बात से उसे अपने हृदय में एक अस्पष्ट-सा भय भी अनुभव होता।

"तुम्हारा जी तो अच्छा है, पावेल?" वह कभी-कभी उससे पूछती।

"बिल्कुल," वह उत्तर देता।

"तुम कितने दुबले हो गये हो!" वह आह भरकर कहती।

वह घर किताबें लाने लगा। वह उन्हें चोरी-चोरी पढ़ता और पढ़ने के बाद हमेशा छिपा देता। कभी-कभी वह किताब का कोई टुकड़ा नक़ल करता और उस काग़ज़ को छिपा देता...

मां-बेटा बहुत कम एक साथ बैठते और बातचीत तो शायद कभी नहीं होती थी। सुबह वह चुपचाप चाय पीकर काम पर चला जाता और दोपहर को खाने के लिए लौटता। खाने की मेज़ पर मामूली-सी दो-चार बातें होतीं और खाना खाकर वह फिर शाम तक के लिए ग़ायब हो जाता। शाम को हाथ-मुंह धोकर वह खाना खाता और किताब लेकर बैठ जाता। इतवार के दिन वह सबेरे ही घर से निकल जाता और रात को देर से लौटता। मां जानती थी कि वह शहर जाता है और कभी-कभी नाटक भी देखता है, पर शहर से कभी कोई उससे मिलने नहीं आता था। मां को लगता था कि वह दिन-ब-दिन कम बोलने लगा है, पर साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि वह ऐसे नये शब्दों का प्रयोग करने लगा था जिन्हें वह समझ नहीं पाती थी और पहले के भद्दे और लट्ठमार शब्द उसकी ज़बान से उतर गये थे। पावेल के आचरण में कई छोटी-छोटी ऐसी नयी बातें थीं जिनकी ओर उसका ध्यान आक-र्षित हुआ: उसने भड़कीले कपड़े पहनना छोड़ दिया था और अपने शरीर तथा कपड़ों की सफ़ाई की ओर ज़्यादा ध्यान देने लगा था।

उसकी चाल-ढाल में पहले की अपेक्षा एक उन्मुक्तता आ गयी थी, उसका व्यवहार ज़्यादा सीधा-सादा हो गया था और उसका अक्खड़पन भी कम हो गया था। इन परिवर्तनों की वजह से, जिनका कोई कारण उसकी समझ में नहीं आता था, मां चिन्तित रहती। उसके प्रति भी पावेल का बर्ताव बदल गया था: कभी-कभी वह फ़र्श बुहारता, इतवार को हमेशा अपना बिस्तर ठीक करता और काम में हर तरह से अपनी मां का हाथ बंटाने का प्रयत्न करता। बस्ती में कोई और यह सब नहीं करता था...

एक दिन उसने एक तस्वीर लाकर दीवार पर टांग दी। तस्वीर में तीन आदमी सड़क पर तन्मय होकर बातें करते चले जा रहे थे।

"ईसा मसीह पुनर्जीवित होकर एम्माउस जा रहे हैं," पावेल ने मां को समझाते हुए कहा।

तस्वीर देखकर मां प्रसन्न हुई, पर उसने सोचा, "अगर ईसा मसीह से इसे इतना ही लगाव है, तो यह कभी गिरजे क्यों नहीं जाता?"

पावेल के बढ़ई दोस्त द्वारा बनाये गये ख़ूबसूरत-से शेल्फ़ में किताबों की संख्या बढ़ती जा रही थी। कमरा प्यारा दिखने लगा था।

पावेल आम तौर पर अपनी मां को "मां" कहकर ही पुकारता था, पर कभी-कभी अचानक ही वह ज़्यादा प्यार के साथ उसे सम्बोधित करता:

"अम्मा, मेरे बारे में चिन्ता न करना, आज रात मैं ज़रा देर से लौटूंगा..."

मां को यह बात अच्छी लगी। उसके इन शब्दों में उसे दृढ़ता और गंभीरता का आभास हुआ।

पर उसकी आशंकाएं बढ़ती गयीं। यद्यपि इन आशंकाओं का अब भी कोई स्पष्ट कारण नहीं था, फिर भी किसी असाधारण चीज़ के पूर्वाभास से उसके हृदय पर बोझ बढ़ता गया। कभी-कभी उसे अपने बेटे पर भी खीझ आती और वह सोचती:

"वह दूसरों जैसा क्यों नहीं है? यह बिल्कुल साधु-सन्त हो गया है। इतना गंभीर रहता है। इस उमर में यह ठीक नहीं है..."

फिर कभी वह सोचती:

"शायद किसी लड़की के चक्कर में पड़ गया है?"

मगर लड़की के चक्कर में तो पैसों की ज़रूरत होती है और वह लगभग अपनी सारी तनख़्वाह लाकर उसे दे देता था।

समय बीतता गया और इसी प्रकार दो वर्ष निकल गये – अस्पष्ट विचारों और बढ़ती हुई आशंकाओं से पूर्ण, विचित्र शान्त जीवन के दो वर्ष।

४

एक रात खाना खाने के बाद पावेल ने खिड़की पर परदा डाला, दीवार पर टीन का लैम्प टांगा और कोने में बैठकर पढ़ने लगा। मां बरतन धोकर रसोई से निकली और धीरे-धीरे उसके पास गयी। पावेल ने सिर उठाकर प्रश्नसूचक दृष्टि से मां की ओर देखा।

"कुछ नहीं, पावेल, मैं तो ऐसे ही आ गयी थी," वह झटपट बोली और जल्दी से फिर रसोई में चली गयी। घबराहट के कारण उसकी भवें फड़क रही थीं। पर थोड़ी देर तक अपने विचारों से संघर्ष करने के बाद वह हाथ धोकर फिर पावेल के पास गयी।

"मैं तुमसे पूछना चाहती थी कि तुम हर वक़्त यह क्या पढ़ते रहते हो?" उसने धीरे से पूछा।

पावेल ने किताब बन्द कर दी।

"अम्मा, बैठ जाओ।"

मां जल्दी से सीधी तनकर बैठ गयी; वह कोई बहुत ही महत्वपूर्ण बात सुनने को तैयार थी।

पावेल मां की तरफ़ देखे बिना बहुत धीमे और न जाने क्यों कठोर स्वर में बोला:

"मैं ग़ैरक़ानूनी किताबें पढ़ता हूं। ये ग़ैरक़ानूनी इसलिए हैं कि इनमें मज़दूरों के बारे में सच्ची बातें लिखी हैं। ये चोरी से छापी जाती हैं और अगर मेरे पास पकड़ी गयीं तो मुझे जेल में बन्द कर दिया जायेगा... जेल में इसलिए कि मैं सच्चाई मालूम करना चाहता हूं, समझीं?"

सहसा मां को घुटन महसूस होने लगी। बहुत ग़ौर से उसने अपने बेटे को देखा और उसे वह पराया-सा लगा। उसकी आवाज़ भी पहले जैसी नहीं थी – अब वह ज़्यादा गहरी, ज़्यादा गम्भीर थी, उसमें ज़्यादा गूंज थी। वह अपनी बारीक मूंछों के नरम बालों को ऐंठने लगा और आंखें झुकाकर अजीब ढंग से कोने की तरफ़ ताकने लगा। मां उसके बारे में चिंतित हो उठी, और उसे उस पर तरस भी आ रहा था।

"पावेल, किसलिए तुम ऐसा करते हो?" मां ने पूछा।

उसने सिर उठाकर मां की तरफ़ देखा।

"क्योंकि मैं सच्चाई जानना चाहता हूं," उसने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिया।

उसका स्वर कोमल पर दृढ़ था और उसकी आंखों में एक चमक थी। मां ने समझ लिया कि उसके बेटे ने जन्म भर के लिए अपने आपको किसी गुप्त और भयानक काम के लिए अर्पित कर दिया है। वह परि-स्थितियों को अनिवार्य मानकर स्वीकार कर लेने और किसी आपत्ति के बिना सब कुछ सह लेने की आदी हो चुकी थी। इसलिए वह धीरे-धीरे सिसकने लगी, पीड़ा और व्यथा के बोझ से उसका हृदय इतनी बुरी तरह दबा हुआ था कि वह कुछ भी कह न पायी।

"रोओ नहीं, मां," पावेल ने कोमल और प्यार-भरे स्वर में कहा और मां को ऐसा लगा मानो वह उससे विदा ले रहा हो। "ज़रा सोचो तो, कैसा जीवन है हम लोगों का! तुम चालीस बरस की हुईं, कुछ भी सुख देखा है तुमने अपने जीवन में? पिता हमेशा तुम्हें मारते थे... अब मैं इस बात को समझने लगा हूं कि वह अपने तमाम दु:ख-दर्दों, अपने जीवन के सभी कटु अनुभवों का बदला तुमसे लेते थे। कोई चीज़ लगातार उनके सीने पर बोझ की तरह रखी रहती थी पर वह नहीं जानते थे कि वह चीज़ क्या थी। तीस बरस तक उन्होंने यहां खून-पसीना एक किया... जब वह यहां काम करने लगे थे, तब इस फ़ैक्टरी की सिर्फ़ दो इमारतें थीं और अब सात हैं।"

मां बड़ी उत्सुकता के साथ किन्तु धड़कते दिल से उसकी बातें सुन रही थी। उसके बेटे की आंखों में बड़ी प्यारी चमक थी। मेज़ के कगर से अपना सीना सटाकर वह आगे झुका और मां के आंसुओं से भीगे हुए चेहरे के पास होकर उसने सच्चाई के बारे में पहला भाषण दिया जिसका उसे अभी ज्ञान हुआ था। अपनी युवावस्था के पूरे जोश के साथ, उस विद्यार्थी के पूरे उत्साह के साथ जो अपने ज्ञान पर गर्व करता है, उसमें पूरी आस्था रखता है, वह उन चीज़ों की चर्चा कर रहा था जो उसके दिमाग़ में साफ़ थीं। वह अपनी मां को समझाने के उद्देश्य से इतना नहीं, जितना अपने आपको परखने के लिए बोल रहा था। बीच में शब्दों के अभाव के कारण वह रुका और तब उस व्यथित चेहरे की ओर उसका ध्यान गया, जिस पर आंसुओं से धुंधलायी हुई दयालु आंखें धीमे-धीमे चमक रही थीं। वे भय और विस्मय के साथ उसे घूर रही थीं। उसे

अपनी मां पर तरस आया। वह फिर से बोलने लगा, मगर अब मां और उसके जीवन के बारे में।

"तुम्हें कौन-सा सुख मिला है?" उसने पूछा। "कौन-सी मधुर स्मृतियां हैं तुम्हारे जीवन में?"

मां ने सुना और बड़ी वेदना से अपना सिर हिला दिया। उसे एक विचित्र-सी नयी अनुभूति हो रही थी जिसमें हर्ष भी था और व्यथा भी, जो उसके टीसते हृदय को सहला रही थी। अपने जीवन के बारे में ऐसी बातें उसने पहली बार सुनी थीं और इन शब्दों ने एक बार फिर वही अस्पष्ट विचार जागृत कर दिये थे जिन्हें वह बहुत समय पहले भूल चुकी थी, इन बातों ने जीवन के प्रति असंतोष की मरती हुई भावना में दुबारा जान डाल दी थी – उसकी युवावस्था के भूले हुए विचारों तथा भावनाओं को फिर सजीव कर दिया था। अपनी युवावस्था में उसने अपनी सहेलियों के साथ जीवन के बारे में बातें की थीं, उसने हर चीज़ के बारे में विस्तार के साथ बातें की थीं, पर उसकी सब सहेलियां – और वह खुद भी – केवल दुखों का रोना रोकर ही रह जाती थीं। कभी किसी ने यह स्पष्ट नहीं किया था कि उनके जीवन की कठिनाइयों का कारण क्या है। परन्तु अब उसका बेटा उसके सामने बैठा था और उसकी आंखें, उसका चेहरा और उसके शब्द जो भी व्यक्त कर रहे थे वह सभी कुछ मां के हृदय को छू रहा था; उसका हृदय अपने इस बेटे के लिए गर्व से भर उठा, जो अपनी मां के जीवन को इतनी अच्छी तरह समझता था, जो उसके दु:ख-दर्द का ज़िक्र कर रहा था, उस पर तरस खा रहा था।

मांओं पर कौन तरस खाता है।

वह इस बात को जानती थी। उसका बेटा औरतों के जीवन के बारे में जो कुछ कह रहा था वह एक चिर-परिचित कटु सत्य था और उसकी बातों ने उन मिश्रित भावनाओं को जन्म दिया जिनकी असाधारण कोमलता ने मां के हृदय को द्रवित कर दिया।

"तो तुम करना क्या चाहते हो?" मां ने उसकी बात काटकर पूछा।

"पहले खुद पढ़ूंगा और फिर दूसरों को पढ़ाऊंगा। हम मज़दूरों को पढ़ना चाहिये। हमें इस बात का पता लगाना चाहिये और इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि हमारी ज़िंदगी में इतनी मुश्किलें क्यों हैं।"

मां को यह देखकर खुशी हुई कि उसके बेटे की हमेशा गंभीर और

कठोर रहनेवाली नीली आंखों में इस समय कोमलता और मृदुलता चमक रही थी। यद्यपि मां के गालों की झुर्रियों में अभी तक आंसुओं की बूंदें कांप रही थीं, पर उसके होंटों पर एक शान्त मुस्कराहट दौड़ गयी। उसके हृदय में एक द्वन्द्व मचा हुआ था। एक तरफ़ तो उसे अपने बेटे पर गर्व था कि वह जीवन की कटुताओं को इतनी अच्छी तरह समझता है और दूसरी तरफ़ उसे इस बात की चेतना भी थी कि अभी वह बिल्कुल जवान है, वह जैसी बातें कर रहा है वैसी कोई दूसरा नहीं करता और उसने केवल अपने बलबूते पर ही एक ऐसे जीवन के विरुद्ध संघर्ष करने का बीड़ा उठाया है जिसे बाक़ी सभी लोग, जिनमें वह ख़ुद भी शामिल थी, अनिवार्य मानकर स्वीकार करते हैं। उसकी इच्छा हुई कि अपने बेटे से कहे, "मगर , मेरे लाल, तू अकेला क्या कर लेगा ?"

पर वह ऐसा करने से झिझक गयी, क्योंकि मुग्ध होकर वह बेटे को जी भर देख लेना चाहती थी। उस बेटे को, जो सहसा ऐसे समझदार पर कुछ-कुछ अजनबी व्यक्ति के रूप में उसके सामने प्रकट हुआ था।

पावेल ने अपनी मां के होंटों पर मुस्कराहट, उसके चेहरे पर चिन्तन का भाव, उसकी आंखों में प्यार देखा और उसे ऐसा लगा कि वह मां को अपने सत्य का भान कराने में सफल हो गया है। अपनी वाणी की शक्ति में युवोचित गर्व ने उसका आत्म-विश्वास बढ़ा दिया। वह बड़े जोश से बोल रहा था, कभी मुस्कराता, कभी उसकी त्योरियां चढ़ जातीं और कभी उसका स्वर घृणा से भर उठता; उसके शब्दों में गूंजती कठोरता को सुनकर मां को डर लगने लगता और वह सिर झुलाते हुए धीरे से पूछती.

"पावेल, क्या ऐसा ही है ?"

और वह दृढ़तापूर्वक उत्तर देता, "हां।" और वह उन लोगों के बारे में बताता जो जनता की भलाई के लिए उसमें सच्चाई के बीज बोते थे तथा इसी कारण जीवन के शत्रु हिंसक पशुओं की तरह उनके पीछे पड़ जाते थे, उन्हें जेलों में ठूंस देते थे, निर्वासित कर देते थे ...

"मैं ऐसे लोगों को जानता हूं !" उसने बड़े जोश के साथ कहा। "वे धरती के सच्चे लाल हैं !"

ऐसे लोगों के विचार से ही वह कांप गयी और एक बार फिर उसकी इच्छा अपने बेटे से पूछने की हुई कि क्या ऐसा ही है, पर उसे साहस

नहीं हुआ। दम साधकर वह उससे उन लोगों के बारे में क़िस्से सुनती रही जिनकी बातें तो वह नहीं समझती थी पर जिन्होंने उसके बेटे को इतनी ख़तरनाक बातें कहना और सोचना सिखा दिया था। आख़िरकार उसने अपने बेटे से कहा :

"सबेरा होने को आया। अब तुम थोड़ी देर सो लो।"

"हां, अभी," उसने कहा और फिर उसकी तरफ़ झुककर बोला, "मेरी बातें समझ गयीं न?"

"हां," उसने आह भरकर उत्तर दिया। एक बार फिर आंसुओं की धारा बह चली और सहसा वह ज़ोर से कह उठी, "तबाह हो जाओगे तुम!"

पावेल उठा, उसने कमरे का चक्कर लगाया और फिर बोला :

"अच्छा, तो अब तुम जान गयीं कि मैं क्या करता हूं और कहां जाता हूं," पावेल ने कहा, "मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है। और अम्मा, अगर तुम मुझे प्यार करती हो, तो तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी राह में बाधा न बनना।"

"ओह, मेरे लाल!" मां ने रोते हुए कहा। "शायद ... शायद अगर तुम मुझसे न बताते तो अच्छा होता।"

पावेल ने मां का हाथ अपने हाथों में लेकर दबाया।

उसने जितने प्यार के साथ "अम्मा" कहा था और जिस नये तथा विचित्र ढंग से उसने आज पहली बार उसका हाथ दबाया था, उससे मां का हृदय भर आया।

"मैं बाधा नहीं बनूंगी," उसने भाव-विह्वल होकर कहा। "मगर अपने को बचाये रखना, बचाये रखना!"

वह नहीं जानती थी कि उसे किस चीज़ से अपने को बचाना चाहिये, इसलिए उसने दुःखी होते हुए इतना जोड़ दिया :

"तुम दिन-ब-दिन दुबले होते जा रहे हो ..."

वह अपने बेटे के लम्बे-चौड़े बलिष्ठ शरीर पर एक प्यार-भरी नज़र दौड़ाते हुए जल्दी-जल्दी और धीमी आवाज़ में बोली :

"तुम जो ठीक समझो करो – मैं तुम्हारी राह में बाधा नहीं बनूंगी। बस, इतनी ही प्रार्थना करती हूं – इस बात का ध्यान रखना कि किससे बात कर रहे हो। तुम्हें लोगों के मामले में सतर्क रहना चाहिये। लोग एक-दूसरे से नफ़रत करते हैं। वे लालची हैं, एक-दूसरे से जलते हैं, जान-बूझकर दूसरों को नुक़सान पहुंचाना चाहते हैं। जैसे ही तुम उन्हें

उनकी वास्तविकता बताओगे, भला-बुरा कहोगे, वे जल-भुन जायेंगे और तुम्हें मिटा देंगे।"

पावेल दरवाज़े पर खड़ा हुआ उसके वे व्यथा-भरे शब्द सुनता रहा और जब वह अपनी बात ख़त्म कर चुकी तो मुस्कराकर बोला:

"तुम ठीक कहती हो – लोग बुरे हैं। लेकिन जैसे ही मुझे यह मालूम हुआ कि इस दुनिया में सच्चाई नाम की भी एक चीज़ है तो लोग भले मालूम होने लगे।"

वह फिर मुस्कराया और कहता गया:

"कारण मैं नहीं जानता, पर बचपन में मैं सबसे डरता था। ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया, सबसे नफ़रत करने लगा, कुछ से उनकी नीचता के लिए और कुछ से बस यों ही! लेकिन अब हर चीज़ बदली हुई मालूम होती है। शायद मुझे लोगों पर तरस आता है? समझ नहीं पाता, पर जब मुझे इस बात का आभास हुआ कि अपनी पशुता के लिये हमेशा ख़ुद लोग ही दोषी नहीं होते थे तो मेरा हृदय कोमल हो उठा..."

वह बोलते-बोलते रुक गया मानो अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुन रहा हो और फिर उसने बड़े शान्त स्वर में विचारशीलता से कहा:

"ऐसा होता है सच्चाई का असर।"

"हे भगवान! ख़तरनाक परिवर्तन हो गया है तुममें," मां ने कनखियों से उसे देखते हुए आह भरकर कहा।

जब वह सो गया, तो मां अपने बिस्तर से उठकर दबे पांव उसके पास गयी। पावेल सीधा लेटा हुआ था और सफ़ेद तकिये की पृष्ठभूमि पर उसके सांवले चेहरे की गंभीर तथा कठोर रूप-रेखा स्पष्ट उभरी हुई थी। नंगे पैर और रात की पोशाक पहने हुए मां सीने पर दोनों हाथ रखे उसके पास खड़ी थी – मूक होंट हिल रहे थे और उसके गालों पर आंसू की बड़ी-बड़ी बूंदें ढलक रही थीं।

फिर पहले की तरह ही उनका जीवन बीतने लगा, दोनों चुप-चुप रहते, एक-दूसरे से दूर, फिर भी बहुत निकट।

५

एक त्योहार के दिन पावेल घर से बाहर जाते समय मां से बोला:

"सनीचर को कुछ लोग शहर से मेरे पास आयेंगे।"

"शहर से?" मां ने उसके शब्द दोहराये और सहसा वह रोने लगी।

"क्या बात है, मां?" पावेल ने कुछ झल्लाकर पूछा।

मां ने अपने दामन से आंसू पोंछते हुए आह भरकर कहा।

"मालूम नहीं, ऐसे ही..."

"डर लगता है?"

"हां," मां ने स्वीकार किया।

वह मां की तरफ़ झुक गया और बिल्कुल अपने बाप की तरह झुंझलाकर बोला:

"यही डर तो हमारी तबाही का कारण है! हम पर हुकुम चलानेवाले भी हमारे इसी डर का फ़ायदा उठाकर हमें और ज़्यादा डराते रहते हैं।"

"बिगड़ो नहीं," मां ने दुःखी होकर रोते हुए कहा। "मैं कैसे न डरूं? सारा जीवन डर में बीता है। वह मेरी आत्मा में समा गया है!"

"मां, मुझे अफ़सोस है, मगर मेरे लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है!" पावेल ने धीरे से स्नेहपूर्वक कहा।

और इतना कहकर वह चला गया।

तीन दिन तक मां भयभीत रही। जब भी उसे याद आता कि कुछ अपरिचित और भयानक लोग उसके घर आनेवाले हैं, उसका दिल धड़कने लगता। इन्हीं लोगों ने तो उसके बेटे को वह रास्ता दिखाया था, जिस पर वह चल रहा था!..

सनीचर की शाम को पावेल ने फ़ैक्टरी से वापस आकर मुंह-हाथ धोया, कपड़े बदले और बाहर चला गया।

"अगर कोई आये तो कहना कि मैं अभी आता हूं," उसने मां से नज़र न मिलाते हुए कहा। "और कृपा करके डर को अपने मन से निकाल दो..."

वह बेंच पर बैठ गयी, जैसे किसी ने उसकी शक्ति छीन ली हो। पावेल ने उदास भाव से उसे देखा।

"तुम ऐसा क्यों नहीं करतीं कि... कहीं... चली जाओ!" पावेल ने सुझाव रखा।

पावेल की इस बात से मां को दुःख हुआ। उसने सिर हिलाते हुए कहा:

"नहीं। वह किसलिए?"

नवम्बर का अन्त था। दिन को सरदी से अकड़ जानेवाली पृथ्वी

पर अब सूखी बर्फ़ की पतली चादर बिछ गयी थी, और मां को बेटे के पैरों तले बर्फ़ के चरमराने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। बैरिन रात का अंधकार चोरों की तरह खिड़कियों के शीशों से चिपका हुआ था, मानो किसी की घात में हो। मां दोनों हाथों से बेंच पकड़े वहीं बैठी रही, उसकी आंखें दरवाज़े पर जमी हुई थीं...

उसे लगा कि अंधेरे में सभी ओर से अजीब से कपड़े पहने हुए भयानक लोग चोरों की तरह घर की ओर आ रहे हैं, झुके-झुके और इधर-उधर देखते हुए। अब कोई घर के गिर्द चक्कर लगा रहा है और अपनी उंगलियों से दीवार को टोहता हुआ चल रहा है।

उसने किसी को गाने की धुन पर सीटी बजाते सुना। वह उदास और सुरीली आवाज़ अंधकार और निस्तब्धता में लहराती हुई आ रही थी, मानो कुछ ढूंढ़ रही हो, आवाज़ निरन्तर निकट आती जा रही थी। सहसा खिड़की के बिल्कुल पास आकर आवाज़ रुक गयी, मानो दीवार की लकड़ी में समाकर रह गयी हो।

बरामदे से किसी के पैरों के घिसटने की आवाज़ आयी। मां चौंक पड़ी और आशंका से उसकी भवें ऊपर चढ़ गयीं। वह उठी।

दरवाज़ा खुला। बड़ी-सी फ़र की टोपी में पहले एक सिर दिखायी दिया, फिर एक लम्बा-सा शरीर झुककर दरवाज़े से अन्दर आया और तनकर खड़ा हो गया। आगन्तुक ने अपना दाहिना हाथ उठाकर सलाम किया, और फिर एक गहरी आह भरकर भारी गूंजती हुई आवाज़ में कहा:

"सलाम!"

मां ने कुछ कहे बिना झुककर उसके अभिवादन का उत्तर दिया।

"पावेल है?"

आगन्तुक ने धीरे-धीरे अपनी फ़र की जाकेट उतारी, एक पैर उठाकर अपनी टोपी से जूतों पर जमी हुई बर्फ़ झाड़ी, फिर दूसरा पैर उठाकर यही क्रिया दुहराई और अपनी टोपी को एक कोने में फेंककर लम्बी-लम्बी टांगों पर झूलता टहलता हुआ-सा कमरे के दूसरे कोने में चला गया। उसने एक कुरसी को ग़ौर से देखा, मानो यह विश्वास कर लेना चाहता हो कि वह कुरसी उसे संभाल भी पायेगी कि नहीं और फिर कुरसी पर बैठकर मुंह पर हाथ रखकर जम्हाई लेने लगा। उसका सिर बहुत सुडौल था और उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे। उसकी दाढ़ी बिल्कुल सफ़ाचट थी और मूंछों के दोनों सिरे नीचे को लटके हुए

थे। उसने अपनी बड़ी-बड़ी भूरी आंखों से कमरे की हर चीज़ को बड़े ध्यान से देखा।

"यह घर तुम्हारा अपना है या किराये का है?" उसने टांग पर टांग रखकर कुरसी पर झूलते हुए कहा।

"किराये का है," मां ने, जो उसके सामने बैठी थी, उत्तर दिया।

"कोई खास अच्छी जगह तो है नहीं" उसने अपना मत प्रकट करते हुए कहा।

"पावेल अभी आ जायेगा, थोड़ी देर इंतज़ार करो।"

"सो तो कर ही रहा हूं," उस बड़े डीलडौलवाले आदमी ने शान्त भाव से उत्तर दिया।

उसके शान्त भाव, उसके कोमल स्वर और उसके सीधे-सादे साधारण चेहरे से मां को ढाढ़स बंधा। उसका देखने का ढंग बड़ा निस्संकोच और मित्रतापूर्ण था और उसकी निर्मल आंखों की गहराइयों में उल्लास की ज्योति नाचती थी। उसका बेडौल शरीर कुछ झुका हुआ और टांगें बहुत ही लम्बी थीं, फिर भी उसकी आकृति में कोई ऐसी चीज़ थी जो बरबस मोह लेती थी। वह एक नीली क़मीज़ पहने था और चौड़ी मोहरी की उसकी काली पतलून बूटों में खुंसी हुई थी। मां उससे पूछना चाहती थी कि वह कौन था, कहां से आया था और क्या वह उसके बेटे को बहुत समय से जानता था, पर सहसा वह खुद ही आगे को झुका और पहले उसी ने बोलना शुरू किया:

"अम्मा, तुम्हारा यह माथा किसने फोड़ा था?" उसने पूछा।

उसके स्वर में नरमी और आंखों में मुस्कराहट थी, फिर भी मां को उसका यह पूछना बुरा लगा।

मां ने होंट सिकोड़े, कुछ देर चुप रही और फिर भावहीन शिष्टता के साथ पूछा:

"भले आदमी, तुम्हें इससे क्या लेना-देना है?"

"बुरा न मानो," आगन्तुक ने अपना पूरा शरीर उसकी तरफ़ झुकाते हुए कहा। "मैंने तो इसलिए पूछा था कि जिस औरत ने मुझे मां की तरह पाला था उसके माथे पर भी ऐसा ही चोट का निशान था। वह जिस आदमी के साथ रहती थी उसी ने उसको वह चोट लगायी थी। वह मोची था। उसने कलबूत से उसे मारा था। वह धोबिन थी और वह मोची। उसका फूटा नसीब, न जाने कहां वह मोची उसे मिल गया था। बला का शराबी था वह। यह उसके बाद की बात है

जब वह मुझे गोद ले चुकी थी। कितनी बुरी तरह मारता था वह उसे! डर के मारे मेरी तो आंखें बाहर निकल पड़ती थीं ..."

उसके इस तरह निस्संकोच सब कुछ उसे बता देने पर मां कुछ सिटपिटा गयी, उसे डर लगने लगा कि पावेल उस पर नाराज़ होगा कि उसने इतनी सख़्ती से जवाब क्यों दिया था।

"मैं नाराज़ नहीं हुई थी," उसने अपराधी की तरह मुस्कराकर कहा। "तुमने एकदम से यह सवाल पूछ लिया था, इसीलिए। मेरी भी यह निशानी मेरे घरवाले की ही दी हुई है, भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे। क्या तुम तातार हो?"

उस व्यक्ति ने अपने पैरों को झटककर इतने ज़ोर से खीसें निकालीं कि उसके कान तक हिल गये। फिर उसने मुंह लटकाकर कहा:

"नहीं, अभी तो नहीं हूं।"

"मगर तुम्हारी बोली तो रूसियों जैसी नहीं लगती," मां ने उसके इस मज़ाक़ पर धीरे से मुस्कराकर अपनी बात को समझाते हुए कहा।

"नहीं, रूसी से अच्छी है," अतिथि ने पुलकित होकर कहा। "मैं तो कानेव का रहनेवाला उक्रइनी हूं।"

"यहां बहुत दिन से हो?"

"शहर में कोई साल भर रहा, मगर इधर एक महीने से फ़ैक्टरी में आ गया हूं। यहां कुछ बहुत अच्छे लोग हैं – तुम्हारा बेटा और कुछ दूसरे लोग भी। इसलिए मेरा ख़्याल है कि मैं तो यहीं रहूंगा," उसने अपनी मूंछों के बाल खींचते हुए कहा।

मां को वह बहुत अच्छा लगा और उसके बेटे के बारे में उसने प्रशंसा के जो शब्द कहे थे उनके लिए वह अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहती थी।

"एक गिलास चाय पिओगे?" मां ने पूछा।

"अकेले?" उसने कंधे बिचकाकर उत्तर दिया। "औरों को भी आ जाने दो, तब हम सब की ख़ातिर एक साथ करना ..."

उसकी इस बात ने मां को फिर अपने भय की याद दिला दी।

"काश बाक़ी लोग भी इसके जैसे ही हों!" उसने सोचा।

एक बार फिर उसने बरामदे में किसी के क़दमों की आहट सुनी। दरवाज़ा खुला और मां फिर उठकर खड़ी हो गयी। लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक नौजवान लड़की ने रसोई में प्रवेश किया। उसका क़द कुछ छोटा और चेहरा किसानों जैसा सीधा-सादा था और

उसने अपने सुनहरे बालों को एक ही चोटी में गूंध रखा था।

"क्या मुझे देर हो गयी?" लड़की ने कोमल स्वर में पूछा।

"नहीं तो," उक्रइनी ने दरवाज़े से बाहर एक नज़र डालते हुए कहा। "क्या पैदल आयी हो?"

"और क्या। आप पावेल मिखाइलोविच की मां हैं? सलाम! मेरा नाम नताशा है।"

"पूरा नाम क्या है?" मां ने पूछा।

"नताल्या वासील्येवना। और आपका?"

"पेलागेया निलोवना।"

"अब हम लोग एक दूसरे से परिचित हो गये।"

"हां," मां ने तनिक आह भरते हुए लड़की की तरफ़ देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"सरदी लग रही है?" उक्रइनी ने लड़की को कोट उतारने में सहायता देते हुए पूछा।

"बहुत! बाहर खेतों में इतनी तेज़ हवा है कि बस!.."

उसकी आवाज़ बहुत सुरीली और साफ़ थी, मुंह छोटा-सा, होंट भरे-भरे, देखने में वह बिल्कुल खूबानी की तरह गोल और ताज़ी लगती थी। कोट वग़ैरह उतारने के बाद उसने अपने गुलाबी गालों को छोटे-छोटे हाथों से रगड़ा जो सरदी के कारण सूज गये थे, और जल्दी से दूसरे कमरे में चली गयी, फ़र्श पर उसके जूतों की एड़ियों की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी।

"यह रबड़ के जूते नहीं पहनती!" मां ने अपने मन में यह बात अंकित कर ली।

"ब-र्र-र्र!" लड़की ने कांपते हुए कहा, "मैं तो सरदी के मारे बिल्कुल अकड़ गयी।"

"लो मैं समोवार गर्म किये देती हूं," मां ने जल्दी से रसोई में जाते हुए कहा, "एक मिनट ठहरो..."

उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उस लड़की को बहुत समय से जानती है और उसके हृदय में उस लड़की के प्रति मां की ममता और प्यार जाग उठा। बग़लवाले कमरे में उन लोगों की बातें सुनते समय मां के होंटों पर मुस्कराहट नाच रही थी।

"नाखोदका, तुम क्या सोच रहे हो इतने ग़ौर से?" लड़की ने पूछा।

"कोई ख़ास बात नहीं," उक्रइनी ने शान्त भाव से उत्तर दिया। "इस विधवा की आंखें बड़ी अच्छी हैं, मैं सोच रहा था कि शायद मेरी मां की आंखें भी ऐसी ही रही होंगी। मैं अक्सर अपनी मां के बारे में सोचता हूं, मेरा ख़्याल है कि वह ज़िन्दा है।"

"मगर तुमने तो कहा था कि वह मर गयी।"

"वह तो उस मां के बारे में कहा था जिसने मुझे पाला था। मैं अपनी मां की बात कर रहा हूं। वह शायद कीयेव की सड़कों पर कहीं भीख मांगती होगी। और शराब पीती होगी। और जब भी वह नशे में चूर हो जाती होगी तो पुलिसवालों के थप्पड़ खाती होगी..."

"बेचारा!.." मां ने आह भरकर सोचा।

नताशा ने कोई बात बड़ी जल्दी से कोमल स्वर में और बड़े जोश के साथ कही। एक बार फिर उक्रइनी की आवाज़ गूंज उठी:

"तुम अभी बिल्कुल बच्ची हो—अभी दुनिया देखी नहीं है तुमने," वह बोला। "मनुष्य को इस संसार में लाना तो कठिन है ही पर उसे भला आदमी बनाना और भी कठिन है..."

"हाय बेचारा!" मां ने अपने मन में कहा, वह उक्रइनी से सांत्वना के दो शब्द कहने के लिए बेचैन हो रही थी। लेकिन इतने में दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला और पुराने चोर दनीला का बेटा निकोलाई वेसोवश्चिकोव अन्दर आया। निकोलाई मिलनसार न होने की वजह से सारी बस्ती में बदनाम था। वह हमेशा मुंह फुलाये सबसे अलग-अलग रहता था और लोग इसी कारण उसको चिढ़ाते थे।

"क्यों, क्या है, निकोलाई?" मां ने आश्चर्य से पूछा।

"पावेल है?" उसने चेचक के दाग़ों से भरे हुए अपने चौड़े से चेहरे को हथेली से पोंछते हुए मां को सलाम किये बिना ही पूछा।

"नहीं।"

उसने कमरे के अन्दर एक नज़र डाली और फिर अन्दर चला गया।

"सलाम, कामरेड," उसने कहा।

"यह?" मां ने बड़े तिरस्कार के भाव से सोचा और उसे नताशा को उसकी तरफ़ इस प्रकार हाथ बढ़ाते देखकर आश्चर्य हुआ मानो वह उससे मिलकर बहुत ख़ुश हुई हो।

निकोलाई के बाद दो आदमी और आये, दोनों बिल्कुल लड़के ही थे। मां उनमें से एक को जानती थी, जिसका नाक-नक़्शा बहुत सुडौल, बाल घुंघराले और माथा चौड़ा था, वह फ़ैक्टरी के पुराने मज़दूर

सिज़ोव का भतीजा फ़्योदोर था। दूसरा लड़का बहुत शर्मीला था और उसके सीधे-सीधे बाल बिल्कुल चिपके रहते थे। मां उसे नहीं जानती थी पर वह कोई ख़तरनाक आदमी नहीं मालूम होता था। आख़िरकार पावेल अन्दर आया, उसके साथ फ़ैक्टरी के दो नौजवान मज़दूर और थे जिन्हें मां जानती थी।

"समोवार गरम कर रही हो?" पावेल ने बड़े प्यार से कहा, "धन्यवाद!"

"जाकर थोड़ी-सी वोदका ख़रीद लाऊं?" मां ने पूछा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी चीज़ के लिए, जिसे वह स्वयं भी ठीक से नहीं जानती थी, वह कृतज्ञता कैसे प्रकट करे।

"नहीं, हम लोग शराब नहीं पीते," पावेल ने स्नेहपूर्ण मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया।

मां को ऐसा लगा कि उसके बेटे ने जान-बूझकर इस बैठक के ख़तरे को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया था ताकि बाद में उसको लक्ष्य बनाकर ख़ूब हंसे।

"क्या यही लोग – यही ग़ैरक़ानूनी लोग हैं?" उसने बहुत ही दबे स्वर में पूछा।

"हां, यही हैं," पावेल ने जल्दी से दूसरे कमरे में जाते हुए उत्तर दिया।

"मैं नहीं मानती!" उसने बड़े प्यार से पीछे से पुकारकर कहा और अपने मन में दयालु भाव से सोचने लगी: "यह भी अभी तक कैसा नादान बच्चा है!"

६

जब समोवार गरम हो गया तो मां उसे कमरे में लेकर गयी। अतिथि मेज़ के चारों तरफ़ बैठे हुए थे और नताशा कोने में लैम्प की रोशनी में एक किताब पढ़ रही थी।

"इस बात को समझने के लिए कि लोगों का जीवन इतना कठोर क्यों है..." नताशा ने कहा।

"और वे ख़ुद इतने कठोर क्यों हैं..." उक्रइनी बीच में बोल उठा।

"...हमें यह मालूम करना चाहिये कि उनका सामाजिक जीवन कैसे आरम्भ हुआ..."

"हां, मालूम करो, मेरे बच्चो, ज़रूर मालूम करो," मां चाय बनाते हुए बड़बड़ायी।

सबने बात करना बन्द कर दिया।

"मां, क्या बात है?" पावेल ने त्योरियां चढ़ाकर पूछा।

"कौन-सी बात?" मां ने नज़र उठाकर देखा और सबको अपनी तरफ़ देखता हुआ पाया। "अरे, मैं तो यों ही अपने आप से बातें कर रही थी," मां ने खिसियाहट से बुदबुदाकर कहा, "मैं सोच रही थी कि अगर तुम लोग कोई बात मालूम ही करना चाहते हो तो क्यों न मालूम करो।"

नताशा हंस दी और पावेल भी खिलखिला पड़ा।

"अम्मा, चाय के लिए धन्यवाद," उक्रइनी ने कहा।

"पहले पी लो, तब धन्यवाद देना," मां ने कहा और फिर अपने बेटे की तरफ़ देखकर पूछा, "शायद मेरी वजह से तुम लोगों के काम में बाधा पड़ रही है?"

"मेज़बान की वजह से मेहमानों के काम में क्या बाधा पड़ सकती है?" नताशा ने उत्तर दिया, "लेकिन मुझे जल्दी से चाय दे दो। मैं सिर से पांव तक कांप रही हूं और पैर तो मेरे बिल्कुल बरफ़ हो गये हैं!" उसके स्वर में बच्चों जैसी याचना थी।

"अभी लो, अभी," मां ने जल्दी से उत्तर दिया।

चाय पीकर नताशा ने ज़ोर से एक आह भरी, अपनी चोटी कंधे पर से उछाल दी और पीली जिल्दवाली सचित्र पुस्तक में से कुछ पढ़ने लगी। मां ने कोशिश की कि चाय बनाते हुए कोई शोर न हो और वह चुपचाप सुनती रही। उस लड़की की गूंजती हुई आवाज़ समोवार की विचारमग्न-सी गुनगुनाहट में घुलमिल गयी थी, कहानियों का एक क्रम चल रहा था, सब कहानियां ऐसे जंगली लोगों के बारे में थीं जो किसी ज़माने में गुफाओं में रहते थे और पत्थर से शिकार करते थे। बिल्कुल परियों की कहानियों जैसी थीं ये कहानियां। मां कनखियों से अपने बेटे को देखती रही, वह पूछना चाहती थी कि ऐसी कहानियां ग़ैरक़ानूनी क्यों ठहरायी गयी थीं। पर थोड़ी ही देर में वह जो कुछ पढ़ा जा रहा था उसे सुनते-सुनते उकता गयी और नज़र बचाकर इस प्रकार अतिथियों को ग़ौर से देखने लगी कि उन्हें और उसके बेटे को इसका पता न चलने पाये।

पावेल नताशा के बग़ल में बैठा था; वह उन सब लोगों में सबसे

ज़्यादा ख़ूबसूरत था। झुकी हुई नताशा किताब पढ़ रही थी और बीच-बीच में अपनी कनपटियों पर से बालों की लटें पीछे हटा देती थी। अपना सिर झटककर और आवाज़ धीमी करके किताब की तरफ़ देखे बिना अपने चारों ओर बैठे हुए लोगों के चेहरों पर प्यार-भरी नज़र डालकर वह बीच-बीच में अपनी तरफ़ से भी कोई बात कहती थी। उक्रइनी मेज़ के एक सिरे पर फैलकर बैठा अपनी मूंछें नोच रहा था और आंखें भेंगी करके नाक से नीचे उन मूंछों के सिरे देखने का प्रयत्न कर रहा था। वेसोवश्चिकोव अपनी कुरसी पर डंडे की तरह सीधा तनकर बैठा हुआ था; वह अपनी दोनों हथेलियों से कसकर अपने घुटने दबाये हुए था और उसका पतले होंटोंवाला चेचकरू चेहरा, जिस पर भवें थीं ही नहीं, बिल्कुल भावहीन था जैसे वह नक़ाब पहने हो। चमकदार समोवार में उसके चेहरे का जो प्रतिबिम्ब पड़ रहा था, उसी पर उसकी पतली-पतली आंखें अपलक जमी हुई थीं और ऐसा मालूम होता था कि शायद वह सांस भी नहीं ले रहा है। नताशा जो कुछ पढ़ रही थी उसे सुनते हुए नाटा फ़्योदोर बग़ैर आवाज़ किये अपने होंट हिला रहा था मानो पुस्तक के शब्दों को मन ही मन दुहरा रहा हो और उसका दोस्त घुटनों पर कुहनियां रखे और दोनों हथेलियों पर अपने गाल टिकाये हुए कमर दोहरी किये बैठा था, उसके होंटों पर एक विचारशील मुस्कराहट खेल रही थी। पावेल के साथ जो लड़का आया था, उसके लाल घुंघराले बाल थे और उल्लासपूर्ण कंजी आंखें थीं। वह एक पल बैठ ही नहीं पाता था मानो कुछ कहना चाहता हो। दूसरा लड़का, जिसके बाल सुनहरे रंग के और बहुत छोटे कटे हुए थे, लगातार अपने सिर पर हाथ फेर रहा था और फ़र्श को घूर रहा था; मां को उसका चेहरा भी ठीक से दिखायी नहीं दे रहा था। कमरे में एक विचित्र-सा सुखद वातावरण था। यह वातावरण कुछ अपरिचित-सा था; नताशा किताब पढ़ रही थी और मां को स्वयं अपनी जवानी के वे कोलाहलमय जमघट और उन लड़कों की भद्दी बातें और क्रूर मज़ाक़ याद आ रहे थे जिनके मुंह से हमेशा वोदका के भभके आते रहते थे। इन बातों को याद करके उसका हृदय आत्म-क्षोभ से द्रवित हो उठा।

उसे याद आया कि उसके पति के साथ उसकी मंगनी किस प्रकार हुई थी। इसी प्रकार के एक जमघट में उसने उसे एक अंधेरी ड्योढ़ी में दबोच लिया था और भारी तुनकती आवाज़ में पूछा था:

"मुझसे ब्याह करोगी?"

उसे बहुत दर्द और दुःख भी हो रहा था, मगर वह बहुत बेरहमी से उसकी छातियां मसल रहा था और उसके मुंह पर अपनी तप्त और आर्द्र सांसों की वर्षा करता जा रहा था।

उसके चंगुल से निकलने का प्रयत्न करते हुए उसने खींचातानी भी की थी।

"सीधी खड़ी रहो!" उसने भेड़िये की तरह दांत निकालकर कहा था। "मुझे जवाब दो, सुना कि नहीं?"

लज्जा और अपमान के कारण मां का दम फूल रहा था; वह कोई उत्तर न दे सकी थी।

इतने में किसी ने दरवाज़ा खोल दिया था और उसने धीरे-धीरे उसे छोड़ दिया था।

"मैं इतवार को तुम्हारे यहां सगाई करने के लिए किसी को भेजूंगा," उसने कहा था।

और उसने भेजा भी।

मां ने आंखें बंद करके एक गहरी आह भरी...

"मैं जानना चाहता हूं कि लोगों को कैसे रहना चाहिये, न कि वे किस तरह रहते थे," वेसोवश्चिकोव का खीझ-भरा स्वर सुनायी दिया।

"ठीक है," लाल बालोंवाले ने खड़े होकर कहा।

"मैं सहमत नहीं हूं!" फ़्योदोर ने चिल्लाकर कहा।

उनकी बहस में शब्द आग की लपटों की तरह लपक रहे थे। मां की समझ में नहीं आ रहा था कि वे किस बात पर इतना चिल्ला रहे हैं। सबके चेहरे उत्तेजना से तमतमाये हुए थे, पर न तो कोई क्रोध में आपे से बाहर हुआ और न किसी ने उस भद्दी भाषा ही का प्रयोग किया जिससे वह भली भांति परिचित थी।

"लड़की के सामने शरमाते होंगे," उसने अपने मन में फ़ैसला किया।

नताशा हर नौजवान को बड़े ध्यान से देख रही थी, मानो वे बिल्कुल बच्चे हों और मां को उसके चेहरे पर गंभीरता का भाव बहुत अच्छा लगा।

"ज़रा देर चुप रहिये, कामरेड," उसने सहसा कहा और वे सब चुप होकर उसकी तरफ़ देखने लगे।

"आपमें से जो लोग कहते हैं कि हमें हर बात जाननी चाहिये वे ठीक हैं। हमें अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगानी चाहिये, ताकि वे लोग

जो अंधेरे में भटक रहे हैं वे हमें देख सकें। हमारे पास हर चीज़ का सच्चा और ईमानदार जवाब होना चाहिये। हमें पूरी सच्चाई और पूरे झूठ की जानकारी होनी चाहिए..."

उक्रइनी सुन रहा था और उसके शब्दों की ताल पर अपना सिर हिला रहा था। वेसोवश्चिकोव और वह लाल बालोंवाला और फ़ैक्टरी का एक लड़का जो पावेल के साथ आया था, एक तरफ़ दल बांधे खड़े थे ; न जाने क्यों मां को वे अच्छे नहीं लगे।

जब नताशा बोल चुकी, तब पावेल खड़ा हुआ।

"क्या हम सिर्फ़ यह सोचते हैं कि हमारा पेट भरा रहे? बिल्कुल नहीं," उसने उन तीनों की तरफ़ देखकर शान्त स्वर में कहा। "हमें उन लोगों को जो हमारी गर्दन पर सवार हैं और हमारी आंखों पर पट्टियां बांधे हुए हैं यह जता देना चाहिये कि हम सब कुछ देखते हैं। हम न तो बेवक़ूफ़ हैं और न जानवर कि पेट भरने के अलावा और किसी बात की हमें चिन्ता ही न हो। हम इन्सानों का सा जीवन बिताना चाहते हैं! हमें अपने दुश्मनों के सामने यह साबित कर देना चाहिए कि उन्होंने हमारे ऊपर ख़ून-पसीना एक करने का जो जीवन थोप रखा है, वह हमें बुद्धि में उनके बराबर या उनसे बढ़कर होने से रोक नहीं सकता!"

पावेल की बातें सुनते समय मां का हृदय गर्व से फूल गया। वह कितने अच्छे ढंग से बोलता है!

"ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें खाने-पीने की कोई कमी नहीं, मगर उनमें बहुत थोड़े ही ईमानदार होते हैं।" उक्रइनी ने कहा। "हमें जानवरों की सी इस ज़िन्दगी की दलदल के पार मनुष्यों के भाईचारे के भावी राज्य तक एक पुल बनाना चाहिये। साथियो, हमारे सामने यही काम है!"

"अगर यह लड़ने का वक़्त है तो हम हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हैं?" वेसोवश्चिकोव ने ग़ुर्राकर आपत्ति प्रकट की।

आधी रात के बाद जाकर बैठक ख़त्म हुई। सबसे पहले वेसोवश्चिकोव और वह लाल बालोंवाला बाहर गये ; मां को यह बात भी अच्छी नहीं लगी।

"आख़िर इतनी जल्दी क्या है इन्हें!" उसने भावहीनता से झुककर उन्हें विदा करते हुए सोचा।

"नाख़ोदका, तुम मुझे घर तक पहुंचा दोगे?" नताशा ने पूछा।

"ज़रूर, क्यों नहीं?" उक्रइनी ने उत्तर दिया।

3–1065

जब नताशा रसोईघर में अपने कपड़े पहन रही थी, तब मां ने उससे कहा:

"ऐसे मौसम के लिए तुम्हारे मोज़े बहुत पतले हैं। कहो तो मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा ऊनी मोज़े बुन दूं।"

"पेलागेया निलोवना, आपका बहुत धन्यवाद, लेकिन ऊनी मोज़े गड़ते हैं," नताशा ने हंसकर उत्तर दिया।

"मैं ऐसे बुन दूंगी जो गड़ेंगे नहीं," मां ने कहा।

नताशा ने आंखें सिकोड़कर मां को देखा और उसके इस प्रकार घूरने से मां कुछ सिटपिटा गयी।

"मेरी अटपटी बातों का बुरा न मानना। मैंने सच्चे दिल से यह बात कही थी," मां ने धीरे से कहा।

"तुम कितनी अच्छी हो, मां!" नताशा भी भाव-विह्वल होकर उसके हाथ दबाते हुए वैसे ही धीरे से बोली।

"अच्छा, अम्मा, अब चलते हैं," मां से नज़र मिलाते हुए उक्रइनी ने कहा और सिर झुकाकर नताशा के पीछे-पीछे ड्योढ़ी में चला गया।

मां ने अपने बेटे की तरफ़ देखा। वह दरवाज़े पर खड़ा मुस्करा रहा था।

"किस बात पर मुस्करा रहे हो?" मां ने सिटपिटाकर पूछा।

"कोई ख़ास बात नहीं। बस यों ही, जी ख़ुश है।"

"मैं बूढ़ी और नासमझ ज़रूर हूं, लेकिन मैं भले-बुरे को पहचानती हूं," मां ने किंचित खिन्न होकर कहा।

"बड़ी ख़ुशी है मुझे इस बात की," पावेल बोला। "लेकिन अब तुम जाकर सो जाओ।"

"अभी जाती हूं।"

वह चाय के बरतन वग़ैरह समेटने के बहाने वहीं मेज़ के आस-पास बनी रही, वह बहुत ख़ुश थी – सचमुच इतनी ख़ुश थी कि उसके पसीना छूट रहा था। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि हर चीज़ इतनी सुखद रही और ऐसे शान्तिपूर्वक निबट गयी।

"पावेल, तुमने उन लोगों को यहां बुलाकर अच्छा ही किया," मां ने कहा। "उक्रइनी बहुत भला है! और वह लड़की – वह तो बहुत ही समझदार है। कौन है वह?"

"अध्यापिका है," पावेल ने कमरे में टहलते हुए संक्षेप में उत्तर दिया।

"बहुत ग़रीब होगी। ढंग के कपड़े भी नहीं हैं उसके पास। सरदी लगते कितनी देर लगती है। उसके मां-बाप कहां हैं?"

"मास्को में," पावेल ने उत्तर दिया और फिर अपनी मां के सामने रुककर बहुत स्नेह और गंभीरता से बोला:

"उसका बाप बहुत अमीर है। वह लोहे का व्यापार करता है और काफ़ी जायदाद है उसके पास। उसने अपनी बेटी को इसलिए घर से निकाल दिया कि उसने जीवन का यह रास्ता अपनाया। वह बहुत आराम में पली, जो भी वह चाहती थी, वह उसे मिलता था। लेकिन अब वह रात को कई कोस अकेली चली जाती है..."

यह जानकर मां को आघात पहुंचा। वह कमरे के बीच में खड़ी अपनी भवें फड़काती रही और अपने बेटे की ओर देखती रही। फिर उसने चुपके से पूछा:

"क्या वह शहर गयी है?"

"हां।"

"हाय सच! उसे डर नहीं लगता?"

"बिल्कुल डर नहीं लगता," पावेल ने हंसकर कहा।

"लेकिन वह गयी क्यों? वह रात यहीं रह सकती थी, मेरे पास सो जाती।"

"यह मुमकिन नहीं था। कोई सुबह उसे यहां देख लेता और हम यह नहीं चाहते।"

मां विचारों में डूबी हुई खिड़की के बाहर घूरती रही।

"पावेल, मेरी समझ में नहीं आता कि इसमें ऐसी ख़तरनाक और ग़ैरक़ानूनी क्या बात है?" उसने धीमे से पूछा। "तुम कोई ग़लत काम तो नहीं कर रहे हो न?"

मां को इसी बात की चिन्ता थी और वह आश्वस्त हो जाना चाहती थी।

"नहीं, हम कोई ग़लत काम नहीं करते," पावेल ने बड़े शान्त भाव से अपनी मां की आंखों में आंखें डालकर दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया। "फिर भी हम सब लोग किसी न किसी दिन जेल में ठूंस दिये जायेंगे। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये।"

मां के हाथ कांपने लगे।

"भगवान की इच्छा हुई तो शायद तुम किसी तरह इससे बच भी जाओ, क्यों है न?" मां ने दबी ज़बान से पूछा।

"नहीं," बेटे ने प्यार से उत्तर दिया। "मैं तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहता। इससे बचा नहीं जा सकता।"

वह मुस्करा दिया।

"अब जाकर सो जाओ। तुम थक गयी हो। मैं तो जाता हूं बिस्तर पर।"

जब मां अकेली रह गयी तब वह खिड़की के पास गयी और वहां खड़ी बाहर देखती रही। बाहर सरदी और अंधेरा था। तेज़ हवा के झोंके छोटे-छोटे ऊंघते-से मकानों की छतों पर से बर्फ़ उड़ाकर दीवारों से टकराते, फिर तेज़ी से ज़मीन की तरफ़ झपटते हुए सांय-सांय की आवाज़ पैदा करते और सड़क पर बर्फ़ के छोटे-छोटे बादलों का पीछा करते ...

"हे ईसा मसीह, हम पर दया करो!" मां ने बहुत धीमे स्वर में कहा।

उसका हृदय भर आया था और उस विपत्ति का पूर्वाभास, जिसका उल्लेख उसके बेटे ने इतने शान्त भाव और दृढ़ विश्वास के साथ किया था, उसके सीने में उसी प्रकार फड़फड़ा रहा था जैसे रात्रि के अंधकार में कोई पतंगा। उसे अपनी आंखों के सामने बर्फ़ से ढका हुआ एक मैदान दिखायी दे रहा था, जिसमें हवा मानो फटे हुए सफ़ेद कपड़े पहने महीन स्वर में चीखती हुई भाग रही थी और भागते-भागते बार-बार गिर पड़ती थी। मैदान के बीच में एक लड़की की छोटी-सी काली आकृति लड़खड़ाती हुई जा रही थी। हवा उसके पैरों को अपने भंवर में लपेट लेती, उसका साया उड़ाती और तीर की तरह चुभती हुई बर्फ़ उसके चेहरे पर झोंक देती। वह बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ रही थी। उसके छोटे-छोटे पांव बर्फ़ के ढेरों में धंसे जा रहे थे। बड़ी ठंड थी और डर लगता था। उस लड़की का शरीर आगे की तरफ़ इस तरह झुका हुआ था जैसे शरद ऋतु की तेज़ हवा के वेग से घास की कोई अकेली पत्ती झुक जाये। उसके दाहिनी तरफ़ दलदल से जंगल की एक दीवार उभर आयी थी जिसमें पतले-पतले बर्च वृक्ष और पल्लवहीन ऐस्पेन के पेड़ विपदा के मारे हुओं की तरह कानाफूसी कर रहे थे। बहुत दूर आगे शहर की बत्तियां जगमगा रही थीं।

"हे जग के रखवाले, दया करो," मां ने कांपकर धीरे से कहा ...

माला के दानों की तरह दिन बीतते गये, दिन सप्ताहों में और सप्ताह महीनों में बदलते गये। हर शनिवार को पावेल के मित्र उसके घर पर जमा होते और उनकी हर बैठक उस लम्बी सीढ़ी पर आगे की दिशा में एक और क़दम होती थी जिसके सहारे वे लोग धीरे-धीरे किसी सुदूर लक्ष्य की ओर चढ़ते चले जा रहे थे।

नये लोग पुरानों में आकर मिलते गये। व्लासोव-परिवार के घर का वह छोटा-सा कमरा खचाखच भरा रहने लगा। नताशा जब भी आती हमेशा थकी हुई और सरदी से अकड़ी हुई, पर हमेशा प्रसन्नचित्त। पावेल की मां ने उसके लिए एक जोड़ा ऊनी मोज़े बुन दिया और अपने हाथ से उस लड़की के छोटे-छोटे पैरों पर उन्हें पहना दिया। नताशा हंस दी, पर सहसा चुप और विचारमग्न हो गयी।

"मेरी एक आया थी, जो बहुत ही नेक थी," उसने स्नेह से कहा। "पेलागेया निलोवना, कैसी अजीब बात है कि मेहनतकश लोग अपने जीवन में इतनी कठिनाइयां और इतना अन्याय सहते हैं और फिर भी वे उन दूसरे लोगों से ज़्यादा नेक होते हैं," उसने बहुत दूर, उससे बहुत दूर रहनेवाले लोगों की ओर संकेत करते हुए कहा।

"कैसी हो तुम भी!" पेलागेया निलोवना ने कहा। "अपने माता-पिता और घर-बार सभी कुछ छोड़ दिया..." वह एक आह भरकर चुप हो गयी; वह अपने विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ थी। पर नताशा की सूरत देखते ही उसने फिर किसी ऐसी चीज़ के लिए कृतज्ञता की भावना का अनुभव किया, जिसकी वह व्याख्या नहीं कर सकती थी। मां उस लड़की के सामने ज़मीन पर बैठी थी और वह लड़की आगे को सिर झुकाये कुछ सोच-सोचकर मुस्करा रही थी।

"सभी कुछ छोड़ दिया?" उसने मां के शब्द दुहराये। "यह कोई बड़ी बात नहीं है। मेरे पिता बड़े बुरे स्वभाव के आदमी हैं, और वही हाल मेरे भाई का है। और साथ ही वह शराबी भी हैं। मेरी बड़ी बहन बहुत दुःखी है... उसने अपने से कहीं ज़्यादा उम्र के आदमी से ब्याह किया था, जो अमीर तो बहुत था पर बड़ा लालची था। मुझे अपनी मां के लिए दुःख होता है! तुम्हारी तरह से वह भी बहुत ही सीधी-सादी हैं। बिल्कुल चुहिया जैसी छोटी, भागती भी चुहिया की तरह ही तेज़ हैं और हर आदमी से डरती भी उसी तरह हैं। कभी-कभी उनसे मिलने को

मेरा जी चाहता है ... ओह, बेहद जी चाहता है!"

"हाय बेचारी!" मां ने उदास होकर अपना सिर झुलाते हुए कहा।

लड़की ने पीछे की ओर सिर झटका और अपना हाथ इस प्रकार फैला लिया, मानो किसी चीज़ को धक्का देकर दूर कर रही हो।

"ओह, नहीं! कभी-कभी तो मैं बहुत ख़ुश होती हूं—बहुत ही ज़्यादा ख़ुश होती हूं!"

उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी नीली आंखें चमकने लगीं। उसने अपने दोनों हाथ मां के कंधों पर रख दिये।

"काश तुम जानती होतीं, काश तुम समझ सकतीं कि हम लोग कितना बड़ा काम कर रहे हैं!" उसने बहुत धीमे से और प्रभावशाली ढंग से कहा।

ईर्ष्या जैसी एक भावना पेलागेया के हृदय में एक क्षण के लिए उठी।

"अब मैं इन सब बातों के लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी हूं। और अनपढ़ हूं ..." उसने ज़मीन पर से उठते हुए बड़ी हसरत से कहा।

...पावेल अब और ज़्यादा मौक़ों पर बोलने लगा था, वह अब ज़्यादा देर तक और ज़्यादा जोश के साथ बोलता था, वह प्रतिदिन दुबला होता जा रहा था। उसकी मां को ऐसा लगता था कि जब वह नताशा की ओर देखता और उससे बात करता तो उसकी आंखों में एक कोमलता और आवाज़ में एक नरमी पैदा हो जाती थी और उसके बात करने के ढंग में भी अक्खड़पन कम हो जाता था।

"भगवान करे कि ऐसा हो जाये," वह कुछ सोचकर मुस्कराने लगी।

जब कभी उनकी इन बैठकों में बहुत गरमागरम और तूफ़ानी बहस छिड़ जाती तो उक्रइनी उठता और गिरजे के घंटे की लटकन की तरह आगे-पीछे डोलते हुए थोड़े से सीधे-सादे अच्छे शब्द कहता, शीघ्र ही सब लोग शान्त हो जाते और सारी गरमागरमी ख़त्म हो जाती। उदास मुद्रावाला वेसोवश्चिकोव हमेशा दूसरों को कुछ करने के लिए उकसाता रहता था; वह और लाल बालोंवाला, जिसे सब लोग समोइलोव कहते थे, यही दोनों हर बहस को शुरू करते थे। सन जैसे बालोंवाला इवान बुकिन, जो ऐसा मालूम होता था कि सज्जी के पानी में नहला दिया गया हो, हमेशा उनका समर्थन करता था। चिकना-सुथरा याक़ोव सोमोव बहुत कम बोलता था, मगर जो कुछ भी वह कहता बड़े विश्वास के

साथ। वह और चौड़े माथेवाला फ़्योदोर माज़िन हमेशा पावेल और उक्रइनी का पक्ष लेते थे।

कभी-कभी निकोलाई इवानोविच नाम का एक व्यक्ति नताशा का स्थान ले लेता था। वह चश्मा लगाता था और उसके छोटी-सी भूरी दाढ़ी थी। वह किसी सुदूर प्रान्त में पैदा हुआ था जिसके कारण बोलते समय वह "ओ" पर ख़ास ज़ोर देता था। वह बिल्कुल ही "परदेसी" था। वह साधारण से साधारण चीज़ों के बारे में, लोगों के प्रतिदिन के जीवन से संबंध रखनेवाली सभी समस्याओं के बारे में – पारिवारिक जीवन की, बच्चों की, व्यापार की, पुलिस की, और रोटी तथा गोश्त की क़ीमतों की बातें करता था। इन बातों के दौरान वह हर झूठी, बेतुकी चीज़ की क़लई खोलता, हर उस चीज़ का पर्दाफ़ाश करता जो मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद पर जनता के लिए हानिकारक थी। मां को लगता कि वह कहीं बहुत दूर से, किसी दूसरी दुनिया से आया है, जहां हर आदमी आराम और ईमानदारी का जीवन बिताता है। यहां की हर चीज़ उसके लिए अजीब थी और वह न तो इस जीवन का आदी हो सकता था और न इसे स्वीकार ही कर सकता था। वह इस जीवन से घृणा करता था और इस घृणा के कारण उसके हृदय में इस जीवन को अपने ढंग से बदलने की एक ख़ामोश पर दृढ़ इच्छा जागृत हुई थी। उसका चेहरा पीला और मुरझाया-सा था और उसकी आंखों के नीचे हल्की-हल्की झुर्रियां पड़ी हुई थीं। उसका स्वर कोमल था और उसके हाथ हमेशा गरम रहते थे। जब भी वह पेलागेया से हाथ मिलाता वह उसके पूरे हाथ को कसकर दबा लेता और मां को इससे बड़ा सुख मिलता।

इन बैठकों में शहर से दूसरे लोग भी आने लगे – सबसे ज़्यादा तो एक दुबली-सी लम्बी लड़की आती थी, पीले चेहरे पर बड़ी-बड़ी आंखोंवाली। उसका नाम साशा था। उसकी चाल और हाव-भाव में कुछ-कुछ मर्दानापन था। वह हमेशा अपनी घनी काली भवों को एक-दूसरे के निकट लाकर देखती थी, मानो ख़फ़ा हो और बोलते समय उसकी सीधी नाक के पतले नथुने फड़कते रहते थे।

उसी ने पहली बार तेज़ ऊंची आवाज़ में घोषणा की थी:

"हम समाजवादी हैं।"

जब मां ने ये शब्द सुने तो वह भय से आतंकित होकर चुपचाप उस लड़की को घूरती रही। पेलागेया ने सुना था कि समाजवादियों ने ज़ार को मार डाला था। यह उसकी युवावस्था के दिनों की बात थी। उन

दिनों यह अफ़वाह थी कि बड़े-बड़े जागीरदारों ने ज़ार से इस बात का बदला लेने के लिए कि उसने उनके भू-दासों को आज़ाद कर दिया था, यह सौगंध खायी थी कि जब तक वे उसे मार नहीं डालेंगे तब तक अपने बाल नहीं कटवायेंगे। इसीलिए उन्हें समाजवादी कहते थे। मगर अब पेलागेया की समझ में नहीं आ रहा था कि उसका बेटा और उसके साथी अपने आपको समाजवादी क्यों कहते हैं।

जब सब लोग घर चले गये तो उसने पावेल के पास जाकर उससे पूछा :

"पावेल, क्या तुम समाजवादी हो?"

"हां," उसने हमेशा की तरह मां के सामने दृढ़तापूर्वक तनकर खड़े होकर उत्तर दिया। "क्यों, क्या बात है?"

उसकी मां ने एक गहरी आह भरी और आंखें झुका लीं।

"सच कहते हो, पावेल? लेकिन वे लोग तो ज़ार के ख़िलाफ़ हैं। एक ज़ार को तो उन्होंने मार भी डाला।"

पावेल हाथ से अपना गाल रगड़ता हुआ कमरे के दूसरी तरफ़ चला गया।

"हम लोगों को इस तरह से काम करने की ज़रूरत नहीं पड़ती," उसने धीरे से मुस्कराकर कहा।

इसके बाद वह बड़ी देर तक बहुत गंभीर और शान्त भाव से बातें करता रहा। उसके चेहरे को देखकर मां ने सोचा :

"वह कभी कोई ग़लत काम नहीं करेगा। वह कर ही नहीं सकता।"

इसके बाद वह भयानक शब्द बार-बार दुहराया गया, यहां तक कि उसका तीखापन ख़त्म हो गया और मां के कान उन लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जानेवाले दर्जनों दूसरे विचित्र शब्दों की तरह इस शब्द के भी आदी हो गये। पर साशा उसे अच्छी नहीं लगती थी और उसके सामने उसे कुछ बेचैनी और घबराहट-सी होती थी...

एक दिन उसने अरुचि से अपने होंट सिकोड़कर उक्रइनी से साशा के बारे में बात की :

"वह बहुत कठोर है! सब पर हुकुम चलाती रहती है – यह करो, वह करो!"

उक्रइनी ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"अम्मा, तुमने लाख टके की बात कह दी! पावेल, कहो क्या कहते हो अब?"

फिर मां की तरफ़ आंख मारकर उसने कहा:

"ये हैं बड़े घराने के लोग।" और उसकी आंखें चमक उठीं।

"वह बहुत अच्छी लड़की है," पावेल ने रुखाई से कहा।

"सो तो है," उक्रइनी ने उसकी बात की पुष्टि करते हुए कहा, "मगर वह यह नहीं समझती कि उसे क्या करना है, जबकि हम लोग यह जानते हैं और कर भी सकते हैं!"

इसके बाद वे दोनों किसी ऐसी बात के बारे में बहस करने लगे जो मां की समझ से बाहर थी।

मां ने देखा कि साशा सबसे ज़्यादा सख़्ती पावेल के साथ बरतती थी; कभी-कभी तो वह उसे फटकार भी देती थी। ऐसे मौक़ों पर पावेल कुछ भी न कहता; वह केवल हंस देता और उस लड़की के चेहरे को वैसी ही कोमल दृष्टि से देखता जैसे वह कभी नताशा को देखा करता था। मां को यह अच्छा न लगता।

कभी-कभी उन लोगों पर सहसा उल्लास का ऐसा उन्माद छा जाता कि पेलागेया निलोवना आश्चर्यचकित रह जाती। बहुधा ऐसा उन रातों को होता था जब वे अख़बारों में विदेशों के मज़दूर आन्दोलन के बारे में पढ़ते थे। उस समय उनकी आंखें चमकने लगतीं और वे एक विचित्र ढंग से बच्चों की तरह हर्षोन्मत्त हो जाते; वे खुलकर उल्लासपूर्ण हंसी हंसते और बड़े प्यार से एक-दूसरे के कंधे थपथपाते।

"हमारे जर्मन साथी ज़िन्दाबाद!" कोई ऐसे चिल्लाता मानो हर्ष के नशे में चूर हो।

"इटली के मज़दूर ज़िन्दाबाद!" किसी दूसरे अवसर पर वे नारा लगाते।

ऐसा मालूम होता था कि सुदूर देशों में रहनेवाले मज़दूरों को, जो उन्हें जानते भी नहीं थे और उनकी बोली भी नहीं समझ सकते थे, इस हर्षध्वनि से सम्बोधित करते समय उन्हें इस बात का विश्वास हो कि ये अज्ञात लोग उनकी आवाज़ सुन रहे हैं और उनके उल्लास को समझ रहे हैं।

"क्या यह अच्छा न होगा कि हम उन्हें ख़त लिखें?" उक्रइनी ने कहा; उसकी आंखों में एक मंद ज्योति चमक उठी। "ताकि उन्हें यह मालूम हो जाये कि यहां रूस में भी उनके दोस्त रहते हैं जो उन्हीं के विचारों को मानते और उनका प्रचार करते हैं, जो उसी उद्देश्य के लिए जीते हैं और उन्हीं सफलताओं पर ख़ुशियां मनाते हैं।"

फ़ांसीसियों, अंग्रेज़ों और स्वीडेनवासियों के बारे में वे अपने दोस्तों की तरह बातें करते, ऐसे लोगों के बारे में, जो उनके हृदय के निकट थे, जिनका वे सम्मान करते थे और जिनके सुख-दुःख में वे साझेदार थे, उनकी बातें करते समय उनके चेहरे खिल उठते।

इस छोटे-से घुटे हुए कमरे में सारी दुनिया के मज़दूरों के साथ आत्मिक रूप से एकबद्ध होने की भावना जागृत हुई। यह भावना सबके हृदय में थी, मां के हृदय में भी, और यद्यपि वह इसका अर्थ नहीं समझ सकती थी फिर भी यह उसे शक्ति प्रदान करती थी – इसमें कितनी उमंग, कितना मादक उल्लास और कितनी आशा भरी हुई थी।

"ज़रा सोचो तो!" एक बार उसने उक्रइनी से कहा। "सभी लोग तुम्हारे साथी हैं – यहूदी भी, आर्मीनियाई भी और आस्ट्रियाई भी – उन सबके सुख-दुःख में साथ हो!"

"हां अम्मा, सबके! सबके!" उक्रइनी ने जोश के साथ कहा। "हम किसी जाति या क़ौम का भेद नहीं मानते। सिर्फ़ साथी हैं या सिर्फ़ दुश्मन। सारे मेहनतकश हमारे साथी हैं, सब अमीर लोग, सब सरकारें हमारी दुश्मन हैं। जब हम इस दुनिया पर नज़र डालते हैं और देखते हैं कि हमारे जैसे मज़दूर कितने अधिक हैं और वे कितने ताक़तवर हैं तो हमारी ख़ुशी और हमारे दिलों में जोश की कोई हद नहीं रहती! मां, जब कोई फ़ांसीसी या जर्मन चीज़ों को इसी तरह देखता है तो वह भी यही अनुभव करता है और यही हाल इटलीवालों का है। हम सभी एक ही मां के बच्चे हैं – सारी दुनिया के मज़दूरों के भ्रातृत्व के अजेय विचार के बच्चे हैं। यह विचार हमारे दिलों को गरमाता है। यह विचार एक न्यायपूर्ण आकाश पर चमकते हुए सूर्य के समान है और वह आकाश मज़दूर का हृदय है। वह कोई भी हो, अपने आपको वह कुछ भी कहता हो, हर समाजवादी आत्मा के रिश्ते से हमेशा हमारा भाई है – कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा!"

उनका यह बच्चों जैसा, पर दृढ़ विश्वास अधिकाधिक स्पष्ट रूप से, अधिकाधिक उदात्त रूप से प्रकट होता गया और बढ़ते-बढ़ते एक प्रबल शक्ति बन गया। और जब मां ने यह देखा तो उसकी अन्तरात्मा ने यह अनुभव किया कि संसार ने सचमुच सूर्य जैसी किसी महान और उज्ज्वल वस्तु को जन्म दिया है जिसे वह स्वयं अपनी आंखों से देख सकती है।

वे बहुधा गाने गाते। ऊंचे, उल्लास-भरे स्वर में वे सीधे-सादे गीत

गाते जिनसे सभी लोग परिचित थे। पर कभी-कभी वे नये गीत भी गाते, गंभीर गीत, जिनका संगीत बहुत प्यारा और धुनें अनोखी होती थीं। इन गीतों को वे धीमे स्वरों में गाते थे जैसे गिरजाघरों का संगीत होता है। गानेवालों के चेहरे लाल या पीले हो जाते और उनके गूंजते हुए शब्दों में बड़ी सबलता व्यक्त होती थी।

मां को एक नये गीत ने विशेष रूप से आन्दोलित किया। उसमें शंका और अनिश्चय की भूल-भुलैयों में अकेली भटकती हुई किसी पीड़ित आत्मा के व्यथा-भरे उद्‌गार व्यक्त नहीं किये गये थे। न उसमें अभाव के मारे और भय के कुचले हुए, नीरस और व्यक्तित्वहीन प्राणियों का करुण क्रन्दन ही था। न उसमें अनन्त गगन में भटकती हुई किसी अन्ध-शक्ति की उदास आहें सुनायी देती थीं और न भले और बुरे दोनों ही पर समान रूप से प्रहार करने को तत्पर विवेकहीन दुस्साहस की चुनौतियों की ललकार ही। गीत में अन्याय के ऐसे आभास या प्रतिशोध की ऐसी इच्छा का भी वर्णन नहीं किया गया था जो मनुष्य को अन्धा बना दे, जिसमें नष्ट करने की क्षमता तो हो, पर सृजन की नहीं। इस गीत में पुराने, दासता के बंधनों में जकड़े हुए संसार की कोई बात नहीं थी।

मां को इसकी गम्भीर धुन और कठोर शब्द बिल्कुल पसंद नहीं थे, पर इन शब्दों और इस धुन के पीछे कोई इससे भी बड़ी चीज़ थी जो शब्दों और धुन पर छा जाती थी और एक ऐसी चीज़ की भावना उत्पन्न करती थी जो इतनी विशाल थी कि कल्पना की परिधि में उसे नहीं समेटा जा सकता था। उसने इस चीज़ को नौजवानों की आंखों में और उनके चेहरों में देखा; उसे आभास हुआ कि वह चीज़ उनके अन्दर काम करती है। वह एक ऐसी शक्ति के वश में होकर जो शब्दों और संगीत की सीमाओं को तोड़कर बहुत आगे निकल जाती थी, इस गीत को किसी भी दूसरे गीत की अपेक्षा अधिक ध्यान से, अधिक विकलता के साथ सुनती थी।

वे इस गीत को और गीतों की अपेक्षा मंद स्वर में गाते थे, पर उसकी गूंज अधिक प्रबल होती थी और लोगों पर उसका नशा बसन्ती बयार की मादकता की तरह छा जाता था।

"समय आ गया है कि अब हम इस गीत को सड़कों पर गाया करें," वेसोवश्चिकोव बहुत गंभीर मुद्रा धारण करके कहा करता था।

जब उसके पिता को एक बार फिर चोरी करने के अपराध में जेल

भेज दिया गया तो वेसोवश्चिकोव ने अपने साथियों से कहा :

"अब हमारी ये बैठकें मेरे घर हो सकती हैं ..."

प्राय: रोज़ शाम को पावेल का कोई न कोई साथी काम के बाद उसके साथ घर आता था और वे बैठकर कुछ पढ़ते-लिखते थे। वे इतनी जल्दी में होते थे और अपने काम में इतने खोये रहते थे कि हाथ-मुंह भी नहीं धोते थे। किताबें हाथ में लिये-लिये ही वे खाना खाते और चाय पीते। मां के लिए उनकी बातें समझना दिन-प्रतिदिन अधिक कठिन होता गया।

"हमें एक अख़बार निकालना चाहिये!" पावेल बहुधा कहा करता था।

जीवन की धारा अधिक वेगमय तथा प्रबल हो गयी और लोग ज़्यादा जल्दी-जल्दी एक पुस्तक को समाप्त करके दूसरी पुस्तक पढ़ने लगे, जैसे मधु-मक्खियां एक फूल का रस चूसकर दूसरे फूल पर जा बैठती हैं।

"अब हम लोगों की चर्चा होने लगी है," वेसोवश्चिकोव ने कहा। "जल्द ही वे हमें गिरफ़्तार करना शुरू कर देंगे ..."

"बकरे की मां कब तक ख़ैर मनायेगी," उक्रइनी ने अपना मत प्रकट किया।

मां को दिन-प्रतिदिन वह ज़्यादा अच्छा लगने लगा था। जब वह उसे "अम्मा" कहता तो उसे ऐसा लगता जैसे किसी नन्हे-से बच्चे ने अपना कोमल हाथ उसके गाल पर फेर दिया हो। यदि किसी दिन इतवार को पावेल व्यस्त होता तो उक्रइनी लकड़ी चीर देता। एक दिन वह कंधे पर एक तख़्ता लादे हुए आया और कुल्हाड़ी लेकर उसने जल्दी-जल्दी और बड़ी दक्षता के साथ बरामदे के लिए पुराने ज़ीने के स्थान पर, जो बिल्कुल सड़ गया था, एक नया ज़ीना बना दिया। एक बार उसने इसी प्रकार बिना किसी को जताये चहारदीवारी का जंगला ठीक कर दिया, जो बिल्कुल झुक गया था। काम करते समय वह हमेशा किसी सुन्दर दर्दीली धुन पर सीटी बजाता रहता था।

"उक्रइनी को हम अपने घर में ही क्यों न रख लें?" एक दिन मां ने अपने बेटे से कहा। "तुम दोनों के लिए अच्छा रहेगा – हर वक़्त भाग-भागकर एक-दूसरे के घर नहीं जाना पड़ेगा।"

"क्यों अपनी तकलीफ़ बढ़ाती हो?" पावेल ने कंधे झटककर उत्तर दिया।

"यह क्या कहते हो ?" मां बोली। "सारी उमर मैंने बेकार ही तकलीफ़ उठायी है। अब अगर उसके जैसे भले आदमी के लिए कुछ तकलीफ़ भी हो, तो क्या है!"

"जैसा चाहो, करो!" बेटे ने कहा। "उसके आ जाने से मुझे तो ख़ुशी ही होगी।"

और इस प्रकार उक्रइनी उनके साथ रहने लगा।

८

बस्ती के सिरे पर स्थित उस छोटे-से घर की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ, दर्जनों चोर निगाहें उसकी दीवारों को बेधकर अन्दर देखने का प्रयत्न करने लगीं। अफ़वाहों के दूषित पंख तेज़ी से उस घर पर फड़फड़ाने लगे। लोग कोशिश करने लगे कि पुश्ते के सिरे पर स्थित उस घर में जिस रहस्यमय वस्तु के छिपे होने का उन्हें आभास था उसे किसी प्रकार आतंकित करके बाहर निकाल लायें। रात को वे खिड़की से अन्दर झांकते और कभी-कभी तो शीशे पर खटखटाते भी, पर डरकर भाग जाते।

एक दिन पेलागेया निलोवना को भटियारख़ाने के मालिक बेगुनत्सोव ने रास्ते में रोका। वह देखने में बहुत नेक बूढ़ा आदमी था जो हमेशा मोटे मख़मल की बैंगनी वास्कट पहनता था और उसकी पिलपिली लाल गर्दन पर काला रेशमी रूमाल बंधा रहता था। उसकी चमकदार नुकीली नाक पर कछुए की खपरी की बनी हुई कमानियोंवाली ऐनक चढ़ी रहती थी और इसी कारण लोगों ने उसका नाम "हड्डी की आंखें" रख दिया था।

दम लेने के लिए रुके बिना या उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने मां पर ओलों की तरह शब्दों की बौछार शुरू कर दी।

"पेलागेया निलोवना, कहो कैसी हो? और तुम्हारा बेटा? कुछ ब्याह-व्याह करने का इरादा नहीं है क्या उसका? मेरे ख़्याल में तो अब उसकी उमर हो गयी है। बेटों का ब्याह जितनी जल्दी हो जाये, मां-बाप के लिए उतना ही अच्छा होता है। आदमी अपना घर बसा ले तो उसके तन-मन दोनों के लिए ठीक वैसा ही अच्छा रहता है, जैसे सिरके में खुम्बी नहीं ख़राब होने पाती। तुम्हारी जगह अगर मैं होता, तो अब तक उसका ब्याह कर दिया होता। ज़माना ही ऐसा आ गया है कि इस

बात का ध्यान रखना पड़ता है कि कौन कैसे रहता है। लोग मनमाने ढंग से रहने लगे हैं। उल्टी-सीधी बातें सोचने लगे हैं और वैसे ही काम करने लगे हैं। नौजवानों ने गिरजाघरों में भी जाना छोड़ दिया है और जहां बहुत से लोग जमा हों उन जगहों से कतराने लगे हैं। अंधेरे कोनों में छुप-छुपकर वे अपने रहस्यों के बारे में कानाफूसी करते हैं। मैं पूछता हूं यह खुसुर-पुसुर क्यों? लोगों से कतराना क्यों? ऐसी कौन-सी बात है जिसे सबके सामने – जैसे भटियारखाने में – कहने से वे डरते हैं? कोई भेद की बात है? तो भेद की बात करने की तो बस एक ही जगह है और वह है हमारा पवित्र गिरजाघर! यह कोनों में छिप-छिपकर खुसुर-पुसुर करने की आदत दिमाग़ का ख़लल है! अच्छा, पेलागेया निलोवना, खुश रहो!"

उसने अपनी टोपी उतारकर हिलायी और चल दिया; मां आश्चर्य-चकित खड़ी रह गयी।

एक बार और ऐसा ही हुआ: व्लासोव-परिवार की पड़ोसिन मारिया कोरसुनोवा, जो एक लोहार की विधवा थी और फ़ैक्टरी के फाटक पर खाने की चीज़ें बेचकर अपना पेट पालती थी, बाज़ार में पेलागेया निलोवना को मिल गयी। बोली:

"पेलागेया, अपने बेटे पर नज़र रखो!"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" मां ने पूछा।

"तरह-तरह की बातें सुन रही हूं!" मारिया ने बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से कहा। "बुरी-बुरी बातें, समझीं, मां। लोग कहते हैं कि वह एक गुप्त सम्प्रदाय बना रहा है, फ़्लैगेलान्टों की तरह। फ़्लैगेलान्टों की तरह ही वे एक-दूसरे की खाल खींच लेंगे..."

"यह सब बकवास है, मारिया!"

"आग के बिना धुआं नहीं होता," खोमचेवाली ने कहा।

मां ने इन सब बातों की सूचना अपने बेटे को दी, पर उसने केवल अपने कंधे झटक दिये और उक्रइनी हमेशा की तरह अपनी कोमल आवाज़ में खिलखिलाकर हंस दिया।

"लड़कियां भी बहुत बुरा माने हुए हैं," मां ने कहा। "तुम लोग बहुत भले लड़के हो, कोई भी लड़की तुमसे ब्याह करके अपने आपको भाग्यवान समझेगी; मेहनती हो और शराबी भी नहीं हो, मगर तुम लड़कियों की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं देते! लोग कहते हैं कि शहर की बुरी लड़कियां तुमसे मिलने आती हैं..."

"हटाओ भी!" पावेल ने झुंझलाहट के साथ मुंह बनाकर कहा।

"दलदल की हर चीज़ से सड़ांध आती है," उक्रइनी ने आह भरकर कहा। "अरे मां, तुम इन नादान छोकरियों को समझा दो कि ब्याह करके घर बसाने का मतलब क्या होता है, तब वे अपना सर ओखली में देने को इतनी बेताब न होंगी..."

"कैसी बात कहते हो!" मां ने कहा। "वे सब कुछ अच्छी तरह जानती हैं, सब समझती हैं मगर वे कर ही क्या सकती हैं?"

"अगर वे समझती होतीं तो कोई दूसरा रास्ता ढूंढ़ लेतीं," पावेल ने अपना विचार प्रकट किया।

मां ने अपने बेटे के गंभीर चेहरे को देखा।

"तुम इनको पढ़ाते क्यों नहीं? उनमें जो समझदार हैं उन्हें यहां बुला लिया करो।"

"यह बेतुकी बात होगी," बेटे ने रुखाई से जवाब दिया।

"पर अगर आज़माकर देखा जाये तो?" उक्रइनी ने पूछा।

पावेल ने कुछ देर चुप रहकर उत्तर दिया:

"जोड़ों के सैर-सपाटे शुरू हो जायेंगे, कुछ का ब्याह हो जायेगा और बस, क़िस्सा ख़त्म!"

उसकी मां सोच में पड़ गयी। उसे पावेल की साधु-संतों जैसी नीरसता के कारण चिन्ता होने लगी थी। वह देखती थी कि सभी लोग, उक्रइनी की भांति उससे बड़ी उमर के उसके साथी भी उससे सलाह लेते थे, पर उसे ऐसा लगता था कि वे उसके बेटे से डरते थे और उसकी नीरसता के कारण कोई भी उससे प्यार नहीं करता था।

एक दिन रात को जब वह सोने लेट चुकी थी और उसका बेटा तथा उक्रइनी पढ़ रहे थे, उसे पतली-सी ओट के उस पार से उनकी दबी-दबी आवाज़ सुनायी दी।

"मुझे वह नताशा अच्छी लगती है," सहसा उक्रइनी ने कहा।

"मैं जानता हूं," पावेल ने कुछ देर रुककर कहा।

मां को उक्रइनी के धीरे से उठकर नंगे पैर कमरे में टहलने की आहट सुनायी दी। वह बहुत धीमे स्वर में किसी उदास धुन पर सीटी बजाने लगा, फिर यकायक रुककर दबी आवाज़ में बोला:

"मालूम नहीं उसने कभी इस बात पर ध्यान दिया भी है कि नहीं।"

पावेल ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम्हारा क्या ख़्याल है?" उक्रइनी ने लगभग उसके कान में कहा।

"उसने ज़रूर ध्यान दिया है," पावेल ने उत्तर दिया। "इसी लिए तो उसने यहां आना छोड़ दिया।"

उक्रइनी अपने बोझल क़दमों को घसीटता हुआ कमरे में टहलने लगा और एक बार फिर उसकी सीटी का मन्द स्वर कमरे में कम्पित हो उठा।

"अगर मैं उससे साफ़-साफ़ कह दूं तो क्या कुछ हर्ज है?" उक्रइनी ने पूछा।

"क्या कह दो?"

"यही कि – कि मैं ..." उक्रइनी ने स्वर धीमा कर लिया।

"आखिर क्यों?" पावेल ने उसे बीच में ही टोक दिया।

मां ने आहट से अंदाज़ा लगाया कि उक्रइनी ने टहलना बन्द कर दिया है और उसे ऐसा लगा कि जैसे वह खड़ा मुस्करा रहा है।

"मेरा ख़्याल है कि किसी को अगर किसी लड़की से प्यार हो जाये तो उसे उससे कह देना चाहिये, नहीं तो उसका नतीजा कोई नहीं निकलता।"

पावेल ने ज़ोर से अपनी किताब बन्द की।

"आख़िर तुम क्या नतीजा चाहते हो?" उसने पूछा।

दोनों बड़ी देर तक चुप रहे।

"तुम्हारा क्या ख़्याल है?" उक्रइनी ने पूछा।

"अन्द्रेई, तुम्हें इस बात का सही-सही अंदाज़ा होना चाहिये कि तुम क्या चाहते हो," पावेल ने धीमे-धीमे कहा। "मान लो वह भी तुमसे प्यार करती है – मुझे इसमें शक है मगर फिर भी मान लो – और तुम दोनों की शादी हो जाती है। क्या ख़ूब जोड़ी रहेगी। वह पढ़ी-लिखी और तुम निरे मज़दूर! फिर बच्चे होंगे और उनका पेट पालने के लिए तुम्हें दिन-रात ख़ून-पसीना एक करना पड़ेगा। रोटी के टुकड़ों, बच्चों और मकान के किराये की फ़िक्र में ज़िंदगी एक जंजाल बन जायेगी। तुम हमारे ध्येय के लिए किसी काम के नहीं रह जाओगे। तुम दोनों!"

थोड़ी देर तक ख़ामोशी रही। इसके बाद पावेल ने फिर बोलना शुरू किया पर उसके स्वर में अब उतनी सख़्ती नहीं थी।

"अन्द्रेई, अच्छा यही है कि यह सब कुछ भूल जाओ। उसके लिए कठिनाइयां पैदा न करो ..."

ख़ामोशी। घड़ी की टिक-टिक साफ़ सुनायी दे रही थी, समय बीत रहा था।

"मेरा आधा दिल प्यार करता है और आधा दिल नफ़रत। यह भी कोई दिल है?"

पन्ने उलटने की आवाज़ सुनायी दी – पावेल ने शायद फिर अपनी किताब पढ़नी शुरू कर दी थी। उसकी मां आंखें बंद किये लेटी थी; वह सांस लेने तक से डर रही थी। वह उक्रइनी के लिए दुःखी थी, उसका हृदय रो रहा था, पर अपने बेटे के लिए वह और भी दुःखी थी।

"हाय, बेचारा मेरा बच्चा!" मां ने सोचा।

"तुम्हारा ख़्याल है कि मुझे चुप ही रहना चाहिये?" सहसा उक्रइनी ने आवेश में आकर कहा।

"यह ज़्यादा ईमानदारी होगी," पावेल ने शान्त भाव से उत्तर दिया।

"चलो, ऐसा ही सही," उक्रइनी बोला, कुछ क्षण बाद उसने उदास होकर बहुत धीरे से कहा, "पावेल, जब तुम पर ऐसी बनेगी, तब जानोगे।"

"अभी जान रहा हूं..."

हवा घर की दीवार से टकरा रही थी। घड़ी की टिक-टिक समय बीतने की सूचना दे रही थी।

"कोई मज़ाक़ नहीं है यह!" उक्रइनी ने धीरे-धीरे कहा।

मां तकिये में मुंह छुपाकर चुपके-चुपके रोने लगी।

सुबह उसे ऐसा लगा कि अन्द्रेई और भी छोटा हो गया है और पहले से भी ज़्यादा प्यारा लगने लगा है। उसका दुबला-पतला और ताड़ जैसा सीधा बेटा हमेशा की तरह ख़ामोश था। अब से पहले मां ने कभी उक्रइनी को अन्द्रेई ओनीसिमोविच के अलावा और कुछ कहकर संबोधित नहीं किया था, पर आज अनजाने ही उसने कहा:

"अंद्रेई, अपने जूते मरम्मत करा लो, नहीं तो तुम्हें ठंड लग जायेगी।"

"अब की तनख़्वाह मिलने पर मैं नया जोड़ा ले लूंगा," उसने हंसकर उत्तर दिया। फिर उसने अपनी लम्बी भुजा मां के कंधे पर रखकर कहा, "शायद तुम ही मेरी असली मां हो! लेकिन तुम इस बात को मानना नहीं चाहतीं, क्योंकि मैं इतना बदसूरत हूं। है न यही बात?"

4–1065

मां ने कोई उत्तर दिये बिना उसका हाथ थपथपाया। वह बहुत-सी स्नेह-भरी बातें कहना चाहती थी, पर उसका दिल भर आया और शब्द उसके होंटों से निकल ही नहीं पाये।

६

बस्ती में समाजवादियों की चर्चा होने लगी, जो नीली स्याही में छपे हुए पर्चे बांटते थे। इन पर्चों में फ़ैक्टरी के व्यवस्थापकों की कड़ी आलोचना की जाती थीं, उनमें पीटर्सबर्ग और दक्षिणी रूस की हड़तालों के बारे में बताया जाता था, और मज़दूरों को अपने हितों की रक्षा के लिए अपनी एकता क़ायम करने के लिए ललकारा जाता था।

अधेड़ उम्र के लोग जो फ़ैक्टरी में अच्छे पैसे पैदा कर रहे थे, बहुत नाराज़ थे।

"बेकार झगड़ा करानेवाले लोग हैं!" वे कहते। "इन हरकतों पर तो इनका मुंह तोड़ देना चाहिये!" और वे ये परचे अपने मालिकों को दे आते थे।

नौजवान लोग उन्हें बड़े उत्साह से पढ़ते थे।

"एक-एक बात सच है!" वे कहते।

अधिकांश मज़दूर अपनी प्रतिदिन की मेहनत से इतने शिथिल होते थे कि वे इनकी ओर कोई विशेष ध्यान ही नहीं देते थे।

"इससे कुछ होनेवाला नहीं है। क्या यह मुमकिन है?"

लेकिन इन पर्चों ने एक हलचल पैदा कर दी और एक बार जब हफ़्ते-भर तक कोई नया पर्चा नहीं निकला तो मज़दूर आपस में कहने लगे, "मालूम होता है कि उन लोगों ने छापना ही बंद कर दिया है।"

लेकिन अगले सोमवार को फिर नये पर्चे बांटे गये और मज़दूर फिर आपस में कानाफूसी करने लगे।

फ़ैक्टरी और भटियारख़ाने में ऐसे नये लोग दिखायी पड़ने लगे जिन्हें कोई भी नहीं जानता था। वे टोह लगाते, चारों तरफ़ नज़र रखते और लोगों से तरह-तरह के सवाल पूछते। उनकी अत्यधिक सतर्कता और हर आदमी की बात में टांग अड़ाने के उनके ढंग के कारण उनके बारे में फ़ौरन शंका उत्पन्न होती थी।

मां ने अनुभव किया कि यह सारी हलचल उसके बेटे की कार्यवाहियों का ही नतीजा थी। उसने देखा कि लोग उसकी तरफ़ खिंचकर आते थे,

और अपने बेटे की कुशल की चिन्ता के साथ ही उसकी गर्व की भावना भी मिली हुई थी।

एक दिन शाम को मारिया कोरसुनोवा ने व्लासोव के घर की खिड़की पर दस्तक दी और जब मां ने खिड़की खोली तो उसने काफ़ी ज़ोर से उसके कान में कहा :

"पेलागेया, सावधान रहना! भंडा फूट गया। आज तुम्हारे घर की तलाशी ली जायेगी और माज़िन और वेसोवश्चिकोव के घर की भी ..."

मारिया के मोटे-मोटे होंट जल्दी-जल्दी खुलते और बंद होते रहे, उसने अपने मोटे नथुनों से ज़ोर से कई बार सांस अंदर खींची और पलकें झपकाकर पहले एक तरफ़ और फिर दूसरी तरफ़ देखा। वह देख रही थी कि सड़क पर कोई आ तो नहीं रहा है।

"और यह भी ध्यान रखना कि मुझे तो न कुछ मालूम है, न मैंने तुमसे कुछ कहा है और न मैं तुमसे आज मिली हूं, सुन लिया?"

इतना कहकर वह चली गयी।

मां ने खिड़की बंद कर दी और धीरे-धीरे एक कुर्सी पर बैठ गयी। पर उस ख़तरे का ध्यान आते ही जो उसके बेटे के सिर पर मंडरा रहा था, वह जल्दी से फिर खड़ी हो गयी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और सिर पर रूमाल बांधकर भागी हुई फ़्योदोर माज़िन के घर गयी। वह बीमार था इसलिए फ़ैक्टरी नहीं गया था। जिस समय उसने घर में प्रवेश किया वह खिड़की के पास बैठा किताब पढ़ रहा था और अपना दाहिना हाथ सहला रहा था, जिसका अंगूठा कुछ अस्वाभाविक रूप से अकड़ा हुआ था। यह ख़बर सुनते ही उसका रंग पीला पड़ गया और वह उछलकर खड़ा हो गया।

"भला सोचो तो!" उसने बुदबुदाकर कहा।

"अब हम क्या करें?" पेलागेया निलोवना ने कांपते हाथों से अपने माथे का पसीना पोंछते हुए पूछा।

"ज़रा रुको, घबराओ नहीं," फ़्योदोर ने अपने चंगे हाथ से घुंघराले बालों को पीछे करते हुए कहा।

"अरे, तुम तो ख़ुद घबराये हुए हो!" उसने चिल्लाकर कहा।

"मैं?" वह शर्मा गया और खिसियाकर मुस्कराने लगा। "हु, लानत है... हमें पावेल को ख़बर देनी चाहिये। मैं किसी को भेजता हूं। लेकिन तुम घर जाओ और चिन्ता न करो। वे हमें कोड़े थोड़े ही मारेंगे?"

घर पहुंचकर मां ने सारी किताबें बटोरीं और उन्हें अपने सीने से चिपकाये हुए इधर-उधर टहलने लगी। उसने चूल्हे के अन्दर, चूल्हे के नीचे और पानी की बाल्टी में नज़र दौड़ायी। उसने सोचा था कि पावेल फ़ैक्टरी से फ़ौरन भागा हुआ घर आयेगा, पर वह नहीं आया। आख़िर वह थककर रसोईघर की बेंच पर किताबें अपने नीचे रखकर बैठ गयी और जब तक पावेल और उक्रइनी घर नहीं आ गये तब तक वहीं बैठी रही, डर के मारे वहां से हिली भी नहीं।

"ख़बर मिल गयी तुम्हें?" उसने वहीं बैठे-बैठे चिल्लाकर कहा।

"हां," पावेल मुस्करा दिया। "तुम्हें डर लगता है?"

"बहुत ..."

"डरो नहीं," उक्रइनी ने कहा। "इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा।"

"अभी तक समोवार भी नहीं जलाया," पावेल ने कहा।

"इनकी वजह से," मां ने अपराधी की तरह उठकर किताबों की तरफ़ संकेत करते हुए कहा।

पावेल और उक्रइनी ज़ोर से हंस पड़े, इससे मां को कुछ ढाढ़स बंधा। पावेल ने कुछ किताबें निकाल लीं और उन्हें छिपाने के लिए बाहर ले गया।

"अम्मा, डरने की कोई बात नहीं है," उक्रइनी ने समोवार में आग सुलगाते हुए कहा। "मगर शर्म की बात है कि लोग इस तरह की बेवक़ूफ़ियों में अपना वक़्त ख़राब करते हैं। तलवारें लटकाये और जूतों की एड़ियां बजाते हुए प्रौढ़ लोग यहां आयेंगे और हर चीज़ उलट-पलट डालेंगे, पलंग के नीचे ढूंढ़ेंगे, चूल्हे के नीचे ढूंढ़ेंगे, तहख़ाने में जायेंगे, ऊपर अटारी पर चढ़ेंगे! उनकी नाक में मकड़ी का जाला घुसेगा और वे झुंझलाकर अपने नथुने फुफकारने लगेंगे। बड़ी ऊब पैदा करनेवाला काम है यह, उन्हें शर्म आती है और इसलिए वे ऐसा जताते हैं जैसे बहुत ग़ुस्सैल हों और हम पर आगबबूला हो रहे हैं। वे तो जानते हैं कि उनका काम बहुत गंदा है! एक बार तो मेरी सारी चीज़ें उलट-पुलटकर देखने पर उन्हें इतनी खिसियाहट हुई कि वे तलाशी अधूरी ही छोड़कर चले गये। एक बार और ऐसा ही हुआ और वे मुझे साथ लेते गये और चार महीने तक जेल में बंद रखा। जेल में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के अलावा कुछ होता ही नहीं है। कुछ दिन बाद सम्मन मिलता है और सिपाही अपने साथ सड़कों पर घुमाते हुए कहीं ले जाते हैं जहां कोई

बहुत बड़ा अफ़सर बहुत-से सवाल पूछता है। ये अफ़सर भी काफ़ी बुद्धू होते हैं – दुनिया भर की उल्टी-सीधी बातें करते हैं और इसके बाद सिपाहियों को हुक्म देते हैं कि क़ैदी को फिर जेल में पहुंचा दिया जाये। इसी तरह वे इधर से उधर रपटाते रहते हैं – आखिर उन्हें जो तनख़्वाह मिलती है उसके बदले में वे कुछ कारगुज़ारी भी तो दिखलायें! अन्त में वे क़ैदी को छोड़ देते हैं और बस क़िस्सा ख़त्म हो जाता है!"

"अन्द्रेई, कैसी बातें किया करते हो तुम हमेशा!" मां ने आश्चर्य से कहा।

वह घुटनों के बल झुका हुआ समोवार में आग सुलगा रहा था; उसने अपना तमतमाया हुआ चेहरा उठाया और मूंछों पर हाथ फेरकर पूछा :

"कैसी?"

"जैसे किसी ने कभी तुम्हारा दिल ही न दुखाया हो।"

"इस दुनिया में कोई भी ऐसा है जिसका दिल कभी न दुखा हो?" उक्रइनी उठा और सिर हिलाते हुए मुस्कराकर बोला। "मुझे इतना दुःख दिया गया है कि मैंने अब ध्यान ही देना छोड़ दिया है। जब लोग हैं ही ऐसे तो हो ही क्या सकता है? अगर आदमी इन सब बातों की तरफ़ ध्यान देने लगे तो उसके काम में हर्ज होने के अलावा कुछ नहीं होता और इन बातों पर कुढ़ना अपना वक़्त ख़राब करना है। ज़िंदगी का ढंग ही कुछ ऐसा है! पहले मैं भी लोगों से नाराज़ हो जाया करता था, लेकिन फिर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि यह सब बेकार है। हर आदमी डरता है कि उसका पड़ोसी उसे खा जायेगा, इसलिए वह पहले खुद ही उस पर वार करना चाहता है। मेरी मां, ज़िंदगी का ढंग ही ऐसा है!"

उसके शब्दों का प्रवाह अबाध गति से जारी था और उसकी इन बातों से होनेवाली तलाशी के बारे में मां का भय दूर होता गया। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में चमक थी और मां ने देखा कि बेडौल होने के बावजूद उसमें कितनी फुर्ती है।

मां ने एक आह भरी।

"अन्द्रेई, भगवान तुम्हें सुखी रखे!" उसने हार्दिक कामना की।

उक्रइनी लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ फिर समोवार के पास जाकर उकड़ूं बैठ गया।

"अगर मुझे कभी ज़रा-सी भी खुशी नसीब हुई, तो मैं उसे ठुकरा-

ऊंगा नहीं," उसने अस्फुट स्वर में कहा, "मगर उसके लिए हाथ पसारकर नहीं दौड़ूंगा।"

पावेल बाहर से आया।

"अब उन्हें उमर-भर कुछ भी नहीं मिल सकता," उसने विश्वास के साथ कहा और अपने हाथ धोने लगा। अच्छी तरह हाथ पोंछते हुए वह मां को सम्बोधित करके बोला:

"अगर तुमने उन्हें यह मालूम हो जाने दिया कि तुम डर रही हो तो वे सोचेंगे कि ज़रूर घर में कोई ऐसी-वैसी चीज़ होगी तभी तो यह इस तरह थरथर कांप रही है। तुम जानती हो कि हम लोग कोई ग़लत काम नहीं कर रहे हैं, न्याय हमारी तरफ़ है और हम लोग जीवन-भर इसी के लिए काम करते रहेंगे। यही हमारा अपराध है, फिर हम क्यों डरें?"

"पावेल, मैं अपने को संभाल लूंगी," उसने आश्वासन दिया, पर दूसरे ही क्षण वह वेदनापूर्ण आवाज़ में कह उठी, "काश वे जल्दी से आ जायें!"

उस रात वे नहीं आये और इससे पहले कि अगली सुबह को वे दोनों लड़के उसकी हंसी उड़ाते, वह ख़ुद ही अपने आप पर हंसने लगी:

"ख़तरा आने से पहले ही डर गयी!"

१०

राजनीतिक पुलिस उस भयावह रात के लगभग एक महीने बाद आयी। निकोलाई वेसोवश्चिकोव पावेल और अन्द्रेई से मिलने आया था और वे तीनों अपने अख़बार के बारे में बहस कर रहे थे। बहुत देर हो चुकी थी–लगभग आधी रात का समय था। मां सोने जा चुकी थी और बिस्तर पर ऊंघते-ऊंघते वह उनकी दबी-दबी उत्सुकता-भरी आवाज़ें सुन रही थी। इतने में अन्द्रेई ने दबे पांव रसोईघर को लांघा और अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया। एक बाल्टी के गिरने की आवाज़ हुई, दरवाज़ा जल्दी से खुला और अन्द्रेई फिर रसोईघर में चला गया।

"एड़ों के खनकने की आवाज़ आ रही है!" उसने दबी आवाज़ में कहा।

मां उछलकर पलंग से नीचे आ खड़ी हुई और अपनी कांपती हुई उंगलियों से उसने झपटकर अपने कपड़े उठा लिए, पर इतने में पावेल दरवाज़े पर आया और उसने शान्त स्वर में कहा:

"जाओ, लेट जाओ, तुम्हारा जी अच्छा नहीं है।"

बाहर कुछ आहट हुई। पावेल ने जाकर झटके के साथ दरवाज़ा खोला, और बोला:

"कौन है?"

भूरी पोशाक में एक लम्बा-चौड़ा आदमी फ़ौरन अन्दर आया और उसके पीछे एक दूसरा आदमी, दो हथियारबंद सन्तरियों ने पावेल को धक्का दिया और उसके दोनों तरफ़ एक-एक खड़ा हो गया।

"इन्तज़ार तुम्हें किसका था और आ गया कौन, है न?" किसी ने व्यंगपूर्वक उच्च स्वर में कहा।

ये शब्द छिदरी-सी काली मूंछोंवाले लम्बे क़द के एक दुबले-पतले अफ़सर के थे। एक स्थानीय पुलिसवाला, जिसका नाम फ़ेद्याकिन था, मां के पलंग की तरफ़ गया।

"यह मां है, हुज़ूर," उसने एक हाथ से फ़ौजी सलाम करके और दूसरे से पेलागेया निलोवना की ओर संकेत करते हुए कहा।

"और वह यह है," उसने पावेल की ओर हाथ उठाकर कहा।

"पावेल व्लासोव?" अफ़सर ने अपनी आंखें सिकोड़कर पूछा।

पावेल ने सिर हिला दिया।

"मैं तुम्हारे घर की तलाशी लेने आया हूं," अफ़सर ने अपनी मूंछें ऐंठते हुए कहा। "उठ, बुढ़िया! वहां अन्दर कौन है?" दरवाज़े में से झांककर वह दूसरे कमरे में गया।

"तुम लोगों के नाम क्या हैं?" उसकी आवाज़ सुनायी दी।

दो गवाह अन्दर आये। एक तो था बुज़ुर्ग ढलाई मज़दूर त्वेर्याकोव और दूसरा भट्ठी में कोयला झोंकनेवाला रीबिन। वह एक भूरे रंग का भारी-भरकम आदमी था और त्वेर्याकोव के घर में किराये की कोठरी लेकर रहता था।

"सलाम, निलोवना," उसने मां से ऊंचे, भारी स्वर में कहा।

कपड़े पहनते हुए मां अपनी हिम्मत बनाये रखने के लिए बुदबुदा रही थी:

"यह कौन-सा तरीक़ा है आधी रात को इस तरह आने का! लोग जब सोने लगे तब ये आये हैं!.."

कमरा भरा हुआ था और न जाने क्यों वहां जूते की पालिश की गंध बसी हुई थी। उन दो राजनीतिक पुलिसवालों और स्थानीय थानेदार रीस्किन ने काफ़ी खड़बड़ करते हुए अल्मारियों पर से किताबें उतारीं

और उस अफ़सर के सामने मेज़ पर ढेर कर दीं। दो और आदमी दीवार पर घूंसे मारकर टोह लगा रहे थे, कुर्सियों के नीचे झांक रहे थे और उनमें से एक ने तो चूल्हे के ऊपर चढ़कर भी देखा। उक्रइनी और वेसोवश्चिकोव एक कोने में अग़ल-बग़ल खड़े थे। निकोलाई के चेचकरू चेहरे पर जहां-तहां लाली दौड़ गयी और वह एकटक अपनी छोटी-छोटी भूरी आंखों से उस अफ़सर को घूरता रहा। उक्रइनी खड़ा अपनी मूंछें ऐंठ रहा था और जब मां कमरे में आयी तो उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उसने धीरे से मुस्कराकर अपना सिर हिलाया।

अपने भय को क़ाबू में रखने के लिए मां हमेशा की तरह तिरछी होकर चलने के बजाय अपना सीना तानकर, सीधी चल रही थी जिसके कारण उसकी चाल-ढाल बहुत रोबदार मालूम हो रही थी और उसे देखकर कुछ हंसी भी आती थी। चलते समय वह बड़े ज़ोर से पटककर पांव रखती थी। पर उसकी भवें फड़क रही थीं।

अफ़सर अपने गोरे हाथ की पतली-पतली उंगलियों से झपटकर एक किताब उठाता और जल्दी-जल्दी उसके पन्ने पलटकर एक तरफ़ को फेंक देता। कुछ किताबें फ़र्श पर गिर पड़ीं। किसी ने एक शब्द भी न कहा। पसीने से तर सिपाही हांप रहे थे, उनके जूतों की एड़ें खनक रही थीं और वे बीच-बीच में पूछ लेते थे:

"यहां देख लिया?"

मां दीवार से सटी हुई पावेल के पास और उसकी ही तरह दोनों हाथ सीने पर बांधे खड़ी थी और उसकी नज़रें बराबर उस अफ़सर पर जमी हुई थीं। उसके घुटने जवाब दे रहे थे और उसकी आंखों पर एक शुष्क धुंधलापन छाया हुआ था।

"किताबें नीचे फेंके बिना काम नहीं चल सकता?" सहसा इस निस्तब्धता को चीरती हुई निकोलाई की कड़कदार आवाज़ सुनायी दी।

मां चौंक पड़ी। त्वेर्याकोव ने अपना सिर इस तरह झटका मानो किसी ने ठेल दिया हो; रीबिन खंखारा और उसने निकोलाई को घूरा।

अफ़सर ने अपनी आंखें सिकोड़कर तीर जैसी एक नज़र निकोलाई के चेचकरू कठोर चेहरे पर डाली। वह किताबों के पन्ने और भी तेज़ी से पलटने लगा। कभी-कभी उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आंखें फैल जातीं, मानो उसे असह्य पीड़ा हो रही हो और वह बेबसी के कारण अपना प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए रो पड़नेवाला हो।

"ए, सिपाही!" वेसोवश्चिकोव ने फिर कहा। "किताबें उठाओ!.."

सब सिपाहियों ने मुड़कर उसकी तरफ़ और फिर अपने अफ़सर की तरफ़ देखा। अफ़सर ने अपना सिर उठाया और निकोलाई के हृष्ट-पुष्ट शरीर को ग़ौर से आंका।

"हूं!" उसने नाक के सुर में कहा। "उठाकर रख दो!"

एक सिपाही झुककर फटी हुई किताबें उठाने लगा।

"निकोलाई चुप क्यों नहीं रहता," मां ने पावेल के कान में कहा।

उसने अपने कंधे झटक दिये। उक्रइनी ने अपना सिर झुका लिया।

"बाइबिल कौन पढ़ता है?"

"मैं!" पावेल ने उत्तर दिया।

"ये सब किताबें किसकी हैं?"

"मेरी!" पावेल ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है," अफ़सर ने टेक लगाकर आराम से कुरसी पर बैठते हुए कहा। उसने अपने पतले-पतले हाथों की उंगलियां चटकायीं, टांगें मेज़ के नीचे फैला लीं, और मूंछों पर ताव देकर निकोलाई से बोला:

"क्या तुम अन्द्रेई नाखोदका हो?"

"हां!" निकोलाई ने आगे बढ़कर कहा। उक्रइनी ने उसे कंधा पकड़कर पीछे ढकेल दिया।

"नहीं, यह नहीं, मैं हूं अन्द्रेई..."

अफ़सर ने अपना हाथ उठाकर उंगली से वेसोव्शिचकोव की तरफ़ संकेत करते हुए कहा:

"देखो, तुम ज़रा संभलकर रहो!"

और वह फिर अपने काग़ज़ों को उलटने-पुलटने लगा।

चांदनी रात बड़े निरीह और उदासीन भाव से खिड़की में झांक रही थी। कोई मकान के पास से गुज़रा और उसके पांवों के नीचे बर्फ़ के चरमराने की आवाज़ आयी।

"नाखोदका, तुम पहले भी राजनीतिक क़ैदी रह चुके हो न?"

"हां, एक बार रोस्तोव में और दूसरी बार सरातोव में। लेकिन वहां के सिपाही मुझे 'आप' कहकर सम्बोधित करते थे..."

अफ़सर ने अपनी दाहिनी आंख बंद करके उसे मला और फिर अपने छोटे-छोटे दांत निकालकर बोला:

"हां, नाखोदका, आप जानते हैं कि ये कौन लफ़ंगे हैं जो कारखाने में गंदा प्रचार करते हैं?"

उक्रइनी दांत खोलकर मुस्कराने लगा, अपने पंजों पर झूला और कुछ उत्तर देने ही को था कि निकोलाई की आवाज़ फिर सुनायी दी:

"लफ़ंगों को तो हम अब पहली बार देख रहे हैं..."

सन्नाटा छा गया। किसी ने कुछ भी नहीं कहा।

मां के माथे का निशान सफ़ेद पड़ गया और उसकी दाहिनी भौंह तन गयी। रीबिन की काली दाढ़ी एक विचित्र ढंग से कांपने लगी; उसने दाढ़ी में उंगलियां फेरकर अपनी आंखें झुका लीं।

"इस बदमाश को ले जाओ यहां से!" अफ़सर ने चिल्लाकर कहा।

दो सिपाहियों ने निकोलाई की बांहें पकड़ लीं और उसे ढकेलकर रसोई में ले गये; वहां पहुंचकर निकोलाई ने अपने पांव ज़ोर से फ़र्श पर गड़ा दिये और उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया।

"ठहरो!" उसने चिल्लाकर कहा। "मैं अपना कोट तो पहन लूं!"

बाग़ में से थानेदार अन्दर आया।

"वहां तो कुछ भी नहीं है, हमने हर जगह देख लिया।"

"सो तो पहले से ही नज़र आ रहा था," अफ़सर ने व्यंगपूर्वक मुस्कराते हुए कहा। "बहुत घुटे हुए आदमी से पाला पड़ा है हमारा!.."

मां ने उसकी बारीक और खनकदार आवाज़ सुनी और भय से उसके पीले चेहरे को देखा; उसे ऐसा आभास हुआ कि वह एक निर्मम शत्रु था जो आम लोगों को तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखता था। ऐसे लोगों से उसका पाला बहुत कम पड़ा था और वह उनके अस्तित्व को प्रायः भूल चुकी थी।

"तो ये हैं वे लोग जो उन पर्चों से बौखला उठते हैं," उसने सोचा।

"हराम की औलाद, जनाब अन्द्रेई ओनीसिमोविच नाखोदका, आप गिरफ़्तार किये जाते हैं!"

"किसलिए?" उक्रइनी ने अविचलित भाव से पूछा।

"बाद में मालूम हो जायेगा," अफ़सर ने अपने स्वर में बनावटी मिठास भरकर द्वेषपूर्ण ढंग से कहा। "तुम पढ़ना-लिखना जानती हो?" उसने पेलागेया निलोवना की तरफ़ मुड़कर पूछा।

"नहीं, यह पढ़ी-लिखी नहीं हैं!" पावेल ने उत्तर दिया।

"मैं तुमसे नहीं पूछ रहा हूं!" अफ़सर ने सख़्ती के साथ पावेल को टोका। "बता, बुढ़िया!"

मां का हृदय इस व्यक्ति के प्रति घृणा से भर उठा। सहसा वह

कांपने लगी मानो ठंडे पानी से नहा ली हो। उसने अपने को संभाला, उसका चोट का निशान नीला पड़ गया और उसकी भृकुटि तन गयी।

"इतना चिल्लाने की कोई ज़रूरत नहीं है!" उसने हाथ उठाकर कहा। "अभी तुमने इस दुनिया में देखा ही क्या है, तुम क्या जानो कि मुसीबत किसे कहते हैं..."

"मां, शान्त हो जाओ," पावेल ने उसे रोकने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"ज़रा रुको, पावेल!" मां ने चिल्लाकर कहा और मेज़ की तरफ़ बढ़ी। "किसलिए तुम लोगों की पकड़-धकड़ करते हो?"

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं! चुप रहो!" अफ़सर ने कुरसी से उठते हुए चिल्लाकर कहा। "गिरफ़्तार किये गये वेसोवश्चिकोव को यहां लाओ!"

अफ़सर एक काग़ज़ अपनी नाक के पास लाकर पढ़ने लगा।

निकोलाई वहां लाया गया। अफ़सर ने पढ़ना बंद करके चिल्लाकर कहा, "टोपी उतारो!"

रीबिन ने पेलागेया निलोवना के निकट आकर अपना कंधा उससे छुआते हुए कहा:

"मां, आपे से बाहर न हो!"

"मेरे दोनों हाथ तो ये लोग पकड़े हैं, मैं टोपी कैसे उतारूं?" निकोलाई ने कहा। उसकी आवाज़ की गरज में अफ़सर की आवाज़ डूब गयी, जो क़ानूनी कार्रवाई की रिपोर्ट पढ़ रहा था।

"इस पर दस्तख़त करो!" अफ़सर ने डपटकर कहा और काग़ज़ मेज़ पर फेंक दिया।

मां ने जब उनको दस्तख़त करते देखा तो उसका ग़ुस्सा दब गया, उसका दिल डूबने लगा और आंखों में वेदना और बेबसी के आंसू छलक आये। अपने विवाहित जीवन के बीस वर्षों में उसने अक्सर ऐसे आंसू बहाये थे, पर इधर कुछ दिनों से वह उनकी जलन भूल गयी थी। अफ़सर ने मां की तरफ़ देखा और बहुत तिरस्कार के साथ मुंह बनाकर कहा:

"देवी जी, अगर आप अभी इतने आंसू बहायेंगी, तो आगे चलकर इन्हें कहां से लायेंगी!"

मां के हृदय में फिर क्रोध की लहर उठी।

"मां की आंखों में हमेशा हर बात के लिए काफ़ी आंसू रहते हैं,

हर बात के लिए! अगर तुम्हारी मां है, तो वह इस बात को जानती होगी।"

अफ़सर ने जल्दी-जल्दी अपने काग़ज़ एक नये थैले में भरे, जिसका ताला चांदी की तरह चमक रहा था।

"चलो!" उसने आज्ञा दी।

"अच्छा, अन्द्रेई, विदा! विदा, निकोलाई!" पावेल ने उनसे हाथ मिलाते हुए शान्त भाव से प्यार-भरे स्वर में कहा।

"शायद तुम्हारी इनसे जल्दी ही मुलाक़ात होगी!" अफ़सर ने धीरे से मुस्कराते हुए कहा।

वेसोवश्चिकोव गहरी-गहरी सांसें ले रहा था; उसकी मोटी-सी गरदन पर उबलते ख़ून की लाली दौड़ गयी और उसकी आंखें रोष से चमकने लगीं। उक्रइनी के होंटों पर मुस्कराहट खिल उठी और उसने अपना सिर झुकाकर मां के कान में कुछ कहा। मां ने हाथ से उस पर सलीब का निशान बनाया और बोली:

"भगवान भला-बुरा सब देखता है..."

आख़िरकार भूरी वर्दियों वाले सिपाही दल बांधकर बरामदे में निकल गये और अपनी एड़ें खनकाते हुए ग़ायब हो गये। रीबिन सबसे आख़िर में गया। चलते-चलते भी वह पावेल को टकटकी बांधे देखता रहा।

"अच्छा, तो मैं चलता हूं," उसने कुछ सोचकर कहा और अपनी दाढ़ी में खांसता हुआ दरवाज़े से बाहर चला गया।

पावेल पीठ के पीछे दोनों हाथ बांधकर फ़र्श पर बिखरी हुई किताबों और कपड़ों को फलांगता हुआ कमरे में टहलने लगा।

"देखा? यह है इन लोगों का तरीक़ा," उसने उदास होकर कहा।

मां इधर-उधर बिखरी हुई चीज़ों को इस तरह देख रही थी मानो उसे विश्वास न हो रहा हो।

"आख़िर निकोलाई को इतनी जली-कटी बातें करने की क्या ज़रूरत थी?" मां ने खिन्न होकर कहा।

"मैं समझता हूं कि वह डर गया था," पावेल ने उत्तर दिया।

"यह भी कोई बात हुई... आये, उन्हें पकड़ा और लेकर चल दिये!" मां ने हाथ मलते और बड़बड़ाते हुए कहा।

उसका बेटा गिरफ़्तार नहीं किया गया था इसलिए उसके हृदय की

धड़कन कुछ शान्त थी। लेकिन उसने जो कुछ देखा था वह उसे इतना असंगत मालूम हो रहा था कि उसकी सोचने की शक्ति बिल्कुल नष्ट हो गयी थी।

"वह पीले चेहरेवाला हमारी हंसी उड़ा रहा था। हमें डराना चाहता था..."

"अच्छा, अम्मा," पावेल ने सहसा संकल्प के साथ कहा, "आओ, यह सब साफ़ कर दें।"

उसने उसे "अम्मा" कहा था और उसके स्वर में इस समय वही बात थी जो हमेशा उसके हृदय में मां के प्रति प्यार उमड़ने पर उसके स्वर में पैदा हो जाती थी। मां पास जाकर उसके चेहरे को घूरने लगी।

"क्या तुम्हें बहुत दुःख हो रहा है?" उसने शान्त स्वर में पूछा।

"हां," पावेल ने उत्तर दिया। "हां, दुःख तो होता ही है। वे लोग उनके साथ मुझे भी लेते जाते तो अच्छा होता।"

मां को लगा मानो पावेल की आंखों में आंसू हों। उसकी पीड़ा को कुछ-कुछ अनुभव करते हुए और उसे दिलासा देने के लिए उसने आह भरकर कहा:

"कुछ ही दिन की बात है, तुम्हें भी ले जायेंगे।"

"यह तो मैं जानता हूं कि वे मुझे भी ले जायेंगे," पावेल ने उत्तर दिया।

मां कुछ देर तक चुप रही।

"तुम भी कितने कठोर हो, पावेल!" उसने आख़िरकार कहा। "कभी तो मुझे ढाढ़स बंधाया करो! तुम्हें क्या मालूम कि मैंने कलेजे पर कैसे पत्थर रखकर इतनी बात कही थी, तुमने जले पर और नमक छिड़क दिया!"

उसने नज़र ऊपर उठायी, मां के पास आया और धीरे से बोला:

"मां, मैं झूठी तसल्ली देना नहीं जानता! तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी!"

मां ने गहरी आह भरी और इस बात का प्रयत्न करते हुए कि उसका गला रुंध न जाये, थोड़ी देर रुककर पूछा:

"क्या वे लोगों को बहुत यातनाएं देते हैं? सुना है खाल खींच लेते हैं और हड्डी-पसली तोड़ देते हैं? जब भी मुझे इसका ख़्याल आता है – मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं..."

"वे आत्मा को कुचल देते हैं। जब वे अपने गंदे हाथों से आत्मा पर प्रहार करते हैं तो उसमें ज़्यादा तकलीफ़ होती है..."

११

दूसरे दिन मालूम हुआ कि बुकिन, समोइलोव, सोमोव और पांच दूसरे लोगों को भी गिरफ़्तार किया गया था। शाम को फ़्योदोर माज़िन आया। उसके घर की भी तलाशी ली गयी थी। वह बहुत ख़ुश था और अपने को बहुत बहादुर समझ रहा था।

"फ़्योदोर, तुम्हें डर लगा था?" मां ने पूछा।

उसके चेहरे का रंग उतर गया, उसकी मुखाकृति में तनाव पैदा हो गया और उसके नथुने कांपने लगे।

"मुझे डर लग रहा था कि अफ़सर मुझे मारेगा। वह एक मोटा-सा काली दाढ़ीवाला आदमी था; उसकी उंगलियों पर बड़े-बड़े बाल थे और नाक पर काली ऐनक चढ़ाये था। ऐसा मालूम होता था कि जैसे वह बिल्कुल अंधा हो। वह बहुत चीख़ा-चिल्लाया, बहुत हाथ-पांव पटके। उसने चिल्लाकर कहा, 'मैं तुम्हें जेल में ठूंस दूंगा!' मुझे आज तक किसी ने नहीं मारा, मेरे मां-बाप तक ने नहीं। मैं उनका इकलौता बेटा था और वे मुझे बहुत प्यार करते थे।"

उसने एक क्षण के लिए आंखें बन्द करके अपने होंट भींच लिये और दोनों हाथों से बड़ी फुरती से अपने बाल पीछे किये। फिर उसने पावेल की तरफ़ देखकर कहा:

"अगर कभी किसी ने मुझ पर हाथ उठाने की हिम्मत की तो मैं अपनी जान की बाज़ी लगाकर उस पर टूट पड़ूंगा। दांतों से काटूंगा, चाहे वह मुझे वहीं मार ही क्यों न डाले, क़िस्सा तो ख़त्म हो जायेगा हमेशा के लिए!" उसकी आंखों में क्रोध की लाली थी।

"बिल्कुल सींक-सलाई तो हो, लड़ोगे क्या?" मां ने कहा।

"मगर फिर भी मैं लड़ूंगा!" फ़्योदोर ने दबी ज़बान से उत्तर दिया।

जब फ़्योदोर चला गया तो मां ने पावेल से कहा:

"सबसे पहले यही टूटेगा!.."

पावेल ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुछ मिनट बाद रसोई का दरवाज़ा धीरे से खुला और रीबिन अंदर आया।

"लो मैं फिर आ गया," उसने थोड़ा-सा हंसकर कहा। "कल रात वे लोग मुझे लाये थे और आज मैं अपनी मर्ज़ी से आया हूं!" उसने बड़े तपाक से पावेल से हाथ मिलाया और एक हाथ पेलागेया निलोवना के कंधे पर रखकर बोला:

"चाय मिलेगी?"

पावेल उसके चौड़े-चकले, सांवले चेहरे को, उसकी काली दाढ़ी और काली आंखों को बहुत ग़ौर से चुपचाप देखता रहा। उसकी शान्त नज़र में कुछ विशेष अर्थ था।

मां समोवार में आग सुलगाने के लिए रसोई में गयी। रीबिन ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा, मेज़ पर कुहनियां टिकाकर बैठ गया और पावेल को घूरने लगा।

"तो मामला यह है," उसने इस तरह कहा मानो अधूरी रह गयी बात का तार जोड़ रहा हो, "कि मैं तुमसे साफ़-साफ़ बात कर लेना चाहता हूं। मैं कुछ दिनों से तुम्हें देख रहा हूं। तुम्हारे बिल्कुल पड़ोस में ही रहता हूं। मैंने देखा है कि तुम्हारे घर में बहुत-से लोग आते हैं, पर वे न तो शराब पीते हैं और न हुल्लड़ करते हैं। पहली बात तो यह हुई। जो लोग इतनी शराफ़त से रहते हैं उनकी तरफ़ ध्यान जाता ही है। आदमी सोचता है कि दाल में कुछ काला ज़रूर है। जैसे मैं खुद भी सबसे कटा-कटा रहने के कारण लोगों की आंखों में खटकता हूं।"

उसकी आवाज़ भारी थी पर बात करने के ढंग में प्रवाह था। उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा और पावेल के चेहरे को घूरता रहा।

"लोग तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें करने लगे हैं। जैसे हमारे मकान-मालिक को ही ले लो। वह तुम्हें नास्तिक कहता है, क्योंकि तुम गिरजाघर नहीं जाते। वैसे तो मैं खुद भी नहीं जाता। फिर वे पर्चे। उन्हें तुम तैयार करते हो?"

"हां," पावेल ने उत्तर दिया।

"क्या कह रहे हो?" उसकी मां ने भय से आतंकित होकर रसोई के दरवाज़े में से सिर निकालकर ऊंचे स्वर में कहा। "तुम अकेले ही तो नहीं हो।"

पावेल हंस पड़ा और रीबिन भी।

"अच्छी बात है," रीबिन ने कहा।

मां फुफकारती हुई वहां से चली गयी ; इन लोगों ने उसकी बात की जिस तरह उपेक्षा की थी, उससे वह कुछ बुरा भी मान गयी थी।

"अच्छी बात है ऐसे पर्चे निकालना! लोगों में जोश पैदा होता है इनसे। कुल उन्नीस थे, है न?"

"हां," पावेल ने उत्तर दिया।

"तो इसका मतलब है कि मैंने सब पढ़े हैं। उनकी कुछ बातें मेरी समझ में नहीं आयीं, कुछ बातें बेकार भी थीं, मगर जब कोई आदमी इतनी बहुत-सी बातें कहेगा तो उसमें एक-दो बातें फालतू तो होंगी ही।"

रीबिन अपने मज़बूत सफ़ेद दांत खोलकर मुस्करा दिया।

"उसके बाद तलाशी हुई। इसने मुझे तुम्हारी तरफ़ सबसे ज़्यादा खींचा। तुम और उक्रइनी और निकोलाई – तुम सबने यह दिखला दिया कि ..."

वह उचित शब्द ढूंढ़ने के लिए रुका और खिड़की के बाहर घूरते हुए अपनी उंगलियों से मेज़ पर ताल देने लगा।

"...दिखला दिया कि तुम्हारा क्या रवैया है। कुछ यह रवैया था तुम लोगों का: 'हुज़ूर, आप अपना काम करते जाइये, हम अपना काम करते रहेंगे।' उक्रइनी भी बहुत उम्दा आदमी है। कभी-कभी जब मैं उसे फ़ैक्टरी में बोलते हुए सुनता हूं तो अपने मन में कहता हूं: 'यह अपने रास्ते से कभी नहीं हटेगा। मौत ही इसे इसके रास्ते से हटा सकती है। फ़ौलाद का बना हुआ है।' पावेल, क्या तुम मुझ पर एतबार करते हो?"

"हां, करता हूं," पावेल ने हामी भरी।

"बहुत अच्छी बात है। मुझे देखो, मैं चालीस बरस का हो गया हूं ; उमर में तुमसे दूना हूं और दुनिया तुमसे बीस गुनी ज़्यादा देख चुका हूं। तीन साल से ज़्यादा तक मैं फ़ौजी था। दो बार शादी की – पहली बीवी मर गयी, दूसरी को मैंने निकाल दिया। काकेशिया हो आया हूं और दूखोबोर्त्सी* से भी परिचित हूं। वे ज़िंदगी की समस्याओं को हल नहीं कर सकते, भाई, बिल्कुल नहीं कर सकते!"

मां बड़ी उत्सुकता से उसका नपा-तुला भाषण सुन रही थी। उसे यह देखकर खुशी हुई कि यह अधेड़ उम्र का आदमी अपने दिल की सारी बातें उसके बेटे के सामने खोलकर कह रहा था। पर उसे पावेल

* दूखोबोर्त्सी – ज़ारशाही रूस का एक धार्मिक समुदाय, जिसका उदय १८वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था। – सं०

के रवैये में बहुत रुखाई प्रतीत हुई और इस कमी को पूरा करने के लिए उसने आतिथ्य-भाव दिखाने का प्रयत्न किया।

"मिखाइलो इवानोविच, कुछ खाओगे न?" उसने पूछा।

"धन्यवाद। मैं तो खाना खाकर आया हूं। तो पावेल, तुम्हारा यह ख़्याल है कि ज़िंदगी वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिये।"

पावेल उठा और हाथ पीठ पीछे बांधकर टहलने लगा।

"वह सही ढर्रे पर आ रही है," उसने उत्तर दिया। "क्या ज़िंदगी ने तुम्हें खुले दिल से मेरे यहां आने को मजबूर नहीं किया? धीरे-धीरे वह हम मेहनत करनेवालों को एक कर रही है और फिर वह वक़्त आयेगा जब वह हम सबको एक कर देगी! हमारी ज़िंदगी कठोर है और हमारे साथ अन्याय करती है, लेकिन हमारी आंखें खुलने लगी हैं और हम उसका कटु अर्थ समझने लगे हैं, वह हमें चीज़ों की रफ़्तार तेज़ करना सिखा रही है।"

"तुम ठीक कहते हो!" रीबिन ने टोका। "लोगों को झकझोरने की ज़रूरत है। किसी के सिर में अगर जूंएं पड़ जायें, तो खूब रगड़-रगड़कर नहलाने-धुलाने और साफ़ कपड़े पहनाने पर वह फिर भला आदमी बन जाता है। लेकिन आदमी के दिल को कैसे साफ़ किया जाये? असल सवाल तो यह है!"

पावेल ने बड़े जोश के साथ फ़ैक्टरी और उसके मालिकों की चर्चा की, उसने बताया कि दूसरे देशों में मज़दूर अपने अधिकारों के लिए किस तरह लड़ रहे थे। बीच-बीच में रीबिन मेज़ पर इस तरह उंगली मारता, मानो पावेल के भाषण में विराम-चिन्ह लगा रहा हो।

"यही तो बात है!" वह बार-बार कह उठता।

और एक बार उसने हंसकर बड़े शान्त भाव से कहा:

"अभी तुम बच्चे हो! लोगों को अच्छी तरह नहीं पहचानते!"

"देखो, बूढ़े और बच्चे होने की बात छोड़ दो," पावेल ने रीबिन के सामने रुककर गंभीरतापूर्वक कहा। "यह देखो कि किसके विचार अधिक सही हैं।"

"तो तुम्हारा यह ख़्याल है कि ईश्वर के बारे में भी हमें अब तक बेवक़ूफ़ बनाया गया है? हूं... मेरा भी यह ख़्याल है कि हमारा धर्म किसी काम का नहीं है।"

यहां पर मां भी बहस में कूद पड़ी। जब कभी उसका बेटा ईश्वर के बारे में या ईश्वर के प्रति उसकी श्रद्धा के बारे में, उस श्रद्धा के बारे में

जिसे वह बहुत प्रिय और पवित्र मानती थी, कुछ कहता तो वह सदा उसकी नज़र से नज़र मिलाने का प्रयत्न और यह मूक विनय करती कि ईश्वर के प्रति अविश्वास के कटु शब्द कहकर वह उसके जी को न दुखाये। पर बेटे की नास्तिकता के पीछे मां को दृढ़ आस्था का आभास मिलता था, जिससे उसे बड़ी सांत्वना प्राप्त होती थी।

"मैं उसके विचारों को कैसे समझ सकती हूं?" वह सोचती।

उसका विचार था कि यह अधेड़ उम्र का आदमी भी उसके बेटे की बातों से उतना ही नाराज़ होगा। पर जब रीबिन ने शान्त भाव से पावेल से यह प्रश्न पूछा तो वह अपने आपको रोक न सकी।

"देखो, जहां तक ईश्वर की बात है, तुम सोच-समझकर कुछ कहना!" उसने एक गहरी सांस ली और फिर इससे भी ज़्यादा आवेश के साथ बोली, "तुम जो चाहो सोचो, मगर जहां तक मेरा सवाल है, मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूं और अगर तुमने मेरे परमेश्वर को भी मुझसे छीन लिया तो अपनी विपदा में मैं किसका सहारा लूंगी!"

उसकी आंखों में आंसू भर आये और तश्तरियां धोते हुए उसकी उंगलियां कांपने लगीं।

"तुम हम लोगों की बात समझीं नहीं," पावेल ने स्नेह से कहा।

"मां, हमें माफ़ करना," रीबिन ने अपनी गहरी और धीमी आवाज़ में कहा। फिर उसने धीरे से मुस्कराकर पावेल की तरफ़ देखा और मां से बोला, "मैं तो भूल ही गया था कि तुम इतनी बूढ़ी हो गयी हो कि तुम्हारे विचार बदले नहीं जा सकते।"

"मैं उस दयालु और कृपानिधान ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहा था जिसमें तुम्हारी आस्था है," पावेल कहता गया, "बल्कि उस ईश्वर की बात कर रहा था जिसका नाम लेकर पादरी लोग हमें डराते हैं, जैसे वह कोई डंडा हो; मैं उस ईश्वर की बात कर रहा था जिसके नाम पर वे कुछ लागों की कुत्सित इच्छाओं के सामने सब लोगों को झुका देने का प्रयत्न करते हैं..."

"यही तो मुसीबत है!" रीबिन ने मेज़ पर मुक्का मारकर कहा। "उन्होंने एक झूठा ईश्वर हमारे ऊपर थोप दिया है! जो हथियार भी उनके हाथ लग जाता है उसी से वे हम लोगों के ख़िलाफ़ लड़ते हैं! मां, इस बात पर ग़ौर करना: ईश्वर ने जब मनुष्य की सृष्टि की तो उसे अपना ही रूप दिया, जिसका मतलब यह है कि अगर मनुष्य उससे मिलता-जुलता है तो उसे भी मनुष्य से मिलता-जुलता होना चाहिये!

मगर हम देवताओं जैसे तो क्या, जंगली जानवरों जैसे हैं। गिरजाघरों ने हमारे सामने एक हौआ खड़ा कर दिया है... मां, हमें अपने ईश्वर को बदलना पड़ेगा। उसे साफ़ भी करना पड़ेगा! उन्होंने उसे झूठ और मिथ्या प्रचार में लपेट रखा है, हमारी आत्माओं का हनन करने के लिए उसका रूप बिगाड़ दिया है!.."

वह बहुत नरमी से बोल रहा था, पर उसका एक-एक शब्द मां के हृदय पर हथौड़े की तरह चोट कर रहा था। और काली दाढ़ी में उसके बड़े-से मौत जैसे भयावह चेहरे को देखकर मां को डर लगने लगा। उसकी काली आंखों की चमक उसके लिए असह्य थी; मां का हृदय भय से पीड़ित हो उठा।

"मैं जाती हूं," उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मुझमें ऐसी बातें सुनने की शक्ति नहीं!"

वह जल्दी से रसोई में चली गयी।

"समझे, पावेल?" रीबिन ने कहा। "हर चीज़ का केन्द्र हमारा दिमाग़ नहीं, बल्कि दिल है। मनुष्य की आत्मा में उसका एक विशेष स्थान है, और वहां कोई दूसरी चीज़ पनप ही नहीं सकती..."

"केवल ज्ञान ही मनुष्य को मुक्ति दे सकता है!" पावेल ने दृढ़ता से कहा।

"ज्ञान से उसे बल नहीं मिलता!" रीबिन ने ऊंचे स्वर में अपनी बात पर अड़े रहकर कहा। "बल हृदय से मिलता है, दिमाग़ से नहीं!"

मां कपड़े बदलकर भगवान की स्तुति किये बिना ही बिस्तर पर लेट गयी। उसे बड़ी सरदी लग रही थी और वह मन ही मन कुढ़ रही थी। रीबिन शुरू में बहुत होशियार मालूम हुआ था और मां पर उसका बहुत रोब पड़ा था। पर अब उसी से मां को घृणा हो रही थी।

"पाखंडी! बाग़ी!" उसकी आवाज़ सुनकर मां सोचने लगी। "आख़िर उसे यहां आने की क्या ज़रूरत थी?"

पर वह बड़े शान्त भाव से विश्वास के साथ बोलता रहा।

"दिल बहुत पवित्र स्थान है, उसे ख़ाली नहीं छोड़ा जा सकता। मनुष्य के हृदय में जहां ईश्वर का वास है, वह सबसे कोमल जगह है। अगर तुम उसे काट दो तो बहुत बड़ा घाव रह जायेगा। पावेल, हमें कोई नया विश्वास ढूंढ़ना होगा... ऐसा भगवान बनाना पड़ेगा, जो मनुष्य का दोस्त हो, असल बात यह है।"

"ईसा मसीह थे तो!" पावेल ने कहा।

"ईसा मसीह कमज़ोर थे। उन्होंने कहा था, 'यह पात्र कोई मुझसे ले ले।' और फिर उन्होंने राजा की सत्ता को स्वीकार किया था। ईश्वर भला अपने रचे हुए प्राणियों पर किसी मनुष्य की सत्ता को को कैसे स्वीकार कर सकता है? वह सर्वशक्तिमान है! वह अपनी आत्मा को बांट तो नहीं सकता – कि यह ईश्वर की है और यह मनुष्य की। मगर ईसा मसीह भी न तो व्यापार के ख़िलाफ़ थे और न विवाह के। फिर अंजीर के पेड़ को श्राप देकर उन्होंने बड़ी ग़लती की थी – अगर उसमें फल न लगते थे तो क्या यह अंजीर के पेड़ का दोष था? मनुष्य की आत्मा में अगर नेकी न उत्पन्न हो, तो उसमें दोष आत्मा का नहीं मानना चाहिये। क्या अपनी आत्मा में बुराई का बीज मैंने स्वयं बोया है?"

कमरे में दोनों आवाज़ों में द्वन्द्व होता रहा, एक अत्यन्त उत्तेजना-पूर्ण मल्लयुद्ध चल रहा था। इधर-उधर टहलते समय पावेल के पैरों के नीचे फ़र्श के चरचराने की आवाज़ आ रही थी। जब पावेल बोलता तो और सब आवाज़ें उसमें दब जातीं। लेकिन जब रीबिन अपने शान्त, भारी स्वर में बोलता तो मां को घड़ी की टिक-टिक और पाले की जकड़ में आती हुई मकान की दीवारों के धीरे से चिटकने की आवाज़ भी सुनायी देती।

"मैं इसी बात को अपने ढंग से कहूंगा – एक सीधे-सादे कोयला झोंकनेवाले के शब्दों में: ईश्वर एक ज्वाला है! उसका वास मनुष्य के हृदय में है। कहा गया है कि: 'सृष्टि के आरम्भ में शब्द था और वह शब्द ही ईश्वर था।' इसलिए शब्द ही आत्मा है।"

"विवेक है," पावेल ने ज़ोर देकर कहा।

"अच्छी बात है! तो ईश्वर हृदय और विवेक में है लेकिन गिर-जाघर में नहीं। गिरजाघर तो ईश्वर की क़ब्र हैं।"

मां सो गयी और उसे मालूम भी न हुआ कि रीबिन कब गया।

अब वह अक्सर आने लगा। जब वह आता और उस समय यदि वहां पावेल का कोई दोस्त मौजूद होता तो वह चुपचाप एक कोने में बैठा रहता और बीच-बीच में कभी बस इतना कह देता:

"यही तो बात है!"

एक दिन उसने साथियों को अपनी भयंकर मुद्रा से दहला दिया। फिर चिढ़कर बोला:

"जो चीज़ जैसी है, हमें उसे वैसा ही बताना चाहिये। उसे कैसा

होना चाहिये, इससे हमें सरोकार नहीं। कौन जानता है, आगे चलकर किसी चीज़ का रूप क्या होगा? जनता एक बार स्वतंत्र और उन्मुक्त हो ले, फिर वह आप ही इन बातों का फ़ैसला कर लेगी कि उसके लिए क्या उपयुक्त अथवा उचित है। पहले ही लोगों के मग़ज़ में मनमाने ढंग से बहुत कुछ ठूंस दिया गया है। अब अपना भला-बुरा सोचने की उन्हें आज़ादी होनी चाहिये। जो कुछ उन्हें जीवन के बारे में बताया गया है, संभव है, लोग उस सब को रद्द कर डालना चाहें। हो सकता है कि भगवान की तरह वे परंपरागत ज्ञान को भी अपना शत्रु समझें। उन तक पुस्तकें पहुंचाइये और फिर वे स्वयं अपने सवालों का हल ढूंढ़ निकालेंगे। बस! इतना ही!"

वह और पावेल जब अकेले होते, तो लगातार बहस करते, लेकिन बहस के दौरान में दोनों में से कोई भी नाराज़ न होता। मां बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनती, एक-एक शब्द पर विचार करती और यह समझने का प्रयत्न करती कि वे क्या कह रहे हैं। कभी-कभी तो उसे ऐसा लगता कि वह चौड़े कंधों और काली दाढ़ीवाला आदमी और उसका लम्बे डीलडौलवाला बलिष्ठ बेटा दोनों ही अंधे हो गये हैं। वे कभी एक दिशा और कभी दूसरी दिशा में राह ढूंढ़ते हैं, बाहर निकलने की कोई राह खोजते हैं, अपनी मज़बूत पर अंधी उंगलियों से हर चीज़ को पकड़ते हैं, जगह-जगह भटकते हैं, चीज़ों को फ़र्श पर गिराते हैं और पैरों तले कुचल डालते हैं। वे चीज़ों से टकराते हैं, उन्हें टटोलते और एक तरफ़ को फेंक देते हैं, पर अपने विश्वास और आशा का आंचल कभी नहीं छोड़ते...

उन्होंने मां को ऐसे शब्द सुनने का आदी बना दिया था जो स्पष्ट-वादिता और साहसिकता के कारण भयावह प्रतीत होते थे, पर अब इन शब्दों को सुनकर उसे पहली बार की तरह गहरा आघात नहीं पहुंचता था। वह इन शब्दों का विरोध करना सीख चुकी थी। कभी-कभी तो ईश्वर को अस्वीकार करनेवाले इन शब्दों के पीछे मां को उसके प्रति एक दृढ़ आस्था छिपी दिखायी देती। तब वह मन ही मन मुस्कराकर उनके सब अपराधों को क्षमा कर देती। और हालांकि वह रीबिन को पसंद नहीं करती थी, फिर भी उसके प्रति अब वह इतना द्वेष भी न रखती थी।

हर हफ़्ते वह उक्रइनी के लिए किताबें और साफ़ कपड़े लेकर जेल जाती। एक बार उसे उससे मिलने की इजाज़त भी दे दी गयी।

"वह बिल्कुल भी नहीं बदला है," उसने वापस आकर बड़े प्यार

से कहा। "वह सबके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता है और सब लोग भी उससे ख़ूब हंसी-मज़ाक़ करते हैं। उसके दिल पर बहुत भारी गुज़रती है, पर वह ज़ाहिर नहीं होने देता।"

"ऐसा ही होना भी चाहिये," रीबिन ने कहा। "दुःख एक खाल है जिसे हम पहने रहते हैं, आहें भरते हैं मगर पहनते हैं। इसमें शेख़ी की कोई बात नहीं है। सबकी आंखों पर तो पट्टी बंधी नहीं है, कुछ लोग ख़ुद ही अपनी आंखें बंद कर लेते हैं, बस यही बात है! इसलिए जो बेवक़ूफ़ हैं वे चुपचाप सब कुछ सहन करते रहते हैं।"

१२

बस्ती के लोग व्लासोव-परिवार के उस छोटे-से मटीले घर में अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे। इस दिलचस्पी में संदेह और द्वेष का भाव भी मिला हुआ था जिसका उन्हें स्वयं भी आभास नहीं था, पर साथ ही इस दिलचस्पी ने उनमें विश्वास-मिश्रित उत्सुकता भी जागृत की। कभी-कभी कोई बिल्कुल अपरिचित व्यक्ति पावेल के पास आता और नज़रें बचाकर इधर-उधर देखने के बाद कहता: "भाई, सुनो, तुम तो किताबें पढ़ते हो और क़ानून भी जानते हो, क्या तुम मुझे बता सकते हो कि ..."

और फिर वह फ़रियादी पुलिस या फ़ैक्टरी के व्यवस्थापकों के किसी अन्याय की कहानी सुनाता। यदि मामला अधिक पेचीदा होता तो पावेल उसे शहर के एक वकील के नाम, जो उसका मित्र था, पुर्ज़ा लिख देता। परन्तु यदि संभव होता तो वह स्वयं ही समझा देता।

धीरे-धीरे लोग इस लगनवाले नवयुवक की इज़्ज़त करने लगे, जो सीधे-सादे शब्दों में साहस के साथ अपनी बात कहता था, जो अपनी आंखें खोलकर हर चीज़ देखता था और जिसके कान हर बात के प्रति चौकन्ने रहते थे, जो हर विवाद की तह में पहुंचे बिना दम नहीं लेता था और हमेशा तथा हर जगह सभी लोगों को एकबद्ध करनेवाले सूत्र का पता लगाने का प्रयत्न करता था।

"दलदल के लिए एक कोपेक" वाली घटना के बाद पावेल की साख विशेष रूप से बढ़ गयी।

फ़ैक्टरी की सीमा से बाहर उसे प्रायः चारों तरफ़ से सड़े हुए नासूर की तरह घेरे हुए एक बड़ी-सी दलदल थी जिसमें फ़र और बर्च के वृक्षों

का एक जंगल उगा हुआ था। गर्मियों में इस दलदल से पीले रंग की घनी भाप-सी उठती और मच्छरों के दल निकल पड़ते, जो बस्ती में बुख़ार फैला देते। यह दलदल फ़ैक्टरी की सम्पत्ति थी और नये डायरेक्टर ने उस दलदल की भूमि का लाभ उठाने के उद्देश्य से उसे सुखाने और साथ ही उससे पीट निकालने का फ़ैसला किया। यह बहाना बनाकर कि वह मज़दूरों के रहन-सहन की परिस्थितियों में सुधार करने के लिए ऐसा कर रहा है, उसने आज्ञा जारी की कि दलदल को सुखाने के लिए हर मज़दूर की मज़दूरी से रूबल के पीछे एक कोपेक काटा जाये।

मज़दूरों को ग़ुस्सा आया। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर आपत्ति की कि फ़ैक्टरी में काम करनेवाले बाबुओं की तनख़्वाह में कोई कटौती नहीं की गयी थी।

जिस शनिवार को डायरेक्टर ने कोपेक कटाने की यह घोषणा चिपकवायी थी, उस दिन पावेल घर पर बीमार था। इसलिए उसे इसके बारे में कुछ भी मालूम न हुआ। अगले दिन सिज़ोव और माख़ोतिन उससे मिलने आये। सिज़ोव ढलाई के विभाग में काम करनेवाला एक सुडौल वृद्ध मज़दूर था और माख़ोतिन लम्बे क़द का ग़ुस्सैल मिस्तरी था। उन्होंने पावेल को डायरेक्टर के निर्णय के बारे में बताया।

"हम बुज़ुर्गों ने मिलकर इस सवाल के बारे में बातचीत की थी," सिज़ोव ने बड़ी गम्भीरता से कहा। "साथियों ने हमें तुम्हारे पास भेजने का फ़ैसला किया क्योंकि तुम सब बातें समझते हो। वे जानना चाहते हैं कि क्या कोई ऐसा क़ानून है जो डायरेक्टर को हमारे पैसों से मच्छर मारने का अधिकार देता हो?"

"देखो, चार साल पहले इन जल्लादों ने एक ग़ुसलख़ाना बनवाने के लिए हमसे पैसा लिया था," माख़ोतिन ने कहा। उसकी छोटी-छोटी आंखें चमक उठीं। "तीन हज़ार आठ सौ रूबल जमा किये थे इन लोगों ने। वह सब पैसे कहां गये? ग़ुसलख़ाना तो हमने आज तक देखा नहीं!"

पावेल ने उन्हें समझाया कि यह कटौती सरासर अन्याय है और यह भी बताया कि दलदल को सुखाने से फ़ैक्टरी को स्पष्टतः कितना अधिक लाभ होगा। वे दोनों त्योरियां चढ़ाये हुए चले गये। उनको दरवाज़े पर विदा करने के बाद मां ने धीरे से हंसकर कहा:

"अब तो बूढ़े भी तुम से सलाह लेने के लिए आने लगे।"

मां की बात का कुछ उत्तर दिये बिना पावेल मेज़ के पास बैठकर

कुछ लिखने लगा। कुछ ही मिनट बाद उसने कहा :

"मां, मेरा एक काम कर दो! ज़रा शहर चली जाओ और यह ख़त दे आओ..."

"कोई ख़तरनाक बात है इसमें?" मां ने पूछा।

"हां! मैं तुम्हें वहां भेज रहा हूं, जहां हमारा अख़बार छपता है। दलदल साफ़ कराने के लिए कोपेक काटने की यह ख़बर हमें हर हालत में अगले अंक में छपवानी है।"

"अच्छी बात है..." मां ने कहा, "मैं अभी जाती हूं।"

यह पहला काम था जो उसके बेटे ने उसे सौंपा था। मां को बड़ी ख़ुशी थी कि उसने ऐसे खुलकर उससे बात की थी।

"पावेल, मैं समझ गयी," मां ने कपड़े पहनते हुए कहा। "यह सरासर लूट है। क्या नाम बताया तुमने उस आदमी का – येगोर इवानोविच न?"

मां शाम को देर से लौटी। वह थकी हुई, पर ख़ुश थी।

"मैं साशा से मिली थी," मां ने बेटे को बताया। "उसने सलाम कहा है। येगोर इवानोविच बहुत सीधा-सादा और ख़ुशमिज़ाज आदमी है। उसकी बातें सुनकर हंसी आती है।"

"मुझे बड़ी ख़ुशी है कि वे लोग तुम्हें पसंद आये," पावेल ने धीमे से कहा।

"वे बहुत ही सीधे-सादे लोग हैं, पावेल। जो लोग ज़्यादा शान नहीं दिखाते, वे बहुत अच्छे लगते हैं। वे तुम्हारा बड़ा सम्मान करते हैं..."

सोमवार को भी पावेल घर पर ही रहा क्योंकि उसकी तबीयत पूरी तरह अच्छी नहीं थी। खाने के समय फ़्योदोर माज़िन हांपता हुआ भागा-भागा आया। वह प्रसन्न और उत्तेजित था।

"आओ चलो!" उसने चिल्लाकर कहा। "सारी फ़ैक्टरी के मज़दूर कमर कसकर उठ खड़े हुए हैं। उन्होंने तुम्हें बुला लाने के लिए मुझे भेजा है। सिज़ोव और माख़ोतिन ने कहा था कि तुम जितनी अच्छी तरह सब कुछ समझा दोगे उतनी अच्छी तरह कोई नहीं समझा सकता। देखो तो चलकर क्या हो रहा है!"

बिना कुछ कहे पावेल कपड़े पहनने लगा।

"औरतों ने भी आकर काफ़ी हल्ला-गुल्ला मचा रखा है।"

"मैं भी चलती हूं," मां ने कहा। "आख़िर वे लोग चाहते क्या हैं? मैं भी चलूंगी!"

"चलो," पावेल ने कहा।

वे तेज़ी से चुपचाप सड़क पर चले जा रहे थे। मां इतनी उत्तेजित थी कि उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। उसे ऐसा लगा कि कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण बात होने जा रही है। फ़ैक्टरी के फाटक पर औरतों की भीड़ जमा थी, जो चिल्लाकर गालियां बक रही थीं। जब वे तीनों चुपके से यार्ड में पहुंचे तो उन्हें चारों ओर लोगों की भीड़ दिखायी दी। लोग उत्तेजित होकर चिल्ला रहे थे। मां ने देखा कि सब लोग फ़ाऊंड्री की दीवार की तरफ़ मुंह किये खड़े हैं जहां सिज़ोव, माख़ोतिन, व्यालोव और पांच-छः बुज़ुर्ग तथा प्रभावशील मज़दूर पुराने लोहे के ढेर पर खड़े थे; उनके पीछे दीवार थी।

"व्लासोव आ रहा है!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

"व्लासोव? उसे इधर आ जाने दो..."

"चुप रहो!" कई आवाज़ें एक साथ आयीं।

कहीं पास ही रीबिन का सपाट स्वर सुनायी दिया:

"हम कोपेक के लिए नहीं, बल्कि न्याय के लिए लड़ रहे हैं, असल बात यह है! हमें अपना कोपेक इतना प्यारा नहीं है – वह भी दूसरे कोपेकों जितना ही गोल है, पर भारी उनसे ज़्यादा है – उसमें इंसानों का जितना ख़ून है उतना डायरेक्टर के रूबल में भी नहीं! क़ीमत कोपेक की नहीं, बल्कि ख़ून की है, न्याय की है!"

भीड़ में लोगों ने उसके शब्द सुने और चारों तरफ़ से तरह-तरह की आवाज़ें आने लगीं:

"रीबिन तुम ठीक कहते हो!"

"बहुत पते की बात कही है तुमने!"

"लो, व्लासोव आ गया!"

ये सब स्वर मिलकर एक गर्जना बन गये जिसमें मशीनों की गड़-गड़ाहट, भाप की सी-सी और तारों का गुंजन सब कुछ डूब गया। चारों तरफ़ से लोग अपने हाथ हिलाते हुए आगे आ रहे थे और तीखे शब्दों से एक-दूसरे को उत्तेजित कर रहे थे। उनके शिथिल सीनों में जो असंतोष हमेशा से सुलग रहा था, वह सहसा भड़क उठा था और बाहर निकलने को बेताब था। यह असंतोष विजयोल्लास के साथ वातावरण में छा गया और उसके अशुभसूचक पंख निरन्तर फैलते गये। यह असंतोष लोगों को अपने पंजे में कसता गया, उसने उन्हें एक-दूसरे का शत्रु बना दिया और स्वयं प्रतिकार की एक ज्वाला के रूप में भड़क उठा। जन-

समुदाय पर धूल और कालिख का एक बादल-सा छा गया, पसीने से तर चेहरे उत्तेजना से चमक उठे, गालों पर व्यथा के आंसू बहकर सूख गये और अपना चिन्ह छोड़ गये, काले चेहरों पर आंखें और दांत चमकने लगे।

पावेल पुराने लोहे के ढेर पर जा पहुंचा जहां सिज़ोव और माखोतिन खड़े हुए थे।

"साथियो!" उसने ऊंचे स्वर में कहा।

मां ने देखा कि उसका चेहरा बहुत पीला पड़ गया है और उसके होंट कांप रहे हैं। अनायास ही वह भीड़ को चीरकर आगे बढ़ने लगी।

"धक्का क्यों देती है?" लोगों ने झुंझलाकर उसे डांटते हुए कहा।

दूसरों ने उलटकर उसे धक्का दिया पर इससे भी वह न रुकी। कंधों और कुहनियों से ठेलती हुई वह आगे बढ़ती गयी। अपने बेटे के पास जाकर खड़े होने की इच्छा उसे आगे लिये जा रही थी।

जब पावेल ने वह शब्द उच्चारित किया जो उसके लिए गूढ़ महत्व रखता था, तब उसे ऐसा लगा कि उसका गला उल्लास के आवेग से रुंधा जा रहा है। उसका जी चाहता था कि वह अपना दिल निकालकर इन लोगों को अर्पित कर दे, वह दिल जिसमें न्याय प्राप्त करने के स्वप्नों ने एक आग-सी लगा रखी थी।

"साथियो!" उसने फिर ऊंचे स्वर में कहा; इस शब्द ने उसमें नयी शक्ति और उल्लास भर दिया। "हम वह लोग हैं जो गिरजाघर और कारख़ाने बनाते हैं, जो ज़ंजीरें ढालते हैं और सिक्के बनाते हैं। हम वह जीवन-शक्ति हैं जिसके सहारे सभी लोग पैदा होने से लेकर मरने तक अपना पेट भरते और ज़िन्दा रहते हैं।"

"ठीक कहते हो!" रीबिन ने चिल्लाकर कहा।

"हमेशा और हर जगह जब कोई काम करना होता है तो सबसे पहले हमें बुलाया जाता है और जब कोई सुविधा पाने का सवाल आता है तो हम सबसे पीछे होते हैं। हमारी परवाह कौन करता है? हमारे लिए किसने कुछ किया है? हमारे साथ कोई इन्सानों जैसा बरताव भी करता है क्या? नहीं!"

"नहीं!" किसी ने उसके शब्द को प्रतिध्वनित किया।

कुछ देर बाद जब पावेल के भाषण में प्रवाह आ गया तो वह अधिक सीधे-सादे शब्दों में और शान्त भाव से बोलने लगा। भीड़ धीरे-धीरे और निकट आती गयी और गठते-गठते ऐसी लगने लगी मानो एक ही

शरीर पर हज़ारों सिर लगे हों जो अपनी असंख्य आंखों से बड़े ध्यान के साथ पावेल का मुंह देख रहे थे और उसके एक-एक शब्द को अमृत की बूंदों की तरह पी रहे थे।

"हम अपनी हालत उस समय तक कभी नहीं सुधार सकते जब तक हम यह न समझ लें कि हम सब साथी हैं, मित्रों का एक परिवार हैं जो अपने अधिकारों के लिए लड़ने की एकमात्र इच्छा के सूत्र में एक-दूसरे से बंधे हुए हैं।"

"मतलब की बात कहो," मां के पास खड़े हुए किसी व्यक्ति ने कर्कश स्वर में चिल्लाकर कहा।

"टोको नहीं," दो तरफ़ से दो आवाज़ें आयीं।

काले चेहरों पर उदासी और निराशा के बादल छाये हुए थे, पर कुछ आंखें बड़े ध्यान से पावेल के चेहरे को देख रही थीं।

"समाजवादी है, मगर बेवक़ूफ़ नहीं है!" किसी ने अपनी राय देते हुए कहा।

"बड़ी हिम्मत से बोल रहा है, है न?" लम्बे क़द के एक काने मज़दूर ने मां को कुहनी मारते हुए कहा।

"साथियो, अब वक़्त आ गया है कि हम इस बात को समझ लें कि ख़ुद हमारे अलावा और कोई हमारी मदद नहीं करेगा! अगर हमें अपने दुश्मन को हराना है तो हमारा नारा यह होना चाहिये कि अगर किसी एक पर भी कोई मुसीबत आये तो सब उसके लिए लड़ेंगे और हर आदमी सबके लिए लड़ेगा!"

"सच बात कह रहा है!" माखोतिन ने अपनी मुट्ठी हवा में हिलाते हुए कहा।

"डायरेक्टर को बुलवाओ!" पावेल बोलता जा रहा था।

ऐसा मालूम हुआ कि जैसे सहसा भीड़ पर तूफ़ान की एक लहर दौड़ गयी। भीड़ में एक खलबली हुई और दर्जनों आवाज़ें एक साथ पुकार उठीं:

"डायरेक्टर को बुलवाओ!"

"कुछ लोगों को उसके पास भेजा जाये!"

मां कुछ और आगे बढ़ गयी और अपने बेटे को टकटकी बांधकर देखने लगी। उसका चेहरा गर्व से चमक उठा। उसका पावेल इन पुराने, साखवाले मज़दूरों के बीच खड़ा था और सब लोग उसकी बातें सुन रहे थे और उससे सहमत थे। मां ख़ुश थी कि पावेल न तो ग़ुस्से में ही

आया और न उसने दूसरों की तरह गालियां ही दीं।

जिस तरह टीन की छत पर ओले बरसते हैं उसी तरह गालियां, कोसने और क्रोध-भरे शब्द सुनायी दे रहे थे। पावेल ने एकत्रित जन-समुदाय पर एक नज़र दौड़ायी। ऐसा मालूम होता था कि वह अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से कुछ ढूंढ़ रहा हो।

"हमारी तरफ़ से कौन-कौन जायेगा?"

"सिज़ोव!"

"व्लासोव!"

"रीबिन! उसके दांत भयानक हैं!"

सहसा भीड़ में कुछ खुसुर-पुसुर सुनायी दी।

"वह ख़ुद ही आ रहा है!.."

"डायरेक्टर!.."

भीड़ ने एक लम्बे क़द के, नुकीली दाढ़ी और लम्बोतरे चेहरेवाले व्यक्ति के लिये रास्ता कर दिया।

"जाने दीजिये!" – उसने हाथ से लोगों को रास्ता छोड़ देने का संकेत किया कि कहीं छू न जाये। वह अपनीं आंखें सिकोड़कर मज़दूरों को एक ऐसे अनुभवी मालिक की दृष्टि से देख रहा था, जो सूरत देखते ही आदमी को पहचान लेता हो। लोगों ने जल्दी से अपनी टोपियां उतारीं और झुककर उसे सलाम किया, पर उनके सलाम का जवाब दिये बिना ही वह आगे बढ़ता गया। भीड़ पर सन्नाटा छा गया; लोग कुछ घबराये हुए थे और खिसियानी हंसी हंसकर इस तरह चुपके-चुपके काना-फूसी कर रहे थे जैसे बच्चे शैतानी करते हुए पकड़े गये हों।

वह कठोर दृष्टि से मां के चेहरे को देखता हुआ उसके पास से गुज़रा और लोहे के ढेर के सामने पहुंचकर खड़ा हो गया। किसी ने उसे सहारा देने के लिये अपना हाथ बढ़ाया, पर उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। एक झटके के साथ ज़ोर लगाकर वह ऊपर चढ़ा और पावेल और सिज़ोव के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"यह भीड़ क्यों जमा है? तुम लोगों ने काम क्यों बन्द कर रखा है?"

कुछ क्षण तक ख़ामोशी रही। लोगों के सिर अनाज की बालियों की तरह हिल रहे थे। सिज़ोव ने अपनी टोपी हिलाकर कंधे बिचकाये और सिर झुका लिया।

"मेरे सवाल का जवाब दो!" डायरेक्टर ने चिल्लाकर कहा।

पावेल बढ़कर उसके पास आया और सिज़ोव तथा रीबिन की तरफ़ संकेत करके ऊंचे स्वर में बोला :

"हमारे साथियों ने हम तीनों को यह मांग करने के लिये चुना है कि आप कोपेक काटने के बारे में अपनी आज्ञा वापस ले लें।"

"क्यों ?" डायरेक्टर ने पावेल की ओर देखे बिना ही पूछा।

"क्योंकि हम इस कटौती को बेइन्साफ़ी समझते हैं," पावेल ने ज़ोर से कहा।

"क्या तुम यह समझते हो कि मैं दलदल को मज़दूरों के रहन-सहन की हालत सुधारने के लिए नहीं, बल्कि उनका शोषण करने की इच्छा से सुखवाना चाहता हूं ?"

"हां," पावेल ने उत्तर दिया।

"और तुम भी ?" डायरेक्टर ने रीबिन की तरफ़ मुड़कर पूछा।

"हम सबकी एक ही राय है।"

"और तुम, भले आदमी ?" उसने सिज़ोव की तरफ़ मुड़कर पूछा।

"मैं भी। हम अपने कोपेक अपने पास ही रखना चाहते हैं।"

सिज़ोव एक बार फिर सिर झुकाकर अपराधियों की तरह मुस्कराने लगा।

डायरेक्टर ने धीरे-धीरे भीड़ पर नज़र डालकर अपने कंधे झटके। फिर वह पावेल की तरफ़ मुड़ा और उसे ग़ौर से देखने लगा।

"तुम कुछ पढ़े-लिखे आदमी मालूम होते हो। क्या तुम भी इस काम के फ़ायदों को नहीं समझते ?"

"अगर फ़ैक्टरी अपने ख़र्च से दलदल को सुखवा दे तो कोई भी उसके फ़ायदों को समझ सकता है," पावेल ने इतने ऊंचे स्वर में कहा कि सब लोग उसकी बात सुन लें।

"फ़ैक्टरी कोई धर्मखाता नहीं," डायरेक्टर ने रुखाई से कहा। "मैं हुक्म देता हूं कि तुम लोग काम पर वापस चले जाओ।"

वह बड़ी सावधानी से लोहे को अपने पांव से टटोलता हुआ बिना किसी की ओर देखे नीचे उतरने लगा।

भीड़ में असंतोष की एक लहर दौड़ गयी।

"क्या बात है ?" डायरेक्टर ने जहां के तहां रुककर पूछा।

दूर से किसी की आवाज़ ने निस्तब्धता को भंग किया :

"जाओ, तुम ख़ुद काम करो!.."

"अगर तुम सब लोग पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर काम पर वापस

न चले गये तो मैं तुम सब पर जुर्माना कर दूंगा!" डायरेक्टर ने बड़ी सख़्ती के साथ ज़ोर देकर कहा।

एक बार फिर वह भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ चला, लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया भीड़ में एक मंद गर्जना-सी उत्पन्न हुई और वह जितनी दूर होता गया यह गर्जना उतनी ही तेज़ होती गयी।

"बात करके देख लिया उससे!"

"हम लोगों के लिए यही इंसाफ़ है! यह भी कोई ज़िंदगी है!"

वे पावेल को सम्बोधित करके चिल्लाने लगे:

"अरे, क़ानूनदां, अब क्या किया जाये?"

"भाषण तो बहुत अच्छा दिया था, मगर जब मालिक ने अपनी सूरत दिखायी तो उस भाषण का क्या फ़ायदा हुआ?"

"अच्छा, व्लासोव, बताओ अब हम क्या करें?"

जब लोग बहुत ज़िद्द करने लगे तो पावेल बोला:

"साथियो, मैं तो यह कहता हूं कि जब तक कोपेक कटौती बंद करने का वादा न कर लिया जाये तब तक हममें से कोई काम पर वापस न जाये।"

लोग उत्तेजित होकर कहने लगे:

"हम सबको क्या बेवक़ूफ़ समझ रखा है?"

"इसका मतलब तो है हड़ताल?"

"एक-दो कोपेक के लिए?"

"हड़ताल में नुक़सान क्या है?"

"हम सब निकाल दिये जायेंगे..."

"फिर काम कौन करेगा उसके यहां?"

"बहुतेरे मिल जायेंगे!"

"तुम्हारा मतलब है ग़द्दार?"

१३

पावेल नीचे उतरकर मां के पास आकर खड़ा हो गया।

भीड़ उत्तेजित हो उठी थी। सब लोग बहस कर रहे थे और उत्तेजित होकर चिल्ला रहे थे।

"तुम इन लोगों को हड़ताल करने पर कभी राज़ी नहीं कर सकते," रीबिन ने पावेल के पास आकर कहा। "पैसे का लालच ज़रूर है

इन्हें, पर लड़ने का बूता नहीं है! तीन सौ से ज़्यादा लोग तुम्हारा साथ नहीं देंगे। इतना कचरा एक दफ़े में थोड़े ही साफ़ हो जायेगा..."

पावेल चुप था। जन-समुदाय का विशाल काला चेहरा उसके सामने घूम रहा था और उसकी आंखों में अपने सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा था। पावेल का हृदय घबराहट के मारे ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उसे ऐसा लगा कि उसके शब्दों का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा था, मानो पानी की इक्का-दुक्का बूंदें तपती हुई ज़मीन पर पड़ते ही छन्न से ग़ायब हो गयी हों।

वह थका हुआ और निराश घर लौटा। मां और सिज़ोव उसके पीछे आ रहे थे; रीबिन उसके बग़ल में चल रहा था।

"तुम बोलते अच्छा हो पर तुम्हारी बात दिल को नहीं छूती! यही तो बात है! तुम्हें उनके दिल को छूना चाहिये – उनके दिल के बीचों-बीच चिनगारी लगानी चाहिये। तुम लोगों को तर्क से नहीं समझा सकते। कोई जूता उनके पांव पर ठीक ही नहीं आता – या तो बहुत कसा होता है या बहुत ढीला!"

"पेलागेया, हम बूढ़े लोगों को तो अब क़ब्र का रास्ता लेना चाहिये!" सिज़ोव कह रहा था। "अब नये ढंग के लोग पैदा हो रहे हैं। हम लोग कैसी ज़िंदगी बसर करते थे, तुम्हारे और मेरे जैसे लोग? जानवरों की तरह घुटनों के बल रेंगते थे, अपने से बड़े लोगों के आगे ज़मीन पर नाक रगड़ते थे। लेकिन अब – मालूम नहीं, या तो लोगों की आंखें खुल गयी हैं या वे पहले से भी बड़ी ग़लती कर रहे हैं, मगर कम से कम वे हमारे जैसे नहीं हैं। इन नौजवानों को ही देख लो – डायरेक्टर से ऐसे बात करते हैं जैसे वह इनके बराबर का हो!.. अच्छा, पावेल मिख़ाइलोविच, मैं तुमसे बाद में मिलूंगा। जिस तरह तुम दूसरों के लिए लड़ते हो वह बहुत अच्छी बात है। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! शायद तुम्हीं इन सब मुसीबतों से छुटकारा पाने का कोई रास्ता निकाल लो। भगवान तुम्हें सुखी रखे!"

और इतना कहकर वह चला गया।

"जा मर जाके," रीबिन ने अस्फुट स्वर में कहा। "इसके जैसे लोगों को तो इंसान भी न कहना चाहिये। ये तो बस गारे का काम दे सकते हैं, कहीं कोई दरार पड़ जाये तो उसे भरने के लिए। भला तुमने ग़ौर किया, पावेल, कि तुम्हें प्रतिनिधि बनाने के लिए कौन चिल्लाया था? वही लोग जिन्होंने यह ख़बर उड़ायी थी कि तुम समाजवादी हो

और हंगामा कराना चाहते हो। वही लोग थे! उन्होंने अपने मन में सोचा होगा: यह काम से अलग कर दिया जायेगा – इसकी यही सज़ा है।"

"अपने हिसाब से उन्होंने ठीक ही किया," पावेल बोला।

"और भेड़िये भी ठीक ही करते हैं जब वे अपने भाई-बन्धुओं को चीर-फाड़कर खा जाते हैं..."

रीबिन के चेहरे पर चिन्ता के बादल छाये हुए थे और उसके स्वर से मालूम होता था कि वह बहुत उद्विग्न है।

"लोग ख़ाली शब्दों को नहीं सुनते – उन्हें बात समझाने के लिए मुसीबत उठानी पड़ती है – ख़ून में डूबे हुए शब्द कहने पड़ते हैं!.."

पावेल दिन भर थका-थका और उदास घूमता रहा। उसे एक अजीब चिन्ता सता रही थी, उसकी आंखों से चिंगारियां निकल रही थीं और ऐसा मालूम होता था जैसे वह कुछ ढूंढ़ रहा हो। मां ने इस बात को देखा।

"क्या बात है, पावेल?" उसने डरते-डरते सावधानी से पूछा।

"सिर में दर्द है," उसने उत्तर दिया।

"तुम लेट जाओ, मैं डाक्टर को बुलाये लाती हूं।"

"नहीं, तुम फ़िक्र न करो," उसने जल्दी से उत्तर दिया। फिर उसने दबी ज़बान से कहा:

"मैं अभी कमउम्र और कमज़ोर हूं, यही मुसीबत है! उन्होंने मेरी बात पर भरोसा नहीं किया, मेरा साथ नहीं दिया, जिसका मतलब है कि मुझे अपनी बात ठीक से कहनी नहीं आती। मैं अपने आप से परेशान और लज्जित हूं।"

मां ने अपने बेटे के विचारमग्न चेहरे को घूरकर देखा और उसे धीरज बंधाने का प्रयत्न किया:

"सब्र से काम लो," उसने नरमी से कहा। "जिस बात को वे आज नहीं समझे हैं कल समझ जायेंगे।"

"उन्हें समझना पड़ेगा!" पावेल ने आवेश में कहा।

"मैं भी समझ गयी कि तुम ठीक बात कह रहे हो..."

पावेल मां के निकट जाकर बोला:

"मां, तुम कितनी अच्छी हो!" और मुंह दूसरी ओर कर लिया। मां चौंक पड़ी, मानो उसके इस शान्त भाव से कहे गये शब्दों ने उसे अंगारे की तरह जला दिया हो। मां ने हाथ अपने हृदय पर रखा और

बेटे के इस प्यार को अपने हृदय में संजोये हुए वहां से चली गयी।

उसी रात जब मां सो गयी थी और पावेल बिस्तर पर लेटा पढ़ रहा था, राजनीतिक पुलिसवाले आये और भुनभुनाते हुए घर की हर चीज़ उलट-पुलटकर तलाशी लेने लगे। उन्होंने ऊपर अटारी पर देखा और बाहर बाग़ का भी कोना-कोना छान मारा। उस पीले चेहरेवाले अफ़सर ने इस बार भी वैसा ही बरताव किया जैसा पहले किया था—वही अपमानजनक व्यंग, उनके दिलों को जलानेवाली व्यंग-भरी बातों में उसे विशेष आनंद आता था। मां चुपचाप एक कोने में बैठी एकटक अपने बेटे की सूरत देखती रही थी। पावेल बहुत प्रयत्न कर रहा था कि उसकी भावनाएं प्रकट न होने पायें, पर जब भी वह अफ़सर हंसता पावेल की उंगलियां फड़कने लगतीं। मां जानती थी कि जब वह पुलिसवाला कोई मज़ाक़ करता था तो अपने ऊपर क़ाबू रखना पावेल के लिए कितना कठिन हो जाता था। इस बार उसे इतना डर नहीं लगा जितना पहली बार लगा था। भूरी वर्दीवाले इन निशाचरों के प्रति उसकी घृणा बढ़ गयी थी और इस घृणा की भावना में उसका भय दब गया था।

"मुझे पकड़कर ले जायेंगे," पावेल ने मौक़ा पाकर मां के कान में कहा।

"मैं समझ गयी हूं..." मां ने सिर झुकाकर धीरे से उत्तर दिया।

वह जानती थी कि दिन में पावेल ने मज़दूरों के सामने जो कुछ कहा था उसके कारण उसे जेल में ठूंस दिया जायेगा। पर उसने जो कुछ कहा था, उससे सभी सहमत थे और इसलिए वे उसकी रक्षा के लिए उठ खड़े होंगे। उसे ज़्यादा दिन तक जेल में रखने का साहस किसी को न होगा...

मां का जी चाह रहा था कि वह उसके गले में बांहें डालकर जी भरकर रोये, पर अफ़सर बग़ल में ही खड़ा अपनी आंखें सिकोड़कर उसे घूर रहा था। उसकी मूंछें और होंट फड़क रहे थे और पेलागेया निलोवना को ऐसा लगा कि यह व्यक्ति इस प्रतीक्षा में है कि कब मेरे आंसू छलकते हैं और कब मैं गिड़गिड़ाकर उससे प्रार्थना करती हूं। सारी शक्ति बटोरकर उसने बेटे का हाथ पकड़ लिया और दम साधकर धीमे स्वर में बड़े प्यार से बोली:

"अच्छा जाओ, पावेल। अपनी ज़रूरत की हर चीज़ ले ली है न तुमने?"

"हां, उदास न हो।.."

6-1065

"भगवान तुम्हारी रक्षा करे!.."

जब वे लोग पावेल को लेकर चले गये तो मां एक बेंच पर बैठकर चुपके-चुपके रोने लगी। वह दीवार की तरफ़ पीठ किये बैठी थी जैसे उसका पति बैठा करता था; उसका हृदय व्यथा से भरा हुआ था और उसे अपनी निस्सहाय दशा की वेदनापूर्ण चेतना खाये जा रही थी। अपना सिर पीछे झटककर मां ने एक दबी हुई लम्बी चीख़ मारी जिसमें उसके आहत हृदय की सारी वेदना उमड़ आयी थी। उसके मस्तिष्क में नक़ाब जैसा वही भावहीन पीला चेहरा, वही पतली-पतली मूंछें और हर्ष से चमकती हुई वही मिंची-मिंची आंखें घूम रही थीं। उसके सीने में उन लोगों के प्रति, जो मांओं से उनके बेटों को केवल इसलिए छीन लेते थे कि वे न्याय चाहते थे, कटुता और घृणा के घने बादल छा गये।

सरदी बहुत थी और वर्षा की बूंदें खिड़की पर सिर पटक रही थीं। मां को ऐसा लगा कि लम्बी-लम्बी भुजाओं और बिना आंखों की लाल चेहरोंवाली भूरी आकृतियां रात को संतरियों की तरह उसके घर का चक्कर काट रही थीं और उसे उनकी एड़ों की मंद-मंद खनक सुनायी दे रही थी।

"वे मुझे भी ले जाते तो अच्छा होता," मां ने सोचा।

लोगों को काम पर बुलाने के लिए भोंपू बजा। आज सुबह उसकी आवाज़ न जाने क्यों सदैव की अपेक्षा धीमी और भर्रायी हुई थी जैसे उसमें विश्वास की कमी हो। दरवाज़ा खुला और रीबिन अन्दर आया।

"क्या उसे पकड़ ले गये?" उसने अपनी भीगी हुई दाढ़ी का पानी पोंछते हुए पूछा।

"हां, ले गये कलमुंहे!" मां ने आह भरकर उत्तर दिया।

"यह तो पहले ही से मालूम था," वह धीरे से हंसा। "मेरे घर की भी तलाशी ली थी। हर चीज़ टटोलकर देखी। गाली-गलौज बहुत की, मगर नुक़सान कम ही किया। तो पावेल को पकड़ ले गये! डायरेक्टर ने इशारा किया, पुलिस ने सिर हिलाया और – एक आदमी और चला गया। अच्छी मिलीभगत है। एक सींग पकड़ता है और दूसरा एक-एक बूंद दूध निचोड़ लेता है..."

"तुम लोगों को पावेल की तरफ़ से आवाज़ उठानी चाहिये!" मां ने अपनी जगह से उठते हुए ऊंचे स्वर में कहा। "उसने जो कुछ किया वह सबके लिए किया!"

"किसे आवाज़ उठानी चाहिये?"

"सबको!"

"हुं! तो तुम्हारा यह ख़्याल है! मगर यह कभी नहीं होने का।"

वह हंसता हुआ बाहर चला गया और उसके निराशाजनक शब्दों ने मां को पहले से भी ज़्यादा दुःखी कर दिया।

"अगर उन्होंने उसे मारा-पीटा तो क्या होगा?.."

वह कल्पना करने लगी कि उसके बेटे को बहुत मारा गया है और उसके शरीर पर बहुत से घाव हैं और वह ख़ून में लथपथ है। मां के हृदय में भय समा गया। उसकी आंखों में पीड़ा होने लगी।

उस दिन उसने न चूल्हा जलाया न खाना पकाया; चाय तक नहीं पी। रात को बहुत देर से उसने रोटी का एक टुकड़ा खाया। जब वह सोने के लिए लेटी तो उसे ऐसा लगा कि उसके जीवन में कभी इतना सूनापन और अकेलापन नहीं था। पिछले कुछ वर्षों में वह निरन्तर किसी बहुत ही अच्छी महत्वपूर्ण बात की आशा में अपना जीवन बिताने की आदी हो चुकी थी। उसके चारों तरफ़ नौजवान लोगों की उल्लासपूर्ण और कोलाहलमय सरगर्मियां और उसके बेटे का लगन से भरा हुआ चेहरा, जो इस अच्छे पर संकटमय जीवन के लिए ज़िम्मेदार था, हमेशा उसके सामने रहता था। अब उसके जाते ही जैसे हर चीज़ चली गयी थी।

१४

एक दिन बीता; पहाड़ जैसी एक और रात बीती। मां को रात भर नींद न आयी; लेकिन उसके बाद जो दिन आया वह और भी धीरे-धीरे बीता। वह सोच रही थी कि कोई आयेगा पर कोई नहीं आया। संध्या आयी। रात हो गयी। वर्षा की ठंडी बौछारें आहें भरकर दीवार से अपना सिर टकरा रही थीं; तेज़ हवा सीटी बजाती हुई चिमनी में होकर अन्दर आ रही थी और ऐसा मालूम हो रहा था कि जैसे फ़र्श के नीचे कोई चीज़ करवटें बदल रही है। छत से पानी टपक रहा था और बूंदें टपकने की आवाज़ एक विचित्र सामंजस्य के साथ घड़ी की टिक-टिक में विलीन हुई जा रही थी। ऐसा लगता था कि पूरा घर धीरे-धीरे डगमगा रहा है; व्यथा के कारण हर वस्तु निष्प्राण और व्यर्थ प्रतीत हो रही थी...

खिड़की पर किसी के खटखटाने की आवाज़ आयी। कुछ देर

रुककर फिर वही आवाज़ आयी... मां इन खटखटाहटों की आदी हो चुकी थी; उसे उनसे बिल्कुल भी डर नहीं लगता था, पर इस बार तो वह किंचित हर्ष से चौंक पड़ी। अस्पष्ट आशाओं के उत्साह में वह जल्दी से उठ खड़ी हुई। कंधों पर एक शाल डालकर उसने जाकर दरवाज़ा खोला...

समोइलोव अन्दर आया। उसके पीछे एक और आदमी था जिसका चेहरा कोट के उठे हुए कालर और माथे पर झुकी हुई टोपी की आड़ में छुपा हुआ था।

"सो तो नहीं रही थीं आप?" समोइलोव ने पूछा। इस प्रश्न के अतिरिक्त उसने और कोई अभिवादन का शब्द न कहा। सदैव के विपरीत उसके स्वर में चिन्ता और उदासी थी।

"नहीं, सोयी नहीं थी !" मां ने उत्तर दिया और उत्सुकता से खड़ी उन्हें देखती रही।

समोइलोव के साथी ने टोपी उतारकर अपना छोटा-सा गठीला हाथ आगे बढ़ा दिया। उसकी सांस में खरखराहट थी।

"क्यों मां, हमें पहचाना नहीं?" उसने ऐसे पूछा मानो बहुत पुराना मित्र हो।

"अरे, तुम हो?" पेलागेया निलोवना ने खुश होकर कहा। "येगोर इवानोविच?"

"हां, हां, वही!" उसने पादरी जैसे लम्बे बालोंवाला अपना बड़ा सा सिर झुकाकर उत्तर दिया। उसके चेहरे पर एक मुस्कराहट खेल रही थी और मां को देखकर उसकी छोटी-छोटी भूरी आंखों में प्यार की एक चमक आ गयी। वह देखने में बिलकुल समोवार लगता था – गोल-मटोल, छोटा-सा, मोटी-सी गरदन और छोटी-छोटी बांहें। उसका चेहरा चमक रहा था और वह ज़ोर-ज़ोर से सांसें ले रहा था। उसके सीने की गहराई में कोई चीज़ खरखराहट पैदा कर रही थी।

"तुम ज़रा उस कमरे में चले जाओ, मैं कपड़े पहन लूं," मां ने कहा।

"हमें तुमसे कुछ पूछना है," समोइलोव ने नज़रें झुकाकर मां की तरफ़ देखते हुए उत्सुकता से कहा।

येगोर इवानोविच दूसरे कमरे में जाकर वहां से बोलने लगा।

"अम्मा, आज सुबह निकोलाई इवानोविच, जिससे आप परिचित हैं, जेल से छोड़ दिया गया..." उसने कहना आरम्भ किया।

"अच्छा, मुझे नहीं मालूम था कि वह जेल में था," मां बीच में बोल उठी।

"दो महीने ग्यारह दिन जेल में रहा। वहां उक्रइनी से उसकी मुलाक़ात हुई थी, उसने सलाम कहलाया है और पावेल ने भी। और उसने कहलाया है कि आप चिन्ता न करें। उसने कहा है कि आप इस बात को जान लें कि उसके रास्ते पर चलनेवालों के लिए जेल हमेशा ही आराम करने की जगह होती है। हमारे हाकिमों ने बहुत सोच-समझकर इस बात का इंतज़ाम किया है। अच्छा, अम्मा, अब मैं काम की बात करूंगा। मालूम है कल कितने लोग पकड़े गये थे?"

"क्यों, क्या पावेल के अलावा भी कोई पकड़ा गया था?" मां ने आश्चर्य से पूछा।

"वह उनचासवां आदमी था," येगोर इवानोविच ने शान्त भाव से कहा। "और कारखाने के मालिक शायद एक दर्जन आदमियों को और पकड़वाने के फेर में हैं। जैसे, यही महानुभाव जो तुम्हारे सामने हैं..."

"हां, मैं भी!" समोइलोव ने मुंह लटकाकर कहा।

न जाने क्यों पेलागेया निलोवना को ऐसा लगा कि उसे सांस लेने में अब अधिक सुविधा हो रही है।

"कम से कम वह वहां अकेला तो नहीं है," उसके मस्तिष्क में यह विचार बिजली की तरह कौंध गया।

कपड़े पहनकर वह अपने अतिथियों के पास आयी और उनकी तरफ़ देखकर प्रसन्नता से मुस्करायी।

"मैं समझती हूं कि जब इतने लोगों को पकड़कर ले गये हैं तो ज़्यादा दिन नहीं रखेंगे..."

"सो तो नहीं रखेंगे!" येगोर इवानोविच ने कहा। "और अगर हम उनका यह बना-बनाया खेल बिगाड़ दें तब तो वे दुम दबाकर भाग खड़े होंगे। देखो बात यह है: अगर हमने फ़ैक्टरी में परचे बांटने बंद कर दिये तो पुलिसवाले इस बात का फ़ायदा उठायेंगे और पावेल तथा दूसरे उन भले साथियों के खिलाफ़ इस्तेमाल करेंगे, जो इस वक़्त जेल की यातना झेल रहे हैं..."

"वह कैसे?" मां ने भयभीत होकर पूछा।

"बहुत सीधी बात है यह तो!" येगोर इवानोविच ने शान्त भाव से उत्तर दिया। "कभी-कभी पुलिसवाले भी अपनी अक़्ल से काम लेते

हैं। आप ख़ुद ही ग़ौर करें: पावेल जब बाहर था तब अख़बार और परचे बंटते थे; पावेल जेल चला गया – अख़बार और पर्चे बंटना बंद हो गये। बस, इसका साफ़ मतलब यह है कि अख़बार और पर्चे वही बंटवाता था, है कि नहीं? और बस वे सभी को खाना शुरू कर देंगे। पुलिसवालों को यही मज़ा आता है कि वे लोगों को पूरी तरह नोच खायें, हड्डियां तक बाक़ी न बचें!"

"मैं समझ रही हूं, समझ रही हूं!" मां ने उदास स्वर में कहा। "मगर बेटा, हम कर ही क्या सकते हैं?"

"सत्यानाश हो उनका! उन्होंने लगभग सभी लोगों को पकड़ लिया है!.." रसोई से समोइलोव की आवाज़ आयी। "अब हमें केवल अपने लक्ष्य के लिए ही नहीं बल्कि अपने साथियों को बचाने के लिए भी अपना काम करते रहना है।"

"और हमारे पास काम करनेवाला कोई है नहीं," येगोर ने हल्के से मुस्कराकर कहा। "हमारे पास बहुत-सा बढ़िया मसाला छपा रखा है, सब मेरे हाथ की करामात है, मगर अब उसे फ़ैक्टरी में कैसे पहुंचाया जाये, बस यही समझ में नहीं आता।"

"अब वे फाटक पर हर एक की तलाशी लेने लगे हैं," समोइलोव ने कहा।

मां ताड़ गयी कि वे उससे कुछ आशा कर रहे हैं।

"यह कैसे किया जा सकता है?" उसने जल्दी से पूछा।

समोइलोव दरवाज़े में आकर खड़ा हो गया:

"पेलागेया निलोवना, आप उस खोमचेवाली कोरसुनोवा को जानती हैं?"

"हां, क्यों?.."

"उससे बात करके देखिये। शायद वह यह चीज़ें अन्दर पहुंचा दे?"

मां ने हाथ हिलाकर इस तरकीब को रद्द कर दिया।

"अरे नहीं! उसके पेट में कोई बात नहीं पचती! उन्हें फ़ौरन मालूम हो जायेगा कि उसे वे चीज़ें मुझसे मिली थीं – इस घर से आयी थीं – अरे नहीं!"

फिर सहसा मानो किसी प्रेरणा के वश उसने कहा:

"तुम मुझे दे दो! मैं सब ठीक कर दूंगी। मैं कोई तरकीब निकाल लूंगी! मैं मारिया से कहूंगी कि वह मुझे हाथ बंटाने के लिए अपने साथ ले ले। मुझे किसी न किसी तरह पेट तो पालना है ही। मैं फ़ैक्टरी

में खाने की चीज़ें बेचने ले जाया करूंगी! मैं सब कर लूंगी!"

अपने सीने पर दोनों हाथ रखकर उसने जल्दी-जल्दी उन्हें विश्वास दिलाया कि वह सब कुछ बड़े अच्छे ढंग से निबटा देगी, किसी का ध्यान भी उसकी ओर न जायेगा और अन्त में उसने भावातिरेक से कहा:

"वे लोग भी देखेंगे कि पावेल के हाथ जेल से बाहर भी पहुंच सकते हैं! हम उन्हें दिखा देंगे!"

तीनों के चेहरे चमक उठे।

"मां, यह तो कमाल ही कर दिया आपने! काश आप जानतीं कि क्या बढ़िया बात सूझी है आपको! बस, मज़ा ही आ गया!" येगोर इवानोविच ने अपने दोनों हाथ रगड़ते हुए मुस्कराकर कहा।

"अगर यह तरकीब काम कर गयी, तो मैं तो बहुत ही ख़ुशी से जेल में जा बैठूंगा!" समोइलोव ने भी अपने हाथ रगड़ते हुए कहा।

"अम्मा, कोई जवाब नहीं है आपका इस दुनिया में!" येगोर इवानोविच ने भर्रायी हुई आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

मां मुस्करा दी। वह इस बात को अच्छी तरह समझ गयी थी कि अगर पर्चे फ़ैक्टरी में बंटते रहे तो मालिक उसके बेटे पर उनको बंटवाने का दोष नहीं लगा पायेंगे। उसने अनुभव किया कि वह इस काम को पूरा करने की क्षमता रखती है और उसका रोम-रोम हर्ष से पुलकित हो उठा।

"जब जेल में पावेल से तुम्हारी मुलाक़ात हो तो उससे कहना कि उसकी मां बहुत ही अच्छी है," येगोर इवानोविच बोला।

"मेरी मुलाक़ात पहले होगी," समोइलोव ने हंसकर कहा।

"उससे कह देना कि जो कुछ भी करना होगा मैं करूंगी! उसे यह बता देना!"

"और अगर उन्होंने समोइलोव को जेल न भेजा तो?" येगोर इवानोविच ने पूछा।

"तो फिर क्या हो सकता है!" मां बोली।

वे दोनों हंस पड़े और मां भी कुछ शरमाकर, कुछ झेंपते हुए हंसने लगी।

"दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझना बहुत कठिन होता है," उसने आंखें झुकाकर कहा।

"यह स्वाभाविक ही है," येगोर ने कहा। "और आप पावेल की चिन्ता न कीजियेगा, दुःखी न होइयेगा। पावेल जेल से और अच्छा

होकर आयेगा। वहां आदमी को आराम करने और पढ़ने का मौक़ा मिलता है और हमारे जैसे लोग जब तक बाहर रहते हैं तब तक उन्हें दोनों में से किसी भी बात का मौक़ा नहीं मिलता। मैं तीन बार जेल हो आया हूं, और मैं यह तो नहीं कह सकता कि वहां जाकर मुझे बड़ी ख़ुशी होती थी पर तीनों ही बार मेरे दिल और दिमाग़ को बड़ा फ़ायदा पहुंचा।"

"तुम्हें सांस लेने में बड़ी तकलीफ़ होती है," मां ने उसके सीधे-सादे चेहरे पर मित्रतापूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा।

"उसकी भी एक ख़ास वजह है!" येगोर ने उंगली उठाकर उत्तर दिया। "अच्छा, मां, तो मैं समझता हूं कि सब कुछ तै हो गया? कल हम पर्चे लाकर तुम्हें दे जायेंगे और एक बार फिर गाड़ी चल पड़ेगी, और बहुत दिनों से छाया हुआ अंधकार छंटने लगेगा। भाषण की आज़ादी की जय हो और मां के हृदय की जय हो! अच्छा, फिर मिलेंगे!"

"अच्छा तो चलते हैं," समोइलोव ने मां से हाथ मिलाते हुए कहा। "मैं अपनी मां से कभी यह करने को नहीं कह सकता था।"

"एक न एक दिन सब मांएं इस बात को समझ जायेंगी," पेलागेया निलोवना ने उसका उत्साह बढ़ाने के लिए कहा।

उन लोगों के चले जाने के बाद मां ने दरवाज़ा बंद किया और कमरे के बीच में घुटने टेककर प्रार्थना करने बैठ गयी। बाहर बारिश हो रही थी। उसकी प्रार्थना में शब्द न थे। वह तो केवल उन लोगों की चिन्ता कर रही थी जिन्हें पावेल उसके जीवन में ले आया था। ऐसा मालूम होता था कि उसके और देव-प्रतिमाओं के बीच ये लोग चल-फिर रहे थे – ये सीधे-सादे लोग जो एक-दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हुए भी बिल्कुल अकेले थे।

बहुत सबेरे वह मारिया कोरसुनोवा से मिलने गयी।

खोमचेवाली ने, जो हमेशा की तरह सिर से पांव तक तेल में चुपड़ी हुई थी और जिसकी ज़बान कैंची की तरह चल रही थी, बड़ी सहानुभूति के साथ मां का स्वागत किया।

"उदास हो?" उसने अपने चिकने मोटे हाथ से मां के कंधे पर एक धप मारते हुए पूछा। "हिम्मत न हारो! वे लोग उसे पकड़कर ले गये क्या? तो इसमें क्या हुआ? यह कोई लज्जा की बात नहीं है। एक ज़माने में लोग चोरी करने पर जेल में बंद किये जाते थे, अब हक़ के लिए लड़नेवालों को जेल में बंद कर दिया जाता है। शायद पावेल ने बस उतना ही नहीं कहा जितना उसे कहना चाहिये था, मगर उसने

जो कुछ किया वह सब की भलाई के लिए था, और सब लोग इस बात को जानते हैं, तुम चिन्ता न करो! वे लोग इस बात को न भी मानें पर भले-बुरे की पहचान तो सभी को होती है। मैं तो ख़ुद तुमसे मिलने आना चाहती थी पर फ़ुरसत ही नहीं मिली। दिन भर पकाना और बेचना, मगर देख लेना — मैं मरूंगी भिखारियों की तरह! मेरे चाहनेवाले मुझे खाये जाते हैं — इसी का तो रोना है! कोई इधर नोचता है, कोई उधर नोचता है, जैसे चूहे रोटी को कुतरते हैं। जहां मैंने थोड़ा-बहुत पैसा बचाया कोई हरामी आकर छीन ले जाता है। औरत होना भी एक मुसीबत है! सब से गयी-बीती है वह इस धरती पर! अकेली रहे — तो बुरी, मरद करे — तो मरी!"

"मैं तुमसे कहने आयी थी कि मुझे भी अपने साथ काम करने के लिए लगा लो," पेलागेया निलोवना ने उसकी बक-बक को बीच में ही काटकर कहा।

"क्या मतलब?" मारिया ने पूछा। जब पेलागेया ने समझाया तो मारिया ने सिर हिलाया।

"ज़रूर!" मारिया ने कहा। "याद है, तुम मुझे मेरे मरद से बचाने के लिए अपने यहां छिपा लिया करती थीं? अब मैं तुम्हें भूख से बचाऊंगी... तुम्हारी मदद तो सबको करना चाहिये क्योंकि तुम्हारा बेटा सब की भलाई की ख़ातिर लड़ता हुआ पकड़ा गया है। वह बहुत अच्छा है, सब लोग यही कहते हैं, और उन्हें उसके पकड़े जाने का बड़ा दुःख है। विश्वास जानो, इन गिरफ़्तारियों से मालिकों को कोई फ़ायदा होनेवाला नहीं। देखो, फ़ैक्टरी में क्या हो रहा है। बहन, बड़ा बुरा हाल है! ये मालिक समझते हैं कि अगर वे किसी की एड़ी पर काट लेंगे तो वह भागना छोड़ देगा। मगर होता यह है कि वे एक दरजन लोगों को मारते हैं और सैकड़ों लोग उन पर झपट पड़ते हैं!"

इस वार्तालाप के फलस्वरूप दूसरे दिन दोपहर को मां मारिया के खाने की दो टोकरियां लिए हुए फ़ैक्टरी गयी और वह खोमचेवाली ख़ुद बाज़ार में सौदा-सुलफ़ लेने चली गयी।

१५

मज़दूरों ने नयी खोमचेवाली को फ़ौरन पहचान लिया।

"पेलागेया भी इस काम में शामिल हो गयीं?" वे पूछते और प्रशंसा के भाव से सिर हिलाते।

उनमें से कुछ उसे यह भी दिलासा देते कि पावेल जल्दी ही जेल से छूट जायेगा। कुछ मज़दूर डायरेक्टर को और पुलिसवालों को बुरी-बुरी गालियां देते और मां को अपने हृदय में इनकी प्रतिध्वनि मिलती। कुछ लोग ऐसे भी थे जो उसे इस दुर्दशा में देखकर मन ही मन ख़ुश होते और कारख़ाने के टाइम-कीपर इसाई गोरबोव ने तो दांत पीसकर यहां तक कहा कि "अगर मैं गवर्नर होता तो तुम्हारे बेटे को फांसी पर चढ़वा देता! लोगों को उल्टी पट्टी पढ़ाने चला था!"

इस भयानक धमकी को सुनकर मां का दम सूख गया। उसने इसाई की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, उसने केवल उसके छोटे-से धब्बेदार चेहरे को एक नज़र घूरकर देखा और आह भरकर आंखें झुका लीं।

फ़ैक्टरी में असंतोष फैला हुआ था। मज़दूर छोटे-छोटे गिरोहों में जमा होकर आपस में कानाफूसी करते। फ़ोरमैन लोग हर बात की टोह लेने के फेर में इधर-उधर परेशान घूमते रहते। चारों तरफ़ गालियां और तिरस्कारपूर्ण हंसी सुनायी देती।

दो पुलिसवाले समोइलोव को उसके सामने से लेकर गुज़रे, वह एक हाथ जेब में डाले हुए चल रहा था और दूसरे से अपने लाल बालों को पीछे कर रहा था।

उसके पीछे लगभग सौ मज़दूर चले आ रहे थे और चिल्ला-चिल्लाकर पुलिसवालों को गालियां दे रहे थे और उनका मज़ाक़ उड़ा रहे थे...

"समोइलोव, हवा खाने जा रहे हो?" किसी ने चिल्लाकर कहा।

"आजकल हम लोगों की बड़ी इज़्ज़त हो रही है!" किसी दूसरे ने कहा। "जब हम टहलने निकलते हैं तो हमारे साथ एक-दो सन्तरी कर दिये जाते हैं..." और मोटी-सी गाली दी।

"मालूम होता है कि अब चोरों को पकड़ने में कोई फ़ायदा नहीं रहा," एक लम्बे क़दवाले काने मज़दूर ने आवाज़ कसी। "इसलिए अब ईमानदार लोगों को पकड़ने लगे हैं..."

"अरे, इनमें इतनी भलमनसाहत भी नहीं कि रात को गिरफ़्तार किया करें," भीड़ में से एक आवाज़ आयी। "ये हरामी तो दिन-दहाड़े यह अंधेर करते हैं!"

पुलिसवालों की त्योरियों पर बल पड़ गये और वे तेज़ी से चलने

लगे, वे कोशिश कर रहे थे कि किसी बात की ओर ध्यान ही न दें और ऐसा जता रहे थे मानो उन्हें जो गालियां दी जा रही थीं उन्हें सुन ही न रहे हों। तीन मज़दूर लोहे का एक बड़ा सा लट्ठा लिये हुए उनके सामने आ निकले।

"अरे चिड़ीमारो, रास्ता तो दो!" उन्होंने चिल्लाकर कहा।

मां के पास से होकर गुज़रते समय समोइलोव ने सिर हिलाकर उसे सलाम किया।

"हम भी चल दिये!" उसने खीसें निकालकर कहा।

मां ने चुपचाप झुककर उसके अभिवादन का उत्तर दिया। इन ईमानदार और समझदार नौजवानों की उसके हृदय पर बहुत गहरी छाप पड़ी थी जो जेल जाते हुए भी मुस्कराते रहते थे। मां का हृदय एक माता के प्यार और ममता से भर उठा।

फ़ैक्टरी से वापस आकर उसने सारा दिन मारिया के साथ बिताया; वह काम में उसका हाथ बंटाती रही और उसकी बेसिर-पैर की बातें सुनती रही। उस दिन शाम को वह बहुत देर में घर लौटी जो बिल्कुल नीरस, एकान्त और निराशापूर्ण था। बड़ी देर तक वह निरुद्देश्य इधर-उधर टहलती रही, उसके मन में शान्ति नहीं थी और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसे चिन्ता भी हो रही थी क्योंकि रात होने आयी थी और येगोर इवानोविच अभी तक अपने वादे के अनुसार छपे हुए पर्चे और अख़बार लेकर नहीं आया था।

शरद ऋतु की हिम के भारी-भारी सुरमई गाले पृथ्वी पर गिर रहे थे। वे बड़ी कोमलता के साथ खिड़कियों के शीशों पर चिपक जाते थे और फिर धीरे-धीरे पिघलकर नीचे फिसल जाते थे और अपना चिन्ह छोड़ जाते थे। वह अपने बेटे के बारे में सोचती रही...

दरवाज़े को किसी ने बड़ी सावधानी से खटखटाया। मां ने जल्दी से दौड़कर कुंडा खोल दिया। साशा अन्दर आयी। मां ने बहुत दिन से उसे नहीं देखा था और पहली बात जिस पर उसका ध्यान गया यह थी कि वह ज़रूरत से ज़्यादा मोटी लग रही थी।

"सलाम," मां ने कहा। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि कोई तो आया और अब कम से कम कुछ रात उसे अकेले नहीं बितानी पड़ेगी। "मैंने बहुत दिन से तुम्हें देखा नहीं। कहीं बाहर गयी हुई थीं?"

"नहीं, मैं जेल में थी!" लड़की ने मुस्कराकर उत्तर दिया। "निकोलाई इवानोविच के साथ। याद है उसकी?"

"हां, हां!" मां ने पुलकित स्वर में कहा। "येगोर इवानोविच ने कल मुझे बताया था कि उसे छोड़ दिया गया है, लेकिन तुम्हारा मुझे पता नहीं था... मुझे किसी ने बताया भी नहीं कि तुम कहां थीं..."

"कोई बात नहीं है। यह लो, येगोर इवानोविच के आने से पहले मुझे कपड़े भी बदल लेने हैं," उसने इधर-उधर नज़र डालते हुए कहा।

"तुम बिल्कुल भीग गयी हो..."

"मैं अख़बार और पर्चे लेकर आयी थी..."

"लाओ, लाओ, मुझे दे दो!" मां ने बड़ी उत्सुकता से कहा।

लड़की ने कोट के बटन खोलकर अपने शरीर को झटका और पर्चे इस तरह नीचे गिरने लगे जैसे पतझड़ में पेड़ों से पत्ते गिरते हैं। मां उन्हें बटोरते हुए हंस पड़ी।

"मैंने जब तुम्हें देखा तो सोच में पड़ गयी कि आख़िर तुम इतनी मोटी कैसे हो गयीं... मैंने समझा शायद तुम्हारा ब्याह हो गया है और तुम पेट से हो। अरे वाह! कितने बहुत से पर्चे ले आयीं तुम। तुम पैदल तो नहीं आयी हो न?"

"नहीं, पैदल ही आयी हूं," साशा ने उत्तर दिया। वह फिर पहले की ही तरह लम्बी और दुबली-पतली लगने लगी थी। मां ने देखा कि उसका चेहरा बहुत उतरा हुआ था, जिसके कारण उसकी आंखें हमेशा से ज़्यादा बड़ी दिखायी देने लगी थीं और आंखों के नीचे काले घेरे पड़ गये थे।

"आख़िर तुम यह क्यों करती हो? जेल से छूटने के बाद तो तुम्हें आराम करना चाहिये!" मां ने आह भरकर सिर हिलाते हुए कहा।

"करना ही पड़ता है," कांपते हुए लड़की ने कहा। "अच्छा मुझे पावेल मिख़ाइलोविच के बारे में बताओ – जब वह पकड़ा गया था तब क्या वह बहुत परेशान था?"

यह प्रश्न पूछते समय साशा ने मां की तरफ़ नहीं देखा, वह सिर झुकाये कांपती हुई उंगलियों से अपने बाल ठीक करती रही।

"ज़्यादा परेशान तो नहीं था," मां ने उत्तर दिया। "अपने दिल की हालत वह ज़ाहिर थोड़े ही होने देगा।"

"उसका जी तो अच्छा है?" लड़की ने नरमी से पूछा।

"इतनी उमर हुई कभी बीमार तो पड़ा नहीं," मां ने उत्तर दिया। "मगर तुम तो बुरी तरह कांप रही हो! मैं अभी तुम्हारे लिए चाय और रसभरी का मुरब्बा लाये देती हूं।"

"यह कर दो तो बड़ा अच्छा है। मगर बड़ा झंझट करना पड़ेगा – इतनी देर हो गयी है। मैं ख़ुद बना लूंगी ..."

"इतना थकने के बाद?" मां ने झिड़की के स्वर में कहा और समोवार में आग सुलगाने लगी। साशा भी रसोईघर में चली गयी और दोनों हाथ सिर के पीछे बांधकर बेंच पर बैठ गयी।

"जेल आदमी को ढीला तो कर ही देती है," वह बोली। "उफ़, वह मनहूस ख़ाली बैठे रहना, इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता! पिंजरे में जानवर की तरह बंद रहना और मन ही मन कुढ़ते रहना कि बाहर कितना काम करने को पड़ा है!"

"इस सबका फल तुम्हें कौन देगा?" मां ने पूछा और फिर आह भरकर स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर दिया:

"ईश्वर के सिवा और कोई नहीं! लेकिन मेरा ख़्याल है कि तुम तो उसमें भी विश्वास नहीं रखतीं?"

"नहीं!" लड़की ने सिर हिलाकर संक्षेप में उत्तर दिया।

"मगर मैं तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं करती!" मां ने आवेश में कहा और फिर अपने दामन से हाथों की कालिख पोंछते हुए वह दृढ़ विश्वास के साथ बोली, "तुम अपनी आस्था को भी नहीं समझतीं। अगर तुम्हें ईश्वर में विश्वास न होता तो तुम ऐसा जीवन कैसे बिता सकतीं?"

सहसा बरसाती में किसी के पैर पटकने और धीरे से बुड़बुड़ाने की आवाज़ आयी। मां चौंक पड़ी और लड़की जल्दी से उछलकर खड़ी हो गयी।

"दरवाज़ा न खोलना," उसने चुपके से कहा। "अगर पुलिसवाले हों तो साफ़ कह देना कि तुम मुझे नहीं जानतीं! कह देना कि मैं अंधेरे में रास्ता भूल गयी थी और तुम्हारे दरवाज़े पर बेहोश होकर गिर पड़ी थी। तुमने अन्दर लाकर जब मेरे कपड़े उतारे तो ये पर्चे मिले, समझीं?"

"हाय मेरी बच्ची! मैं यह क्यों कह दूंगी?" मां ने बहुत व्यथित होकर पूछा।

"ज़रा ठहरो!" साशा ने दरवाज़े पर कान लगाकर कहा। "शायद येगोर हो ..."

येगोर ही था; वह बिल्कुल भीगा हुआ था और थकान के कारण हांप रहा था।

"समोवार गरम है, यह बड़ा अच्छा है! अम्मा, समोवार को

देखकर जितनी ख़ुशी होती है उतनी और किसी चीज़ को देखकर नहीं होती! अच्छा, साशा, तुम यहां पहले ही पहुंच गयीं?"

धीरे-धीरे अपना भारी कोट उतारते समय भी वह लगातार बोलता ही रहा। पूरे रसोईघर में उसके सांस लेने की खरखराहट सुनायी दे रही थी।

"अम्मा, हाकिमों को यह ज़रा-सी लड़की तो फूटी आंखों नहीं सुहाती! एक बार जब जेलर ने इसका अपमान किया था तो इसने भूख हड़ताल कर दी थी और उससे माफ़ी मंगवा कर ही हड़ताल ख़त्म की थी। आठ दिन तक इसने कुछ नहीं खाया, बस मरते-मरते बची। इसके बारे में क्या ख़याल है? क्या पेट है मेरा भी?"

वह अपनी हास्यास्पद तोंद थामे हुए दूसरे कमरे में चला गया; अपने पीछे दरवाज़ा बंद करने के बाद भी वह लगातार बोलता ही रहा।

"सचमुच आठ दिन तक तुमने कुछ नहीं खाया था?" मां ने आश्चर्य से पूछा।

"उससे माफ़ी मंगवाने के लिए मुझे कुछ तो करना ही था!" साशा ने उत्तर दिया; वह अभी तक ठंड से कांप रही थी। लड़की की इस कठोरता और उसके निश्चिंत भाव में मां को तिरस्कार का एक पुट मिला।

"क्या लड़की है!.." उसने सोचा और फिर ज़ोर से बोली, "अगर मर जातीं तो?"

"इसके सिवा कोई चारा ही नहीं था," लड़की ने नरमी से कहा। "मगर उसे माफ़ी मांगनी पड़ी। लोगों को इस तरह किसी की कमज़ोरी का फ़ायदा तो नहीं उठाने दिया जा सकता।"

"हूं!.." मां ने धीरे से कहा। "सब मरद यही करते हैं– ज़िंदगी-भर हम औरतों की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाते हैं..."

"लो, मैं तो अपना बोझ उतार आया," येगोर ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा। "समोवार गरम हो गया? लाओ, मैं अन्दर पहुंचा दूं..."

वह समोवार उठाकर दूसरे कमरे में ले जाते हुए बोला:

"मेरे पापा दिन-भर में कम से कम बीस गिलास चाय पीते थे, जिसकी बदौलत तिहत्तर बरस की उमर तक उन्होंने शान्ति के साथ स्वस्थ जीवन बिताया; उनका वज़न तीन मन से भी ज़्यादा था और वह अपने मरने तक वोस्क्रेसेंस्कोये गांव में नायब पादरी के पद पर काम करते रहे..."

"क्या तुम पादरी इवान के बेटे हो?" मां ने चौंककर पूछा।

"जी हां। आप मेरे माननीय पिताजी को जानती थीं?"

"मेरा भी घर वोस्क्रेसेंस्कोये में ही था! .."

"मेरे गांव में? किसकी बेटी हैं आप?"

"तुम्हारे ही पड़ोसी थे! सेरेगिन परिवार को जानते हो न?"

"आप लंगड़े निल की बेटी हैं? अरे, उन्हें तो मैं अच्छी तरह जानता हूं। न जाने कितनी बार वह मेरे कान ऐंठ चुके हैं..."

वे दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े हंस रहे थे और एक-दूसरे से हज़ारों प्रश्न कर रहे थे। चाय बनाते हुए साशा मुस्करा रही थी, गिलास की खनक सुनकर मां सहसा किसी दूसरे जगत से फिर अपने जगत में लौट आयी।

"माफ़ करना, मैं तो सब कुछ भूल गयी थी! अपने गांव के किसी आदमी से मिलकर कितनी ख़ुशी होती है! .."

"माफ़ी तो मुझे मांगना चाहिये कि मैंने बिना पूछे हर चीज़ ऐसे हथिया ली जैसे मेरा ही घर हो। लेकिन अब दस बज गये हैं और मुझे बहुत दूर जाना है।"

"तुम कहां जा रही हो? शहर?" मां ने आश्चर्य से पूछा।

"हां।"

"लेकिन आख़िर क्यों? इतना अंधेरा है और पानी पड़ रहा है, फिर तुम थकी हुई भी हो! रात यहीं रह जाओ! येगोर इवानोविच रसोई में सो जायेगा और हम दोनों यहां सो जायेंगी..."

"नहीं, मुझे जाना ही पड़ेगा!" लड़की ने शान्त भाव से उत्तर दिया।

"मां, परिस्थितियां ऐसी हैं कि लड़की को जाना ही पड़ेगा। लोग यहां इसे जानते हैं और अगर कल दिन में यहां सड़क पर किसी ने देख लिया तो बुरा होगा।"

"लेकिन वह जायेगी कैसे? बिल्कुल अकेली? .."

"बिल्कुल अकेली," येगोर ने धीरे से हंसकर कहा।

लड़की ने अपने लिए गिलास में चाय बनायी, और रोटी के टुकड़े पर नमक छिड़ककर खाने लगी; वह विचारमग्न होकर मां को कनखियों से देख रही थी।

"तुम और नताशा अकेले कैसे चली जाती हो? मैं तो कभी न जा पाऊं! मुझे तो डर लगता है!" पेलागेया निलोवना ने कहा।

"डर तो इन्हें भी लगता है!" येगोर बोला। "क्यों, लगता है कि नहीं, साशा?"

"लगता क्यों नहीं है!" लड़की ने उत्तर दिया।

मां ने कनखियों से उसे और येगोर को देखा।

"तुम लोग, तुम लोग भी कितने... कठोर हो!" वह बोली।

चाय पीकर साशा ने चुपचाप येगोर से हाथ मिलाया और रसोई में चली गयी। मां भी उसके पीछे-पीछे गयी।

"अगर पावेल मिखाइलोविच से भेंट हो तो मेरा सलाम कहियेगा," साशा ने कहा। "भूलियेगा नहीं!"

दरवाज़े के कुंडे पर हाथ रखकर वह सहसा पीछे मुड़कर बोली:

"मां, तुम्हें चूम लूं?"

मां ने चुपचाप उसे सीने से लगा लिया और बड़ी ममता के साथ उसे चूमा।

"धन्यवाद!" लड़की ने सिर हिलाकर कहा और बाहर चली गयी।

कमरे में वापस आकर मां ने बड़ी चिन्ता के साथ खिड़की के बाहर देखा। अंधकार में बर्फ़ के नम गाले गिर रहे थे।

"प्रोज़ोरोव-परिवार की याद है?" येगोर ने पूछा।

वह टांगें फैलाये बैठा बड़े ज़ोर से अपनी चाय फूंक-फूंककर पी रहा था। उसका लाल चेहरा पसीने से भीगा हुआ था और उस पर संतुष्टि का भाव था।

"हां, याद है!" मां ने कुछ सोचते हुए कहा और मेज़ का सहारा लेकर बैठ गयी। वह बैठी हुई उदास नेत्रों से येगोर को देख रही थी। "चः-चः! बेचारी साशा! वह शहर कैसे पहुंच पायेगी?"

"हां, थक जायेगी!" येगोर ने सहमति प्रकट की। "जेल में रहने से उसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। वह पहले ज़्यादा तंदुरुस्त थी... एक बात और है, उसका लालन-पालन इस तरह हुआ है कि वह ज़्यादा कठोर जीवन नहीं बिता सकती... सुना है कि उसके दोनों फेफड़े ख़राब हो गये हैं।"

"वह है कौन?" मां ने बड़े कोमल भाव से पूछा।

"ज़मींदार की बेटी है। उसका बाप बड़ा सूअर है, उसने ख़ुद ही यह बताया था। तुम्हें मालूम है, मां, वे दोनों शादी करना चाहते हैं?

"कौन?"

"वह और पावेल ... लेकिन तुम तो जानती ही हो यह बननेवाली बात नहीं। जब वह बाहर होता है तो यह जेल में होती है और जब यह बाहर आती है तो वह जेल चला जाता है!"

"मुझे पता नहीं था," मां ने कुछ रुककर कहा। "पावेल अपने बारे में कभी बात ही नहीं करता ..."

यह सुनकर मां को उस लड़की पर और भी तरस आने लगा और वह अनायास ही अपने अतिथि पर बरस पड़ी:

"तुम उसे घर तक क्यों नहीं पहुंचा आये?" मां ने कहा।

"ऐसा करना ठीक नहीं था!" उसने धीरे से उत्तर दिया। "मुझे यहां बस्ती में बहुत-सा काम करना है – मुझे सबेरे ही उठकर इधर-उधर भागना-दौड़ना है और मेरे जैसे आदमी के लिए, जिसका दम हर वक़्त फूलता रहता है यह कोई आसान काम नहीं है ..."

"अच्छी लड़की है," मां ने कहा। उसके विचार अभी तक उसी बात में उलझे हुए थे जो येगोर ने उसे अभी बतायी थी। वह यह सोचकर दु:खी हो रही थी कि यह बात उसे अपने बेटे से न मालूम होकर एक अजनबी से मालूम हुई थी, इसलिए उसकी त्योरियों पर बल आ गये और वह अपने होंट काटने लगी।

"सो तो है!" येगोर ने सहमति में सिर हिलाया। "मैं जानता हूं कि तुम्हें उस पर बड़ा तरस आ रहा है। पर इससे कोई फ़ायदा नहीं! अगर तुम हम सब विद्रोहियों के लिए दु:खी होने लगीं तो तुम्हारा दिल किसी दिन जवाब दे जायेगा। सच पूछो तो हम में से किसी का भी जीवन आराम का जीवन नहीं है। हमारा एक साथी अभी निर्वासन काटकर लौटा है। जिस समय वह निज्नी-नोवगोरोद पहुंचा उस समय उसकी बीवी और बच्चा स्मोलेंस्क में उसकी राह देख रहे थे, मगर जब वह स्मोलेंस्क पहुंचा उस समय तक वे मास्को की जेल में बंद किये जा चुके थे। अब उसकी बीवी की साइबेरिया जाने की बारी है। मेरी भी बीवी थी – बहुत ही अच्छी औरत थी। पांच साल तक ऐसी ज़िंदगी बिताने के बाद उसने क़ब्र की राह ली ..."

एक घूंट में चाय ख़त्म करके वह अपनी रामकहानी सुनाता रहा। उसने जेलों में और निर्वासन में जो वर्ष बिताये थे उसके बारे में मां को बताया। उसने मां को अपनी विभिन्न विपदाओं के बारे में, जेलों में पीटे जाने और साइबेरिया में भूखों मरने के बारे में बताया। मां उसे ध्यान से देख रही थी और जिस शान्त सरल भाव से वह अपने विपदाओं

और यातनाओं से परिपूर्ण जीवन की कहानी का वर्णन कर रहा था उस पर मां को आश्चर्य हो रहा था ...

"लेकिन अब कुछ काम की भी बातें करें!"

उसका स्वर बदल गया और उसकी मुद्रा अधिक गंभीर हो गयी। वह मां से पूछने लगा कि उसने फ़ैक्टरी में पर्चे वग़ैरह ले जाने के लिए क्या तरकीब सोची है और मां को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसे छोटी से छोटी बात के बारे में भी कितनी जानकारी थी।

जब इस विषय पर कोई बात करने को नहीं रह गयी तो वे फिर अपने गांव के बारे में बातें करने लगे। येगोर तो हंसी-मज़ाक़ कर रहा था पर मां विचारों में खोयी हुई अतीत में विचर रही थी और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके पिछले जीवन और उस दलदल में एक विचित्र समानता थी जहां छोटे-छोटे फ़र वृक्ष और सफ़ेद बर्च वृक्ष और कांपते हुए एस्पेन वृक्ष उगे हुए थे। बर्च वृक्ष धीरे-धीरे बढ़ते थे और पांच साल बाद उस गंदी मिट्टी में पनपने के बाद गिरकर सड़ जाते थे। उसने अपनी कल्पना में यह चित्र देखा और उसके हृदय में करुणा का सागर उमड़ आया। इसके बाद उसने अपनी कल्पना में एक नौजवान लड़की की आकृति देखी, जिसकी मुद्रा अत्यन्त कठोर थी। बर्फ़ के भीगे-भीगे गाले गिर रहे थे और वह थकी हुई अकेली बढ़ती जा रही थी ... और मां का बेटा जेल में था। कौन जाने वह सोया न हो और लेटे-लेटे कुछ सोच रहा हो ... लेकिन उसके बारे में नहीं, अपनी मां के बारे में नहीं। अब कोई और भी था जो उसे मां से भी ज़्यादा प्रिय था। कष्टदायक विचार बिखरे हुए बादलों की तरह आये और उसकी आत्मा पर अंधकार बनकर छा गये ...

"मां, तुम थक गयी हो! जाओ, अब सो जायें," येगोर ने मुस्कराकर कहा।

उसने येगोर से रात-भर के लिए विदा ली और चुपचाप रसोई में चली गयी। उसका हृदय तीव्र कटुता से भरा हुआ था।

दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते समय येगोर ने पूछा:

"अगर उन लोगों ने तुम्हें पकड़ लिया और पूछा कि नास्तिकता का प्रचार करनेवाले ये पर्चे तुम्हें कहां से मिले तो तुम क्या कहोगी?"

"मैं कह दूंगी 'कहीं से मिले तुम्हें क्या?'" मां ने उत्तर दिया।

"वे तुम्हारी इस बात को मानेंगे नहीं," येगोर ने आपत्ति की। "वे अच्छी तरह जानते हैं कि उनका इस बात से बहुत

गहरा सम्बन्ध है। वे इतनी आसानी से तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगे और लगातार तुमसे पूछते ही रहेंगे।"

"मगर मैं उन्हें बताऊंगी ही नहीं!"

"वे तुम्हें जेल में डाल देंगे!"

"तो क्या हुआ! ईश्वर की कृपा से मैं कम से कम इसके योग्य तो हूं!" मां ने आह भरकर उत्तर दिया। "मेरी किसे ज़रूरत है? किसी को भी नहीं। और मैंने सुना है कि वे मार-पीट नहीं करेंगे..."

"हुं!" येगोर ने मां की ओर ध्यान से देखते हुए कहा। "नहीं, मारे-पीटेंगे तो नहीं। मगर भले लोगों को खुद ही उनसे बचकर रहना चाहिये।"

"तुमसे तो यह सीखना मुमकिन नहीं!" मां ने धीरे से मुस्कराकर कहा।

येगोर बिना कोई उत्तर दिये कमरे में टहलने लगा। कुछ देर बाद वह मां के पास आकर बोला:

"मां, बड़ा कठिन है यह! मैं जानता हूं कि तुम्हें कितना दुःख होता है!"

"दुःख किसे नहीं होता?" मां ने हाथ हिलाकर कहा। "मुमकिन है जो लोग इन बातों को समझते हैं उन्हें इतना कष्ट न होता हो। लेकिन धीरे-धीरे मैं भी समझने लगी हूं कि भले लोग क्या करने का प्रयत्न कर रहे हैं..."

"मां अगर तुम इतना समझती हो तो तुम्हारी ज़रूरत सबको है – सबको!" उसने बड़े निष्कपट भाव से कहा।

मां कनखियों से उसकी तरफ़ देखकर मुस्करा दी।

दोपहर को वह फ़ैक्टरी जाने को तैयार हुई। उसने पर्चे अपने कपड़ों में इतनी अच्छी तरह छुपा लिये थे कि उसे देखकर येगोर ने संतोष के भाव से चटकारी ली।

"ज़ेर गुत!" – जैसे कि सभी शरीफ़ जर्मन बीयर की एक बड़ी बाल्टी खाली करने के बाद कहते हैं। पर्चों की वजह से तुम बिल्कुल भी नहीं बदली हो, मां – तुम वही पहले जैसी नेक अधेड़ उम्र की औरत मालूम होती हो, लम्बी और कुछ थोड़ी-सी मोटी। मेरी कामना है कि तुमने जिस काम में हाथ लगाया है उसमें सभी देवी-देवताओं की कृपादृष्टि तुम्हारे साथ हो! .."

आधे घंटे बाद वह शान्त भाव से और दृढ़ विश्वास के साथ फ़ैक्टरी

के फाटक पर खड़ी हुई थी ; वह अपनी टोकरियों के बोझ से दबी जा रही थी। दो सन्तरी बड़ी सख़्ती से यार्ड में जानेवाले हर व्यक्ति की तलाशी ले रहे थे और जवाब में वे लोग, जिनकी तलाशी ली जाती थी, उन्हें गालियां देते थे और दूसरे मज़दूर उन पर फब्तियां कसते। एक तरफ़ एक पुलिसवाला और एक दूसरा लम्बी टांगोंवाला आदमी खड़ा था, जिसका चेहरा लाल था और आंखें तीर की तरह तेज़ थीं। मां ने बहंगी का डंडा एक कंधे से दूसरे कंधे पर रख लिया और आंखें बचाकर उस लम्बी टांगोंवाले आदमी को देखने लगी क्योंकि वह समझ गयी थी कि वह जासूस है।

"अरे कमबख़्तो, हमारी जेबों को क्या देखते हो, हमारे दिमाग़ों की तलाशी लो!" घुंघराले बालोंवाले एक लम्बे मज़दूर ने संतरियों से कहा जो उसके कपड़ों की तलाशी ले रहे थे।

"तुम्हारे सिर में जूंओं के अलावा और है क्या?" एक सन्तरी ने उत्तर दिया।

"तो फिर हमारी जान छोड़ो, जूंओं को पकड़ो!" उस मज़दूर ने उत्तर दिया। जासूस ने तीर की तरह उस पर एक नज़र डाली और झुंझलाकर उपेक्षा के भाव से ज़मीन पर थूका।

"मुझे तो चला जाने दो!" मां ने कहा। "देखते नहीं बोझ के मारे मेरी तो कमर टूटी जा रही है!"

"जाओ-जाओ!" सन्तरी झुंझलाकर चिल्लाया। "तुझे भी कुछ कहे बिना चैन नहीं पड़ता, क्यों?.."

अपनी जगह पर पहुंचकर मां ने टोकरियां ज़मीन पर रख दीं और माथे का पसीना पोंछकर चारों तरफ़ देखने लगी।

गूसेव नाम के दो भाई, जो मिस्तरी थे, उसके पास आये।

"समोसे हैं?" बड़े भाई वासीली ने त्योरियां चढ़ाकर पूछा।

"कल लाऊंगी!" मां ने उत्तर दिया।

यह संकेत-वाक्य था। दोनों भाइयों के चेहरे चमक उठे।

"बाप रे!" इवान ख़ुश होकर चिल्लाया।

वासीली नीचे बैठकर टोकरी में झांकने लगा और उसी समय पर्चों का एक बंडल उसके कोट के अन्दर पहुंच गया।

"इवान, हम लोग घर नहीं जायेंगे," उसने ऊंचे स्वर में कहा। "हम यहीं खाने के लिए कुछ ख़रीद लेंगे!" यह कहते हुए उसने एक और बंडल अपने ऊंचे बूटों के अन्दर खोंस लिया। "इस नयी खोमचे-

वाली का भी कुछ भला करना चाहिये ..."

"ज़रूर, ज़रूर!" इवान ने हंसकर कहा।

मां ने बड़ी सतर्कता के साथ चारों ओर कनखियों से देखा।

"शोरबा! गरमागरम सेंवइयां!" मां आवाज़ लगाने लगी।

चुपके से पर्चों के बंडल निकाल-निकालकर वह दोनों भाइयों को देती रही। हर बार जब वह पर्चों का एक बंडल उनको सौंपती उस पुलिस अफ़सर का पीला चेहरा उसके मस्तिष्क में जलती हुई माचिस की सलाई की तरह चमक उठता और वह बड़े गर्व के साथ अपने मन में कहती:

"लो, यह लो! और यह लो! और यह लो!"

मज़दूर प्याले हाथ में लिए हुए आ रहे थे। जब भी कोई निकट आता, इवान गूसेव ज़ोर से हंस पड़ता और मां चुपचाप उसे पर्चे देना बंद करके अपनी सेंवइयों की ओर ध्यान देने लगती।

"पेलागेया निलोवना, तुम बहुत तेज़ हो!" दोनों भाई यह कहकर हंस पड़े।

"पेट के मारे उसे वह सब करना पड़ता है!" पास ही खड़े हुए कोयला झोंकनेवाले एक मज़दूर ने उदास स्वर में कहा। "हरामियों ने उसकी रोटी का सहारा उससे छीन लिया! लाना, मुझे तीन कोपेक की सेंवइयां तो देना। मां, तुम चिन्ता न करना, तुम्हारा काम किसी न किसी तरह चलता ही रहेगा!"

"तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद, तुम लोगों की इन्हीं बातों का तो सहारा है!" मां ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"हमदर्दी के दो शब्द कहने में हमारा कुछ लगता है भला," उसने वहां से चलते हुए बुदबुदाकर कहा।

"गरमागरम शोरबा! सेंवइयां! दाल! .." मां आवाज़ लगाने लगी।

वह सोच रही थी कि किस तरह वह बेटे को पर्चे बांटने के अपने प्रथम अनुभव के बारे में बतायेगी, पर उसके मस्तिष्क के पीछे उस पुलिस अफ़सर का चिन्तित और क्रुद्ध पीला चेहरा घूम रहा था। भय से व्याकुल होकर उसकी काली मूंछें फड़क रही थीं और उसके धनुषाकार होंटों के नीचे से उसके भिंचे हुए सफ़ेद दांत चमक रहे थे। मां के हृदय में उल्लास चिड़ियों की तरह चहचहा रहा था। उसने बड़े व्यंग के भाव से भवें तान लीं और अपना सामान बेचते हुए मन ही मन उस अफ़सर से कहती रही: "लो, यह लो! .."

१६

उस दिन शाम को चाय पीते समय उसने बाहर कीचड़ में घोड़ों की टापों की छपछपाहट और फिर एक परिचित स्वर सुना। वह उछलकर खड़ी हो गयी और तेज़ी से रसोई को पार करके दरवाज़े पर पहुंच गयी। बरसाती में किसी के तेज़ क़दमों की आहट सुनायी दी। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया; उसने पांव से धक्का देकर दरवाज़ा खोला और पाखे का सहारा लेकर खड़ी हो गयी।

"सलाम, मां!" परिचित स्वर सुनायी दिया और किसी ने अपनी पतली-पतली लम्बी बांहें उसके गले में डाल दीं।

अन्द्रेई को देखकर पहले तो उसे निराशा हुई और फिर हर्ष। ये दोनों भावनाएं मिलकर एक महान सर्वव्यापी भावना बन गयीं और मां मानो स्नेह की धारा में बह चली; इस प्रबल प्रवाह में एक लहर ने उसे बहुत ऊपर उठा दिया और मां ने अपना सिर अन्द्रेई के कंधे पर रख दिया। उसने मां को अपनी कांपती हुई बाहों में कसकर समेट लिया; मां चुपके-चुपके रो रही थी और वह उसके बालों पर हाथ फेर रहा था और ऐसे स्वर में बोल रहा था जो मां के कानों में संगीत की तरह सुनायी पड़ रहा था:

"मां, रोओ नहीं, अपना जी दुःखी न करो! वे उसे भी जल्दी ही छोड़ देंगे! वे उसके खिलाफ़ कुछ भी साबित नहीं कर सकते; सब लोग बिल्कुल पत्थर की मूरत की तरह चुप्पी साधे हुए हैं..."

मां के कंधे पर हाथ रखे-रखे वह उसे दूसरे कमरे में ले गया। वह उससे सटी हुई उसके एक-एक शब्द को इस तरह सुन रही थी जैसे प्यासे को पानी मिल जाये और गिलहरियों जैसी फुर्ती के साथ अपने आंसू पोंछती जा रही थी।

"पावेल ने सलाम कहा है। वह बिल्कुल अच्छा है और खुश है, जितना कि इस दशा में आशा की जा सकती है। वहां आजकल बड़ी भीड़ है। उन्होंने शहर से और हमारी बस्ती से सौ से ऊपर लोगों को पकड़ा है और एक-एक कोठरी में तीन-तीन चार-चार लोगों को बन्द कर दिया है। जेल के हाकिम अच्छे लोग हैं, थके हुए हैं और पुलिसवालों ने जो काम उनके सिर थोप दिया है उससे वे उकता गये हैं। जेल के हाकिम बहुत सख़्त नहीं हैं। वे कहते रहते हैं, 'आप, भले लोगो, कोई ऐसी गड़बड़ न कीजियेगा कि हम मुसीबत में फंस जायें!' वहां का सारा

काम मज़े में चल रहा है। लोग एक-दूसरे से बातें करते हैं, एक-दूसरे को किताबें देते हैं और साथ मिलकर खाते हैं। खूब जेल है वह भी! पुराना और गंदा तो ज़रूर है, पर है आराम की जगह। फ़ौजदारी जुर्मों के क़ैदी भी बहुत अच्छे हैं और हमारी बहुत मदद करते हैं। बुकिन को, मुझे और चार दूसरे लोगों को छोड़ दिया गया है। पावेल की बारी भी जल्दी ही आयेगी। वेसोवश्चिकोव सबसे बाद में छोड़ा जायेगा, क्योंकि वे उससे बहुत नाराज़ हैं। वह उन्हें लगातार गालियां देता है जिससे पुलिसवालों को तो उसकी सूरत से नफ़रत है। वे या तो उस पर मुक़दमा चलायेंगे या उसे किसी दिन मारे-पीटेंगे। पावेल हमेशा उसे मना करता रहता है। वह कहता है इस तरह गालियां देने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। मगर वह यही चिल्लाता रहता है, 'मैं तो इन्हें ज़ख्म पर की पपड़ी की तरह इस धरती पर से उखाड़ फेंकूंगा!' पावेल का बरताव बहुत अच्छा है – वह दृढ़ और अटल है। मुझे विश्वास है कि उसे जल्दी ही छोड़ दिया जायेगा..."

"जल्दी!" मां ने बड़ी कोमल मुस्कराहट के साथ दुहराया। उसके हृदय को शान्ति मिली। "मुझे भी विश्वास है कि वह जल्दी ही आयेगा!"

"तब सब कुछ ठीक हो जायेगा! अच्छा, मुझे एक गिलास चाय तो पिलाओ और बताओ तुम्हारी कैसी गुज़र रही है?"

उसने मां की ओर देखा, उसका रोम-रोम मुस्करा रहा था। वह इतना नज़दीकी और प्यारा था तथा उसकी गोल आंखों में स्नेह और थोड़ी उदासी की लौ भी चमक रही थी।

"अन्द्रेई, तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो!" मां ने उसके दुबले-पतले, हास्यास्पद ढंग से बालों की काली खूंटियों से ढके चेहरे को बड़े ध्यान से देखते हुए आह भरकर कहा।

"तुम्हारा थोड़ा-सा भी प्यार मुझे सुखी बनाने के लिए काफ़ी है," उसने कुरसी पर झूलते हुए कहा। "मैं जानता हूं कि तुम मुझे प्यार करती हो। तुम्हारा हृदय इतना महान है कि तुम सबको प्यार कर सकती हो।"

"लेकिन तुम्हें मैं ख़ास तौर पर प्यार करती हूं," मां ने अपनी बात पर ज़ोर देकर कहा। "अगर तुम्हारी मां होती तो तुम्हारा जैसा बेटा होने के कारण सब लोग उससे ईर्ष्या करते..."

उक्रइनी अपना सिर हिलाकर ज़ोर-ज़ोर से दोनों हाथों से उसे मलने लगा।

"कहीं न कहीं मेरी मां है तो जरूर!" उसका स्वर मंद था।

"जानते हो आज मैंने किया क्या!" मां ने प्रसन्न होकर कहा और बड़े उत्साह के साथ बताने लगी कि किस प्रकार वह पर्चे लेकर फ़ैक्टरी में गयी थी; अपने उत्साह में वह क़िस्से को कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कह रही थी।

पहले तो अन्द्रेई की आंखें विस्मय से फैल गयीं, फिर वह ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"ओहो!" वह ख़ुशी से चिल्लाया। "यह कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है! यह हमारी बहुत बड़ी सहायता है! पावेल कितना ख़ुश होगा। यह तो बहुत ही शानदार काम किया तुमने, मां – पावेल के लिए और सब के लिए!"

उसका पूरा शरीर झूम रहा था। उसने अपनी उंगलियां चिटकायीं और विचारों में खोया हुआ सीटी बजाने लगा। उसका चेहरा हर्ष से खिला हुआ था और मां को अपनी भावनाओं में इस हर्ष और उल्लास की पूरी प्रतिध्वनि मिल रही थी।

"मेरे प्यारे अन्द्रेई," मां ने कहा। मानो उसके हृदय के द्वार खुल गये और शब्दों की एक प्रबल धारा, जिसमें शान्त उल्लास का कलकल स्वर और आभा थी, प्रवाहित हो चली। "जब मैं अपने जीवन के बारे में सोचती हूं... हे भगवान, कृपानिधान! मैं किस बात के लिए जीती थी? ख़ून-पसीना एक करना, और ऊपर से मार खाना... अपने पति के अलावा कुछ भी देखा-जाना नहीं, भय के अलावा इस जीवन में कुछ जाना नहीं! मुझे तो यह भी मालूम नहीं हुआ कि पावेल कब बड़ा हो गया और जब तक मेरे पति ज़िन्दा रहे तब तक तो मुझे यह भी मालूम नहीं हुआ कि मैं उसे प्यार भी करती हूं कि नहीं। मेरे सारे विचार और सारी चिन्ताएं एक ही बात के बारे में थीं – किसी तरह अपने उस निर्दयी जानवर को ठूंस-ठूंसकर खिलाना, वह जो कहे वह चटपट कर देना ताकि वह ग़ुस्सा होकर मुझे मारे नहीं – कि वह जीवन में एक बार तो मुझ पर तरस खाये! मगर मुझे तो याद नहीं पड़ता कि उसे कभी मुझ पर तरस आया हो। वह मुझे इस तरह मारता था जैसे अपनी पत्नी को नहीं, बल्कि उन तमाम लोगों को मार रहा हो जिनसे उसे कोई भी शिकायत थी। बीस बरस तक मैंने इस तरह जीवन बिताया। मैं बिल्कुल ही भूल गयी हूं कि ब्याह से पहले मेरा जीवन क्या था! जब भी मैं सोचने का प्रयत्न करती हूं मुझे एक शून्य

दिखायी देता है। येगोर इवानोविच यहां आया था, हम दोनों एक ही गांव के रहनेवाले हैं। उसने बहुत सी चीज़ों के बारे में बातें कीं लेकिन मैं क्या बात करती? मुझे अपने घर की याद है, और मुझे लोगों की याद है लेकिन इसकी मुझे ज़रा भी याद नहीं कि वे कैसे रहते थे, क्या कहते थे और उनका क्या हुआ। मुझे बस एक ज्वाला की याद है। दो ज्वालाओं की। ऐसा मालूम पड़ता है कि कोड़े मार-मारकर मेरे शरीर से हर चीज़ निचोड़ ली गयी है और मेरी आत्मा को अंधा और बहरा करके बंद कर दिया गया है..."

वह सांस लेने के लिए बार-बार मुंह खोलने लगी जैसे कोई मछली पानी में से निकाल ली गयी हो।

"जब मेरे पति का देहान्त हो गया," वह आगे झुककर और अपनी आवाज़ धीमी करके कहती रही, "तब मैंने अपने बेटे की ओर ध्यान देना शुरू किया मगर तब तक वह इस काम में पड़ चुका था। मुझे दुःख हुआ और उस पर बड़ा तरस आया। अगर उसे कुछ हो गया तो मैं कैसे ज़िन्दा रहूंगी? मैंने क्या-क्या मुसीबतें नहीं उठायीं! जब मैं उसके भविष्य के बारे में सोचती थी तो मेरा कलेजा फटने लगता था..."

वह एक क्षण के लिए रुकी फिर अपना सिर हिलाकर उसने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से कहा:

"यह निरे प्रेम की बात नहीं है, हमारे औरतों के प्रेम की। हम औरतें तो केवल उस चीज़ से प्रेम करती हैं जिसकी हमें अपने लिए ज़रूरत होती है। लेकिन जब मैं तुम्हें देखती हूं, तुम अपनी मां के लिए इतना दुःखी होते हो – वह तुम्हारे लिए क्या है? और वे तमाम लोग जो दूसरों के लिए इतनी मुसीबतें उठाते हैं... जेल जाते हैं, साइबेरिया भेज दिये जाते हैं... मर जाते हैं... नौजवान लड़कियां रात में इतनी दूर तक कीचड़ में, पानी और बर्फ़ में अकेली चली जाती हैं – शहर से हमारे घर तक एकाध कोस चलकर आना! आख़िर किसलिए? वे यह सब क्यों करती हैं? क्योंकि उनके हृदय में एक महान, पवित्र प्रेम है। और उनमें विश्वास है – एक गहरा विश्वास है, अन्द्रेई! लेकिन जहां तक मेरा सवाल है – मैं इस तरह प्रेम नहीं कर सकती! मैं केवल उस चीज़ से प्रेम कर सकती हूं जो मेरी अपनी है, जो मेरे हृदय के निकट है।"

"नहीं, मां, ऐसा नहीं है," उक्रइनी ने बड़े ज़ोर से अपने सिर,

गालों और आंखों को मलते हुए कहा, जैसी कि उसकी आदत थी। "हर आदमी उसी चीज़ से प्यार करता है जिसका उससे निकट का संबंध होता है, लेकिन अगर आदमी का दिल बड़ा हो तो दूर की चीज़ें भी पास आ जाती हैं। तुम इसीलिए बहुत बड़े-बड़े काम कर सकती हो कि तुम्हारे हृदय में एक मां का महान प्रेम है।"

"ईश्वर मुझे इतनी शक्ति दे!" मां ने मंद स्वर में कहा। "मैं सोचती हूं कि यह जीने का एक अच्छा रास्ता है! अन्द्रेई, अब मैं तुम्हें शायद पावेल से भी ज़्यादा प्यार करती हूं। वह अपने में ही खोया-खोया रहता है... अब तुम ही देखो, वह साशा से ब्याह करना चाहता है, पर उसने मुझे, अपनी मां को, इसकी कभी भनक भी नहीं दी..."

"मां, यह सच नहीं है," उक्रइनी ने आपत्ति करते हुए कहा। "मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह सच नहीं है। वह उसे प्यार करता है और वह भी उसे प्यार करती है–यह सच है। लेकिन उन दोनों की शादी कभी नहीं होगी! वह शादी करना चाहती है, पर पावेल नहीं चाहता..."

"अच्छा," मां ने कुछ सोचते हुए कहा, उसकी उदास आंखें उक्रइनी के चेहरे पर जमी हुई थीं। "तो यह बात है–लोग अपनी खुशी को भी ठुकरा देते हैं।"

"पावेल जैसे लोग बिरले ही होते हैं!" उक्रइनी के स्वर में एक कोमलता आ गयी। "वह अपने इरादे का पक्का है..."

"और अब वह जेल में बैठा है!" मां ने कुछ सोचते हुए कहा। "इस बात को सोचकर ही मेरा हृदय कांप जाता है–लेकिन इतना डरने की क्या बात है! जीवन एक चीज़ है और मेरे भय बिल्कुल ही दूसरी चीज़ हैं। अब मुझे सभी की चिन्ता है। और मेरा हृदय भी बिल्कुल बदल गया है क्योंकि मेरी आत्मा ने मेरे हृदय की आंखें खोल दी हैं और इन आंखों से जब वह बाहर देखता है तो उदास हो जाता है, पर फिर भी खुश रहता है। बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं जो मेरी समझ में नहीं आतीं और मुझे बड़ा दुःख होता है कि तुम भगवान में विश्वास नहीं करते! लेकिन मैं इसमें क्या कर सकती हूं? मैं देखती हूं कि तुम सब के सब बहुत अच्छे हो। तुम सब ने सारी जनता की भलाई की खातिर अपने लिए एक कठोर जीवन पसंद किया है, सत्य के लिए कठिनाइयों से भरा जीवन अपनाया है। और अब मैं तुम्हारे सत्य को समझने लगी हूं: जब तक अमीर लोग हैं तब तक आम लोगों को

कभी कुछ नहीं मिल सकता – न कोई ख़ुशी, न कोई न्याय – कुछ भी नहीं! अब जब से मैं तुम लोगों के बीच रहने लगी हूं, कभी-कभी रात को मैं बीते दिनों के बारे में सोचती हूं; मैं सोचती हूं कि मेरी जवानी की शक्ति को जूतों तले रौंद डाला गया, मेरे नौजवान हृदय को मुट्ठी में मसल डाला गया, मुझे अपने आप पर तरस आता है और मुझे बड़ा दुःख होता है! लेकिन अब जीवन मेरे लिए ज़्यादा आसान हो गया है। धीरे-धीरे मैं अपने असली रूप को देखने लगी हूं..."

उक्रइनी उठा और कमरे में इधर से उधर टहलने लगा; वह प्रयत्न कर रहा था कि किसी प्रकार की आवाज़ न होने पाये। वह दुबला-पतला लम्बा-सा आदमी विचारों में डूबा हुआ था।

"तुमने कितने अच्छे ढंग से यह बात कही है!" उसने धीरे से कहा। "कितने अच्छे ढंग से! केर्च में एक नौजवान यहूदी रहता था जो कविताएं लिखता था। एक बार उसने लिखा:

"हत्या कर डाली है जिन निर्दोषों की
उन्हें सत्य की शक्ति पुनः जीवन देगी! .."

"वह तो वहीं केर्च में पुलिस के हाथों मारा गया, लेकिन यह बात इतनी महत्व की नहीं है। उसने सच्चाई को समझा और आम जनता में उस सच्चाई के बीज बोये। तुम भी उन्हीं 'निर्दोषों' में से एक हो..."

"लेकिन अब मेरी ज़बान बन्द नहीं है," मां कहती रही। "अब मैं बोलती हूं और जब मैं अपने ही शब्दों को सुनती हूं तो मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता। जीवन-भर मुझे बस एक चिन्ता रही – किसी तरह एक दिन और कट जाये, क्या करूं कि किसी का ध्यान मेरी ओर न जाये, कि कोई मुझे हाथ न लगाये। लेकिन अब मैं दूसरे लोगों के बारे में सोचती रहती हूं। यह हो सकता है कि मैं तुम लोगों के ध्येय को न समझती हूं, लेकिन तुम सब लोगों से मुझे प्यार है, मेरे हृदय में तुम सब लोगों का दर्द है और मैं चाहती हूं कि तुम सब लोग सुखी रहो। और ख़ास तौर पर तुम, अन्द्रेई! .."

वह मां के पास आ गया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" उसने कहा और मां का हाथ अपने हाथों में लेकर स्नेह से दबाया और फिर जल्दी से दूसरी तरफ़ चला गया। अपनी भावनाओं के बोझ से दबी हुई मां धीरे-धीरे चुपचाप

प्याले धोती रही; वह अपने हृदय में छिपे हुए उल्लास के बारे में सोच रही थी।

"मां, तुम वेसोवश्चिकोव के प्रति भी थोड़ा-सा प्यार दिखाया करो," उक्रइनी ने इधर-उधर टहलते हुए कहा। "उसका बाप जेल में है, वह निकम्मा शराबी! निकोलाई खिड़की में से उसे देखते ही गालियां बकने लगता है। यह बड़ी बुरी बात है! निकोलाई का स्वभाव बहुत उदार है, वह कुत्तों से और चूहों से और दुनिया भर के जानवरों से प्यार करता है, मगर आदमियों से उसे नफ़रत है! तुम ही देखो, आदमी किस दशा को पहुंच जाता है!"

"मां रही नहीं... बाप चोर और शराबी है..." मां ने विचारमग्न होकर कहा।

जब अन्द्रेई सोने गया तो मां ने चुपके से उस पर हाथ के संकेत से सलीब का निशान बनाया और आधे घंटे बाद बहुत मंद स्वर में पूछा:

"सो गये, अन्द्रेई?"

"नहीं तो, क्यों?"

"अच्छा, सो जाओ!"

"धन्यवाद, मां। धन्यवाद," उसने कृतज्ञता के साथ कहा।

१७

दूसरे दिन जब मां फ़ैक्टरी के फाटक पर पहुंची तो सन्तरियों ने उसे रोक लिया और उसकी टोकरियां नीचे रखवाकर उसकी अच्छी तरह तलाशी ली।

जिस समय वे बड़ी बदतमीज़ी से उसके कपड़ों की तलाशी ले रहे थे, मां ने प्रतिरोध करते हुए कहा:

"मेरी तो सारी चीज़ें ठंडी पड़ जायेंगी!"

"चुप रह!" सन्तरी ने डांटकर कहा।

दूसरे सन्तरी ने मां के कंधे को हल्के से धक्का देकर कहा:

"मैं कहता हूं कि चहारदीवारी के ऊपर से फेंके होंगे।"

फ़ैक्टरी के यार्ड में मां के पहुंचने पर सबसे पहले बूढ़ा सिज़ोव उसके पास आया।

"सुना तुमने, मां ?" उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर चुपके से पूछा।

"क्या ?"

"वे पर्चे! फिर बांटे गये! हर तरफ़ ये पर्चे बिखरे हुए हैं, रोटी पर नमक की तरह। लाख तलाशी लें, लोगों को लाख पकड़ें, क्या होता है? उन्होंने मेरे भतीजे माज़िन को जेल में बन्द कर दिया, मगर क्या फ़ायदा हुआ? तुम्हारे बेटे को भी पकड़ ले गये, मगर अब सब लोग जान गये हैं कि इसमें उसका हाथ नहीं था।"

उसने अपनी दाढ़ी पकड़कर प्रश्न-भरी दृष्टि से मां को देखा:

"तुम कभी मेरे घर क्यों नहीं आतीं? अकेले जी घबराता होगा..."

मां ने उसे धन्यवाद दिया और आवाज़ लगा-लगाकर अपनी चीज़ें बेचने लगी। उसने देखा कि फ़ैक्टरी में असाधारण चहल-पहल है। सब लोग उत्तेजित थे। लोग झुंड बांधकर जमा होते और फिर तितर-बितर हो जाते। वे भाग-भागकर एक वर्कशॉप से दूसरी वर्कशॉप में जाते। मां को धुएं और कालिख से भरे वहां के वातावरण में किसी वीरतापूर्ण और साहसमय बात का आभास मिलता था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद व्यंगपूर्ण बातें और प्रोत्साहन देनेवाले नारे सुनायी देते थे। बूढ़े मज़दूर चुपके-चुपके मुस्करा रहे थे। कारखाने के हाकिम चिन्तित मुद्रा में उसके सामने से गुज़रते थे। पुलिसवाले इधर-उधर भाग रहे थे और जब मज़दूरों की टोलियां उन्हें देखतीं तो वे या तो तितर-बितर हो जातीं या बातें करना बंद कर देतीं और उनके क्रुद्ध तथा झुंझलाये हुए चेहरों को घूरने लगतीं।

मज़दूरों के चेहरों पर ताज़गी थी। मां ने कुछ दूर पर लम्बे क़दवाले बड़े गूसेव को देखा; उसका छोटा भाई, जो हर दम हंसता रहता था, उसके पीछे-पीछे जा रहा था।

बढ़ईगोरी की वर्कशॉप का फ़ोरमैन ववीलोव और टाइम-कीपर इसाई धीरे-धीरे चलते हुए मां के सामने से गुज़रे। बित्ते-भर का वह नाटा टाइम-कीपर फ़ोरमैन का तना हुआ और गुस्से से फैला हुआ चेहरा देखने के लिए गरदन ऊपर उठाये अपनी छिदरी दाढ़ी को झटके देकर बातें करता हुआ चला जा रहा था:

"इवान इवानोविच, इन लोगों ने मज़ाक़ समझ रखा है। इन लोगों को इसमें मज़ा आता है, मगर जैसा कि डायरेक्टर साहब कह रहे थे, यह राज्य के लिए तबाही है। यहां निलाई से काम नहीं चलेगा,

जब तक बिल्कुल हल नहीं चलवा दिया जायेगा तब तक कुछ नहीं होने का ..."

ववीलोव पीठ के पीछे दोनों हाथ कसकर बांधे हुए चल रहा था ...

"हरामज़ादे, जो चाहें छापें!" उसने ऊंचे स्वर में कहा। "मगर मेरे ख़िलाफ़ अगर एक बात भी लिखी तो ख़ैर नहीं है!"

वासीली गूसेव मां के पास आया।

"मां, सोचता हूं आज फिर तुमसे ही खाना ख़रीद लूं। तुम्हारा खाना अच्छा होता है!" उसने कहा और फिर अपनी आवाज़ धीमी करके आंखें सिकोड़कर बोला:

"तीर निशाने पर बिल्कुल ठीक बैठा ... मां, कमाल हो गया!"

मां ने बड़े स्नेह से सिर हिलाया। उसे यह देखकर बड़ी ख़ुशी हुई कि यह आदमी जो बस्ती-भर में सबसे ज़्यादा चलता पुर्ज़ा माना जाता था, इतने सम्मान के साथ उसे संबोधित कर रहा था। फ़ैक्टरी की हलचल को देखकर भी उसे बड़ी ख़ुशी थी और वह सोच रही थी:

"अगर मैं न होती ..."

तीन मज़दूर उससे थोड़ी दूर पर आकर खड़े हो गये।

"कहीं भी नहीं मिला ..." उनमें से एक ने खेद-भरे स्वर में धीरे से कहा।

"मालूम तो होता कि उसमें क्या था। मैं पढ़ना तो नहीं जानता मगर यह बात साफ़ है कि तीर निशाने पर बैठा," दूसरा बोला।

"आओ चलो, ब्वायलर रूम में चलें ..." तीसरे ने चारों तरफ़ नज़र डालकर कहा।

गूसेव ने मां की तरफ़ देखकर आंख मारी।

"देखा क्या हो रहा है?" उसने कहा।

पेलागेया निलोवना बहुत ख़ुश-ख़ुश घर लौटी।

"लोगों को अफ़सोस है कि वे अनपढ़ हैं!" उसने अन्द्रेई से कहा। "जब मैं लड़की थी तो पढ़ना जानती थी, पर अब भूल गयी ..."

"सीख क्यों नहीं लेतीं?" उक्रइनी ने सुझाव दिया।

"इस उमर में? हंसी उड़वाने के लिए?"

मगर अन्द्रेई ने अल्मारी पर से एक किताब उतारी और मुखपृष्ठ पर छपे हुए एक अक्षर पर उंगली रखते हुए पूछा:

"यह क्या है?"

"र," मां ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"और यह?"

"आ..."

मां कुछ झेंप रही थी, उसे शरम आ रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि अन्द्रेई मन ही मन उस पर हंस रहा है, और मां उससे नज़रें बचाने का प्रयत्न कर रही थी। पर अन्द्रेई के स्वर में कोमलता और मृदुता थी, और उसका चेहरा गंभीर था।

"अन्द्रेई, क्या तुम सचमुच मुझे पढ़ाने की सोच रहे हो?" उसने अनायास ही धीरे से हंसकर पूछा।

"क्यों नहीं?" उसने उत्तर दिया। "अगर तुम पहले पढ़ना जानती थीं तो जल्दी ही सीख जाओगी। कहते हैं न कि कोशिश करने में क्या हर्ज है!"

"लेकिन एक और कहावत भी तो है: मूरत को देखने से तो आदमी साधु-संत नहीं हो जाता।"

"हुं!" उक्रइनी ने सिर हिलाकर कहा। "कहावतें तो बहुत हैं। जैसे, जो जितना कम जानता है वह उतनी ही सुख की नींद सोता है। लेकिन इस तरह तो पेट सोचता है ताकि इन कहावतों का सहारा लेकर वह आत्मा को आसानी से संतुष्ट रख सके। यह कौन-सा अक्षर है?"

"ल," मां ने कहा।

"ठीक। और यह?"

मां अपनी आंखों पर ज़ोर देकर और माथे पर बल डाले एकाग्रचित्त होकर भूले हुए अक्षरों को पहचानने का प्रयत्न कर रही थी। शीघ्र ही उसकी आंखें थक गयीं। शुरू में तो थकन के कारण और बाद में निराशा के कारण उसके आंसू टपकने लगे।

"पढ़ना सीख रही हूं!" उसने रुआंसे स्वर में कहा। "चालीस बरस की हुई अब अ-आ-इ-ई सीख रही हूं!"

"रोओ नहीं!" उक्रइनी ने तसल्ली देते हुए कहा। "तुमको अपनी पसंद का जीवन तो नसीब नहीं हुआ, पर इतना तो तुम जानती ही हो कि वह कितना कष्टमय जीवन रहा है! हज़ारों लोग ऐसे हैं जो अगर चाहें तो बेहतर ज़िंदगी बिता सकते हैं लेकिन वे जंगलियों जैसी ज़िंदगी बिताते रहते हैं और उसी में मगन रहते हैं! आज कमाया और खाया, कल फिर कमाया और खाया और इसी तरह ज़िंदगी के

दिन बीतते जाते हैं—बस कमाना और खाना। इसमें आखिर इतने मगन रहने की क्या बात है? थोड़े-थोड़े समय बाद वे बच्चे पैदा करते रहते हैं, जो कुछ दिन तो उनका जी बहलाते हैं पर थोड़े ही दिन बाद जब वे ज़रूरत से ज़्यादा खाने को मांगने लगते हैं तो उनके मां-बाप ग़ुस्सा होते हैं और उन्हें गाली देते और कोसते हैं: 'अरे कमबख़्त छोकरो, किसी तरह जल्दी से बड़े भी हो जाओ, काम करके कुछ तुम भी तो कमाओ!' वे चाहते तो यही हैं कि अपने बच्चों को पालतू जानवर बना लें मगर बड़े होते ही ये बच्चे अपना पेट पालने के लिए काम करने लगते हैं—और अपने जीवन को रबर के टुकड़े की तरह खींचते जाते हैं। सच्चे इंसान तो वह होते हैं जो मनुष्य के विचारों को मुक्त करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर देते हैं। इस समय तुम भी अपनी शक्ति-भर यही कर रही हो।"

"मैं?" मां ने तुच्छता के भाव से कहा। "मैं क्या कर सकती हूं?"

"यह न कहो। हम लोग तो वर्षा के पानी की तरह हैं जिसकी एक-एक बूंद बीजों को सींचती है। और जब तुम पढ़ने लगोगी..."

वह धीरे से हंसकर चुप हो गया और उठकर इधर-उधर टहलने लगा।

"तुम्हें तो बस थोड़ा-सा ही सीखना है! .. थोड़े दिन में पावेल लौट आयेगा और तब—ओहो!"

"अरे अन्द्रेई!" मां ने कहा। "जब तक आदमी जवान रहता है तब तक हर बात आसान लगती है। लेकिन जब बूढ़ा होने लगता है—तब दुनिया-भर की चिन्ताएं उसे घेर लेती हैं। उसकी ताक़त कम होती जाती है और अक़ल तो रह ही नहीं जाती..."

१८

उस दिन शाम को जब उक्रइनी बाहर गया हुआ था मां लैम्प जलाकर मोज़ा बुनने लगी। पर शीघ्र ही उठकर थोड़ी देर तक वह कमरे में निरुद्देश्य सी घूमती रही, फिर रसोई में जाकर उसने बाहर का दरवाज़ा बंद किया और भवें चढ़ाती हुई कमरे में लौटी। खिड़की पर परदा गिराकर उसने अल्मारी में से एक किताब निकाली, फिर मेज़ पर बैठ गयी। उसने और सभी ओर नज़र दौड़ाकर किताब पर

ध्यान केन्द्रित किया। उसके होंट हिलने लगे। बाहर से ज़रा-सी भी आवाज़ आती तो वह चौंक पड़ती और किताब को दोनों हाथों से ढककर कान लगाकर सुनने लगती। थोड़ी देर बाद वह फिर आंखें खोलती और मूंदती हुई कुछ बुदबुदाने लगती।

"'ल' से लट्टू; 'ब' से बकरी..."

किसी ने दरवाज़ा खटखटाया; मां चौंककर खड़ी हो गयी और जल्दी से किताब फिर अल्मारी में रख दी।

"कौन है?" उसने भयातुर स्वर में पूछा।

"मैं हूं..."

रीबिन दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ अंदर आया।

"पहले तो कभी नहीं पूछती थीं 'कौन है'," उसने कहा। "अकेली ही हो? मैंने सोचा था कि शायद उक्रइनी होगा। आज उसे देखा था... जेल जाने से उसे कोई नुक़सान तो हुआ नहीं।"

वह बैठ गया और मां को सम्बोधित करके बोला:

"मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूं..."

उसने मां को बड़ी अर्थपूर्ण और रहस्य-भरी दृष्टि से देखा जिससे मां के हृदय में एक अस्पष्ट-सा भय उत्पन्न हुआ।

"हर चीज़ के लिए पैसे की ज़रूरत होती है!" उसने अपनी भारी आवाज़ में कहना शुरू किया। "पैदा होने के लिए पैसे की ज़रूरत होती है, मरने के लिए पैसे की ज़रूरत होती है। किताबों और पर्चों के लिए भी पैसों की ज़रूरत होती है। भला तुम जानती हो इन किताबों के लिए पैसे कहां से आते हैं?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानती," मां ने इस सवाल में कुछ ख़तरनाक चीज़ महसूस करते हुए धीरे से उत्तर दिया।

"मेरी भी समझ में नहीं आता। और दूसरा सवाल है कि इन्हें लिखता कौन है?"

"पढ़े-लिखे लोग..."

"अमीर लोग!" रीबिन ने कहा और उसका दाढ़ीवाला चेहरा कुछ तनावपूर्ण और लाल हो गया। "दूसरे शब्दों में अमीर लोग ये किताबें लिखकर हम लोगों तक पहुंचाते हैं। लेकिन ये किताबें अमीरों के ख़िलाफ़ लिखी होती हैं। तुम्हीं मुझे बताओ कि इसमें क्या तुक है कि वे आम लोगों को अपने ख़िलाफ़ भड़काने के लिए अपना ही पैसा ख़र्च करें, बोलो?"

मां ने आंखें झपकाते हुए भयभीत होकर ऊंची आवाज़ में पूछा:

"तुम्हारा क्या विचार है?"

"अहा!" रीबिन ने कुर्सी पर भालू की तरह हिलते-डुलते हुए कहा। "यही तो बात है! मेरे मन में भी जैसे ही यह विचार आया, हर चीज़ पर जैसे ओस पड़ गयी।"

"तुम्हें कुछ पता लगा है?"

"धोखा!" रीबिन ने उत्तर दिया। "मैं समझता हूं हमें धोखा दिया गया है। मेरे पास कोई सबूत तो नहीं है मगर यह है धोखा। सरासर धोखा है! तुम्हारे ये अमीर लोग बड़े चालाक हैं। मैं तो सच बात का पता लगाने के फेर में रहता हूं। अब मैं सच्चाई को समझने लगा हूं और अब मैं इन अमीरों का साथ हरगिज़ नहीं दूंगा। जब भी उनका जी चाहेगा वे अपना रास्ता बनाने के लिए मुझे गिराकर पुल की तरह इस्तेमाल करने से भी नहीं हिचकिचायेंगे..."

उसके शब्द मां के हृदय को एक शिकंजे की तरह कसते जा रहे थे।

"हे भगवान!" मां ने व्यथित स्वर में कहा। "क्या यह हो सकता है कि पावेल इस बात को समझता नहीं? और वे सब लोग भी जो..."

उसकी आंखों के आगे येगोर, निकोलाई इवानोविच और साशा के गंभीर चेहरे घूम गये जिनसे लगन और ईमानदारी टपकती थी। उसका दिल धड़कने लगा।

"नहीं, नहीं!" उसने सिर हिलाकर कहा। "मैं विश्वास नहीं कर सकती! वे लोग ईमानदार हैं!"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" रीबिन ने विचारमग्न होकर पूछा।

"वे सब के सब... उनमें से एक-एक, मैं देख चुकी हूं!"

"मां, तुम ठीक जगह पर नहीं देख रही हो। और आगे देखने की कोशिश करो!" रीबिन ने सिर झुकाकर कहा। "वे लोग जो हमारे साथ आये हैं – मुमकिन है वे ख़ुद ही कुछ न जानते हों। वे यह विश्वास करते हैं कि ऐसा होना चाहिये। लेकिन मुमकिन है कि उनके पीछे दूसरे लोगों का हाथ हो – ऐसे लोगों का जिन्हें केवल अपने स्वार्थ का ध्यान रहता है? बिना किसी कारण के तो कोई आदमी अपना दुश्मन नहीं हो जाता..."

फिर उसने एक किसान के अड़ियल विश्वास के साथ कहा:

"अमीरों से हमें कभी कोई फ़ायदा नहीं हो सकता!"

"तो तुम क्या करने की सोच रहे हो?" मां ने पूछा; उसे फिर शंकाओं ने आ घेरा था।

"मैं?" रीबिन ने नज़र उठाकर उसे देखा और फिर कुछ देर रुककर कहा, "हमें अमीरों से दूर रहना चाहिये, मैं तो यही कहता हूं।"

वह फिर चिन्तामग्न होकर चुप हो गया।

"मैं चाहता था कि मैं भी अपने साथियों के कंधे से कंधा मिलाकर उनके साथ आगे बढ़ूं। मैं इस काम के लिए बिल्कुल ठीक हूं। मैं जानता हूं कि लोगों से क्या कहना चाहिये। पर अब मैं जा रहा हूं। मेरा विश्वास टूट गया है इसलिए मुझे अलग ही हो जाना पड़ेगा।"

उसने सिर झुका लिया और विचारों में डूब गया।

"मैं अकेला गांवों और देहातों में जाऊंगा और लोगों में जागृति पैदा करूंगा। उन्हें अब ख़ुद ही कुछ करना होगा। एक बार जहां वे समझ गये, वे कोई रास्ता ढूंढ़ निकालेंगे। उन्हें समझाना मेरा काम है। वे केवल अपने ही से उम्मीद लगा सकते हैं; उनका अपना दिमाग़ ही उनके काम आ सकता है!"

मां को इस आदमी पर तरस भी आ रहा था और उसकी तरफ़ से डर भी लग रहा था। और वही आदमी जो अब तक उसे बुरा लग रहा था, अब न जाने क्यों उसे बहुत प्यारा लगने लगा।

"वे तुम्हें पकड़ लेंगे..." मां ने धीमे स्वर में कहा।

रीबिन ने मां की तरफ़ देखा।

"पकड़ तो लेंगे, लेकिन जब वे मुझे छोड़ेंगे मैं फिर अपना काम शुरू कर दूंगा..."

"किसान ख़ुद तुम्हें पकड़कर बांध देंगे। वे तुम्हें जेल में डलवा देंगे..."

"मैं सज़ा काटकर बाहर आ जाऊंगा और फिर अपना काम शुरू कर दूंगा। जहां तक किसानों का सवाल है वे मुझे एक बार बांधेंगे, दो बार बांधेंगे, फिर वे ख़ुद ही समझने लगेंगे कि मुझे बांधने से अच्छा है कि वे मेरी बात सुनें। मैं कहूंगा: 'मेरी बात न मानो, मगर सुन तो लो,' और अगर वे सुनेंगे तो मानेंगे भी!"

वह धीरे-धीरे एक-एक शब्द को तौल-तौलकर बोल रहा था।

"इधर कुछ दिनों में मैंने बहुत कुछ पढ़ा है और दो-एक बातें सीखी भी हैं..."

"मिखाइलो इवानोविच, तुम अपने आप को इस तरह मिटा दोगे!" मां ने बहुत उदास स्वर में सिर हिलाते हुए कहा।

वह अंदर को धंसी हुई काली आंखों से मां को घूरता रहा, मानो कुछ पूछ रहा हो, मानो कुछ उत्तर पाने की आशा कर रहा हो। उसका गठा हुआ शरीर आगे की ओर झुका हुआ था, अपने हाथों से वह कुर्सी का तख़्ता मज़बूती से पकड़े हुए था और उसकी काली दाढ़ी के घेरे में उसके सांवले चेहरे का रंग फीका-सा नज़र आ रहा था।

"याद है ईसा मसीह ने बीज के बारे में क्या कहा था? दुबारा पैदा होने के लिए उसे मरना पड़ता है। मगर मैं इतनी जल्दी मरनेवाला नहीं। मैं बड़ा खुर्राट हूं!"

वह अपनी कुर्सी पर कसमसाया और धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ।

"चलकर कुछ देर भटियारखाने में बैठता हूं। उक्रइनी के आने की तो कोई उम्मीद दिखायी नहीं देती। फिर वही पुराना काम कर रहा है?"

"हां," मां ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"अच्छी बात है। आये तो कह देना कि मैं आया था..."

वे धीरे-धीरे एक-दूसरे के साथ रसोई में गये। वे बिना एक-दूसरे की तरफ़ देखे बातें कर रहे थे।

"अच्छा, तो मैं चलता हूं।"

"अच्छी बात है। तुम फ़ैक्टरी में कब नोटिस दे रहे हो?"

"नोटिस तो मैंने दे दिया है।"

"जा कब रहे हो?"

"कल। बहुत सबेरे ही चला जाऊंगा। अच्छा, सलाम!"

अनमने भाव से लड़खड़ाता हुआ रीबिन झुककर दरवाज़े से बाहर बरामदे में निकल गया। एक क्षण तक मां खड़ी उसके भारी क़दमों की चाप सुनती रही और उसके हृदय में जो शंकाएं उठ रही थीं उन पर विचार करती रही। फिर वह चुपचाप मुड़ी और दूसरे कमरे में जाकर उसने खिड़की पर से परदा हटा दिया। बाहर अंधकार छाया हुआ था।

"रात में ही तो जीती हूं!" मां सोचने लगी।

उसे उस गम्भीर किसान पर तरस आ रहा था – कितना हट्टा-कट्टा और बलवान था वह।

अन्द्रेई घर लौटा तो बहुत खुश था।

मां ने उसे रीबिन के बारे में बताया।

"जाकर उसे गांवों में 'न्याय-न्याय' चिल्लाने दो और लोगों में जागृति पैदा करने दो," अन्द्रेई ने कहा। "हमारे साथ उसका चलना मुश्किल ही था। उसके दिमाग़ में किसानों के विचार कूट-कूटकर भरे हैं। हमारे विचारों के लिए उसके दिमाग़ में जगह ही नहीं है..."

"वह अमीरों की बातें कर रहा था। वह जो कुछ कह रहा था उसमें कुछ सच्चाई ज़रूर है," मां ने बड़ी सतर्कता से कहा। "सावधान रहना कहीं वे तुम लोगों को बेवक़ूफ़ न बनायें!"

"तुम उसके कारण परेशान हो?" उक्रइनी हंस पड़ा। "हां, मां – पैसा! काश हमारे पास पैसा होता! हम लोग अभी तक दूसरों के पैसे से काम चला रहे हैं। जैसे निकोलाई इवानोविच को महीने में पचहत्तर रूबल मिलते हैं, उसमें से वह पचास हमें दे देता है। यही हाल दूसरों का है। कभी-कभी यूनिवर्सिटी के छात्र, जिन्हें ख़ुद भरपेट खाने को नहीं मिलता एक-एक कोपैक चंदा करके हमें कुछ पैसे भेज देते हैं। अमीर लोग भी हर तरह के होते हैं। कुछ साथ छोड़ देते हैं, कुछ धोखा दे जाते हैं, लेकिन उनमें जो सबसे अच्छे होते हैं वे पूरी तरह हमारे साथ आ जाते हैं..."

उसने ज़ोर से ताली बजायी और दृढ़ विश्वास के साथ कहता रहा:

"हमारी अन्तिम विजय का दिन तो अभी दूर है, बहुत दूर, फिर भी अब की मई दिवस हम छोटे-मोटे पैमाने पर ज़रूर मनायेंगे। मां, तुम देखना, हम किस शान से यह दिन मनायेंगे!"

रीबिन ने मां के हृदय में जो शंकाएं उत्पन्न कर दी थीं वे अन्द्रेई के उत्साह से दूर हो गयीं। उक्रइनी अपने बालों में हाथ फेरता हुआ और फ़र्श की तरफ़ घूरता हुआ इधर-उधर टहलता रहा।

"कभी-कभी हृदय भावनाओं से इतना भर जाता है कि असह्य हो जाता है! जहां भी जाओ हर आदमी अपना साथी नज़र आता है। सब के सीनों में वही ज्वाला धधकती रहती है; सब बड़े नेक, उदार और प्रसन्नचित्त मालूम होते हैं। एक-दूसरे को समझने के लिए कुछ कहने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती... सब लोग मिलकर एक बहुत बड़ी मंडली का रूप धारण कर लेते हैं जिसमें हर आदमी का हृदय अपना गीत गाता है। और ये सब गीत छोटी-छोटी धाराओं की तरह आकर एक नदी में मिल जाते हैं, और फिर यह नदी उन्मुक्त प्रवाह के साथ चौड़ी होती हुई नये जीवन के उल्लासमय सागर से जा मिलती है।"

इस भय से कि उसके विचारों की शृंखला और वाणी का प्रवाह

कहीं भंग न हो जाये, मां बिल्कुल निश्चल बैठी थी। मां जितने ध्यान से उसकी बात सुनती थी उतने ध्यान से किसी और की बात नहीं सुनती थी; वह दूसरों की अपेक्षा ज़्यादा सीधे-सादे ढंग से बोलता था और उसके शब्द जाकर सीधे हृदय पर लगते थे। पावेल कभी भविष्य के बारे में बातें नहीं करता था। पर उक्रइनी तो आंशिक रूप से हमेशा भविष्य में ही रहता था; जब वह बोलता तो वह पृथ्वी की समस्त जनता के भावी महापर्व का उल्लेख करता। और भविष्य की यही कल्पना थी जिसने मां के जीवन को और उसके बेटे तथा उसके बेटे के सभी साथियों के काम को सार्थकता प्रदान कर दी थी।

"फिर सहसा कल्पना का यह संसार चकनाचूर हो जाता है," उक्रइनी सिर हिला-हिलाकर कहता रहा, "और चारों तरफ़ हर चीज़ नीरस और गंदी दिखायी देने लगती है, हर आदमी झुंझलाया और थका हुआ दिखायी देता है..."

उसके स्वर में उदासी थी:

"लोगों पर भरोसा नहीं करना चाहिये। मैं जानता हूं उसमें तकलीफ़ होती है, लेकिन उनसे डरना ज़रूर चाहिये और मैं तो कहूंगा कि – कि उनसे घृणा भी करनी चाहिये! हर आदमी के दो रूप होते हैं। हम पूरे मनुष्य को प्यार करना चाहते हैं, पर यह कैसे हो सकता है? हम पर जंगली जानवरों की तरह हमला करने, हमारी जीवित आत्मा को न देखने और हमारा मानवीय रूप नष्ट कर देने के लिए हम किसी को कैसे माफ़ कर सकते हैं? इसे नहीं माफ़ किया जा सकता! अपने तईं तो आदमी कुछ भी बरदाश्त कर सकता है। लेकिन उन्हें यह तो नहीं समझने दिया जा सकता कि हम उनकी इस हरकत को पसंद करते हैं; हम अपनी पीठ तो उनके आगे नहीं कर सकते कि वे उस पर दूसरे लोगों को मारने के लिए अभ्यास करें।"

अन्द्रेई की आंखों में जैसे शीतल ज्वाला धधक रही थी, वह दृढ़ निश्चय के भाव से अपना सिर झुकाये हुए बड़े विश्वास के साथ बोल रहा था:

"यदि किसी चीज़ से मुझे स्वयं हानि न भी पहुंचे तब भी मुझे किसी ग़लती को माफ़ करने का अधिकार नहीं है। इस पृथ्वी पर मैं ही तो अकेला नहीं हूं। आज अगर कोई मुझे आघात पहुंचाये तो मुमकिन है मैं उसे हंसकर टाल दूं, क्योंकि संभव है कि उसका महत्व इतना न हो कि उसकी ओर ध्यान भी दिया जाये; पर मुझ पर अपनी

ताक़त आज़मा चुकने के बाद संभव है कल वह किसी दूसरे को धौंस में लाने की कोशिश करे। हम हर आदमी को एक ही दृष्टि से नहीं देख सकते; हमें बड़े शान्त भाव से चुनना और पसंद करना पड़ता है: यह आदमी हमारे ढंग का है, यह नहीं है। यह बड़ी सुखकर बात नहीं है, क्यों है न? लेकिन यह सच बात है!"

न जाने क्यों मां को साशा का विचार आया और फिर उस अफ़सर का।

"बग़ैर छने हुए आटे से तुम कैसी रोटी की आशा कर सकते हो?" मां ने आह भरकर कहा।

"यही तो सारी मुसीबत है!" उक्रइनी ने ज़ोर देकर कहा।

"हां!" मां बोली। उसकी स्मृति में उसके पति का चित्र उभर आया, इतना भारी और इतना नीरस, जैसे कोई चट्टान जिस पर काई उगी हो। वह कल्पना करने लगी कि अगर उक्रइनी नताशा से ब्याह कर ले और पावेल साशा से तो कैसा रहे।

"पर ऐसा क्यों है?" विषय के प्रति जोश में आकर उक्रइनी ने पूछा। "उसे समझना तो बिल्कुल उतनी ही आसान बात है जैसे अपनी नाक के अस्तित्व को देखना। इस सब का कारण यह है कि सब लोग एक ही स्तर पर नहीं हैं। हमें उन सब को एक स्तर पर लाना होगा। मनुष्य ने अपनी बुद्धि से जितनी चीज़ों की कल्पना की है और अपने हाथों से जो कुछ बनाया है, उसे सब में बांटना होगा! हमें चाहिये कि हम लोगों को भय और ईर्ष्या का ग़ुलाम, लोभ और मूर्खता का बंदी न बनायें! .."

इसके बाद उन दोनों के बीच इस तरह की बातें कई बार हुईं।

उक्रइनी को फ़ैक्टरी में फिर काम मिल गया और वह अपनी सारी मज़दूरी लाकर मां को देने लगा। मां उससे यह पैसे उतनी ही आसानी से स्वीकार कर लेती थी, जैसे पावेल से।

कभी-कभी अन्द्रेई उससे कहता:

"मां, थोड़ा सा पढ़ोगी?" और उसकी आंखें चमक उठतीं।

मां हंस पड़ती और दृढ़तापूर्वक इंकार कर देती। अन्द्रेई की आंखों की वह चमक उसे बुरी लगती थी।

"अगर तुम इसे ऐसी ही मज़ाक़ की बात समझते हो तो क्यों परेशान होते हो?" वह अपने मन में सोचती।

लेकिन अब वह अक्सर उससे किसी न किसी शब्द के अर्थ बताने

को कहती, पर पूछते समय वह दूसरी तरफ़ देखती रहती और उसके स्वर से ऐसा प्रतीत होता कि जैसे उसे कोई दिलचस्पी न हो। अन्द्रेई समझ गया कि वह छुप-छुपकर अपने आप पढ़ती है और उसकी उस चुप्पी को समझकर उसने उससे पढ़ने को कहना बंद कर दिया।

"अन्द्रेई, मेरी आंखें कमज़ोर होती जा रही हैं। मुझे ऐनक की ज़रूरत है," एक दिन मां ने उससे कहा।

"यह हुई काम की बात!" उसने उत्तर दिया। "इतवार को मैं तुम्हें लेकर डाक्टर के पास शहर चलूंगा, वहां ऐनक ले देंगे..."

१६

तीन बार वह पावेल से मिलने की इजाज़त लेने गयी और पके बालों, लाल-लाल गालों और बहुत बड़ी नाकवाले, बूढ़े राजनीतिक पुलिस-जनरल ने तीनों बार बड़ी नरमी से इंकार कर दिया।

"मां, तुम्हें कम से कम एक हफ़्ते और इंतज़ार करना पड़ेगा। हफ़्ते भर बाद देखेंगे, अभी तो बिल्कुल नामुमकिन है..."

वह बिल्कुल गोल-मटोल था और उसे देखकर मां को पके हुए आलूबुख़ारे की याद आ जाती थी जिस पर बहुत दिन तक पड़े रहने के कारण फफूंदी जम गयी हो। वह हर वक़्त एक तेज़, पीली दंतखुदनी से अपने दांत खोदता रहता था; उसकी छोटी-छोटी कंजी आंखों में उदार मुस्कराहट खेलती रहती थी और उसके स्वर में हमेशा शिष्टता और मित्रता का भाव रहता था।

"वह बहुत शिष्ट है," मां ने उक्रइनी को बताया। "हर दम मुस्कराता रहता है।"

"इसमें तो मुझे संदेह नहीं!" उक्रइनी ने उत्तर दिया। "नेक तो वे सभी होते हैं—बड़ी नरमी से पेश आना और मुस्कराते रहना। उनसे कहा जाता है: 'यह आदमी बड़ा होशियार और ईमानदार है, बस ज़रा ख़तरनाक है। अगर बुरा न मानो तो इसे फांसी पर लटका देना!' और वे मुस्कराकर उसे फांसी पर लटका देते हैं और उसके बाद भी मुस्कराते ही रहते हैं।"

"जो हमारे घर की तलाशी लेने आया था, वह तो ऐसा नहीं था," मां ने कहा। "सूरत से ही पाजी मालूम होता था..."

"आदमी तो उनमें कोई भी नहीं होता—वे सब बस हथौड़े होते

हैं जिन्हें हमारे सिर पर मारने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, ताकि हम अपने होश खो बैठें। वे हमारे जैसे लोगों को छील-छालकर बराबर करने के औज़ार होते हैं ताकि हमें ज़्यादा आसानी से क़ाबू में किया जा सके। उन्हें ख़ुद छील-छालकर उनके हाकिमों के लिए सुविधाजनक रूप में ढाल दिया जाता है। वे बिना सोचे और बिना सवाल किये अपने हाकिमों की इच्छा पूरी कर देते हैं।"

आख़िरकार मां को पावेल से मिलने की इजाज़त मिल गयी। एक दिन इतवार को उसने अपने आपको जेलख़ाने के दफ़्तर के एक कोने में बड़े विनीत भाव से बैठा हुआ पाया। उस छोटी-सी, गंदी और नीची छतवाली कोठरी में और भी कई लोग क़ैदियों से मिलने की प्रतीक्षा में बैठे थे। स्पष्टतः वे यहां पहली बार नहीं आये थे क्योंकि वे एक-दूसरे को जानते थे और वे बहुत चुपके-चुपके पुरानी पिटी हुई बातें कर रहे थे; ऐसा मालूम होता था कि ये बातें मकड़ी के जाले की तरह उनसे चिपक गयी हैं।

"सुना तुमने?" एक मोटी-सी औरत ने कहा; उसके गाल लटक आये थे और उसकी गोद में एक सफ़री थैला रखा हुआ था। "आज बहुत सबेरे प्रार्थना के समय गिरजाघर की गान-मंडली के नेता ने एक गानेवाले लड़के का कान फोड़ डाला..."

"ये गानेवाले लड़के सब बदमाश हैं!" एक अधेड़ उम्र के सज्जन ने जो पेंशनयाफ़्ता अफ़सर की वर्दी पहने हुए थे, अपना मत प्रकट किया।

एक नाटे क़द का गंजा आदमी जिसकी टांगें छोटी-छोटी, बांहें लम्बी और ठोड़ी बाहर को निकली हुई थी, बौखलाया हुआ दफ़्तर में इधर से उधर टहल रहा था और भर्राये हुए उत्तेजित स्वर में लगातार बके जा रहा था:

"क़ीमतें बढ़ती जा रही हैं, इसी लिए तो लोग उल्टी-सीधी हरकतें करते हैं। घटिया क़िस्म का गोश्त चौदह कोपेक पौंड मिलता है और रोटी का दाम फिर ढाई हो गया है..."

कभी-कभी क़ैदी वहां आते थे,; अपनी भूरी वर्दी और चमड़े के भारी जूतों में वे सब एक जैसे ही दिखायी देते थे। उस अंधेरे से कमरे में घुसते ही वे आंखें मिचमिचाने लगते थे। उनमें से एक के पैरों में तो बेड़ियां भी पड़ी थीं।

जेल के वातावरण में एक विचित्र शान्ति थी और हर काम बड़े

ही सुगम ढंग से होता था। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो ये सब लोग बहुत दिनों से इसके आदी हो चुके थे और उन्होंने अपने आपको भाग्य के सहारे छोड़ दिया था। कुछ लोग बड़े धैर्य के साथ अपनी सज़ा काट रहे थे; कुछ लोग शिथिल भाव से पहरा दे रहे थे; और कुछ दूसरे लोग शिथिल नियमितता के साथ बंदियों से मिलने आते थे; मां का हृदय अधीर होकर कांप उठा। वह अपने चारों ओर की हर चीज़ को बड़े विस्मय से देख रही थी; उसे उस वातावरण की बोझिल सादगी पर आश्चर्य हो रहा था।

उसके पास नाटे क़द की एक बुढ़िया बैठी थी जिसका चेहरा सूखा हुआ था पर आंखों में युवावस्था की चमक थी। वह अपनी पतली-सी गरदन घुमा-घुमाकर सब की बातें सुन रही थी, और जब भी वह किसी को देखती उसकी आंखों में एक स्फूर्तिमय चमक आ जाती।

"तुम किससे मिलने आयी हो?" पेलागेया निलोवना ने धीरे से पूछा।

"मेरा बेटा है। यूनिवर्सिटी में पढ़ता था," बुढ़िया ने उच्च स्वर में उत्तर दिया। "और तुम?"

"मेरा भी बेटा है। मज़दूर है।"

"क्या नाम है?"

"व्लासोव।"

"कभी सुना नहीं उसके बारे में। बहुत दिन से है यहां?"

"सात हफ़्ते होने आये..."

"ओह, मेरा बेटा तो कोई दस महीने से है," बुढ़िया ने कहा; उसके स्वर में गर्व की झलक थी।

"हां, हां!" वह गंजा बूढ़ा बके जा रहा था। "किसी को सबर ही नहीं है... हर आदमी ग़ुस्सा होता है, हर आदमी चिल्लाता है, और क़ीमतें बढ़ती जाती हैं। और इसी हिसाब से आदमी की क़दर कम होती जाती है। मगर इस सब को रोकने के लिए कोई आवाज़ नहीं उठाता।"

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो!" अफ़सर ने कहा। "अब तो हद हो गयी है! अब तो किसी ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो सख़्त आवाज़ से इन्हें हुकुम दे कि यह बकवास बंद करें। इसी की ज़रूरत है। सख़्ती से कहने की..."

सब लोग इस बातचीत में हिस्सा लेने लगे, और बहस में गरमी

आ गयी। हर आदमी जीवन के बारे में अपनी राय देने को उत्सुक था, पर वे सब दबी हुई आवाज़ में बोल रहे थे और मां उनकी बातों से सहमत नहीं थी। घर पर बातें दूसरे ढंग की होती थीं, ज़्यादा साफ़, ज़्यादा सीधी-सादी और अधिक ऊंचे स्वर में भी।

चौकोर लाल दाढ़ीवाले मोटे से जेलर ने उसका नाम पुकारा, सिर से पांव तक उसे देखा और "मेरे साथ आओ!" कहकर लंगड़ाता हुआ बाहर चल दिया।

चलते-चलते मां की इच्छा हुई कि पीछे से एक धक्का दे ताकि वह जल्दी-जल्दी चले।

पावेल एक छोटी-सी कोठरी में खड़ा था; वह अपना हाथ बाहर निकाले मुस्करा रहा था। मां ने धीरे से हंसकर उसका हाथ पकड़ लिया और जल्दी-जल्दी अपनी आंखें झपकाने लगी।

"सलाम... सलाम..." उसने कहा; उसे कुछ और कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

"मां, शान्त हो जाओ!" पावेल ने कसकर उसका हाथ पकड़ते हुए उत्तर दिया।

"मैं शान्त हूं।"

"मां है न!..." जेलर ने आह भरकर कहा। "हां, तुम लोग एक-दूसरे से और ज़रा दूर खड़े हो, कुछ फ़ासला छोड़कर," उसने कहा और ज़ोर से जम्हाई ली।

पावेल ने मां से उसके स्वास्थ्य के बारे में और घर का हाल-चाल पूछा। मां और प्रश्नों की आशा कर रही थी और इसी आशा से अपने बेटे की आंखों में आंखें डालकर देख रही थी, पर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। पावेल हमेशा की ही तरह गम्भीर था, कुछ पीला ज़रूर पड़ गया था और ऐसा लगता था कि उसकी आंखें पहले से कुछ बड़ी हो गयी हैं।

"साशा तुम्हें बहुत पूछती थी," मां ने कहा।

पावेल की पलकें कांप गयीं, उसके मुख पर कोमलता आ गयी और वह मुस्करा दिया। मां के हृदय में एक टीस-सी उठी।

"क्या ये लोग तुम्हें जल्दी ही छोड़ देंगे?" मां ने व्यथा और झुंझलाहट के साथ पूछा। "आखिर तुम्हें बंद क्यों कर रखा है? पर्चे तो फ़ैक्टरी में फिर बांटे गये..."

पावेल की आंखें चमक उठीं।

"सच ?" उसने जल्दी से पूछा।

"इन सब चीज़ों के बारे में बातें करना मना है," जेलर ने अलसाये हुए स्वर में कहा। "तुम लोग सिर्फ़ घरेलू बातें कर सकते हो..."

"क्या यह घरेलू बात नहीं है?" मां ने प्रतिरोध किया।

"इसका जवाब तो मैं नहीं दे सकता। लेकिन इसकी मनाही है," जेलर ने उदासीनता से उत्तर दिया।

"अच्छी बात है, बताओ घर का क्या हाल है?" पावेल ने कहा। "क्या किया तुमने इतने दिन में?"

"अरे, मैं वह सब सामान लेकर फ़ैक्टरी जाती हूं," मां ने कहा; उसकी आंखों में एक शरारत-भरी चमक थी। कुछ देर रुककर उसने फिर मुस्कराकर कहना आरम्भ किया:

"बस, गोभी का शोरबा, दाल, तुम तो जानते हो वही चीज़ें, जो मारिया पकाती है, और... और... वही सब चीज़ें..."

पावेल समझ गया। उसने अपने बालों में हाथ फेरा और हंसी दबाने के कारण उसकी मुखाकृति विचित्र-सी हो गयी।

"चलो, अच्छा है कुछ काम तो मिल गया तुम्हें। अकेले तो नहीं बैठना पड़ता है!" पावेल ने बड़े प्यार से कहा; मां ने उसे ऐसे स्वर में बोलते पहले कभी नहीं सुना था।

"जब पर्चे बंटे तो उन्होंने मेरी भी तलाशी ली," मां ने किंचित गर्व के साथ सूचना दी।

"फिर वही बात!" जेलर ने नाराज़ होकर कहा। "कह दिया मैंने कि इसकी मनाही है! जेल में आदमी को इसी लिए बंद किया जाता है कि उसे यह न मालूम होने पाये कि बाहर क्या हो रहा है, और तुम हो कि मानती ही नहीं! तुम्हें यह तो समझना ही चाहिये कि किन-किन बातों की मनाही है।"

"रहने दो, मां!" पावेल ने कहा। "मत्वेई इवानोविच बड़े नेक आदमी है, उन्हें नाराज़ करने से कोई फ़ायदा नहीं। हम लोगों की बड़ी दोस्ती है। इत्तफ़ाक़ की बात है कि आज तुम्हारी भेंट के समय इनकी ड्यूटी है। आम तौर पर तो नायब जेलर होता है।"

"वक़्त हो गया!" जेलर ने अपनी घड़ी की तरफ़ देखते हुए कहा।

"अच्छा, मां, बहुत-बहुत धन्यवाद!" पावेल ने कहा। "तुम फ़िकर न करना। मुझे जल्दी ही छोड़ दिया जायेगा..."

पावेल ने बड़े प्यार से मां को गले लगाया और उसे चूम लिया ; प्रसन्नता के मारे भाव-विह्वल होकर मां रोने लगी।

"बस चलो!" जेलर ने कहा और उसे साथ लेकर बरामदे में आगे बढ़ा। "रो नहीं, उसे छोड़ देंगे! सब को छोड़ देंगे... अब यहां बहुत ज़्यादा लोग हो गये हैं..."

घर पहुंचकर मां ने उक्रइनी को सब कुछ बताया ; उसके मुख पर मुस्कान खेल रही थी और उसकी भवें फड़क रही थीं।

"मैंने बड़ी तरकीब से उसे बता दिया। वह समझ गया। वह ज़रूर समझ गया होगा!" मां ने आह भरकर कहा। "नहीं तो वह कभी इतना प्यार न दिखाता। उसने ऐसा आज तक कभी नहीं किया।"

"तुम भी अजीब हो!" उक्रइनी ने हंसकर कहा। "लोगों को दुनिया-भर की चीज़ों की ज़रूरत रहती है, मगर मां प्यार के सिवा और कुछ नहीं चाहती..."

"मगर, अन्द्रेई, उन लोगों को देखते तुम!" मां ने सहसा पुलकित स्वर में कहा। "कितने आदी हो जाते हैं वे! उनके बच्चे उनसे छीनकर जेलों में बंद कर दिये जाते हैं और उनके व्यवहार से पता भी नहीं चलता कि कुछ हुआ भी है! वहां आते हैं, बैठकर इंतज़ार करते हैं और ख़बरों पर चर्चा करते हैं। जब पढ़े-लिखे लोग इस तरह इन बातों के आदी हो जाते हैं तो हम अनपढ़ लोगों से तुम क्या आशा करते हो?"

"हां, हां, क्यों नहीं," उक्रइनी ने अपने विशिष्ट व्यंग के भाव से उत्तर दिया। "आख़िरकार क़ानून की मार जितनी सख़्त हम लोगों पर पड़ती है उतनी उन पर तो नहीं पड़ती और फिर क़ानून हमारे मुक़ाबले में काम भी उन्हीं के ज़्यादा आता है। इसलिए अगर कभी-कभी उनके सिर पर भी क़ानून का एकाध वार हो जाता है तो वे नाक-भौंह सिकोड़ते हैं पर ज़्यादा नहीं। दूसरे के डंडे के मुक़ाबले अपने डंडे की मार खाना ज़्यादा आसान होता है..."

२०

एक रात जब मां मेज़ के पास बैठी मोज़ा बुन रही थी और उक्रइनी उसे प्राचीन रोम के दास-विद्रोह के बारे में पढ़कर सुना रहा था, किसी ने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया और जब उक्रइनी ने दरवाज़ा खोला

तो वेसोवश्चिकोव बग़ल में गठरी दबाये हुए अन्दर आया। वह अपनी टोपी सिर पर पीछे की ओर सरकाये हुए था और उसके पैर घुटनों तक कीचड़ में सने हुए थे।

"मैं इधर से जा रहा था, देखा कि रोशनी हो रही है, सोचा मिलता चलूं। जेल से आ रहा हूं!" उसने विचित्र स्वर में घोषणा की। पेलागेया निलोवना का हाथ अपने हाथ में लेकर उसने बड़े तपाक से हाथ मिलाया।

"पावेल ने सलाम कहा है..." उसने कहा।

वह कुछ अटपटे ढंग से बैठ गया और उसने कमरे पर उदासी और शंका से भरी हुई दृष्टि डाली।

मां को वह अच्छा नहीं लगता था। उसके चौकोर घुटे हुए सिर और छोटी-छोटी आंखों में उसे कुछ ऐसी बात दिखायी देती थी जिससे उसे भय लगता था। पर आज उसे देखकर मां को ख़ुशी हुई और उससे बातें करते समय वह बड़े प्यार से मुस्कराती रही।

"कितने दुबले हो गये हो तुम! अन्द्रेई, इसे थोड़ी-सी चाय पिला दें..."

"मैं तो समोवार गरम कर ही रहा हूं!" उक्रइनी ने रसोई में से आवाज़ दी।

"अच्छा, तो पावेल कैसा है? तुम्हारे अलावा किसी और को भी छोड़ा है?"

निकोलाई ने अपना सिर झुका लिया।

"पावेल तो वहां धीरज के साथ इंतज़ार कर रहा है! मेरे अलावा और किसी को नहीं छोड़ा है," उसने आंखें उठाकर मां के चेहरे की तरफ़ देखा और दांत दबाकर धीरे-धीरे बोला, "मैंने उनसे कहा: 'बस मैं बहुत भुगत चुका, मुझे छोड़ दो! .. नहीं छोड़ोगे तो मैं एकाध का ख़ून कर दूंगा और ख़ुद भी मर जाऊंगा।' इसलिए उन्होंने मुझे छोड़ दिया।"

"आह!" मां ने कहा, उसे एक आघात-सा पहुंचा। निकोलाई की कुछ-कुछ मुंदी हुई तेज़ आंखों से मिलते ही मां की आंखें अनायास ही झपक गयीं।

"फ़्योदोर माज़िन कैसा है?" उक्रइनी ने रसोई में से चिल्लाकर पूछा। "अब भी कविताएं लिखता है क्या?"

"हां! मेरी समझ में नहीं आता यह रोग!" निकोलाई ने सिर

को झटका देते हुए कहा। "आख़िर वह अपने को समझता क्या है? कोई मैना है कि पिंजरे में बंद किया और गाने लगी! लेकिन एक बात मेरी समझ में आती है: मैं घर जाना नहीं चाहता..."

"घर जाकर करोगे भी क्या?" मां ने विचारमग्न होकर कहा। "ख़ाली घर, न चूल्हा, न चक्की, हर चीज़ बेजान, सर्दी में ठिठुरी हुई..."

वह कुछ भी न बोला, बस दबी-दबी नज़र से मां को देखता रहा। आख़िरकार उसने जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट जलायी और अपने चेहरे के सामने विलीन होते धुएं पर नज़र टिकाये हुए झुंझलाए हुए कुत्ते की तरह खीसें निकाल दीं।

"हां, मैं समझता हूं हर चीज़ बेजान ही होगी," उसने कहा। "फ़र्श पर सर्दी से अकड़े हुए तिलचट्टे होंगे। सर्दी में ठिठुरे हुए चूहे भी होंगे। पेलागेया निलोवना, क्या रात-भर के लिए मुझे अपने यहां रहने दोगी?" उसने मां की ओर देखे बिना भर्रायी हुई आवाज़ में पूछा।

क्यों नहीं, ज़रूर!" मां ने जल्दी से उत्तर दिया। न जाने क्यों उसकी उपस्थिति उसे अखर रही थी।

"आजकल बच्चों को अपने मां-बाप तक पर शरम आती है..."

"क्या मतलब?" मां ने चौंककर पूछा।

उसने कनखियों से मां को देखा और फिर आंखें मूंद लीं जिसके कारण उसका चेचक के दाग़ों से भरा हुआ चेहरा सूरदासों जैसा लगने लगा।

"मैं कहता हूं कि बच्चों को अपने मां-बाप पर शरम आती है!" उसने आह भरकर फिर कहा। "पावेल को तुम पर कभी शरम नहीं आती, मगर मुझे अपने बाप पर शरम आती है। मैं अब कभी उसके घर में क़दम नहीं रखूंगा। मेरा न कोई बाप है न कोई घर! अगर मैं पुलिस की हिरासत में न होता तो साइबेरिया चला जाता और वहां के निर्वासितों को छुड़ा देता – उन्हें भगाने में मदद देता..."

मां का संवेदनशील हृदय समझ गया कि उसे बड़ी व्यथा है पर मां को उससे कोई सहानुभूति नहीं थी।

"अगर तुम ऐसा समझते हो... तो तुम्हें चले जाना चाहिये!" मां ने केवल इस विचार से कहा कि कहीं उसके कुछ न कहने पर वह बुरा न मान जाये।

अन्द्रेई रसोई में से आया।

"क्या बात कर रहे थे?" उसने हंसकर पूछा।

"मैं जाकर कुछ खाने का प्रबंध करती हूं," मां ने उठते हुए कहा।

निकोलाई कुछ देर तक बड़े ध्यान से उक्रइनी को देखता रहा फिर सहसा बोला:

"मैं समझता हूं कि कुछ लोगों को जान से मार देना चाहिये!"

"अरे! मगर क्यों?" उक्रइनी ने पूछा।

"ताकि उनसे छुटकारा मिले..."

लम्बा और दुबला-पतला उक्रइनी कमरे के बीच में जेब में हाथ डाले अपनी एड़ियों के बल खड़ा झूम रहा था और निकोलाई को घूर रहा था, जो सिगरेट के धुएं के बादलों में घिरा हुआ कुरसी पर जमकर बैठा हुआ था। उसके चेहरे पर कहीं-कहीं लाली के धब्बे थे।

"उस ईसाई गोरबोव का तो मैं सिर फोड़ ही दूंगा, तुम देख लेना!"

"क्यों?"

"वह चुग़लख़ोर और भेदिया है। मेरे बाप को जिन लोगों ने तबाह किया है उनमें वह भी है, उन्होंने बाप को बिल्कुल मालिकों का पिट्ठू बना दिया है," वेसोवश्चिकोव ने अन्द्रेई की तरफ़ देखते हुए कहा; उसके चेहरे पर गंभीरता और विद्वेष का भाव था।

"तो यह बात है!" उक्रइनी बोला। "मगर कोई तुम्हें इस बात के लिए दोषी नहीं ठहरायेगा। सिर्फ़ बेवकूफ़! .."

"समझदार और बेवकूफ़ सब एक जैसे ही हैं!" निकोलाई अपनी बात पर अड़ा रहा। "अपने को और पावेल को ही देख लो। तुम दोनों समझदार हो, लेकिन क्या मैं भी तुम्हारी नज़र में वैसा ही हूं जैसा फ़्योदोर माज़िन या समोइलोव या जैसे तुम दोनों एक-दूसरे के लिए हो? देखो, झूठ न बोलना। ख़ैर, तुम्हारी बात का यक़ीन तो मैं यों भी नहीं करूंगा... तुम सब लोग मुझे दूर रखते हो, मुझसे खुलकर मिलते नहीं..."

"निकोलाई, तुम्हारी आत्मा रोगी है!" उक्रइनी ने उसके बग़ल में बैठते हुए बड़े कोमल भाव से धीमे स्वर में कहा।

"मेरी आत्मा तो रोगी है ही, पर तुम्हारी भी रोगी है... अन्तर बस इतना है कि तुम समझते हो कि तुम्हारी आत्मा का रोग हमारी

आत्मा के रोग से ऊंचे दर्जे का है। मैं यही कह सकता हूं कि हम सब एक-दूसरे के साथ कुत्ते के पिल्लों जैसा बरताव करते हैं। करते हैं कि नहीं? बोलो!"

वह अपनी पैनी दृष्टि अन्द्रेई के चेहरे पर गड़ाये दांत खोले उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। चेचक के दाग़ों से भरे हुए उसके चेहरे का भाव नहीं बदला, पर उसके मोटे-मोटे होंट यों फड़कने लगे मानो किसी गर्म चीज़ से जल गये हों।

"मैं कुछ नहीं कह सकता!" उक्रइनी ने वेसोवश्चिकोव के द्वेषपूर्ण तेवर देखकर उदास भाव से मुस्कराते हुए उत्तर दिया। "मैं जानता हूं कि जब किसी आदमी के दिल के सब घाव हरे हो गये हों उस समय उससे बहस करने से उसे कष्ट होता है। भाई, मैं इस बात को जानता हूं!"

"मुझसे बहस करना बेकार है – मैं बहस कर ही नहीं सकता," निकोलाई ने आंखें झुकाकर अस्फुट स्वर में कहा।

"ऐसा मालूम होता है," उक्रइनी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "कि हममें से हर एक अलग-अलग अपने कांटेदार रास्ते पर चलता रहा है और अपनी-अपनी मुसीबत की घड़ी में हममें से हर एक तुम्हारी तरह व्यथा से तड़प उठा है..."

"तुम मुझे क्या समझा रहे हो!" वेसोवश्चिकोव ने धीरे-धीरे कहा। "मेरी आत्मा खूंख़ार भेड़िये की तरह हुंकार रही है!.."

"मैं तुम्हें कुछ समझाना नहीं चाहता! लेकिन मैं इतना जानता हूं कि यह लहर गुज़र जायेगी। मुमकिन है पूरी तरह नहीं, लेकिन फिर भी गुज़र जायेगी।"

वह धीरे से हंसा और निकोलाई के कंधे पर हाथ मारकर कहता रहा।

"यह बच्चों की बीमारी की तरह है, जैसे ख़सरा होती है। यह रोग हममें से हर एक को कभी न कभी होता ज़रूर है। जो लोग मज़बूत होते हैं, उन पर असर कम होता है, जो कमज़ोर होते हैं उन पर असर ज़्यादा होता है। यह रोग ठीक उसी घड़ी हमें आ दबोचता है जब हम अपने आपको पहचानना शुरू करते हैं, पर तब तक न तो हमने जीवन को ही पूरी तरह देखा होता है और न उसमें अपना स्थान ही पहचाना होता है। उस समय हमें ऐसा मालूम होता है कि मानो हम दुनिया की सबसे बड़ी नियामत हैं और हर आदमी हमारे ही पीछे पड़ा है।

मगर कुछ समय बाद हम समझने लगते हैं कि दूसरों के सीने में जो आत्मा है वह भी हमारी आत्मा से कमज़ोर नहीं है, और जब हम यह समझने लगते हैं तो ज़्यादा आसानी हो जाती है। तब हमें शरम आती है कि हम नक़्क़ारख़ाने में अपनी तूती की आवाज़ लेकर क्यों गये, किसने सुना होगा उसे वहां? लेकिन फिर हमें पता लगता है कि नहीं, हमारी तूती की आवाज़ पूरे संगीत में एक अच्छा योगदान है, यह बात अलग है कि अगर हम अकेले हों तो बड़े-बड़े लोग हमें मक्खी की तरह कुचल डालते हैं। समझ में आया, मैं क्या कहने की कोशिश कर रहा हूं?"

"शायद," निकोलाई ने सिर हिलाकर कहा। "लेकिन मैं... मैं किसी बात पर यक़ीन नहीं करता!"

उक्रइनी हंसकर उछलकर खड़ा हो गया और बहुत ज़ोर-ज़ोर से पांव पटकता हुआ इधर-उधर टहलने लगा।

"मैं भी एक ज़माने में नहीं करता था, काठ के उल्लू!"

"काठ का उल्लू क्यों हूं मैं?"

"क्योंकि तुम्हारी सूरत बताती है।"

सहसा निकोलाई मुंह फाड़कर ज़ोर से हंसने लगा।

"क्यों, क्या बात है?" उक्रइनी ने उसके सामने रुककर विस्मय से पूछा।

"मैं सोच रहा था कि वह भी कितना बेवक़ूफ़ होगा जो तुम्हारा दिल दुखाये," निकोलाई ने उत्तर दिया।

"कोई मेरा दिल क्यों दुखाने लगा?" उक्रइनी ने अपने कंधे बिचकाकर कहा।

"यह तो मैं नहीं जानता," वेसोवश्चिकोव ने विनोदपूर्वक मुस्कराकर कहा। "मेरा तो मतलब बस यह था कि अगर कोई कभी तुम्हारा दिल दुखाये तो उसे बहुत बुरा लगता होगा।"

"अच्छा, यह बात है!" उक्रइनी हंस दिया।

"अन्द्रेई!" मां ने रसोई में से पुकारा।

अन्द्रेई बाहर चला गया।

कमरे में अकेले बैठे-बैठे वेसोवश्चिकोव ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी, फिर एक टांग फैलाकर, जिस पर वह चमड़ौदा बूट पहने था, बड़े ध्यान से उसे देखा और अपनी मोटी-मोटी पिंडलियों को टटोलकर देखने लगा। फिर अपना मोटा-सा हाथ उठाकर उसने अपनी हथेली और

छोटी-छोटी उंगलियों का निरीक्षण किया, जिन पर पीले-पीले बाल उगे हुए थे। झुंझलाहट के साथ हाथ हिलाकर वह उठ खड़ा हुआ।

जब अन्द्रेई समोवार लेकर कमरे में आया उस समय निकोलाई आईने के सामने खड़ा हुआ था।

"बहुत दिन बाद मैंने अपना यह चौखटा देखा ..." उसने कहा और फिर मुंह टेढ़ा करके मुस्कराते हुए बोला, "क्या चौखटा पाया है!"

"तुम्हें क्या फ़िकर है?" अन्द्रेई ने कौतूहल से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"साशा कहती है कि आदमी के चेहरे में उसकी आत्मा प्रतिबिम्बित होती है।"

"सब बकवास है!" उक्रइनी ने चिल्लाकर कहा। "उसकी खुद की नाक कंटिया की तरह और गालों की हड्डियां चाकू के फाल जैसी हैं पर उसकी आत्मा सितारे की तरह चमकदार है!"

"निकोलाई ने कनखियों से उसकी तरफ़ देखा और खीसें निकाल दीं। वे चाय पीने बैठ गये।

निकोलाई ने एक बड़ा-सा आलू उठाया और रोटी के टुकड़े पर नमक छिड़ककर धीरे-धीरे चबा-चबाकर खाने लगा, जैसे बैल जुगाली करता है।

"यहां का क्या हाल-चाल है?" उसने मुंह में कौर भरे-भरे ही पूछा।

जब अन्द्रेई उसे इस बात का सुखद विवरण दे चुका कि वे कारखाने में किस तरह प्रचार कर रहे थे, तो वह फिर उदास हो गया।

"बहुत समय लग रहा है, बहुत ज्यादा! हमें और तेज़ी से काम करना चाहिये ..."

उसे देखकर मां के हृदय में उसके प्रति एक विद्वेष की भावना जागृत हुई।

"ज़िंदगी कोई घोड़ा तो है नहीं कि उसे चाबुक से मार-मारकर आगे बढ़ाया जा सके!" अन्द्रेई बोला।

निकोलाई अपनी बात पर अड़ा रहकर सिर हिलाता रहा।

"बहुत समय लग रहा है! मैं इतना इंतज़ार नहीं कर सकता! मैं क्या करूं?"

उक्रइनी के चेहरे को घूरते हुए उसने अपनी लाचारी प्रकट की और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

"हम सबको पढ़ना और दूसरों को पढ़ाना है, यह काम है हमारा!" अन्द्रेई ने सिर झुकाकर कहा।

"आख़िर हम लड़ना कब शुरू करेंगे?" वेसोवश्चिकोव ने पूछा।

"यह तो मैं नहीं जानता कि हम लड़ना कब शुरू करेंगे, पर इतना मैं ज़रूर जानता हूं कि उससे पहले ही वे कई बार हमें मार-मारकर हमारे भूसा भर देंगे," उक्रइनी ने हंस-हंसकर उत्तर दिया। "जहां तक मेरी समझ में आता है अपने हाथों में हथियार लेने से पहले हमें अपने दिमाग़ों को लैस करना पड़ेगा..."

निकोलाई ने फिर खाना शुरू कर दिया और मां आंखें बचाकर उसके चौड़े-चकले चेहरे को देखने लगी; वह उसके चेहरे में कोई ऐसी चीज़ ढूंढ रही थी जो उसके हृदय से इस लम्बे-तगड़े बलिष्ठ शरीर-वाले व्यक्ति के प्रति विद्वेष की भावना दूर कर दे।

उसकी छोटी-छोटी आंखों की कांटों क़ी तरह चुभती हुई पैनी दृष्टि मां पर पड़ी और मां की भवें फड़कने लगीं। अन्द्रेई बेचैन था – वह सहसा हंस-हंसकर बातें करने लगता और फिर यकायक सीटी बजाने लगता।

मां को ऐसा लगा कि वह जानती है कि उसे क्या बात चिन्तित कर रही है। निकोलाई अपने ही विचारों में खोया हुआ बैठा था और अन्द्रेई जो कुछ कहता था उसका वह बहुत अनमनेपन से रूखा-सा जवाब देता था।

उस छोटे-से कमरे में मां और अन्द्रेई दोनों का दम घुटने लगा; वहां का वातावरण दोनों के लिए असह्य हो उठा। बारी-बारी से कभी मां और कभी अन्द्रेई आंखें बचाकर अपने अतिथि की ओर देखते।

आख़िरकार निकोलाई उठ खड़ा हुआ और बोला:

"मैं तो अब सोऊंगा। वहां जेल में बैठे-बैठे तो मैं पागल हो गया; फिर यकायक एक दिन उन्होंने मुझे छोड़ दिया और मैं चला आया। मैं बहुत थक गया हूं।"

सिर झुकाकर वह रसोई में गया और थोड़ी देर तक कुछ इधर-उधर चलने-फिरने के बाद मानो मर ही गया। मां ने कान लगाकर सुना, पर कोई आवाज़ सुनायी न दी।

"वह बड़ी भयानक बातें सोच रहा है..." मां ने अन्द्रेई से चुपके से कहा।

"बड़ा विकट आदमी है!" उक्रइनी ने सिर हिलाकर कहा।

"मगर ठीक हो जायेगा! एक ज़माने में मैं भी ऐसा ही था। हृदय में ज्योति जगने से पहले बहुत धुआं उठता है। मां, जाओ सो जाओ; मैं थोड़ी देर पढ़ूंगा।"

वह एक कोने में चली गयी, जहां सूती कपड़े के परदों के पीछे एक चारपाई पड़ी हुई थी और बड़ी देर तक अन्द्रेई उसके आहें भरकर प्रार्थना करने की आवाज़ सुनता रहा। जल्दी-जल्दी अपनी किताब के पन्ने उलटता हुआ वह उत्तेजना से अपने माथे पर हाथ फेरता, लम्बी-लम्बी उंगलियों से मूंछें ऐंठता और पांव रगड़ता रहा। घड़ी टिक-टिक कर रही थी। हवा पेड़ों में सांय-सांय कर रही थी।

"हे भगवान!" मां का क्षीण स्वर सुनायी दिया। "दुनिया में जितने लोग हैं सब मुसीबत के मारे हैं। न जाने सुखी कौन है?"

"सुखी लोग भी हैं, मां!" अन्द्रेई ने उत्तर दिया। "जल्दी ही सुखी लोग बहुत हो जायेंगे, बहुत ज़्यादा!"

२१

नित्य नयी घटनाओं के क्रम के रूप में जीवन जल्दी-जल्दी बीतता रहा। प्रतिदिन कोई न कोई नयी बात होती, पर मां अब इन घटनाओं से आतंकित नहीं होती थी। उसके घर में अनजाने लोगों का आना-जाना बढ़ गया, जो रात को आकर चुपके-चुपके अन्द्रेई से बातें करते; फिर वे अपने-अपने कोट का कालर खड़ा करके और आंखों पर अपनी टोपी झुकाकर दबे पांव चुपचाप अंधेरे में विलीन हो जाते। मां को उनमें से हर एक के हृदय में दबी हुई उत्तेजना का आभास था। ऐसा मालूम होता था कि उनमें से हर एक गाना और हंसना चाहता था, पर उनके पास इसके लिए समय नहीं था। वे हमेशा जल्दी में रहते थे। उनमें से कुछ गंभीर और व्यंगपूर्ण थे; कुछ ऐसे थे जो मस्त रहते थे और उनके चेहरों पर युवावस्था का उल्लास चमकता था; कुछ ऐसे भी थे जो शान्त और विचारशील थे। मां ने देखा कि उन सब में विश्वास और लगन थी और यद्यपि वे एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे पर ऐसा लगता था कि उन सब के चेहरे मिलकर एक ही चेहरे में बदल गये थे जो एम्माउस की ओर जाते समय ईसा मसीह के चेहरे से मिलता-जुलता था: दुबला-पतला चेहरा, उस पर शान्त दृढ़ता का भाव, काली-काली स्वच्छ आंखें, जिनकी दृष्टि में कोमलता भी थी और साथ ही कठोरता भी।

मां ने उन्हें गिना और अपनी कल्पना में उसने पावेल को उसके शत्रुओं की नज़रों से बचाने के लिए उसके चारों तरफ़ एक भीड़ एकत्रित की।

एक दिन शहर से घुंघराले बालोंवाली एक चंचल लड़की अन्द्रेई के लिए एक बंडल लेकर आयी। जाते हुए उसने पीछे घूमकर अपने चमकते हुए पुलकित नेत्रों से मां को देखा।

"अच्छा, कामरेड, सलाम!" उसने कहा।

"सलाम," मां ने अपनी मुस्कराहट को रोकते हुए कहा।

लड़की को बाहर छोड़ आने के बाद वह जाकर खिड़की पर खड़ी हो गयी और अपनी इस कामरेड को छोटे-छोटे फुर्तीले क़दमों से सड़क पर जाते हुए देखकर मुस्कराती रही; वह वसन्त के फूल की तरह निर्मल और तितली की तरह चंचल थी।

"कामरेड!" जब लड़की आंख से ओझल हो गयी तो मां ने बुदबुदाकर कहा। "मेरी प्यारी बच्ची! भगवान करे तुम्हें कोई ऐसा सच्चा जीवन-साथी मिल जाये जो उम्र-भर तुम्हारा साथ दे सके!"

शहर से आनेवाले इन लोगों में कोई ऐसी बात थी जो बच्चों से बहुत मिलती-जुलती थी जिस पर मां मन ही मन बड़े गर्व से मुस्कराती थी। पर उनका अटल विश्वास उसके हृदय को छू लेता था और उसे एक सुखद आश्चर्य भी होता था; दिन-प्रतिदिन उनकी लगन उसके लिए अधिकाधिक स्पष्ट होती गयी, न्याय की विजय के बारे में उनके स्वप्न उसके हृदय को गरमाते थे और उसमें पुलक भी भरते थे, पर न जाने क्यों जब भी वह उनकी बातें सुनती वह उदास होकर आह भरती। उनकी बेहद सादगी और अपने सुख की हर बात के प्रति उनकी सराहनीय उदासीनता उसे विशेष रूप से प्रभावित करती थी।

जीवन के बारे में वे जो कुछ कहते थे उसमें से बहुत कुछ वह समझने लगी थी; उसे ऐसा लगता था कि उन्होंने मनुष्य की विपदा के वास्तविक स्रोत का पता लगा लिया है और वह उनकी अधिकांश धारणाओं को स्वीकार करने लगी थी। पर अपने हृदय की गहराई से उसे यह विश्वास नहीं था कि वे जीवन को नये ढंग से ढालने में सफल होंगे या समस्त श्रमिक जनता को उस ज्योति के चारों ओर एकत्रित कर सकेंगे जो उन्होंने जगायी थी। हर आदमी को इस बात की चिन्ता थी कि आज वह अपना पेट कैसे भरे; कोई भी इसे कल पर उठा रखने को तैयार नहीं था! बहुत थोड़े-से लोग उस लम्बे और दुर्गम

पथ पर चलने को तैयार होंगे; बहुत कम लोगों के पास वह दृष्टि होगी कि वे इस पथ के अन्त में आनेवाले मानव के बंधुत्व के राज्य की भव्य कल्पना कर सकें। इसीलिए वह इन सब नेक लोगों को उनकी दाढ़ियों और प्रौढ़ चेहरों के बावजूद, जो बहुधा थकन से मुरझाये रहते थे, अपने बच्चों की तरह समझती थी।

"बेचारे, मेरे प्यारे बच्चे!" वह सोचती और सिर हिला देती।

पर उनमें से हर एक ईमानदार, गंभीर और बुद्धिसंगत जीवन व्यतीत कर रहा था। वे दूसरों की भलाई की बातें करते थे और जो कुछ वे स्वयं जानते थे उसे दूसरों को बताने के लिए कोई कोशिश उठा न रखते थे। वह इस बात को समझने लगी थी कि इस जीवन के संकटों के बावजूद लोग उससे प्यार क्यों करते थे और एक आह भरकर वह स्वयं अपने बीते हुए जीवन के अंधकारमय, संकरे मार्ग पर दृष्टि डालती। धीरे-धीरे उसके हृदय में यह शान्त चेतना जागृत हुई कि इस नये जीवन के लिए उसका भी महत्व है। पहले वह समझती थी कि किसी को उसकी ज़रूरत नहीं है पर अब वह इस बात को स्पष्ट रूप से देखने लगी थी कि अनेक लोगों को उसकी ज़रूरत थी और यह एक नया और सुखद आभास था, एक ऐसा आभास जिसकी बदौलत वह अपना मस्तक गर्व से ऊंचा करके चल सकती थी...

वह नियमित रूप से पर्चे लेकर फ़ैक्टरी में जाती। इसे वह अपना कर्त्तव्य समझने लगी थी। पुलिसवाले उसे वहां देखने के आदी हो चुके थे और वे उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। कई बार उन्होंने उसकी तलाशी भी ली, पर हर बार पर्चे बंटने के दूसरे दिन। जब उसके पास कुछ भी न होता तब वह जानबूझकर सन्तरियों और जासूसों के मन में शंका उत्पन्न करती; वे उसे पकड़कर उसकी तलाशी लेते और वह बिगड़ती हुई इस अपमान पर बनावटी रोष प्रकट करती। उन्हें बेवकूफ़ बनाने के बाद वह अपनी सूझबूझ पर गर्व से फूली हुई वहां से चल देती। उसे इस मज़ाक़ में बड़ा आनन्द आता था।

वेसोवश्चिकोव को फ़ैक्टरी में दुबारा काम पर नहीं रखा गया। उसे एक लकड़ी की टाल पर लकड़ी के कुंदे, तख़्ते और ईंधन ढोने का काम मिल गया। मां प्रायः हर दिन उसे अपना बोझ ढोकर ले जाते देखती। पहले तो दो काले मरियल घोड़े दिखायी देते जिनके पांव बोझ खींचने के परिश्रम से कांपते रहते थे; थकन के मारे उनके सिर डोलते रहते थे और वे अपनी नीरस व्यथित आंखें झपकाते रहते थे; उनके

पीछे गीली लकड़ी का खड़बड़ करता हुआ बड़ा-सा लट्ठा या तख़्तों का ढेर होता था जिनके हिलने-डुलने से बड़ी खड़खड़ होती थी। रासें ढीली छोड़े हुए निकोलाई घोड़ों के साथ-साथ चलता रहता था। मैला शरीर, फटे कपड़े, भारी जूते, टोपी सिर पर पीछे की ओर सरकी हुई ... वह इतना बेडौल और भद्दा दिखायी देता था जैसे ज़मीन में से किसी पेड़ का ठूंठ उखाड़ लिया गया हो। चलते समय उसकी आंखें ज़मीन पर गड़ी रहती थीं और उसका सिर भी ऊपर-नीचे डोलता रहता था। उसके घोड़े सामने से आती हुई गाड़ियों या लोगों से अंधों की तरह टकरा जाते थे। लोग झुंझलाकर निकोलाई पर चिल्लाते और भिड़ों के झुंड की तरह चारों तरफ़ से उस पर गालियों की बौछार होने लगती। वह न तो कभी जवाब देता और न सिर उठाकर ऊपर देखता ही, बस कर्कश स्वर में सीटी बजाता रहता और अपने घोड़ों से कहता रहता, "चल बे, चल!"

जब कभी अन्द्रेई किसी विदेशी अख़बार की नवीनतम प्रति या कोई पर्चा पढ़ने के लिए अपने साथियों को जमा करता तो निकोलाई भी आकर एक कोने में बैठ जाता और एक-दो घंटे तक चुपचाप सुनता रहता। पढ़ना समाप्त करके वे नौजवान गरमागरम बहस करते, जिसमें वेसोव-श्चिकोव कभी हिस्सा न लेता। लेकिन सब लोगों के चले जाने के बाद भी वह बैठा रहता और अकेले में अन्द्रेई से बातें करता।

"सबसे ज़्यादा दोष किसका है?" वह मुंह लटकाकर पूछता।

"दोष तो उस आदमी का है जिसने सबसे पहले यह कहा होगा कि 'यह मेरा है!' वह आदमी तो कई हज़ार बरस पहले मर चुका है, इसलिए उस पर ग़ुस्सा करने से कोई फ़ायदा नहीं," अन्द्रेई मज़ाक़ में उत्तर देता पर उसकी आंखों में एक बेचैनी रहती।

"और अमीर लोग? और वे जो उनको सहारा देते हैं?"

उक्रइनी सिर पर हाथ रख लेता और अपनी मूंछें नोचता हुआ सीधे-सादे शब्द चुन-चुनकर जीवन और लोगों के बारे में वह सब कुछ उसे बताने का प्रयत्न करता जो वह जानता था। उसकी राय में दोष सभी लोगों का था, पर इससे निकोलाई को संतोष न होता। अपने मोटे-मोटे होंट भींचकर वह सिर हिलाकर इंकार करता रहता और कहता कि बात यों नहीं है। आख़िरकार वह उठकर चला जाता, उदास और असंतुष्ट।

"दोष किसी का तो होगा ही," एक दिन उसने कहा, "और वे

लोग यहीं हैं! हमें बड़ी निर्ममता के साथ अपने सारे जीवन को जंगली घास के खेत की तरह जोत डालना पड़ेगा!"

"एक दिन टाइम-कीपर इसाई भी तुम्हारे बारे में यही कह रहा था!" मां ने उसे याद दिलाया।

"इसाई?" वेसोवश्चिकोव ने कुछ देर रुककर पूछा।

"हां! वह बड़ा ख़तरनाक आदमी है! हर जगह चोरों की तरह घूमता रहता है और लोगों से न जाने क्या-क्या पूछता रहता है। वह यहां भी आने लगा है और खिड़की में से झांकता है..."

"खिड़की में से झांकता है?" निकोलाई ने दुहराया।

मां चारपाई पर लेटी हुई थी, इसलिए वह उसकी सूरत तो नहीं देख सकती थी पर जब उक्रइनी ने जल्दी से कहा, "अगर उसे कोई और काम नहीं है तो आकर झांकने दो, हमारा क्या लेता है...," तब मां को आभास हुआ कि उसने कितनी मूर्खता की बात कही थी।

"यह बात नहीं है!" निकोलाई बोला। "वह उन लोगों में से है जिनका दोष है!"

"क्या दोष है उसका?" उक्रइनी ने तड़ से पूछा। "यही न कि वह बेवक़ूफ़ है?"

वेसोवश्चिकोव बिना कोई उत्तर दिये बाहर चला गया।

उक्रइनी थका-थका-सा धीरे-धीरे कमरे में टहलने लगा; उसकी लम्बी-लम्बी मकड़े जैसी टांगों के घिसटने की आवाज़ आ रही थी। उसने हमेशा की तरह अपने जूते उतार दिये थे ताकि पेलागेया निलोवना की नींद में विघ्न न पड़े। पर मां सो नहीं रही थी।

"मुझे उससे डर लगता है!" निकोलाई के चले जाने के बाद मां ने चिन्तित स्वर में कहा।

"हूं!.." उक्रइनी ने उनींदे स्वर में कहा। "वह बड़ा झक्की है। मां, उसके सामने अब कभी इसाई की बात न करना। इसाई सचमुच जासूस है।"

"इसमें हैरानी की बात भी क्या है?" मां ने उत्तर दिया। "उसका तो धर्म-पिता भी राजनीतिक पुलिस में था।"

"मुमकिन है निकोलाई उसे किसी दिन पीट दे," उक्रइनी ने कुछ बेचैनी के साथ कहा। "देखा तुमने कि शासन करनेवाले इन सभ्य लोगों ने आम लोगों में क्या भावनाएं पैदा कर दी हैं? जब निकोलाई जैसे लोग यह समझने लगेंगे कि उनके साथ कैसा अन्याय किया गया

है और उनका धीरज अपनी सीमा को पहुंच जायेगा तब क्या होगा? पृथ्वी और आकाश पर ख़ून की नदियां बह जायेंगी ... "

"अन्द्रेई, कितना भयानक होगा!" मां ने भयभीत स्वर में चुपके से कहा।

"लेकिन अगर कोई मक्खी न खाये तो क़ै क्यों हो!" अन्द्रेई ने एक मिनट रुककर कहा। "मगर मालिकों के अत्याचार से आम लोगों ने जो आंसुओं के सागर बहाये हैं, उनसे इन मालिकों के ख़ून की एक-एक बूंद पानी हो जायेगी ... "

वह धीरे से हंसा और फिर बोला:

"इस बात से दिल को ख़ुशी नहीं होती मगर यह सच बात है!"

२२

एक दिन इतवार को मां बाज़ार से कुछ सौदा लेकर घर लौटी और दरवाज़ा खोलते ही चौखट पर ख़ुशी के मारे मूर्तिवत् खड़ी रह गयी। अन्दर के कमरे से पावेल की भारी आवाज़ आ रही थी।

"लो वह आ गयी!" उक्रइनी ने चिल्लाकर कहा।

मां ने पावेल को जल्दी से मुड़ते देखा। पावेल का चेहरा चमक उठा, जिससे मां को बड़ा ढाढ़स बंधा।

"आ गये तुम!" उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़ से कहा और बैठ गयी। बेटे के इस प्रकार अचानक आ जाने की ख़ुशी से उसके हाथ-पांव फूल गये थे।

पावेल उसकी तरफ़ झुका; उसके होंट कांप रहे थे और उसकी आंखों की कोर में आंसू झलक रहे थे। एक क्षण तक वह कुछ नही बोला और मां भी चुपचाप बैठी उसे एकटक निहारती रही।

उक्रइनी उन्हें अकेला छोड़कर धीरे-धीरे सीटी बजाता हुआ बाहर मैदान में चला गया।

"मां, धन्यवाद!" पावेल ने अपनी कांपती हुई उंगलियों से उसका हाथ दबाते हुए मंद स्वर में कहा। "मेरी प्यारी मां, बहुत-बहुत धन्यवाद!"

पावेल के चेहरे पर वह भाव और उसके स्वर में वह कोमलता देखकर मां इतनी गद्गद् हो उठी कि वह अपने बेटे के सिर पर हाथ फेरने लगी और इस बात का प्रयत्न करने लगी कि उसके हृदय का तीव्र स्पंदन किसी प्रकार शान्त हो जाये।

"कमाल करते हो, धन्यवाद किस बात का?" वह बोली।

"हमारे इस बड़े काम में हाथ बंटाने के लिए धन्यवाद!" पावेल ने फिर कहा। "बहुत कम लोगों को यह खुशी नसीब होती है कि वे कह सकें कि उनकी और उनकी मां की आत्माएं एक जैसी हैं!"

मां चुप थी। वह बड़ी उत्सुकता से उसका एक-एक शब्द सुन रही थी और सामने खड़े हुए अपने बेटे को प्रशंसा की दृष्टि से निहार रही थी। कितना अच्छा, कितना प्यारा था वह!

"मां, मुझे मालूम है कि तुम्हें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा। बहुत-सी बातें तो ऐसी भी होंगी जो तुम्हें अच्छी न लगती होंगी। और मैं सोचता था कि तुम हम लोगों को कभी स्वीकार न करोगी, हमारे विचारों को तुम कभी अपना न सकोगी और तुम चुपचाप सब कुछ सहती रहोगी जैसे, तुम जीवन भर हर बात सहन करती आयी हो। मुझे यह सोचकर बड़ा दुःख होता था! .."

"अन्द्रेई ने मुझे बहुत-सी बातें समझने में मदद दी!" मां ने कहा।

"उसने बताया मुझे तुम्हारे बारे में!" पावेल ने हंसकर कहा।

"येगोर ने भी। वह और मैं एक ही गांव के हैं। अन्द्रेई तो मुझे लिखना-पढ़ना भी सिखाना चाहता था।"

"और तुम्हें शरम आती थी और इसलिए तुम छुप-छुपकर अपने आप पढ़ने लगीं?"

"अच्छा, तो वह यह जान गया!" मां ने चौंककर कहा। हर्षातिरेक से विह्वल होकर मां ने कहा, "उसे अन्दर बुला लें! वह जान-बूझकर बाहर चला गया कि हम लोगों की बातों में बाधा न पड़े। उसकी अपनी मां तो है नहीं ..."

"अन्द्रेई! .." पावेल ने बरसाती का दरवाज़ा खोलकर पुकारा। "कहां हो?"

"यहां हूं। ज़रा लकड़ी चीरता हूं।"

"अन्दर आ जाओ!"

वह फ़ौरन अन्दर नहीं आया और जब रसोई में उसने प्रवेश किया तो वह घर की बातें करने लगा।

"मैं निकोलाई से कहूंगा कि कुछ लकड़ी लाकर डाल दे। बहुत कम रह गयी है। मां, ज़रा अपने पावेल को तो देखो। मालूम होता है कि विद्रोहियों को सज़ा देने के बजाय हाकिम उन्हें खिला-पिलाकर मोटा करते रहे हैं ..."

मां हंस दी। उस पर अब तक हर्ष का नशा छाया हुआ था और उसके हृदय में मीठा-मीठा स्पंदन हो रहा था, पर व्यवहारकुशलता और औचित्य के विचार से वह चाहती थी कि उसका बेटा फिर हमेशा की तरह शान्त हो जाये। हर चीज़ अत्यन्त भव्य थी और वह चाहती थी कि उसके जीवन की यह पहली ख़ुशी उसके हृदय में हमेशा ऐसी ही प्रबल और सजीव बनी रहे जैसी कि उस क्षण थी। इस भय से कि कहीं वह कम न हो जाये वह उठी कि इस ख़ुशी को पिंजरे में बंद कर ले। उसकी दशा बिल्कुल उस बहेलिये जैसी थी जिसने अचानक अनजाने में कोई नायाब चिड़िया पकड़ ली हो।

"आओ, खाना खा लें! पावेल, तुम खाकर तो आये नहीं होगे?" उसने इधर-उधर के कामों में व्यस्त होकर कहा।

"नहीं, कल ही जेलर ने बता दिया था कि मुझे छोड़ देने का फ़ैसला कर लिया गया है, इसलिए मैं कुछ खा-पी न सका..."

"बाहर निकलते ही सबसे पहले जिस आदमी से मेरी मुलाक़ात हुई वह बूढ़ा सिज़ोव था," पावेल कहता रहा। "मुझे देखकर वह सड़क पार करके मुझसे मिलने आया। मैंने उससे कह दिया कि वह होशियार रहे क्योंकि आजकल मैं ख़तरनाक आदमी हूं – मुझ पर पुलिस की नज़र है। उसने कहा कि कोई परवाह नहीं है और मुझसे अपने भतीजे के बारे में दुनिया भर की बातें पूछता रहा। उसने पूछा कि फ़्योदोर जेल में ठीक से तो रहता है। मैंने जवाब दिया, 'जेल में कोई ठीक से कैसे रह सकता है?' वह बोला, 'ख़ैर, मैं समझता हूं कम से कम अपने साथियों के साथ विश्वासघात तो नहीं करता होगा?' जब मैंने उसे बताया कि फ़्योदोर भला आदमी है, ईमानदार और होशियार है तो उसने दाढ़ी पर हाथ फेरकर बड़े गर्व से कहा, 'हमारे सिज़ोव-परिवार में कोई ख़राब आदमी नहीं है!'"

"बूढ़ा बहुत समझदार है!" उक्रइनी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मुझसे कई बार उसकी बात हुई है – अच्छा आदमी है। फ़्योदोर को जल्दी छोड़ देंगे?"

"मेरा तो ख़्याल है कि सभी को छोड़ देंगे! इसाई जो कुछ कहता है उसके अलावा उनके ख़िलाफ़ कोई सबूत तो हैं नहीं और इसाई की बात का क्या भरोसा?"

मां इधर-उधर आ-जा रही थी, पर उसकी नज़र पावेल पर ही जमी हुई थी। अन्द्रेई अपने हाथ पीछे बांधे खिड़की के पास खड़ा पावेल

की बातें सुन रहा था। पावेल कमरे में टहल रहा था। पावेल ने दाढ़ी बढ़ा ली थी ; उसके गालों पर बहुत कोमल घुंघराले बालों के छल्ले बन गये थे जिससे उसके चेहरे के सांवले रंग में कुछ कमी आ गयी थी।

"बैठ जाओ!" मां ने खाना रखते हुए कहा।

भोजन करते समय अन्द्रेई ने पावेल को रीबिन के बारे में बताया। जब वह अपनी बात पूरी कर चुका तो पावेल ने खेद प्रकट करते हुए कहा :

"अगर मैं घर पर होता तो उसे कभी न जाने देता! वह आखिर अपने साथ क्या लेकर गया है? कुछ उलझे हुए विचार और बहुत-सी कटु भावनाएं।"

"खैर, लेकिन जब आदमी चालीस बरस का हो चुका हो और उसने अपना यह सारा जीवन अपनी जंगली रीछों जैसी आत्मा से लड़ने में बिताया हो, तो उसे बदलना आसान नहीं होता..." उक्रइनी ने हंसकर कहा।

इसके बाद उनमें ऐसी बहस छिड़ गयी जिसके अधिकांश शब्द मां की समझ के बाहर थे। भोजन समाप्त हो चुका था पर वे दोनों एक-दूसरे पर भारी-भरकम शब्दों की बौछार करते रहे। कभी-कभी वे सीधे-सादे शब्दों में भी बातें करते।

"हमें तो अपने ही रास्ते पर बढ़ते जाना है, एक क़दम भी पीछे नहीं हटना है," पावेल ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"और जाकर करोड़ों ऐसे लोगों से टकरा जाना है जो हमें अपना दुश्मन समझें, क्यों?.."

उनकी बहस सुनकर मां की समझ में यह आया कि पावेल किसानों को पसंद नहीं करता था और उक्रइनी उनका पक्ष लेता था और यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता था कि किसानों को भी यह समझाना है कि कौन-सा रास्ता ठीक है। अन्द्रेई की बात मां की समझ में ज़्यादा अच्छी तरह आती थी और उसे ऐसा लगता था कि वही ठीक बात कहता है, पर हर बार जब वह पावेल से कुछ कहता तो वह चिन्तित और सतर्क हो जाती और यह निश्चित करने के लिए दम साधकर अपने बेटे के उत्तर की प्रतीक्षा करती कि कहीं वह अन्द्रेई की बात पर नाराज़ तो नहीं हो गया? पर वे एक-दूसरे की बात का बुरा माने बिना एक-दूसरे पर चिल्लाते रहे।

"ऐसा ही है न, पावेल?" वह कभी-कभी अपने बेटे से पूछती।

"हां, ऐसा ही है!" वह मुस्कराकर उत्तर देता।

"हुंज़ूर," उक्रइनी ने मित्रतापूर्ण व्यंग से कहा, "आपने खाया तो खूब है, मगर उसे अच्छी तरह चबाया नहीं। आपके गले में अभी तक कुछ अटका हुआ है। उसे नीचे उतार लीजिये!"

"बको नहीं!" पावेल बोला।

"मुझे तो मातमी दावत का मज़ा आ रहा है!.."

मां धीरे से मुस्करा दी और अपना सिर हिलाती रही।

२३

वसन्त ऋतु आयी। बर्फ़ पिघली और नीचे की कीचड़ और गंदगी सब ऊपर आ गयी। दिन प्रतिदिन कीचड़ बढ़ती गयी; बस्ती बहुत गंदी और अस्त-व्यस्त मालूम हो रही थी। दिन में छतों से पानी टपकता था और घरों की मटमैली दीवारों से पसीने की तरह नमी रिसती थी परन्तु रात को श्वेत हिमकण अब भी चमकते थे। सूरज अब आकाश पर अधिक देर तक चमकता था और दलदल की तरफ़ बहकर जाते हुए जल-स्रोतों की कलकल ध्वनि साफ़ सुनायी देती थी।

मई दिवस का उत्सव मनाने की तैयारियां आरम्भ हो गयी थीं।

फ़ैक्टरी और बस्ती भर में इस उत्सव के महत्व को समझाने के लिए पर्चे बांटे गये। वे लड़के भी जिन पर प्रचार का प्रभाव नहीं पड़ा था इन पर्चों को पढ़कर कहते थे:

"हमें भी तैयारी करनी पड़ेगी!"

"अब वक़्त आ गया है!" वेसोवश्चिकोव ने उदासीनता के साथ मुस्कराते हुए कहा। "आंख-मिचौली बहुत खेल चुके हम लोग!"

फ़्योदोर माज़िन का उत्साह फूटा पड़ रहा था। वह बहुत दुबला हो गया था और अपनी गतिविधियों तथा बोलचाल की बेचैनी के कारण पिंजरे में बंद चकोर सा मालूम होता था। याकोव सोमोव हर दम उसके साथ रहता था, उस लड़के की उम्र को देखते हुए वह बहुत गंभीर था। याकोव को अब शहर में नौकरी मिल गयी थी। समोइलोव (जिसके बाल जेल में रहते-रहते और भी लाल हो गये लगते थे), वासीली गूसेव, बुकिन, द्रागुनोव और कुछ दूसरे लोगों का कहना था कि उन्हें हथियार लेकर प्रदर्शन करना चाहिये, मगर पावेल, उक्रइनी, सोमोव और कुछ दूसरे लोगों ने इस पर आपत्ति की।

येगोर ने, जो हमेशा की ही तरह थका-थका, हांपता हुआ और पसीने में तर था, उनके तर्कों को मज़ाक़ में उड़ा दिया:

"यह तो सच है, साथियो, कि मौजूदा समाज की व्यवस्था को बदलने की हमारी कोशिशें बहुत ही सराहनीय हैं, लेकिन अपनी सफलता का दिन निकट लाने के लिए मैं इसे ज़रूरी समझता हूं कि अपने लिए एक जोड़ा नये जूते ख़रीद लूं!" यह कहकर उसने अपने गीले और फटे हुए जूतों की तरफ़ संकेत किया। "मेरे रबड़ के जूतों की भी अब ऐसी हालत हो गयी है कि उनकी मरम्मत नहीं हो सकती, और रोज़ मेरे पांव भीग जाते हैं। इस पुरानी व्यवस्था की खुलेआम धज्जियां उड़ाने से पहले धरती की कोख में जा बसने का मेरा इरादा नहीं है, इसलिए मैं कामरेड समोइलोव के इस सुझाव को नहीं मानता कि हम हथियार लेकर जुलूस निकालें। इसके बजाय मैं अपना सुझाव रखता हूं कि मुझे एक जोड़े नये जूते दिलवा दिये जायें। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा करने से समाजवाद की विजय का दिन निकट लाने में कहीं ज़्यादा मदद मिलेगी, जितनी कि अच्छी मार-धाड़ से भी नहीं मिल सकती!.."

ऐसी ही लच्छेदार भाषा में उसने मज़दूरों को बताया कि दूसरे देशों के लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए किस प्रकार संघर्ष कर रहे थे। मां को उसके भाषण सुनने में बड़ा आनन्द आता था, और उनका उस पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ता था: उसे ऐसा लगता था कि जनता के सबसे कट्टर शत्रु, वे लोग जो उसे सबसे ज़्यादा धोखा देते थे और उसके साथ सबसे अधिक निर्दयता का बरताव करते थे, मोटे लाल-मुंहवाले छोटे-छोटे लोग थे, कमीने, लालची, चालाक और क्रूर। जब उनके देश का शासक उन पर शिकंजा कसता था तब वे आम जनता को उससे लड़ा देते थे और जब जनता अपने शासक का तख़्ता उलट देती थी, तब यही छोटे-मोटे लोग धोखेबाज़ी से सत्ता अपने हाथ में ले लेते थे और जनता को फिर उसके गंदे झोपड़ों में ढकेल देते थे और यदि वह विरोध करती थी तो वे सैकड़ों-हज़ारों लोगों को जान से मार देते थे।

एक दिन मां ने पूरा साहस बटोरकर येगोर को बताया कि उसके भाषण सुनकर उसकी कल्पना में क्या चित्र बनता था।

"क्या यह ठीक है, येगोर इवानोविच?" उसने अटपटी मुस्कराहट के साथ पूछा।

वह आंखें नचाकर हंसने लगा और सांस लेने में कठिनाई होने के कारण अपना सीना मलने लगा।

"मां, बिल्कुल यही बात है! तुमने इतिहास की दुखती हुई रग पकड़ ली है! कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत आडम्बर है, पृष्ठ-भूमि में कल्पना ने ज़रा-बहुत बारीक जाल बुन दिया है, पर तथ्य सब अपनी ठीक जगह पर हैं! यही छोटे-छोटे मोटी तोंदवाले लोग सबसे बड़े पापी हैं और यही सबसे ज़हरीली जोंकें हैं जो जनता का खून चूस रही हैं। फ़्रांसीसियों ने इन्हें 'बूर्जुआ' का नाम ठीक ही दिया था... इस बात को याद रखना, मां... बूर-जुआ, क्योंकि वे बिल्कुल 'जुए' के समान हैं; जिन-जिन लोगों के भोलेपन का वे फ़ायदा उठा सकते हैं उन पर वे वार करते हैं और उनका खून चूसते हैं..."

"तुम्हारा मतलब है कि यह सब कुछ पैसेवाले करते हैं?" मां ने पूछा।

"हां। यह उनका दुर्भाग्य है कि वे पैसेवाले हैं। अगर बच्चे के खाने में तांबा मिलाते रहो तो उसकी हड्डियों की बाढ़ मारी जाती है और बच्चा बौना रह जाता है, लेकिन जब किसी आदमी को सोने का ज़हर दिया जाता है, तो उसकी आत्मा बौनी रह जाती है – छोटी और गंदी और बेजान, रबर की उन गेंदों की तरह जो बच्चे पांच-पांच कोपेक की खरीदते हैं..."

एक दिन येगोर की बातें करते समय पावेल ने कहा:

"अन्द्रेई, बात यह है कि जो लोग सबसे ज़्यादा मज़ाक़ करते हैं वे ही बहुधा सबसे ज़्यादा मुसीबत में भी होते हैं..."

उत्तर देने से पहले उक्रइनी एक क्षण के लिए रुका और उसने अपनी आंखें सिकोड़ लीं:

"अगर तुम्हारा कहना ठीक है तब तो सारे रूस को हंसते-हंसते बेदम हो जाना चाहिये..."

नताशा आती। वह भी जेल में थी, पर वह दूसरे शहर में थी। जेल में रहने के कारण उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। मां ने देखा कि उसके आते ही उक्रइनी में जैसे नयी जान आ जाती थी और जितनी देर वह रहती वह सब से मज़ाक़ करता और सब की हंसी उड़ाता और उसे हंसाता रहता। पर जब नताशा चली जाती, वह उदास धुनों पर सीटी बजाने लगता और निराश भाव से पांव घसीटता हुआ कमरे में टहलने लगता।

साशा भी अक्सर थोड़ी देर के लिए आती। वह हमेशा जल्दी में रहती थी, और उसकी त्योरियों पर बल पड़े रहते थे और न जाने क्यों उसमें दिन-प्रतिदिन अधिक रुखाई आती जा रही थी और वह बोलने भी कम लगी थी।

एक बार जब पावेल उसे दरवाज़े तक छोड़ने गया और जाते हुए दरवाज़ा बंद करना भूल गया तो मां ने उन्हें जल्दी-जल्दी ये बातें करते सुना:

"क्या झंडा लेकर तुम चलोगे?" लड़की ने पूछा।

"हां।"

"क्या यह तै हो गया है?"

"हां, यह सम्मान मुझे ही दिया गया है।"

"तो फिर जेल जाने का इरादा है?!"

पावेल ने कोई उत्तर न दिया।

"क्या ऐसा नहीं कर सकते कि..." साशा ने कहना आरंभ किया पर कहते-कहते रुक गयी।

"क्या?"

"किसी और को यह काम सौंप दो..."

"नहीं!" पावेल ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

"सोच लो, तुम्हारा इतना असर है, सब लोग तुम्हें चाहते हैं! .. तुम्हें और अन्द्रेई को लोग सबसे ज्यादा चाहते हैं। ज़रा सोचो तो तुम यहां कितना काम कर सकते हो! लेकिन अगर तुम झंडा लेकर चले तो तुम्हें निर्वासित कर दिया जायेगा, बहुत दिन के लिए बहुत दूर भेज दिया जायेगा!"

मां ने देखा कि लड़की के स्वर में भय और उदासी की चिर-परिचित भावनाएं थीं। साशा के शब्द उसके हृदय पर बर्फ़ के पानी की बूंदों की तरह लग रहे थे।

"मैंने फ़ैसला कर लिया है!" पावेल ने कहा। "अब कोई भी मेरा यह फ़ैसला बदलवा नहीं सकता।"

"अगर मैं कहूं तब भी नहीं?"

पावेल के स्वर में सहसा तेज़ी और रुखाई आ गयी।

"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये। नहीं कहना चाहिये तुम्हें ऐसा!"

"मैं भी आख़िर इंसान हूं," साशा ने धीरे से कहा।

"सो भी अच्छी इंसान हो!" पावेल ने भी वैसे ही धीरे से

10–1065

उत्तर दिया, पर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे उसका गला रुंधा जा रहा है। "मुझे प्रिय हो तुम। और इसलिए... इसीलिए तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये..."

"अच्छा, तो मैं चलती हूं!" लड़की ने कहा।

उसकी एड़ियों की खट-खट से मां समझ गयी कि वह भागकर वहां से चली गयी थी। पावेल उसके पीछे-पीछे बाग़ में गया।

मां का हृदय भय से संकुचित हो उठा। उसकी समझ में ठीक से नहीं आया कि वे क्या बातें कर रहे थे, पर वह इतना ज़रूर समझ गयी कि उस पर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आनेवाली है।

"आख़िर वह क्या करने की तैयारी कर रहा है?" उसने सोचा।

पावेल अन्द्रेई के साथ वापस आया।

"ओह, इसाई, इसाई! हम लोग उसका क्या करें?" उक्रइनी ने सिर हिलाते हुए कहा।

"हम लोग उससे साफ़-साफ़ कह दें कि वह यह हरकत छोड़ दे!" पावेल ने भवें चढ़ाकर कहा।

"पावेल, तुम क्या करने जा रहे हो?" मां ने सिर झुकाकर पूछा।

"कब? अभी?"

"नहीं... पहली मई को।"

"ओह!" पावेल ने अपना स्वर मंद करते हुए कहा। "मैं झंडा लेकर जुलूस के आगे-आगे चलूंगा। शायद इस पर मुझे फिर जेल भेज दिया जाये।"

मां की आंखें तिलमिला उठीं और उसका मुंह सूख गया। पावेल उसका हाथ अपने हाथ में लेकर थपकने लगा।

"मुझे यह करना ही पड़ेगा। मां, समझने की कोशिश करो!"

"मैंने तो कुछ नहीं कहा," मां ने धीरे से अपना सिर ऊपर उठाते हुए उत्तर दिया। पर जब उसकी आंखें पावेल की दृढ़ संकल्प से चमकती हुई आंखों से चार हुईं तो उसका धीरज टूट गया।

पावेल ने आह भरकर उसका हाथ छोड़ दिया।

"तुम्हें दुःखी होने के बजाय इस बात की ख़ुशी होनी चाहिये," पावेल ने मां को झिड़कते हुए कहा। "आख़िर कब हमारे यहां ऐसी मांएं होंगी जो हंसते-हंसते अपने बेटों को मरने के लिए भेज दें?.."

"हुंह!" उक्रइनी ने अस्फुट स्वर में कहा। "बड़े आये सूरमा!.."

"मैंने तो कुछ नहीं कहा, भला कहा है कुछ?" मां ने फिर वही बात दुहरायी। "मैं तुम्हारी राह में नहीं आती। पर अपने जी को कैसे समझाऊं – मैं मां हूं..."

पावेल वहां से हट गया और उसकी बात मां के हृदय में डंक की तरह लगी।

"एक प्रेम ऐसा भी होता है जो मनुष्य के पैरों की ज़ंजीर बन जाता है..." पावेल ने कहा।

"ऐसा न कहो, पावेल!" मां ने कहा। वह भय से कांप गयी कि कहीं वह कोई और ऐसी बात न कह दे जिससे उसके दिल को चोट लगे। "मैं समझती हूं – तुम्हारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है... अपने साथियों की ख़ातिर..."

"उनकी ख़ातिर नहीं, अपनी ख़ातिर," पावेल ने कहा।

अन्द्रेई आकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया। दरवाज़ा बहुत नीचा था इसलिए वह बड़े विचित्र ढंग से घुटने झुकाये एक कंधा चौखटे से लगाकर खड़ा था; उसका सिर और दूसरा कंधा आगे की तरफ़ झुका हुआ था।

"हुज़ूर, अगर आप इस बात को यहीं ख़त्म कर दें तो कोई हर्ज नहीं होगा!" उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें पावेल के चेहरे पर गड़ाकर व्यंग से कहा। वहां खड़ा हुआ वह ऐसा लग रहा था जैसे चट्टान की दरार में कोई छिपकली हो।

मां की आंखों में आंसू छलक आये।

"अरे, मैं तो भूल ही गयी..." उसने अस्फुट स्वर में कहा और जल्दी से दरवाज़े से बाहर निकल गयी कि कहीं उसका बेटा उसे रोते न देख ले।

बाहर पहुंचते ही वह दुबककर एक कोने में खड़ी हो गयी और चुपके-चुपके सिसकियां लेने लगी। उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी, मानो उसके आंसुओं के साथ उसके हृदय का रक्त भी बह रहा हो।

अधखुले दरवाज़े से उसने उन दोनों को धीमे स्वर में बहस करते सुना।

"आख़िर तुम चाहते क्या हो? मां को दुःख पहुंचाकर क्या तुम्हें ख़ुशी होती है?" उक्रइनी ने पूछा।

"तुम्हें यह कहने का कोई अधिकार नहीं है!" पावेल ने चिल्लाकर कहा।

"तब फिर मैं दोस्त किस काम का, अगर मैं आंखें मूंद लूं और तुम्हें बेवक़ूफ़ी की हरकतें करने दूं! तुम्हें आखिर यह कहने की ज़रूरत ही क्या थी? देखते नहीं, उस पर क्या बीत रही है?"

"आदमी को अपना दिल कड़ा रखना चाहिये और 'हां' या 'ना' कहने से डरना नहीं चाहिये!"

"उससे?"

"हर आदमी से! मैं न ऐसा प्रेम चाहता हूं, न ऐसी दोस्ती, जो पैरों में बेड़ियां डाल दे, आगे बढ़ने से रोक दे..."

"बड़े सूरमा बने फिरते हो! जाओ, मुंह धोकर आओ! साशा से कहना यह बात। तुम उसी से..."

"मैं उससे भी कह चुका हूं!.."

"इसी ढंग से? झूठ बोलते हो! तुमने उससे बड़ी नरमी, बड़े प्यार से यह बात हकी होगी। मैंने सुना नहीं, फिर भी जानता हूं। लेकिन तुम्हें अपनी मां के आगे शेखी जो बघारनी थी... अगर तुम सच पूछो तो तुम्हारी इस सारी अकड़ में ज़रा भी दम नहीं है!"

पेलागेया निलोवना ने जल्दी से अपने आंसू पोंछ डाले। इस डर से कि कहीं उक्रइनी पावेल को नाराज़ करनेवाली कोई ऐसी-वैसी बात न कह बैठे वह जल्दी से दरवाज़ा खोलकर रसोई में आ गयी।

"ब-र्र-र्र! कितनी सर्दी है!" उसने ऊंचे स्वर में कहा; उसका स्वर भय और व्यथा के कारण कांप रहा था। "कौन कहेगा कि बसन्त आ गया है..."

वह बिना किसी उद्देश्य के चीज़ें इधर से उधर धरती-उठाती रही कि दूसरे कमरे से आनेवाली आवाज़ें सुनायी न दें।

"हर चीज़ बदल गयी है," वह और भी ऊंचे स्वर में कहती रही। "लोगों का मिज़ाज गरम होता जा रहा है, और मौसम ठंडा होता जा रहा है। हमेशा तो अब तक काफ़ी गर्मी हो जाती थी – सूरज निकल आता था और आकाश स्वच्छ हो जाता था..."

दूसरे कमरे से आवाज़ें आनी बंद हो गयीं। मां रसोई के बीच में खड़ी कान लगाये सुनती रही।

"सुना तुमने?" उक्रइनी ने मंद स्वर में कहा। "अरे भले आदमी, तुम्हें इसे समझना चाहिये! तुमसे बड़ी आत्मा है उसकी..."

"चाय पिओगे?" मां ने कांपते हुए स्वर में पूछा, और अपने स्वर के इस कम्पन का असली कारण छुपाने के लिए जल्दी से बोली

"हे भगवान्, मैं तो सरदी में अकड़ गयी!"

पावेल धीरे-धीरे मां के पास गया। वह सिर झुकाये हुए था और उसके होंटों पर अपराधियों जैसी मुस्कराहट खेल रही थी।

"मां, मुझे माफ़ कर दो! मैं अभी बिल्कुल बच्चा हूं – बिल्कुल बेवक़ूफ़ हूं..."

"छोड़ो इस बात को!" मां ने उसका सिर अपने सीने से लगा लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। "बस, अब कुछ न कहना! भगवान जानता है, तुम्हारी ज़िंदगी तुम्हारी अपनी है, जो चाहो करो। मगर मेरे दिल को न दुखाओ! क्या कोई मां अपने बच्चे से प्यार करना छोड़ सकती है? प्यार के बिना वह ज़िंदा ही नहीं रह सकती... मैं तुम सब को प्यार करती हूं! तुम सब मुझे प्यारे हो और तुम सब प्यार करने लायक़ हो! अगर मैं न करूंगी तो कौन तुम्हें प्यार करेगा?.. तुम चले जाओगे – और दूसरे लोग पीछे-पीछे जायेंगे – अपना सब कुछ त्यागकर... आह, पावेल!"

उसके हृदय में महान विचारों की ज्वाला धधक रही थी। उसके हृदय में एक दुःखद उल्लास हिलोरें ले रहा था, जिसे वह शब्दों से व्यक्त नहीं कर सकती थी और अपनी इस अकथनीय व्यथा से पीड़ित होकर उसने अपने बेटे को तीव्र वेदना से जलती हुई आंखों से देखा।

"ठीक है, मां! मुझे माफ़ कर दो, अब सब कुछ मेरी समझ में आ गया है! और मैं अब से इसे कभी नहीं भूलूंगा, मैं क़सम खाकर कहता हूं!" उसने मुस्कराकर मुंह फेर लिया; वह खुश भी था और लज्जित भी।

"अन्द्रेई!" मां ने विनय-भरे कोमल स्वर में कहा, "उसे इस तरह डांटा न करो! वैसे तुम बड़े तो ज़रूर हो..."

उक्रइनी मां की ओर मुड़े बिना जहां का तहां खड़ा रहकर विचित्र और हास्यास्पद ढंग से गुर्रा उठा:

"ऊ-ऊ-फ़! मैं उसे डांटूंगा ही नहीं, पिटाई भी करूंगा!"

मां उसके पास चली गयी और अपना हाथ फैलाकर बोली:

"तुम कितने अच्छे हो..."

वह तेज़ी से पीछे मुड़ा और मां के सामने से होता हुआ रसोईघर में चला गया। वह अपने दोनों हाथ पीठ के पीछे किये बैलों की तरह सिर झुकाये चल रहा था। मां ने उसे भयानक उपहास के स्वर में बोलते हुए सुना:

"हट जाओ, पावेल, नहीं तो मैं तुम्हारा सिर काट लूंगा! मां, मेरी बात को सच न समझ लेना, मैं मज़ाक़ कर रहा हूं! हटो, मैं समोवार गरम करता हूं। अरे वाह, क्या बढ़िया कोयला है—पूरी तरह भीगा हुआ!"

वह चुप हो गया। जिस समय मां ने रसोईघर में प्रवेश किया वह फ़र्श पर बैठा समोवार में आग सुलगा रहा था।

"डरो नहीं, मैं उसका कुछ नहीं बिगाड़ूंगा!" उसने सिर ऊपर उठाकर देखे बिना ही कहा। "मेरा दिल तो उबले हुए शलजम की तरह नरम है! और मुझे... ए सूरमा, तुम अपने कान बंद कर लो... मुझे तो वह बहुत अच्छा लगता है। मगर जो वास्कट वह पहने हुए है वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है। बात यह है कि उसने तो मानो नयी वास्कट ख़रीदी है और समझता है कि वह बहुत ख़ूबसूरत है, इसलिए वह अपनी तोंद फुलाये सारे शहर में घूमता है और सब को रोक-रोककर बताता है, 'देखो तो मेरे पास कितनी अच्छी वास्कट है!' ठीक है, वास्कट अच्छी है, मगर सब पर उसका रोब क्यों झाड़ो? यों ही क्या कम परेशानियां हैं!"

"कब तक बड़बड़ाते रहोगे?" पावेल ने धीरे से हंसकर कहा। "ख़ूब ख़बर ले चुके, अब बस करो!"

उक्राइनी समोवार के दोनों तरफ़ टांगें फैलाकर बैठ गया और नीचे बैठे-बैठे ही नज़रें उठाकर उसने उसकी तरफ़ देखा। मां दरवाज़े के चौखट पर खड़ी बड़े प्यार से उसकी गुद्दी को निहार रही थी। उसने अपनी दोनों बांहें कसकर अपने शरीर को मरोड़ा और मां और बेटे की तरफ़ देखा; उसकी आंखें सहसा लाल हो गयीं।

"बहुत भले लोग हो तुम दोनों!" उसने आंखें झपकाते हुए कहा।

पावेल ने झुककर उसका हाथ पकड़ लिया।

"देखो झटका न देना," उक्राइनी ने कहा, "नहीं तो मैं गिर जाऊंगा..."

"शरमाते क्यों हो?" मां ने उदासी से कहा। "एक-दूसरे को चूम क्यों नहीं लेते, सीने से क्यों नहीं लगा लेते..."

"चाहते हो?" पावेल ने पूछा।

"हां!" उक्राइनी ने उठते हुए कहा।

उन्होंने ज़ोर से एक-दूसरे को चिपटा लिया—दो शरीर थे, पर

दोनों में मित्रता की ज्योति से जगमगाती हुई एक ही आत्मा थी। मां के गालों पर आंसू बहने लगे, पर इस बार ये हर्ष के आंसू थे।

"औरतों को रोना अच्छा लगता है," मां ने शरमाकर आंसू पोंछते हुए कहा। "सुख में भी रोती हैं और दुःख में भी रोती हैं! .."

उक्रइनी ने धीरे से पावेल को ढकेलकर अलग कर दिया।

"बस!" उसने भी अपनी आंखें पोंछते हुए कहा। "बहुत देर गुलछर्रे उड़ा लिये, अब हलाल होने का वक़्त आ गया। लानत है तुम्हारे इन कोयलों पर! मेरी तो फूंकते-फूंकते आंखें सूज गयीं..."

"इन आंसुओं में ऐसी शरमाने की क्या बात है," पावेल ने खिड़की के पास जाकर बैठते हुए धीरे से कहा।

मां भी जाकर उसके बग़ल में बैठ गयी। उसके हृदय में एक नया साहस भर गया था जिसके कारण वह अपनी उदासी के बावजूद शान्त और संतुष्ट थी।

"मां, तुम बैठी रहो, मैं चाय का सामान लिये आता हूं!" उक्रइनी ने कमरे से बाहर जाते हुए कहा। "रो-रोकर तुमने अपना जी इतना हल्कान कर लिया है, अब तुम थोड़ी देर आराम कर लो..."

उसकी पाटदार आवाज़ गूंजती हुई उनके पास तक पहुंची।

"अभी हमें जीवन का एक शानदार अनुभव हुआ है; प्यार-भरे मानव जीवन को हमने देखा है!" वह बोला।

"हां!" पावेल ने कनखियों से मां की तरफ़ देखते हुए कहा।

"और इसने हर चीज़ को बदल दिया है!" मां ने कहा। "हमारी विपदा भी अब पहले से भिन्न है और हमारा हर्ष भी..."

"होना भी यही चाहिये!" उक्रइनी ने कहा। "क्योंकि, मेरी प्यारी मां, एक नये हृदय का जन्म हो रहा है। मनुष्य आगे बढ़ रहा है; वह सारी दुनिया में ज्ञान की ज्योति फैला रहा है और आगे बढ़ते हुए कह रहा है: 'सारे देशों के रहनेवालो, एक परिवार में संगठित हो जाओ!' और उसकी इस ललकार के उत्तर में सारे सबल हृदय मिलकर एक विशाल हृदय का रूप धारण कर रहे हैं, जो चांदी के बड़े से घंटे की तरह मज़बूत और सुरीला है..."

मां ने कसकर अपने होंट भींच लिये कि वे कांपें नहीं और अपनी आंखें बंद कर लीं कि आंसू बाहर न निकलने पायें।

पावेल ने अपना हाथ उठाया, मानो कुछ कहने जा रहा हो पर मां ने उसे अपने पास खींच लिया।

"उसे टोको नहीं..." मां ने चुपके से कहा।

उक्रइनी आकर दरवाज़े में खड़ा हो गया। "लोग अभी और बहुत मुसीबतें उठायेंगे, अभी और भी बहुत खून बहाया जायेगा; पर मेरे सीने और मेरे दिमाग़ में जो कुछ छुपा हुआ है उसकी क़ीमत चुकाने के लिए मेरी सारी मुसीबतें और मेरा सारा खून भी काफ़ी नहीं है... मैं एक जगमगाते हुए सितारे की तरह रोशनी से भरपूर हूं। मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकता हूं, कुछ भी सह सकता हूं, क्योंकि मेरे हृदय में एक असीम उल्लास है, जिसे कोई भी चीज़ और कोई भी आदमी मुझसे कभी नहीं छीन सकता! और यही उल्लास मेरी शक्ति है!"

वे आधी रात तक बैठे चाय पीते रहे और बहुत घुल-मिलकर जीवन और लोगों और भविष्य के बारे में बातें करते रहे।

जब कभी मां को कोई विचार साफ़ समझ में आ जाता, तो वह आह भरकर उसमें अपने अतीत की कोई कटु और अरुचिकर स्मृति को ढूंढ़ती ताकि वह इस विचार से सहारा देनेवाले पत्थर का काम ले सके।

उनकी बातचीत की गर्मी से मां के सारे भय दूर हो गये; उसे बिल्कुल वैसा ही आभास हुआ जैसा कि बहुत दिन पहले उस दिन हुआ था जब उसके पिता ने उससे सख़्ती से कहा था:

"मुंह बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है! अगर कोई ऐसा बेवक़ूफ़ फंस गया है जो तेरे साथ शादी करना चाहता है तो मौक़ा हाथ से न जाने दे। तेरी जैसी सारी मुर्ग़ियों का ब्याह होता है और उनके बच्चे होते हैं जिनसे उन्हें मुसीबत के अलावा और कुछ नहीं मिलता! तू भी औरों जैसी है, फ़रक़ क्या है?"

इसके बाद उसने अपने सामने अंधकारमय निर्जन विस्तार में जाता हुआ वह चक्करदार मार्ग देखा था जिस पर निराशा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। और अनिवार्य रूप से इसी पथ पर अग्रसर होने के विचार ने उसके हृदय में एक अंधी शान्ति की भावना जागृत कर दी थी। इस समय भी यही हाल था। परन्तु ज्यों ही उसे भावी नयी विपदाओं का आभास होता वह जलकर किसी अज्ञात व्यक्ति से कहती:

"ले, और ले!"

इससे उसके व्यथित हृदय को, जिसमें तने हुए तार की तरह गुंजन और कम्पन होता रहता था, शान्ति मिलती।

पर उसके मन में निरन्तर यह क्षीण आशा बनी रहती कि वे उसका सब कुछ छीनकर नहीं ले जायेंगे—सब कुछ नहीं ले जायेंगे! कुछ न कुछ तो छोड़ ही जायेंगे...

२४

दूसरे दिन बहुत सबेरे, जब पावेल और अन्द्रेई को फ़ैक्टरी गये अभी बहुत देर नहीं हुई थी, कोरसुनोवा ने खिड़की पर खटखटाया।

"किसी ने इसाई का खून कर दिया!" उसने चिल्लाकर कहा। "आओ चलो, देखें चलकर!"

मां चौंक पड़ी और उसके मस्तिष्क में हत्यारे का नाम बिजली की तरह कौंध गया।

"किसने किया होगा?" मां ने कंधे पर शाल डालते हुए पूछा।

"क्या तुम समझती हो कि जिसने मारा है वह वहां इसाई के पास अभी तक बैठा है? उसका काम तमाम करते ही वह भाग भी गया।"

सड़क पर जाते हुए मारिया ने कहा:

"अब यह मालूम करने के लिए कि वह किसने किया है नये सिरे से तलाशियां ली जायेंगी। यह अच्छा हुआ कि तुम्हारे यहां के सब लोग कल रात घर पर ही थे। मैं इसकी गवाही दूंगी। मैं आधी रात के बाद लौटी थी और मैंने तुम्हारी खिड़की में झांककर देखा था। तुम सब लोग मेज़ के पास बैठे थे..."

"हाय भगवान, मारिया! उन लोगों पर किसी को शक हो ही कैसे सकता है?" मां ने भयभीत होकर कहा।

"अच्छा, किसने मारा होगा उसे? तुम्हारे ही लोगों के साथ का कोई होगा," कोरसुनोवा ने पूरे विश्वास के साथ कहा। "सभी जानते हैं कि वह उनके खिलाफ़ जासूसी करता था..."

मां हाथ सीने पर रखकर खड़ी हो गयी; उसकी सांस नहीं समा रही थी।

"क्या बात है? तुम डरो नहीं, उसके साथ जो कुछ किया गया वह उसी के लायक़ था! जल्दी चलो, नहीं तो उसे वहां से हटा दिया जायेगा!.."

वेसोवश्चिकोव के बारे में मां का संदेह उसे इस तरह रोक रहा

था जैसे किसी ने उसे कसकर पकड़ रखा हो।

"उसने तो हद ही कर दी!" मां ने सोचा।

फ़ैक्टरी से थोड़ी ही दूर पर, जहां एक जला हुआ मकान था, लोगों की भीड़ जमा थी, जैसे भिड़ों का छत्ता हो; वे अधजली लकड़ी को पैरों तले रौंद रहे थे और राख को कुरेद रहे थे। उनमें बहुत-सी औरतें थीं और बच्चे तो और भी ज़्यादा थे। दूकानदार, भटियारख़ाने के नौकर, पुलिसवाले सभी वहां मौजूद थे और राजनीतिक पुलिसवाला पेतलिन भी हाज़िर था। वह झबरी-सी सफ़ेद दाढ़ीवाला लम्बे क़द का बूढ़ा आदमी था और उसका सीना तमग़ों से ढका हुआ था।

इसाई एक अधजले लकड़ी के कुन्दे के सहारे आधा बैठा हुआ और आधा ज़मीन पर लेटा हुआ था। उसका नंगा सिर उसके दाहिने कंधे पर झुका हुआ था। उसका दाहिना हाथ पतलून की जेब में था और बायें हाथ की उंगलियां भुरभुरी मिट्टी में धंसी हुई थीं।

मां ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। उसकी एक ज्योतिहीन आंख फैली हुई टांगों के बीच में पड़ी हुई टोपी को घूर रही थी; उसका मुंह आधा खुला था और नीचे को लटक आया था मानो उसे किसी बात पर आश्चर्य हो रहा हो और उसकी लाल दाढ़ी एक तरफ़ को मुड़ गयी थी। उसका दुबला-पतला शरीर और उसकी नुकीली खोपड़ी और उसका चुसा झांइयोंदार चेहरा हमेशा से ज़्यादा छोटा मालूम हो रहा था, मौत के कारण हर चीज़ सिकुड़ गयी थी। मां ने हाथ से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और एक लम्बी आह भरी। जब तक वह जीवित था तब तक वह उससे घृणा करती थी, पर अब उसे उस पर तरस आ रहा था।

"ख़ून कहीं नहीं है!" किसी ने दबे स्वर में कहा। "घूंसे से मारा होगा..."

"इसने अपनी मौत का सामान तो ख़ुद ही कर लिया था, नीच दग़ाबाज़ कहीं का..." किसी और ने जलकर कहा।

राजनीतिक पुलिसवाला फ़ौरन सतर्क होकर औरतों को धक्का देता हुआ आगे बढ़ा।

"कौन बकबक कर रहा है?" उसने डपटकर कहा।

लोगों ने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। कुछ लोग तो जल्दी-जल्दी वहां से खिसक गये; एक आदमी व्यंगपूर्वक हंसा।

मां घर चली गयी।

"उसके मरने का किसी को दुःख नहीं है!" उसने अपने मन में सोचा।

अपनी कल्पना में उसने निकोलाई का गठा हुआ शरीर देखा। वह उसे कठोर भावहीन आंखों से देख रहा था; उसका दाहिना हाथ इस तरह झूल रहा था, जैसे अभी-अभी उसमें चोट लग गयी हो...

ज्यों ही उसका बेटा और अन्द्रेई घर आये उसने उनसे इसके बारे में पूछा।

"क्या कोई गिरफ़्तार किया गया है?"

"सुना तो नहीं!" उक्रइनी ने उत्तर दिया।

मां समझ गयी कि वे दोनों बहुत हतोत्साह थे।

"क्या किसी ने निकोलाई का नाम लिया है?" मां ने चुपके से पूछा।

"नहीं," उसके बेटे ने उत्तर दिया; उसकी आंखों में कठोरता थी और उसका स्वर अर्थपूर्ण था। "और मैं तो नहीं समझता कि उस पर किसी को शक भी है। वह तो बाहर गया हुआ है। वह तो कल दोपहर ही नदी की तरफ़ चला गया था और अभी तक लौटकर नहीं आया है। मैंने उसके बारे में पूछा था..."

"भगवान की कृपा है!" मां ने संतोष की सांस लेकर कहा। "भगवान की कृपा है!"

उक्रइनी ने कनखियों से उसकी तरफ़ देखा और सिर झुका लिया।

"वह वहां ऐसे पड़ा है जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि माजरा क्या है," मां ने कुछ विचारमग्न होकर कहा। "और किसी को न उस पर तरस आता है और न कोई उसके साथ हमदर्दी ही करता है। इतना तुच्छ कि जैसे कोई महत्व ही नहीं है उसका। जैसे कोई चीज़ काटकर वहां डाल दी गयी हो..."

खाते-खाते पावेल ने सहसा अपना चम्मच नीचे रख दिया।

"मेरी तो समझ में नहीं आता!" उसने चिल्लाकर कहा।

"क्या?" उक्रइनी ने पूछा।

"हम अपने खाने के लिए जानवरों को मारते हैं, यह भी बहुत बुरी बात है। और अगर कोई जंगली जानवर ख़तरनाक होता है तो हमें उसे भी मारना पड़ता है। अगर कोई आदमी जानवर बन जाये और अपने साथियों को अपना शिकार बनाये तो उसे तो मैं ख़ुद भी मार दूंगा। मगर उस जैसे कमबख़्त की जान लेना – आख़िर

किसी ने उसे मारने के लिए हाथ कैसे उठाया? .."

उक्रइनी ने अपने कंधे झटक दिये।

"वह भी तो जंगली जानवर से कम ख़तरनाक नहीं था," वह बोला। "केवल एक बूंद ख़ून चूसने पर हम मच्छर को मसलकर रख देते हैं!"

"यह तो ठीक है! मगर मेरा मतलब यह नहीं है... मेरा मतलब है कि बड़ा ही घिनौना काम है!"

"और चारा ही क्या है?" अन्द्रेई ने फिर कंधा बिचकाकर उत्तर दिया।

"क्या तुम ऐसे आदमी की हत्या कर सकते हो?" पावेल ने कुछ देर बाद पूछा।

उक्रइनी थोड़ी देर तो अपनी बड़ी-बड़ी आंखें उस पर जमाये रहा, फिर उसने जल्दी से कनखियों से मां की तरफ़ देखा।

"अपने साथियों और अपने लक्ष्य के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं!" उसने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया। "मैं तो अपने बेटे तक की जान ले सकता हूं..."

"ओह अन्द्रेई!" मां ने मंद स्वर में कहा।

"कोई और चारा ही नहीं है, मां!" वह मुस्कराकर बोला, "ज़िंदगी ऐसी ही है! .."

"तुम ठीक कहते हो," पावेल ने कहा, "ज़िंदगी ऐसी ही है..."

सहसा अन्द्रेई बहुत उत्तेजित होकर उछलकर खड़ा हो गया, जैसे किसी आन्तरिक शक्ति ने उसे उत्प्रेरित किया हो।

"हम कर ही क्या सकते हैं?" उसने अपने हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर कहा। "हम दूसरों से नफ़रत करने पर मजबूर हैं, ताकि एक दिन ऐसा आये जब हम सबसे प्यार कर सकें। हमें हर उस आदमी को मिटा देना है जो प्रगति के रास्ते में रुकावट बनकर आता हो, जो धन के लोभ में, अपने लिए सम्मान और सुरक्षा ख़रीदने के लिए दूसरों को बेच देता हो। अगर कोई लालची, कमीना ईमानदार लोगों के रास्ते में रुकावट बनकर आता है, उनके साथ विश्वासघात करने के लिए मौक़े की ताक में रहता है, और मैं अगर उसे नष्ट न कर दूं तो मैं ख़ुद उस जैसा विश्वासघाती हूंगा। तुम कहते हो मुझे इसका कोई अधिकार नहीं है? लेकिन हमारे वे मालिक – उन्हें फ़ौज और जल्लाद रखने का अधिकार है, चकले और जेलख़ाने बनाने का अधिकार

है, वे लोगों को देश-निकाले में भेजने के लिए जगहें बना सकते हैं; अपने आराम और बचाव के लिए गंदे से गंदा हथकंडा इस्तेमाल कर सकते हैं? अगर कभी-कभी मजबूर होकर मुझे उनका डंडा अपने हाथ में लेना पड़ता है तो क्या यह मेरा क़सूर है? मैं तो बिना किसी संकोच के उसे इस्तेमाल करूंगा। अगर वे हमें हज़ारों की संख्या में मार सकते हैं तो मुझे भी अधिकार है कि मैं अपना हाथ उठाकर किसी एक का सिर तोड़ दूं, वह सिर जो दूसरों के मुक़ाबले में मेरे ज़्यादा नज़दीक आ गया हो और जो दूसरों के मुक़ाबले में मेरे ध्येय के लिए ज़्यादा खतरनाक हो। ज़िंदगी है ही ऐसी। मगर मैं ऐसी ज़िंदगी के खिलाफ़ हूं; मैं नहीं चाहता कि वह ऐसी ही बनी रहे। मैं जानता हूं कि उनका खून बहाने से कभी कुछ होनेवाला नहीं है! .. सत्य तो तब पैदा होता है जब हमारा खून धरती पर बरसात के पानी की तरह फैल जाता है। उनका खून तो सूख जाता है। मैं इस बात को जानता हूं। लेकिन मैं इस पाप का बोझ अपने सिर पर लेने को तैयार हूं। अगर मैं समझूंगा कि किसी को जान से मार देना ज़रूरी है तो मैं वह भी करूंगा! याद रखना मैं सिर्फ़ अपनी बात कर रहा हूं। मेरा पाप मेरे साथ मर जायेगा। भविष्य पर उसका कोई कलंक बाक़ी नहीं रहेगा। इससे मेरे अलावा और किसी पर कलंक नहीं आयेगा, किसी पर भी नहीं!"

वह कमरे में इधर-उधर टहलता रहा और इस तरह हाथ हिलाता रहा मानो किसी चीज़ को काट रहा हो, अपने आपको उससे छुड़ा रहा हो। मां दुःखी और आतंकित होकर उसे देखती रही; उसे ऐसा लगा कि जैसे अन्द्रेई के अन्दर कोई चीज़ टूट गयी हो और उसे पीड़ा हो रही हो। हत्या के भयानक विचार अब उसके मस्तिष्क से दूर हो गये थे: "यदि वेसोवश्चिकोव ने यह हत्या नहीं की थी तो यह पावेल के किसी दूसरे साथी का काम नहीं हो सकता था," मां ने सोचा। पावेल सिर झुकाये उक्रइनी का यह अविराम भाषण सुन रहा था:

"कभी-कभी आगे बढ़ते रहने के लिए अपनी मर्ज़ी के खिलाफ़ भी काम करना पड़ता है। हमें सब कुछ क़ुरबान करने को तैयार होना चाहिये। अपना दिल तक! ध्येय के लिए जान देना तो आसान है। इससे भी ज़्यादा कुछ देने की ज़रूरत है—ऐसी चीज़ जो अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारी हो। और इस चीज़ को देकर हम उस सत्य को

और मज़बूत बनाते हैं जिसके लिए हम लड़ रहे हैं, वह सत्य जो हमें दुनिया में सबसे अधिक प्रिय है! .."

कमरे के बीच में पहुंचकर वह रुक गया – उसका रंग पीला पड़ गया था, उसकी आंखें आधी मुंदी हुई थीं और वह एक हाथ ऊपर उठाये हुए था जैसे कोई दृढ़ प्रतिज्ञा कर रहा हो :

"मैं जानता हूं कि वह समय आयेगा जब लोग एक-दूसरे को देख-देखकर खुश होंगे, जब हर आदमी दूसरे सभी लोगों के लिए एक चमकदार सितारे की तरह होगा! पृथ्वी पर स्वतंत्र मनुष्यों का वास होगा, जो अपनी स्वतंत्रता में महान होंगे। सब के हृदय निष्कपट होंगे और किसी के भी हृदय में लेशमात्र ईर्ष्या या कुत्सा नहीं होगी। जीवन मानव की महान सेवा का रूप धारण कर लेगा और मानव श्रेष्ठ और गौरवान्वित हो जायेगा, क्योंकि जो लोग स्वतंत्र होते हैं उनके लिए हर चीज़ लभ्य होती है! तब लोग सुन्दरता के लिए सच्चाई और स्वतंत्रता का जीवन बितायेंगे और सबसे अच्छा उन्हीं लोगों को समझा जायेगा जिनका हृदय पूरे विश्व को अपने अन्दर समा लेने और उससे प्यार करने की सबसे अधिक क्षमता रखता होगा, जो सबसे अधिक उन्मुक्त होंगे क्योंकि उन्हीं में श्रेष्ठतम सौन्दर्य होता है! वे महान लोग होंगे, नये जीवन के लोग होंगे..."

वह एक क्षण के लिए रुका और फिर अपनी शक्ति बटोरकर ऐसे स्वर में बोला जो उसकी आत्मा की गहराई से आता हुआ प्रतीत होता था :

"और ऐसे जीवन के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं..."

उसके चेहरे पर भावावेश की एक लहर दौड़ गयी और आंसू की बड़ी-बड़ी बूंदें उसके गालों पर ढलकने लगीं।

पावेल का चेहरा फ़क़ हो गया और वह सिर उठाकर फटी-फटी आंखों से अन्द्रेई को देखता रहा। मां चौंक पड़ी जैसे उसने कोई भयानक स्वप्न देखा हो और कोई दुराशंका उसके हृदय में बढ़ती जा रही हो।

"बात क्या है, अन्द्रेई?" पावेल ने मंद स्वर में पूछा।

उक्रइनी ने सिर हिलाया और तनकर सीधा खड़ा हो गया और मां की आंखों में आंखें डालकर देखने लगा।

"मैंने अपनी आंखों से देखा था... मैं सब कुछ जानता हूं..."

मां ने लपककर उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। उसने अपना दाहिना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न भी किया पर मां ने नहीं छोड़ा।

"मेरे बच्चे, धीमे बोलो! मेरे लाल..." उसने फुसफुसाकर कहा।

"ठहरो!" उक्रइनी ने भर्रायी हुई आवाज़ में कहा। "मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या हुआ था..."

"नहीं, रहने दो!" मां ने आंसू-भरी आंखों से उसे घूरते हुए कहा। "नहीं, अन्द्रेई, रहने दो..."

पावेल धीरे-धीरे उसके पास आ गया। उसका रंग पीला पड़ गया था और उसकी आंखें भी सजल थीं।

"मां को डर है कि तुमने किया होगा..." उसने धीरे से हंसकर कहा।

"मुझे यह डर तो नहीं है! मैं इस बात पर यक़ीन नहीं करती! अगर मैं अपनी आंखों से भी देखती तब भी यक़ीन न करती!"

"ठहरो!" उक्रइनी ने गरदन झटककर अपने हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करते हुए कहा। "मैंने तो नहीं किया, मगर मैं रोक ज़रूर सकता था..."

"चुप रहो, अन्द्रेई!" पावेल ने कहा।

पावेल ने अपने दोस्त का हाथ अपने हाथ में ले लिया और दूसरा हाथ उसके कंधे पर रख दिया, मानो उसके लम्बे-चौड़े शरीर को कांपने से रोकने का प्रयत्न कर रहा हो।

"पावेल, तुम तो जानते हो कि मैं नहीं चाहता था कि ऐसा हो," अन्द्रेई ने व्यथित स्वर में कहा। "हुआ यह कि जब तुम मुझे नुक्कड़ पर द्रागुनोव के साथ छोड़कर चले गये, तो उसके थोड़ी देर बाद इसाई उधर आया और तिरस्कार से हम लोगों को खड़ा देखता रहा... द्रागुनोव ने कहा, 'देखते हो इसे? रात-भर यह मेरा पीछा करता रहा। मैं तो इसे मारे बिना नहीं छोड़ूंगा।' यह कहकर वह चला गया, मैं समझा घर जा रहा है... और इसाई मेरे पास आ गया..."

उक्रइनी ने एक गहरी सांस ली।

"उस समय उसने मेरा जैसा अपमान किया वैसा पहले किसी ने भी नहीं किया था, कुत्ता कहीं का!"

मां ने चुपचाप उसे ले जाकर मेज़ के पास बिठा दिया और स्वयं उसके पास कंधे से कंधा सटाकर बैठ गयी। पावेल खड़ा रहा और खिन्न होकर अपनी दाढ़ी के बाल नोचता रहा।

"उसने मुझे बताया कि पुलिसवालों को हम सब के नाम मालूम हैं, हम सभी के नाम राजनीतिक पुलिस की 'सूची में हैं और हम लोग मई दिवस से फ़ौरन पहले गिरफ़्तार कर लिये जायेंगे। मैंने कोई जवाब नहीं दिया, हंसकर उसकी बात टाल दी मगर अन्दर ही अन्दर मैं खौल रहा था। फिर उसने मुझसे कहा कि 'तुम बहुत होशियार आदमी हो, बड़े दुःख की बात है कि इस ग़लत राह पर लग गये हो; अच्छा होता कि तुम ..."

अन्द्रेई सहसा रुक गया और बायें हाथ से अपना मुंह पोंछने लगा। उसकी आंखों में एक शुष्क-सी चमक थी।

"मैं समझ गया!" पावेल ने कहा।

"उसने मुझसे कहा कि क़ानून की खिदमत करना ज़्यादा अच्छा होगा। क्यों क्या ख़्याल है?" उक्रइनी ने अपना मुक्का हिलाते हुए दांत पीसकर कहा। "क़ानून ... भगवान उसे ग़ारत करे! इससे तो अच्छा यह था कि वह मेरे मुंह पर तमाचा मार देता ... तब मैं भी इतना बुरा न मानता और उसके लिए भी अच्छा रहता। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि वह मेरी आत्मा पर थूके और फिर उसका वह बदबूदार थूक!"

अन्द्रेई ने झटका देकर अपना हाथ पावेल के हाथ से छुड़ा लिया और घृणा से भरे हुए मंद स्वर में कहता गया:

"मैंने उसके मुंह पर एक तमाचा रसीद किया और वहां से चल दिया। मैंने पीछे से द्रागुनोव को मंद स्वर में कहते सुना, 'अब फंसे हो मेरे पंजे में!' वह वहीं नुक्कड़ पर ही कहीं छुपा खड़ा होगा ..."

उक्रइनी कुछ देर के लिए रुका, फिर बोला:

"मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मैंने घूंसे की आवाज़ सुनी ... लेकिन मैं अपने रास्ते पर धीरे-धीरे बढ़ता चला गया, मानो मेंढक पर पैर पड़ गया हो। फ़ैक्टरी में जब मैं काम कर रहा था, लोग चिल्लाते हुए आये, 'किसी ने इसाई को मार डाला!' मुझे यक़ीन नहीं आया। लेकिन मेरी बांह में दर्द होने लगा, इतनी बुरी तरह कि मैं काम भी नहीं कर सकता था। असल में दर्द नहीं हो रहा था, ऐसा मालूम होता था कि जैसे हाथ में जान ही न रह गयी हो ..."

उसने चुपके से अपने हाथ पर नज़र डाली।

"मैं समझता हूं कि ज़िंदगी-भर अब मैं वह कलंक न मिटा सकूंगा ..."

"तुम्हारा दिल साफ़ है तो और बातों से कुछ नहीं होता!" मां ने कोमल स्वर में कहा।

"मैं इसका दोष अपने को नहीं देता – बिल्कुल नहीं!" उक्रइनी ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया। "बस मुझे कुछ बुरा-बुरा-सा लगता है। मुझे इस झगड़े में पड़ना ही नहीं चाहिये था।"

"तुम्हारी बात ही मेरी समझ में नहीं आती," पावेल ने कंधा बिचकाकर कहा। "तुमने तो उसे मारा नहीं, और अगर मारा भी होता तो..."

"देखो, भाई – अगर तुम्हें मालूम हो कि कोई आदमी मारा जा रहा है और तुम उसे न रोको..."

"मेरी समझ में नहीं आती तुम्हारी बात..." पावेल अपनी बात पर अड़ा रहा। "मेरा मतलब है कि कुछ-कुछ समझ में तो आती है, मगर मेरे दिल पर इसका कोई असर नहीं होता।"

सीटी बजी। उक्रइनी कुछ देर उसका आदेशपूर्ण आवाहन सुनता रहा, फिर सिर पीछे की तरफ़ झटककर बोला:

"मैं तो अब काम पर नहीं जाता..."

"मैं भी नहीं जाता," पावेल ने कहा।

"मैं तो नहाने जा रहा हूं," अन्द्रेई ने धीरे से हंसकर कहा और अपने कपड़े संभालने लगा। जिस समय वह घर से निकला वह बहुत उदास था।

मां सहानुभूति-भरी दृष्टि से उसे जाते हुए देखती रही।

"पावेल, तुम जो चाहो कहो!" उसने कहा। "मैं तो यह जानती हूं कि किसी की हत्या करना पाप है मगर मैं किसी को दोष नहीं देती। मुझे इसाई का दुःख है, वह तो किसी गिनती में नहीं था। जब मैंने उसे आज देखा तो मुझे याद आया कि उसने तुम्हें फांसी पर लटकवा देने की धमकी दी थी, पर इस कारण न तो मुझे उससे घृणा ही हुई और न इस बात की खुशी ही हुई कि वह मर गया। मुझे बस उस पर तरस आया। लेकिन अब – अब तो मुझे उस पर तरस भी नहीं आता।"

वह चुप हो गयी और अपने विचारों में खो गयी; कुछ देर बाद उसने विस्मय से मुस्कराकर कहा:

"बेटे पावेल, सुना भी मैंने क्या कहा?.."

स्पष्ट ही उसने मां की बात नहीं सुनी थी, क्योंकि उसने आंखें

झुकाये कमरे में टहलते हुए उदास भाव से उत्तर दिया :

"यह है हमारी ज़िंदगी! देखती हो लोगों को किस तरह एक-दूसरे का दुश्मन बना दिया गया है? मर्ज़ी न होते हुए भी लोग किसी को मार देते हैं। और जिसे मारते हैं वह कौन होता है? कोई बेचारा मजबूर, जिसे ख़ुद भी हमसे ज़्यादा अधिकार नहीं होते। वह तो हमसे भी ज़्यादा अभागा होता है, क्योंकि वह बेवकूफ़ भी होता है। पुलिस, राजनीतिक पुलिस और जासूस सब हमारे दुश्मन हैं। लेकिन वे सब हमारे ही जैसे लोग हैं, जिनका ख़ून हमारी ही तरह चूस लिया जाता है और जिन्हें हमारी ही तरह तिरस्कार से देखा जाता है। हम सब एक जैसे हैं! लेकिन हमारे मालिकों ने लोगों को एक-दूसरे का दुश्मन बना दिया है, उन्हें भय और दुनिया-भर की ख़ुराफ़ात से अंधा बना दिया है, उनके हाथ-पांव बांध दिये हैं, निचोड़-निचोड़कर उनका ख़ून चूस लिया है, और वे उन्हें एक-दूसरे को मारने और कुचल देने पर मजबूर करते हैं। उन्होंने लोगों को बंदूक़, डंडा और पत्थर बना दिया है, और कहते हैं, 'यही राज्यसत्ता है! ..' "

वह मां के पास चला गया।

"मां, यह अपराध है! लाखों लोगों को इस तरह बेरहमी से मार डालना, मनुष्य की आत्मा को कुचल देना... समझ में आता है तुम्हारी? ये लोग आत्मा के हत्यारे हैं। तुम उनमें और हममें अन्तर देखती हो? जब हम किसी को मारते हैं तो वह घृणा, लज्जा और कष्ट की बात होती है—सबसे बढ़कर घृणा की! लेकिन वे पलक झपकाये बिना, बेरहमी के साथ, किसी संकोच के बिना हज़ारों लोगों को जान से मार देते हैं और बिल्कुल संतुष्ट रहते हैं! लोगों को इस तरह कुचलकर रख देने का उनके पास बस एक बहाना यह है कि वे अपने सोने-चांदी, अपनी हुंडियों और उन तमाम मनहूस चीज़ों की रक्षा करना चाहते हैं जिनकी सहायता से वे हमें ग़ुलाम बनाते हैं। ज़रा सोचो—जब वे लोगों को जान से मारते हैं और उनकी आत्माओं को कुचलकर रख देते हैं तो वे अपनी जान बचाने के लिए नहीं, बल्कि अपनी जायदाद बचाने के लिए ऐसा करते हैं! उन चीज़ों को बचाने के लिए जो मनुष्य के अन्दर नहीं बल्कि मनुष्य से बाहर होती हैं..."

मां के दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर वह उन पर झुका और बोला :

"अगर तुम यह अनुभव कर पातीं कि यह सब कुछ कितना नीच और अपमानजनक है, तो तुम उस सत्य को समझ जातीं जिसके लिए हम लड़ रहे हैं, तुम समझ जातीं कि हमारा सत्य कितना अच्छा और महान है!.."

मां भाव-विह्वल होकर उठी और उसकी इच्छा हुई कि उसके हृदय में जो आग सुलग रही है वह उसके बेटे के हृदय की ज्वाला का रूप धारण कर ले।

"ठहरो, पावेल!" उसने बड़ी कठिनाई से अस्फुट स्वर में कहा। "थोड़ा ठहरो! मैं भी अनुभव करने लगी हूं!.."

२५

कोई ज़ोर-ज़ोर से क़दम रखता हुआ बरसाती में आया और मां-बेटे दोनों एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे।

दरवाज़ा धीरे से खुला और रीबिन अन्दर आया।

"लो मैं आ गया!" उसने सिर उठाकर मुस्कराते हुए कहा। "नारद मुनि की तरह, अपनी धुन का पक्का, कभी यहां जाना, कभी वहां जाना, हर बात में अपनी टांग अड़ाना!.."

वह रस्सी के बने हुए सैन्डिल, फ़र की झबरी टोपी और भेड़ की खाल का कोट पहने था जिस पर जगह-जगह तारकोल लिपा हुआ था। उसकी पेटी में एक जोड़ा काले दस्ताने खुंसे हुए थे।

"तुम हो कैसे? तो पावेल, उन लोगों ने तुम्हें छोड़ दिया? चलो अच्छा है। पेलागेया निलोवना, तुम्हारी कैसी गुज़र रही है?" वह खुलकर मुस्करा दिया और उसके सफ़ेद दांत झलक उठे। उसका स्वर अधिक कोमल और उसकी दाढ़ी और घनी हो गयी थी।

मां उसे देखकर बहुत खुश हुई और उसने आगे बढ़कर उसका बड़ा-सा काला हाथ कसकर पकड़ लिया।

"सच कहती हूं!" उसने तारकोल की तेज़ प्रीतिकर गन्ध में एक गहरी सांस लेते हुए कहा: "बहुत खुश हूं मैं तुम्हें देखकर!"

"तुम हो असली किसान!" पावेल ने रीबिन को घूरते हुए मुस्कराकर कहा।

आगन्तुक ने धीरे-धीरे अपने कपड़े उतारे।

"हां, मैं फिर किसान बन गया। तुम लोग दिन-ब-दिन शरीफ़

बनते जा रहे हो और मैं दूसरी तरफ़ बढ़ता जा रहा हूं!"

वह कमरे में इधर-उधर टहल-टहलकर हर चीज़ को ग़ौर से देख रहा था और अपनी क़मीज़ को लगातार नीचे खींच रहा था।

"किताबों के अलावा और कोई चीज़ तो यहां नयी है नहीं। हुंः! ख़ैर, यह बताओ क्या ख़बरें हैं यहां की?"

वह दोनों हाथों से अपने घुटने पकड़कर टांगें फैलाकर बैठ गया। वह अपनी काली-काली आंखों से पावेल के चेहरे को इस तरह देख रहा था जैसे कुछ ढूंढ़ रहा हो और उत्तर की प्रतीक्षा में बैठा मुस्करा रहा था।

"काम आगे बढ़ रहा है!" पावेल ने कहा।

"हम तो ज़मीन जोतते हैं फिर बीज बोते हैं और फ़सल तैयार होने का इंतज़ार करते हैं; तब हम शराब खींचते हैं और बाक़ी साल सोते हैं—क्यों यही चक्कर है न, दोस्तो?" रीबिन न हंसकर कहा।

"तुम्हारा काम कैसा चल रहा है, मिख़ाइलो इवानोविच?" पावेल ने उसके सामने बैठते हुए कहा।

"ठीक ही चल रहा है। येगिलदेयेवो में रहता हूं—नाम सुना है कभी? येगिलदेयेवो! अच्छा-ख़ासा क़स्बा है। साल में दो मेले लगते हैं। दो हज़ार से ऊपर आबादी है। लोग ग़ुस्सैल हैं! उनके पास अपनी ज़मीन तो है नहीं—लगान पर लेते हैं। और ज़मीन भी कुछ ख़ास अच्छी नहीं है। मैं भी वहां के एक ख़ून चूसनेवाले के यहां काम करता हूं। वहां ये ख़ून चूसनेवाले ऐसे ही हैं जैसे सड़ती हुई लाश में कीड़े बिलबिलाते हैं। कोयले को जलाकर तारकोल निकालते हैं। आमदनी तो यहां की चौथाई होती है, मगर काम दुगना करना पड़ता है। हुंः! हम सात आदमी काम करते हैं उसके यहां, उस जल्लाद के यहां। सब भले लोग हैं, नौजवान हैं, मेरे अलावा सब वहीं के रहनेवाले हैं और सब पढ़ना-लिखना जानते हैं। उनमें येफ़ीम नाम का एक लड़का है, जो इतने गरम मिज़ाज का है कि समझ में नहीं आता कि उसे कैसे रास्ते पर लाऊं!"

"तो तुम क्या उनसे बहस करते हो?" पावेल ने उत्सुकता से पूछा।

"यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं अपनी ज़ुबान बंद नहीं रख सकता। मैं तुम्हारे सब पर्चे अपने साथ ले गया था—कुल चौंतीस थे। लेकिन मैं ज़्यादातर बाइबिल से ही काम लेता हूं। बाइबिल में

मसाला मिलता है। मोटी किताब है, जो कुछ उसमें लिखा है उसे कोई हिला नहीं सकता। पादरियों की सबसे ऊंची परिषद ने ही इस किताब को छापा है, इसलिए इस किताब पर आदमी एतबार कर सकता है!"

वह हंस दिया और पावेल की तरफ़ देखकर उसने आंख मारी।

"लेकिन इतने से काम नहीं चलता। मैं तुमसे कुछ और किताबें लेने आया हूं। हम दो आदमी आये हैं; येफ़ीम को भी साथ लाया हूं। हम लोगों को यहां तारकोल लेकर भेजा गया था; मैंने सोचा ज़रा-सा रास्ता बदलकर तुमसे मिलने चलूं। येफ़ीम के आने से पहले मुझे किताबें दे दो। उसे ज़्यादा नहीं मालूम होना चाहिये..."

मां रीबिन को बड़े ध्यान से देख रही थी; उसने अनुभव किया कि रीबिन के केवल कपड़े ही पहले से भिन्न नहीं थे; उसके बरताव में अब इतना रोबदाब नहीं रह गया था, उसकी नज़रों में ज़्यादा चालाकी आ गयी थी और उसकी आंखों में अब वह पहले जैसी सादगी नहीं रह गयी थी।

"मां," पावेल ने कहा, "तुम जाकर किताबें ले आओगी? वहां जाना, वे लोग जानते हैं कौन-सी किताबें देनी हैं। उनसे कह देना देहात भेजनी हैं।"

"अच्छी बात है," मां बोली। "पानी गरम हो जाये, बस मैं जाती हूं।"

"पेलागेया निलोवना, तुम भी इस चक्कर में फंस गयीं?" रीबिन ने हंसकर कहा। "हुंः, वहां बहुत-से लोग किताबें पढ़ना चाहते हैं। यह सब काम वहां के एक मास्टर का है; है तो वह पादरी का बेटा मगर लोग कहते हैं कि भला आदमी है। एक औरत भी है पढ़ानेवाली, वहां से चार-पांच मील पर रहती है। दोनों में से कोई भी ग़ैर-क़ानूनी किताबें नहीं इस्तेमाल करता है। नौकरी छूट जाने से डरते हैं। मगर मुझे तो वही ग़ैर-क़ानूनी किताबें चाहिये – जिनमें ख़ूब मिर्च-मसाला होता है... मेरी दी हुई किताबें अगर दारोग़ा साहब या पादरी के हाथ लगीं तो उनका शक उन दो मास्टरों को छोड़कर और किसी पर जा ही नहीं सकता। इस बीच में मैं छिप जाऊंगा और फिर मौक़े की ताक में रहूंगा।"

वह खीसें निकालकर हंसने लगा, अपनी इस चालाकी पर उसे बहुत ख़ुशी हो रही थी।

"अहा!" मां ने सोचा। "लगते तो हो शेर, मगर हो लोमड़ी..."

"अगर उन्हें उन मास्टरों पर शक हुआ कि वे ग़ैर-क़ानूनी किताबें बांटते हैं, तो क्या वे उन्हें जेल भेज देंगे?" पावेल ने पूछा।

"ज़रूर भेज देंगे," रीबिन ने उत्तर दिया। "मगर इससे क्या होता है?"

"मगर क़सूर तो तुम्हारा होगा, उनका नहीं। जेल जाना चाहिये तुम्हें..."

"तुम भी अजीब आदमी हो!" रीबिन ने हंसते हुए अपने घुटने पर ज़ोर से हाथ मारकर कहा। "मुझ पर किसी को शक होगा ही नहीं। किसानों का इन सब चीज़ों से क्या मतलब? किताबों का काम तो पढ़े-लिखे शरीफ़ लोगों का है, और वही उनके लिए जवाबदेह हैं..."

मां को ऐसा लगा कि पावेल की समझ में रीबिन की बात आ नहीं रही है। मां ने देखा कि उसके बेटे की आंखें सिकुड़ गयी हैं जिसका मतलब था कि उसे गुस्सा आ रहा है।

"मिख़ाइलो इवानोविच काम तो ख़ुद करना चाहता है मगर उसकी ज़िम्मेदारी दूसरों पर डालना चाहता है..." मां ने सतर्कता और दबी ज़बान से कहा।

"यही बात है!" रीबिन ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। "फ़िलहाल।"

"अच्छा, मां," पावेल ने रुखाई से कहा, "मान लो हमारा कोई आदमी, जैसे अन्द्रेई को ही ले लो, कोई काम करके मुझे आगे कर दे और ख़ुद पीछे छिप जाये और मुझे जेल भेज दिया जाये, तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

मां एकदम चौंक पड़ी और अपने बेटे को आश्चर्य से देखने लगी।

"कोई आदमी अपने साथी को ऐसा धोखा कैसे दे सकता है?" उसने अपना सिर हिलाते हुए पूछा।

"हूं-ऊं!" रीबिन ने अपनी आवाज़ खींचते हुए कहा। "पावेल, मैं समझ गया तुम क्या कहना चाहते हो!" यह कहकर उसने मां की तरफ़ व्यंग से देखते हुए आंख मारी।

"मां, यह बड़ा टेढ़ा मामला है," उसने कहा और फिर पावेल की तरफ़ मुड़कर वह उपदेशकों के स्वर में बोला:

"भाई, तुम बिल्कुल बच्चों की तरह सोचते हो! ख़ुफ़िया काम करने चले हो तो फिर ईमानदार बने रहने की फ़िकर नहीं कर सकते।

तुम ही सोचो : सबसे पहले तो वह आदमी जेल में बंद किया जायेगा, जिसके पास किताब पकड़ी जायेगी। मास्टरों की बारी तो बाद में आयेगी। यह तो है पहली बात ; दूसरी बात यह कि माना वह मास्टर और मास्टरनी सिर्फ़ क़ानूनी किताबें ही इस्तेमाल करते हैं मगर बात तो वह भी वही सिखाते हैं। बस लफ़्ज़ों का हेर-फेर है – उनके लफ़्ज़ों में कम सच्चाई है। सब बातों का निचोड़ यह है कि वे भी वही बात कहते हैं जो मैं कहता हूं, लेकिन वे गली से होकर जाते हैं और मैं बड़ी सड़क पर सीधा चलता हूं। मालिकों की नज़र में क़ुसूर हम दोनों ही का है, है कि नहीं? तीसरी बात यह कि, भाई, मुझे उनकी रत्ती भर भी परवाह नहीं है! पैदल फ़ौज और घुड़सवारों में कभी दोस्ती नहीं हो सकती। मुमकिन है कि मैं किसी किसान के साथ ऐसा न करूं। लेकिन उनके साथ – उनमें एक पादरी का बेटा है और दूसरी एक अमीर ज़मींदार की बेटी – आख़िर वे लोगों को क्यों भड़काते हैं? यह मुझ जैसे किसान का काम नहीं है कि उनके मन का हाल मालूम करूं। मैं यह जानता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं मगर मुझे इसका कुछ भी पता नहीं है कि वे क्या चाहते हैं। हज़ारों साल तक ये पैसेवाले लोग वही करते रहे, जिसकी उनसे उम्मीद थी : हम किसानों की खाल खींचते रहे। अब यकायक न जाने क्यों वे सोकर जागे हैं और अपने ही हाथों से किसानों की आंखों पर बंधी हुई पट्टी खोल रहे हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो परियों के क़िस्सों पर यक़ीन करते हैं और यह भी बिल्कुल परियों का क़िस्सा है। मेरे और इन पैसेवाले लोगों के बीच ज़मीन-आसमान का अन्तर है। जाड़े में कभी-कभी तुमने देखा होगा कि घोड़े पर सवार होकर खेतों को पार करते हुए यकायक सड़क के पार बहुत दूर आगे कोई चीज़ चमक जाती है। वह क्या चीज़ होती है? भेड़िया या लोमड़ी या कुत्ता? बता नहीं सकते। हमारे उसके बीच फ़ासला बहुत होता है।"

मां ने कनखियों से अपने बेटे को देखा। वह बहुत उदास था।

रीबिन बड़े निश्चिंत भाव से पावेल को देख रहा था और अपनी दाढ़ी में उंगलियां फेर रहा था ; उसकी आंखों में एक अशुभसूचक चमक थी।

"भलमनसाहत का ख़्याल रखने का वक़्त ही कहां है," वह कहता रहा। "ज़िंदगी बहुत कठिन है। कुत्तों का झुंड और भेड़ों का रेवड़ एक ही चीज़ नहीं होते – हर कुत्ता अलग ही भूंकता है..."

"ऐसे भी पैसेवाले लोग होते हैं जो आम लोगों की ख़ातिर अपनी

जान तक दे देते हैं," मां ने कहा; वह कुछ चिर-परिचित लोगों के बारे में सोच रही थी। "सारी उमर जेलों में काट देते हैं..."

"उनकी बात ही निराली होती है!" रीबिन ने उत्तर दिया। "किसान अमीर होकर पैसेवाले बन जाते हैं और पैसेवाले ग़रीब होकर गिरते-गिरते किसान बन जाते हैं। मजबूरी किसी को भी संत बना सकती है। पावेल, तुम्हें याद है तुमने यह बात मुझे किस तरह समझायी थी? आदमी क्या सोचता है, इसका फ़ैसला इस बात से होता है कि वह कैसी ज़िंदगी बसर करता है। असल बात तो यही है। अगर मज़दूर कहता है 'हां', तो उसका मालिक कहता है 'नहीं', अगर मज़दूर कहता है 'नहीं', तो उसका मालिक कहता है 'हां'! यह उनका स्वभाव है। बस किसान और ज़मींदार में भी यही फ़रक़ है। अगर किसान को भर-पेट खाने को मिलने लगे तो उसे देखकर ज़मींदार का जी जलता है। ख़ैर, हरामज़ादे तो हर वर्ग के लोगों में होते हैं, मैं हर किसान का पक्ष नहीं लेता..."

वह उठकर खड़ा हो गया, देखने में मज़बूत और भयानक, उसकी दाढ़ी इस तरह हिल रही थी मानो उसने अपने दांत कसकर भींच रखे हों।

"पांच साल तक मैं कारख़ाने-कारख़ाने भटकता रहा – बिल्कुल भूल ही गया कि गांव क्या होता है," वह नीची आवाज़ में कहता गया। "आख़िरकार जब मैं देहात वापस गया तो मुझे मालूम हुआ कि अब मैं उस तरह नहीं रह सकता! समझे? रह ही नहीं सकता! यहां रहते हुए तुम्हें मालूम ही नहीं होता कि क्या अन्याय हो रहा है। वहां भूख लोगों के साथ उनकी परछाईं की तरह लगी रहती है और खाना मिलने की कोई आशा नहीं होती, बिल्कुल नहीं! भूख लोगों की आत्मा को खा जाती है, उनके चेहरे पर से इंसानियत का नाम-निशान तक मिटा देती है। वे ज़िंदा नहीं रहते; वे तो बस उमर-भर मुफ़लिस रहते हैं: सरकारी हाकिम उन्हें गिद्धों की तरह ताकते रहते हैं कि कहीं वे कुछ ज़्यादा न पा जायें। अगर कभी वे किसी किसान के पास कोई चीज़ देखते हैं तो उसके मुंह पर एक थप्पड़ रसीद करके उससे छीन लेते हैं..."

रीबिन ने इधर-उधर नज़र दौड़ायी, फिर मेज़ के सहारे पावेल की तरफ़ झुककर बोला:

"फिर उस ज़िंदगी में पहुंचकर मेरा जी न जाने क्यों उचाट

होने लगा। मैंने सोचा कि मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा। तब मैंने अपने मन में कहा: 'तुम्हें जी कड़ा करके सब कुछ बर्दाश्त करना होगा! तुम उन्हें पेट भर रोटी न दिला सको मगर कुछ न कुछ खिचड़ी तो पका ही सकते हो!' और यह सोचकर मैं वहीं टिक गया। मेरे दिल में जो शिकायतें थीं उनसे मेरा दिल फटा जा रहा था। शिकायतें तो अभी तक मेरे दिल में बनी हुई हैं, जैसे कोई खंजर चुभा हुआ हो।"

धीरे-धीरे वह पावेल के पास गया और उसके कंधे पर हाथ रखकर खड़ा हो गया। उसके माथे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं और उसका हाथ कांप रहा था।

"मुझे तुम्हारी मदद चाहिये! मुझे किताबें दो, ऐसी किताबें जिन्हें पढ़कर आदमी फिर चैन से न बैठ सके। मैं चाहता हूं उनकी खोपड़ी के अन्दर एक साही बिठा दी जाये जो अपने तेज़ कांटों से उनके दिमाग़ को हमेशा कुरेदती रहे! जो शहरवाले लोग तुम्हारे लिए किताबें लिखते हैं उनसे कह दो कि गांव के लिए भी किताबें लिखा करें। इस तरह लिखें कि एक-एक लफ़्ज़ में अंगारे भर दें ताकि लोग किसी उद्देश्य के लिये मरना सीखें!"

वह हाथ उठाकर एक-एक शब्द को अलग-अलग और साफ़-साफ़ बोल रहा था:

"मौत से मौत ही निपट सकती है! दूसरे शब्दों में लोगों को ज़िंदा करने के लिए हमें मरना होगा। हममें से हज़ारों लोगों को इसलिए अपनी जान देनी पड़ेगी कि पृथ्वी पर रहनेवाले करोड़ों लोग ज़िंदा रह सकें! असली बात यही है। दूसरों को ज़िंदा करने के लिए मरना आसान है। बस अगर लोग उठ खड़े हों!"

मां समोवार लेकर अन्दर आयी और रीबिन को उसने कनखियों से देखा। उसे ऐसा लग रहा था कि वह उसके शब्दों के बोझ और शक्ति से दबी जा रही है। उसमें कोई ऐसी बात थी जो उसे अपने पति की याद दिलाती थी। उसका पति भी इसी तरह दांत निकालकर और आस्तीनें चढ़ाकर बातें करता था। और वह भी गुस्से में इसी तरह बेचैन हो उठता था। वह बेचैन तो ज़रूर होता था पर इस बेचैनी को शब्दों में व्यक्त नहीं करता था, जबकि यह आदमी अपनी भावनाओं को व्यक्त भी करता था। इसी लिए वह कम भयानक लगता था।

"हमें यह ज़रूर करना चाहिये!" पावेल ने सिर हिलाते हुए कहा। "तुम हमें ख़बरें भेजो, हम तुम्हारे लिए अख़बार छापेंगे..."

मां ने मुस्कराकर अपने बेटे को देखा और सिर हिलाने लगी। फिर एक शब्द भी कहे बिना वह कपड़े बदलकर घर के बाहर चली गयी।

"अच्छी बात है! हम तुम्हें मसाला भेजेंगे। इतनी आसान ज़बान में लिखना कि बुद्धू भी समझ जायें!" रीबिन ने ऊंचे स्वर में कहा।

रसोई का दरवाज़ा खुला और कोई अन्दर आया।

"येफ़ीम है!" रीबिन ने रसोई में झांकते हुए कहा। "यहां आ जाओ, येफ़ीम! यह पावेल है। मैंने तुम्हें बताया था न इसके बारे में।"

पावेल के सामने एक लम्बा-सा भूरे बालों और चौड़े-चकले चेहरे-वाला लड़का भेड़ की खाल का छोटा-सा कोट पहने अपनी टोपी हाथ में लिये खड़ा था और भवें नीची किये उसे देख रहा था। देखने में वह बहुत बलिष्ठ लगता था।

"आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई!" उसने भारी आवाज़ में कहा और हाथ मिला चुकने के बाद अपने खड़े बालों में उंगलियां फेरने लगा। कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए उसकी निगाह किताबों पर पड़ी और वह धीरे-धीरे उनकी तरफ़ बढ़ा।

"पड़ गयी नज़र!" रीबिन ने पावेल को आंख मारते हुए कहा। येफ़ीम मुड़ा, उसने रीबिन की ओर देखा और फिर किताबों का निरीक्षण करने लगा।

"कितनी बहुत-सी किताबें हैं!" उसने पुलकित होकर कहा। "तुम्हें तो इन्हें पढ़ने का भी समय न मिलता होगा। अगर तुम गांव में रहते होते तो तुम्हें इसके लिए ज़्यादा वक़्त मिलता..."

"मगर पढ़ने को जी कम चाहता, क्यों?" पावेल ने प्रश्न किया।

"अरे नहीं, जी भी बहुत चाहता है!" लड़के ने अपनी ठोड़ी थपथपाते हुए कहा। "लोग अपनी अक़्ल इस्तेमाल करने लगे हैं। 'भूगर्भशास्त्र' – यह क्या होता है?"

पावेल ने उसे समझाया।

"यह हमारे काम की नहीं!" लड़के ने किताब अल्मारी में वापस रखते हुए कहा।

"किसान को इससे कोई मतलब नहीं कि पृथ्वी कैसे बनी," रीबिन ने ज़ोर से निश्वास छोड़ते हुए कहा। "उसे तो इसमें दिलचस्पी होती है कि ज़मीन को टुकड़े-टुकड़े करके बांटा कैसे गया? ज़मींदारों

ने उसकी आंखों में धूल झोंककर उसकी ज़मीन कैसे हथिया ली? उसे क्या फ़रक़ पड़ता है कि ज़मीन घूमती है या एक जगह टिकी रहती है? जब तक किसान को ज़मीन से अपनी रोटी मिलती है तब तक चाहे वह रस्सी से लटकी हो या कील से कहीं जड़ी हो, उसकी बला से!"

"'दास-प्रथा का इतिहास'," येफ़ीम ने एक किताब का नाम पढ़ा। "क्या यह हम लोगों के बारे में है?"

"नहीं, लेकिन भूदास-प्रथा के बारे में भी है," पावेल ने उसे एक दूसरी किताब देते हुए कहा। येफ़ीम ने किताब लेकर उसे उलट-पुलटकर देखा।

"यह तो पुराने ज़माने की बात है!" उसने किताब को नीचे रखते हुए उदासीन भाव से कहा।

"क्या तुम्हारे पास अपनी ज़मीन है?" पावेल ने पूछा।

"है क्यों नहीं। मेरे और मेरे दो भाइयों के पास मिलाकर कोई पांच हेक्टर ज़मीन है। मगर सब रेतीली है। बरतन मांजने के लिए तो अच्छी है, पर खेती के काम की नहीं है! .."

वह एक क्षण के लिए रुका।

"मगर ज़मीन तो मैंने छोड़ दी है। उसका फ़ायदा ही क्या? खाने को मिलता नहीं उससे, बेकार में आदमी बंधा रहता है। मैं तो चार साल से दूसरों के खेतों पर मज़दूरी करता हूं। अब की जाड़े में फ़ौज में भरती होना है। मगर मिखाइलो चाचा कहते हैं कि हाज़िर ही न हो। वह कहते हैं कि आजकल सिपाहियों को आम जनता को मारने के लिए भेजा जाता है। मगर मैं सोचता हूं कि मैं भरती हो ही जाऊंगा। स्तेपान राज़िन और पुगाचोव* के ज़माने में भी तो सिपाही आम लोगों को ही मारते थे। अब वक़्त आ गया है कि इस सारे क़िस्से को ख़त्म ही कर दिया जाये, तुम्हारा क्या ख़याल है?" उसने पावेल की तरफ़ देखकर पूछा।

"हां, वक़्त तो आ गया है!" पावेल ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

---

* स्तेपान राज़िन – भूदास-प्रथा के जुए के ख़िलाफ़ १६७०-७१ के किसान-युद्ध के नेता। - सं०

पुगाचोव – भूदास-प्रथा के जुए के ख़िलाफ़ १७७३-७५ के किसान-युद्ध के नेता। –सं०

"मगर यह इतना आसान नहीं है! हमें यह मालूम होना चाहिये कि सिपाहियों से क्या कहा जाये और कैसे कहा जाये..."

"हम सीख लेंगे!" येफ़ीम बोला।

"अगर अफ़सरों को पता लग गया तो तुम्हें वे गोली मार देंगे!" पावेल ने येफ़ीम को उत्सुकता भरी दृष्टि से देखते हुए कहा।

"उनसे ज़्यादा दया की उम्मीद तो की भी नहीं जा सकती!" लड़के ने शान्त भाव से अपनी सहमति प्रकट की और फिर किताबें देखने लगा।

"येफ़ीम, चाय पी लो," रीबिन ने कहा। "हमें जल्दी जाना है!"

"अच्छा! क्या क्रान्ति और उपद्रव एक ही चीज़ होते हैं?"

इतने में अन्द्रेई अन्दर आया। नहाने के बाद वह लाल हो गया था और हमाम की भाप की गरमी अब तक उसमें बाक़ी थी। उसके चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। उसने कुछ कहे बिना येफ़ीम से हाथ मिलाया और रीबिन के पास बैठकर उसे सिर से पांव तक देखा और तनिक मुस्कराया।

"तुम ख़ुश नज़र नहीं आ रहे, ऐसा क्यों?" रीबिन ने उसके घुटने पर हाथ मारते हुए पूछा।

"ऐसे ही," उक्रइनी ने जवाब दिया।

"यह भी मज़दूर है?" येफ़ीम ने अन्द्रेई की ओर सिर से संकेत करते हुए पूछा।

"हां," अन्द्रेई ने कहा। "तो क्या हुआ?"

"इसने पहले कभी कारख़ाने के मज़दूर नहीं देखे हैं," रीबिन ने समझाते हुए कहा। "इसलिए इसे वे दूसरे लोगों से अलग मालूम होते हैं..."

"हम दूसरों से अलग किस तरह हैं?" पावेल ने पूछा।

"तुम लोगों की हड्डियां ज़्यादा उभरी हुई होती हैं," येफ़ीम ने अन्द्रेई को बड़े ध्यान से देखने के बाद कहा। "किसान की हड्डियां गोलाई लिए हुए होती हैं..."

"किसान अपने पांवों पर खड़ा भी ज़्यादा मज़बूती से रहता है," रीबिन ने योग देते हुए कहा। "उसे अपने पांव तले की ज़मीन का आभास रहता है, वह उसकी अपनी भले ही न हो। वह उसे, ज़मीन को, महसूस करता है! मगर कारख़ाने का मज़दूर चिड़िया

की तरह होता है: न अपनी कोई ज़मीन, न अपना घर—आज यहां, कल वहां! औरत भी उसे एक जगह बांधकर नहीं रख सकती। ज्यों ही कुछ गड़बड़ होता है वह उसे छोड़ देता है और उससे बेहतर की तलाश में निकल पड़ता है। मगर किसान चीज़ों से नाता तोड़े बिना ही उन्हें सुधारने की कोशिश करता है। लो, तुम्हारी मां वापस आ गयीं!"

"मुझे अपनी एक किताब पढ़ने को दोगे?" येफ़ीम ने पावेल के निकट आकर कहा।

"दूंगा क्यों नहीं!" पावेल ने कहा।

लड़के की आंखों में उत्सुकता की चमक आ गयी।

"मैं वापस लौटा दूंगा!" उसने जल्दी से पावेल को आश्वासन दिया। "हमारे यहां से लोग तारकोल लेकर इधर आते रहते हैं, उन्हीं के हाथ भेज दूंगा।"

"अब चलें," रीबिन ने कहा; वह भेड़ की खाल का कोट पहनकर तैयार हो गया था और पेटी कस रहा था।

"इसे पढ़ने में मज़ा आयेगा!" येफ़ीम ने किताब ऊपर उठाकर बत्तीसी खोलकर मुस्कराते हुए कहा।

जब वे चले गये तो पावेल बड़े उत्साह के साथ अन्द्रेई की तरफ़ मुड़ा।

"क्या ख़्याल है तुम्हारा इनके बारे में?.." उसने पूछा।

"हूं-ऊं-ऊं!" उक्रइनी ने आवाज़ खींची। "तूफ़ान के बादल हैं..."

"मिख़ाइलो?" मां बोली। "मालूम होता है जैसे उसने कारख़ाने में कभी काम ही नहीं किया। बिल्कुल किसान हो गया! सो भी कैसा भयानक!"

"बड़ा बुरा हुआ कि जब वे लोग आये थे तब तुम यहां नहीं थे," पावेल ने अन्द्रेई से कहा जो मेज़ के किनारे बैठा हुआ अपने चाय के गिलास को घूर रहा था। "तुम हमेशा इंसानियत से भरे हुए दिल की बातें करते रहते हो; इन दोनों के दिलों में झांककर देखते! रीबिन को देखकर तो मैं दंग रह गया; मैं उससे बहस भी न कर सका। उसे इंसानों पर कोई विश्वास है ही नहीं और वह उनकी कोई क़दर नहीं करता! मां ठीक ही कहती थीं कि उसमें कोई बड़ी भयानक बात है!.."

"यह तो मैंने भी देखा!" उक्रइनी ने उचाट स्वर में कहा।

"शासकों ने लोगों के दिमाग़ों को ज़हरीला बना दिया है! जब जनता जाग उठेगी तब वह हर चीज़ को ढा देगी। उसे तो बस साफ़ ज़मीन चाहिये; अगर वह साफ़ नहीं होगी तो जनता उसे साफ़ कर देगी। वह हर चीज़ को जड़ से उखाड़ फेंकेगी!"

वह बहुत धीरे-धीरे बोल रहा था और यह स्पष्ट था कि वह किसी और ही बात के बारे में सोच रहा था। मां ने हाथ आगे बढ़ाकर उससे बड़े प्यार से कहा:

"अन्द्रेई, अपना जी शान्त करो!"

"मां, ज़रा ठहरो!" उसने शान्त भाव से बड़े प्यार के साथ कहा। फिर वह सहसा भड़क उठा और मेज़ पर मुक्का मारकर बोला:

"पावेल, यह सच बात है! एक बार जहां किसान अपने पांव पर खड़ा हो गया वह ज़मीन को बिल्कुल साफ़ कर देगा! वह हर चीज़ को जला देगा, जैसे ताऊन के बाद चीज़ें जलायी जाती हैं, और उसने जो मुसीबतें सही हैं उनका एक-एक निशान मिटा देगा..."

"और फिर वह हमारी राह रोककर खड़ा हो जायेगा!" पावेल ने बहुत धीमे से अपना मत प्रकट किया।

"यह तो हमारा काम है कि हम उसे ऐसा न करने दें! यह तो हमें देखना है कि उसे क़ाबू में रखें! उससे जितने निकट हम लोग हैं उतना कोई और नहीं है। वह हम पर विश्वास करेगा और हमारे पीछे-पीछे चलेगा!"

"रीबिन ने मुझसे गांव के लिए एक अख़बार निकालने को कहा है!" पावेल ने कहा।

"इसी की तो ज़रूरत है!"

"बुरा हुआ कि मैंने उससे बहस नहीं की," पावेल ने धीरे से हंसकर कहा।

"अभी वक़्त है!" उक्रइनी ने बालों में उंगली फेरते हुए शान्त भाव से कहा। "अपनी धुन छेड़े रहो और जिन लोगों के पांव ज़मीन में गड़े नहीं हैं वे तुम्हारी धुन पर ज़रूर नाचेंगे। रीबिन ठीक ही कहता था कि हम अपने पांव के नीचे की ज़मीन महसूस नहीं करते और हमें करनी भी नहीं चाहिये क्योंकि इसी ज़मीन को तो हिलाकर रख देना हमारा काम है। हम एक बार इसे हिलायेंगे तो लोग इससे अलग हो जायेंगे; और जब हम इसे दुबारा हिलायेंगे तो वे आज़ाद हो जायेंगे।"

"अन्द्रेई, तुम्हें हर चीज़ बहुत आसान मालूम होती है!" मां ने मुस्कराते हुए कहा।

"आसान तो है ही!" उक्रइनी ने कहा। "उतनी ही आसान जितनी ज़िंदगी है!"

कुछ देर बाद वह बोला:

"मैं ज़रा बाहर खेतों में टहलने जा रहा हूं..."

"नहाकर? हवा चल रही है, सर्दी लग जायेगी!" मां ने उसे सचेत करते हुए कहा।

"मुझे हवा की ज़रूरत भी है!" उसने उत्तर दिया।

"सर्दी न खा जाना!" पावेल ने बड़े प्यार से कहा। "मेरे ख़याल से तो तुम सो लो तो अच्छा है।"

"नहीं, मैं जा रहा हूं!"

उसने कपड़े पहने और कुछ कहे बिना ही चला गया...

"वह बहुत दुःखी है!" मां ने आह भरकर कहा।

"मालूम होता है उस बात के बाद से तुम उससे और भी ज़्यादा प्यार करने लगी हो," पावेल ने कहा, "मुझे बड़ी ख़ुशी है इस बात की!"

मां ने आश्चर्य से देखा।

"सच? मुझे तो मालूम नहीं हुआ! मैं उसे इतना प्यार करती हूं कि बता नहीं सकती!"

"मां, तुम्हारा हृदय बहुत उदार है!" पावेल ने कोमल स्वर में कहा।

"मैं तो यही चाहती हूं कि मैं तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के किसी काम आ सकूं! काश, मैं यह कर सकती!.."

"घबराओ नहीं, सीख जाओगी!.."

"घबराऊं नहीं, यही मैं कर नहीं पाती!" उसने धीरे से हंसकर कहा।

"मां, छोड़ो भी इन बातों को! मगर एक बात याद रखना – मैं तुम्हारा बहुत-बहुत एहसान मानता हूं!"

वह रसोई में चली गयी कि पावेल कहीं उसके आंसू न देख ले।

उक्रइनी बहुत देर से घर लौटा और आते ही लेट गया।

"कम से कम छः-सात मील चला हूंगा..." उसने कहा।

"कुछ फ़ायदा हुआ?" पावेल ने पूछा।

"छोड़ो भी इस बात को, मैं तो सोता हूं!"

इसके बाद वह एक शब्द भी न बोला।

कुछ देर बाद वेसोवश्चिकोव अन्दर आया – फटेहाल, गंदा और हमेशा की तरह भन्नाया हुआ।

"कुछ सुना तुमने कि इसाई को किसने मारा था?" उसने बड़े भद्दे ढंग से टहलते हुए पावेल से पूछा।

"नहीं तो!" पावेल ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"आखिर ऐसा आदमी भी सामने आ ही गया, जिसे यह काम करते हुए घिन नहीं आयी। मैं तो खुद ही उसे मारने के फेर में था। बुरा हुआ कि मेरे हाथों नहीं मरा; इस काम के लिए मुझसे अच्छा कोई आदमी था ही नहीं!"

"निकोलाई, ऐसी बातें मत कहो!" पावेल ने मित्रता के भाव से कहा।

"बिल्कुल ठीक कहते हो तुम!" मां ने बड़े प्यार से कहा। "जब आदमी का कलेजा मोम जैसा मुलायम हो तो फिर वह शेर की तरह गरजे क्यों? आखिर क्यों?"

आज रात निकोलाई को देखकर वह खुश थी। उसका चेचक के दाग़ों से भरा हुआ चेहरा भी उसे ज़्यादा आकर्षक मालूम हो रहा था।

"मैं तो बस इसी काम के लिए ठीक हूं!" निकोलाई ने अपने कंधे बिचकाते हुए कहा। "मैं सोचता रहता हूं कि मैं क्या काम कर सकता हूं? कुछ भी नहीं! इन सब कामों में लोगों से बातें करनी पड़ती हैं और मुझे बातें करना भी नहीं आता! मैं देखता हूं कि दुनिया में क्या हो रहा है, मैं देखता हूं कि लोगों के साथ कैसा अन्याय होता है पर मैं उसे बयान नहीं कर सकता! मैं बिल्कुल जंगली हूं, बात तक करनी नहीं आती।"

वह पावेल के पास चला गया और आंखें झुकाये मेज़ में उंगलियां गड़ाता रहा और फिर उसने बच्चों जैसे विनीत स्वर में कहा जो उसके हमेशा के स्वर से बिल्कुल भिन्न था:

"दोस्तो, मुझे कोई मुश्किल काम दो! मैं इस तरह ज़िंदा नहीं रह सकता! तुम सब लोग अपने-अपने काम में फंसे हो और मैं देखता हूं कि काम किस तरह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है लेकिन मैं कुछ नहीं कर रहा हूं! बस लकड़ी के कुन्दे और तख़्ते ढोता रहता हूं। कोई भी तो चीज़ नहीं है जिसके लिए मैं ज़िंदा रहूं। मुझे कोई कठिन काम दो!"

पावेल ने हाथ बढ़ाकर उसे अपनी तरफ़ खींच लिया।

"काम देंगे तुम्हें! .." उसने कहा।

ओट के पीछे से उक्रइनी की आवाज़ आयी:

"मैं तुम्हें टाइप बिठाने का काम सिखा दूंगा, निकोलाई। कहो कैसा है यह काम?"

निकोलाई उसके पास चला गया।

"अगर तुम इतना कर दो तो मैं... मैं तुम्हें अपना चाक़ू भेंट कर दूंगा..." उसने कहा।

"भाड़ में जाये तुम्हारा चाक़ू!" उक्रइनी ने ठट्ठा मारकर हंसते हुए ऊंचे स्वर में कहा।

"बड़ा अच्छा चाक़ू है!" निकोलाई अपनी बात पर अड़ा रहा। पावेल भी हंसने लगा।

"मुझ पर हंस रहे हो?" निकोलाई ने कमरे के बीचोंबीच रुककर पूछा।

"और किस पर हंस रहे हैं!" उक्रइनी ने उछलकर चारपाई से उठते हुए कहा। "बात सुनो, आओ, बाहर टहलने चलें, आज चांद भी निकला है। चलते हो?"

"अच्छी बात है!" पावेल ने कहा।

"मैं भी चलता हूं!" निकोलाई ने कहा। "मुझे उक्रइनी की हंसी बहुत पसंद है..."

"और मुझे तुम्हारा भेंट देने का वादा करना बहुत अच्छा लगता है!" उक्रइनी ने खिसियाकर हंसते हुए कहा।

वह कपड़े पहनने के लिए रसोईघर में चला गया।

"कोई गरम कपड़ा पहन लेना..." मां ने आग्रह किया।

जब वे तीनों चले गये तो मां थोड़ी देर तक खिड़की पर खड़ी उन्हें देखती रही और फिर देव-प्रतिमा की ओर मुड़ी।

"हे भगवान, उन पर दया करना, उनकी रक्षा करना! .." उसने बुदबुदाकर कहा।

२६

दिन इतनी जल्दी बीतते गये कि मां को मई दिवस के आगमन के बारे में सोचने का भी मौक़ा न मिला। लेकिन दिन-भर के कामकाज

12-1065

के बाद रात को जब वह थककर बिस्तर पर लेटती तो उसके दिल में एक हल्की-हल्की पीड़ा होती।

"वह दिन जल्दी आ जाता तो अच्छा था ..." वह सोचती रहती।

बहुत सबेरे ही फ़ैक्टरी की सीटी बजती और उसका बेटा और अन्द्रेई जल्दी-जल्दी कुछ नाश्ता करके चल देते और दर्जनों काम उसे सौंप जाते। दिन-भर वह पिंजरे में बंद गिलहरी की तरह इधर-उधर भागती-दौड़ती रहती, खाना पकाती, उनके पोस्टरों के लिए लेई और लाल रोशनाई तैयार करती, अनजाने लोगों से बातें करती जो बड़े रहस्यमय ढंग से आकर पावेल के लिए सन्देश छोड़ जाते और उतने ही रहस्यमय ढंग से ग़ायब हो जाते और अपनी कुछ उत्तेजना मां को भी दे जाते।

प्रायः हर रात को बाड़ों, यहां तक कि थाने के दरवाज़ों पर भी, मज़दूरों से मई दिवस के समारोह में भाग लेने का आग्रह करनेवाले पोस्टर लगाये जाते और रोज़ फ़ैक्टरी में पर्चे बांटे जाते। सुबह से उठकर पुलिसवाले मज़दूरों की बस्तियों का चक्कर लगाते और इन पोस्टरों को नोचते और खुरचकर बाड़ें साफ़ करते हुए गंदी-गंदी गालियां बकते। परन्तु दोपहर में खाने के समय नये पर्चे न जाने कहां से हवा के साथ उड़ते हुए लोगों के पैरों के पास आ गिरते। शहर से राजनीतिक पुलिस के आदमी भेजे गये और वे हर नुक्कड़ पर खड़े होकर खाने की छुट्टी के समय फ़ैक्टरी से आनेवाले और फ़ैक्टरी में जानेवाले हर मज़दूर के चेहरे को ग़ौर से देखते। परिस्थिति पर क़ाबू पाने में पुलिस की असमर्थता पर सभी मन ही मन खुश थे। वृद्ध मज़दूर भी मुस्कराते थे :

"क्या कर रहे हैं, देखा!" वे कहते।

हर जगह मज़दूरों के झुंड इन पर्चों पर गरमागरम बहस करते हुए देखे जाते। हर तरफ़ काफ़ी हलचल थी और इस साल वसन्त ऋतु का जीवन लोगों को कुछ अधिक रोचक प्रतीत हुआ, क्योंकि अब की उसमें कुछ नयी बात थी। कुछ लोग हमेशा से ज़्यादा गुस्सा थे और विद्रोहियों को खरी-खरी गालियां सुनाते थे। दूसरों के हृदय में एक अस्पष्ट सी आशा और भय समाया हुआ था। कुछ ऐसे भी थे, यद्यपि इनकी संख्या थोड़ी ही थी, जिन्हें इस बात पर गर्व था कि उन्होंने ही लोगों में जागृति पैदा की थी।

पावेल और अन्द्रेई तो शायद ही कभी सोते हों। चेहरे का रंग

पीला, आवाज़ भर्रायी हुई और थककर चूर, वे पौ फटे घर लौटते। मां जानती थी कि वे जंगल में जाकर मीटिंगें करते थे। वह यह भी जानती थी कि घुड़सवार पुलिस रात को बस्ती के आस-पास के गांवों में गश्त लगाती थी और हर जगह राजनीतिक पुलिस के आदमी तैनात थे जो कुछ मज़दूरों को पकड़कर उनकी तलाशी लेते, कहीं लोगों को इकट्ठा देखते तो उन्हें तितर-बितर कर देते और कभी-कभी कुछ लोगों को गिरफ़्तार भी करते। मां समझती थी कि उसके बेटे और अन्द्रेई के किसी भी समय गिरफ़्तार कर लिये जाने का ख़तरा था और वह तो शायद चाहती भी यही थी, क्योंकि वह सोचती थी कि उनके लिए यही अच्छा होगा।

न जाने क्यों टाइम-कीपर की हत्या की बात दबा दी गयी। दो दिन तक स्थानीय पुलिस ने तहक़ीक़ात की लेकिन कोई दरजन भर लोगों से सवाल-जवाब करने के बाद उन्होंने मामले को टाल दिया।

एक दिन मारिया कोरसुनोवा ने, जिसकी पुलिस के साथ भी उतनी ही दोस्ती थी जितनी दूसरे लोगों के साथ, मां को अपने शब्दों में पुलिस की राय बतायी।

"क़ातिल का पता लगने की बहुत कम उम्मीद है!" उसने कहा। "उस दिन सुबह कम से कम सौ लोग इसाई से मिले होंगे और उनमें से कम से कम नब्बे ऐसे रहे होंगे जिन्हें उसे मारकर बहुत ख़ुशी होती। सात बरस से वह लोगों को इसी के लिए उकसा रहा था..."

उक्रइनी में बहुत परिवर्तन आ गया था। उसका चेहरा बहुत दुबला और लम्बा हो गया था, उसके पपोटे सूज आये थे, जिसके कारण उसकी बड़ी-बड़ी आंखें आधी ढक गयी थीं। उसके नथुनों से लेकर मुंह के कोनों तक हल्की-हल्की गहरी लकीरें पड़ गयी थीं। वह आये दिन की छोटी-मोटी बातों के बारे में बहुत कम बात करता था; अब ऐसा बहुधा होने लगा था कि वह बहुत उत्साह में आकर किसी दूसरे ही जगत में पहुंच जाता और सुननेवालों को भविष्य के बारे में अपनी कल्पना का वर्णन देकर रोमांचित करता – ऐसे भविष्य की कल्पना जिसमें न्याय और आज़ादी की विजय होगी।

इसाई के क़त्ल की बात शीघ्र ही सब लोग भूल गये।

"वे इंसानों की तो रत्ती-भर भी परवाह नहीं करते, उन लोगों की भी नहीं, जिन्हें वे हमारे ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते हैं," अन्द्रेई

ने एक सूखी मुस्कराहट के साथ कहा। "और उन्हें अपने भाड़े के टट्टुओं के मर जाने का कोई अफ़सोस भी नहीं होता। उन्हें तो बस अपने ख़र्च किये हुए पैसे का दुःख होता है ..."

"अन्द्रेई, बस बहुत हो चुकीं ऐसी बातें!" पावेल ने सख़्ती से कहा।

"जो कुछ सड़ा-गला था वह पहली ही ठेस में ढेर हो गया, बस और कुछ नहीं!" मां ने कहा।

"यह तो ठीक है, मगर इससे बहुत ख़ुशी नहीं होती!" उक्रइनी ने उदास होकर उत्तर दिया।

वह यह बात अक्सर कहा करता था और जब भी वह यह कहता उसके शब्द एक व्यापक अर्थ धारण कर लेते थे जिसमें कटु व्यंग छुपा होता था ...

... आख़िरकार पहली मई का वह दिन भी आ गया, जिसकी इतने दिनों से प्रतीक्षा थी।

सीटी हमेशा की तरह आज भी उतने ही आदेशपूर्ण स्वर में बजी। मां ने रात-भर पलक नहीं झपकायी थी, वह झटपट चारपाई से उठी और उसने समोवार में आग सुलगा दी; समोवार उसने रात को ही तैयार कर लिया था। हमेशा की तरह आज भी वह लड़कों के कमरे का दरवाज़ा खटखटाने जा ही रही थी कि कुछ सोचकर रुक गयी और एक हाथ गाल पर रखकर खिड़की के पास इस तरह बैठ गयी मानो उसके दांत में दर्द हो रहा हो।

हल्के नीले रंग के आकाश पर गुलाबी और सफ़ेद बादलों का एक झुंड मंडला रहा था मानो फ़ैक्टरी की भाप की सी-सी से भयभीत होकर बड़ी-बड़ी चिड़ियों का एक झुंड उड़ा जा रहा हो। मां खोयी-खोयी नज़रों से बादलों को देखती रही। उसका सिर भारी हो रहा था और रात भर न सोने के कारण उसकी आंखें जल रही थीं। उसके हृदय में एक विचित्र शान्ति थी। उसके मस्तिष्क में बहुत छोटी-छोटी साधारण बातों के विचार आ रहे थे ...

"मैंने समोवार बहुत जल्दी गरम कर दिया; पानी बेकार खौलता रहेगा ... वे दोनों इतने थके हैं, आज सुबह तो उन्हें थोड़ी देर ज़्यादा सो लेने दिया जाये ..."

प्रातःकाल के सूर्य की एक किरण आकर खिड़की पर खेलने लगी; उसकी चमक में बड़ा उल्लास था। मां ने अपना हाथ फैला दिया और

जब सूर्य की उष्णता-भरी चमकदार किरणें उस पर पड़ीं तो उसने दूसरे हाथ से उसे थपथपाया और विचारों में डूबी हुई मुस्कराने लगी। थोड़ी देर बाद वह उठी और समोवार से चुपचाप नली निकाल ली। फिर उसने मुंह-हाथ धोया और प्रार्थना करने लगी; वह बड़ी श्रद्धा से बार-बार अपने सीने पर सलीब का निशान बनाती थी और यद्यपि उसके होंट हिल रहे थे पर उनसे कोई शब्द नहीं निकल रहा था। उसके चेहरे पर चमक आ गयी, उसकी दाहिनी भौंह फड़कने लगी...

दूसरी सीटी न तो इतने ज़ोर से ही बजी और न उसमें वह आदेश ही था; उसकी मोटी नम आवाज़ में एक हल्का-सा कम्पन था और मां को ऐसा लगा कि वह हमेशा से ज़्यादा देर तक बजती रही।

दूसरे कमरे से उक्रइनी की गूंजती हुई साफ़ आवाज़ सुनायी दी:

"सुनते हो, पावेल?"

फ़र्श पर किसी के नंगे पैरों के चलने की आहट सुनायी दी और दोनों लड़कों में से एक ने भरपूर जम्हाई ली...

"समोवार गरम है!" मां ने पुकारकर कहा।

"अभी उठते हैं!" पावेल ने पुलकित स्वर में उत्तर दिया।

"सूरज निकल रहा है!" उक्रइनी ने कहा। "और आसमान पर बादल भी हैं। आज अगर बादल न होते क्या नुक़सान था..."

वह नींद में झूमता हुआ अस्त-व्यस्त दशा में रसोई में आया, पर वह बहुत मगन था।

"मां, सलाम! रात नींद कैसी आयी?"

मां उठकर उसके पास चली गयी।

"अन्द्रेई, तुम उसके साथ-साथ चलना!" उसने चुपके से कहा।

"बेशक!" उक्रइनी ने भी बहुत ही धीमे स्वर में कहा। "मां, तुम विश्वास रखो कि जब तक हम लोग साथ हैं हम एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर ही चलेंगे!"

"तुम दोनों वहां क्या खुसुर-पुसुर कर रहे हो?" पावेल ने पूछा।

"कोई ख़ास बात नहीं है, पावेल!"

"मां कह रही थी कि मैं आज अच्छी तरह मुंह साफ़ कर लूं। आज सारी लड़कियों की नज़रें मुझ पर ही जमी रहेंगी!" उक्रइनी ने ड्योढ़ी में मुंह-हाथ धोने के लिए जाते हुए कहा।

"'उठ जाग, ओ भूखे बंदी!'" पावेल गुनगुनाने लगा।

जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया मौसम अच्छा होता गया और हवा बादलों

को उड़ा ले गयी। मेज़ पर नाश्ता लगाते समय मां बराबर अपना सिर हिला रही थी ; वह मन ही मन सोच रही थी कि कितनी अजीब बात है कि अभी सुबह तो ये लोग हंसी-मज़ाक़ कर रहे हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि आगे चलकर दिन में क्या होनेवाला है। और न जाने क्यों उसका हृदय भी शान्त और एक विचित्र पुलक से भरा हुआ था।

वे देर तक चाय पीते रहे, ताकि समय जल्दी-जल्दी बीत जाये। पावेल हमेशा की तरह धीरे-धीरे बहुत सोच-सोचकर अपने गिलास में शकर मिलाता रहा और उसने बड़ी सावधानी से अपनी रोटी पर नमक छिड़का कि कहीं पर नमक कम या ज़्यादा न होने पाये। हमेशा की तरह आज भी उसने डबल रोटी का सिरेवाला टुकड़ा लिया था, उसे यही पसंद था। उक्रइनी मेज़ के नीचे अपने पांव इधर-उधर खिसका रहा था, (वह कभी आराम से एक जगह अपने पांव रख ही नहीं सकता था) और चाय में प्रतिबिम्बित होकर दीवार और छत पर खेलती हुई सूर्य की किरणों को देख रहा था।

"जब मैं कोई दस बरस का था तब मैंने एक बार सोचा कि मैं सूरज को गिलास में बंद कर लूंगा," उसने कहा। "बस, मैं एक गिलास लेकर चुपके-चुपके एक जगह गया जहां पर धूप का एक छोटा-सा धब्बा था और मैंने झटपट गिलास उलटकर उस जगह पर दे मारा। मेरा हाथ कट गया और मार पड़ी सो अलग। मार खाकर मैं अहाते में गया और वहां मैंने पानी के एक गढ़े में सूरज की परछाईं देखी। मैंने जी भरकर उस परछाईं को पैरों से कुचला। मेरे कपड़े कीचड़ से गंदे हो गये और मुझे फिर मार पड़ी ... अपनी खिसियाहट मिटाने के लिए मैं जीभ निकालकर सूरज को मुंह चिढ़ाने लगा और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा, 'मुझे चोट ही नहीं लगी, ललमुंहे शैतान! मुझे चोट ही नहीं लगी!' न जाने क्यों इसके बाद मैं अपनी सारी पीड़ा भूल गया।"

"तुमने सूरज को ललमुंहा क्यों कहा?" पावेल ने हंसकर पूछा।

"हमारे घर के सामने गली के पार बड़े-से लाल मुंहवाला एक लोहार रहता था जिसकी दाढ़ी भी लाल रंग की थी। वह बहुत मस्त और नेक आदमी था, और मुझे ऐसा लगता था कि सूरज भी उसी जैसा है ..."

जब मां से और न रहा गया तो वह बोली :

"तुम लोग इसकी बातें क्यों नहीं करते कि तुम आज जुलूस कैसे निकालोगे?"

"जिन बातों के बारे में फ़ैसला हो चुका है उनके बारे में और बातें करने से बहुत गड़बड़ होगी!" उक्रइनी ने बड़ी नरमी से कहा। "मान लो अगर हम सब लोग गिरफ़्तार कर लिये गये तो, मां, निकोलाई इवानोविच आकर बतायेगा कि तुम्हें क्या करना है।"

"अच्छी बात है!" मां ने आह भरकर कहा।

"अगर हम लोग टहलने चलें तो कैसा रहे?" पावेल ने इस तरह कहा मानो वह किसी दूसरे ही जगत में विचर रहा हो।

"अभी घर ही पर रहो तो अच्छा है!" अन्द्रेई ने उत्तर दिया। "पुलिस को पहले से लालच दिलाने से क्या फ़ायदा? यों ही वे तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं!"

फ़्योदोर माज़िन भागा हुआ अन्दर आया। उसका चेहरा चमक रहा था और गाल तमतमाये हुए थे। उसके उल्लासपूर्ण उत्साह ने उनकी प्रतीक्षा के तनाव को भंग कर दिया।

"सिलसिला शुरू हो गया!" उसने कहा। "लोगों में हलचल पैदा हो गयी है! वे तनी हुई सूरतें बनाये सड़कों पर आ रहे हैं। वेसोवश्चिकोव और वासीली गूसेव और समोइलोव फ़ैक्टरी के फाटक पर खड़े भाषण दे रहे हैं। बहुत से मज़दूर घर लौट गये हैं! आओ चलो! वक़्त हो गया है! दस बज गये हैं! .."

"मैं आता हूं," पावेल ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा।

"देख लेना खाने की छुट्टी के बाद सारे मज़दूर बाहर निकल आयेंगे!" फ़्योदोर ने भागकर जाते हुए कहा।

"इसे तो एक पल चैन नहीं है, जैसे हवा में मोमबत्ती की लौ बराबर कांपती रहती है!" मां ने कहा। यह कहकर वह उठी और कपड़े बदलने के लिए रसोई में चली गयी।

"मां, कहां जा रही हो तुम?" अन्द्रेई ने पूछा।

"तुम लोगों के साथ!" उसने उत्तर दिया।

अन्द्रेई ने अपनी मूंछों के बाल नोचते हुए कनखियों से पावेल की तरफ़ देखा। पावेल अपने बालों में उंगलियां फेरता हुआ मां के पास गया।

"मां, मैं तुम्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कहूंगा, और... तुम भी मुझसे कुछ न कहना! ठीक है न?"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। भगवान तुम्हें सुखी रखे!" उसने अस्फुट स्वर में कहा।

२७

बाहर निकलकर जब उसने वातावरण में उत्तेजना और उत्सुकता से भरी हुई आवाज़ों की गूंज सुनी और जब उसने लोगों को झुंड बांधकर अपने घरों के फाटकों और खिड़कियों से उसके बेटे और अन्द्रेई को कौतूहल-भरी दृष्टि से देखता हुआ पाया, तो उसकी आंखों के सामने हरे और भूरे रंग की आकृतियों का एक धुंधला-सा चित्र घूम गया।

लोगों ने उसके बेटे और अन्द्रेई को सलाम किया; आज उनके शब्दों में एक विशेष महत्व था। लोग मंद स्वर में जो टीका-टिप्पणी कर रहे थे उसके केवल कुछ ही अंश उसके कानों में पड़ रहे थे:

"वह देखो, यही दोनों नेता हैं..."

"हमें क्या मालूम कि नेता कौन है..."

"मैं किसी को नुक़सान पहुंचाने के लिए नहीं कह रहा हूं!.."

किसी ने अपने घर के बाहरवाले आंगन से झुंझलाकर चिल्लाते हुए कहा:

"पुलिस पकड़ ले जायेगी, उनका नामो-निशान तक नहीं रह जायेगा!"

"एक बार तो पकड़ ले गयी थी!"

ऊपर खिड़की में से कोई स्त्री चिल्लायी:

"सोच-समझकर क़दम उठाना! याद रखना, तुम्हें अपने परिवार का पेट पालना है!"

वे लंगड़े ज़ोसीमोव के घर के सामने से गुज़रे। फ़ैक्टरी में काम करते समय उसकी टांगें कट गयी थीं और उसे फ़ैक्टरी से पेंशन मिलती थी।

"पावेल!" उसने खिड़की में से सिर निकालकर पुकारा। "बदमाश, अब की बार तेरी गरदन तोड़ दी जायेगी! तुझे अपने किये की सज़ा मिल जायेगी!"

मां कांप गयी और ठिठककर खड़ी हो गयी। उसके अंग-अंग में क्रोध की लहर दौड़ गयी। नज़रें ऊपर उठाकर मां ने उस लंगड़े के चेहरे को देखा जिस पर खा-खाकर चर्बी छा गयी थी और लंगड़े ने एक गाली देकर अपना सिर अंदर कर लिया। मां ने अपने क़दम तेज़ किये और अपने बेटे के पास पहुंचकर बिल्कुल उसके पीछे-पीछे चलने लगी, इस भय से कि कहीं पिछड़ न जाये।

ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे पावेल और अन्द्रेई किसी बात की ओर ध्यान ही न दे रहे हों और उनके गुज़रते समय लोग जो बातें कहते थे उनका उन्हें कोई ज्ञान ही न हो। वे बड़े शान्त भाव से चले जा रहे थे, उन्हें कोई जल्दी नहीं थी। रास्ते में एक बार मिरोनोव ने उन्हें रोका; वह अधेड़ उम्र का बहुत विनम्र आदमी था और उसके गंभीर स्वभाव और ईमानदारी के कारण सब लोग उसकी इज़्ज़त करते थे।

"क्यों दनीलो इवानोविच, तो तुम भी आज काम पर नहीं गये?" पावेल ने कहा।

"मेरे घर बच्चा होनेवाला है। और फिर ऐसे दिन किसे चैन पड़ता है!" वह साथियों को लगातार घूरता रहा और उसने दबी आवाज़ में पूछा:

"सुना है कि तुम लोग आज डॉयरेक्टर को बड़ी मुसीबत में फंसाने का इरादा कर रहे हो—कुछ खिड़कियां-विड़कियां तोड़ने की बात है, क्यों?"

"हम कोई पिये हुए हैं क्या?" पावेल ने कहा।

"हम तो बस झंडे लेकर सड़क पर जुलूस निकालेंगे और कुछ गीत गायेंगे," उक्रइनी ने कहा। "हमारे गाने सुनना, उनमें हमारी सारी बातें कह दी गयी हैं!"

"मैं जानता हूं कि तुम लोग किन बातों के लिए लड़ रहे हो," मिरोनोव ने विचारमग्न होकर कहा। "मैं तुम्हारे अख़बार पढ़ता हूं। अच्छा, पेलागेया निलोवना!" उसने विस्मित होकर कहा; मां को देखकर उसकी चतुराई-भरी आंखों में चमक आ गयी। "तुम भी बग़ावत में शामिल हो गयीं?"

"मरने से पहले एक बार तो न्याय का साथ दे लूं!"

"ठीक है, ठीक है!" मिरोनोव ने कहा। "मालूम होता है कि वे ठीक ही कहते थे कि तुम ही फ़ैक्टरी में वह ग़ैरक़ानूनी पर्चे लाती थीं।"

"किसने कहा यह?" पावेल ने पूछा।

"हुंः, सुना है मैंने! अच्छा मैं चलता हूं। संभलकर चलना, अपने को क़ाबू में रखना!"

मां चुपके-चुपके मुस्करा दी। वह ख़ुश थी कि लोग उसके बारे में ऐसी बात कहते थे।

"मां, तुम भी जेल भेज दी जाओगी!" पावेल ने हंसकर कहा।

सूरज चढ़ता जा रहा था और वसन्त ऋतु के उस सुखद दिन की ताज़गी में अपनी रश्मियां उंडेल रहा था। बादलों की गति मंद पड़ गयी और उनकी परछाईं हल्की हो गयी; अब सूरज की किरणें उनमें से छन-छनकर आ रही थीं। बादल मंद गति से सड़क और घरों की छतों पर मंडलाते हुए लोगों को छाया प्रदान कर रहे थे; उनकी परछाइयां मानो बस्ती को बुहार रही थीं, घरों पर से धूल और लोगों के चेहरों पर से उकताहट सब पोंछे दे रही थीं। हर चीज़ में एक नयी पुलक थी। स्वरों का गुंजन तेज़ होता गया और धीरे-धीरे मशीनों की गड़गड़ाहट इस आवाज़ में डूबकर रह गयी।

एक बार फिर खिड़कियों और आंगनों से शब्द वायु की लहरों पर उड़ते और रेंगते हुए मां के कानों तक पहुंचे – इन शब्दों में द्वेष और आतंक, शंका और उल्लास सभी कुछ तो था। परन्तु अब उसमें कुछ बातों का खंडन करने, कुछ बातों को समझाने, अपनी कृतज्ञता प्रकट करने और उस दिन के विचित्र वैविध्यपूर्ण जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने की एक उमंग पैदा हो गयी थी।

एक संकरी-सी गली में लगभग सौ लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी और उनके बीच से वेसोवश्चिकोव की आवाज़ आ रही थी।

"वे गन्ने के रस की तरह हमारा खून निचोड़ लेते हैं!" उसके ये भोंड़े शब्द लोगों के सिरों पर हथौड़े की तरह प्रहार कर रहे थे।

"यही तो करते हैं!" एक साथ कई स्वर सुनायी दिये।

"लड़का अपना ज़ोर लगा रहा है!" उक्रइनी ने कहा। "मैं जाकर उसकी मदद करता हूं!.."

जब तक पावेल उसे रोके रहा वह अपने दुबले-पतले और लचकीले शरीर से भीड़ को चीरता हुआ आगे पहुंच गया जैसे पेंच कार्क को चीरता चला जाता है।

"साथियो!" उसने अपनी सुरीली आवाज़ में चिल्लाकर कहा। "लोग कहते हैं कि इस पृथ्वी पर भांति-भांति के लोग रहते हैं – यहूदी और जर्मन, अंग्रेज़ और तातार। मगर मैं इस बात को नहीं मानता! इस पृथ्वी पर बस दो तरह के लोग रहते हैं, दो ऐसी तरह के लोग जिनका एक-दूसरे से कोई मेल नहीं हो सकता – अमीर और ग़रीब! लोगों का पहनावा अलग होता है, उनकी बोली अलग होती है, मगर जब हम देखते हैं कि फ़्रांसीसी, जर्मन और अंग्रेज़ पैसेवाले वहां के मज़दूरों के साथ कैसा बरताव करते हैं तब हमारी समझ में आता है

कि हम मज़दूरों के लिए वे सब बदमाश हैं, उनका सत्यानास हो!"

भीड़ में कोई हंसा।

"और दूसरी तरफ़ अगर हम ग़ौर से देखें तो हमें मालूम होगा कि मज़दूर चाहे फ़्रांसीसी हों या तातार या तुर्क, सब वैसी ही कुत्तों जैसी ज़िंदगी बसर करते हैं जैसी कि हम रूसी मज़दूर!"

गली में और लोग आते गये; वे पंजों के बल खड़े होकर अपनी गरदनें तानकर देखते, पर बोलते कुछ भी नहीं।

अन्द्रेई का स्वर ऊंचा होता गया।

"दूसरे देशों के मज़दूरों ने इस सीधी-सी बात को समझ लिया है और आज, मई दिवस के दिन..."

"पुलिस!" कोई चिल्लाया।

चार पुलिसवाले घोड़े दौड़ाते हुए सीधे गली में घुसे और अपने चाबुक फटकारते हुए चिल्लाये:

"चलो यहां से, क्या भीड़ लगा रखी है!"

लोगों ने नाक-भौं सिकोड़कर उन्हें देखा और अनमने भाव से घोड़ों के लिए रास्ता छोड़ने लगे। कुछ लोग चहारदीवारियों पर चढ़ गये।

"ये अपने को बहुत बहादुर सिपाही समझते हैं मगर हैं बिल्कुल सुअर!" किसी ने निडरता से चिल्लाकर कहा।

उक्रइनी गली के बीच में वहीं खड़ा रहा और दो घोड़े अपनी गरदनें ताने उसकी तरफ़ झपटे। वह एक तरफ़ को हट गया और उसी क्षण मां उसका हाथ पकड़कर उसे अपने साथ खींच लायी।

"तुमने कहा था कि तुम पावेल के साथ रहोगे," मां ने बड़बड़ाते हुए कहा, "और यहां आते ही अकेले मुसीबत के मुंह में घुस गये!"

"माफ़ कर दो, मां!" उक्रइनी ने मुस्कराकर कहा।

पेलागेया निलोवना एक अजीब थकन अनुभव कर रही थी जैसे उसकी हड्डी-हड्डी टूटी जा रही हो, उसे ऐसा लग रहा था कि यह थकन उसके शरीर में कहीं बहुत गहराई से निकलकर ऊपर आ रही है; उसका सिर घूम रहा था और बारी-बारी से वह कभी खुश होती थी और कभी उदास। वह मना रही थी कि किसी तरह खाने की छुट्टी की सीटी बजे।

लोग चौक के पासवाले गिरजाघर की तरफ़ आ रहे थे। लगभग

पांच सौ नौजवान और बच्चे गिरजाघर के मैदान में जमा होकर शोर मचा रहे थे। जन-समुदाय हिलोरें ले रहा था। लोग गरदन तानकर दूर पर कुछ देखने का प्रयत्न कर रहे थे; वे बड़ी अधीरता से किसी बात की प्रतीक्षा कर रहे थे। वातावरण में बिजली-सी दौड़ गयी थी। कुछ लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें, कुछ दूसरे लोग सीना तानकर चल रहे थे। औरतें अपने कोमल स्वर में मर्दों से अनुनय-विनय कर रही थीं और वे झुंझलाकर उनसे मुंह फेरकर चले जाते थे। कभी-कभी कोई दबी आवाज़ में गाली भी देता। भांति-भांति के लोगों की उस भीड़ में से विद्रोह की एक हल्की सी गूंज उठी।

"मीत्या!" किसी औरत ने कांपते हुए स्वर में कहा, "अपने हाल पर रहम खाओ!.."

"जाने दो मुझे!" करारा जवाब सुनायी दिया।

सिज़ोव के रोबदार स्वर में कोई उत्तेजना नहीं थी और उसकी बातें सब को मान्य थीं:

"हमें इन नौजवानों का साथ नहीं छोड़ना चाहिये!" वह कह रहा था। "इनमें हमसे ज़्यादा समझ है, और हिम्मत भी! दलदल के लिए पैसोंवाले झगड़े में हमारे लिए कौन लड़ा था? यही लोग थे! और हमें इस बात को भूलना नहीं चाहिये। उन्हें इसी बात के लिए जेल में बंद किया गया और फ़ायदा उठाया हम लोगों ने!.."

सीटी बजी और सारा कोलाहल ध्वनि के इस विकराल प्रवाह में डूब गया। भीड़ सिहर उठी। जो लोग बैठे थे वे उठ खड़े हुए और एक क्षण के लिए हर आदमी शान्त और सतर्क हो गया; कुछ के तो चेहरे भी पीले पड़ गये।

"साथियो!" पावेल का गूंजता हुआ दृढ़ स्वर सुनायी दिया। मां की आंखों में गर्म आंसू छलक आये और सहसा उसमें मानो नयी शक्ति का संचार हुआ। एक झटके के साथ वह जल्दी से अपने बेटे के पीछे जाकर खड़ी हो गयी। लोग उसके बेटे के चारों ओर इसी तरह खड़े थे जैसे चुम्बक के चारों ओर लोहे के टुकड़े।

मां ने अपने बेटे के चेहरे की ओर देखा; उसे केवल उसकी गर्व और साहस से भरी चमकती हुई आंखें दिखायी दीं...

"साथियो! हमने फ़ैसला किया है कि आज हम खुले आम यह बता दें कि हम कौन हैं और अपना झंडा ऊंचा करें, जो न्याय, इंसाफ़ और आज़ादी का झंडा है!"

एक लम्बा-सा सफ़ेद बांस हवा में एक क्षण के लिए उठा और फिर नीचे आकर भीड़ को दो हिस्सों में बांटता हुआ कहीं खो गया; एक क्षण बाद ही मज़दूर वर्ग का झंडा ऊंचा हुआ और उत्सुकता से ऊपर उठी हुई आंखें एक बड़ी-सी लाल चिड़िया की तरह फहराते हुए उस झंडे को देखने लगीं।

पावेल ने अपना हाथ उठाया और झंडा हिलने लगा; दर्जनों हाथों ने लपककर झंडे के चिकने सफ़ेद बांस को थाम लिया; उनमें मां का भी हाथ था।

"मज़दूर वर्ग ज़िन्दाबाद!" पावेल ने नारा लगाया।

सैकड़ों लोगों का कंठ-निनाद इसके उत्तर में गूंज उठा।

"सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी ज़िन्दाबाद! साथियो, यह हमारी पार्टी है, हमारे विचार इसी की देन हैं!"

जन-समुदाय उमड़ा पड़ रहा था। जो लोग इस झंडे के महत्व को समझते थे वे आगे बढ़कर उसके निकट पहुंचने का प्रयत्न कर रहे थे; माज़िन, समोइलोव और दोनों गूसेव-बंधु पावेल के पास पहुंच गये। निकोलाई सिर झुकाये भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था; मां को ऐसा लगा कि कुछ दूसरे नौजवान, जिनकी आंखों में चमक थी, जिन्हें वह पहचानती भी नहीं थी, उसे एक तरफ़ को ठेले दे रहे थे...

"दुनिया के मज़दूर ज़िन्दाबाद!" पावेल ने फिर नारा लगाया। हज़ारों कंठों ने एक साथ आत्मा को आन्दोलित कर देनेवाले जय-घोष से इसका उत्तर दिया जो उनके उल्लास और उनकी शक्ति के बढ़ते हुए तूफ़ान का परिचायक था।

मां ने निकोलाई और एक किसी दूसरे आदमी का हाथ पकड़ लिया; आंसुओं से उसका गला रुंधा हुआ था, पर वह रोयी नहीं। उसके पांव कांप रहे थे और उसने कांपते होंटों से बुदबुदाकर कहा:

"मेरे बच्चे..."

निकोलाई के चेचकरू चेहरे पर एक मुस्कराहट दौड़ गयी। उसने झंडे की तरफ़ एकटक देखते हुए अस्फुट स्वर में कुछ कहा और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। अचानक उसने मां के गले में बांह डालकर उसे चूम लिया और हंस पड़ा।

"साथियो!" उक्रइनी ने बोलना आरंभ किया। उसकी कोमल आवाज़ भीड़ की आवाज़ पर छा गयी। "हमने एक नये ईश्वर के नाम पर धर्मयुद्ध छेड़ा है! यह ईश्वर ज्ञान और समझ-बूझ, भलाई

और सच्चाई का देव है! हमारा लक्ष्य बहुत दूर है, पर हमारा कांटेदार रास्ता हमारे सामने है! अगर किसी को सत्य की विजय पर विश्वास न हो, अगर किसी में इसके लिए अपनी जान देने की हिम्मत न हो, अगर किसी को अपनी ताक़त पर भरोसा न हो और वह मुसीबतें उठाने से डरता हो तो वह हमारे साथ न चले! हमें सिर्फ़ ऐसे लोगों की ज़रूरत है जिन्हें हमारी विजय में विश्वास हो! जो लोग हमारे लक्ष्य को न समझते हों वे हमारे साथ न चलें, नहीं तो वे बेकार मुसीबत में फंसेंगे। साथियो, क़तार बना लो! आज़ाद लोगों का त्योहार ज़िन्दाबाद! मई दिवस ज़िन्दाबाद!"

भीड़ बढ़ती गयी। पावेल ने झंडा उठा लिया और जब वह उसे लेकर आगे बढ़ा तो झंडा लहराने लगा; वह सूर्य के प्रकाश में चमक रहा था और उसकी लहरों में एक मुस्कराहट अंगड़ाइयां ले रही थी...

फ़्योदोर माज़िन ने गाना शुरू किया:

"ये सौ बरस के बंधन..."

दर्जनों और स्वरों का मंद प्रबल प्रवाह उस स्वर में मिल गया:

"हम आज करेंगे भंग!.."

मां माज़िन के पीछे चल रही थी; उसके होंटों पर एक हर्ष-भरी मुस्कराहट खेल रही थी, फ़्योदोर के सिर के ऊपर से वह झंडे और अपने बेटे को देख सकने के लिए आंखों पर ज़ोर दे रही थी। उसके चारों ओर हर्ष-भरे चेहरे और हर रंग की आंखें थीं और उसका बेटा और अन्द्रेई उसके आगे-आगे चल रहे थे। वह उन दोनों के गाने की आवाज़ सुन रही थी, अन्द्रेई की सुरीली आवाज़, पावेल की भारी आवाज़ सुन रही थी, अन्द्रेई की सुरीली आवाज़ पावेल की भारी आवाज़ में मिलकर एक हो गयी थी:

"उठ जाग, ओ भूखे बंदी,
अब खींचो लाल तलवार!.."

लोग भाग-भागकर झंडे की तरफ़ आ रहे थे। भागते हुए वे चिल्लाते

जा रहे थे पर उनके चिल्लाने की आवाज़ गीत की आवाज़ में डूबी जा रही थी – उसी गाने की आवाज़ में जिसे घर पर दूसरे गानों की अपेक्षा धीमे स्वर में गाया जाता था। यहां सड़क पर वह गीत बिना किसी रोकटोक के गूंज रहा था और उसमें बहुत ज़ोर पैदा हो गया था। उस गीत में अदम्य साहस की गूंज थी और जहां उसमें लोगों का भविष्य की ओर जानेवाले लम्बे मार्ग को अपनाने का आवाहन किया गया था वहां यह भी स्पष्ट रूप से कह दिया था कि वह मार्ग कितना कठिन होगा। उसकी अखंड ज्योति ने हर उस चीज़ के अंधकार को निगल लिया था जो अपना महत्व खो चुकी थी, परम्परागत भावनाओं के सारे कचरे को साफ़ कर दिया था और नूतन के प्रति जो भय था उसे इस ज्योति ने जलाकर राख कर दिया था...

सहसा एक भयभीत और खिला हुआ चेहरा मां के बग़ल में दिखायी दिया और ऊंचा, करुण स्वर सुनायी पड़ा:

"मीत्या, कहां जा रहा है?"

"जाने दो उसे," मां ने बग़ैर रुके हुए कहा। "उसकी चिन्ता न करो! शुरू में मुझे भी डर लगता था। मेरा बेटा तो सबसे आगे है – वह जो झंडा लिये है!"

"नादानो, तुम कहां जा रहे हो? आगे सिपाही खड़े हैं!"

उस औरत ने जो लम्बे क़द की और बिल्कुल सूखी हुई थी, सहसा अपने खपच्ची जैसे हाथ से मां को पकड़ लिया:

"और, देखो, गा भी तो क्या खूब रहे हैं!" उसने चिल्लाकर कहा। "और मेरा मीत्या भी गा रहा है।"

"डरो नहीं!" मां ने समझाते हुए कहा। "उनका ध्येय बहुत पवित्र है... ज़रा सोचो – यदि लोगों ने ईश्वर के लिए अपने प्राणों की बलि न दी होती तो ईसा मसीह का कोई नाम भी न जानता!"

यह विचार सहसा मां के मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया और इस सीधे-सादे स्पष्ट सत्य ने उसे पूरी तरह अपने वश में कर लिया। मां ने उस औरत पर नज़र डाली जो अब तक उसका हाथ पकड़े हुए थी।

"यदि लोगों ने ईश्वर के लिए अपने प्राणों की आहुति न दी होती तो ईसा मसीह का कोई नाम भी न जानता," उसने एक विस्मय-भरी मुस्कराहट के साथ ये शब्द दुहराये।

सिज़ोव उसके बग़ल में आ गया।

"आज तो खुलकर सामने आ गया, है न?" उसने टोपी उतारकर गीत की ताल पर उसे हिलाते हुए कहा। "गाना भी बना लिया। और मां, गाना भी कैसा, बढ़िया है, ठीक है न?"

"ज़रूरत जवानों की है ज़ार को
तू भरती करा अपने लाल को..."

"उन्हें किसी का भी डर नहीं है!" सिज़ोव ने कहा। "और मेरा बेटा बेचारा अपनी क़ब्र में..."

मां का दिल तेज़ी से धड़कने लगा, इसलिए वह पीछे रह गयी। शीघ्र ही वह धक्के खाकर एक तरफ़ को हट गयी और एक चहारदीवारी से जा लगी; लोगों की भीड़ एक लहर की तरह उसके पास से गुज़र गयी। बहुत से लोग थे और उसे इसी बात की ख़ुशी थी।

"उठ जाग, ओ भूखे बंदी!.."

ऐसा मालूम होता था कि पीतल के एक बड़े-से भोंपू में से गीत निकलकर हवा में गूंज रहा है, लोगों में जागृति पैदा कर रहा है; कुछ लोगों को लड़ने के लिए तत्पर कर रहा है और कुछ दूसरे लोगों में एक तीव्र उत्सुकता, किसी नये सुख की एक अस्पष्ट सी भावना उत्पन्न कर रहा है; कहीं उसने क्षीण आशाएं जागृत कीं तो कहीं बरसों से घुटते हुए क्रोध की ज्वाला भड़का दी। सब की आंखें उसी ओर देख रही थीं जहां आगे लाल झंडा हवा में लहरा रहा था।

"देखो वे आ रहे हैं!" किसी ने आवेश में गरजकर कहा। "शा-बाश, नौजवानो!"

और चूंकि उस व्यक्ति के हृदय में कोई इतनी तीव्र भावना भरी हुई थी जिसे वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता था इसलिए उसने एक मोटी-सी गाली दी। परन्तु दास-प्रवृत्तिवाली कुत्सा, अंधी और मनहूस कुत्सा भी उस सांप की फुफकार की भांति सुनायी दे रही थी जो सूर्य के प्रकाश से भाग रहा हो।

"नास्तिक कहीं के!" एक आदमी ने खिड़की से अपना मुक्का तानकर दिखाते हुए चीख़कर कहा।

"महाराजाधिराज के ख़िलाफ़ बग़ावत, सम्राट के ख़िलाफ़ बग़ावत?

विद्रोह ? " किसी दूसरे आदमी की तेज़ आवाज़ सुनायी दी।

नर-नारियों के विशाल जन-समुदाय में, जो एक प्रबल प्रवाह की तरह आगे बढ़ रहा था, मां ने चिन्ताग्रस्त चेहरे देखे। गीत से प्रेरित होकर जन-समुदाय ज्वालामुखी के लावा की तरह आगे बढ़ता जा रहा था ; ऐसा प्रतीत होता था कि गीत के प्रवाह में हर चीज़ बही जा रही है, अपने सम्पर्क मात्र की शक्ति से वह मार्ग प्रशस्त करता जा रहा था। मां ने बहुत दूर आगे लाल झंडे को देखा और उसकी कल्पना में अपने बेटे की आकृति घूम गयी – कांसे का ढला हुआ-सा उसका ललाट और दृढ़ विश्वास की ज्योति से चमकती हुई उसकी आंखें।

मां जुलूस में सबसे पीछे रह गयी थी ; वह अब ऐसे लोगों के बीच में थी जो बड़े निश्चिंत भाव से चल रहे थे और चारों ओर इस बेपरवाही से देख रहे थे मानो वे कोई ऐसा नाटक देख रहे हों जिसका अन्त उन्हें पहले से ही मालूम हो। वे आवेशरहित स्वर में, पर दृढ़ विश्वास के साथ बातें कर रहे थे :

"एक टुकड़ी स्कूल में तैनात है और दूसरी फ़ैक्टरी में ..."

"गवर्नर साहब आ गये हैं ..."

"सच ?"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है – अभी तो आये हैं !"

"तो हम लोगों से डर गये !" संतोष की सांस लेते हुए उसने एक गाली दी। "ज़रा सोचो – इतना फ़ौज-फ़ाटा और गवर्नर साहब ख़ुद !"

"ओह, मेरे लाड़लो !" मां सोच रही थी।

परन्तु यहां जो शब्द वह सुन रही थी वे उसे उत्साहरहित और निष्प्राण प्रतीत हुए। उसने इन लोगों से आगे निकल जाने के लिए अपने क़दम तेज़ किये ; उनसे आगे निकल जाना कोई मुश्किल नहीं था क्योंकि वे बहुत धीरे-धीरे शिथिल चाल से चल रहे थे।

सहसा ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे जुलूस का अगला भाग किसी चीज़ से टकराया और एक भयभीत गर्जन के साथ पूरा जन-समुदाय पीछे हटने लगा। गीत भी एक बार कांप गया, परन्तु फिर वह पहले से भी ऊंचे स्वर में और तेज़ लय के साथ गूंज उठा। थोड़ी देर बाद गीत मंद पड़ने लगा। एक-एक करके लोग गाना बंद करते जा रहे थे। अलग-अलग कुछ आवाज़ें सुनायी दे रही थीं जो गीत को फिर पहले जैसा गौरव प्रदान करने का प्रयत्न कर रही थीं :

13–1065

"उठ जाग, ओ भूखे बंदी!
अब खींचो लाल तलवार! .."

परन्तु अब इस प्रयास में सब का बल, सब की एकबद्ध आस्था शामिल नहीं थी। अब उनके स्वरों में आतंक की प्रतिध्वनि थी।

चूंकि मां को जुलूस का अगला हिस्सा नहीं दिखायी दे रहा था और उसे मालूम नहीं था कि क्या हुआ था, इसलिए वह भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ने लगी। आगे बढ़ते हुए वह पीछे हटनेवालों से बार-बार टकरा जाती थी; कुछ लोगों की त्योरियों पर बल थे, कुछ सिर झुकाये हुए थे, कुछ अन्य लोग खिसियायी हुई हंसी हंस रहे थे और कुछ ऐसे भी थे जो व्यंगपूर्वक सीटी बजा रहे थे। मां ने उनके चेहरों को ध्यान से देखा; उसकी आंखों में जिज्ञासा, निवेदन, विनय सभी कुछ ती था...

"साथियो!" पावेल का स्वर सुनायी दिया। "सिपाही भी हमारे जैसे ही लोग हैं। वे हम पर हाथ नहीं उठायेंगे। और वे उठायें भी क्यों? बस इसलिए कि हम ऐसे सत्य की बात करते हैं जिसे हर आदमी को जानना चाहिये? उन्हें भी इस सत्य की बात को सुनना चाहिये। वे अभी इस बात को नहीं समझते पर जल्द ही वह समय आयेगा जब वे हत्या और लूट के झंडे के नीचे हमारा विरोध करने के बजाय आज़ादी के झंडे के नीचे हमारे कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे। और उनमें इस सत्य की समझ-बूझ जल्दी पैदा करने के लिए हमें आगे बढ़ते रहना चाहिये। आगे बढ़ो, साथियो! एक क़दम भी पीछे न हटो!"

पावेल के स्वर में दृढ़ता थी। उसके शब्दों में उत्साह की गूंज थी और उसका स्वर स्पष्ट था, फिर भी भीड़ तितर-बितर हो रही थी, एक-एक करके लोग जुलूस से बाहर निकलकर या तो घरों में घुस रहे थे या चहारदीवारियों का सहारा लेकर खड़े होते जा रहे थे। जुलूस अब आगे से पतला और पीछे चौड़ा हो गया था; सबसे आगे पावेल था जिसके सिर के ऊपर मज़दूरों का लाल झंडा लहरा रहा था। या शायद यह कहना अधिक उचित होगा कि जुलूस उड़ने को तैयार पंख फैलाये हुए एक काले पक्षी के समान था और पावेल उसके शीर्षस्थान पर था...

सड़क के सिरे पर मां ने बिल्कुल एक जैसे लगनेवाले व्यक्तियों की भूरी-सी दीवार खड़ी देखी। उन्होंने चौक में प्रवेश करने का मार्ग रोक रखा था। हर आदमी के कंधे पर संगीन की क्रूर चमक थी। उस निःशब्द, निश्चल दीवार की ओर से एक सर्द झोंका आया और मज़दूरों पर छा गया, मां का हृदय कांप उठा।

मां भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ती जा रही थी, वह उस स्थान पर पहुंचना चाहती थी जहां झंडे के गिर्द उसके जाने-पहचाने लोग कुछ अनजान लोगों के साथ एकत्रित थे; उसके मित्र इन्हीं अनजान लोगों की सहायता ले रहे थे। वह एक लम्बे-से आदमी से सटी हुई खड़ी थी, जिसका सिर घुटा हुआ था और एक आंख नहीं थी। इसलिए मां को देखने के लिए उसे अपनी गरदन आधी घुमानी पड़ी।

"क्या बात है? तुम कौन हो?.." उसने पूछा।

"मैं पावेल व्लासोव की मां हूं!" मां ने कहा; उसे इस बात का पूरा आभास था कि उसके पैर कांप रहे हैं और लाख रोकने पर भी उसका निचला होंट फड़क रहा है।

"ओहो!" काने ने कहा।

"साथियो!" पावेल कह रहा था। "मरते दम तक हमें आगे बढ़ते रहना है। हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है!"

लोग शान्त हो गये और उनकी उत्सुकता बढ़ गयी। झंडा ऊंचा उठकर एक क्षण को डगमगाया और फिर लोगों के सिरों पर से होता हुआ धीरे-धीरे सिपाहियों की उस भूरी दीवार की तरफ़ बढ़ा। मां कांप उठी और उसने एक आह भरकर अपनी आंखें बंद कर लीं: चार आदमी – पावेल, अन्द्रेई, समोइलोव और माज़िन – बाक़ी भीड़ से आगे बढ़ गये थे।

फ़्योदोर माज़िन का स्पष्ट स्वर हवा की लहरों पर गूंज उठा:

"बलिदान तुम्हारा उच्च महान ..."

और मंद स्वर में एक गहरी आह की तरह गीत की दूसरी पंक्ति सुनायी दी।

"युद्ध अनोखा ... दे दी जान ..."

फ़्योदोर की आवाज़ एक ज्योतिर्मय पथ प्रशस्त करती हुई गूंज रही थी ; उसके स्वर में विश्वास था और इसी विश्वास की वह घोषणा कर रहा था :

"जो कुछ था सर्वस्व लुटाया ..."

उसके साथियों ने दूसरी पंक्ति उसके साथ दुहरायी :

"आज़ादी के लिए चुकाया ..."

"अच्छा !" किसी ने एक तरफ़ से फब्ती कसी। "सुअर के बच्चे, मातम कर रहे हैं ! .."

"इसका मुंह तोड़ दो !" किसी ने क्रुद्ध होकर कहा।

मां ने सीने पर हाथ रखकर चारों ओर नज़र दौड़ायी। उसने देखा कि जो भीड़ पूरी सड़क पर खचाखच भरी हुई थी, उन झंडेवाले चार लोगों को आगे बढ़ता देखकर स्वयं आगे बढ़ने से हिचकिचा रही थी। केवल कुछ दर्जन लोग उनके साथ गये पर हर क़दम पर कोई न कोई पीछे रुक जाता था मानो सड़क की पटरी पर आग बिछी हो जिससे उनके तलवे जल रहे हों।

"मरण-दिवस हिंसा का होगा ..."

फ़्योदोर भविष्य की घोषणा कर रहा था ...

"मनुज नींद से जागा होगा ! .."

उसके उत्तर में कई दृढ़ स्वरों ने मिलकर चेतावनी दी।

परन्तु गाने के साथ ही लोग भयभीत होकर कुछ कानाफूसी भी कर रहे थे।

"अब हुकुम मिलने ही वाला है ..."

और उनका भय ठीक निकला ; आगे से एक कर्कश स्वर सुनायी दिया :

"बंदूकें तान लो!"

फ़ौलाद की संगीनें आगे बढ़ते हुए झंडे के मुक़ाबले पर आ गयीं; ऐसा प्रतीत होता था कि संगीनें झंडे पर तिरस्कार से हंस रही हैं।

"आगे बढ़ो!"

"लो, वे आ रहे हैं!" काने ने अपने हाथ दोनों जेबों में डालते हुए कहा और एक तरफ़ को हट गया।

मां एकटक देखती रही। सिपाही पूरी सड़क को घेरकर आगे बढ़े; मानो एक भूरी लहर उठी हो; यह लहर क्रूर निश्चय के साथ आगे बढ़ रही थी और उसके शिखर पर संगीनों की रुपहली चमक थी। जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाती हुई मां अपने बेटे के और निकट जा पहुंची और उसने देखा कि अन्द्रेई अपने लम्बे-चौड़े शरीर की आड़ में पावेल को छुपा लेने के लिए उसके सामने आ गया था।

"कामरेड, अपनी जगह वापस लौट जाओ!" पावेल ने कड़ककर कहा।

अन्द्रेई गर्दन ताने दोनों हाथ पीठ के पीछे किये गा रहा था। पावेल ने उसे कंधे से ठेलते हुए एक बार फिर चिल्लाकर कहा:

"पीछे हटो! तुम्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है! झंडा सबसे आगे रहेगा!"

"यहां से हट जाओ!" एक दुबले-पतले नाटे से अफ़सर ने तलवार चमकाते हुए बारीक आवाज़ में आज्ञा दी। वह अपनी टांगों को सीधा तानकर घुटने मोड़े बिना चल रहा था और ज़मीन पर पैर बहुत पटककर रखता था। मां की नज़र उन चमकते फ़ौजी बूटों पर पड़ी।

उसके एक तरफ़ कुछ पीछे एक लम्बा-सा आदमी चल रहा था जिसका सिर घुटा हुआ था और घनी-घनी सफ़ेद मूंछें थीं। वह लाल अस्तरवाला लम्बा-सा भूरा कोट पहने था और उसके पतलून पर बग़ल की तरफ़ चौड़ी-चौड़ी पीली पट्टी लगी हुई थी। उक्रइनी की तरह वह भी अपने हाथ पीठ के पीछे किये चल रहा था। उसकी आंखें पावेल पर जमी हुई थीं और उसकी घनी भवें तनी हुई थीं।

मां की आंखों के सामने जो कुछ था उसे वह एक नज़र में नहीं समेट पा रही थी। उसके हृदय में एक करुण चीत्कार हर सांस के साथ बाहर फूट निकलने की धमकी दे रहा था; इस दबे हुए चीत्कार के कारण उसका दम घुटा जा रहा था, पर अपना सीना थामकर वह इस चीत्कार को रोके रही। लोगों ने उसे धक्का दिया और वह लड़-

खड़ाते हुए क़दमों से बिना कुछ सोचे लगभग चेतनाविहीन आगे बढ़ती रही। उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे-जैसे वह क्रूर लहर आगे बढ़ती आ रही थी, उसके पीछे की भीड़ छंटती जा रही थी।

जो लोग लाल झंडा लिये हुए थे उनके और भूरी वर्दियोंवाले लोगों की ठोस लहर के बीच फ़ासला कम होता जा रहा था। मां को अब सिपाहियों की सामूहिक आकृति दिखायी दे रही थी – एक विकृत चेहरे को ठोंक-पीटकर गंदे पीले रंग की क़तार का रूप दे दिया गया था, जो सड़क के आर-पार फैली हुई थी और जिसमें इधर-उधर विभिन्न रंगों की आंखें लगी हुई थीं। इस क़तार के सामने संगीनों की क्रूर नोकें चमक रही थीं, जो जुलूस में चलनेवालों के सीनों को अपना निशाना बनाये हुए थीं। उन्हें छुए बिना ही फ़ौलाद की ये संगीनें उन्हें एक-एक करके काटे दे रही थीं। भीड़ छंटती जा रही थी।

मां ने अपने पीछे लोगों के भागने की आवाज़ सुनी, लोग उत्तेजित स्वर में चिल्ला रहे थे:

"भागो, भागो! .."

"व्लासोव, भाग आओ! .."

"पावेल, पीछे हट आओ!"

"पावेल, झंडा नीचे झुका लो!" वेसोवश्चिकोव ने गंभीर स्वर में कहा। "मुझे दे दो, मैं छुपा दूंगा!"

उसने बढ़कर झंडे का बांस पकड़ लिया और झंडा पीछे को झुक गया।

"छोड़ दो!" पावेल ने चिल्लाकर कहा।

निकोलाई ने जल्दी से अपना हाथ खींच लिया मानो जल गया हो। गीत बंद हो गया। लोग रुक गये और पावेल के गिर्द एक ठोस दीवार का घेरा बनाकर खड़े हो गये, पर वह आगे बढ़ता ही रहा। सहसा अप्रत्याशित रूप से घोर निस्तब्धता छा गयी, मानो एक अदृश्य बादल ने आकाश से उतरकर सब लोगों को ढक लिया हो।

कोई बीस आदमी झंडे को घेरे खड़े थे – बीस से ज़्यादा न रहे होंगे – पर वे अटल खड़े थे। अपनी चिन्ता और उनसे कुछ कहने की एक अस्पष्ट-सी इच्छा के वश मां उनकी ओर खिंची जा रही थी...

"लेफ़्टिनेंट, छीन लो इनके हाथ से!" उस लम्बे-से बूढ़े आदमी ने झंडे की ओर इशारा करके कहा।

उस नाटे अफ़सर ने पावेल की तरफ़ झपटकर झंडा पकड़ लिया।

"छोड़ दो!" वह चिल्लाया।

"हाथ हटा लो!" पावेल ने भी ऊंचे स्वर में कहा।

झंडा हवा में डगमगाया, पहले दाहिनी ओर झुका, फिर बायीं ओर और फिर सीधा खड़ा हो गया। वह नाटा अफ़सर उछलकर पीछे हटा और ज़मीन पर बैठ गया। निकोलाई अपना मुक्का हिलाता तेज़ी से झपटता हुआ मां के सामने से गुज़रा।

"गिरफ़्तार कर लो इन्हें!" बूढ़ा पांव पटककर चिल्लाया।

कई सिपाही आगे बढ़े। एक ने अपनी बंदूक़ का कुन्दा घुमाया। झंडा कांपकर आगे गिरा और सिपाहियों के भूरे रंग के समूह में खो गया।

"हाय, मेरा लाल!" किसी का करुण क्रन्दन सुनायी दिया।

मां एक घायल पशु की तरह चिल्ला उठी। उसके उत्तर में सिपाहियों के बीच से पावेल का स्पष्ट स्वर सुनायी दिया:

"विदा, मां! विदा, मेरी प्यारी मां..."

मां के मस्तिष्क में केवल दो विचार आये: "वह ज़िन्दा है! उसने मुझे याद किया!"

"विदा, मां!" उक्राइनी का स्वर सुनायी दिया।

वह उन्हें एक बार देख पाने के लिए पंजों के बल खड़ी हो गयी। सिपाहियों के सिर से ऊपर उसे अन्द्रेई की सूरत दिखायी दी। वह मुस्करा रहा था और सिर झुकाकर उसे सलाम कर रहा था।

"आह, मेरे बच्चो... अन्द्रेई! .. पावेल! .." मां ने चिल्लाते हुए कहा।

"विदा, साथियो!" उन्होंने सिपाहियों के बीच से चिल्लाकर कहा।

एक छिन्न-विच्छिन्न प्रतिध्वनि ने, जिसमें कई स्वर सम्मिलित थे, उनका उत्तर दिया। यह प्रतिध्वनि खिड़कियों से, कहीं ऊपर से शायद छतों पर से आ रही थी।

२६

किसी ने मां के सीने पर घूंसा मारा। धुंधली आंखों से उसने अपने सामने खड़े हुए एक नाटे-से अफ़सर का क्रोध से तमतमाया हुआ लाल चेहरा देखा।

"चल हट यहां से, बुढ़िया!" उसने चिल्लाकर कहा।

मां ने उस पर एक सरसरी-सी नज़र दौड़ायी। उसके पांवों के पास मां ने झंडे का बांस दो टुकड़ों में टूटा हुआ पड़ा देखा, एक सिरे पर अब तक लाल कपड़े का टुकड़ा बंधा हुआ था। मां ने झुककर उसे उठा लिया। अफ़सर ने उसके हाथ से झंडा छीनकर उसे एक तरफ़ ढकेल दिया।

"मैं कहता हूं, हट जाओ यहां से!" उसने पांव पटककर चिल्लाते हुए कहा।

सिपाहियों के घेरे में से गीत की आवाज़ आयी:

"उठ जाग, ओ भूखे बंदी ..."

मां की आंखों के आगे हर चीज़ घूम रही थी, तैर रही थी और कांप रही थी। हवा में एक भयानक गूंज थी, जैसे तार के खंभों की भनभनाहट होती है। अफ़सर झपटकर आगे बढ़ा।

"बंद करो यह गाना!" उसने रोष से अपनी बारीक आवाज़ में चिल्लाकर कहा। "सार्जेन्ट-मेजर क्राइनोव ..."

लड़खड़ाते हुए क़दमों से मां वहां तक गयी जहां वह टूटा हुआ बांस का टुकड़ा पड़ा था और उसे उठा लिया।

"बंद कर दो इनके मुंह!"

गीत लड़खड़ाया, थर्राया और कांपकर बंद हो गया। किसी ने मां के कंधे पर हाथ रखा और उसे पीछे घुमाकर एक धक्का दे दिया ...

"चलो, चलो यहां से ..."

"हट जाओ सड़क पर से!" अफ़सर चिल्लाया।

मां ने कुछ दूर पर एक दूसरी भीड़ देखी। वे लोग धीरे-धीरे सड़क पर पीछे हटते हुए चिल्लाते, गालियां देते और सीटियां बजाते हुए घरों की चहारदीवारियों के पीछे हो जाते।

"चल यहां से, चुड़ैल!" एक नौजवान सिपाही ने बिल्कुल मां के कान में चिल्लाकर कहा और उसे सड़क की पटरी पर ढकेल दिया।

वह झंडे का बांस टेकती हुई चल दी; उसके शरीर में बिल्कुल जान नहीं रह गयी थी। दूसरे हाथ से वह दीवारों और चहारदीवारियों का सहारा लेती हुई चल रही थी कि कहीं गिर न पड़े। लोग उससे कतराकर निकल जाते; उसके पीछे और बग़ल में कुछ सिपाही चल

रहे थे जो लगातार यही चिल्ला रहे थे :

"चलो, हटो यहां से..."

मां ने उन्हें आगे निकल जाने दिया और फिर रुककर चारों ओर उन सिपाहियों को देखा, जो चौक में घुसने का रास्ता रोके खड़े थे; चौक ख़ाली पड़ा था। उसके सामने भूरी वर्दियां पहने हुए जो सिपाही थे वे लोगों को पीछे ठेलते जा रहे थे...

उसका जी चाहा कि वह पीछे हट जाये पर अनायास ही वह आगे बढ़ती रही और एक पतली-सी सुनसान गली के नुक्कड़ पर पहुंचकर उसमें मुड़ गयी।

कुछ दूर चलकर वह फिर रुक गयी और एक लम्बी आह भरकर सुनने लगी। सामने कहीं से उसे भीड़ का कोलाहल सुनायी दिया।

बांस टेकती हुई वह फिर आगे बढ़ी। उसकी भवें फड़क रही थीं, वह अचानक पसीने में नहा गयी थी, उसके होंट हिल-डुल रहे थे, वह अपना हाथ झटक रही थी और उसके मस्तिष्क में बिखरे हुए शब्द चिंगारियों की तरह चमक रहे थे; इन चिंगारियों ने बढ़ते-बढ़ते एक ज्वाला का रूप धारण कर लिया; उसकी उत्कट इच्छा हुई कि वह इन शब्दों को बाहर निकाले, इन्हें ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहे...

गली आगे जाकर यकायक बायीं तरफ़ मुड़ गयी और वहां मां ने बहुत-से लोगों को झुंड बांधकर खड़े देखा।

"भाई, संगीनों की बाड़ का मुक़ाबला करना कोई हंसी-मज़ाक नहीं होता!" किसी ने ऊंचे और दृढ़ स्वर में कहा।

"पहले कभी देखा था ऐसा? किस तरह वे लोग आगे बढ़ती हुई संगीनों के सामने सीना ताने खड़े रहे? चट्टान की तरह, बिल्कुल निडर..."

"अब समझ में आया पावेल व्लासोव क्या है!.."

"और वह उक्रइनी?"

"हाथ पीछे किये बराबर मुस्कराता रहा, बड़ा निडर है वह भी!.."

"दोस्तो!" मां ने धक्का देकर उनके बीच में पहुंचकर चिल्लाकर कहा। उन्होंने बड़े आदर से उसके लिए रास्ता कर दिया। कोई हंस पड़ा:

"देखा, वह झंडा ले आयी! झंडा उसके हाथ में है!"

"चुप रहो!" किसी ने कठोर स्वर में कहा।

मां दोनों हाथ फैलाकर बोलने लगी:

"सुनो – भगवान के लिए मेरी बात सुनो! तुम सब भले लोग हो, मुझे बहुत प्यारे हो... आज जो कुछ हुआ उससे डरो नहीं। सब के लिए इंसाफ़ की ख़ातिर हमारे बच्चे, हमारे कलेजे के टुकड़े मैदान में निकल आये हैं! उन्होंने तुम सब के जीवन को सुखी बनाने के लिए यह झंडा उठाया है। वे एक नया जीवन चाहते हैं – सत्य और न्याय का जीवन... वे सब लोगों की भलाई चाहते हैं!"

मां का कलेजा फटा जा रहा था और उसका गला सूख रहा था। उसके हृदय की गहराई से नये महान शब्द उत्पन्न हो रहे थे – ऐसे शब्द जो सबसे प्रेम करना सिखाते थे, जो उसकी ज़बान को चिंगारियों की तरह जलाकर उसे प्रवाह और उत्साह के साथ बोलने पर बाध्य कर रहे थे।

वह देख रही थी कि सभी लोग चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे और उसे ऐसा लगा कि वे कुछ सोच रहे हैं। उसके अन्दर यह इच्छा उत्पन्न हुई, और अब वह इस इच्छा को अच्छी तरह समझ रही थी, कि वह उनसे अपने बेटे और अन्द्रेई और उन तमाम लोगों का अनुसरण करने का आग्रह करे, जिन्हें उन्होंने सिपाहियों के हाथ में पड़ जाने दिया था, जिन्हें उन्होंने उनके भाग्य पर छोड़ दिया था।

अपने चारों ओर खड़े हुए लोगों पर, जो एकाग्रचित्त होकर बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहे थे, एक सरसरी-सी नज़र डालकर वह कोमल शब्दों में आग्रह करती रही:

"हमारे बच्चे सुख की खोज में लड़ाई के मैदान में उतरे हैं और उन्होंने यह हम सब की ख़ातिर किया है, उस सत्य के लिए किया है जिसके लिए ईसा मसीह ने अपने प्राण दिये थे। वे उन तमाम चीज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मैदान में उतरे हैं जिन्हें पापी लोगों ने, झूठे और लालची लोगों ने, हमें बांधने के लिए, हमारी आवाज़ बंद करने के लिए, हमें कुचल देने के लिए इस्तेमाल किया है! प्यारे भाइयो, ये नौजवान हम सब की ख़ातिर, सारी दुनिया की ख़ातिर, हर जगह के मज़दूरों की ख़ातिर कमर बांधकर मैदान में आये हैं!.. उनका साथ न छोड़ो, उनकी तरफ़ से मुंह न मोड़ो, अपने बच्चों को अकेले आगे बढ़ने पर मजबूर न करो। अपनी हालत पर विचार करो... अपने बच्चों के साहस पर विश्वास रखो, जिन्होंने सत्य की घोषणा की है और उसके लिए मुसीबतें उठा रहे हैं। उन पर भरोसा रखो!"

उसका स्वर रुंध गया और वह लड़खड़ा गयी; उसे मूर्च्छा आ रही थी। किसी ने बढ़कर उसे थाम लिया...

"सोलह आने खरी बात कर रही है!" किसी ने उत्तेजित स्वर में कहा। "सोलह आने सच! समझे!"

"देखो तो बेचारी कितनी मुसीबत उठा रही है!" किसी ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा।

"अरे, खुद तो मुसीबतें नहीं उठा रही है, हम मूरखों को धिक्कार रही है!" किसी दूसरे ने डांटकर कहा।

"ईसा के भक्तो!" एक औरत ने ऊंची कांपती हुई आवाज़ में कहा। "मेरा मीत्या – वह बिल्कुल साफ़ दिल का आदमी है! आख़िर उसने क्या बुराई की? यही न कि अपने साथियों के पीछे-पीछे गया, वह उन्हें प्यार करता था... यह ठीक ही कहती हैं कि हम अपने बच्चों को मुसीबत में अकेला क्यों छोड़ दें? उन्होंने कौन-सी ग़लती की है?"

ये शब्द सुनकर मां कांप गयी और चुपके-चुपके रोने लगी।

"पेलागेया निलोवना, घर जाओ!" सिज़ोव ने कहा। "जाओ, मां! बस, आज बहुत हो गया!"

उसका चेहरा उतरा हुआ और दाढ़ी उलझी हुई थी। सहसा वह तनकर खड़ा हो गया और उसने चारों ओर एक कठोर दृष्टि डाली।

"तुम सब लोगों को मालूम है कि मेरा बेटा मत्वेई कारखाने में काम करता हुआ मारा गया," उसने स्पष्ट स्वर में कहना शुरू किया। "लेकिन आज अगर वह ज़िन्दा होता तो मैं खुद उसे इन लोगों के साथ भेज देता, उन लोगों के साथ जो आज पकड़े गये हैं। मैं खुद उससे कहता, 'मत्वेई, तू भी जा! यही सच्चा रास्ता है, ईमानदारी का रास्ता है!'"

सहसा वह बोलते-बोलते रुक गया। बाक़ी सब लोग भी चुप थे। किसी नयी और विशाल शक्ति ने उन्हें अपने वश में कर लिया था, पर अब ये लोग उससे डरते नहीं थे। सिज़ोव ने अपना मुक्का हवा में उठाकर हिलाया और बोला:

"मैं एक बूढ़ा आदमी तुम्हारे सामने बोल रहा हूं। तुम सब लोग मुझे जानते हो! मैंने इस पृथ्वी पर तिरपन बरस बिताये हैं, और उनतालीस बरस से मैं यहां काम कर रहा हूं। आज उन्होंने फिर मेरे भतीजे को गिरफ़्तार किया; वह बहुत अच्छा और होशियार लड़का

है। वह भी व्लासोव के बग़ल में, ठीक झंडे के पास सबसे आगे चल रहा था..."

उसने अपना हाथ हिलाया और ऐसा मालूम हुआ कि जैसे उसके शरीर से कुछ जान निकल गयी हो। उसने मां का हाथ पकड़कर कहा:

"इस औरत ने जो कुछ कहा वह सच है। हमारे बच्चे ईमानदारी और समझदारी का जीवन बिताना चाहते हैं और हमने उन्हें अकेला छोड़ दिया है – सचमुच हमने उनका कोई साथ नहीं दिया है। आओ, पेलागेया निलोवना चलें..."

"मेरे अच्छे लोगो!" मां ने अपनी लाल आंखों से चारों तरफ़ देखते हुए कहा। "जीवन हमारे बच्चों के लिए है, सारी पृथ्वी उन्हीं की है!.."

"जाओ, पेलागेया निलोवना, घर जाओ! लो यह अपनी लाठी," सिज़ोव ने उसके हाथ में झंडे का टूटा हुआ बांस देते हुए कहा।

वे उदास भाव से मां को बड़े आदर की दृष्टि से देखते रहे और दबी ज़बान से सहानुभूति प्रकट करते रहे। सिज़ोव ने चुपचाप उसके लिए रास्ता साफ़ किया और लोग उतनी ही ख़ामोशी से इधर-उधर हट गये। किसी अज्ञात प्रेरणा के वश वे गली में उसके पीछे-पीछे चल पड़े और चलते-चलते वे एक-दूसरे से बहुत ही दबी आवाज़ में दो-चार शब्द कहते जाते थे।

अपने घर के दरवाज़े पर पहुंचकर मां ने उनकी तरफ़ मुड़कर देखा और लाठी पर झुककर कृतज्ञता प्रकट करते हुए कोमल स्वर में कहा:

"धन्यवाद..."

और उस विचार को याद करके – उस नये विचार को जो उसके हृदय की गहराई से उत्पन्न हुआ था – उसने कहा:

"अगर लोगों ने ईश्वर के नाम पर अपने प्राणों की बलि न दी होती तो ईसा मसीह का कोई नाम भी न जानता..."

जन-समूह चुपचाप टकटकी बांधे उसे देखता रहा।

एक बार फिर उसने झुककर लोगों को सलाम किया और घर के अन्दर चली गयी। सिज़ोव भी सिर झुकाकर उसके पीछे-पीछे अन्दर चला गया।

कुछ देर तक लोग फाटक पर खड़े बातें करते रहे।

फिर वे धीरे-धीरे वहां से चले गये।

भाग २

१

बाक़ी दिन मां की आत्मा और शरीर पर घोर शिथिलता छायी रही और वह स्मृतियों के धुंधलके में खोयी रही। उसकी आंखों के सामने भूरे रंग के एक धब्बे के रूप में वह नाटा अफ़सर, पावेल का कांसे का ढला हुआ-सा चेहरा और अन्द्रेई की हंसती हुई आंखें घूमती रहीं।

वह कमरे में इधर-उधर टहलती रही, फिर जाकर खिड़की के पास बैठ गयी और बाहर सड़क पर देखती रही। थोड़ी देर बाद वह फिर उठी और माथे पर बल डाले इधर-उधर टहलती रही; ज़रा-सी भी कोई आवाज़ होती तो वह चौंक पड़ती और चारों ओर नज़रें दौड़ाती या फिर अकारण ही कुछ ढूंढ़ती रहती। उसने कई बार पानी भी पिया पर वह न तो उसकी प्यास बुझा सका, न उसके सीने के सुलगते हुए घाव और उसकी व्यथा की आग को ही। वह दिन दो टुकड़ों में विभाजित हो गया था – पहले भाग का तो अर्थ था पर दूसरे भाग का कोई अर्थ ही नहीं रह गया था; उसके सामने एक भयानक गर्त्त था और बार-बार यह प्रश्न उसके सामने आकर खड़ा हो जाता था:

"अब मैं क्या करूं? .."

कोरसुनोवा उससे मिलने आयी। वह बहुत हाथ उठा-उठाकर चिल्लायी, रोयी और भावावेश में बह गयी, उसने पांव पटके, धमकियां दीं, वादे किये, न जाने कितने सुझाव रखे, पर मां पर इनमें से किसी का भी असर न हुआ।

"अहा! लोग जान की बाज़ी लगाकर मैदान में आ गये! पूरी फ़ैक्टरी कमर बांधकर उठ खड़ी हुई! पूरी फ़ैक्टरी!" खोमचेवाली की भर्रायी हुई आवाज़ सुनायी दी।

"हां!" मां ने शान्त भाव से सिर हिलाकर कहा, पर उसकी आंखें बीती हुई बातों पर जमी हुई थीं, उन सब बातों पर जो पावेल और अन्द्रेई के साथ ही लोप हो गयी थीं। वह रो भी न सकी – उसका हृदय संकुचित होकर सूख गया था। उसके होंट भी सूख गये थे और उसके मुंह में नमी का नाम तक न था। उसके हाथ कांप रहे थे और उसकी पीठ में थोड़ी-थोड़ी देर बाद सिहरन-सी उठती थी।

उसी रात राजनीतिक पुलिस के सिपाही आये। उनके आने पर उसे कोई विस्मय या भय नहीं हुआ। वे बहुत शोर करते हुए घर

में घुसे और बहुत प्रसन्न और संतुष्ट दिखायी दे रहे थे। पीले चेहरेवाले अफ़सर ने खीसें निकालकर कहा:

"क्या हाल-चाल है? अगर मैं ग़लती नहीं करता तो यह हमारी तीसरी मुलाक़ात है?"

मां अपने होंटों पर केवल अपनी सूखी ज़बान फेरकर चुप रह गयी। अफ़सर बड़ी बातें कर रहा था और उसे उपदेश देने का प्रयत्न कर रहा था। मां समझ गयी कि उसे बातें करने में मज़ा आता है, पर उसकी बातों से उसे झुंझलाहट नहीं हुई; वे उस तक पहुंचीं ही नहीं। परन्तु जब उसने कहा, "इसमें क़सूर आप ही का है, मां, आप ही अपने बेटे को ईश्वर और ज़ार के प्रति उचित श्रद्धा रखना न सिखा सकीं...", तो मां से न रहा गया और उसने दरवाज़े पर ही खड़े-खड़े उसका उत्तर दिया:

"हमारे बच्चे ही हमारे भले-बुरे को परखेंगे," उसने कहा। "जिस समय वे इतने कठिन पथ पर आगे बढ़ रहे थे उस समय हमने उनका साथ छोड़ दिया, वे हमारे इस बरताव का न्याय ख़ुद ही कर लेंगे।"

"क्या कहा?" अफ़सर ने चिल्लाकर कहा। "बोलो!"

"मैंने कहा कि हमारे बच्चे ही हमारे भले-बुरे को परखेंगे!" मां ने आह भरकर उत्तर दिया।

अफ़सर ने क्रुद्ध होकर अस्फुट स्वर में कुछ कहा, पर उसके शब्द मां के कानों तक नहीं पहुंचे।

तलाशी के लिए मारिया कोरसुनोवा को गवाह के रूप में लाया गया। वह पेलागेया के बग़ल में खड़ी थी, पर उसकी ओर देख नहीं रही थी। जब भी अफ़सर उससे कोई सवाल पूछता, वह बहुत झुककर एक ही बात दुहराती:

"हुज़ूर, मुझे मालूम नहीं। मैं तो जाहिल औरत ठहरी, कुछ बेच-बाचकर अपना पेट पालती हूं। मैं तो इतनी नादान हूं कि कुछ भी नहीं जानती..."

"बक-बक मत कर!" अफ़सर ने अपनी मूंछें ऐंठते हुए उसे डांटा। वह फिर पहले की ही तरह झुकी पर ज्यों ही अफ़सर ने अपनी पीठ मोड़ी, वह उसे ठेंगा दिखाकर मां के कान में बोली:

"यह ले!"

जब उसे पेलागेया की तलाशी लेने की आज्ञा दी गयी तो वह आंखें झपकाकर अफ़सर को घूरने लगी।

"मगर हुज़ूर, मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि यह कैसे किया जाता है!" उसने भयभीत स्वर में कहा।

अफ़सर ने पांव पटककर ज़ोर से उसे डपटा। मारिया ने आंखें झुका लीं।

"अच्छा, पेलागेया निलोवना, तो फिर तुम अपने बटन खोलना शुरू करो," उसने मां से कहा।

मां के कपड़ों पर हाथ फेरते समय उसका चेहरा लाल हो गया।

"उफ़, कुत्ते कहीं के!" उसने चुपके से कहा।

"क्या कहा तुमने?" अफ़सर ने कनखियों से उस कोने की तरफ़ देखते हुए चिल्लाकर कहा जहां तलाशी ली जा रही थी।

"हुज़ूर, कुछ नहीं, औरतों की बातें हैं!" मारिया ने भयभीत होकर दबे स्वर में कहा।

आख़िरकार उसने मां से कुछ काग़ज़ों पर दस्तख़त करने को कहा। मां ने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी लिखाई में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा:

"पेलागेया व्लासोवा, एक मज़दूर की विधवा।"

"यह क्या लिखा है तुमने? यह क्यों लिखा?" अफ़सर ने मुंह बनाकर कहा और फिर हंसकर बोला, "जंगली कहीं की..."

वे चले गये। मां दोनों हाथ बांधे खिड़की के पास खड़ी थी और अपलक बाहर घूर रही थी। वह किसी ख़ास चीज़ को देख रही हो ऐसा नहीं था, उसकी भवें तनी हुई थीं और उसने अपने होंट कसकर बंद कर रखे थे; उसके जबड़े तो इतने कसकर भिंचे हुए थे कि शीघ्र ही उसे पीड़ा होने लगी। लैम्प में मिट्टी का तेल ख़त्म हो गया, बत्ती से चिंगारियां निकलने लगीं और लौ भकभकाने लगी। मां ने लैम्प बुझा दिया और अंधेरे में खड़ी रही। अपने हृदय की व्यथा के कारण उसे सांस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। बड़ी देर तक वह इसी तरह खड़ी रही; यहां तक कि उसकी आंखें और पांव दुखने लगे। खिड़की के पास उसने मारिया की आहट और नशीली आवाज़ सुनी:

"सो गयीं, पेलागेया? बेचारी कितनी मुसीबत उठाती है! जाओ, सो जाओ!"

मां कपड़े पहने ही लेट गयी और शीघ्र ही ऐसी गहरी नींद सो गयी मानो किसी गहरे तालाब में डूब गयी हो।

उसने स्वप्न में देखा कि वह दलदल के पार पीली रेत की एक पहाड़ी के पास से होकर शहर की तरफ़ जा रही है। उस

पहाड़ी के कगार पर, जिसके नीचे गड्ढे से रेत खोदी जाती थी, पावेल खड़ा था और अन्द्रेई के मधुर स्वर में गा रहा था:

"उठ जाग, ओ भूखे बंदी! .."

वह माथे पर हाथ रखे अपने बेटे को देखती हुई उस पहाड़ी के पास से गुज़री। नीले आकाश की पृष्ठभूमि में उसकी आकृति बिल्कुल साफ़ दिखायी दे रही थी। उसे अपने बेटे के पास जाने में लाज आ रही थी, क्योंकि वह गर्भवती थी, और अपनी गोद में वह एक और बच्चा लिये हुए थी। चलते-चलते वह एक ऐसे मैदान में पहुंची जहां कुछ बच्चे गेंद खेल रहे थे। बहुत से बच्चे थे और गेंद लाल रंग की थी। उसकी गोद का बच्चा हाथ फैलाकर गेंद के लिए मचलने लगा। मां अपने स्तन से उसे दूध पिलाने लगी और पीछे मुड़ी, पर अब पहाड़ी पर उसे निशाना बनाकर संगीनें ताने हुए सिपाही खड़े थे। मैदान के बीच में एक गिरजा था, वह भागकर उसी की ओर चली गयी। वह एक सफ़ेद रंग का अलौकिक गिरजा था – बहुत ऊंचा और देखने में बादलों का बना हुआ मालूम होता था। कोई दफ़न किया जा रहा था; काले रंग का बड़ा-सा ताबूत मज़बूती से बंद था। बड़े और छोटे पादरी अपनी-अपनी सफ़ेद पोशाकें पहने गिरजे में इधर-उधर घूम-घूमकर गा रहे थे:

"धन्य-भाग्य, ईसा का पुनर्जन्म हुआ..."

छोटे पादरी ने मां को देखकर झुककर उसका अभिवादन किया और धूपदान घुमाते हुए मुस्करा दिया। उसके बाल गहरे लाल रंग के थे और चेहरा समोइलोव जैसा हंसमुख था। गिरजाघर की मीनार के कटावों में से सूरज की किरणें सफ़ेद रूमालों की तरह लहराती हुई अन्दर आ रही थीं। ऊपर सामूहिक गान के दोनों छज्जों में लड़के गा रहे थे:

"धन्य-भाग्य, ईसा का पुनर्जन्म हुआ..."

"गिरफ़्तार कर लो इन्हें!" पादरी गिरजाघर में पहुंचते ही

सहसा रुककर चिल्लाया। उसके पादरियों वाले कपड़े ग़ायब हो गये और उसके ऊपर वाले होंट पर एक मोटी-सी सफ़ेद मूंछ उग आयी। सब लोग भाग गये; छोटे पादरी ने भी धूपदान फेंककर उक्रइनी की तरह अपना सिर पकड़ लिया और भाग खड़ा हुआ। मां ने अपना बच्चा भागते हुए लोगों के क़दमों में धर दिया, पर वे भयभीत आंखों से उसके नंगे शरीर को देखते हुए उससे कतराकर आगे बढ़ गये। मां घुटने टेककर रो-रोकर उनसे कहने लगी:

"मेरे बच्चे को इस तरह न छोड़ जाओ! इसे अपने साथ लेते जाओ..."

उक्रइनी अपने हाथ पीठ के पीछे किये मुस्कराता हुआ गा रहा था:

"धन्य-भाग्य, ईसा का पुनर्जन्म हुआ..."

मां ने झुककर बच्चे को उठा लिया और तख़्तों से लदी हुई एक गाड़ी पर उसे लिटा दिया। निकोलाई गाड़ी के बग़ल में धीरे-धीरे चल रहा था और हंस रहा था।

"तो उन्होंने मुझे यह कठिन काम करने को दिया!" उसने कहा।

सड़कें गंदी थीं और लोग अपने घरों की खिड़कियों से बाहर झुककर चिल्ला रहे थे, सीटियां बजा रहे थे और हाथ हिला रहे थे। मौसम साफ़ था, सूरज तेज़ी से चमक रहा था और कहीं छाया का नाम भी न था।

"गाओ, मां!" उक्रइनी ने ऊंचे स्वर में कहा। "यही ज़िन्दगी है!"

वह ख़ुद गाने लगा और अन्य सभी आवाज़ें उसके गीत की आवाज़ में डूब गयीं। वह चल पड़ा और मां उसके पीछे-पीछे हो ली। सहसा वह ठोकर खाकर एक अथाह गर्त्त में गिर पड़ी जिसका रीतेपन का चीत्कार उसका स्वागत करने को ऊपर आता हुआ सुनायी दिया...

मां की आंखें सहसा खुल गयीं, वह कांप रही थी। ऐसा मालूम हो रहा था कि किसी ने अपने मज़बूत पंजे में उसके दिल को पकड़ रखा है और धीरे-धीरे उसे निचोड़े ले रहा है। फ़ैक्टरी की सीटी लगातार

मज़दूरों को बुला रही थी; मां ने आवाज़ से पहचान लिया कि वह दूसरी सीटी थी। कमरे में किताबें बिखरी हुई थीं, हर चीज़ अस्त-व्यस्त पड़ी थी और फ़र्श पर कीचड़ में सने हुए जूतों के निशान थे।

मां उठी और मुंह-हाथ धोये और प्रार्थना किये बिना ही कमरा साफ़ करने लगी। रसोई में उसकी नज़र झंडे के टूटे हुए बांस पर पड़ी, जिसमें अभी तक लाल कपड़े का एक टुकड़ा बंधा हुआ था। वह उसे उठाकर चूल्हे में डालने ही जा रही थी कि कुछ सोचकर रुक गयी और उसने एक आह भरकर लाल कपड़ा बांस से अलग किया और बड़ी सावधानी से उसे तह करके अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने अपने घुटने पर रखकर बांस को तोड़ा और चूल्हे में डाल दिया। इसके बाद उसने ठंडे पानी से फ़र्श और खिड़कियां धोयीं और समोवार में आग सुलगाकर कपड़े पहन लिये। यह सब कुछ कर चुकने के बाद वह रसोई की खिड़की के पास बैठ गयी और फिर वही प्रश्न उसके सामने आ खड़ा हुआ:

"अब मैं क्या करूं?"

यह याद आते ही कि उसने अभी तक सुबह की प्रार्थना नहीं की है, वह उठकर देव-प्रतिमाओं के ताक़ के पास गयी पर कुछ क्षण तक उनके सामने खड़े रहने के बाद वह फिर बैठ गयी। उसका हृदय शून्य था।

चारों ओर एक विचित्र-सी निस्तब्धता थी। ऐसा मालूम होता था कि जो लोग कल इतने उत्साह से सड़कों पर चिल्ला रहे थे आज अपने घरों में छुप गये थे और उन असाधारण घटनाओं पर विचार कर रहे थे।

सहसा मां को अपनी जवानी का एक क़िस्सा याद आया। ज़ाउसा-इलोव-परिवार की हवेली के पुराने पार्क में एक बड़ा-सा तालाब था जिसमें कुमुदिनी के फूल खिले हुए थे। शरद ऋतु के अन्तिम दिनों की बात है कि एक दिन वह तालाब के पास से होकर गुज़री तो देखती क्या है कि तालाब के बीच में एक नाव खड़ी है। तालाब का जल शान्त और गहरे रंग का था; ऐसा मालूम होता था कि नाव तालाब के गहरे रंग के पानी के साथ, जिस पर मुरझायी हुई पत्तियों का एक उदास जाल बिछा हुआ था, गोंद से चिपका दी गयी है। इस अकेली नाव को देखकर, जिस पर न कोई आदमी था न पतवार,

और जो सूखी पत्तियों के बीच गंदले पानी में निश्चल खड़ी थी, किसी अज्ञात दुर्घटना की गहरी व्यथा का आभास होता था। बड़ी देर तक तालाब के किनारे खड़ी मां सोचती रही कि यह नाव पानी में किसने उतारी होगी और किस उद्देश्य से? उसी दिन शाम उसे मालूम हुआ कि उस जागीर पर काम करनेवाले एक नौकर की पत्नी, जो उलझे-उलझे काले बालों और तेज़ चालवाली औरत थी, तालाब में डूबकर मर गयी थी।

मां ने अपने माथे पर हाथ फेरा और पिछले दिन की स्मृतियों के बीच अन्य विचार बहुत सकुचाते हुए उसके मस्तिष्क में आने लगे। बड़ी देर तक मां इन्हीं स्मृतियों में खोयी हुई बैठी ठंडी चाय के गिलास को घूरती रही और उसके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह किसी सीधे-सादे बुद्धिमान आदमी से बातें करे जो उसके सारे प्रश्नों का उत्तर दे सके।

मानो उसकी इसी इच्छा को पूरा करने के लिए निकोलाई इवानोविच खाना खाने के बाद उससे मिलने आया। पर उसे देखते ही वह सहसा भयभीत हो उठी और उसके सलाम का जवाब दिये बिना ही बोली :

"क्यों आये हो? बड़ी बेवकूफ़ी की तुमने यहां आकर! अगर वे लोग तुम्हें यहां देख लेंगे तो तुम्हें भी पकड़ ले जायेंगे..."

उसने मां का हाथ कसकर दबाया और अपना चश्मा ऊपर सरकाते हुए उसकी तरफ़ झुका।

"पावेल और अन्द्रेई के साथ यह तै हुआ था कि अगर वे गिरफ़्तार कर लिये गये तो दूसरे दिन मैं तुम्हें शहर पहुंचा आऊंगा," उसने जल्दी-जल्दी कहा। उसका स्वर कोमल और सहानुभूति से भरा हुआ था। "क्या यहां तलाशी हुई थी?"

"हां, उन्होंने एक-एक चीज़ की तलाशी ली। ईमान तो जैसे उनमें है ही नहीं। निर्लज्ज कहीं के!" मां ने जलकर कहा।

"लज्जा उनमें आये कहां से?" निकोलाई ने कंधे बिचकाकर कहा और फिर वह मां को समझाने लगा कि उसे शहर में क्यों रहना चाहिये।

मां ने मित्रता और सहानुभूति से भरी हुई उसकी आवाज़ सुनी और धीरे से मुस्करा दी। वह उसकी दलीलें नहीं समझ रही थी पर उसे

आश्चर्य हो रहा था कि उसकी बातों से उसके हृदय में उसके प्रति कितना विश्वास और ममता जागृत हो उठी थी।

"अगर पावेल की ऐसी ही मर्ज़ी थी," मां ने कहा, "और अगर मेरे जाने से तुम्हें कोई..."

"इसकी चिन्ता न करो," उसने बात काटते हुए कहा। "मैं अकेला रहता हूं। बस कभी-कभी मेरी बहन आ जाती है।"

"मगर मैं अपने खर्च का बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं डाल सकती," मां ने कहा।

"अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे लिए कोई काम ढूंढ़ देंगे," निकोलाई ने कहा।

उसके लिए काम की कल्पना अभिन्न रूप से अपने बेटे और अन्द्रेई और उनके साथियों के काम के साथ सम्बद्ध थी। वह निकोलाई के और पास आ गयी और उसकी आंखों में आंखें डालकर देखने लगी।

"सचमुच ढूंढ़ दोगे?" मां ने पूछा।

"मेरे घर में तो कोई काम है नहीं, क्योंकि मैं तो अकेला ही हूं..."

"मैं ऐसे घर के काम की बात नहीं कर रही थी," मां ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

मां ने एक आह भरी; उसे बड़ा दुःख हुआ कि वह उसकी बात समझा नहीं। पर वह अपनी चुंधी आंखें मिचमिचाकर मुस्कराया और विचारमग्न होकर बोला:

"अगर तुम पावेल से उन किसानों का पता मालूम कर सको जिन्होंने हमसे अख़बार निकालने को कहा था, तो..."

"मैं उन्हें जानती हूं!" मां खुश होकर चिल्ला पड़ी। "मैं उनका पता लगा लूंगी और जो भी तुम कहोगे करूंगी! मुझ पर कोई ग़ैर-क़ानूनी प्रचार करने का संदेह भी नहीं करेगा। तुम्हारा भला हो, मैं आखिर फ़ैक्टरी में पर्चे लेकर जाती थी कि नहीं?"

सहसा उसके हृदय में यह तीव्र इच्छा जागृत हुई कि वह कंधे पर झोला डालकर और हाथ में लाठी लेकर जंगलों और गांवों में होती हुई सारे देश का चक्कर लगाये।

"मुझे यह काम सौंपना! मैं कहीं भी जाने को तैयार हूं, तुम देख लेना! मैं हर सूबे की हर सड़क का रास्ता मालूम कर लूंगी।

जाड़ा हो या गर्मी, मरते दम तक मैं भिक्षुणी की तरह फिरती रहूंगी। क्या मेरे लिए यह काम ठीक नहीं है?"

बेघरबारवाली भिक्षुणी के रूप में गांव-गांव में झोपड़ियों के दर पर जाकर ईसा मसीह के नाम पर भीख मांगने की कल्पना करते ही उसका मन उदास हो गया।

निकोलाई बड़े प्यार से उसका हाथ अपने हाथ में लेकर अपनी गर्म हथेलियों से उसे थपकने लगा। फिर वह घड़ी की तरफ़ देखकर बोला:

"बाद में बातें करेंगे!"

"अगर हमारे बच्चे, हमारे कलेजे के टुकड़े, अपनी ज़िंदगी, अपनी आज़ादी सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं, अपनी चिन्ता किये बिना अपने प्राण तक दे सकते हैं, तो मैं मां होकर क्या कुछ नहीं कर सकती?" उसने चिल्लाकर कहा।

निकोलाई का चेहरा उतर गया।

"मैंने अब से पहले किसी के मुंह से ऐसी बातें नहीं सुनीं," उसने बड़े प्यार से मां को एकटक देखते हुए शान्त स्वर में कहा।

"मैं क्या कह सकती हूं?" उसने उदास भाव से अपना सिर हिला दिया और धीरे से अपने हाथ घुमाकर कहा, "मेरे सीने में जो मां का हृदय धड़कता है उसका वर्णन करने के लिए काश मेरे पास शब्द होते..."

वह उठी, उठी नहीं बल्कि किसी प्रबल शक्ति ने उसे उठाया, और क्रोध-भरे शब्दों की एक वेगमयी धारा फूट निकली:

"तो उनमें से बहुत से लोग रो देते–नीच से नीच और निर्लज्ज से निर्लज्ज भी..."

निकोलाई भी उठ खड़ा हुआ और उसने घड़ी की तरफ़ देखा।

"तो यह तै रहा? तुम आकर मेरे साथ शहर में रहोगी?"

मां ने सिर हिला दिया।

"कब? जल्दी से जल्दी!" निकोलाई ने कहा और फिर कोमल स्वर में बोला, "जब तक तुम आ नहीं जाओगी तब तक मुझे तुम्हारी चिन्ता लगी रहेगी।"

मां ने उसे आश्चर्य से देखा। वह उसकी कौन होती थी? मामूली-सा काला कोट पहने हुए उस चुंधे-से आदमी की जिसकी कमर झुक

चली थी, जो वहां खड़ा सिर झुकाये लजाता हुआ मुस्करा रहा था। उसका सारा पहनावा और वह खुद भी उसके लिए अनजाना था ...

"तुम्हारे पास पैसे हैं?" उसने पूछा और फ़ौरन आंखें झुका लीं।

"नहीं!"

जल्दी से उसने जेब में हाथ डालकर अपना बटुआ निकाला और खोलकर सारे पैसे मां के आगे कर दिये।

"लो, यह ले लो ..." उसने कहा।

मां अनायास मुस्करा दी।

"तुम्हारी तो हर बात निराली है!" मां ने सिर हिलाते हुए कहा। "तुम्हारे लिए तो पैसे का भी कोई मोल नहीं! कुछ लोग तो इसके लिए अपनी आत्मा तक बेच देते हैं और तुम इसे मिट्टी के बराबर समझते हो। ऐसा मालूम होता है कि अपने पास पैसे रखकर तुम दुनिया पर एहसान करते हो ..."

निकोलाई धीरे से हंस दिया।

"बड़ी ही गंदी चीज़ है यह पैसा! इसे लेना भी झंझट और देना भी ..."

उसने मां का हाथ पकड़कर कसकर दबाया।

"जल्दी से जल्दी आना!" उसने एक बार फिर कहा।

फिर वह हमेशा की तरह चुपचाप चला गया।

उसे विदा करके मां दरवाज़े पर खड़ी सोचती रही :

"कितना नेक आदमी है—पर उसने मुझ पर दया नहीं की ..."

और वह यह भी न समझ सकी कि वह इस बात पर असंतुष्ट है या उसे केवल आश्चर्य है?

२

निकोलाई के आने के चौथे दिन मां उसके घर में रहने के लिए चली गयी। गाड़ी पर अपने दो संदूक़ लादे बस्ती से निकलकर खेतों की तरफ़ जाते हुए उसने पीछे मुड़कर देखा और सहसा उसे आभास हुआ कि वह उस जगह को हमेशा के लिए छोड़े जा रही है जहां उसने

अपने जीवन का सबसे अंधकारमय और कठिन समय बिताया था और जहां उसने ज़िंदगी की एक नयी मंज़िल में प्रवेश किया था जिसमें नये सुख-दु:ख थे और जिसके कारण उसका समय जल्दी कट गया था।

फ़ैक्टरी की चिमनियां आकाश की ओर अपना सिर ऊंचा किये खड़ी थीं और फ़ैक्टरी स्वयं कालिख से ढकी हुई पृथ्वी पर एक बड़े से लाल मकड़े की तरह दुबकी हुई थी। उसके चारों ओर मज़दूरों के एक-मंज़िले मकानों की बस्तियां थीं। ये मटमैले और बौने मकान दलदल के बिल्कुल सिरे पर खड़े अपनी छोटी-छोटी उदास खिड़कियों में से एक-दूसरे को निरीह भाव से देख रहे थे। उनके ऊपर फ़ैक्टरी की ही तरह मैले लाल रंग का गिरजाघर अपना मस्तक ऊंचा किये खड़ा था, पर उसकी मीनार चिमनियों से नीची थी।

एक आह भरकर मां ने अपने ब्लाउज़ का गले पर का बटन खोल दिया, क्योंकि उसका दम घुटा जा रहा था।

"और चला चल!" गाड़ीवाले ने घोड़े की रास झटकते हुए अस्फुट स्वर में कहा। वह एक नाटे क़द का आदमी था जिसकी उम्र के बारे में निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता था। उसकी टांगें टेढ़ी-मेढ़ी थीं और सिर और चेहरे पर बहुत छिदरे-छिदरे मुरझाये हुए से बाल थे और उसकी आंखों में चमक तो थी ही नहीं। गाड़ी के साथ-साथ वह झूमता हुआ चल रहा था और ऐसा प्रतीत होता था कि दाहिने या बायें मुड़ने में उसके लिए कोई अन्तर नहीं था।

"चल, बेटा!" उसने सपाट स्वर में कहा और भारी बूटों में कसी हुई अपनी टेढ़ी टांगों पर बड़े ज़ोर से उछला। उसके बूटों पर कीचड़ जमकर सूख गयी थी। मां ने चारों ओर नज़र दौड़ायी। खेत भी उसके हृदय की तरह ही सूने थे...

तेज़ धूप में तपती हुई रेत की मोटी तह पर गाड़ी खींचते हुए घोड़ा एक ही ढंग से अपना सिर हिला रहा था। बाल की सरसराहट सुनायी दे रही थी, खचड़ा गाड़ी चरचरा रही थी और इन आवाज़ों के साथ-साथ गर्द भी उनके पीछे-पीछे आ रही थी...

निकोलाई इवानोविच शहर के सिरे पर एक सूनसान सड़क के किनारे रहता था। एक दो-मंज़िले मकान के साथ, जो पुराना और जर्जर था, हरे रंग का एक मकान और बना दिया गया था; इसी

के एक हिस्से में निकोलाई रहता था। उसके घर के सामने एक छोटा सा बाग़ था और तीनों कमरों की खिड़कियों में लाइलक और अकेशिया की डालें और पोपलर के अल्पवयस्क वृक्षों की रुपहली पत्तियां झांककर अन्दर देखती थीं। घर के अन्दर हर चीज़ साफ़-सुथरी और वातावरण शान्त था ; फ़र्श पर जालदार परछाइयां नाचती थीं, दीवारों के सहारे किताबों की अल्मारियां लगी हुई थीं जिनके ऊपर गंभीर मुद्रावाले लोगों के चित्र टंगे हुए थे।

"यहां तुम्हें तकलीफ़ तो नहीं होगी?" निकोलाई ने मां को एक छोटे-से कमरे में ले जाकर पूछा जिसकी एक खिड़की बाग़ में खुलती थी और दूसरी आंगन में, जिसमें घास उगी हुई थी। इस कमरे की दीवारों के किनारे भी किताबों की अल्मारियां लगी हुई थीं।

"मैं तो रसोई में रह लूंगी!" मां ने कहा। "रसोई बहुत आराम-देह और साफ़ है..."

मां को लगा कि ये शब्द सुनकर वह सहम-सा गया। वह झेंपते और लजाते हुए मां को रसोईघर में रहने का विचार छोड़ देने के लिए मनाने लगा और वह राज़ी हो गयी। उसका चेहरा खिल उठा।

ऐसा मालूम होता था कि तीनों कमरों का कोई विशेष वातावरण था। यहां सांस लेना ज़्यादा आसान और सुखकर था, पर ऊंचे स्वर में बोलने में संकोच होता था कि कहीं दीवार पर से इतने ध्यान से नीचे देखते हुए लोगों के चिन्तन में बाधा न पड़े।

"पौधों में पानी देने की ज़रूरत है," मां ने खिड़की की चौखट पर रखे हुए गमलों की मिट्टी को हाथ से टटोलकर देखते हुए कहा।

घर के मालिक ने अपराधियों की तरह कहा, "अरे हां, मुझे उनका शौक़ तो बहुत है पर उनकी देखभाल करने का समय नहीं मिलता..."

मां ने देखा कि अपने इस आरामदेह फ़्लैट में भी निकोलाई कुछ उकताया-सा रहता है, मानो यह घर उसका अपना न हो। वह कमरे की विभिन्न चीज़ों के पास जाकर अपने दाहिने हाथ की पतली-पतली उंगलियों से चश्मा ठीक करता और जिस चीज़ की ओर भी उसका ध्यान आकर्षित हो जाता उसे बड़ी जिज्ञासा से देखता, कभी-कभी वह कोई चीज़ उठाकर अपने चेहरे के बहुत पास ले आता मानो उसे अपनी आंखों से छूकर देखना चाहता हो। ऐसा लगता था कि मां की तरह ही वह भी

इस घर में पहली बार आया था और उसके लिए भी हर चीज़ नयी और अनजानी थी। उसे इस रूप में देखकर मां इन कमरों में इतमीनान महसूस करने लगी। वह जहां जाता मां उसके पीछे-पीछे जाती और देखती कि कौन चीज़ कहां रखी है और उससे उसकी दिनचर्या के बारे में पूछती। वह अपराधियों की तरह उत्तर देता – ऐसे आदमी की तरह जो यह तो जानता है कि वह उस ढंग से काम नहीं करता जैसे उसे करना चाहिये पर उसका कोई इलाज नहीं कर सकता।

मां ने फूलों में पानी दिया और पियानो पर बिखरी हुई स्वर-लिपियों को समेटकर रख दिया। समोवार को देखते ही वह बोली:

"इसे साफ़ करना पड़ेगा..."

निकोलाई ने मैली धातु पर अपनी उंगलियां फेरीं और उन्हें अपनी नाक के पास लाकर उनका निरीक्षण करने लगा। मां स्नेहपूर्वक हंस दी।

उस रात को जब मां सोने के लिए लेटी और दिन-भर की घटनाओं पर विचार करने लगी तो उसने न जाने क्यों अपना सिर उठाकर चारों ओर नज़र दौड़ायी। वह उसके जीवन में पहला अवसर था जब उसने किसी दूसरे के घर में रात बितायी हो, पर उसे ज़रा भी घबराहट नहीं हो रही थी। उसने बड़ी ममता से निकोलाई के बारे में सोचा और उसके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह उसके जीवन को सुखी बना दे, उसके प्रति ऐसा स्नेह दिखाये कि उसके जीवन में सुख-शान्ति आ जाये। उसकी भोंड़ी चाल-ढाल, उसकी हास्यजनक लाचारी, आम लोगों से उसकी भिन्नता और उसकी निर्मल आंखों का बुद्धिमत्तापूर्ण और साथ ही बच्चों जैसा भाव मां के हृदय में घर कर गया। फिर उसका विचार अपने बेटे की ओर गया और पहली मई की घटनाएं एक बार फिर उसकी आंखों के सामने घूम गयीं। अब उनमें एक नयी गूंज पैदा हो गयी थी और उनका एक नया महत्त्व हो गया था। स्वयं उस दिन की तरह ही इस दिन की पीड़ा में भी कोई ख़ास बात थी। इस पीड़ा से मस्तक ज़मीन पर नहीं झुक जाता था, जैसे किसी प्रबल आघात से झुक जाता है। यह पीड़ा हृदय में बार-बार बरछी की तरह चुभती थी, जिससे धीरे-धीरे एक रोष उत्पन्न होता था और झुकी हुई कमर भी सीधी हो जाती थी।

"हमारे बच्चे लड़ाई के मैदान में उतर रहे हैं," मां सोचने लगी। वह बाग़ में पत्तियों को छेड़ती हुई खुली खिड़की में से रेंगकर

अन्दर आती हुई शहर की रात्रिकालीन अपरिचित ध्वनियों को सुनती रही। ये आवाज़ें कहीं बहुत दूर से आती थीं—थकी हुई और क्षीण—और कमरे में पहुंचकर चुपचाप दम तोड़ देती थीं।

दूसरे दिर सबेरे ही उसने समोवार मांजकर चाय के लिए पानी गरम किया, चुपचाप मेज़ पर नाश्ता लगा दिया और रसोई में बैठकर निकोलाई के उठने की प्रतीक्षा करने लगी। आखिरकार उसने खांसते हुए अपने कमरे का दरवाज़ा खोला, एक हाथ में वह अपना चश्मा और दूसरे में क़मीज़ का कालर पकड़े था। उन्होंने एक-दूसरे को सलाम किया और मां ने समोवार ले जाकर दूसरे कमरे में रख दिया। वह मुंह-हाथ धो रहा था, उसने सारा पानी फ़र्श पर बिखेर दिया, अपना साबुन और दांत मांजने का ब्रश ज़मीन पर गिरा दिया और अपने फूहड़पन पर बुड़बुड़ाता रहा।

नाश्ता करते समय उसने मां से कहा:

"देहाती बोर्ड में मुझे एक बहुत दुःखदायी काम करना पड़ता है—यह पता लगाने का काम कि हमारे किसान किस तरह तबाह हो रहे हैं..." उसने अपराधियों की तरह मुस्कराकर कहा। "काफ़ी भोजन न मिलने के कारण किसान समय से पहले ही मर जाते हैं। उनके बच्चे कमज़ोर पैदा होते हैं और जैसे शरद ऋतु में मक्खियां मरती हैं वैसे ही वे भी मर जाते हैं। हम यह सब जानते हैं और हम इसका कारण भी जानते हैं। इस क्रम को देखने के लिए हमें तनख़्वाहें भी दी जाती हैं, पर इससे ज़्यादा और कुछ नहीं होता..."

"क्या तुम छात्रालय में पढ़ते हो?" मां ने उससे पूछा।

"नहीं, मैं पढ़ाता हूं। मेरे पिता व्यात्का नगर की एक फ़ैक्टरी में मैनेजर हैं, पर मैं अध्यापक बन गया। गांव में मैंने किसानों में किताबें बांटीं और इसके लिए मुझे जेल में बंद कर दिया गया। सज़ा काट चुकने के बाद मैं एक किताबों की दुकान में सेल्समैन हो गया, पर अपनी ही लापरवाही से मैं फिर जेल में पहुंचा दिया गया और उसके बाद अर्खांगेल्स्क में निर्वासित कर दिया गया। वहां भी, गवर्नर मुझसे नाराज़ हो गया और मुझे श्वेत सागर के किनारे एक छोटे-से गांव में भेज दिया गया जहां मैं पांच साल तक रहा।"

धूप से भरे हुए उस प्रकाशमय कमरे में उसका स्वर निर्बाध रूप से प्रवाहित था। मां अब तक इस तरह की न जाने कितनी कहानियां सुन चुकी थी, पर उसकी समझ में नहीं आता था कि जो लोग ये

कहानियां सुनाते थे वे इतने शान्त क्यों रहते थे मानो वे किसी अनिवार्य बात का उल्लेख कर रहे हों?

"मेरी बहन आज आ रही हैं!" उसने कहा।

"ब्याह हो गया है?"

"विधवा हैं। उनके पति को साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया था, पर वह वहां से भाग आये और दो साल हुए यूरोप में तपेदिक़ से उनकी मृत्यु हो गयी..."

"तुम्हारी बहन तुमसे छोटी हैं?"

"छः साल बड़ी हैं। मैं उनका बड़ा आभारी हूं। और सुनिये कि वह पियानो कैसा बजाती हैं! यह उन्हीं का है... और यहां की बहुत-सी चीज़ें उन्हीं की हैं, किताबें बस मेरी हैं..."

"वह कहां रहती हैं?"

"हर जगह!" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया। "जहां कहीं भी किसी हिम्मतवाले आदमी की ज़रूरत होती है वह वहां पहुंच जाती हैं।"

"क्या वह भी... यही काम करती हैं?"

"हां, क्यों नहीं!" उसने उत्तर दिया।

शीघ्र ही वह चला गया और मां "इस काम" के बारे में और उन लोगों के बारे में सोचने लगी जो लगातार दिन-रात इसी काम में जुटे रहते थे। उनके सामने वह अपने आपको बहुत तुच्छ समझने लगी, जैसे रात को पहाड़ के सामने आदमी अपने को बौना समझता है।

दोपहर के क़रीब लम्बे क़द की एक ख़ूबसूरत औरत ने घंटी बजायी; वह काले कपड़े पहने थी। जब मां ने दरवाज़ा खोला तो उसने अपना छोटा-सा पीला सूटकेस फ़र्श पर रख दिया और बढ़कर मां का हाथ थाम लिया।

"आप पावेल मिखाइलोविच की मां हैं न?" उसने कहा।

"हां," मां ने उत्तर दिया। उस औरत के अच्छे कपड़े देखकर मां को कुछ खिसियाहट-सी हो रही थी।

"आप बिल्कुल वैसी ही निकलीं जैसा मैंने सोचा था। मेरे भाई ने मुझे लिखा था कि आप यहां रहने के लिए आ रही हैं!" उस औरत ने आईने के सामने खड़े होकर अपना हैट उतारते हुए कहा। "पावेल मिखाइलोविच के साथ मेरी बड़ी पुरानी दोस्ती है। उसने मुझे आपके बारे में बताया था।"

उसकी आवाज़ भारी थी और वह धीरे-धीरे बोलती थी, पर उसका शरीर बहुत फुर्तीला और मज़बूत था। उसकी भूरी आंखों में जवानी की चमक थी, पर इसके विपरीत उसकी कनपटियों के पास बहुत महीन झुर्रियां भी थीं और उसके कोमल कानों के ऊपर सफ़ेद बाल चमकते थे।

"मुझे भूख लगी है!" उसने घोषणा की। "एक प्याला कॉफ़ी पीना चाहती हूं..."

"अभी बनाये देती हूं!" मां ने कहा। "तुमने क्या कहा कि पावेल ने तुमसे मेरी चर्चा की थी?" मां ने अल्मारी में से कॉफ़ी के बरतन निकालते हुए पूछा।

"बहुत बार..." उस औरत ने चमड़े के छोटे-से केस में से सिगरेट निकालकर जलायी और कमरे में टहलने लगी। "क्या आपको उसके बारे में बहुत डर लगता है?"

मां कॉफ़ी के बरतन के नीचे स्टोव की छोटी-छोटी नीली लपटों को देखती रही और मुस्कराती रही। इस औरत को देखकर उसमें जो एक सकपकाहट आ गयी थी वह ख़ुशी की इस लहर में डूब गयी।

"तो उसने मेरे बारे में इसे बताया था, प्यारा बच्चा!" उसने अपने मन में सोचा और फिर धीरे-धीरे बोली, "हां, लगता तो है। मेरे लिए यह आसान नहीं है पर अगर यह बात इससे पहले हुई होती तो मेरे लिए और भी कठिन हो जाता। अब कम से कम मुझे इतना तो मालूम है कि वह अकेला नहीं है..."

मां ने उस औरत की तरफ़ देखकर पूछा:

"नाम क्या है?"

"सोफ़िया!" उसने उत्तर दिया।

मां उसे बड़े ध्यान से देखती रही। इस औरत में एक अजीब व्यापकता थी – अपार साहस और चंचलता।

"सबसे ज़रूरी तो यह है कि वे सभी जेल से जल्दी से जल्दी छोड़ दिये जायें," सोफ़िया ने निश्चय के साथ कहा। "बस मुक़द्दमा जल्दी शुरू हो जाये! ज्यों ही वे लोग उन्हें कहीं निर्वासित करेंगे, हम लोग पावेल मिख़ाइलोविच को भगाने का प्रबंध कर देंगे। यहां उसकी ज़रूरत है।"

मां अनिश्चय के भाव से सोफ़िया को देख रही थी; सोफ़िया अपनी सिगरेट बुझाने के लिए कोई चीज़ ढूंढ़ रही थी। आख़िरकार उसने गमले की मिट्टी में सिगरेट बुझा दी।

"इसी से तो फूल ख़राब होते हैं!" मां के मुंह से अनायास ही निकल गया।

"माफ़ कर दीजिये!" सोफ़िया ने कहा। "निकोलाई भी मुझसे हमेशा यही बात कहता है!" उसने बुझी हुई सिगरेट निकालकर खिड़की के बाहर फेंक दी।

मां ने खिसियाकर अपराधियों की तरह उसे देखा।

"मैं ख़ुद लज्जित हूं," मां ने कहा। "मैंने बिना सोचे-समझे ही कह दिया था। मैं भला कैसे कह सकती हूं कि क्या करो, क्या न करो?"

"क्यों नहीं, अगर मैं गंदगी करूं तो आप क्यों नहीं कह सकतीं?" सोफ़िया ने कंधे बिचकाकर उत्तर दिया। "कॉफ़ी तैयार हो गयी? बहुत-बहुत धन्यवाद! लेकिन एक ही प्याली क्यों? आप नहीं पियेंगी?"

सहसा उसने मां के कंधे पकड़कर उसे अपने पास खींच लिया और उसकी आंखों में आंखें डालकर देखने लगी।

"सच कहिये, शर्माती हैं क्या?" सोफ़िया ने पूछा।

मां मुस्करा दी।

"अभी-अभी सिगरेटवाली बात मैंने तुमसे कही है और तुम मुझसे पूछती हो कि मैं शर्म करती हूं क्या? मगर देखो तो," उसने अपने विस्मय को छुपाने का कोई प्रयत्न किये बिना कहा, "मैं अभी कल ही यहां आयी हूं और अभी से मुझे ऐसा लगने लगा कि जैसे यह मेरा ही घर है – मुझे किसी बात से डर नहीं लगता और जो मेरे जी में आता है कह देती हूं..."

"यही तो होना भी चाहिये!" सोफ़िया ने प्रसन्न होकर कहा।

"मेरा सिर चकराता रहता है और मुझे अपना भी होश नहीं रहता," मां ने फिर कहना आरंभ किया। "एक ज़माने में जब तक मैं किसी को अच्छी तरह जान नहीं जाती थी तब तक मैं अपने दिल की बात उससे खुलकर नहीं कह सकती थी। पर अब मैं हमेशा सबसे दिल खोलकर बात कहती हूं, और ऐसी बातें कह जाती हूं जिनकी मैं पहले स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकती थी..."

सोफ़िया ने दूसरी सिगरेट निकाली और अपनी भूरी आंखों की कोमल ज्योति मां के चेहरे पर केन्द्रित कर दी।

"तुम कह रही थीं कि तुम उसे भगाने का प्रबंध कर लोगी। लेकिन भागकर वह रहेगा कैसे?" मां ने पूछा और अपने हृदय से

इस जटिल प्रश्न का बोझ उतार दिया।

"उसमें कोई कठिनाई नहीं होगी," सोफ़िया ने अपने लिए दूसरी प्याली कॉफ़ी बनाते हुए कहा। "जैसे दर्जनों दूसरे भागकर आये हुए लोग रहते हैं, वैसे ही वह भी रहेगा... मैं अभी एक ऐसे आदमी से मिली थी और उसे बताकर आयी हूं कि वह कहां रहेगा। उसकी भी बहुत ज़रूरत थी, उसे पांच साल की सज़ा हुई थी, पर उसने निर्वासन में साढ़े तीन महीने ही बिताये थे..."

मां कुछ देर तक उसे देखती रही, फिर मुस्करा दी।

"ऐसा मालूम होता है कि पहली मई ने मुझ पर कोई जादू कर दिया है," मां ने सिर हिलाते हुए धीरे से कहा। "मैं अपना ठिकाना नहीं ढूंढ़ पा रही हूं—ऐसा लगता है कि मैं एक साथ दो रास्तों पर जा रही हूं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मैं हर बात समझती हूं और फिर हर चीज़ धुंधली हो जाती है। अपने आपको ही ले लो—भले घर की औरत हो, यह काम करती हो... तुम मेरे पावेल को जानती हो और उसकी तारीफ़ करती हो और इसके लिए मैं तुम्हारा आभार मानती हूं..."

"आभार तो मुझे मानना चाहिये!" सोफ़िया ने हंसकर कहा।

"मैंने क्या किया है? उसे यह सब कुछ मैंने तो नहीं सिखाया!" मां ने आह भरकर कहा।

सोफ़िया ने सिगरेट एक तश्तरी में बुझा दी और अपने सिर को इस तरह झटका कि उसके सुनहरे बालों की मोटी-मोटी लटें खुलकर कमर तक आ गयीं।

"अब जाकर मैं अपना यह सारा ताम-झाम उतार आऊं," उसने उठकर बाहर जाते हुए कहा।

३

निकोलाई शाम को घर लौटा। खाना खाते समय सोफ़िया ने बहुत हंस-हंसकर बताया कि वह किस प्रकार निर्वासन से भागकर आये हुए एक आदमी को छुपाकर आयी थी; उसके दिल में ख़ुफ़िया पुलिसवालों का इतना डर समाया हुआ था कि वह हर आदमी को संदेह की दृष्टि से देखती थी। सोफ़िया ने यह भी बताया कि उस भागे हुए क़ैदी का बरताव कितना हास्यास्पद था। मां को उसके स्वर में

शेखी की एक झलक दिखायी दी, मानो कोई मज़दूर बहुत बड़ा कारनामा करने के बाद दूसरों को उसके बारे में बता रहा हो।

इस समय सोफ़िया भूरे रंग का हल्का, चौड़ा फ़ाक पहने हुए थी। इसके कारण वह और भी लम्बी और उसकी आंखें और भी काली लग रही थीं और उसकी चाल में अधिक गंभीरता आ गयी थी।

"सोफ़िया, तुम्हारे लिए एक काम और है," निकोलाई ने खाना खाने के बाद कहा। "मैंने तुम्हें बताया था कि हम लोगों ने किसानों के लिए एक अखबार निकालने का ज़िम्मा लिया था, लेकिन इतने लोगों के गिरफ़्तार हो जाने के कारण उस आदमी से कोई सम्पर्क नहीं रह गया है जो यह अखबार बांटेगा। उसका पता लगाने में पेलागेया निलोवना ही हमारी मदद कर सकती हैं। तुम इनके साथ गांव चली जाओ और जितनी जल्दी हो सके, उसका पता मालूम कर लो।"

"अच्छी बात है!" सोफ़िया ने सिगरेट का कश लेते हुए कहा। "क्यों चलेंगे न, पेलागेया निलोवना?"

"हां, ज़रूर चलेंगे..."

"क्या बहुत दूर है?"

"यही कोई पचास मील होगा..."

"तो ठीक है!.. अच्छा, अब थोड़ी देर पियानो बजाऊंगी। पेलागेया निलोवना, आप थोड़ी देर मेरा संगीत बर्दाश्त कर सकेंगी न?"

"मेरी चिन्ता न करो – समझ लो कि जैसे मैं यहां हूं ही नहीं!" मां ने कहा और कोच के एक कोने में दुबककर बैठ गयी। मालूम तो यह होता था कि भाई-बहन उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दे रहे हैं, पर बड़ी होशियारी से वे उसे भी अपनी बातचीत में शामिल करने का प्रयत्न कर रहे थे।

"निकोलाई, यह सुनो, यह ग्रीग है। मैं आज ही अपने साथ लायी हूं... खिड़कियां बंद कर दो।"

उसने स्वरलिपि सामने खोलकर रख ली और अपने बायें हाथ से सुमधुर संगीत छेड़ दिया। पियानो के तार झंकार उठे और एक हल्की-सी आह के साथ एक दूसरा स्वर पियानो की भरपूर गूंजती हुई आवाज़ में आवाज़ मिलाकर गाने लगा। उसके दाहिने हाथ की उंगलियों के नीचे से सोने की घंटियां-सी बजने की आवाज़ आने लगी; मंद स्वरों की गहरी पृष्ठभूमि पर ये सुनहरे सुर भयातुर पक्षियों के झुंड की तरह फड़फड़ाते हुए इधर-उधर भाग रहे थे।

15-1065

पहले तो मां पर संगीत का कोई प्रभाव न हुआ ; संगीत का प्रवाह उसके लिए केवल आवाज़ों का एक जमघट था। उस जटिल संगीत-रचना में उसके कान धुन नहीं पकड़ पा रहे थे। स्वप्निल नेत्रों से वह निकोलाई को देखती रही। वह टांगें मोड़े कोच के दूसरे सिरे पर बैठा था। फिर मां सोफ़िया के गंभीर चेहरे को घूरने लगी जिसके ऊपर सुनहरे बालों का एक ताज-सा लगा हुआ था। सूरज की किरनें सोफ़िया के सिर और कंधों को अपनी ज्योति से गरमाती हुई उसकी उंगलियों को चूमने के लिए फिसलकर पियानो के परदों पर पड़ रही थीं। संगीत बढ़ते-बढ़ते पूरे कमरे में फैल गया और न जाने कब वह मां के हृदय में भी प्रवेश कर गया।

न जाने क्यों अतीत के अंधकारमय गर्त्त से एक चिरविस्मृत गहरी व्यथा उठी और एक कटु स्पष्टता के साथ फिर ताज़ी हो गयी।

एक दिन बहुत रात गये उसका पति नशे में चूर घर लौटा था। उसकी बांह पकड़कर उसने चारपाई से उसे फ़र्श पर घसीट लिया था और उसकी पसलियों में ठोकरें मारी थीं।

"निकल जा, कुतिया कहीं की! मैं उकता गया हूं तुझसे!" उसने चिल्लाकर कहा था।

उसकी मार से बचने के लिए मां ने अपने दो साल के बच्चे को उठा लिया था और उसे सीने से लगाकर घुटने टेककर फ़र्श पर बैठ गयी थी। बच्चा उसकी गोद में हाथ-पांव पटककर रो रहा था ; उसका नंगा, भयविह्वल शरीर गरम था।

"निकल जा!" मिखाइल ने गरजकर कहा था।

वह उछलकर खड़ी हो गयी थी और जल्दी से रसोई में जाकर उसने कंधों पर शलूका डाल लिया था और बच्चे को शाल में लपेटकर नंगे पैर केवल रात के कपड़े और शलूका पहने हुए घर से निकल गयी थी ; न वह रोयी थी और न उसने फ़रियाद की थी। मई का महीना था, रातें ठंडी थीं। सड़क की ठंडी-ठंडी मिट्टी उसके तलुओं से चिपकी जा रही थी और उसके पांव की उंगलियों के बीच घुसी जा रही थी। उसकी गोद में बच्चा तड़प-तड़पकर रो रहा था। उसने उसे शलूके के नीचे छुपाकर कसकर अपने सीने से चिपटा लिया था और भय से व्याकुल होकर सड़क पर भागती हुई आगे बढ़ती गयी थी ; चलते-चलते वह बच्चे को चुप कराने का प्रयत्न करती जा रही थी :

" आं-आं-आं! आं-आं-आं! आं-आं-आं!"

प्रभात हुआ। इस भय और लज्जा से कि कहीं कोई उसे इस अर्धनग्न अवस्था में देख न ले वह दलदल के पास जाकर एस्पन के अल्पवयस्क वृक्षों के नीचे बैठ गयी थी। वह बड़ी देर तक वहां बैठी आंखें फाड़े अंधकार में घूरती रही थी और ऊंघते हुए बालक और स्वयं अपने हृदय की व्यथा को शान्त करने के लिए निरन्तर एक ही सुर में गुनगुनाती रही थी:

"आं-आं-आं! आं-आं-आं! आं-आं-आं!"

सहसा एक काली चिड़िया उड़ती हुई उधर से गुज़री थी। मां अपनी निरीह अवस्था से चौंककर उठ खड़ी हुई थी और सर्दी में कांपती हुई घर लौटी थी – फिर उसी पिटाई और अपमानों के चिर-परिचित भयानक वातावरण में...

संगीत का अन्तिम सुर सुनायी दिया और फिर एक उदास ठंडी आह के साथ संगीत शान्त हो गया।

सोफ़िया ने अपने भाई की तरफ़ मुड़कर देखा।

"पसंद आया?" उसने धीरे से पूछा।

"बहुत!" उसने मानो नींद से चौंकते हुए उत्तर दिया। "बहुत अच्छा था..."

मां के सीने में दुःखद स्मृतियों की प्रतिध्वनि का कम्पन था और उसकी चेतना के सीमान्त प्रदेश में एक विचार ढल रहा था:

"ऐसे लोग भी होते हैं जो मित्रता के साथ, शान्तिपूर्ण ढंग से मिल-जुलकर रहते हैं। वे झगड़ा नहीं करते, नशे में धुत्त नहीं हो जाते, रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए लड़ते नहीं जैसा कि उस दूसरे अंधकारमय जगत के लोग करते हैं..."

सोफ़िया ने एक सिगरेट निकाली। वह बहुत सिगरेट पीती थी; सिगरेट उसके हाथ से शायद कभी छूटती ही नहीं थी।

"मेरे कोस्त्या को यह धुन सबसे अधिक पसंद थी!" उसने कहा। उसने एक गहरी सांस लेकर फिर पियानो के परदों पर उंगलियां दौड़ाते हुए एक कोमल दर्दीली धुन छेड़ दी। "उसे पियानो बजाकर सुनाने में मुझे बहुत आनन्द आता था। कितना संवेदनशील था वह, हर बात का उसके हृदय पर प्रभाव होता था; उसका हृदय भावनाओं से भरा हुआ था..."

"अपने पति के बारे में सोच रही होगी," मां ने अपने मन में कहा, "और मुस्करा रही है..."

"उसके साथ मेरा जीवन कितना सुखी था..." सोफ़िया ने मंद स्वर में कहा; उसके बोलते समय ऐसा लगता था कि वह सोचकर नहीं बोल रही है, बल्कि शब्द अनायास ही उसके हृदय से निकल रहे हैं। "वह ज़िंदगी का रहस्य जानता था..."

"सो तो था!" निकोलाई ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए सहमति प्रकट की। "उसकी आत्मा में संगीत था!.."

सोफ़िया ने अभी-अभी जलायी हुई सिगरेट फेंक दी और मां की तरफ़ मुड़ी।

"आप मेरे शोर मचाने से उकता तो नहीं रही हैं?" उसने पूछा।

मां अपने क्षोभ को छुपा न सकी:

"मेरी फ़िक्र न करो तुम। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आता। मैं तो बस बैठे-बैठे सुनती रहती हूं। मैं तो अपने ही विचारों में डूबी रहती हूं।"

"आपको ज़रूर समझना चाहिये," सोफ़िया ने कहा, "हर औरत संगीत को समझती है, ख़ास तौर पर जब वह उदास होती है..."

उसने ज़ोर से परदों पर उंगलियां मारीं और पियानो इस तरह चिल्ला उठा मानो किसी ने भयानक समाचार सुना हो। सचमुच अतिशय वेदना के ही कारण ऐसा हृदय-विदारक करुण चीत्कार निकल सकता है। इसके उत्तर में सहसा यौवनमय भयातुर स्वर गूंज उठे और तेज़ी से कहीं विलीन हो गये। एक बार फिर बहुत ज़ोर का करुण चीत्कार सुनायी दिया जिसमें बाक़ी सब कुछ डूब गया। कोई भयंकर विपदा आ पड़ी थी, पर उससे करुणा नहीं बल्कि रोष की भावना उत्पन्न हुई थी। फिर कोई सधे हुए सुरों में एक सीधी-सादी मधुर धुन गाने लगा; कितना अनुरोध और आकर्षण था उस गीत में!

मां इन लोगों से कुछ प्यार-भरी बातें कहने को बेचैन हो उठी। उस पर संगीत का नशा छा रहा था। वह मुस्करा दी। उसे पूरा विश्वास था कि वह इन भाई-बहन की सहायता कर सकती है।

उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी – वह क्या काम कर सकती थी? चुपके से उठकर वह रसोईघर में चली गयी और समोवार में आग सुलगा दी।

पर इससे उन लोगों के किसी काम आने की उसकी तीव्र इच्छा पूरी नहीं हुई और चाय उंडेलते हुए उसने शर्माते हुए हंसकर कहा:

"उस अंधेरे जीवन में रहनेवाले हम लोग – हम अनुभव तो सब

कुछ करते हैं, पर उसे शब्दों में कहना कठिन होता है और हमें शरम आती है, क्योंकि बात यह है कि हम समझते हैं, पर उसे कह नहीं सकते। और अक्सर अपनी इसी लज्जा के कारण हम अपने ही विचारों पर झुंझला उठते हैं। ज़िंदगी हर तरफ़ से हमें कोंचती रहती है। हम चैन से रहना चाहते हैं, पर हमारे विचार हमें चैन से बैठने कब देते हैं।" ऐसा प्रतीत होता था कि इन शब्दों से, जिनका महत्व उसके लिए भी उतना ही था जितना उसके श्रोताओं के लिए, वह अपने हृदय को सांत्वना देना चाहती हो।

निकोलाई मां की बातें सुनते समय सारी देर बैठा अपनी ऐनक पोंछता रहा और सोफ़िया की बड़ी-बड़ी आंखें विस्मय से फैल गयीं। वह अपनी सिगरेट पीना भी भूल गयी, जो अब किसी भी दम बुझने को थी। वह अभी तक पियानो के सामने थोड़ा-सा अपने भाई की तरफ़ मुड़ी बैठी थी और बीच-बीच में अपने दाहिने हाथ से पियानो के परदों को धीरे से छेड़ देती थी। पियानो के कोमल स्वर मां के हृदय से निकले हुए उन सीधे-सादे शब्दों में विलीन हुए जा रहे थे, जिनके द्वारा वह अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रही थी।

"अब मैं अपने बारे में और सब लोगों के बारे में कुछ कह सकती हूं क्योंकि अब मैं कुछ-कुछ समझने लगी हूं और चीज़ों की तुलना कर सकती हूं। पहले तो कोई चीज़ थी ही नहीं जिससे तुलना की जा सके। हमारे मज़दूर जीवन में हर आदमी एक जैसी ज़िंदगी बसर करता है। लेकिन अब जब मैं दूसरों की ज़िंदगी को देखती हूं और याद करती हूं कि मैं कैसी ज़िंदगी बसर करती थी तो दिल बैठ जाता है।"

उसका स्वर धीमा पड़ गया:

"मुमकिन है कि मैं इस बात को ठीक से न कह पा रही हूं या यह सब कहने में कोई तुक ही न हो क्योंकि इसमें तुम लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं है..."

मां का स्वर आंसुओं से रुंधा हुआ था पर वह मुस्कराती हुई आंखों से उन्हें देख रही थी:

"मैं अपना दिल खोलकर तुम लोगों के सामने रख देना चाहती हूं," उसने कहा। "मैं चाहती हूं कि तुम लोग जान सको कि मैं अपने हृदय से तुम लोगों के लिए कितनी भलाई और कितने सुख की कामना करती हूं।"

"हमें मालूम है!" निकोलाई ने धीरे से कहा।

ऐसा प्रतीत होता था कि अपनी सारी भावनाएं उनके सामने खोलकर व्यक्त कर देने की उसकी इच्छा शान्त ही नहीं हो रही थी। इसलिए वह उन्हें उन बातों के बारे में बताती रही, जो उसके लिए नयी और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थीं। उसने उन्हें अपने दुःखमय जीवन के बारे में बताया और यह भी बताया कि किस प्रकार वह चुपचाप सब कुछ सहन करती आयी थी। उसके स्वर में क्षोभ नहीं था, पर उसके होंटों पर व्यंग की एक झलक थी। उसने अपने पिछले जीवन के नीरस दुःखमय दिनों का सारा कच्चा चिट्ठा उनके सामने खोलकर रख दिया, उसने बताया कि कितनी बार उसके पति ने उसे पीटा था। वह आश्चर्य कर रही थी कि अकारण ही जीवन में उसकी इतनी पिटाइयां क्यों हुईं और वह उन्हें रोकने में असमर्थ क्यों रही...

वे दोनों चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे। मां की रामकहानी के पीछे एक गूढ़ अर्थ छुपा हुआ दिखायी दिया। वह एक ऐसे व्यक्ति की रामकहानी थी, जिसे जानवर के बराबर समझा गया था और जिसने अपनी इस स्थिति को चुपचाप स्वीकार कर लिया था। ऐसा लग रहा था कि उसकी ज़बान से हज़ारों लोग बोल रहे थे; उसके जीवन में जो कुछ हुआ था वह बहुत ही साधारण और आये-दिन की बातें थीं – उतनी ही सीधी-सादी और बेरंग जितनी कि इस पृथ्वी पर रहनेवाले अधिकांश लोगों की ज़िंदगी थी – और उसकी जीवन-कथा एक प्रतीक बन गयी। निकोलाई अपनी कुहनियां मेज़ पर टिकाये, हथेलियों पर सिर रखे आंखें सिकोड़कर ऐनक के पीछे से मां को एकटक देख रहा था। सोफ़िया अपनी कुर्सी पर पीछे टेक लगाये बैठी थी और बीच-बीच में सिर हिलाकर सिहर उठती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसका चेहरा दुबला हो गया है और उसका रंग भी पीला पड़ गया है; वह सिगरेट भी नहीं पी रही थी।

"एक ज़माने में मैं भी अपने को बहुत अभागी समझती थी," सोफ़िया ने आंखें झुकाकर शान्त स्वर में कहा। "ऐसा मालूम होता था कि मैं किसी स्वप्नों की दुनिया में रहती हूं। यह तब की बात है जब मैं बहुत दूर एक छोटे-से क़स्बे में निर्वासन की सज़ा काट रही थी। मेरे पास न कोई काम था, और अपने अलावा किसी दूसरी बात के बारे में सोचने को भी नहीं था। समय काटने के लिए बार-बार मैं अपनी पिछली मुसीबतों को याद करती रहती थी। मैं अपने पिता को प्यार करती थी, फिर भी उनसे लड़ी; मैं स्कूल से निकाल दी

गयी और सबके सामने मुझे एक लज्जास्पद उदाहरण के रूप में पेश किया गया; मुझे जेल में बंद कर दिया गया, मेरे एक गहरे दोस्त ने मेरे साथ विश्वासघात किया; मेरे पति गिरफ़्तार कर लिये गये; मुझे फिर गिरफ़्तार करके निर्वासित कर दिया गया और फिर मेरे पति का देहान्त हो गया था। मुझे ऐसा लगता था कि मैं इस दुनिया में सबसे दुःखी प्राणी हूं। लेकिन, पेलागेया निलोवना, मेरी सारी मुसीबतों की दसगुनी मुसीबतें भी तुम्हारी ज़िंदगी की एक महीने की मुसीबतों के बराबर नहीं हैं... तुम्हें तो बरसों तक हर दिन यातनाएं सहनी पड़ीं... इतनी मुसीबतें बर्दाश्त करने की ताक़त कहां से आती है लोगों में?"

"आदत पड़ जाती है!" पेलागेया ने आह भरकर उत्तर दिया।

"मैं मन ही मन इस बात पर खुश रहता हूं कि मैं ज़िंदगी को काफ़ी अच्छी तरह समझता हूं," निकोलाई ने विचारमग्न होकर कहा। "फिर भी जब कभी मुझे ज़िंदगी का यह चित्र देखने को मिलता है, जो किताबों में दिये हुए चित्र से या मेरे बिखरे हुए विचारों में बननेवाले चित्र से बिल्कुल भिन्न होता है, तो उसकी भयानकता पर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं! और ज़िंदगी की छोटी-छोटी चीजें ही भयानक होती हैं – ज़िंदगी की वे महत्वहीन घड़ियां जो मिलकर बरसों लम्बी हो जाती हैं..."

वे इस अंधकारमय जीवन के हर पहलू पर विचार करते हुए बड़ी देर तक इसी तरह बातें करते रहे। मां अतीत की स्मृतियों में खो गयी: विस्मृति के धुंधलके में से एक-एक करके वे सब अपमान उसकी आंखों के सामने आ रहे थे जिन्होंने उसके यौवनकाल को भयावह बना दिया था।

"मैं बैठी बातें बघार रही हूं और तुम लोगों के सोने का वक़्त हो गया!" उसने आखिरकार कहा। "इतनी बहुत-सी बातें हैं सब कहां तक कह सकता है कोई..."

भाई-बहन ने चुपचाप उससे विदा ली। निकोलाई ने हमेशा से ज़्यादा झुककर मां को सलाम किया और बड़े प्यार से उसका हाथ दबाया। सोफ़िया मां को उसके कमरे तक पहुंचा आयी।

"अच्छा, सो जाओ। अच्छी तरह आराम से सोना!" सोफ़िया ने चलते-चलते कहा। उसका स्वर भावावेश से रुंधा हुआ था और उसकी भूरी आंखें बड़े प्यार से मां के चेहरे को ताक रही थीं...

पेलागेया ने सोफ़िया का हाथ अपने दोनों हाथों में दबा लिया और बोली:

"बहुत-बहुत धन्यवाद! .."

४

कुछ दिन बाद मां और सोफ़िया निकोलाई के सामने शहर की ग़रीब औरतों के भेस में आयीं। वे फटे हुए सूती कपड़े और शलूके पहने हुए थीं, उनकी पीठ पर थैले और हाथ में लाठियां थीं। इस पोशाक में सोफ़िया का क़द कुछ छोटा मालूम होता था और उसका पीला चेहरा हमेशा की अपेक्षा अधिक गंभीर लग रहा था।

निकोलाई ने अपनी बहन को विदा करते हुए उसका हाथ कसकर दबाया और मां के हृदय पर उनके पारस्परिक संबंध की इस शान्त सरलता की गहरी छाप पड़ी। उन्होंने न तो एक-दूसरे को चूमा ही, न प्यार के शब्द ही कहे मगर दोनों को एक-दूसरे की सदा फ़िक्र रहती थी। जहां वह अब तक रहती थी वहां लोग हर दम एक-दूसरे को चूमते रहते थे और बड़े प्यार-भरे शब्दों में बातें करते थे, पर मौक़ा पड़ते ही एक-दूसरे पर भूखे कुत्तों की तरह टूट भी पड़ते थे।

दोनों औरतें चुपचाप शहर की सड़कें पार करती हुई खेतों की तरफ़ जा निकलीं। बर्च के पुराने वृक्षों की दो पंक्तियों के बीच एक चौड़ी-सी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर वे दोनों साथ-साथ चली जा रही थीं।

"तुम थक़ोगी नहीं?" मां ने सोफ़िया से कहा।

"मैं बहुत दूर-दूर तक पैदल जा चुकी हूं; मुझे आदत है..."

सोफ़िया बड़े उल्लास के साथ अपने क्रान्तिकारी काम के बारे में बातें करने लगी, मानो अपने बचपन की शरारतों को याद कर रही हो। न जाने कितनी बार वह अपना नाम बदलकर झूठे शिनाख़्ती काग़ज़ बनवाकर रही थी। जासूसों से बचने के लिए वह भेस बदलकर रही थी, किताबों और पर्चों के भारी-भारी बंडल लेकर एक शहर से दूसरे शहर गयी थी, साथियों को निर्वासन से भगाने का इंतज़ाम किया था और उन्हें साथ लेकर विदेश में पहुंचा आयी थी। एक बार उसके घर में एक ख़ुफ़िया छापाख़ाना भी था और जब पुलिसवाले इसकी ख़बर पाकर घर की तलाशी लेने आये थे तो वह नौकरानी का भेस बनाकर फाटक पर खड़े हुए सन्तरियों की आंख में धूल झोंककर चुपके

मे भाग निकली थी। जाड़े के दिन थे, उस दिन बड़ी सर्दी पड़ रही थी; एक हल्की-सी पोशाक पहने और सिर पर सूती रूमाल बांधे वह हाथ में तेल का कनस्तर लिए पूरा शहर पार कर गयी थी मानो मिट्टी का तेल ख़रीदने जा रही हो। इसी तरह एक बार और वह कुछ मित्रों से मिलने के लिए एक नये शहर में पहुंच गयी और उनके घर की सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद उसे मालूम हुआ कि तलाशी ली जा रही है। पीछे लौटने का सवाल ही नहीं था इसलिए उसने हिम्मत करके नीचेवाले फ़्लैट की घंटी बजायी और अपने सूटकेस समेत उन अनजाने लोगों के यहां टिक गयी।

"अगर आप चाहें तो मुझे पुलिस के हवाले कर सकते हैं मगर मुझे आप से ऐसी उम्मीद नहीं," उसने सारी परिस्थिति साफ़-साफ़ उनसे बताकर कहा।

वे इतना डर गये थे कि रात-भर उन लोगों ने पलक तक नहीं झपकायी; हर दम उन्हें यही खटका लगा रहा कि कोई दरवाज़ा तो नहीं खटखटा रहा है। लेकिन उन लोगों ने उसे पुलिस के हवाले नहीं किया और दूसरे दिन सवेरे इस घटना पर जी खोलकर हंसे। इसी तरह एक बार और वह ईसाई मठवासिनी का भेस बनाकर उसी गाड़ी में, बल्कि उसी डिब्बे में सफ़र करती रही थी जिसमें उसका पीछा करनेवाला ख़ुफ़िया पुलिस का आदमी बैठा हुआ था। वह बहुत डींग मार रहा था कि वह किस तरह इस औरत का पीछा कर रहा था। वह समझ रहा था कि वह औरत उसी गाड़ी के दूसरे दर्जे के डिब्बे में बैठी थी। हर स्टेशन पर उतरकर वह उसे देखने जाता और लौटकर उससे कहता:

"कहीं दिखायी नहीं दी, शायद सो गयी होगी। ये लोग भी थक जाती हैं, इनकी ज़िंदगी भी कोई हमारी ज़िंदगी से ज़्यादा आराम की थोड़े ही है!"

ये क़िस्से सुनकर मां हंस दी और बड़े प्यार से उसने अपनी संगिनी की तरफ़ देखा। सोफ़िया लम्बे क़द और छरहरे बदन की थी; अपनी सुडौल टांगों पर वह बड़ी फुर्ती से चलती थी। उसके चलने और बात करने के ढंग से, उसके उल्लास-भरे भारी स्वर से और उसकी पूरी तनी हुई आकृति से साहस और भरपूर जीवन टपकता था, वह हर चीज़ के प्रति नौजवानों जैसा उत्साह रखती थी और हर चीज़ में उसे ख़ुशी का कोई न कोई स्रोत मिल ही जाता था।

"कितना सुन्दर सनोबर है!" सोफ़िया ने एक पेड़ की ओर संकेत करके पुलकित स्वर में कहा। मां रुककर देखने लगी – वह पेड़ सनोबर के दूसरे पेड़ों जैसा ही था।

"हां, बड़ा अच्छा पेड़ है!" वह हंस पड़ी और सोफ़िया के कान के पास हवा में उड़ती हुई सफ़ेद बालों की लटों को देखती रही।

"लवा है!" सोफ़िया की भूरी आंखें प्यार से चमक उठीं और वह एकाग्रचित्त होकर स्वच्छ आकाश में गूंजते हुए संगीत को सुनती रही। कभी-कभी उसका फुर्तीला शरीर चलते-चलते रुक जाता और वह कोई जंगली फूल तोड़कर अपनी पतली-पतली फुर्तीली उंगलियों से उसकी कांपती हुई पंखड़ियों को सहलाने लगती और धीरे-धीरे कोई धुन गुनगुनाने लगती।

भूरी आंखोंवाली उस औरत की इन सब बातों ने मां को मोह लिया और वह उससे बिल्कुल सटकर क़दम मिलाकर चलने लगी। कभी-कभी सोफ़िया सख़्ती से भी बोलती थी और मां को इस पर दुःख होता था।

"रीबिन इससे ख़ुश नहीं होगा..." मां चिन्तित होकर सोचने लगी।

पर दूसरे ही क्षण सोफ़िया फिर बड़े प्यार-भरे सीधे-सादे स्वर में बोलने लगती और मां मुस्कराकर उसकी आंखों में आंखें डालकर देखती।

"तुम अभी तो बिल्कुल जवान हो!" मां ने आह भरकर कहा।

"मैं बत्तीस बरस की हो चुकी हूं!" सोफ़िया ने उत्तर दिया। पेलागेया मुस्करा दी।

"मेरा मतलब यह नहीं था। देखने में तो शायद तुम्हारी उमर इससे भी ज़्यादा मालूम होती है। लेकिन जब मैं तुम्हारी बातें सुनती हूं और तुम्हारी आंखों में आंखें डालकर देखती हूं तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है – तुम बिल्कुल नवयुवती लगती हो। तुमने बहुत कठोर और संकटमय जीवन बिताया है फिर भी तुम्हारा हृदय हमेशा मुस्कराता रहता है।"

"मुझे इस कठोरता का कभी आभास भी नहीं होता। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी ज़िंदगी से अच्छी और दिलचस्प ज़िंदगी किसी की हो ही नहीं सकती... मैं तुम्हें तुम्हारे पितृनाम से पुकारा करूंगी – निलोवना। न जाने क्यों पेलागेया नाम मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"जो जी में आये कहो," मां ने सोच में डूबे हुए कहा। "जो जी में आये। मैं तुम्हें देखती रहती हूं, तुम्हारी बातें सुनती रहती हूं पर अपने ही विचारों में डूबी रहती हूं। मुझे यह देखकर खुशी होती है कि तुमने मनुष्य के हृदय तक पहुंचने का रास्ता मालूम कर लिया है। हर आदमी बिना किसी संकोच के तुम्हें बता देता है कि उसके हृदय में क्या छुपा हुआ है। वह अपनी इच्छा से अपनी आत्मा तुम्हारे सामने खोलकर रख देता है। और जब भी मैं तुम सब लोगों के बारे में सोचती हूं तो मुझे विश्वास हो जाता है कि तुम लोग मनुष्य के जीवन की बुराइयों को मिटा दोगे। मुझे इसका पूरा विश्वास है!"

"हम ज़रूर मिटा देंगे क्योंकि हम मेहनतकश लोगों के साथ हैं!" सोफ़िया ने ऊंचे स्वर में आश्वासन दिलाया। "उनमें एक महान शक्ति छुपी हुई है, वे कुछ भी कर सकते हैं! हमें बस उन्हें यह जता देना है कि उनका असली मूल्य क्या है, ताकि वे आज़ादी से आगे बढ़ सकें..."

उसकी इन बातों को सुनकर मां के हृदय में अनेक भावनाएं उमड़ पड़ीं। न जाने क्यों उसे सोफ़िया पर तरस आने लगा, वह उससे नाराज़ नहीं थी बल्कि उसके हृदय में उसके प्रति मित्रता थी और वह उसके मुंह से ऐसी ही और भी सीधी-सादी बातें सुनना चाहती थी।

"तुम्हारी इस सब मेहनत का फल तुम्हें कौन देगा?" मां ने उदास होकर धीरे से पूछा।

"हमें अपनी मेहनत का फल तो मिल भी गया," सोफ़िया ने उत्तर दिया और मां को ऐसा मालूम हुआ कि उसके स्वर में गर्व की भावना थी। "हमने जीवन का एक ऐसा ढर्रा मालूम कर लिया है जो हमें पसंद है। हम अपनी आत्मा की सारी शक्तियों को काम करने का पूरा मौक़ा देते हैं—जीवन से हम इससे ज़्यादा क्या आशा कर सकते हैं?"

मां ने एक नज़र उसे देखकर आंखें झुका लीं और फिर सोचने लगी:

"रीबिन को वह अच्छी नहीं लगेगी..."

वे मादक पवन में गहरी-गहरी सांसें लेती हुई तेज़ी से चली जा रही थीं, पर उन्हें कोई घबराहट या जल्दी नहीं थी, मां को ऐसा लग रहा था जैसे वह तीर्थ-यात्रा पर जा रही हो। उसे याद आ रहा था कि बचपन में त्योहारों के दिन जब वह अपने गांव से बहुत दूर

एक गिरजाघर में जाती थी उसे कितनी ख़ुशी होती थी। उस गिरजाघर में एक चमत्कार करनेवाली मूरत भी थी।

बीच-बीच में सोफ़िया अपने कोमल मधुर स्वर में आकाश या प्रेम के बारे में कोई नया गीत गाने लगती, या खेतों और जंगलों और वोल्गा नदी के बारे में कोई कविता सुनाती और मां सुनकर मुस्कराने लगती; अनायास ही उस पर संगीत का नशा छा जाता और वह कविता की धुन पर सिर हिलाने लगती।

मां के हृदय में ऐसी शान्ति, ऐसा उल्लास और ऐसी गंभीरता थी मानो वह गर्मियों की शाम को किसी सुन्दर बाग़ के कोने में बैठी हों।

५

वे दोनों तीसरे दिन अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचीं। मां ने खेत में काम करते हुए एक किसान से तारकोल के कारख़ाने का पता पूछा और शीघ्र ही वे जंगल की एक ढलान पर चल पड़ीं जहां पेड़ों की जड़ों ने सुविधा के लिए सीढ़ियां बना दी थीं। कुछ दूर चलने के बाद वे एक गोल खुली हुई जगह पर पहुंच गयीं जहां चारों ओर कोयला और लकड़ियां बिखरी हुई थीं और हर तरफ़ तारकोल के थक्के जमे हुए थे।

"आख़िर को पहुंच ही गयीं," मां ने घबराकर चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए कहा।

बल्लियों और पेड़ों की टहनियों के बने हुए सायबान के सामने एक मेज़ पड़ी हुई थी, जो लकड़ी के घोड़ों पर तीन तख़्ते टिकाकर तैयार की गयी थी। तारकोल में सना हुआ, रीबिन क़मीज़ के बटन खोले, येफ़ीम और दो अन्य नौजवानों के साथ मेज़ पर बैठा खाना खा रहा था। सबसे पहले रीबिन ने ही उन औरतों को देखा और वह कुछ कहे बिना आंखों पर हथेली की ओट करके उनके निकट आने की प्रतीक्षा करता रहा।

"सलाम, भैया मिख़ाइलो!" मां ने कुछ दूर से ही चिल्लाकर कहा।

वह उठा और बड़े इतमीनान से उनकी तरफ़ बढ़ा। मां को पहचानकर वह ठहर गया और दाढ़ी पर अपना काला हाथ फेरते हुए मुस्कराने लगा।

"हम तीर्थ-यात्रा पर निकली हैं!" मां ने उसके पास आकर

कहा। "सोचा रास्ते में तुम्हारा हाल-चाल भी पूछते चलें। यह मेरी सहेली हैं – इनका नाम आन्ना है..."

अपनी चतुराई पर बड़े गर्व से उसने कनखियों से सोफ़िया की कठोर और गंभीर मुद्रा को देखा।

रीबिन ने मां से हाथ मिलाया और बहुत झुककर सोफ़िया का अभिवादन करते हुए मुंह टेढ़ा करके मुस्कराकर कहा, "तुम्हारा क्या हाल-चाल है? अब झूठ न बोलो। तुम अब शहर में नहीं हो, यहां झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं! सब अपने ही लोग हैं..."

येफ़ीम ने मेज़ के पास बैठे-बैठे ही यात्रियों को देखा और अपने साथियों से कुछ फुसफुसाकर कहा। जब औरतें पास आ गयीं तो वह उठा और उसने झुककर उन्हें सलाम किया। उसके साथी निश्चल बैठे रहे मानो उन्होंने अतिथियों को देखा ही न हो।

"हम लोग यहां साधुओं की तरह रहते हैं," रीबिन ने पेलागेया निलोवना का कंधा हल्के से थपथपाते हुए कहा। "यहां कोई भी हमसे मिलने नहीं आता। मालिक आजकल बाहर हैं; उनकी बीवी अस्पताल में हैं। एक तरह से मैं ही यहां का कर्ता-धर्ता हूं। आओ, बैठो। कुछ खाओगी? येफ़ीम, थोड़ा-सा दूध तो ले आओ!"

येफ़ीम बिना जल्दी किये सायबान में चला गया और यात्रियों ने अपने थैले उतारकर नीचे रख दिये। एक नौजवान ने, जो लम्बे क़द का दुबला-पतला लड़का था, उठकर उनकी मदद की, लेकिन उसका झबरे बालोंवाला गठीले शरीर का साथी मेज़ पर कुहनियां टिकाये विचारों में खोया हुआ बैठा उन्हें देखता रहा और अपना सिर खुजाकर कोई धुन गुनगुनाता रहा।

तारकोल और सड़ी-गली पत्तियों की तेज़ बदबू से उन दोनों औरतों को चक्कर से आने लगे।

"इसका नाम याकोव है," रीबिन ने उस लम्बे लड़के की तरफ़ इशारा करके कहा, "और वह दूसरावाला इगनात है। हां, तुम्हारे बेटे का क्या हाल है?"

"जेल में है," मां ने आह भरकर कहा।

"फिर?" रीबिन ने चौंककर कहा। "मालूम होता है जेल पसंद आ गया..."

इगनात ने गाना बंद कर दिया और याकोव ने मां के हाथ से लाठी ले ली।

"बैठ जाओ!" उसने कहा।

"आप खड़ी क्यों हैं? बैठ जाइये!" रीबिन ने सोफ़िया से कहा। सोफ़िया चुपचाप एक पेड़ के ठूंठ पर बैठ गयी और बड़े ध्यान से रीबिन को देखती रही।

"कब पकड़ा गया वह?" रीबिन ने मां के सामने बैठकर सिर हिलाते हुए पूछा। "निलोवना, तुम्हारी भी तक़दीर ख़राब है!"

"नहीं, ख़राब क्या है!" मां ने कहा।

"आदत पड़ती जा रही है, क्यों है न?"

"नहीं, आदत तो नहीं पड़ती जा रही है, मगर मैं जानती हूं कि और कोई चारा नहीं है!"

"हुं!" रीबिन ने कहा। "अच्छा, यह तो बताओ कि हुआ क्या था..."

येफ़ीम एक जग में दूध ले आया और मेज़ पर से प्याला उठाकर धोया और उसमें दूध भरकर सोफ़िया को दिया, लेकिन उसके कान मां की बातों की ओर ही लगे हुए थे। वह बड़ी सावधानी से इस बात का प्रयत्न कर रहा था कि कोई आवाज़ न होने पाये। जब मां अपना क़िस्सा ख़त्म कर चुकी तो एक-दूसरे की तरफ़ देखे बिना सभी क्षण-भर को ख़ामोश रहे। इगनात बैठा हुआ मेज़ पर अपने नाख़ूनों से लकीरें खींच रहा था। येफ़ीम अपनी कुहनी रीबिन के कंधे पर रखे उसके पीछे खड़ा था; याकोव पेड़ के तने का सहारा लगाये सीने पर दोनों हाथ बांधे सिर झुकाये खड़ा था। सोफ़िया चुपचाप बैठी अपनी भवों के नीचे से इन किसानों को बड़े ध्यान से देख रही थी...

"हूं-ऊं!" रीबिन ने धीरे-धीरे बड़े नीरस भाव से कहा। "तो यह हो रहा है–खुल्लम-खुल्ला मैदान में आ गया है!.."

"अगर हम लोग कभी ऐसा जुलूस निकालें," येफ़ीम ने मुंह लटकाकर मुस्कराते हुए कहा, "तो देहाती मारते-मारते हमारी जान ही ले लें!"

"इसमें तो शक नहीं, वे हमें मार डालें!" इगनात ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। "मैं तो जाकर किसी कारख़ाने में काम करूंगा। वहां ज़्यादा अच्छा रहेगा..."

"तुम कह रही थीं न कि पावेल पर मुक़द्दमा चलाया जायेगा, क्यों?" रीबिन ने पूछा। "और सज़ा क्या मिलेगी? मालूम है कुछ?"

"सख़्त क़ैद की लम्बी सज़ा होगी या हमेशा के लिए साइबेरिया

भेज दिया जायेगा ..." मां ने शान्त भाव से उत्तर दिया।

तीनों नौजवानों ने एक साथ मुड़कर मां की तरफ़ देखा।

"जब उसने जुलूस निकाला था तो क्या उसे मालूम था कि इसकी सज़ा क्या होगी ?" रीबिन ने अपना सिर झुकाकर पूछा।

"मालूम क्यों नहीं था !" सोफ़िया ने ऊंचे स्वर में कहा।

सब लोग चुपचाप और निश्चल बैठे थे, मानो यह सोचकर उनका ख़ून जम गया हो।

"हुं: !" रीबिन ने बड़ी गंभीरता के साथ अर्थपूर्ण ढंग से कहा। "मुझे यक़ीन है कि उसे ज़रूर मालूम रहा होगा। वह आंख बंद करके यों ही अंधेरे में नहीं कूद पड़ा होगा – वह बहुत गंभीर स्वभाव का है। सुना तुम लोगों ने ? वह जानता था कि मुमकिन है उसके सीने में संगीन भोंक दी जाये या साइबेरिया भेज दिया जाये, लेकिन वह इससे ज़रा भी नहीं घबराया। अगर उसकी मां भी उसका रास्ता रोककर सामने लेट गयी होती तब भी वह उसे फांदकर आगे बढ़ गया होता। क्यों है न, निलोवना ?"

"हां, ज़रूर बढ़ गया होता !" मां ने चौंककर कहा। उसने एक आह भरी और चारों ओर नज़र दौड़ायी। सोफ़िया ने चुपचाप उसका हाथ थपथपाया और भवें सिकोड़कर रीबिन को घूरती रही।

"इसे कहते हैं जवान मर्द !" रीबिन ने गंभीर दृष्टि से उन सबको देखते हुए शान्त भाव से कहा। सब लोग फिर चुप हो गये। सूरज की किरनें सुनहरी झालरों की तरह वायुमंडल में लहरा रही थीं। कहीं से कौए की कांव-कांव सुनायी दी। मई दिवस की स्मृतियों ने मां को उत्तेजित कर दिया था, पावेल और अन्द्रेई से मिलने की इच्छा ने उसे बेचैन कर रखा था। उस छोटी-सी खुली हुई जगह में चारों ओर तारकोल के ख़ाली पीपे बिखरे हुए थे और पेड़ों के उखड़े हुए ठूंठ इधर-उधर पड़े थे। सिरे पर शाहबलूत और बर्च के वृक्ष झुंड बांधे निश्चल खड़े थे और पृथ्वी पर अपनी काली-काली गर्म छाया डाल रहे थे।

सहसा याकोव पेड़ का सहारा छोड़कर एक तरफ़ को चल दिया।

"हमें और येफ़ीम को फ़ौज में भरती करके क्या इन्हीं लोगों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए भेजा जायेगा ?" उसने अपना सिर पीछे की ओर झटककर ऊंचे स्वर में कहा।

"और तुमने क्या समझा था कि तुम्हें किसके ख़िलाफ़ लड़ने भेजा

जायेगा?" रीबिन ने बड़े नीरस भाव से उत्तर दिया। "वे हमें अपने ही हाथों से अपना गला घोंटने पर मजबूर करते हैं – यही तो सारा खेल है!"

"मगर मैं तो फ़ौज में भरती होऊंगा!" येफ़ीम ने हठधर्मी से कहा।

"तुम्हें रोकता कौन है?" इगनात ने चिल्लाकर कहा। "जाकर अभी भरती हो जाओ! मगर एक बात का ख़्याल रखना," उसने धीरे से हंसकर कहा, "जब मेरे ऊपर गोली चलाना, तो मेरे सिर पर निशाना लगाना – मुझे अपाहिज बनाकर न छोड़ देना, एक ही बार में काम तमाम कर देना!"

"तुम एक बार पहले भी यह बात कह चुके हो!" येफ़ीम ने झल्लाकर उत्तर दिया।

"बस, बस, चुप हो जाओ तुम लोग!" रीबिन ने हाथ उठाकर कहा और फिर मां की ओर संकेत करके बोला, "देखो, यह औरत है जिसका बेटा शायद अब तक ज़िंदा भी न हो..."

"ऐसी बात क्यों कहते हो?" मां ने उदास स्वर में धीमे से पूछा।

"कहना ही पड़ता है!" रीबिन ने गंभीरता से उत्तर दिया। "ताकि तुम्हारे बालों का सफ़ेद होना बेकार न हो। लेकिन क्या तुम लोग समझते हो कि उसके बेटे के साथ ऐसा करके उन्होंने इस औरत को मार डाला है? निलोवना, तुम किताबें लायी हो?"

मां ने उसे कनखियों से देखा।

"हां..." उसने कुछ देर रुककर उत्तर दिया।

"देखा?" रीबिन ने मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा। "मैं तो तुम्हें देखते ही समझ गया था। तुम्हारे यहां आने की और क्या वजह हो सकती थी? देखा? उन्होंने इसके बेटे को लड़ाई के मैदान से हटा लिया – लेकिन मां ने अपने बेटे की जगह ले ली!"

उसने अपनी मुट्ठी हिलाकर एक मोटी-सी गाली दी।

मां ने भयभीत होकर उसकी तरफ़ देखा; उसका चेहरा पहले से पतला दिखायी दे रहा था, उसकी दाढ़ी उलझी हुई थी जिसके नीचे से गालों की हड्डियां साफ़ उभरी हुई दिखायी दे रही थीं। उसकी आंखों की पुतलियों पर लाल-लाल बारीक डोरे पड़ गये थे मानो वह बहुत दिन से सोया न हो। उसकी नाक शिकारी चिड़ियों की चोंच की तरह पिचकी हुई और टेढ़ी थी। उसकी क़मीज़ किसी समय लाल रही होगी,

पर अब तारकोल के कारण काली हो गयी थी। उसके खुले हुए कालर में से हंसली की उभरी हुई हड्डियां और सीने पर घने-घने काले बाल दिखायी दे रहे थे। उसकी भूरी आकृति हमेशा से ज़्यादा उदास और मातमी लग रही थी। उसकी सूजी हुई आंखों में क्रोध की चिंगारियां सुलग रही थीं जिसके कारण उसके उदास चेहरे पर एक चमक आ गयी थी। सोफ़िया मुंह लटकाये चुपचाप बैठी इन किसानों को एकटक देख रही थी। इगनात अपनी आंखें सिकोड़कर सिर हिलाता रहा और याकोव सायबान में जाकर क्रोध में खड़ा बल्लियों पर की छाल को नोचता रहा। येफ़ीम मां के पीछे मेज़ के पास धीरे-धीरे इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।

रीबिन फिर बोलने लगा :

"अभी बहुत दिन नहीं हुए, ज़िले के हाकिम ने बुलाकर मुझसे कहा, 'तूने पादरी से क्या कहा था, बदमाश?' मैंने कहा, 'बदमाश मैं क्यों? मैं अपना खून-पसीना एक करके अपनी रोज़ी कमाता हूं और किसी का कुछ बिगाड़ता नहीं।' वह मेरे ऊपर गरजा और मेरे दांतों पर एक ज़ोर का घूंसा मारा और तीन दिन तक मुझे जेल में बंद रखा। 'तो यह है आम लोगों से तुम्हारा बात करने का तरीक़ा, क्यों?' मैंने अपने मन में सोचा। 'तो यह भी उम्मीद न रखना कि हम इसे भूल जायेंगे, पुराने पापी कहीं के! अगर मैं खुद बदला न ले सका तो कोई और तुम्हें या तुम्हारी औलाद को इसका मज़ा चखा देगा – याद रखना! तुमने अपने लोहे के पंजों से लोगों के सीने खुरच डाले हैं और उनमें नफ़रत के बीज बोये हैं, तो अब रहम की कोई उम्मीद न करना, शैतानो!' यही बात है!"

उसके हृदय में क्रोध की जो आग धधक रही थी उसके कारण उसका चेहरा लाल हो गया और उसके स्वर में ऐसा पुट था जिससे मां भयभीत हो उठी।

"और मैंने पादरी से कहा क्या था?" वह कुछ शान्त होकर कहता रहा। "एक बार गांव की एक सभा के बाद वह बैठा कुछ किसानों से बातें कर रहा था और उन्हें समझा रहा था कि आम लोग भेड़ों के गल्ले की तरह होते हैं जिन्हें हांकने के लिए हमेशा किसी गड़रिये की ज़रूरत होती है। हुंः! मैंने भी मज़ाक़ में कह दिया, 'अगर लोमड़ी को परिन्दों का रखवाला बना दिया गया तो पर तो इधर-उधर उड़ते बहुत दिखायी देंगे पर चिड़िया एक भी हाथ नहीं लगेगी!' उसने

गर्दन टेढ़ी करके मुझे देखा और समझाने लगा कि लोगों को धीरज से अपनी सारी मुसीबतें बर्दाश्त कर लेनी चाहिये और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह उन्हें सारी मुसीबतें और विपदाएं सहने की शक्ति दे। इस पर मैंने कह दिया कि लोग यों ही क्या कम प्रार्थना करते हैं, मगर ऐसा मालूम होता है कि ईश्वर को उनकी सुनने की फ़ुरसत ही नहीं है। हुंः! इस पर उसने मुझसे पूछा कि मैं कौन-सी प्रार्थना करता हूं, जिसके जवाब में मैंने कहा कि मैं ज़िंदगी भर वही एक प्रार्थना करता आया हूं जो सारे छोटे-मोटे लोग करते हैं: हे भगवान्, तू मुझे कोई तरकीब ऐसी बता दे कि मैं पत्थर खाकर इन शरीफ़ज़ादों के लिए शहतीरें उगला करूं। पर उसने मुझे अपनी बात भी पूरी नहीं करने दी।" सहसा रीबिन ने सोफ़िया की तरफ़ देखकर पूछा, "आप भी किसी शरीफ़ घर की हैं?"

"क्यों, शरीफ़ घर से क्या मतलब?" सोफ़िया ने चौंककर जल्दी से पूछा।

"क्यों क्या?" रीबिन ने तड़ से जवाब दिया। "क्योंकि मेरा ख़्याल है कि आप शरीफ़ घर में पैदा हुई हैं। हर आदमी अपनी-अपनी तक़दीर से अच्छे या बुरे घर में पैदा होता है। आप समझती हैं कि सिर पर किसानों की तरह रूमाल बांधकर आप उसके नीचे इन शरीफ़ लोगों के पापों को छुपा सकती हैं? अगर आप किसी पादरी को बोरे में भी बंद कर दें तो हम उसे पहचान लेंगे। अभी मेज़ पर, जहां कुछ गिरा पड़ा था, आपकी कुहनी पड़ गयी थी तो आपने बिदककर कैसा मुंह बनाया था। और आप की पीठ इतनी सीधी है कि किसी मेहनतकश औरत की हो ही नहीं सकती..."

इस भय से कि कहीं रीबिन के इस क्रूर परिहास पर सोफ़िया नाराज़ न हो जाये, मां बीच में जल्दी-जल्दी और गम्भीरता से कह उठी:

"मिख़ाइलो इवानोविच, यह मेरी दोस्त हैं और बहुत ही अच्छी औरत हैं। हमारे लिए लड़ते-लड़ते इनके बाल सफ़ेद हो गये हैं। तुम ज़रूरत से ज़्यादा बढ़कर बातें कर रहे हो..."

रीबिन ने एक गहरी आह भरी:

"क्यों, क्या मैंने कोई ऐसी-वैसी बात कह दी?"

"मेरा ख़्याल है आप मुझे कुछ बताने जा रहे थे?" सोफ़िया ने रुखाई से कहा।

"ऐसी बात है? अरे हां! अभी कुछ ही दिन हुए यहां एक नया आदमी आया था – याकोव का रिश्ते का भाई है। उसे तपेदिक़ हो गयी है। बुलाऊं उसे?"

"हां-हां, ज़रूर बुलाइये!" सोफ़िया ने कहा।

रीबिन आंखें सिकोडकर एक मिनट तक उसे देखता रहा।

"जाकर उससे कह देना कि आज शाम को यहां आ जाये," उसने येफ़ीम से कहा।

येफ़ीम ने अपनी टोपी पहनी और किसी की तरफ़ देखे या किसी से एक शब्द भी कहे बिना जंगल में ग़ायब हो गया। रीबिन उसके चले जाने के बाद सिर हिलाता रहा।

"बहुत भारी गुज़र रही है इस पर," उसने कहा। "थोड़े ही दिन में फ़ौज में भरती कर लिये जायेंगे – यह और याकोव दोनों। याकोव तो साफ़ कहता है कि फ़ौज उसकी जगह नहीं है। जगह तो येफ़ीम की भी नहीं है, मगर वह जाना चाहता है। वह सोचता है कि सिपाहियों में जागृति पैदा कर देगा। मैं तो कहता हूं कि सिर मारने से दीवार नहीं टूटती ... आदमी के हाथ में बंदूक़ दे दो फिर देखो वह कैसा क़दम से क़दम मिलाकर चलता है। मगर येफ़ीम पर बहुत भारी गुज़र रही है और यह इगनात उसे सताता रहता है। इसमें क्या तुक है!"

"है क्यों नहीं?" इगनात ने रीबिन की तरफ़ देखे बिना मुंह लटकाये हुए कहा। "अरे, थोड़े ही दिन में वे उसे मार-पीटकर ऐसा बराबर कर लेंगे कि वह भी दूसरों की तरह उनके इशारे पर लोगों को गोली का निशाना बनाने लगेगा ..."

"मैं यक़ीन नहीं करता इस बात पर," रीबिन ने कुछ सोचते हुए उत्तर दिया। "यह बात दूसरी है कि मैं भी यही समझता हूं कि वह न जाये तो अच्छा है। रूस बहुत बड़ा मुल्क है – वे उसे कहां-कहां ढूंढ़ने जायेंगे? वह झूठे शिनाख़्ती काग़ज़ बनवाकर एक गांव से दूसरे गांव में फिरता रहे ..."

"मैं तो यही करूंगा!" इगनात ने एक पटरी धप से अपने पैर पर मारकर कहा। "एक बार जब फ़ैसला कर लिया कि उनके ख़िलाफ़ लड़ना है तो फिर उस रास्ते से हटने का कोई सवाल नहीं!"

बातचीत का सिलसिला टूट गया। हवा में शहद की मक्खियों और भिड़ों की भनभनाहट गूंज रही थी। चिड़ियां चहचहा रही थीं और खेतों

के पार से किसी के गाने की आवाज़ लहराती हुई आ रही थी।

"काम शुरू कर देने का वक़्त हो गया है..." रीबिन ने कुछ रुककर कहा। "आप लोग थोड़ा आराम कर लें। सायबान में कुछ तख़्ते पड़े हैं। याकोव, जाकर थोड़ी-सी सूखी पत्तियां लाकर उन पर बिछा दो... मां, किताबें हमें दे दो..."

मां और सोफ़िया अपनी-अपनी पोटलियां खोलने लगीं।

"ओह, कितनी बहुत-सी लायी हैं!" रीबिन ने झुककर पोटलियों को देखा और ख़ुशी से चिल्लाकर कहा। "मालूम होता है आप इस काम के चक्कर में बहुत दिन से हैं – क्यों? क्या नाम है आपका?" उसने सोफ़िया से पूछा।

"आन्ना इवानोवना!" उसने उत्तर दिया। "बारह बरस से... क्यों, आपने यह क्यों पूछा?"

"कुछ नहीं, यों ही। जेल हो आयी हैं?"

"हां..."

"देखा?" मां ने रीबिन को उलाहना दिया। "और तुम इतनी बदतमीज़ी से..."

"मेरी बात का बुरा न मानियेगा," उसने किताबों का एक बंडल उठाते हुए खीसें निकालकर कहा। "शरीफ़ लोग और किसान तारकोल और पानी की तरह होते हैं। वे एक-दूसरे में घुल-मिल नहीं सकते!"

"लेकिन मैं तो शरीफ़-वरीफ़ कुछ नहीं, बस इंसान हूं," सोफ़िया ने हल्के से मुस्कराकर आपत्ति की।

"हो सकता है!" रीबिन ने उत्तर दिया। "कहने को लोग यह भी कहते हैं कि कुत्ते भी किसी ज़माने में भेड़िये थे। मैं जाकर ये चीज़ें छुपा आऊं।"

इगनात और याकोव हाथ फैलाये हुए उसके पास आये।

"लाओ, देखें तो!" इगनात ने कहा।

"सब एक ही हैं?" रीबिन ने सोफ़िया से पूछा।

"नहीं, अलग-अलग, कुछ अख़बार भी हैं..."

"यह बड़ा अच्छा हुआ!"

तीनों आदमी जल्दी से सायबान में चले गये।

"किसान में आग भड़क रही है!" मां ने बड़े ग़ौर से रीबिन को घूरते हुए चुपके से कहा।

"हां," सोफ़िया ने उत्तर दिया। "मैंने इसका जैसा चेहरा आज

तक किसी और का नहीं देखा – बिल्कुल शहीदों की सूरत है! आओ, हम भी वहां चलें; मैं उन लोगों को ग़ौर से देखना चाहती हूं ..."

"उसकी सख़्त बातों का बुरा न मानना ..." मां ने बड़ी नरमी से कहा।

सोफ़िया हंस दी – "निलोवना, तुम भी कितनी प्यारी हो!"

जब वे दोनों दरवाज़े पर पहुंचीं तो इगनात ने सिर उठाकर जल्दी से उन पर एक सरसरी-सी नज़र डाली और फिर अपने घुंघराले बालों में उंगलियां फेरकर घुटनों पर फैले हुए अख़बार को झुककर पढ़ने लगा। रीबिन छत की एक दरार में से आती हुई धूप में अख़बार किये खड़ा पढ़ रहा था और पढ़ते समय उसके होंट हिल रहे थे। याकोव एक तख़्ते पर अख़बार फैलाये उसके सामने घुटनों के बल झुका बैठा था।

मां बढ़कर सायबान के एक कोने में जाकर बैठ गयी और सोफ़िया उसके कंधे पर हाथ रखे पीछे खड़ी चुपचाप उन तीनों को देखती रही।

"चाचा मिख़ाइलो, वे हम किसानों में ख़राबियां निकाल रहे हैं!" याकोव ने बिना मुड़े शान्त स्वर में कहा। रीबिन उसकी तरफ़ देखकर हंस दिया।

"इसलिए कि वे हमें प्यार करते हैं!" उसने कहा।

इगनात ने एक गहरी सांस लेकर सिर ऊपर उठाया।

"इसमें लिखा है 'किसान अब देखने में बिल्कुल इंसान नहीं लगता।' यह तो सच है कि वह इंसान नहीं लगता!"

उसके सीधे-सादे निष्कपट चेहरे पर एक कालिमा-सी छा गयी, मानो उसे यह बात बुरी लगी हो।

"हमारी जगह तुम लोग आ जाओ तो देखें तुम्हारी सूरत कैसी लगती है, बड़े तीसमारखां आये!"

"मैं तो थोड़ी देर लेटती हूं!" मां ने सोफ़िया से कहा। "मैं थक भी गयी हूं और यहां की बदबू में मेरा सिर चकरा रहा है। तुम भी आराम कर लो थोड़ी देर।"

"मैं आराम नहीं करूंगी।"

मां तख़्ते पर लेटकर ऊंघने लगी। सोफ़िया उसके पास बैठकर उन लोगों को देखती रही। अगर कोई भिड़ या शहद की मक्खी आकर मां की नींद में विघ्न डालती तो वह उसे उड़ा देती। मां अधखुली आंखों से उसे देख रही थी। सोफ़िया उसका जितना ध्यान रख रही थी, उस पर मां का हृदय द्रवित हो उठा।

रीबिन उनके पास आया।

"सो गयीं?" उसने दबी ज़बान में काफ़ी ज़ोर से पूछा।

"हां!"

वह थोड़ी देर तक खड़ा मां के चेहरे को देखता रहा।

"मैं समझता हूं कि यह पहली औरत है जिसने इस रास्ते पर अपने बेटे का साथ दिया है," उसने आख़िरकार आह भरकर कहा।

"इन्हें सोने दें, आइये, हम लोग बाहर चलें!" सोफ़िया ने कहा।

"मुझे तो अब काम पर जाना है। आपसे बातें करना चाहता हूं मगर अभी तो नहीं, शाम को देखा जायेगा! आओ, दोस्तो..."

तीनों आदमी सोफ़िया को सायबान में छोड़कर बाहर चले गये।

"चलो, अच्छा हुआ इनकी दोस्ती हो गयी!.." मां ने सोचा।

और वह लकड़ी और तारकोल की तेज़ दुर्गंध में सो गयी।

६

दिन-भर का काम ख़त्म करके तारकोल के कारख़ाने में काम करनेवाले वे मज़दूर शाम को ख़ुश-ख़ुश वापस आये।

उनकी आवाज़ से मां जाग गयी, और जम्हाई लेती और मुस्कराती हुई सायबान से बाहर निकली।

"तुम लोग काम कर रहे थे और मैं रानी साहिबा की तरह सो रही थी!" उसने बड़ी ममता से उन्हें देखकर कहा।

"तुम्हें इसके लिए माफ़ किया जा सकता है!" रीबिन ने उत्तर दिया। थकावट के कारण उसकी सारी तेज़ी ख़त्म हो गयी थी और अब वह पहले से ज़्यादा शान्त था।

"इगनात," उसने कहा, "चाय बनाने के बारे में क्या ख़्याल है? हम लोग बारी-बारी से घर-गृहस्थी का काम करते हैं। आज हमें खिलाने-पिलाने की बारी इगनात की है!"

"आज अगर कोई मेरे बदले काम कर दे तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी!" इगनात ने आग जलाने के लिए सूखी टहनियां और खपच्चियां बटोरते हुए कहा।

"तुम समझते हो कि अकेले तुम्हीं को मेहमानों से बात करने का शौक़ है!" येफ़ीम ने सोफ़िया के पास बैठते हुए कहा।

"इगनात, मैं तुम्हारी मदद करूंगा!" याकोव ने कहा। सायबान

में जाकर वह एक डबल रोटी उठा लाया और उसके टुकड़े काटकर मेज़ पर सजा दिये।

"सुनते हो!" येफ़ीम बोला। "कोई खांस रहा है..."

रीबिन ने कान लगाकर सुना और सिर हिला दिया।

"वही है। जीता-जागता सबूत आ रहा है," उसने सोफ़िया को समझाते हुए कहा। "अगर मेरा बस चलता तो मैं उसे शहर-शहर ले जाकर बाज़ार में बीच चौराहे पर खड़ा कर देता ताकि सब लोग उसकी बातें सुन सकते। उसकी भी बस एक ही रट है, मगर वह ऐसी बात है जिसे सब लोगों को जानना चाहिये..."

गोधूलि-वेला के साथ-साथ निस्तब्धता भी बढ़ती गयी, लोग अब ज़्यादा धीमे स्वर में बोल रहे थे। सोफ़िया और मां उन लोगों को देख रही थीं। वे सब बहुत धीरे-धीरे काम कर रहे थे – उन पर एक विचित्र शैथिल्य छाया हुआ था। और वे लोग भी उन दोनों औरतों को देख रहे थे।

एक लम्बा-सा आदमी लकड़ी के सहारे झुककर चलता हुआ जंगल में से निकला। उसके हांप-हांपकर सांस लेने की आवाज़ सबको सुनायी दे रही थी।

"लो, मैं आ गया!" उसने कहा और यह कहते ही उसे खांसी का दौरा पड़ गया।

वह एक फटा हुआ कोट पहने था जो ज़मीन तक लटक रहा था। उसकी पिचकी हुई गोल टोपी में से पीले-पीले सीधे बालों की लटें बाहर को निकली हुई थीं। उसके हड़ीले पीले चेहरे पर भूरे रंग की दाढ़ी थी; उसके होंट हर दम खुले रहते थे और उसकी आंखें यद्यपि बहुत अन्दर को धंसी हुई थीं, फिर भी उनमें एक अजीब चमक थी।

रीबिन ने जब उसका परिचय सोफ़िया से कराया तो उसने पूछा:

"मैंने सुना है आप लोग किताबें लायी हैं?"

"हां," सोफ़िया ने उत्तर दिया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद... सब लोगों की तरफ़ से!.. वे लोग अभी तक सच्चाई को नहीं समझ पाये हैं... लेकिन मैं चूंकि उस सच्चाई को जानता हूं... इसलिए मैं उनकी तरफ़ से आपको धन्यवाद देता हूं।"

वह जल्दी-जल्दी हांप-हांपकर सांसें ले रहा था, मानो न जाने कितने दिन बाद सांस लेने का मौक़ा मिला हो। बोलते-बोलते वह बीच

में रुक जाता था, और कोट के बटन बंद करने के लिए अपने सीने पर पतली-पतली उंगलियां दौड़ाने लगता था।

"इतनी देर से जंगल में निकलना तुम्हारे लिए ठीक नहीं। पेड़ों की वजह से हवा नम और भारी हो जाती है!" सोफ़िया ने कहा।

"अब मेरे लिए कोई भी चीज़ अच्छी नहीं रह गयी!" उसने सांस लेकर कहा। "अब तो मेरे लिए बस मौत ही अच्छी है..."

उसकी आवाज़ सुनकर बड़ी तकलीफ़ होती थी और उसकी पूरी आकृति को देखकर हृदय में असीम करुणा और लाचारी की भावना जागृत होती थी जिससे एक अजीब घुटी झुंझलाहट पैदा होती थी। वह अपने घुटने मोड़कर एक पीपे पर इस तरह बैठ गया मानो उसे डर हो कि कहीं घुटने टूट न जायें और उसने अपने माथे का पसीना पोंछा। उसके रूखे बाल नीचे लटक रहे थे, मानो किसी मुर्दे के बाल हों।

आग की लपटें भड़कने लगीं, सहसा ऐसा मालूम हुआ कि हर चीज़ यकायक चौंककर कांपने लगी; झुलसी हुई परछाइयां जंगल की तरफ़ भाग चलीं और आग के ऊपर इगनात का भरे-भरे गालोंवाला चेहरा चमक उठा। आग की लपटें शान्त हो गयीं, धुएं की बू आ रही थी; धीरे-धीरे उस खुले मैदान में अंधेरा और ख़ामोशी छा गयी, ऐसा लगता था कि उस बीमार आदमी की कहानी सुनने के लिए सारा वातावरण कान लगाये बैठा था।

"मैं अब भी आप लोगों के काम आ सकता हूं – एक बहुत बड़े गुनाह के सबूत की तरह... मुझे देखिये... मेरी उमर अभी अट्ठाईस बरस की है और मैं मर रहा हूं! अब से दस बरस पहले मैं बड़ी आसानी से पूरे पांच मन का बोझ उठा लेता था। मुझे पूरा यक़ीन था कि मेरा जैसा हट्टा-कट्टा आदमी सत्तर बरस की उमर तक तो ज़िंदा रहेगा ही। लेकिन उसके बाद मैं सिर्फ़ दस बरस और ज़िंदा रहा – और अब – अब सब कुछ ख़त्म हो चुका है। मेरे मालिकों ने मुझे लूट लिया – मेरी ज़िंदगी के चालीस बरस मुझसे लूट लिए – चालीस बरस!"

"इसकी बस यही एक धुन है!" रीबिन ने भारी आवाज़ में कहा।

आग फिर भड़क उठी, पहले से भी ज़्यादा तेज़ी और ज़ोर के साथ और एक बार फिर परछाइयां भागकर जंगल की तरफ़ गयीं और वापस आकर चुपचाप आग के चारों ओर एक भयानक नाच नाचने लगीं।

गीली लकड़ियां चटख रही थीं और उनमें से सी-सी की आवाज़ आ रही थी। पेड़ों की पत्तियां गरम हवा के झोंकों से कानाफूसी कर रही थीं। लाल और पीली लपटें आपस में खेल रही थीं, कभी एक-दूसरे से लिपट जातीं और कभी यकायक भड़ककर चारों ओर चिंगारियां बिखेर देतीं। एक सुलगती हुई पत्ती हवा में उड़ी और रात के अंधेरे में आसमान पर चमकते हुए तारों ने मुस्कराकर नीचे चिंगारियों को देखा, मानो उन्हें ऊपर बुला रहे हों।

"यह मेरी धुन नहीं है। यह वह धुन है जिसे हज़ारों लोग बिना यह समझे अलापते रहते हैं कि उनकी मुसीबत दूसरों के लिए सबक़ है। कितने लोग काम करते हुए अपाहिज होकर भूखों मर जाते हैं..." उसे फिर खांसी का दौरा पड़ गया और वह खांसते-खांसते दोहरा हो गया।

याकोव ने एक बाल्टी में क्वास पेय और हरे प्याज़ की एक गट्ठी लाकर मेज़ पर रख दी।

"सवेली, लो मैं तुम्हारे लिए दूध लाया हूं..." उसने कहा।

सवेली ने अपना सिर हिला दिया, पर याकोव उसकी बांह पकड़कर उसे मेज़ के पास खींच लाया।

"तुमने इसे यहां क्यों बुलवाया?" सोफ़िया ने रीबिन को झिड़कते हुए कहा। "यह किसी भी दम मर जायेगा..."

"मैं जानता हूं!" रीबिन ने सहमति प्रकट की। "लेकिन जब तक इसमें दम है तब तक तो इसे बोलने दो। इसकी सारी ज़िंदगी तो यों ही बेकार क़ुर्बान हो गयी; अब एक नेक काम के लिए थोड़ी-सी मुसीबत और बर्दाश्त कर लेगा तो क्या हुआ! ठीक है, कोई फ़िकर की बात नहीं है।"

"तुम्हें इसमें मज़ा मिलता है!" सोफ़िया ने कहा।

रीबिन ने कनखियों से उसे देखा और गंभीर स्वर में बोला:

"आप जैसे शरीफ़ लोगों को सलीब पर कराहते हुए ईसा मसीह की तारीफ़ करने में मज़ा मिलता है। लेकिन हम लोग इस आदमी की हालत देखकर सबक़ लेना चाहते हैं और यही चाहते हैं कि आप भी सबक़ लें..."

मां ने चिन्तित मुद्रा में एक भौंह चढ़ा ली।

"बस, बहुत हो चुका!.." उसने कहा।

वह रोगी, जो अब मेज़ के पास बैठा था फिर बातें करने लगा:

"आख़िर आदमी से इतना काम क्यों लिया जाये कि वह मर जाये? किसी से उसकी ज़िंदगी क्यों लूट ली जाती है? मैं नेफ़ेदोव फ़ैक्टरी में काम करता था – मेरे मालिक ने एक ऐक्ट्रेस को मुंह-हाथ धोने के लिए सोने का तसला और सोने का बेड-पैन दिया था। मेरी ताक़त और मेरी ज़िंदगी सब बेड-पैन में चली गयी! मैंने अपनी ज़िंदगी उसी बेड-पैन के लिए क़ुर्बान की। एक आदमी ने मुझसे काम लेते-लेते मेरी जान ले ली ताकि वह अपनी रखैल को मेरे ख़ून की क़ुर्बानी देकर ख़ुश रख सके। उसने मेरा ख़ून बेचकर उसके लिए सोने का बेड-पैन ख़रीदा!"

"इंसान की शक्ल-सूरत ईश्वर जैसी बनायी गयी है," येफ़ीम ने तिरस्कार से कहा, "और यहां उसके साथ यह सलूक होता है..."

"तो फिर चुप न रहो!" रीबिन ने मेज़ पर हाथ मारते हुए कहा।

"बर्दाश्त न करो!" याकोव ने धीरे से कहा।

इगनात हंस दिया।

मां ने देखा कि ये तीनों लड़के भूखी आत्माओं की कभी शान्त न होनेवाली उत्सुकता के साथ सवेली की बातें सुनते थे और जब कभी रीबिन बात करता था तब वे उसके चेहरे को परेशानी से देखते रहते थे। सवेली की बातें सुनकर उनके चेहरों पर व्यंग का एक विचित्र भाव आ गया: ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें रोगी से कोई सहानुभूति नहीं है।

"क्या यह सच कह रहा है?" मां ने सोफ़िया की तरफ़ झुककर चुपके से पूछा।

"हां, सच है!" सोफ़िया ने ऊंचे स्वर में उत्तर दिया। "इन उपहारों की ख़बर तो मास्को के अख़बारों में भी छपी थी..."

"लेकिन अपराधी को कभी सज़ा नहीं मिलती!" रीबिन ने अपनी भारी आवाज़ में कहा। "उसे सज़ा मिलनी चाहिये – उसे सबके सामने लाकर उसकी बोटी-बोटी उड़ा देनी चाहिये और उसका सड़ा हुआ गोश्त कुत्तों को खिला देना चाहिये। अरे, जनता जब उठ खड़ी होगी तो वह बहुत भयानक सज़ा देगी। लोगों ने जो मुसीबतें उठायी हैं उनके दाग़ धोने के लिए वे बहुत ख़ून बहायेंगे! और यह उनका अपना ख़ून होगा, उनकी नसों से निचोड़ा हुआ ख़ून होगा, इसलिए उन्हें हक़ होगा कि वे इस ख़ून का जो चाहें करें!"

"मुझे जाड़ा लग रहा है!" रोगी ने कहा।

याकोव ने सहारा देकर उसे उठाया और आग के पास ले जाकर बिठा दिया।

अब आग तेज़ जल रही थी और उसके चारों ओर अस्पष्ट आकृतियों वाली परछाइयां नाच रही थीं और स्पष्ट लपटों की उल्लासमय क्रीड़ा देख रही थीं। सवेली एक कटे हुए पेड़ के ठूंठ पर बैठ गया और उसने अपने सूखे हुए हाथ आग की तरफ़ फैला दिये। उसके हाथ इतने सूखे हुए और पतले थे कि आग की रोशनी उनके पार होकर झलक रही थी।

"किताबों से भी यह बात इतनी अच्छी तरह समझ में नहीं आती!" रीबिन ने सिर हिलाकर रोगी की तरफ़ संकेत करते हुए सोफ़िया से कहा। "जब कोई आदमी मशीन पर काम करते हुए मर जाता है या उसका कोई अंग कट जाता है तो कह दिया जाता है कि क़ुसूर उसी का था। लेकिन जब किसी आदमी का एक-एक बूंद ख़ून निचोड़ लिया जाता है और उसे फोक की तरह फेंक दिया जाता है तो फिर उसके लिए कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता। यह बात तो मेरी समझ में आती है कि किसी आदमी को एक बार में क़त्ल कर दिया जाये, लेकिन यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि आख़िर किसी आदमी को सिर्फ़ मज़ा लेने के लिए सता-सताकर क्यों मार डाला जाये! आख़िर लोगों को सताया क्यों जाता है? हम सब लोगों को क्यों सताया जाता है? सिर्फ़ मज़ा लेने के लिए, सिर्फ़ अपना जी ख़ुश करने के लिए, सिर्फ़ इसलिए कि इस पृथ्वी पर कुछ लोग ऐश कर सकें— इंसान के ख़ून के बदले जो चाहें ख़रीद सकें: ऐक्ट्रेसें, घुड़दौड़ के घोड़े, चांदी के छुरी-कांटे, सोने की तश्तरियां, अपने बच्चों के लिए महंगे-महंगे खिलौने ख़रीद सकें। मालिक कहता है, 'काम करो! ज़्यादा से ज़्यादा काम करो, ताकि मैं तुम्हारी मेहनत से अपनी प्रेमिका के लिए सोने की सिलफ़ची ख़रीद सकूं!"

इन बातों को सुनते हुए मां को ऐसा आभास हुआ कि पावेल और उसके साथियों ने जो पथ अपनाया था, वह रात के अंधेरे में जगमगा उठा।

खाना खाकर वे सब लोग जाकर आग के चारों ओर बैठ गये। आग की लपटें भूखे भेड़ियों की तरह लकड़ी के कुंदों पर झपट रही थीं; उनके पीछे अंधेरे की एक दीवार खड़ी थी जिसने जंगल और आसमान सबको छुपा लिया था। रोगी बैठा आंखें फाड़े आग को घूर रहा था। वह लगातार खांस रहा था और इस तरह कांप रहा था मानो

उसके बचे-खुचे प्राण रोग से जर्जर शरीर से बाहर निकलने को बेचैन हो रहे हों। लपटों की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी, फिर भी उसके बेजान चेहरे पर जीवन का कोई चिन्ह दिखायी न देता था। केवल उसकी आंखों में एक बुझती हुई आग की रोशनी थी।

"सवेली, चलो सायबान में चलकर बैठो न," याकोव ने उसकी तरफ़ झुककर कहा।

"क्यों?" रोगी ने बड़ी कठिनाई से पूछा। "मैं यहीं बैठूंगा – फिर मुझे लोगों से मिलने का मौक़ा ही कहां मिलेगा!.."

उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी और कुछ देर रुककर सूखी हंसी हंसकर बोला, "तुम लोगों के पास रहना मुझे अच्छा लगता है। जब मैं तुम लोगों को देखता हूं तो मुझे उम्मीद होती है कि तुम लोग उन लोगों का बदला लोगे जिन्हें दूसरों के लालच ने लूटकर मार डाला है..."

किसी ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया और वह शीघ्र ही सो गया, उसका सिर निढाल होकर उसके सीने पर झुक गया।

"यहां आकर इसी तरह बैठा रहता है और हमेशा एक ही बात के बारे में बोलता रहता है, खाल खींच लेने के इस भयानक खेल के बारे में," रीबिन ने उसकी तरफ़ देखते हुए धीरे से कहा। "इसके रोम-रोम में यही एक बात बसी हुई है। कोई दूसरी बात इसे सुझायी ही नहीं देती, मानो इसकी आंखों पर यह बात चिपका दी गयी हो।"

"वह और देखे भी क्या?" मां ने कुछ सोचते हुए कहा। "जब रोज़ हज़ारों लोग काम करते-करते अपनी जानें इसलिए दे देते हैं कि उनके मालिक दुनिया भर की खुराफ़ात पर पैसा लुटा सकें, तो फिर और देख भी क्या सकता है कोई?.."

"उसकी बातें सुनते-सुनते जी उकता जाता है!" इगनात ने धीमे स्वर में कहा। "जो एक बार सुन ले वह कभी भूल नहीं सकता, लेकिन वह हमेशा इसी की रट लगाये रहता है!"

"इस रट में सब चीज़ें समायी हुई हैं, सारी ज़िंदगी का निचोड़ है," रीबिन ने गंभीरतापूर्वक कहा। "इस बात को हमें समझना चाहिये! मैं दर्जनों बार उसकी रामकहानी सुन चुका हूं फिर भी कभी-कभी मेरे मन में शंका उठती है। कभी-कभी ऐसी घड़ियां भी आती हैं, जब यह यक़ीन करने को जी नहीं चाहता कि लोग इतने नीच और बदमाश होते हैं... जब अमीर-ग़रीब सभी अच्छे लगते

है... अमीरों को भी ग़लत रास्ते पर लगा दिया गया है! कुछ लोग अपनी ज़रूरत में अंधे रहते हैं, कुछ अपने लालच में। यही असली बात है! हम सोचने लगते हैं, मेरे अच्छे लोगो! मेरे भाइयो! अपनी आंखें खोलो, ईमानदारी से सोचो, अपनी पूरी अक़्ल लगाकर सोचो!"

रोगी ने बैठे-बैठे एक झोंका लिया, आंखें खोल दीं, और फिर ज़मीन पर लेट गया। याकोव चुपचाप उठकर सायबान में गया और शीघ्र ही एक भेड़ की खाल लेकर लौटा, जो उसने अपने भाई को ओढ़ा दी और फिर जाकर सोफ़िया के पास बैठ गया।

आग की हंसती-खेलती लपटें चारों ओर अंधेरे में बैठी हुई आकृतियों को आलोकित कर रही थीं और उन लोगों की गंभीर आवाज़ें लपटों की सरसराहट और लकड़ियों के चटखने के शान्त स्वर में विलीन हुई जा रही थीं।

अपने जीने के अधिकार के लिए सारी दुनिया की जनता के संघर्ष के बारे में, पुराने ज़माने में जर्मनी के किसानों के विद्रोह के बारे में, आयरलैंड के निवासियों की दुर्दशा के बारे में और स्वतंत्रता के संघर्ष में फ़्रांसीसी मज़दूरों की वीरता के बारे में सोफ़िया ने उन्हें बताया...

रात की मखमली चादर ओढ़े हुए इस जंगल में, इस छोटी-सी खुली जगह में जिसके चारों ओर पेड़ों की दीवारें खड़ी थीं और ऊपर आकाश का शामियाना लगा था, जहां आग की रोशनी हो रही थी और विस्मित तथा द्वेषपूर्ण परछाइयां जिसे घेरे खड़ी थीं, ऐसी घटनाओं की कहानी सुनायी जा रही थी जिन्होंने नीच धनी लोगों की दुनिया की नींव हिला दी थी। सच्चाई और आज़ादी के लिए लड़नेवालों के नाम लिये गये और ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक-एक करके पृथ्वी की सारी जातियों के लोग लड़ाई के थके-हारे और खून में लथपथ सामने से गुज़रे।

सोफ़िया का स्वर मंद और भारी था। यह आवाज़ अतीत की गहराइयों से आती हुई प्रतीत होती थी और जो लोग दूसरे देशों के अपने भाइयों की यह कहानी बड़े ध्यान से चुपचाप सुन रहे थे उनके हृदयों में उसकी आवाज़ आशा और विश्वास जागृत कर रही थी। सोफ़िया के पीले, दुबले-पतले चेहरे को बड़े ध्यान से देखते हुए उन्हें दुनिया की सभी जातियों का पुनीत ध्येय – स्वतंत्रता के लिए निरन्तर संघर्ष करने का ध्येय, ज़्यादा अच्छी तरह समझ में आने लगा। उन्हें यह मालूम हुआ कि उनके अपने स्वप्न और आकांक्षाएं भी वही थीं जो

सुदूर अतीत में रहनेवाली अज्ञात जातियों की थीं और उस अतीत काल और वर्तमान काल के बीच इतिहास का काला रक्त-रंजित परदा पड़ा हुआ था। अपनी भावनाओं और विचारों में उन्होंने सारे विस्तृत संसार से सम्पर्क स्थापित कर लिया और इस संसार में उन्हें ऐसे मित्र मिले जो पृथ्वी पर न्याय का राज्य स्थापित करने के सूत्र में एकबद्ध थे और जो मुसीबतें वे उठा रहे थे और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जो ख़ून वे बहा रहे थे, उसने उनके इस दृढ़ निश्चय को पुनीत बना दिया था। दुनिया की सारी जनता के साथ आत्मिक संबंध की एक नयी भावना जागृत हुई, विश्व को मानो एक नया हृदय मिल गया – एक ऐसा हृदय जिसमें हर बात को जानने, हर चीज़ को समझने की जिज्ञासा का स्पंदन था।

"एक दिन आयेगा जब सब देशों के मज़दूर उठ खड़े होंगे और कहेंगे, 'बस, बहुत हो चुका! अब हम ऐसा जीवन बर्दाश्त करने को तैयार नहीं!'" सोफ़िया ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा। "उस वक़्त उन लोगों की डांवांडोल शक्ति, जो केवल अपने लालच के कारण ही शक्तिशाली है, चकनाचूर हो जायेगी, उनके पांवों तले ज़मीन खिसक जायेगी और उनका कोई सहारा नहीं रह जायेगा..."

"सच है!" रीबिन ने सिर झुकाये हुए कहा। "अगर हम अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हो जायें तो कोई काम ऐसा नहीं है जो हम न कर सकें!"

मां अपनी भवें ऊपर ताने और होंटों पर सुखद विस्मय की मुस्कराहट लिये सोफ़िया की बातें सुन रही थी। उसने देखा कि सोफ़िया के स्वभाव के विपरीत उसके व्यवहार में जो एक आकस्मिकता, उच्छृंखलता और उद्विग्नता थी वह उसके इस वृत्तान्त के कौतूहलपूर्ण शान्त प्रवाह में ग़ायब हो गयी थी। मां को रात्रि की निस्तब्धता, आग की लपटों की क्रीड़ा और सोफ़िया का चेहरा सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था – पर सबसे अच्छा उसे यह लग रहा था कि किसान कितने ध्यान से उसकी बातें सुन रहे थे। वे दम साधे बिल्कुल चुपचाप बैठे थे, वे यही चाहते थे कि इस वृत्तान्त के निर्बाध प्रवाह में कोई रुकावट न आये, वे डर रहे थे कि यह ज्योतिर्मय सूत्र जो बाक़ी दुनिया के साथ उनका संबंध जोड़ रहा था, कहीं टूट न जाये। बीच-बीच में उनमें से कोई उठकर बड़ी सावधानी से आग में और लकड़ी डाल देता था और उसमें से निकलनेवाली चिंगारियों की बौछार और धुएं के बादलों से औरतों

को बचाने के लिए अपना हाथ ज़ोर-ज़ोर से हिलाता था।

एक बार याकोव उठा और उसने चुपके से कहा :

"ज़रा एक मिनट..."

वह भागकर सायबान में गया और ओढ़ने के लिए कुछ चीज़ें ले आया जो उसने और इगनात ने चुपचाप अतिथियों के कंधों और घुटनों पर डाल दीं। सोफ़िया बोलती रही, उसने विजय के दिन का चित्र खींचा और सुननेवालों के हृदय में आत्म-विश्वास की भावना जागृत की, उनमें यह चेतना पैदा की कि उन लोगों के साथ उनका एक अटूट संबंध है जो मोटी तोंदोंवालों की मूर्खतापूर्ण इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपना खून-पसीना एक करते हैं। सोफ़िया के शब्दों ने मां को उत्तेजित नहीं किया बल्कि उनसे जो भ्रातृत्व की भावना जागृत हुई उसके कारण मां का हृदय उन लोगों के प्रति गहरी कृतज्ञता से भर गया जो अपने प्राणों की बलि देकर दिन-रात परिश्रम करनेवालों को प्रेम और सच्चाई और ईमानदारी से सोचने का संदेश देते थे।

"भगवान इनका भला करे!" उसने आंखें बंद करके अपने मन में सोचा।

जब सोफ़िया ने अपनी बात समाप्त की उस समय सबेरा हो रहा था, उसने मुस्कराकर अपने चारों ओर खुशी से दमकते हुए विचारशील चेहरों को देखा।

"अब हम लोगों को चलना चाहिये!" मां ने कहा।

"हां, चलना चाहिये!" सोफ़िया ने थकी-सी आवाज़ में उत्तर दिया।

किसी लड़के ने गहरी आह भरी।

"बड़ा बुरा है कि आप लोगों को जाना है!" रीबिन ने असाधारण कोमलता के साथ कहा। "आपकी बातें सुनना बहुत अच्छा लगता है! लोगों में यह चेतना पैदा कर देना कि वे सब एक हैं बहुत बड़ी बात है! जब आदमी यह समझने लगता है कि लाखों दूसरे लोग भी उसी चीज़ के लिए लड़ रहे हैं तो उसके हृदय में बड़ा प्यार उमड़ आता है। और प्यार की शक्ति बहुत बड़ी होती है!"

"हां, तुम प्यार करो और दूसरे लोग तुम्हारे चूतड़ पर ठोकरें मारते रहें!" येफ़ीम ने उठते हुए हंसकर कहा। "मिखाइलो काका, इससे पहले कि कोई इन्हें यहां देखे इन लोगों को यहां से चल देना चाहिये। ज्यों ही हम लोग ये किताबें बांटना शुरू करेंगे वैसे ही हाकिम

लोग यह तलाश करने लगेंगे कि ये किताबें लाया कौन था? कोई कह देगा, 'याद है वे दो औरतें जो तीर्थ-यात्रा पर इधर आयी थीं ...' "

"मां, तुमने इतनी तकलीफ़ की इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!" रीबिन बीच में बोल उठा। "जब भी मैं तुम्हें देखता हूं तो पावेल के बारे में सोचता रहता हूं। तुम भी कितना अच्छा काम कर रही हो!"

उस समय उसका बर्ताव बड़ी नरमी का था और वह बड़ी हार्दिकता से दांत खोलकर मुस्करा रहा था। हवा ठंडी थी पर वह बिना कोट पहने और क़मीज़ के बटन खोले खड़ा था; उसका सीना खुला हुआ था। मां का हृदय प्रशंसा से भर उठा।

"कुछ ओढ़ लो," मां ने बड़ी ममता से कहा, "ठंडक है!"

"मेरे दिल में गर्मी है!" उसने उत्तर दिया।

तीनों लड़के आग के पास खड़े चुपचाप बातें करते रहे और वह रोगी भेड़ की खाल के कोट में लिपटा हुआ उनके पैरों के पास लेटा रहा। आकाश पर अंधकार छंटने लगा, परछाइयां ग़ायब होने लगीं और सूर्योदय के पूर्वाभास से पत्तियां हिलने लगीं।

"अच्छा, तो अब फिर कब मुलाक़ात हो कौन जाने!" रीबिन ने सोफ़िया की तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए कहा। "शहर में आपको ढूंढ़ना हो तो कैसे ढूंढ़ा जाये?"

"तुम मेरा पता लगा लेना!" मां ने कहा।

तीनों लड़के धीरे-धीरे सोफ़िया के पास आये और कुछ सिटपिटाकर शिष्टता के भाव से उन्होंने उससे हाथ मिलाया। यह स्पष्ट था कि उनमें से हर एक मन ही मन एक गुप्त उल्लास का अनुभव कर रहा था। कितना सुखद और मित्रतापूर्ण था यह उल्लास! और यह भावना उनके लिए इतनी नयी थी कि वे सिटपिटा गये थे। रात के जागरण के कारण उनींदी आंखों से मुस्कराते हुए वे चुपचाप सोफ़िया को घूरते हुए पैर बदलते रहे।

"जाने से पहले थोड़ा-सा दूध क्यों न पी लीजिये?" याकोव ने पूछा।

"है भी दूध?" येफ़ीम ने टोका।

"नहीं है," इगनात ने खिसियाकर अपने बाल पीछे करते हुए कहा, "मुझसे गिर गया ..."

तीनों लड़के हंस दिये।

यद्यपि वे दूध की बातें कर रहे थे, पर मां समझ गयी कि वे

किसी और ही बात के बारे में सोच रहे हैं—उनके हृदय उसके और सोफ़िया के प्रति सहृदयता से भरे हुए थे और वे उनके लिए शुभ कामनाएं कर रहे थे। सोफ़िया ने भी यही अनुभव किया, वह कुछ झेंप गयी और वह नम्रतावश केवल इतना ही कह सकी :

"साथियो, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!"

लड़कों ने एक-दूसरे को इस तरह देखा मानो सोफ़िया के शब्दों ने सहसा उनमें प्रेरणा फूंक दी हो।

रोगी ज़ोर से खांसा। अलाव में अंगारों की चमक ख़त्म हो गयी।

"अच्छा, सलाम!" किसानों ने धीरे से कहा और यह दुःख-भरा शब्द दोनों औरतों के कान में बड़ी देर तक गूंजता रहा।

पौ फट रही थी। दोनों औरतें प्रातःकाल के धूमिल प्रकाश में जंगल के रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही थीं।

"कितना अच्छा रहा!" मां ने कहा; वह सोफ़िया के पीछे-पीछे चल रही थी। "बिल्कुल स्वप्न मालूम होता है! लोग सच्चाई को जानना चाहते हैं, सचमुच! बिल्कुल वही हालत है जैसी बड़े दिन को या ईस्टरवाले दिन सुबह प्रार्थना शुरू होने से पहले गिरजाघर में होती है: अभी पादरी नहीं आया है, चारों ओर अंधेरा और एक अजीब ख़ामोशी है। लेकिन धीरे-धीरे लोग जमा होते जाते हैं... पहले एक मूरत के सामने मोमबत्ती जलायी जाती है फिर दूसरी मूरत के सामने, धीरे-धीरे अंधेरा छंटता जाता है और ईश्वर का घर प्रकाश से भर उठता है।"

"बिल्कुल सच कहा है!" सोफ़िया ने उल्लसित स्वर में कहा। "फ़र्क़ बस यह है कि यहां ईश्वर का घर पूरा संसार है!"

"पूरा संसार!" मां ने सिर हिलाकर कुछ सोचते हुए उसके शब्द दुहराये। "काश यह सच होता!.. तुम इतनी अच्छी तरह बोलीं—इतनी अच्छी तरह कि क्या कहूं! मैं तो डर रही थी कि वे लोग तुम्हें पसन्द नहीं करेंगे..."

सोफ़िया एक क्षण तक चुप रही।

"जब आदमी उनके साथ होता है तो उसमें ज़्यादा सादगी आ जाती है," सोफ़िया ने आख़िरकार बहुत शान्त भाव से गंभीर स्वर में कहा।

वे रीबिन और उस रोगी और उन लड़कों की बातें करती हुई आगे बढ़ती गयीं, जिन्होंने सोफ़िया की बातें बड़े ध्यान से सुनी थीं,

17-1065

जो उनके सामने कुछ सिटपिटा भी गये थे और जिन्होंने उनके छोटे-से-छोटे आराम का ख़्याल रखकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। शीघ्र ही वे खेतों में पहुंच गयीं और सूरज उनका स्वागत करने को निकला। यद्यपि सूरज अभी दिखायी नहीं दे रहा था, पर उसने अपनी गुलाबी निर्मल किरणों का पंखा आकाश में खोल दिया और घास पर पड़ी हुई ओस की बूंदें वसन्त के पुलकित उल्लास के साथ नाना रंगों में चमक उठीं। चिड़ियां जाग उठीं और उन्होंने अपने हर्षित कलरव से प्रातःकाल के वातावरण को मुखरित कर दिया। मोटे-मोटे कौवे हवा में अपने भारी पंख मारते निरन्तर कांव-कांव करते हुए उधर से गुज़रे। कहीं ओरिओल पक्षी की सीटी जैसी आवाज़ सुनायी दी। दूर-दूर तक खुली जगहें दिखायी देने लगीं मानो निकलते हुए सूरज का अभिनंदन करने के लिए पहाड़ियों पर से रात की चादर उतार ली गयी हो।

"कभी-कभी ऐसा होता है कि आदमी बात करता रहता है, लेकिन उसकी एक बात भी समझ में नहीं आती, सहसा वह कोई बहुत ही सीधा-सादा शब्द कहता है और सारी बातें साफ़ समझ में आ जाती हैं!" मां ने विचारमग्न होकर कहा। "उस रोगी के साथ यही बात थी। कारखानों में और दूसरी जगहों पर मज़दूरों से जिस तरह काम लिया जाता है, उसके बारे में मैं बहुत कुछ सुन चुकी हूं और मैं खुद भी बहुत कुछ जानती हूं। लेकिन धीरे-धीरे इन बातों की आदत पड़ जाती है और दिल पर इन बातों का असर नहीं होता। लेकिन उसने जो कुछ कहा वह बहुत ही भयानक था! बहुत ही शर्मनाक था! हे भगवान! क्या ऐसा भी होता है कि लोग अपनी जान तक निकाल देते हैं सिर्फ़ इसलिए कि उनके मालिक उनके साथ ऐसा क्रूर मज़ाक़ कर सकें? यह सरासर अन्याय है!"

मां के विचार इस आदमी की ज़िंदगी पर केन्द्रित हो गये और उसकी स्मृति में न जाने कितने लोगों के चित्र घूम गये जिनके बारे में उसने सुना था पर जिन्हें वह भूल गयी थी।

"लगता है कि वे अपने पेट में इतना ज़्यादा ठूंस चुके हैं कि अब उन्हें मतली होने लगी है! बहुत दिन की बात है, गांव का एक हाकिम था जिसने हुक्म दे रखा था कि उसका घोड़ा जब भी गांव से होकर गुज़रे तो सब किसान झुककर घोड़े को सलाम करें और जो नहीं करता था उसे वह गिरफ़्तार करवा देता था। वह ऐसा क्यों करता था? कोई वजह तो समझ में आती नहीं इसकी!"

सोफ़िया धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगी जिसमें प्रातःकाल की ताज़गी और उल्लास था...

७

मां के जीवन की धारा एक विचित्र शान्त गति से बहती रही। कभी-कभी तो इस शान्ति पर उसे स्वयं भी आश्चर्य होता। उसका बेटा जेल में था और वह जानती थी कि उसे कठोर दंड मिलेगा, फिर भी जब कभी वह इस विषय में सोचती उसके मस्तिष्क में अन्द्रेई और फ़्योदोर तथा अन्य लोगों के चित्र घूम जाते। मां की आंखों के आगे अपने बेटे का चित्र घूमने लगा, जिसमें वे सभी लोग शामिल थे जो जीवन के सुख-दुख में उसके साथ थे। मां उसके बारे में सोचने लगी और उसके जाने बिना ही ये विचार चारों दिशाओं में फैल गये। पतली-पतली तेज़ किरणों की तरह वे हर जगह पहुंच गये और मानो सारी घटनाओं पर प्रकाश डालने के लिए और हर चीज़ को एक ही सूत्र में बांध देने के प्रयत्न में इन विचारों ने हर चीज़ को छू लिया हो। इन भटकते हुए विचारों के कारण वह अपना ध्यान किसी एक चीज़ पर, विशेषतः अपने बेटे को देखने की लालसा और उसके कारण हृदय में उठनेवाली आशंकाओं पर, केन्द्रित न कर सकी।

शीघ्र ही सोफ़िया कहीं चली गयी और पांच दिन बाद जब लौटकर आयी तो बहुत ख़ुश और मगन थी। आने के कुछ ही घंटे बाद वह फिर कहीं ग़ायब हो गयी और अब की बार दो हफ़्ते बाद लौटकर आयी। ऐसा मालूम होता था कि वह अपने जीवन की यात्रा बड़े-बड़े गोल चक्करों में पूरी करती थी, कभी-कभी वह अपने भाई के पास लौट आती थी और उसके आते ही सारे घर में साहस और संगीत का संचार हो जाता था।

मां को संगीत से रुचि हो चली। जब वह कोई गाना सुनती तो उसे ऐसा लगता कि उसके सीने में गर्म लहरें उठकर उसके दिल पर थपेड़े मार रही हैं। इन थपेड़ों से उसके हृदय का स्पंदन और भी समान गति से चलने लगा और उसमें ऐसे विचार उत्पन्न होने लगे जो अच्छी तरह सींची गयी पृथ्वी में गहराई तक जमे हुए बीजों की तरह संगीत के प्रभाव से बड़े सहज ढंग से शब्दों के सुन्दर फूलों के रूप में प्रस्फुटित होते थे।

मां के लिए सोफ़िया का फूहड़पन असह्य था; घर-भर में उसके कपड़े, सिगरेटें और सिगरेटों की राख बिखरी रहती थी। सोफ़िया के आवेशपूर्ण भाषण तो उसके लिए और भी असह्य थे। निकोलाई जिस शान्त आत्म-विश्वास और कोमल गम्भीरता के साथ बोलता था, उससे सोफ़िया का बोलने का ढंग बिल्कुल उल्टा था। उसे सोफ़िया ऐसी लगती थी कि जैसे कोई किशोरावस्था में बड़े-बूढ़ों की बराबरी करने की उत्सुकता दिखा रहा हो और इसी भावना के अधीन वह दूसरों को ऐसे देखती थी जैसे वे विचित्र खिलौने हों। वह हमेशा श्रम के उदात्त स्थान की बातें करती थी, मगर अपने फूहड़पन के कारण मां का काम बढ़ाती रहती थी; वह आज़ादी की लम्बी-चौड़ी बातें करती थी, फिर भी मां यह देखती थी कि वह अपनी असहिष्णुता और लगातार बहस करते रहने के कारण दूसरों को सताती रहती थी। वह अन्तर्विरोधों का भंडार थी और इसी लिए मां हमेशा उसके साथ अपने व्यवहार में बहुत सतर्क रहती थी और उसके प्रति मां के हृदय में वह अपरिवर्तनशील सद्भावना नहीं थी जो निकोलाई के प्रति थी।

दिन-प्रतिदिन एक ही ढर्रे पर अपना जीवन बिताते हुए भी वह हमेशा चिन्ताकुल रहता था; सुबह आठ बजे चाय पीता और अख़बार पढ़कर मां को ख़बरें सुनाता। उसकी बातें सुनते समय मां के सामने आश्चर्यजनक स्पष्टता के साथ यह चित्र खिंच जाता कि जीवन का क्रूर चक्र कितनी निर्ममता से लोगों को पीसकर धन-दौलत से परिवर्तित कर देता था। उसने देखा कि निकोलाई और अन्द्रेई में बहुत-सी बातें एक जैसी थीं। उक्रइनी की तरह ही वह भी लोगों के बारे में बिना किसी द्वेष के बातें करता था, दुनिया की ख़राबियों के लिए वह सब को दोष देता था, पर नये जीवन के प्रति उसकी आस्था न तो अन्द्रेई जितनी दृढ़ थी न उतनी चित्ताकर्षक ही। वह हमेशा एक कठोर और ईमानदार न्यायाधीश के गंभीर स्वर में बोलता था और यद्यपि भयानक बातों की चर्चा करते समय उसके होंटों पर एक खेद-भरी शान्त मुस्कराहट खेलती थी, पर उसकी आंखों में एक कठोर भावहीन चमक होती थी। यह सब देखकर मां समझने लगी थी कि वह कभी किसी को किसी बात के लिए माफ़ नहीं करेगा – वह माफ़ कर ही नहीं सकता था। मां को उस पर तरस आता था क्योंकि वह जानती थी कि अपने आपको कठोर बनाने में कितना कष्ट होता था। दिन-प्रतिदिन वह उसे ज़्यादा चाहने लगी।

नौ बजे वह काम पर चला जाता था। उसके चले जाने के बाद मां घर साफ़ करती, खाना तैयार करती, नहा-धोकर साफ़ कपड़े पहनती और अपने कमरे में बैठकर किताबों की तस्वीरें देखती। उसने पढ़ना सीख लिया था पर उसे पढ़ने में इतनी मेहनत पड़ती थी कि वह शीघ्र ही थक जाती थी और शब्दों को उनके उचित क्रम में नहीं समझ पाती थी। लेकिन तस्वीरें देखने में उसे बच्चों जैसा आनन्द आता था। इन तस्वीरों ने उसके सामने एक नये और अद्भुत जगत का रहस्योद्घाटन किया जिसे वह समझती थी और जो उसे न्यायसंगत मालूम होता था। उसकी आंखों के सामने बड़े-बड़े शहर, सुन्दर इमारतें, मशीनें, जहाज़, स्मारक और मनुष्य के हाथों की रची हुई अपार सम्पदा और अपने वैविध्य से चकित कर देनेवाले प्रकृति के असंख्य अनुपम उपहारों का चित्र घूम जाता। जीवन की परिधि निरन्तर बढ़ती ही गयी, एक-एक करके नयी-नयी आश्चर्यजनक चीज़ें उसकी आंखों के सामने आती गयीं और अपनी अपार निधि तथा अक्षय सौन्दर्य से उसकी तृषित आत्मा में प्रेरणा का संचार करती रहीं। उसे पशु-ज्ञान की चित्रावली देखने में बड़ी रुचि थी। यह पुस्तक यद्यपि एक विदेशी भाषा में थी फिर भी उससे उसे पृथ्वी की सम्पदा तथा सौन्दर्य और उसके विस्तार का स्पष्ट ज्ञान हो गया।

"दुनिया कितनी बड़ी है!" एक दिन उसने निकोलाई से कहा।

वह कीड़ों को, विशेष रूप से तितलियों को देखकर बहुत खुश होती थी। वह उनके चित्र देखती और आश्चर्य करती।

"निकोलाई इवानोविच, कितनी सुन्दर है न!" वह कहती। "चारों तरफ़ कितनी सुन्दरता बिखरी पड़ी है जिसका हमें ज्ञान भी नहीं है, जो हमारे सामने से निकल जाती है और हमें पता भी नहीं चलता। लोग इधर से उधर भागते फिरते हैं, न कुछ जानते हैं, न कुछ देखते हैं – उनके पास न समय ही होता और न ही इच्छा। अगर हमें पृथ्वी की सम्पदा का ज्ञान होता और यह मालूम होता कि उस पर कितने प्रकार के जीव रहते हैं तो हमारे जीवन में कितना सुख होता। और सब चीज़ें सब के लिए हैं, हर चीज़ हर एक के लिए है – है न?"

"है तो!" निकोलाई ने मुस्कराकर कहा और एक अन्य सचित्र पुस्तक उसे ला दी।

लोग बहुधा शाम को उससे मिलने आते थे। उसके अतिथियों में

ये लोग होते थे: अलेक्सेई वासील्येविच, काली दाढ़ी और पीले चेहरेवाला ख़ूबसूरत-सा आदमी जो बहुत रोबदार और अल्पभाषी था; रोमान पेत्रोविच, जिसका सिर गोल था और जिसके चेहरे पर मुंहासे थे और जो हर दम किसी न किसी बात पर बड़े खेद के साथ चिचकारी भरता रहता था; इवान दनीलोविच, जो छोटे क़द का दुबला-पतला आदमी था, जिसकी दाढ़ी नुकीली और आवाज़ बहुत ऊंची थी – वह बहुत फुर्तीला और बातूनी और खंजर की तरह तेज़ था; येगोर, जो हमेशा अपने आप पर, अपने साथियों पर और दिन-ब-दिन बढ़ते हुए रोग पर हंसता रहता था। दूसरे लोग भी थे जो दूर-दूर के शहरों से आते थे। निकोलाई उनके साथ बड़ी देर-देर तक शान्त भाव से बातें करता था। उसकी बातों का विषय हमेशा एक ही रहता था – दुनिया की श्रमिक जनता। वे जोश में आकर हाथ हिला-हिलाकर बहस करते थे और चाय बहुत ज़्यादा पीते थे। कभी-कभी जब वे बातें करते तो निकोलाई पर्चे लिखता और अपने साथियों को पढ़कर सुनाता। वे फ़ौरन उन्हें नक़ल कर लेते और मां बड़ी सावधानी से मसविदे के फटे हुए काग़ज़ बटोरकर जला देती।

उनके लिए चाय बनाते समय मां आश्चर्य करती कि वे ज़िंदगी और मेहनतकश जनता के भविष्य के बारे में, उनके बीच जल्दी से जल्दी सच्चाई का प्रचार करने और उनमें उत्साह भरने की सर्वोत्तम विधियों के बारे में कितने जोश से बातें करते थे। कभी-कभी वे बहस करते-करते क्रुद्ध भी हो जाते थे और एक-दूसरे पर अपमानजनक आरोप लगाते थे, पर बहस जारी रखते थे।

मां को ऐसा लगता था कि मज़दूरों के जीवन को वह उनसे ज़्यादा अच्छी तरह जानती है। उसे ऐसा अनुभव होता था कि जिस काम का उन्होंने बीड़ा उठाया था उसकी विशालता को वह ज़्यादा अच्छी तरह समझती थी और इसलिए वह उन्हें किंचित तिरस्कार की दृष्टि से देखती थी जिस प्रकार कोई बड़ा आदमी उन बच्चों को पति-पत्नी का नाटक खेलते हुए देखता है जिन्हें इस संबंध की मुसीबतों का कुछ भी ज्ञान नहीं होता। अनायास ही वह उनके भाषणों की तुलना अपने बेटे और अन्द्रेई के भाषणों से करने लगती और उसे उनमें साफ़ एक अन्तर दिखायी देता जिसे वह शुरू-शुरू में नहीं समझ पाती थी। कभी-कभी तो उसे ऐसा लगता कि यहां लोग मज़दूरों की बस्ती के मुक़ाबले में चिल्लाते ज़्यादा थे।

"वे ज़्यादा जानते हैं, इसी लिए ज़्यादा चिल्लाते भी हैं," वह उनके व्यवहार की व्याख्या इस प्रकार करती।

परन्तु बहुधा उसे यह आभास होता कि वे लोग जानबूझकर एक-दूसरे को उत्तेजित करते थे और अपने उत्साह का दिखावा ज़्यादा करते थे, मानो हर आदमी अपने साथियों के सामने यह सिद्ध कर देना चाहता हो कि उसके लिए सत्य का जितना महत्व है उतना दूसरों के लिए नहीं; कुछ लोग इस पर बुरा मान जाते और बारी-बारी से स्वयं यह सिद्ध करने के लिए कि वे ही सत्य के सबसे बड़े पुजारी हैं, भोंडे और कटु तर्कों का प्रयोग करते। हर आदमी दूसरे से ऊंचा कूदने का प्रयत्न करता और मां को इस पर बड़ी चिन्ता और दुःख होता।

"वे पावेल और उसके साथियों को बिल्कुल भूल ही गये हैं," वह कांपती हुई भवों और विनय-भरी आंखों से उन्हें एकटक देखते हुए सोचती रहती।

यद्यपि वह उन्हें समझ न पाती फिर भी वह उनकी सारी बहसें बड़े ध्यान से सुनती, पर वह उनके शब्दों का तात्पर्य समझने का प्रयत्न करती और यह बात उसके सामने स्पष्ट हो गयी कि जब मज़दूरों की बस्ती में नेकी पर बहस होती थी, तब उसे बिना किसी संकोच के एक अखंड वस्तु के रूप में स्वीकार किया जाता था, लेकिन यहां उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाते थे; वहां भावनाएं ज़्यादा गहरी और दृढ़ होती थीं, यहां तीव्र तर्क-वितर्क से उन्हें खंड-खंड कर दिया जाता था। यहां पुरानी चीज़ों को ढा देने की बातें ज़्यादा की जाती थीं, वहां भविष्य की कल्पना पर ज़ोर दिया जाता था और यही कारण था कि उसके बेटे और अन्द्रेई के शब्द उसको अधिक प्रिय थे और ज़्यादा अच्छी तरह उसकी समझ में आते थे...

उसने देखा कि जब कोई मज़दूर निकोलाई से मिलने आता था तो उसका बोलचाल का ढंग और व्यवहार ज़रूरत से ज़्यादा निःसंकोच और उन्मुक्त हो जाता था। उसके चेहरे पर एक मिठास आ जाती थी और वह एक नये ही ढंग से बोलने लगता था – शायद ज़्यादा खुलकर साफ़-साफ़ शब्दों में या शायद ज़्यादा बेपरवाही से।

"वह इस ढंग से बातें करने की कोशिश कर रहा है कि यह आदमी उसकी बात समझ ले!" मां सोचती।

पर इससे उसे संतोष नहीं होता था। वह देखती थी कि मज़दूर भी कुछ सकुचाया-सा रहता था, जैसे अन्दर से किसी ने उसे जकड़ लिया

हो और इसलिए वह निकोलाई के साथ उतना खुलकर और आसानी से बात नहीं कर सकता था जितना खुलकर वह उसकी जैसी साधारण मज़दूर औरत के साथ बातें करता था। एक बार जब निकोलाई कमरे से बाहर गया तो उसने वहां बैठे हुए एक नौजवान से कहा:

"तुम डरते क्यों हो? तुम कोई स्कूली बच्चे की तरह अपने अध्यापक को सबक़ सुनाने तो आये नहीं हो..."

मज़दूर ने खीसें निकाल दीं:

"अपनी संगत न हो तो सभी का रंग फीका पड़ जाता है... कुछ भी हो, वह हमारा जैसा मज़दूर तो है नहीं..."

कभी-कभी साशा भी आती। वह ज़्यादा देर नहीं रुकती थी और बिना हंसे या मुस्कराये सिर्फ़ काम की ही बातें करती थी और चलते वक़्त हमेशा मां से कहती थी:

"पावेल मिख़ाइलोविच की क्या ख़बर है?"

"अच्छा है – भगवान की कृपा से खुश है!"

"उससे मेरा सलाम कहना!" लड़की इतना कहकर ग़ायब हो जाती।

एक बार मां ने उससे शिकायत करते हुए कहा कि पावेल को इतने दिन से जेल में बंद कर रखा है, आख़िर उस पर मुक़द्दमा क्यों नहीं चलाया जाता। साशा की त्योरियों पर बल पड़ गये, पर वह कुछ बोली नहीं लेकिन उसकी उंगलियां फड़कने लगीं।

मां का जी तो बहुत चाहता था कि उससे कह दे:

"मैं जानती हूं कि तुम उसे प्यार करती हो..."

पर उसका साहस न होता था। लड़की की गंभीर आकृति, उसके भिंचे हुए होंट और उसके बात कहने के रूखे ढंग के आगे कोई प्यार-भरी बात कही ही नहीं जा सकती थी। आह भरकर मां उसका बढ़ा हुआ हाथ थाम लेती और कसकर दबा देती।

"मेरी बच्ची, तू भी कितनी दुःखी है..." मां सोचती।

एक दिन नताशा आयी। मां को वहां देखकर वह बहुत खुश हुई। उसने मां को प्यार किया। इसके बाद नताशा ने सहसा चुपके से कहा:

"मेरी मां गुज़र गयीं, बेचारी कितनी अच्छी थीं!.."

यह कहकर उसने अपना सिर झटका और जल्दी से अपनी आंखें पोंछकर बोली:

"बड़े दुःख की बात है! अभी वह पचास वर्ष की भी नहीं थीं। वह अभी और बहुत दिन ज़िंदा रह सकती थीं। लेकिन फिर मैं

सोचती हूं कि जैसी ज़िंदगी वह बसर कर रही थीं उससे तो मौत ही अच्छी थी। वह हमेशा अकेली रहीं, कभी किसी ने उनसे प्यार नहीं किया, किसी को उनकी ज़रूरत नहीं थी और वह मेरे पिता की डांट-फटकार से कांपती रहती थीं। यह भी कोई ज़िंदगी है? लोग ज़िंदा रहते हैं इस उम्मीद में कि आगे चलकर उनका जीवन बेहतर होगा लेकिन मेरी मां के लिए भविष्य में भी अपमानों के अलावा और कुछ नहीं था..."

"नताशा, तुम सच कहती हो!" मां ने कुछ सोचते हुए कहा। "लोग इस उम्मीद में ज़िंदा रहते हैं कि आगे चलकर उनका जीवन बेहतर होगा, लेकिन अगर भविष्य के लिए कोई आशा न हो तो फिर किस काम की ऐसी ज़िंदगी?" और मां ने लड़की का हाथ थपककर कहा, "तो अब तुम अकेली रह गयीं?"

"बिल्कुल अकेली!" नताशा ने लापरवाही से कहा।

"कोई बात नहीं!" मां ने थोड़ी देर बाद मुस्कराकर कहा। "अच्छे लोग ज़्यादा दिन तक अकेले नहीं रहते—कोई न कोई उनके साथ हो ही जाता है..."

८

नताशा कपड़ा बुनने के एक कारख़ाने के स्कूल में पढ़ाने लगी और मां ने उसे ग़ैर-क़ानूनी पुस्तिकाएं, पर्चे और अख़बार पहुंचाने का काम अपने ज़िम्मे ले लिया।

यही उसका काम हो गया। महीने में कई बार वह मठवासिनी या घर की बुनी हुई लैसें बेचनेवाली, या शहर की शरीफ़ औरत या संत-सधुनी का भेस बदलकर कंधे पर थैला डाले या हाथ में सूटकेस लिये सारे इलाक़े का चक्कर लगाती। रेलगाड़ियों में और जहाज़ों पर, होटलों और सरायों में हर जगह वह वही सीधी-सादी गंभीर औरत बनी रहती, जो अजनबियों से ख़ुद बातचीत शुरू करती और निडर होकर अपनी मिलनसारी और बहुत दुनिया देखे हुए व्यक्ति के आत्म-विश्वास के कारण सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती।

उसे लोगों से बात करना, उनके क़िस्से और शिकायतें सुनना और यह मालूम करना अच्छा लगता था कि उन्हें कौन-सी चीज़ें विस्मय में डाल देती थीं। वह ऐसे आदमी से मिलकर बहुत ख़ुश होती थी जिसे हर चीज़ से गहरा असंतोष हो और जिसका असंतोष भाग्य के

थपेड़ों के विरुद्ध प्रतिरोध करते हुए भी हमेशा सुस्पष्ट प्रश्नों के उत्तर की खोज में रहे। उसके सामने मानव जीवन का व्यापक चित्र फैला हुआ था जिसमें हर आदमी दो वक़्त की रोटी कमाने के लिए जान लड़ाकर संघर्ष करता है। हर तरफ़ वह लोगों को धोखा देने, उनसे कुछ छीन लेने, उनका खून पी लेने और उनकी मेहनत से एक-एक बूंद मुनाफ़ा निचोड़ लेने के निर्लज्ज और दिल दहला देनेवाले प्रयत्न देखती थी। वह देखती थी कि पृथ्वी पर हर चीज़ का बाहुल्य था फिर भी आम लोग कौड़ी-कौड़ी को मुहताज रहते थे और इस प्रचुर सम्पदा के बावजूद उन्हें भर-पेट भोजन नहीं मिलता था। शहरों के गिरजाघरों में सोने-चांदी के अम्बार लगे थे जिसकी ईश्वर को कोई ज़रूरत नहीं थी और इन्हीं गिरजाघरों के फाटकों पर सर्दी में ठिठुरते हुए भिखारी पैसा-धेला पा जाने की आस में हाथ फैलाये खड़े रहते थे। यह सब कुछ वह पहले भी देख चुकी थी – धन-दौलत वाले गिरजाघर, पादरियों की ज़री और कमखाब की पोशाकें, ग़रीबों की झोपड़ियां और उनके लज्जास्पद चीथड़े। पर उस समय वह इन सब बातों को स्वाभाविक समझती थी, लेकिन अब यह उसके लिए असह्य हो गया था और इसे वह ग़रीबों का अपमान समझती थी, क्योंकि वह जानती थी कि वे गिरजाघर के अधिक निकट थे और अमीरों की अपेक्षा उन्हें गिरजाघर की ज़्यादा आवश्यकता थी।

उसने ईसा मसीह के जो चित्र देखे थे और उनके बारे में जो कहानियां सुनी थीं उनसे वह जानती थी कि वह बहुत साधारण कपड़े पहनते थे और ग़रीबों के मित्र थे। पर गिरजाघरों में वह उनकी मूर्त्ति को चमकदार सोने और रेशम में सजा हुआ देखती थी और जब ग़रीब लोग अपना दुखड़ा लेकर उनके पास आते थे तो मानो उन्हें देखते ही घृणा से इस रेशम में सरसराहट होने लगती थी। अनायास ही उसे रीबिन के शब्द याद आ जाते थे:

"उन्होंने हमें ईश्वर के मामले में भी बेवक़ूफ़ बना दिया है!"

उसे यह मालूम भी न हुआ कि कैसे धीरे-धीरे उसका प्रार्थना करना कम होता गया था, पर वह ईसा मसीह और उन लोगों के बारे में दिन-प्रतिदिन अधिक सोचने लगी जो कभी ईसा मसीह का नाम भी नहीं लेते थे और जिन्हें शायद उनके बारे में जानकारी भी बहुत कम थी, पर जो उनके बताये हुए ढंग से और उनके सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत करते थे, इस पृथ्वी को ग़रीबों का राज्य

समझते थे और उसकी सम्पदा को सब के बीच बांटने के लिए प्रयत्नशील थे। वह इसके बारे में बहुत सोचती थी, उसके ये विचार बढ़ते गये और इन विचारों की जड़ें गहराई तक जम गयीं; वह जो कुछ देखती या सुनती थी उस सब का समावेश इन विचारों में था। इन विचारों ने बढ़कर प्रार्थना की ज्योति धारण कर ली और सारा अंधकारमय जगत, सारा जीवन और सारी जनता इस अखंड ज्योति से आलोकित हो उठी। मां को ऐसा लगा कि ईसा मसीह के प्रति उसका प्रेम और भी गहरा हो गया था; ईसा मसीह के प्रति प्रेम तो उसके हृदय में हमेशा ही से था—एक अस्पष्ट-सी कोमल भावना, एक मिश्रित भाव जिसमें भय अभिन्न रूप से आशा के साथ और हर्ष वेदना के साथ सम्बद्ध था। अब ईसा मसीह बदल गये थे, उनका स्वरूप अधिक उदात्त हो गया था और उन तक आसानी से पहुंचा जा सकता था; उनका रूप अधिक ज्योतिर्मय और उल्लासपूर्ण हो गया था। ऐसा मालूम होता था कि उन लोगों ने, जो अपनी विनम्रता के कारण उनका नाम—मनुष्य के आर्त्त मित्र का नाम—भी नहीं लेते थे, उनके नाम पर अपने खून की नदियां बहाकर उन्हें अमर बना दिया था। हर बार दौरा करके जब मां निकोलाई के पास लौटती तो बहुत खुश होती और रास्ते में जो कुछ देखती या सुनती उसके प्रति उसके हृदय में बड़ा उत्साह होता और यह संतोष होता कि उसने अपना काम पूरा कर दिया।

"इस तरह घूमने-फिरने और इतनी बहुत-सी चीज़ें देखने से बहुत फ़ायदा होता है!" वह निकोलाई से अक्सर शामों को कहा करती थी। "इससे आदमी ज़िंदगी को समझता है। आम लोगों को ढकेलकर ज़िंदगी की बाहरी सीमा पर पहुंचा दिया जाता है, जहां वे अंधेरे में सड़ते हैं और यही प्रश्न करते रहते हैं कि आख़िर ऐसा क्यों है। उन्हें क्यों इस तरह दुतकार दिया जाता है? जब खाने को इतना मौजूद है, तो वे भूखों क्यों मरते हैं? जब इतना ज्ञान मौजूद है, तो वे जाहिल क्यों रहते हैं? और वह दया-निधान भगवान क्यों यह सब देखता रहता है, जिसके लिए अमीर-ग़रीब में कोई अन्तर नहीं है, जो सब उसी की प्रिय सन्तान हैं? लोग जब अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचते हैं तो वे उत्तेजित हो उठते हैं, वे इस बात को समझते हैं कि अगर उन्होंने कोई रोक-थाम न की तो अन्याय उनका नाम-निशान तक मिटा देगा!"

मां की यह इच्छा प्रतिदिन प्रबल होती गयी कि वह आम लोगों

से उनके जीवन के अन्यायों के बारे में बात करे; कभी-कभी तो उसके लिए इस इच्छा को दबाना भी कठिन हो जाता...

निकोलाई जब भी उसे तन्मय होकर तस्वीरें देखता हुआ पाता वह उसे दुनिया की अनोखी बातों के बारे में बताता। मां जब सोचती कि मनुष्य ने कितने बड़े-बड़े कामों का बीड़ा उठाया है तो वह दंग रह जाती।

"क्या यह संभव है?" वह संशय के भाव से पूछती।

अपनी भविष्यवाणी में अटल आस्था के साथ वह बड़ी स्नेह-भरी दृष्टि से उसे अपनी ऐनक के पीछे से देखता और मां को भविष्य के बारे में कहानियां सुनाता:

"मनुष्य की इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है और उसकी शक्ति अक्षय है! पर दुनिया की आत्मिक समृद्धि बहुत धीरे-धीरे होती है, क्योंकि उस आदमी को, जो स्वतंत्र रहना चाहता है, ज्ञान के बजाय पैसा बटोरना पड़ता है। लेकिन जब लोग इस धन के लोभ और बेगार से मुक्त हो जायेंगे तब..."

मां की समझ में उसकी बातें शायद ही कभी आती हों, पर धीरे-धीरे वह उस शान्त और गंभीर आस्था को समझने लगी जो इन विचारों को प्रेरित करती थी।

"असल मुसीबत यह है कि पृथ्वी पर स्वतंत्र लोग बहुत कम हैं!" वह कहता।

मां की समझ में यह बात आती थी। वह ऐसे लोगों को जानती थी जिन्होंने अपने आपको लोभ और ईर्ष्या से मुक्त कर लिया था और वह जानती थी कि अगर ऐसे लोगों की संख्या बढ़ जाये तो जीवन इतना अंधकारमय और भयानक न रह जाये, वह अधिक सरल, अधिक उज्ज्वल और अधिक उदात्त हो जाये।

"लोगों को ज़बरदस्ती बेरहम बना दिया जाता है!" निकोलाई ने उदास भाव से कहा।

मां को उक्रइनी के शब्द याद आ गये और उसने सहमति में सिर हिला दिया।

६

निकोलाई रोज़ तो बहुत ठीक वक़्त से घर लौट आता था, पर एक दिन वह कुछ देर से घर लौटा।

उसने अपना कोट उतारे बिना उत्तेजना से हाथ मलते हुए कहा :

"निलोवना, आज हमारा एक साथी जेल से भाग निकला। कौन हो सकता है? मैं पता नहीं लगा पाया।"

मां की आंखों के आगे ज़मीन घूमने लगी।

"क्या पावेल हो सकता है?" उसने बैठकर चुपके से पूछा।

"हो तो सकता है," निकोलाई ने अपने कंधे बिचकाकर कहा। "लेकिन हम उसे छुपायेंगे कैसे? हमें उसका पता कैसे लगेगा? मैं इस उम्मीद से बड़ी देर तक सड़कों का चक्कर लगाता रहा कि शायद वह कहीं मिल जाये। खैर, यह तो मेरी मूर्खता थी लेकिन हमें कुछ करना चाहिये! मैं फिर बाहर जा रहा हूं..."

"मैं भी चलती हूं!" मां ने ऊंचे स्वर में कहा।

"तुम येगोर के यहां जाकर मालूम कर आओ कि उसे तो कुछ नहीं मालूम?" निकोलाई ने उससे कहा और जल्दी से बाहर निकल गया।

मां ने जल्दी से अपने सिर पर एक रूमाल बांधा और सड़क पर उसके पीछे हो ली। उसके हृदय में आशाओं का तूफ़ान उमड़ा पड़ रहा था; उसकी आंखों के आगे लाल-लाल धब्बे नाच रहे थे और उसका दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि वह प्रायः भागने लगी। उसे अपने आस-पास की किसी चीज़ का होश नहीं था, वह सिर झुकाये एक अज्ञात संभावना की खोज में चली जा रही थी।

"शायद वह वहां मिल ही जाये!" यही आशा उसे आगे बढ़ा रही थी।

उसे बड़ी गर्मी लग रही थी और थकन के मारे वह हांप रही थी। येगोर के मकान की सीढ़ियों के पास पहुंचकर वह रुक गयी, उसकी ताक़त ने जवाब दे दिया। उसने पीछे मुड़कर देखा और सहसा चीख मारकर आंखें बंद कर लीं। उसे ऐसा लगा कि उसने घर के फाटक पर निकोलाई वेसोवश्चिकोव को जेबों में हाथ डाले खड़े देखा था। पर जब उसने दुबारा देखा तो वहां कोई भी नहीं था।

"मैंने कल्पना की होगी!" उसने सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सोचा, उसके कान चौकन्ने थे। नीचे आंगन में उसे किसी के धीमे क़दमों की आहट सुनायी दी। वह सीढ़ियों पर ठहरकर नीचे देखने लगी। फिर उसने वही चेचक के दाग़ों से भरा हुआ चेहरा देखा, अब वह उसे देखकर मुस्करा रहा था।

"निकोलाई! निकोलाई!" मां ने चिल्लाकर कहा और उससे मिलने के लिए सीढ़ियों के नीचे भागी। उसके हृदय में निराशा की वेदना थी।

"तुम चलती जाओ! चलती जाओ!" उसने अपना हाथ हिलाकर धीरे से कहा।

जल्दी-जल्दी सीढ़ियां लांघकर वह येगोर के कमरे में घुसी; येगोर कोच पर लेटा हुआ था।

"निकोलाई... जेल से... भाग आया है!.." मां ने हांपते हुए कहा।

"कौन-सा निकोलाई?" येगोर ने तकिये पर से सिर उठाकर भर्रायी हुई आवाज़ में पूछा। "दो निकोलाई हैं..."

"वेसोवश्चिकोव... वह यहीं आ रहा है!.."

"अच्छी बात है!"

इतने में निकोलाई स्वयं कमरे में आया और दरवाज़े का कुंडा लगाकर वहां खड़ा अपने बालों पर हाथ फेरता हुआ मुस्कराता रहा। येगोर कुहनियों के बल उठ बैठा।

"आओ, आओ," उसने सिर हिलाकर कहा।

निकोलाई खीसें निकाले मां की तरफ़ बढ़ा और उसका हाथ पकड़ लिया:

"अगर मैं तुमसे न मिला होता तो शायद मैं फिर जेल वापस चला जाता! मैं शहर में तो किसी को जानता नहीं था और अगर बस्ती में जाता तो मुझे वे फ़ौरन गिरफ़्तार कर लेते। इसलिए मैं सड़कों पर फिरता रहा और सोचता रहा कि मैंने भी भागकर कितनी बेवक़ूफ़ी की! यकायक मैंने पेलागेया निलोवना को जल्दी-जल्दी इधर आते देखा, बस मैं इनके पीछे हो लिया..."

"तुम बाहर निकले कैसे?" मां ने पूछा।

वह कुछ झेंपता हुआ कोच के सिरे पर बैठ गया और उसने अपने कंधे झटक दिये।

"बस इत्तफ़ाक़ की बात है!" उसने कहा। "मैं बाहर टहल रहा था कि इतने में फ़ौजदारी के क़ैदियों ने एक सन्तरी को पीटना शुरू कर दिया। इस सन्तरी को एक बार चोरी के जुर्म में राजनीतिक पुलिस से निकाला जा चुका है, इसलिए अब वह हर आदमी के ख़िलाफ़ जासूसी करता है, जाकर सारी ख़बरें पहुंचाता है और किसी को चैन

भी नहीं बैठने देता! इसी लिए लोग उसे पीट रहे थे। चारों तरफ़ गड़बड़ी मची हुई थी और दूसरे सन्तरी सीटियां बजाते हुए इधर से उधर भाग रहे थे। मैंने नज़र उठायी तो देखता क्या हूं कि फाटक खुला हुआ है, बाहर चौक और शहर दिखायी दे रहा है। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा... जैसे नींद में चल रहा होऊं। जब मैं बाहर सड़क पर बहुत दूर निकल आया तो मुझे होश आया और मैं सोचने लगा कि मैं जाऊंगा कहां? पीछे मुड़कर देखा तो जेल का फाटक बंद हो चुका था..."

"हुं:!" येगोर न कहा। "तो हुज़ूर वापस क्यों नहीं लौट गये? जाकर शराफ़त से दरवाज़ा खटखटाते और उनसे कहते कि तुम्हें अन्दर ले लें। तुम उनसे कहते–'माफ़ कीजियेगा, जनाब, मुझसे ज़रा-सी ग़ल्ती हो गयी...'"

"हां," निकोलाई हंसकर बोला, "बेवकूफ़ी तो थी मेरी, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मैंने अपने साथियों के साथ ठीक नहीं किया, इस तरह किसी से कुछ कहे-सुने बिना चला आया... लेकिन मैं आगे बढ़ता रहा। रास्ते में मुझे एक जनाज़ा मिला, लोग किसी बच्चे की लाश को दफ़न करने ले जा रहे थे। मैं भी साथ हो लिया, सिर झुकाकर, किसी की तरफ़ देखे बिना मैं जनाज़े के पीछे-पीछे चलने लगा। थोड़ी देर तक क़ब्रिस्तान में बैठकर मैं हवा खाता रहा, फिर यकायक मुझे एक बात सूझी..."

"बस एक बात?" येगोर ने आह भरकर पूछा। "मेरे ख़्याल से इस एक ही बात से तुम्हारा दिमाग़ कहीं ठसाठस भर तो नहीं गया..."

वेसोवश्चिकोव सहृदयता से हंस दिया और सिर हिलाने लगा।

"अब मेरा दिमाग़ उतना खाली नहीं है जितना किसी ज़माने में हुआ करता था। लेकिन मैं देखता हूं कि येगोर इवानोविच तुम अभी तक बीमार हो..."

"जिसमें जो करने की सकत होती है वह वही करता है," येगोर ने खांसकर कहा और बलग़म थूक दिया। "तुम अपना क़िस्सा सुनाओ!"

"मैं यहां के अजायबघर में चला गया। बड़ी देर तक वहां घूम-फिरकर चीज़ें देखता रहा और सोचता रहा: अब यहां से कहां जाऊंगा? मुझे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। और भूखा तो मैं इतना था कि अगर कोई मिल जाता तो कच्चा खा जाता! मैं बाहर

सड़क पर निकलकर आगे चला। मैं हिम्मत हार चुका था... पुलिसवाले सबको बड़े ग़ौर से देख रहे थे। मैंने सोचा कि बस अभी पकड़ा जाऊंगा! इतने में यकायक मैंने पेलागेया निलोवना को जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाये इधर आते देखा। मैं एक तरफ़ को हट गया और फिर इनके पीछे-पीछे चला आया। बस यह हुआ!"

"मैंने तुम्हें नहीं देखा!" मां ने अपराधी की तरह कहा। ध्यान से देखने पर उसे मालूम हुआ कि वेसोवश्चिकोव दुबला हो गया था।

"शायद साथी परेशान हो रहे होंगे," वेसोवश्चिकोव ने सिर खुजाते हुए कहा।

"और हाकिम भी तो परेशान हो रहे होंगे! तुम्हें उन पर तरस नहीं आता? वे तो बहुत परेशान होंगे!" येगोर ने कहा। वह अपना मुंह खोलकर इस तरह होंट चलाने लगा मानो हवा चबा रहा हो। "अच्छा, मज़ाक़ तो बहुत हो लिया! अब हमें तुमको कहीं छुपाना पड़ेगा। मुझे इससे खुशी तो बहुत है, पर यह काम आसान नहीं है। कमबख़्त, मैं उठ भी तो नहीं सकता..." उसने सांस लेने का प्रयत्न करते हुए कहा और दोनों हाथ सीने पर रखकर धीरे-धीरे अपना सीना मलने लगा।

"येगोर इवानोविच, तुम तो बहुत बीमार मालूम होते हो!" निकोलाई ने अपना सिर झुकाये हुए कहा। मां ने एक आह भरी और उस छोटे-से कमरे में बड़ी चिन्ता से चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर देखा।

"तुम उसकी फ़िकर न करो!" येगोर ने उत्तर दिया। "मां, अब ज़्यादा शरमाओ नहीं, उससे पावेल के बारे में पूछ लो!"

वेसोवश्चिकोव ने खीसें निकाल दीं।

"पावेल मज़े में है। बिल्कुल ठीक है। वहां वही हमारा सरदार था। वही अफ़सरों से बात करता है और हर बात में सबसे आगे रहता है। सब लोग उसको बहुत मानते हैं..."

वेसोवश्चिकोव की बातों पर पेलागेया अपना सिर हिलाती रही और कनखियों से येगोर के फूले-फूले नीलवर्ण चेहरे को देखती रही। उसका चेहरा उसे अजीब सपाट, निश्चेष्ट और भावहीन मालूम हो रहा था। पर उसकी आंखों में स्फूर्ति और हर्ष की चमक थी।

"कुछ खाने को है – मुझे बहुत भूख लगी है!" सहसा निकोलाई ने कहा।

"मां, वहां अल्मारी पर थोड़ी-सी रोटी रखी है," येगोर ने कहा।

"फिर तुम ज़रा गलियारे में चली जाओ और वहां बायीं तरफ़ दूसरा दरवाज़ा खटखटाओ। एक औरत दरवाज़ा खोलेगी; तुम उससे कहना कि जो भी खाने को हो ले आये।"

"इतने खाने की क्या ज़रूरत है?" निकोलाई ने प्रतिरोध किया।

"तुम फ़िक्र न करो, बहुत नहीं होगा..."

मां ने बाहर जाकर दरवाज़ा खटखटाया। उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए वह येगोर के बारे में सोचने लगी:

"वह मर रहा है..."

"कौन है?" किसी ने कमरे में से पूछा।

"मुझे येगोर इवानोविच ने भेजा है!" मां ने धीरे से उत्तर दिया। "उसने आपको बुलाया है..."

"अभी!" औरत ने दरवाज़ा खोले बिना उत्तर दिया। मां ने एक क्षण प्रतीक्षा करने के बाद फिर दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा जल्दी से खुला और एक लम्बे क़द की औरत ऐनक लगाये हुए बाहर गलियारे में आयी और वहां खड़ी-खड़ी जल्दी-जल्दी अपनी आस्तीनों की सिलवटें ठीक करने लगी।

"क्या चाहिये?" उसने रुखाई से पूछा।

"येगोर इवानोविच ने मुझे भेजा है..."

"आइये, चलें। लेकिन मेरा ख़्याल है कि मैं आपसे पहले भी मिल चुकी हूं, क्यों है न?" उस औरत ने धीरे से कहा। "आप कैसी हैं? यहां कुछ अंधेरा है..."

मां ने उसे एक नज़र देखा और उसे याद आया कि उसने उस औरत को कई बार निकोलाई के यहां देखा था।

"सब अपने ही लोग हैं!" उसने सोचा।

वह औरत पेलागेया के पीछे-पीछे हो ली।

"क्या उसकी तबियत बहुत ख़राब है?" उसने पूछा।

"हां, लेटा हुआ है। उसने मुझसे कहा था कि तुमसे कुछ खाना ले आने को कह दूं..."

"उसकी कोई ज़रूरत नहीं..."

जब वे येगोर के कमरे में घुसीं तो उन्हें उसकी सांस की खरखराहट साफ़ सुनायी दे रही थी।

"दोस्तो, मैं तो अब अपने पुरखों के पास जाता हूं... आह, लूदमीला वासील्येवना! यह नौजवान इतना गुस्ताख़ है कि हाकिमों

की इजाज़त लिये बिना जेल से बाहर चला आया है! पहले तो इसे कुछ खाने को दे दो फिर कहीं इसके ठहरने का इंतज़ाम कर दो।"

उस औरत न सिर हिलाकर हामी भरी और जल्दी से एक नज़र रोगी पर डाली।

"येगोर, जब ये लोग आये थे तभी मुझे बुला लिया होता!" उसने कहा। "और तुमने फिर दो बार दवा नहीं पी। बड़ी शरम की बात है। कामरेड, मेरे साथ आइये! वे लोग येगोर को अस्पताल ले जाने के लिए आते ही होंगे।"

"तो तुम मुझे अस्पताल भेजे बिना मानोगी नहीं?"

"हां, मैं भी वहां तुम्हारे साथ रहूंगी।"

"वहां भी? हे भगवान!"

"बस, अब तुम्हारी एक नहीं सुनूंगी!"

बातें करते-करते उस औरत ने कम्बल खींचकर येगोर को सीने तक उढ़ा दिया, फिर निकोलाई को बड़े ध्यान से देखा और शीशियां हिलाकर देखा कि दवा कितनी बची है। वह बहुत सपाट सुरीली आवाज़ में बोलती थी और उसकी चाल में बहुत नज़ाकत थी। उसके चेहरे का रंग पीला था और उसकी भवें नाक के पास आकर मिलती थीं। मां को उसकी सूरत बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसे उसमें बहुत दंभ दिखायी देता था। उस औरत की आंखों में कभी मुस्कराहट या चमक नहीं आती थी और वह बड़े आदेशपूर्ण ढंग से बोलती थी।

"अच्छा, अभी तो हम लोग जाते हैं!" वह कहती रही, "लेकिन मैं अभी लौटकर आती हूं! येगोर को एक चम्मच दवा पिला देना। और उसे बोलने न देना..."

यह कहकर वह निकोलाई के साथ बाहर चली गयी।

"बहुत अच्छी औरत है!" येगोर ने आह भरकर कहा। "बहुत ही शानदार औरत है... मां, मैं तुम्हारा इसके साथ रहने का इंतज़ाम कर दूंगा, वह बहुत थक जाती है..."

"बोलो नहीं! लो, यह दवा पी लो!.." मां ने बड़ी नरमी से कहा।

उसने दवा पी और कड़वाहट के मारे एक आंख बंद कर ली।

"अगर मैं अपनी ज़बान पर ताला भी लगा लूं, तब भी मैं मर तो जाऊंगा ही..." उसने कहा।

वह अपनी खुली हुई आंख से मां को देखता रहा और मुस्कराहट से

उसके होंट खुल गये। मां ने अपना सिर झुका लिया और व्यथा से उसकी आंखों में आंसू निकल आये।

"ठीक ही है – यह तो होता ही है," रोगी ने कहा। "जो जीवन का सुख भोगता है उसे एक न एक दिन मरना भी पड़ता ही है..."

मां ने अपना हाथ उसके माथे पर रख दिया और बड़े चुपके से बोली :

"तुम थोड़ी देर शान्त क्यों नहीं रहते ?.."

उसने अपनी आंखें बंद कर लीं मानो अपने सीने की खरखराहट सुन रहा हो।

"मां, शान्त रहने से क्या फ़ायदा ?" वह कुढ़कर बोलता रहा। "मुझे इससे क्या मिल जायेगा ? यही न कि मेरी मौत कुछ देर के लिए टल जायेगी, लेकिन तुम्हारी जैसी नेक औरत से दो-चार बातें कर लेने का सुख मुझसे छिन जायेगा। मुझे यक़ीन है कि दूसरी दुनिया के लोग इतने अच्छे नहीं हो सकते जितने यहां के हैं..."

"वह अमीरज़ादी अभी आकर मुझे डांटेगी कि मैंने तुम्हें बातें क्यों करने दीं," मां ने चिन्तित स्वर में उसकी बात काटते हुए कहा।

"वह अमीरज़ादी नहीं है, कामरेड, वह क्रान्तिकारी है और बहुत ही अच्छी औरत है। हां, डांटेगी तो ज़रूर। डांटती तो वह सभी को है..."

येगोर मां को अपनी पड़ोसिन की ज़िंदगी के बारे में बताने लगा। स्पष्ट था कि उसे बोलने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। उसकी आंखों में चमक थी और मां समझ गयी कि वह उसे छेड़ रहा था।

"यह बचेगा नहीं," उसके आर्द्र तथा विवर्ण चेहरे को ध्यान से देखते हुए मां सोचने लगी।

लूदमीला लौट आयी और बड़ी सावधानी से दरवाज़ा बंद करके उसने मां की तरफ़ देखा।

"तुम्हारे दोस्त को कपड़े बदलकर फ़ौरन मेरे कमरे से कहीं चले जाना चाहिये, इसलिए तुम जाकर उसके पहनने के लिए कुछ कपड़े ले आओ। यहीं लेती आना। यह बड़ा बुरा हुआ कि सोफ़िया यहां नहीं है – लोगों को छुपाने में वही बहुत होशियार है।"

"वह कल लौटकर आ रही है!" मां ने अपने कंधों पर शाल डालते हुए कहा।

जब भी उसे कोई काम सौंपा जाता था तो वह उसे जल्दी से और

अच्छी तरह पूरा करने के लिए इतनी उत्सुक रहती थी कि उसे और किसी बात का ध्यान ही नहीं रहता था।

"उसे कैसे कपड़े पहनाने होंगे?" मां ने अपनी भवें सिकोड़कर बड़े कामकाजी ढंग से पूछा।

"कैसे ही हों, कोई फ़रक़ नहीं पड़ता! वह रात को जायेगा..."

"रात को जाना तो और भी बुरा है—सड़क पर बहुत थोड़े लोग होते हैं और पुलिसवाले भी ज़्यादा चौकस रहते हैं। और वह बहुत चालाक भी नहीं है..."

येगोर अपनी भर्रायी हुई आवाज़ में हंस दिया।

"क्या मैं अस्पताल में तुमसे मिलने आ सकती हूं?" मां ने पूछा।

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया और खांसने लगा।

"क्या तुम यह कर सकती हो कि मैं और तुम बारी-बारी से थोड़ी-थोड़ी देर अस्पताल में इसके पास बैठें?" लूदमीला ने अपनी काली आंखों से मां को देखते हुए पूछा। "कर सकती हो? बहुत अच्छी बात है! मगर अब जल्दी से जाकर यह काम कर डालो..."

उसने बड़े प्यार से, पर साथ ही बड़े आदेशपूर्ण ढंग से मां का हाथ पकड़ा और उसे दरवाज़े तक पहुंचा आयी।

"बुरा न मानना कि मैं तुम्हें इस तरह भेजे दे रही हूं!" बाहर पहुंचकर उसने कहा। "बात यह है कि उसे बोलना नहीं चाहिये... मुझे अब भी उसके बचने की उम्मीद है..."

उसने अपने हाथ इतने कसकर दबाये कि उसकी हड्डियां चरमरा गयीं और उसने शिथिल भाव से अपनी आंखें बंद कर लीं। उसकी इस स्पष्टवादिता से मां कुछ खिसिया गयी।

"कैसी बात कहती हो?" मां ने बुदबुदाकर कहा।

"इस बात का ख़्याल रखना कि कोई तुम्हारा पीछा तो नहीं कर रहा है!" लूदमीला ने हाथ उठाकर अपनी कनपटियां मलते हुए मंद स्वर में कहा। उसके होंट कांपने लगे और उसके चेहरे पर कोमलता का भाव छा गया।

"यह मैं जानती हूं!" मां ने किंचित गर्व के साथ कहा।

फाटक से निकलकर वह अपनी शाल ठीक करने के बहाने एक क्षण के लिए रुकी और उसने चारों ओर फुर्ती से नज़र डाली। ख़ुफ़िया पुलिसवालों को वह बड़ी-से-बड़ी भीड़ में भी पहचान लेती थी। वे जिस तरह ज़रूरत से ज़्यादा लापरवाही से चलते थे, उनके हाव-भाव

में जो एक अस्वाभाविक निश्चिंतता होती थी, उनकी आंखों में अपराधियों जैसा जो चौकन्नापन होता था, जो उकताहट और बेदिली की बनावटी मुद्रा में भी छुपाये नहीं छुपता था – इन सब बातों से मां भली भांति परिचित थी।

जब उसे इस प्रकार का कोई आदमी दिखायी न दिया तो मां इतमीनान से सड़क पर आगे बढ़ी और एक किराये की गाड़ी करके उसने गाड़ीवाले से बाज़ार की तरफ़ चलने को कहा। उसने निकोलाई के लिए एक कोट पसंद किया और बड़ी देर तक उसकी क़ीमत के लिए मोल-तोल करती रही और अपने एक कल्पित पति को गालियां देती रही कि वह इतना शराबी था कि उसे हमेशा उसके लिए नये कपड़े ख़रीदने पड़ते थे। उसकी इन मनगढ़न्त बातों का दूकानदारों पर कोई प्रभाव न पड़ा, पर वह स्वयं इससे बहुत ख़ुश थी क्योंकि गाड़ी में बैठे-बैठे उसने सोचा था कि पुलिसवाले बाज़ार में अपने जासूस ज़रूर भेजेंगे क्योंकि उन्हें मालूम था कि निकोलाई के लिए कपड़े ज़रूर ख़रीदे जायेंगे। वापसी में भी पहले ही की तरह भोलेपन से सतर्क रहकर मां येगोर के घर की तरफ़ लौटी। फिर उसे निकोलाई को शहर के सिरे तक पहुंचाने जाना पड़ा। वे सड़क की दोनों पटरियों पर अलग-अलग चल रहे थे। निकोलाई को सिर झुकाये चलते देखकर मां को बड़ी ख़ुशी हो रही थी और कुछ हंसी भी आ रही थी, उसके लम्बे-से कत्थई कोट का दामन बार-बार उसकी टांगों में उलझ रहा था, और उसकी टोपी बार-बार सरककर उसकी नाक पर आ जाती थी। एक सुनसान गली में साशा से उनकी मुलाक़ात हुई, मां ने सिर हिलाकर वेसोवश्चिकोव को इशारा किया और अपने घर की तरफ़ वापस लौट पड़ी।

"लेकिन पावेल अभी तक जेल में है... और अन्द्रेई..." उसने सोचा और उदास हो गयी।

१०

निकोलाई इवानोविच जब उससे मिला तो बहुत परेशान था।

"येगोर की तबियत बहुत ख़राब है!" उसने कहा। "बहुत ज़्यादा ख़राब है! वे उसे अस्पताल ले गये हैं। लूदमीला यहां आयी थी और वह तुम्हें अस्पताल बुला गयी है..."

"अस्पताल ? "

निकोलाई इवानोविच ने अपना चश्मा ऊपर सरकाया और मां को उसका शलूका पहना दिया।

"लो, यह बंडल लेती जाओ," उसने कांपते हुए स्वर में कहा और अपने गर्म सूखे हाथ में उसकी उंगलियां दबा लीं।

"वेसोवश्चिकोव ठीक है ? "

"हां..."

"मैं भी येगोर को देखने आऊंगा..."

थकान के मारे मां का सिर घूमने लगा। निकोलाई की परेशानी से उसे किसी भयानक घटना का पूर्वाभास होने लगा।

"वह बचेगा नहीं," उसके दिमाग़ में यह विचार बार-बार हथौड़े की तरह चोटें मारता रहा।

लेकिन जब उसने उस साफ़-सुथरे छोटे से प्रकाशमय कमरे में प्रवेश किया जहां येगोर सफ़ेद तकियों के एक ढेर का सहारा लगाये लेटा भर्राये हुए स्वर में हंस रहा था, तो उसके मन को कुछ शान्ति मिली। वह मुस्कराते हुए दरवाज़े के पास खड़ी सुनती रही कि वह डाक्टर से क्या कह रहा था।

"रोगी का इलाज करना वैसा ही है जैसे छोटे-मोटे सुधार करना..."

"येगोर, कभी तो समझदारी की बात किया करो!" डाक्टर ने चिन्तित स्वर में कहा।

"लेकिन मैं क्रान्तिकारी हूं और इसलिए मुझे सुधार से नफ़रत है..."

डाक्टर ने बड़ी सावधानी से येगोर का हाथ उसके घुटनों पर रख दिया और उठ खड़ा हुआ, वह विचारों में डूबा हुआ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर रोगी के चेहरे की सूजन को अपनी उंगलियों से छूने लगा।

मां डाक्टर को जानती थी – वह निकोलाई का बहुत गहरा मित्र था, उसका नाम था इवान दनीलोविच। वह येगोर के पास गयी और उसने जीभ निकालकर मां का स्वागत किया। डाक्टर ने पीछे मुड़कर देखा।

"अरे, निलोवना, तुम! कहो! तुम्हारे हाथ में क्या है?"

"किताबें होंगी," वह बोल उठी।

"इन्हें पढ़ने की मनाही है!" उस नाटे क़द के डाक्टर ने कहा।

"यह मुझे बिल्कुल मूर्ख बना देना चाहते हैं!" रोगी ने शिकायत करते हुए कहा।

वह बहुत जल्दी-जल्दी सांसें ले रहा था और उसके सीने में से गड़गड़ाहट और खरखराहट की आवाज़ आ रही थी। उसके चेहरे पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें थीं और हाथ उठाकर माथे का पसीना पोंछने में भी उसे बड़ी कठिनाई हो रही थी। उसके फूले-फूले गालों पर जो एक विचित्र निश्चलता थी उसके कारण उसका चौड़ा-चकला उदार चेहरा एक बेजान नक़ाब मालूम हो रहा था। केवल उसकी आंखों में, जो चारों तरफ़ की सूजन के कारण अन्दर धंसी हुई मालूम होती थीं, एक निर्मल चमक और एक तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट थी।

"अरे, धनवन्तरी महाराज, मैं बहुत थक गया हूं, ज़रा लेट जाऊं?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं!" डाक्टर ने सख़्ती से जवाब दिया।

"ख़ैर, आप चले जायेंगे तब लेट जाऊंगा..."

"निलोवना, इन्हें लेटने न देना! इनके तकिये ठीक कर देना और देखो, बोलने बिल्कुल न देना। बोलना इनके लिए बहुत बुरा है..."

निलोवना ने सिर हिलाकर स्वीकृति प्रकट की और डाक्टर तेज़ी से छोटे-छोटे क़दम रखता हुआ बाहर चला गया। येगोर ने अपना सिर एक झटके के साथ पीछे कर लिया और आंखें मूंद लीं और बिल्कुल निश्चल होकर लेट गया, केवल उसकी उंगलियां रह-रहकर फड़क उठती थीं। उस छोटे-से कमरे की दीवारें अत्यन्त नीरस और निराशाजनक थीं। बड़ी-सी खिड़की में से लाइम के पेड़ों की झुकी हुई फुनगियां दिखायी देती थीं, धूल से अटी हुई उनकी गहरे रंग की पत्तियों के बीच-बीच में पीले-पीले धब्बे दिखायी देते थे – यह शरद का क्रूर स्पर्श था।

"मौत धीरे-धीरे कुछ संकोच करते हुए मुझे अपने शिकंजे में जकड़ती जा रही है..." येगोर ने अपनी आंखें मूंदे-मूंदे ही कहा। "ऐसा मालूम होता है कि उसे मुझ पर बड़ा तरस आ रहा है – मेरी तो सबों के साथ हमेशा ही बड़ी अच्छी तरह निभी..."

"येगोर इवानोविच, चुप हो जाओ!" मां ने बड़े प्यार से उसका हाथ सहलाते हुए विनय-भरे स्वर में कहा।

"अभी थोड़ी देर में... बिल्कुल चुप हो जाऊंगा..."

बड़ी कठिनाई से वह बोलता रहा। उसका दम फूल रहा था और बीच-बीच में वह काफ़ी देर के लिए रुक जाता था।

"यह बड़ा अच्छा है कि तुम हमारे साथ हो – तुम्हें देखकर कितनी खुशी होती है। कभी-कभी मैं सोचता हूं... तुम्हारा क्या होगा? यह सोचकर बड़ा दु:ख होता है कि... औरों की तरह... तुम्हें भी जेल जाना पड़ेगा... और सारी मुसीबतें उठानी पड़ेंगी... तुम्हें जेल जाने से डर लगता है?"

"नहीं!" मां ने स्पष्ट उत्तर दिया।

"डर तो नहीं लगता होगा। फिर भी... जेल बड़ी भयानक जगह है। जेल ही ने मेरी यह हालत कर दी। सच पूछो तो – मैं मरना नहीं चाहता..."

मां कहने ही जा रही थी कि "कौन जाने तुम अब भी बच जाओ!" पर उसके चेहरे का भाव देखकर वह रुक गयी।

"मैं अब भी काम कर सकता हूं... अगर मैं काम करने लायक़ न रह जाऊं तो फिर जीने से फ़ायदा ही क्या – कोई तुक नहीं है..."

मां को अन्द्रेई का वह वाक्य बरबस याद आ गया जो वह हमेशा कहा करता था: "सच तो है पर उससे कोई शान्ति नहीं मिलती।" और उसने एक आह भरी। वह दिन-भर में बहुत थक गयी थी और उसे बहुत भूख लगी थी। रोगी का निरन्तर अस्फुट स्वर कमरे में गूंज रहा था और ऐसा मालूम होता था कि उसकी आवाज़ हौले-हौले दीवारों पर रेंग रही है। खिड़की के बाहर लाइम के पेड़ों की फुनगियां नीचे-नीचे मंडलाते हुए बादलों जैसी लग रही थीं – अत्यन्त उदास और नैराश्यपूर्ण। गोधूलि-वेला की निश्चलता में, रात्रि के आगमन की अशुभसूचक आशंका में हर चीज़ पर एक विचित्र निस्तब्धता छायी हुई थी।

"मेरा जी बहुत बुरा हो रहा है!" येगोर ने कहा और अपनी आंखें मूंदकर चुपचाप लेट गया।

"सो जाओ!" मां ने कहा। "तुम्हारा जी अच्छा हो जायेगा।"

वह उसके सांस लेने की आवाज़ सुनती रही और चारों तरफ़ देखती रही। कुछ देर तक तो वह व्यथा में डूबी हुई निश्चल बैठी रही, फिर उसे नींद आने लगी।

दरवाज़े पर एक दबी हुई आवाज़ सुनकर उसकी आंख खुल गयी। वह चौंककर उठ बैठी और उसने देखा कि येगोर आंखें खोले लेटा है।

"माफ़ करना, ज़रा मेरी आंख लग गयी थी!" मां ने कोमल स्वर में कहा।

"माफ़ी तो मुझे मांगनी चाहिये..." येगोर ने भी उतनी ही नर्मी से कहा।

शाम का झुटपुटा खिड़की से अन्दर झांक रहा था। कमरे में ठंडक थी और हर चीज़ पर एक विचित्र सा धुंधलापन छा गया था। रोगी के चेहरे पर भी एक कालिमा छा गयी थी।

मां को किसी चीज़ की सरसराहट और लूदमीला की आवाज़ सुनायी दी:

"यहां अंधेरे में बैठे क्या खुसुर-पुसुर कर रहे हो तुम लोग? बिजली का बटन कहां पर है?"

सहसा कमरे में आंखों को चकाचौंध कर देनेवाला प्रकाश हो गया और कमरे के बीचोंबीच काली पोशाक में लूदमीला की लम्बी तनी हुई आकृति दिखायी दी।

येगोर के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गयी। उसने अपना हाथ उठाकर सीने पर रख लिया।

"क्या बात है?" लूदमीला ने भागकर उसके पास जाकर पूछा।

वह आंखें गड़ाये मां को घूर रहा था। उसकी आंखें इस समय बहुत बड़ी-बड़ी लग रही थीं और उनमें एक विचित्र-सी ज्योति थी।

मुंह फाड़कर उसने अपना सिर ऊपर उठाया और हाथ फैला दिया। मां ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसके चेहरे को घूरकर देखने लगी, वह सांस भी नहीं ले पा रही थी। सहसा अपने शरीर को झंझोड़कर रोगी ने अपने सिर को एक झटका दिया और ऊंचे स्वर में बोला:

"नहीं, नहीं! बस सब खतम हो गया!.."

उसके शरीर में एक झुरझुरी-सी हुई, उसका सिर निढाल होकर उसके कंधे पर लुढ़क गया और पलंग पर लटकते हुए लैम्प के क्रूर प्रकाश का निर्जीव प्रतिबिम्ब उसकी खुली हुई आंखों में दिखायी देता रहा।

"हाय, बेचारा!" मां ने अस्फुट स्वर में कहा।

लूदमीला धीरे-धीरे चलती हुई खिड़की के पास तक गयी और वहां खड़ी होकर बाहर देखने लगी।

"वह मर गया..." उसने सहसा इतने ज़ोर से चिल्लाकर कहा कि मां चौंक पड़ी। लूदमीला खिड़की की चौखट पर कुहनियां टिकाकर खड़ी हो गयी और फिर यकायक मानो किसी ने सहसा उसके सिर पर

ज़ोर का आघात किया। वह घुटनों के बल बैठकर दोनों हाथों से मुंह ढंककर रोपड़ी।

येगोर के दोनों हाथ उसके सीने पर रखकर और तकिये पर उसका सिर सीधा करके, मां ने अपने आंसू पोंछ डाले और लूदमीला के पास चली गयी। वह झुककर बड़ी नर्मी से उसके घने बालों पर हाथ फेरने लगी। लूदमीला ने धीरे-धीरे अपना सिर उठाकर फटी हुई ज्योतिहीन आंखों से मां को देखा और उठकर खड़ी हो गयी।

"निर्वासन में हम दोनों साथ-साथ रहे थे," उसने कांपते हुए अस्फुट स्वर में कहा। "हम दोनों एक साथ वहां सज़ा काटने के लिए भेजे गये थे, दोनों जेलों में रहे थे... कभी-कभी तो वहां बहुत ही भयानक मालूम होता था... बिल्कुल असह्य हो जाता था। कई लोगों की हिम्मतें टूट गयीं..."

वह सहसा बड़े ज़ोर से फूट-फूटकर रोने लगी, पर बहुत कोशिश करके उसने अपने आपको संभाल लिया। वह मां के और निकट आ गयी। प्यार और दुःख की भावनाओं से चेहरे पर जो कोमलता आ गयी थी उसके कारण वह और नौजवान मालूम होने लगी थी।

"लेकिन यह हमेशा ही हंसमुख रहता था," वह और भी जल्दी-जल्दी दबी ज़बान में कहती रही। वह अब भी सिसकियां ले रही थी। "यह हमेशा हंसता रहता था और मज़ाक़ करता रहता था... जो कमज़ोर थे उनकी हिम्मत बंधाये रखने के लिए अपनी तकलीफ़ को कभी ज़ाहिर नहीं होने देता था। हमेशा दूसरों के साथ भलाई करता था, बहुत उदार था और दूसरों का हमेशा ध्यान रखता था... वहां साइबेरिया में ख़ाली बैठे-बैठे अक्सर लोगों का स्वभाव बिगड़ जाता है और वे अपनी कुत्सित भावनाओं का शिकार हो जाते हैं। वह इसके ख़िलाफ़ लड़ना बहुत अच्छी तरह जानता था!.. तुम नहीं जानतीं वह कितना अच्छा साथी था! उसकी अपनी ज़िंदगी में दुःख के अलावा और कुछ था ही नहीं, लेकिन कभी किसी ने उसे शिकायत करते नहीं सुना! कभी नहीं! मेरी तो बड़ी दोस्ती थी उसके साथ, मैं बहुत आभारी हूं उसकी। अपने अपार ज्ञान में से जो कुछ वह मुझे दे सकता था उसने दिया। हालांकि वह ज़िंदगी से बहुत उकताया हुआ और अकेला था, उसने कभी बदले में यह नहीं चाहा कि मैं उससे प्यार करूं या उसके आराम का ख़्याल रखूं..."

येगोर के पास जाकर लूदमीला ने झुककर उसका हाथ चूम लिया।

"साथी, मेरे प्यारे, अच्छे साथी, धन्यवाद, मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देती हूं!" उसने शान्त व्यथित स्वर में कहा, "विदा! मैं तुम्हारी ही तरह काम करती रहूंगी – अपनी ज़िंदगी भर अटल विश्वास के साथ अनथक काम करती रहूंगी!.. विदा!"

सिसकियों से उसका शरीर कांप रहा था। उसने येगोर के पायंती पलंग पर अपना सिर रख दिया। मां चुपचाप बैठी आंसू बहाती रही। न जाने क्यों वह रोना नहीं चाहती थी। वह सांत्वना के शब्दों से लूदमीला को धीरज बंधाना चाहती थी, विशेष और अत्यधिक तीव्र प्यार की भावना से पुचकारना चाहती थी, येगोर के बारे में प्यार और दुःख के शब्द कहना चाहती थी। डबडबायी हुई आंखों से उसने येगोर के पिचके हुए चेहरे और उसकी अधखुली आंखों को देखा, मानो वह अभी ऊंघ रहा हो; उसने उसके नीले होंटों को देखा जिन पर अभी तक मुस्कराहट खेल रही थी। हर चीज़ पर एक निस्तब्धता और विषाद छाया हुआ था...

इवान दनीलोविच जल्दी-जल्दी छोटे-छोटे क़दम रखता हुआ आया। सहसा वह कमरे के बीच में रुक गया और दोनों हाथ जेबों में डालकर खड़ा हो गया।

"कितनी देर हुई?" उसने घबराये हुए स्वर में ज़ोर से पूछा।

किसी ने उत्तर नहीं दिया। डाक्टर ने अपने माथे का पसीना पोंछा और लड़खड़ाते हुए क़दमों से येगोर के पास जाकर उसका हाथ दबाया और अलग हटकर खड़ा हो गया।

"यह तो होना ही था। इतना कमज़ोर दिल था कि कम से कम छः महीने पहले ही यह हो जाना चाहिये था..."

सहसा उसका ऊंचा स्वर, जो ज़रूरत से ज़्यादा ऊंचा था और जिसे वह बड़ी कोशिश करके शान्त बनाये हुए था, रुंध गया। वह दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया और घबराहट में ज़ोर से अपनी दाढ़ी मरोड़ता हुआ पलंग के पास बैठी हुई उन दोनों औरतों को देखता रहा।

"एक और चल बसा!" उसने धीरे से कहा।

लूदमीला उठकर खिड़की खोलने चली गयी। थोड़ी ही देर बाद वे तीनों एक-दूसरे से सटकर वहां खड़े शरद ऋतु की रात्रि का अंधकारमय चेहरा देख रहे थे। पेड़ों की काली फुनगियों के ऊपर सितारे जगमगा रहे थे और आकाश के अनन्त विस्तार को और भी अंधकारमय बना रहे थे...

लूदमीला मां की बांह पकड़कर चुपचाप उसके कंधे का सहारा लेकर खड़ी हो गयी। डाक्टर सिर झुकाये खड़ा अपना चश्मा साफ़ कर रहा था। निस्तब्धता को चीरती हुई शहर की रात्रिकालीन शिथिल ध्वनियां आ रही थीं। हवा का एक ठंडा झोंका आया और उसके बालों से अठखेलियां करने लगा। लूदमीला कांप उठी और एक आंसू चुपचाप उसके गाल पर ढलक गया। बाहर बरामदे में उन लोगों को दबी हुई भयभीत ध्वनियां सुनायी दे रही थीं – कराहने की आवाज़, खुसुर-पुसुर और किसी के पांव घसीटकर चलने की आवाज़। पर वे तीनों खिड़की के पास चुपचाप निश्चल खड़े रात्रि के अंधकार को घूरते रहे।

यह सोचकर कि शायद उसके कारण कोई बाधा पड़ रही हो, मां ने धीरे से अपना हाथ खींच लिया, झुककर येगोर को शीश नवाया और दरवाज़े की तरफ़ चल दी।

"आप जा रही हैं?" डाक्टर ने बग़ैर मुड़े धीरे से पूछा।

"हां..."

बाहर पहुंचकर मां लूदमीला के बारे में सोचने लगी कि किस प्रकार उसने अपनी सिसकियों को दबाया था।

"उसे ठीक से रोना भी नहीं आता..."

उसे याद आया कि येगोर ने मरने से पहले क्या कहा था और उसके सीने से एक आह निकल गयी। सड़क पर धीरे-धीरे चलते हुए उसे उसकी चमकदार आंखें, उसका हंसमुख स्वभाव और उसकी सुनायी हुई रोचक कहानियां याद आती रहीं।

"अच्छे आदमी के लिए जीना कठिन होता है, पर मरना आसान होता है... मालूम नहीं मैं कैसे मरूंगी?.." उसने सोचा।

अपनी कल्पनादृष्टि से वह लूदमीला और डाक्टर को उस सफ़ेद चमकदार कमरे की खिड़की के पास खड़ा देख रही थी और येगोर की मृत आंखें उन्हें पीछे से घूर रही थीं। सहसा उसके हृदय में सारी मानवता के प्रति गहरी वेदना का तूफ़ान उमड़ पड़ा। लंबी आह भरकर उसने अपने क़दम तेज़ किये; कोई अज्ञात प्रेरणा उसे तेज़ चलने पर बाध्य कर रही थी।

"मुझे जल्दी चलना चाहिये!" उसने सोचा; जो उदास पर साहसमय शक्ति उसे अन्दर से प्रेरित कर रही थी उसके आगे उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

११

दूसरे दिन मां कफ़न-दफ़न का इंतज़ाम करती रही। शाम को जब वह सोफ़िया और निकोलाई के साथ बैठी चाय पी रही थी उसी समय साशा आयी; उस समय उसमें एक विचित्र चंचलता थी और वह बहुत बातें कर रही थी; उसके गालों पर हर्ष की लाली थी, उसकी आंखें उल्लास से चमक रही थीं और ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हृदय में कोई उल्लसित आशा हिलोरें ले रही है। शोक के जिस शान्त वातावरण में वे येगोर के बारे में बातें कर रहे थे उसे साशा की उच्छृंखलता ने सहसा भंग कर दिया। उसका व्यवहार बिल्कुल असंगत था; उसका इस तरह का बर्ताव उन्हें बुरा मालूम हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे अंधेरे में सहसा आग भड़क उठी हो। निकोलाई विचारमग्न होकर मेज़ पर तबला बजा रहा था।

"साशा, बात क्या है? आज तुम कुछ बदली हुई नज़र आ रही हो?" उसने कहा।

"हूं न? मुमकिन है!" उसने बहुत खुश होकर धीरे से हंसकर कहा।

मां ने चुपचाप उसे भर्त्सना-भरी दृष्टि से देखा।

"हम लोग येगोर इवानोविच की बातें कर रहे थे..." सोफ़िया ने बात का क्रम फिर पकड़ते हुए कहा।

"कितना अच्छा आदमी था!" साशा ने कहा। "मैंने उसे हमेशा मुस्कराता हुआ और हंसी-मज़ाक़ करता हुआ ही पाया। और कितना काम करता था वह! वह क्रान्ति का कलाकार था और क्रान्तिकारी ढंग से सोचने में निपुण था। हिंसा, झूठ और अन्याय का चित्रण वह हमेशा कितने सीधे-सादे और ज़ोरदार शब्दों में करता था!"

वह बहुत शान्त स्वर में बोल रही थी और कुछ सोचकर मुस्कराती जा रही थी, पर इस मुस्कराहट की आड़ में भी हर्षातिरेक की वह ज्वाला छुप न सकी, जिसे देख तो सभी रहे थे, पर जिसका कारण किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

वे नहीं चाहते थे कि साशा का उल्लास उनकी उदासी की जगह ले ले और उसे भी अपनी ही तरह उदास बनाने का प्रयत्न करके वे बिना जानते हुए ही अपने व्यथित होने के अधिकार की रक्षा कर रहे थे...

"और अब वह मर गया!" सोफ़िया ने बहुत अर्थपूर्ण दृष्टि से साशा की तरफ़ देखकर कहा।

साशा ने जल्दी से उन सब पर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डाली और उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये। वह सिर झुकाकर चुप हो गयी और धीरे-धीरे अपने बालों की चिमटियां ठीक करने लगी। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उसने सहसा नज़रें ऊपर उठाकर देखा।

"वह मर गया? क्या मतलब इसका कि 'मर गया'? मरना क्या होता है? क्या येगोर के लिए मेरी इज़्ज़त या एक साथी की हैसियत से उसके लिए मेरा प्यार या उसके विचारों के बारे में मेरी समझ-बूझ मर गयी? उसने मेरे हृदय में जो भावनाएं जागृत की थीं क्या वे मर गयीं या मैंने यह समझना छोड़ दिया कि वह एक ईमानदार और बहादुर आदमी था? क्या यह सब कुछ मर गया? मेरे लिए यह सब कुछ कभी नहीं मर सकता। और मुझे ऐसा लगता है कि हम लोग यह कहने में बड़ी उतावली से काम लेते हैं कि फ़लां आदमी मर गया। 'उसके होंट बेजान हो गये लेकिन उसके शब्द ज़िन्दा लोगों के दिलों में हमेशा ज़िन्दा रहेंगे!'"

अपने भावावेश में वह फिर मेज़ के पास आकर बैठ गयी और मेज़ पर कुहनियां टिकाकर डबडबायी हुई आंखों से अपने साथियों की तरफ़ देखकर मुस्करायी और विचारमग्न होकर अधिक शान्त स्वर में बोली:

"मुमकिन है कि मैं जो कुछ कह रही हूं वह आपको बेवक़ूफ़ी की बातें मालूम हो रही हों, लेकिन मैं यह यक़ीन करती हूं कि ईमानदार लोग अमर होते हैं; मैं समझती हूं कि जिन लोगों ने मुझे यह शानदार जीवन बिताने का सुख दिया है वे अमर हैं–ऐसा जीवन जो अपनी आश्चर्यजनक जटिलता से, अपने विभिन्न रूपों के वैविध्य से और उन विचारों के विकास से जो मुझे अपने प्राणों से भी बढ़कर प्रिय हैं, मुझे रोमांचित कर देता है। शायद हम लोग अपनी भावनाओं को बहुत संभालकर रखते हैं। हम लोग अपने विचारों को बहुत ज़्यादा महत्व देते हैं, इसी लिए हमारा व्यक्तित्व पूरी तरह विकसित नहीं हो पाता। हम चीज़ों को अनुभव करने के बजाय उनकी मीमांसा करने लगते हैं..."

"आज क्या कोई बहुत ख़ुशी की बात हुई है तुम्हारे लिए?" सोफ़िया ने मुस्कराकर पूछा।

"हां!" साशा ने उत्तर दिया। "बहुत ही ख़ुशी की बात मालूम होती है मुझे तो! मैं सारी रात वेसोवश्चिकोव से बातें करती रही।

मुझे पहले वह कभी अच्छा नहीं लगता था – मैं उसे बहुत उजड्ड और जाहिल समझती थी, और वह था भी। उसके दिल में हर आदमी के लिए एक घिनौनी नफ़रत थी। वह हमेशा हर बात में अपने आपको सबसे ज़्यादा महत्व देता था और बड़े भोंडे और ओछे ढंग से कहता रहता था : 'मैं, मैं, मैं!' उसमें एक अजीब भयानक क़िस्म की तंगनज़री थी ..."

साशा ने मुस्कराकर चमकती हुई आंखों से देखा।

"लेकिन अब वह कहता है 'कामरेड!' और आप सुनियेगा कि वह यह शब्द किस तरह कहता है! कुछ शरमाकर इतने प्यार से कहता है कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता! अब वह बहुत सीधा हो गया है, उसमें लगन पैदा हो गयी है और वह काम करने के लिए बेताब है। उसने अपने आपको पहचान लिया है – अपनी ख़ूबियों और ख़राबियों को अब वह जानता है। लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसमें भाईचारे की एक सच्ची भावना पैदा हो गयी है ..."

साशा की बातें सुनकर मां को बड़ी ख़ुशी हुई कि इतनी कठोर लड़की भी ऐसी कोमल और हंसमुख बन सकती है। लेकिन इसके साथ ही दिल ही दिल में वह जलकर सोचती रही :

"आख़िर पावेल का क्या हुआ? ..."

"वह अब सिर्फ़ अपने साथियों के बारे में सोचता है," साशा कहती रही, "और जानते हैं आप लोग, उसने मुझे किस बात का यक़ीन दिलाने की कोशिश की? कि हमें उन लोगों को भगाने का कुछ इंतज़ाम करना चाहिये। वह कह रहा था कि यह काम बड़ी आसानी से किया जा सकता है ..."

सोफ़िया ने सिर उठाकर देखा और उत्सुकता से कहा :

"साशा बात तो पते की कहती है। तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

मां के हाथ में चाय की प्याली कांप गयी। साशा भवें सिकोड़कर अपनी उत्सुकता को छुपाने का प्रयत्न करने लगी।

"अगर वह सच कहता है, तो हमें ज़रूर कोशिश करनी चाहिये। हमारा फ़र्ज़ है कि हम कोशिश करें!" उसने एक क्षण के लिए रुककर बड़े हर्ष से मुस्कराते हुए कहा।

सहसा वह शरमा गयी और बिना कुछ कहे बैठ गयी।

"मेरी बच्ची, बेचारी!" मां ने सोचा और मुस्करा दी। सोफ़िया भी मुस्करा दी और निकोलाई साशा की तरफ़ कनखियों से देखकर

खिसियाकर हंसने लगा। लड़की ने सिर उठाकर सबको कठोर दृष्टि से देखा। उसका रंग पीला पड़ गया था, उसकी आंखें लाल थीं और उसके स्वर में रूखापन था और ऐसा मालूम होता था कि वह बुरा मान गयी है।

"मैं जानती हूं कि आप लोग क्यों हंस रहे हैं," उसने कहा। "आप समझते हैं कि मैं अपने किसी निजी स्वार्थ से ऐसा करने को कह रही हूं?"

"ऐसा क्यों सोचती हो, साशा?" सोफ़िया ने भी चालाकी से पूछा और उठकर उसके पास चली गयी। मां भी समझ गयी कि साशा बुरा मान गयी है। सोफ़िया को ऐसा नहीं कहना चाहिये था। उसने एक आह भरी और क्रोध से सोफ़िया की तरफ़ देखा।

"अगर ऐसा है तो मेरा इससे कोई मतलब नहीं!" साशा ने बिगड़कर कहा। "मैं इसमें बिल्कुल भी हाथ नहीं डालूंगी। जब आप लोग यही समझते हैं कि..."

"बस, बस, जाने दो, साशा!" निकोलाई ने धीरे से कहा।

मां उसके पास जाकर उसके बालों पर हाथ फेरने लगी। साशा ने उसका हाथ पकड़ लिया और अपना तमतमाया हुआ चेहरा ऊपर उठाया। मां ने मुस्कराकर आह भरी; उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। सोफ़िया साशा के बग़ल में कुरसी पर बैठ गयी और अपना हाथ उसके कंधे पर रख लिया।

"तुम भी अजीब चीज़ हो!.." उसने रहस्यमयी मुस्कराहट के साथ साशा की आंखों में आंखें डालकर कहा।

"शायद मैंने ही बेवक़ूफ़ी की बात कही..."

"मगर तुम्हारे दिल में यह बात आयी कैसे?" सोफ़िया ने कहा, लेकिन निकोलाई ने बहुत ही खरी-खरी बात कह दी:

"अगर मुमकिन हो तो हमें उन्हें भगाने का इंतज़ाम ज़रूर करना चाहिये। लेकिन सबसे पहले तो हमें यह मालूम करना चाहिये कि जेल में हमारे जो साथी हैं वे इसके लिए राज़ी भी हैं कि नहीं..."

साशा ने अपना सिर झुका लिया।

सोफ़िया ने सिगरेट जलायी और अपने भाई की तरफ़ कनखियों से देखकर माचिस की सलाई कोने में फेंक दी।

"उन्हें क्या एतराज़ हो सकता है!" मां ने आह भरकर कहा। "लेकिन मुझे तो यक़ीन नहीं कि ऐसा हो भी सकता है..."

मां इसके लिए बहुत उत्सुक थी कि वे लोग उसे यक़ीन दिला दें कि ऐसा मुमकिन है, लेकिन किसी ने यक़ीन नहीं दिलाया।

"मुझे वेसोवश्चिकोव से मिलना पड़ेगा!" सोफ़िया ने कहा।

"कल मैं तुम्हें बता दूंगी कि कब और कहां तुम उससे मिल सकोगी," साशा ने कहा।

"उसका अब क्या करने का इरादा है?" सोफ़िया ने कमरे में टहलते हुए पूछा।

"नये छापेख़ाने में उसे टाइप बिठाने के काम पर लगाया जायेगा। उस वक़्त तक वह जंगल के रखवाले के साथ रहेगा।"

साशा की त्योरियों पर बल पड़े हुए थे और उसके चेहरे पर फिर हमेशा जैसी गंभीरता आ गयी थी। वह बड़ी रुखाई से बोल रही थी।

"परसों जब तुम पावेल से मिलने जाओगी तो पावेल को एक रुक़्क़ा दे देना," निकोलाई ने मां के पास जाकर कहा। मां चाय की प्यालियां धो रही थी। "बात यह है कि हमें यह मालूम करना है कि ..."

"मैं समझ गयी, समझ गयी!" मां ने जल्दी से उसे आश्वस्त करते हुए कहा। "मैं उसे पर्चा दे दूंगी ..."

"अच्छा, मैं अब चलती हूं!" साशा ने जल्दी से चुपचाप उससे हाथ मिलाकर कहा और बाहर चली गयी। वह इस समय भी तनकर चल रही थी और उसके क़दमों में एक असाधारण दृढ़ता थी।

साशा के चले जाने के बाद सोफ़िया मां के कंधों पर हाथ रखकर उसे कुरसी पर झुलाती रही।

"निलोवना, अगर तुम्हारे ऐसी बहू होती तो क्या तुम उसे प्यार करतीं?.." उसने पूछा।

"काश, मैं उन दोनों को बस एक दिन के लिए ही साथ देख सकती!" मां ने बड़ी हसरत से कहा; उसका गला रुंध गया था।

"हां, थोड़ी-सी ख़ुशी से तो किसी का नुक़सान नहीं होता!.." निकोलाई ने बड़ी नर्मी से कहा। "लेकिन थोड़े से संतोष किसे होता है। और जब कोई चीज़ बहुत हो जाती है, तो उसकी क़दर नहीं रह जाती ..."

सोफ़िया जाकर पियानो पर बैठ गयी और उसने एक उदास धुन छेड़ दी।

१२

दूसरे दिन सबेरे ही लगभग तीस-चालीस आदमी अस्पताल के फाटक पर खड़े अपने साथी की अर्थी निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें कुछ जासूस भी थे जो उनकी बातें सुन रहे थे और उनके चेहरे, उनका बात करने का ढंग और उनकी बातें अच्छी तरह अपने दिमाग़ में बिठाते जा रहे थे। सड़क के पास कुछ पुलिसवाले कमर पर पिस्तौल लगाये हुए तैनात थे। जासूसों की इस बेहयाई पर और किसी भी समय अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने को तैयार पुलिसवालों की व्यंगपूर्ण मुस्कराहट पर जन-समुदाय को क्रोध आ रहा था। कुछ लोग अपने क्रोध को मज़ाक़ में टालने का प्रयत्न कर रहे थे; कुछ लोग बहुत गंभीर मुद्रा बनाकर अपनी नज़रें झुकाये हुए थे कि वे उनके इस अपमानजनक व्यवहार को देखें ही नहीं और कुछ लोग ऐसे भी थे जो अपनी भावनाओं को छुपा नहीं पा रहे थे और इसलिए हाकिमों पर फब्तियां कस रहे थे कि उन्हें निहत्थी जनता से, जिसके पास अपनी ज़बान के अलावा कोई दूसरा हथियार नहीं होता, कितना डर लगता है। ऊपर शरद ऋतु का निर्मल आकाश नीचे पतझड़ की पीली पत्तियों से पटी हुई सड़कों को देख रहा था, हवा के झोंके इन पत्तियों को राहगीरों के क़दमों के पास इधर-उधर उड़ा रहे थे।

मां भीड़ के बीच में खड़ी थी।

"बहुत कम लोग हैं, बहुत कम! और मज़दूर तो शायद कोई भी नहीं है," वह उन परिचित सूरतों को देखकर दुःखी होकर सोचने लगी।

फाटक खुला और कुछ लोग ताबूत लेकर बाहर निकले, जिसका ढक्कन लाल फ़ीतों में बंधे हुए हारों से सजा हुआ था। प्रतीक्षा करनेवालों ने फ़ौरन अपनी टोपियां उतार लीं और ऐसा मालूम हुआ कि जैसे काली-काली चिड़ियों का एक झुंड सहसा उड़ गया हो। एक लम्बे क़द का पुलिस अफ़सर, जिसके लाल चेहरे पर काली-काली घनी मूंछें थीं, लम्बे-लम्बे क़दम बढ़ाता हुआ जल्दी से भीड़ में घुसा और उसके पीछे-पीछे सिपाही अपने फ़ौजी बूटों को ज़ोर की आवाज़ के साथ पटकते हुए लोगों को ठेलते हुए आगे बढ़े।

"ये फ़ीते हटा दो!" अफ़सर ने अपनी फटी हुई आवाज़ में आज्ञा दी।

मर्द और औरतें उसे घेरे खड़े थे और हाथ हिला-हिलाकर एक-दूसरे को ठेलते हुए उत्तेजित स्वर में बातें कर रहे थे। मां की आंखों के आगे

लोगों के पीले उत्तेजित चेहरे नाच रहे थे, लोगों के होंट कांप रहे थे, एक औरत के गालों पर आंसू ढलक रहे थे।

"हिंसा का नाश हो!" किसी नौजवान ने चिल्लाकर कहा, पर उसकी आवाज़ शीघ्र ही बहस के शोर में डूब गयी।

मां के हृदय में जैसे किसी ने डंक मार दिया हो। उसने पास ही खड़े हुए एक नौजवान को, जो बुरे कपड़े पहने था, सम्बोधित करके क्रोध से कहा:

"वे हमें अपनी मर्ज़ी का अंत्येष्टि संस्कार भी नहीं करने देते! कितनी शरम की बात है!"

लोगों की उत्तेजना बढ़ती गयी। लोगों के सिरों के ऊपर ताबूत का ढक्कन डगमगा रहा था, लाल फ़ीते हवा में लहरा रहे थे और नीचे लोगों के सिरों और चेहरों को छू रहे थे, सूखे रेशम की सरसराहट सुनायी दे रही थी, ऐसा प्रतीत होता था कि मानो रेशम के फ़ीते स्वयं घबरा रहे हों।

मां को भय हुआ कि कहीं टक्कर न हो जाये और वह दायें-बायें खड़े हुए लोगों को सम्बोधित करके जल्दी-जल्दी बुड़बुड़ाती रही:

"अगर ये लोग यही चाहते हैं, तो भाड़ में जायें, फ़ीते दे दो इन्हें! हमीं लोग सबर कर लें!.."

किसी की ऊंची तेज़ आवाज़ इस शोर-गुल को चीरती हुई सुनायी दी:

"हम मांग करते हैं कि हमें अपने साथी की क़ब्र तक उसके साथ जाने का हक़ दिया जाये—अपने उस साथी की क़ब्र तक जिसे तुम लोगों ने सता-सताकर मार डाला..."

किसी ने ऊंची आवाज़ में गाना शुरू किया:

"बलिदान तुम्हारा उच्च महान..."

"फ़ीते उतार लो! याकोवलेव, काट दो फ़ीते!"

एक तलवार सांय से चली। मां ने आंखें बंद कर लीं। वह सोच रही थी कि लोगों में खलबली मच जायेगी, लेकिन लोग सिर्फ़ घिरे हुए भेड़ियों की तरह दांत निकालकर बुड़बुड़ाते रहे। चुपचाप सिर झुकाये वे आगे बढ़ते गये और उनके घिसटते हुए क़दमों की आवाज़ हवा में गूंजने लगी।

लोगों के सिरों के ऊपर ताबूत का ढक्कन और उस पर फूलों के कुचले हुए हार हवा में लहरा रहे थे और उनके बग़ल में घुड़सवार सिपाही ऐंठते हुए चल रहे थे। मां सड़क के किनारे पटरी पर चल रही थी इसलिए उसे ताबूत दिखायी नहीं दे रहा था, देखते-देखते जनाज़े के चारों ओर भीड़ बढ़ गयी थी और पूरी सड़क खचाखच भर गयी थी। घुड़सवार पुलिसवालों की भूरी आकृतियां पीछे रह गयी थीं और जुलूस के दोनों ओर पुलिसवाले अपनी तलवारों के दस्तों पर हाथ रखे चल रहे थे। हर तरफ़ मां को जासूसों की चिरपरिचित आंखें दिखायी दे रही थीं जो लोगों के चेहरों को बड़े ध्यान से देख रहे थे।

दो आदमियों ने शोक में डूबे हुए स्वर में गाना शुरू किया:

"विदा, साथी, विदा..."

"गाने की कोई ज़रूरत नहीं!" किसी ने चिल्लाकर कहा। "हम लोग ख़ामोशी से जुलूस में चलें!"

इस आवाज़ में बड़ा रोब था। शोक में डूबा हुआ गीत बंद हो गया, लोगों की बातचीत भी धीमी पड़ गयी, सड़क के पत्थरों पर बस लोगों के बेजान क़दमों की सपाट आवाज़ सुनायी दे रही थी। वह आवाज़ लोगों के सिरों के ऊपर उठती हुई निर्मल आकाश में गूंजने लगी और वातावरण जैसे दूर से आती हुई तूफ़ान की पहली गरज से कांप गया। प्रतिक्षण तेज़ होती हुई ठंडी हवा गर्द और शहर की सड़कों का तमाम कूड़ा उड़ाकर लोगों पर झोंक रही थी। हवा के झोंकों में उनके बाल और कपड़े उड़ रहे थे, उनके लिए आंखें खोलना भी नामुमकिन हो गया था; हवा के थपेड़े उनके पांवों से लिपटे जा रहे थे...

यह ख़ामोश जनाज़ा जिसके साथ न पादरी थे और न शोक के मर्मस्पर्शी गीत ही, ये विचारमग्न चेहरे और चढ़ी हुई त्योरियां – इन सबको देखकर मां का हृदय भयभीत हो उठा। उसके दिमाग़ में कुछ विचार धीरे-धीरे चक्कर काट रहे थे और वह उन्हें उदास शब्दों में व्यक्त कर रही थी:

"बहुत थोड़े हैं आप, सच्चाई के लिए लड़नेवाले..."

वह सिर झुकाये चली जा रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि वे येगोर को नहीं बल्कि किसी और चीज़ को दफ़न करने जा रहे हैं – किसी ऐसी चीज़ को जो उसे बहुत प्यारी थी और उसके लिए बहुत

ज़रूरी थी। उसने अपने मन में एकाकीपन का दुःख अनुभव किया। उसके हृदय में इन लोगों के प्रति जो येगोर को दफ़न करने जा रहे थे विरोध की एक घुटी हुई भयानक भावना उत्पन्न हुई।

"येगोर ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था," मां ने सोचा, "और ये लोग भी कोई ईश्वर में विश्वास नहीं रखते ..."

वह इस बात के बारे में और ज़्यादा सोचना नहीं चाहती थी, इसलिए उसने आह भरकर यह भारी बोझ अपने सीने पर से उतार देने का प्रयत्न किया।

"हे भगवान! हे ईसा मसीह! क्या यह हो सकता है कि मैं भी – इन लोगों की तरह ..."

वे लोग क़ब्रिस्तान में पहुंचे और कुछ देर तक क़ब्रों के बीच के पतले-पतले रास्तों में घूमते हुए एक खुली जगह पर पहुंचे, जहां चारों तरफ़ नीची-नीची सफ़ेद सलीबें लगी हुई थीं। चुपचाप वे एक नयी खुदी हुई क़ब्र के चारों तरफ़ भीड़ लगाकर खड़े हो गये। क़ब्रों के बीच जीवित लोगों का यह गंभीर मौन किसी भयानक घटना की चेतावनी दे रहा था जिसके कारण मां के हृदय का स्पंदन रुक गया। सलीबों के बीच से हवा गरजती और सीटी बजाती हुई गुज़र रही थी और ताबूत के ढक्कन पर कुचले हुए फूलों से अठखेलियां कर रही थी ...

पुलिसवाले अपने अफ़सर पर नज़रें जमाकर अटेन्शन की मुद्रा में खड़े हो गये। एक लम्बा-सा नौजवान, जिसका चेहरा पीला, भवें घनी और बाल लम्बे थे, क़ब्र के सिरे पर आकर खड़ा हो गया।

"सुनिये ..." पुलिस अफ़सर ने भर्रायी हुई आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

"साथियो!" नौजवान ने ऊंची आवाज़ में कहना शुरू किया।

"ज़रा रुकिये!" अफ़सर ने चिल्लाकर कहा। "मैं साफ़ कहे देता हूं कि यहां भाषण देने की इजाज़त नहीं दे सकता ..."

"मैं सिर्फ़ कुछ शब्द कहूंगा!" नौजवान ने शान्त स्वर में उत्तर दिया। "साथियो, आइये, हम अपने दोस्त और गुरु की क़ब्र पर क़सम खायें कि उसने हमें जो कुछ सिखाया है उसे कभी नहीं भूलेंगे और हममें से हर एक उम्र-भर उस ताक़त की क़ब्र खोदता रहेगा जो हमारी मातृभूमि की सारी मुसीबतों की जड़ है। वह पापी ज़ालिम शक्ति है – ज़ार की निरंकुशता!"

"गिरफ़्तार कर लो इसे!" अफ़सर ने चिल्लाकर कहा, पर उसकी

आवाज़ बहुत-सी आवाज़ों के शोर में डूब गयी:

"ज़ारशाही मुर्दाबाद!"

पुलिसवाले भीड़ को चीरते हुए वक्ता की ओर बढ़े; उसके साथी उसके बचाव के लिए उसके चारों ओर सटकर खड़े थे।

"आज़ादी ज़िन्दाबाद!" उसने हाथ हिलाकर नारा लगाया।

मां धक्का खाकर एक तरफ़ को हट गयी। भयभीत होकर वह एक सलीब का सहारा लेकर खड़ी हो गयी और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं; वह सोच रही थी कि किसी भी क्षण उस पर वार होगा। कोलाहल से उसके कान फटे जा रहे थे, उसके पांवों तले ज़मीन खिसकी जा रही थी। तेज़ हवा और भय के कारण वह सांस भी ठीक से नहीं ले पा रही थी। पुलिसवालों की सीटियां ख़तरे की चेतावनी दे रही थीं, अफ़सर कर्कश स्वर में आज्ञाएं दे रहे थे, औरतें ज़ोर से चिल्ला रही थीं, चहारदीवारी की लकड़ियां चरमरा रही थीं और सूखी मिट्टी पर भारी बूटों की धमक सुनायी दे रही थी। यह सब कुछ इतनी देर तक होता रहा कि मां वहां आंखें बंद किये खड़े रहने की यातना को और अधिक सहन न कर सकी।

उसने नज़र उठाकर देखा और बांहें फैलाकर एक चीख़ मारकर आगे दौड़ी। कुछ ही दूर पर क़ब्रों के बीच एक पतली-सी गली में पुलिसवालों ने उस नौजवान को घेर लिया था और जो लोग उसे बचाने के लिए बढ़ते थे उन्हें वे मार-मारकर पीछे ढकेल रहे थे। नंगी तलवारें बड़ी क्रूरता से चमक रही थीं, कभी लोगों के सिरों पर चमकतीं और कभी उनके बीच में धंस जाती थीं। बेंत और चहारदीवारी की टूटी हुई लकड़ियां हथियारों की तरह इस्तेमाल की जा रही थीं। लोग शोर मचाते हुए पागलों की तरह इधर-उधर नाच रहे थे और उस नौजवान का पीला चेहरा इस पूरे दृश्य पर छाया हुआ था। भावोत्तेजन के इस तूफ़ान को चीरता हुआ उसका दृढ़ स्वर सुनायी दिया:

"साथियो, अपनी शक्ति बेकार नष्ट न करो!.."

लोगों ने उसकी बात पर ध्यान दिया और अपनी लकड़ियां छोड़-छोड़कर वहां से भागने लगे, लेकिन मां किसी अदम्य शक्ति से प्रेरित होकर आगे बढ़ती रही। उसने देखा कि निकोलाई अपनी टोपी गुद्दी की तरफ़ सरकाये उत्तेजित जन-समूह को पीछे ढकेल रहा है।

"क्या तुम लोग पागल हो गये हो?" उसने लोगों को डांटते हुए कहा। "शान्त हो जाओ!.."

मां को ऐसा लगा कि जैसे उसके हाथ पर ख़ून लगा हुआ था।

"निकोलाई इवानोविच! यहां से भाग जाओ!" मां ने उसकी तरफ़ झपटते हुए चिल्लाकर कहा।

"कहां जा रही हो? मार खा जाओगी..."

किसी ने मां के कंधे पर हाथ रखा और उसने मुड़कर देखा तो सोफ़िया नंगे सिर बाल बिखराये एक लड़के का हाथ पकड़े उसके बग़ल में खड़ी थी। वह लड़का जो अभी बिल्कुल बच्चा ही था अपने चेहरे पर से ख़ून पोंछ रहा था।

"मुझे छोड़ दो... कोई बात नहीं है..." वह कांपते हुए होंटों से बुदबुदा रहा था।

"लो इसे संभालो—और हमारे घर पहुंचा दो! लो यह रूमाल, इसके चेहरे पर पट्टी बांध देना!.." सोफ़िया ने जल्दी से कहा और लड़के का हाथ मां के हाथ में थमाकर वहां से भाग गयी। "जल्दी जाओ, नहीं तो तुम्हें गिरफ़्तार कर लेंगे!.." उसने पीछे मुड़कर मां से चिल्लाकर कहा।

लोग क़ब्रिस्तान में चारों तरफ़ तितर-बितर हो गये थे और पुलिस-वाले अपने भारी बूट पटकते हुए क़ब्रों के बीच इधर-उधर भाग रहे थे, उनके लम्बे-लम्बे कोटों के दामन उनके पैरों में बार-बार उलझ रहे थे और वे अपनी तलवारें चमकाते हुए गालियां बक रहे थे। लड़का भेड़िये की तरह उन्हें देख रहा था।

"जल्दी चलो!" मां ने रूमाल से उसका मुंह पोंछकर कहा।

"तुम मेरी फ़िक्र न करो—ज़्यादा चोट नहीं लगी है," उसने ख़ून थूकते हुए कहा। "उसने तलवार की मूठ से मुझे मारा था। लेकिन उसे भी मैंने पूरा मज़ा चखा दिया! मैंने भी उसे इतने ज़ोर की लकड़ी रसीद की कि वह चीख़ उठा! तुम लोग ज़रा ठहर जाओ!" उसने अपनी ख़ून में भरी हुई मुट्ठी हिलाते हुए चिल्लाकर कहा। "अभी तो कुछ नहीं हुआ है, आगे देखना! एक बार जहां हम सब मज़दूर उठ खड़े हुए, तो बिना लड़े ही हम तुम्हारा सफ़ाया कर देंगे!"

"जल्दी चलो!" मां ने क़ब्रिस्तान की चहारदीवारी के छोटे-से फाटक की तरफ़ बढ़ते हुए कहा। वह कल्पना कर रही थी कि चहारदीवारी के पार खुले खेत में पुलिस उनकी ताक में बैठी होगी और उनके निकलते ही वे झपट पड़ेंगे और उन दोनों को बहुत मारेंगे। लेकिन फाटक पर पहुंचकर जब उसने चारों ओर खेत में नज़र दौड़ायी जहां शरद

ऋतु की गोधूलि-वेला का झुटपुटा फैला हुआ था, तो उसे निस्तब्धता और निर्जनता के अलावा और कुछ दिखायी न दिया।

"लाओ, मैं पट्टी बांध दूं," उसने लड़के से कहा।

"रहने दो, मुझे कोई इस चोट से शर्म थोड़े ही आती है!" लड़के ने कहा। "बराबर की लड़ाई हुई। उसने मुझे मारा, मैंने उसे मारा..."

मां ने जल्दी से घाव पर पट्टी बांध दी। लड़के का ख़ून देखकर उसका हृदय समवेदना से भर उठा और जब उसने अनुभव किया कि उसका ख़ून कितना गर्म और गाढ़ा था तो उसके शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी। वह बग़ैर कुछ बोले उसे साथ लिये जल्दी-जल्दी खेत को पार कर गयी।

"कामरेड, आप मुझे कहां ले जा रही हैं?" लड़के ने अपने मुंह पर से पट्टी हटाते हुए बहुत अकड़कर पूछा। "मैं अकेला ही चला जाऊंगा!.."

लेकिन मां ने अनुभव किया कि लड़के के हाथ कांप रहे थे और उसके पांव लड़खड़ा रहे थे। वह लगातार बातें करता जा रहा था और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना प्रश्न पूछता जा रहा था; उसका स्वर क्षीण होता जा रहा था:

"आप कौन हैं? मैं तो ठठेरा हूं, मेरा नाम इवान है। येगोर इवानोविच के मंडल में हम तीन थे—कुल मिलाकर तो ग्यारह लोग थे, लेकिन ठठेरे हम तीन ही थे। हमें वह बहुत अच्छा लगता था। मैं भगवान में यक़ीन नहीं रखता फिर भी मैं प्रार्थना करता हूं कि भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे..."

एक सड़क पर पहुंचकर मां ने किराये की गाड़ी कर ली और इवान को उसमें बिठाकर चुपके से उसके कान में कहा:

"कुछ बोलना नहीं!" और यह कहकर बड़ी सावधानी से उसके मुंह पर पट्टी बांध दी।

वह अपना हाथ उठाकर मुंह के पास तक ले गया, पर फिर उसे गोद में ढीला छोड़ दिया; उसमें पट्टी खोलने की सकत भी बाक़ी नहीं रही थी। पट्टी की तहों के पीछे से वह बुदबुदाता रहा:

"यारो, यह न समझ लेना कि मैं कभी भी इस बात को भूल जाऊंगा... उसके आने से पहले यहां तितोविच नाम का एक विद्यार्थी था... जो हमें पढ़ाया करता था... राजनीतिक अर्थशास्त्र... उसे गिरफ़्तार कर लिया गया..."

मां ने अपनी बांह इवान के गले में डालकर उसका सिर अपने सीने

से लगा लिया। सहसा लड़का निढाल होकर पड़ रहा और बिल्कुल चुप हो गया। मां ने भयविमूढ़ होकर चारों ओर घबराकर देखा। उसे डर लगा हुआ था कि पुलिसवाले किसी कोने से निकलकर झपटते हुए उसके पास आयेंगे और इवान के सिर पर पट्टी बंधी देखकर उसे पकड़-कर मार डालेंगे।

"नशे में है?" गाड़ीवान ने अपनी जगह पर बैठे-बैठे ही पीछे मुड़कर पूछा और बड़ी सहृदयता से मुस्करा दिया।

"हां! बहुत ज़्यादा पी ली!" मां ने आह भरकर कहा।

"तुम्हारा बेटा है?"

"हां। जूते बनाता है। मैं रसोईदारिन हूं..."

"बड़ी मुसीबत की ज़िंदगी है तुम्हारी भी। हूं-ऊं..."

चाबुक फटकारकर गाड़ीवान ने फिर पीछे मुड़कर देखा।

"कुछ सुना तुमने अभी क़ब्रिस्तान में जो लड़ाई हुई?.." उसने धीमी आवाज़ में पूछा। "मैंने सुना है कि लोग किसी राजनीतिक आदमी को दफ़न करने आये थे – उन्हीं में से था कोई जो बड़े-बड़े लोगों के ख़िलाफ़ हैं, कोई झगड़ा है उनका उन लोगों के साथ। ऐसा लगता है कि जो लोग उसे दफ़न करने आये थे, वे सब एक ही क़िस्म के लोग थे – एक तरह से साथी थे एक-दूसरे के। वे नारे लगाने लगे। 'सरकार मुर्दाबाद! जनता को लूटनेवालों का नाश हो!' पुलिस ने आकर उन लोगों को पीटना शुरू कर दिया! सुना है कि कुछ लोग तो तलवार से मारे भी गये। लेकिन पुलिस की भी बड़ी पिटाई हुई..." वह एक क्षण के लिए चुप रहा। "मुर्दों को भी इस तरह सताते हैं!" उसने भयातुर स्वर में कहा और बड़े विस्मय से अपना सिर हिलाने लगा। "मुर्दों को भी चैन नहीं लेने देते!"

सड़क के पत्थरों पर गाड़ी की खड़खड़ से इवान का सिर धीरे से मां के सीने से टकराया। गाड़ीवान पीछे को कुछ मुड़ा हुआ अपनी जगह पर बैठा बुड़बुड़ाता रहा:

"लोगों में बेचैनी पैदा हो गयी है – गड़बड़ी फैलती जा रही है! कल रात हमारे एक पड़ोसी के यहां राजनीतिक पुलिसवाले आये थे। सुबह तक वे एक-एक चीज़ को उलट-पुलटकर तलाशी लेते रहे और चलते वक़्त एक लोहार को अपने साथ लेते गये। लोग कहते हैं कि आधी रात को उसे ले जाकर नदी में डुबो देंगे। वह लोहार बहुत भला आदमी था..."

"क्या नाम था उसका?" मां ने पूछा।

"उस लोहार का? सावेल येवचेन्को। अभी उमर ज़्यादा नहीं थी उसकी, लेकिन जानता वह बहुत था। मालूम होता है कि कुछ जानना भी जुर्म है! वह हम लोगों के पास आकर कहा करता था, 'तुम कोचवानों की भी कैसी ज़िंदगी है?' हम कहते, 'कुत्तों से भी बदतर!'"

"बस यहीं रोक दो!" मां ने कहा।

गाड़ी को झटका लगने से इवान की आंख खुल गयी ~~और वह~~ धीरे से कराहा।

"बिल्कुल धुत्त है!" गाड़ीवान ने कहा। "वोदका से यही हाल होता है..."

बड़ी कठिनाई से इवान लड़खड़ाता हुआ आंगन में पहुंचा।

"मैं बिल्कुल ठीक हूं, मैं अकेला चला जाऊंगा," वह प्रतिरोध करता रहा।

१३

सोफ़िया पहले ही घर पहुंच गयी थी। वह बहुत घबरायी हुई और उद्विग्न थी और दांतों में सिगरेट दबाये हुए थी।

घायल लड़के को कोच पर लिटाकर उसने जल्दी से उसके सिर की पट्टी खोली और सिगरेट के धुएं के कारण आंखें मिचमिचाकर आदेश देने लगी।

"इवान दनीलोविच, वह आ गया! निलोवना, थक गयीं तुम? डर गयी थीं, क्यों? अच्छा, अब आराम कर लो। निकोलाई, निलोवना को एक गिलास में थोड़ी सी पोर्ट तो दे दो!"

मां पर जो कुछ बीती थी उसका आघात अभी तक उसके हृदय से दूर नहीं हुआ था। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी और सीने में तीव्र पीड़ा हो रही थी।

"मेरी फ़िकर न करो," उसने बुदबुदाकर कहा। पर उसके रोम-रोम में यह इच्छा समायी हुई थी कि कोई उसकी देखभाल करे—बड़े प्यार से उसकी छोटी-से-छोटी ज़रूरत की ओर ध्यान दे।

निकोलाई, जिसके हाथ पर पट्टी बंधी थी, दूसरे कमरे में से आया और मां ने देखा कि उसके साथ डाक्टर इवान दनीलोविच भी था, जिसके उलझे हुए बाल साही के कांटों की तरह खड़े थे। वह सीधे इवान

के पास गया और झुककर उसे देखने लगा।

"पानी," उसने कहा। "बहुत-सा पानी ले आओ और थोड़ी-सी रूई और साफ़ कपड़ा!"

मां रसोई की तरफ़ चली, पर निकोलाई ने बांह पकड़कर उसे खाने के कमरे में पहुंचा दिया।

"वह काम सोफ़िया से करने को कहा गया था," उसने बड़ी नर्मी से कहा। "मेरा ख़्याल है कि तुम बहुत परेशान हो, क्यों हो न?"

उसकी सहानुभूति-भरी पैनी दृष्टि के आगे मां अपने आपको वश में न रख सकी।

"ओह, क्या हो गया है!" उसने सिसक-सिसककर रोते हुए कहा। "लोगों को उन्होंने किस बेरहमी से मारा, उनको तलवार से काटकर रख दिया!"

"मैंने सब देखा!" निकोलाई ने मां को शराब का गिलास देते हुए सिर हिलाकर कहा। "दोनों ही तरफ़ लोग पागल हो गये थे। लेकिन तुम परेशान न हो। वे तलवार के चपटे से मार रहे थे। मालूम होता है सिर्फ़ एक आदमी को गहरी चोट आयी है। मैंने उसे अपनी आंख से देखा था और मैं उसे झगड़े में से बाहर निकाल लाया..."

निकोलाई की बात से मां को कुछ धीरज बंधा। कमरे के सुखकर और प्रकाशमय वातावरण से भी उसके हृदय को काफ़ी शान्ति मिली। उसने बड़ी कृतज्ञता से निकोलाई को देखा।

"तुम्हें भी मार पड़ी?" मां ने पूछा।

"नहीं, मेरा हाथ तो शायद मेरी ही ग़लती से कट गया – मैंने लापरवाही में अपना हाथ किसी चीज़ पर मार दिया, थोड़ी-सी खाल उधड़ गयी। लो, चाय पी लो। बाहर ठंडक है और तुम कपड़े भी ठीक से नहीं पहने हो..."

मां ने प्याली लेने के लिए हाथ बढ़ाया और देखा कि उसकी उंगलियों पर ख़ून सूख गया था। उसने जल्दी से अपना हाथ खींचकर अपनी गोद में रख लिया। उसका साया भीगा हुआ था। उसकी भवें ऊपर को चढ़ गयीं और वह आंखें फाड़कर अपनी उंगलियों को घूरती रही। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और उसे चक्कर आ रहा था:

"पावेल भी – मुमकिन है ये लोग उसके साथ भी ऐसा ही बर्ताव करें!"

इवान दनीलोविच वास्कट पहने और क़मीज़ की आस्तीनें समेटे

हुए कमरे में आया। उसने निकोलाई के मूक प्रश्न का उत्तर बड़ी ऊंची आवाज़ में दिया:

"चेहरे पर का ज़ख़्म तो कोई ख़ास गहरा नहीं है, मगर इसकी खोपड़ी की हड्डी चिटक गयी है, हालांकि ज़्यादा नहीं चिटकी है – बहुत जीवट का आदमी है! मगर ख़ून बहुत बह गया है। इसे अस्पताल न भेज दें?"

"क्यों? यहीं रहने में क्या हर्ज है!" निकोलाई ने कहा।

"आज तो ठीक है और शायद कल भी। लेकिन फिर उसके बाद से मुझे ज़्यादा आसानी इसी में होगी कि वह अस्पताल में रहे। मुझे मरीज़ों को उनके घर जाकर देखने की फ़ुरसत नहीं मिलती। क़ब्रिस्तान-वाली घटना के बारे में तुम एक पर्चा तैयार कर सकते हो?"

"तैयार कर दूंगा!" निकोलाई ने कहा।

मां चुपचाप उठकर रसोई की तरफ़ चल दी।

"कहां जा रही हो, निलोवना?" निकोलाई ने बड़े आग्रह से उसे रोककर पूछा। "सोफ़िया तुम्हारी मदद के बिना ही सारा काम कर लेगी!"

मां ने उसे एक नज़र देखा और कांपते हुए तथा विचित्र ढंग से हंसकर कहा: "मैं ख़ून से लथपथ हूं..."

अपने कमरे में कपड़े बदलते समय वह इस बात पर आश्चर्य करती रही कि ये लोग कैसे इतने निश्चिन्त रहते हैं और इतनी भयानक बातों को कैसे इस तरह हंसकर बर्दाश्त कर लेते हैं। इन विचारों ने उसकी उद्विग्नता को शान्त कर दिया और उसके हृदय से भय दूर हो गया। जब वह उस कमरे में आयी जहां वह घायल लड़का लेटा हुआ था तो उसने देखा कि सोफ़िया झुककर उससे कुछ बातें कर रही है।

"कामरेड, बेकार की बातें न करो!" वह कह रही थी।

"मेरी वजह से औरों को तकलीफ़ होती होगी!" उसने दबी ज़बान से प्रतिरोध किया।

"अच्छा, बातें न करो तो तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है..."

मां सोफ़िया के कंधे पर हाथ रखे उसके पीछे खड़ी थी और लड़के के सफ़ेद चेहरे को देखकर मुस्करा रही थी और सोफ़िया को बता रही थी कि गाड़ी में बैठकर जब वह न जाने कैसी-कैसी ख़तरनाक बातें बुड़बुड़ा रहा था तब वह कितना डर गयी थी। इवान की आंखें बुरी तरह जल रही थीं।

"मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूं!" उसने शरमाते हुए कहा।

"अच्छा, अब हम लोग जाते हैं!" सोफ़िया ने उसे कम्बल उढ़ाते हुए कहा। "अब तुम सो जाओ!"

वे बैठक में चले गये और बड़ी देर तक दिन की घटनाओं पर चर्चा करते रहे। उन्होंने उसको अतीत की बात मान लिया था और वे दृढ़ विश्वास के साथ भविष्य की ओर देख रहे थे और अगले दिन के काम की योजनाएं बना रहे थे। चेहरे पर थकान के चिन्ह होने पर भी उनके विचारों में साहस था और काम की बातें करते समय वे स्वयं अपने प्रति अपने असंतोष को छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं कर रहे थे। डाक्टर कुछ घबराकर कुरसी पर पहलू बदलकर बैठ गया।

"आजकल केवल प्रचार ही काफ़ी नहीं है!" उसने अपने ऊंचे और तीखे स्वर में कुछ नर्मी लाने का प्रयत्न करते हुए कहा। "नौजवान मज़दूर ठीक कहते हैं! हमें अपने आन्दोलन-क्षेत्र को विस्तृत करना चाहिये। मैं आपसे कहता हूं, मज़दूर ठीक कहते हैं..."

निकोलाई त्योरियों पर बल डालकर डाक्टर के स्वर में बोला:

"हर तरफ़ से यही शिकायत आती है कि पढ़ने के लिए काफ़ी चीज़ें नहीं मिलतीं फिर भी हम अभी तक एक अच्छा-सा छापाखाना नहीं खोल पाये हैं। लूदमीला काम करते-करते अपनी जान दिये दे रही है। अगर हमने उसकी मदद के लिए कोई आदमी न दिया, तो किसी दिन वह बीमार हो जायेगी..."

"वेसोवश्चिकोव के बारे में क्या ख़्याल है?" सोफ़िया ने पूछा।

"वह शहर में नहीं रह सकता। वह तो तभी काम शुरू कर सकता है, जब हम नया छापाखाना क़ायम कर लें, लेकिन जब तक हमें एक और आदमी न मिल जाये, तब तक हम यह भी तो नहीं कर सकते..."

"मुझसे काम नहीं चलेगा?" मां ने चुपके से पूछा।

तीनों कुछ बोले बिना कई क्षण तक उसे देखते रहे।

"यह भी अच्छा विचार है!" सोफ़िया ने ख़ुश होकर कहा।

"निलोवना, यह काम तुम्हारे लिए बहुत कठिन है!" निकोलाई ने रुखाई से कहा। "तुम्हें शहर से बाहर रहना पड़ेगा, जिसका मतलब है कि तुम पावेल से नहीं मिल सकोगी। और फिर आम तौर पर भी..."

"इससे पावेल को तो कोई ख़ास नुक़सान होगा नहीं," मां ने आह भरकर कहा। "और, सच पूछो तो, मेरे लिए भी उससे मिलने जाना

एक मुसीबत है! मुझे उससे बात नहीं करने दी जाती — बस, मैं वहां खड़े-खड़े बेवकूफ़ों की तरह उसे देखती रहती हूं और वे लोग मेरे मुंह को घूरते हैं कि कहीं मैं उससे कोई ऐसी बात न कह दूं जो मुझे न कहना चाहिये ... "

पिछले कुछ दिनों की भागदौड़ से वह बिल्कुल थककर चूर हो गयी थी। इसी लिए शहर के कोलाहल से दूर रहने की संभावना उपस्थित होते ही उसने सोचा कि यह मौक़ा हाथ से न जाने देना चाहिये।

पर निकोलाई ने बातचीत का विषय बदल दिया।

"इवान, तुम क्या सोच रहे हो?" उसने डाक्टर को सम्बोधित करते हुए कहा।

डाक्टर ने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया।

"मैं सोच रहा था कि हम लोग कितने थोड़े हैं!" उसने उदास स्वर में उत्तर दिया। "हमें ज़्यादा मेहनत से काम करना होगा ... हमें पावेल और अन्द्रेई को भी राज़ी करना होगा कि वे जेल से भाग आयें। वे दोनों बहुत काम के हैं, हम उन्हें इस तरह वहां बेकार नहीं बैठा रहने दे सकते ... "

निकोलाई ने भवें सिकोड़कर अपना सिर हिलाया और एक नज़र मां पर डाली। यह समझकर कि वे लोग उसके सामने उसके बेटे के बारे में बातें करने में संकोच करते थे, मां उठकर वहां से चली गयी: उसे इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि उन्होंने उसकी इच्छा को ठुकरा दिया था। वह आंखें खोले बिस्तर पर लेटी हुई थी और उनकी फुस-फुसाहट सुन रही थी। उसका हृदय आतंक से भर उठा।

उस दिन की अशुभसूचक घटनाएं उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही थीं पर वह इसके बारे में सोचना नहीं चाहती थी। हृदय को उद्विग्न करनेवाली सारी स्मृतियों को दूर हटाकर वह केवल पावेल के बारे में सोचने लगी। वह चाहती थी कि वह आज़ाद हो जाये, पर साथ ही उसे डर भी लगता था। उसे ऐसा आभास होता था कि उसके चारों ओर की सारी घटनाएं एक चरम बिन्दु की ओर, किसी भीषण संघर्ष की ओर बढ़ रही थीं। लोग अब तक धैर्यपूर्वक सब कुछ सहन करते आये थे पर अब भविष्य की आशंका से उनकी भावनाओं में एक उत्तेजना आ गयी थी। उनकी झुंझलाहट बहुत बढ़ गयी थी। चारों ओर उसे भांति-भांति के शब्द सुनायी देते थे और हर चीज़ से असंतोष टपकता था ... जब भी कोई पर्चा बंटता, तो बाज़ार में, दूकानों में, नौकरों

और दस्तकारों के बीच उस पर गरमागरम बहस होती। शहर में जब भी कोई गिरफ़्तार होता, तो लोग भयभीत और चिन्तित होकर इस पर चर्चा करते कि ऐसा क्यों हुआ। कभी-कभी अनजाने ही उनकी बातों में सहानुभूति की झलक उत्पन्न हो जाती। अधिकाधिक वह साधारण लोगों को ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हुए सुनती जिन्हें सुनकर उसे स्वयं एक ज़माने में डर लगता था: विद्रोह, समाजवादी, राजनीति आदि। यदि कोई इन शब्दों का प्रयोग व्यंग के साथ करता तो उस व्यंग के पीछे कौतूहल छुपा होता; यदि द्वेष के साथ करता तो उस द्वेष के पीछे भय छुपा होता और यदि कोई सोच-समझकर इनका प्रयोग करता, तो उस विचारशीलता में आशा भी होती और चुनौती भी। गतिहीन जीवन के इस अंधकारमय जल-विस्तार पर असंतोष के घेरे धीरे-धीरे बढ़ते गये। जो विचार अब तक दबे हुए थे वे जाग पड़े और दिन की घटनाओं को चुपचाप स्वीकार कर लेने की अब तक की प्रवृत्ति भंग हो गयी। दूसरों की अपेक्षा मां इस बात को ज्यादा अच्छी तरह समझती थी क्योंकि जीवन की क्रूर विधि का ज्ञान उसे दूसरों की अपेक्षा अधिक था और अब जीवन में बढ़ती हुई विचारशीलता और असंतोष को देखकर वह प्रसन्न भी हुई और भयभीत भी – प्रसन्न इसलिए कि उसे इसमें अपने बेटे के प्रयासों का फल दिखायी देता था और भयभीत इसलिए कि वह जानती थी कि अगर वह जेल से भाग निकला तो वह फिर इस संघर्ष में सबसे आगे जा खड़ा होगा जहां ख़तरा सबसे ज़्यादा था। और वहां वह मारा जायेगा।

कभी-कभी उसके बेटे की आकृति कहानियों के नायकों का रूप धारण कर लेती और वे सभी अच्छे और प्रेरणामय शब्द जो उसने अपने जीवन में सुने थे, वे सभी लोग जिनको उसने अपने जीवन में सराहा था और वे सभी ज्योतिर्मय तथा वीरतापूर्ण बातें जिनसे वह परिचित थी, उसके बेटे की आकृति में मूर्त्त हो उठतीं। उस समय उसका हृदय गर्व और ममता से भर उठता और वह चुपचाप भाव-विह्वल होकर उसकी कल्पना करने लगती।

"सब कुछ ठीक हो जायेगा!" वह सोचती।

परन्तु फिर उसकी मातृत्व की भावना बृहत्तर मानवता के प्रति उसकी भावनाओं को उसके हृदय से दूर कर देती; उन्हें इस तरह नष्ट कर देती जैसे वे किसी प्रचंड ज्वाला में भस्म हो गयी हों और उसकी उदात्त भावनाओं की राख में केवल यही एक व्यथित विचार स्पंदन करता रहता:

"वे उसे मार डालेंगे ... वे उसे मार डालेंगे ! .."

१४

अगले दिन दोपहर के समय वह जेल के दफ़्तर में पावेल के सामने बैठी अपनी धुंधली आंखों से उसका चेहरा देख रही थी। उसकी दाढ़ी बहुत बढ़ गयी थी ; वह उस अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी कि उसे वह पर्चा कैसे दे जो वह अपनी उंगलियों में दबाये हुए थी।

"मैं मज़े में हूं और बाक़ी सब लोग भी मज़े में हैं !" पावेल ने धीरे से कहा। "तुम कैसी हो ?"

"ठीक हूं ! येगोर इवानोविच मर गया !" मां ने बिल्कुल यंत्रवत् उत्तर दिया।

"ओह !" पावेल ने चौंककर कहा और चुपचाप अपना सिर झुका लिया।

"उसे दफ़न करते वक़्त पुलिस ने झगड़ा शुरू कर दिया और एक आदमी को गिरफ़्तार कर लिया !" मां बड़े भोलेपन से कहती रही। नायब जेलर ने ज़बान से एक चिचकारी ली और उछलकर खड़ा हो गया।

"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि ऐसी बातें कहने की मनाही है ?" उसने बड़बड़ाकर कहा। "राजनीति की बातें करने की इजाज़त नहीं है ! .."

मां भी खड़ी हो गयी।

"मैं राजनीति की नहीं बल्कि एक झगड़े की बातें कर रही थी !" मां ने खिसियाकर कहा। "सचमुच बड़े ज़ोर की लड़ाई हुई। एक आदमी की तो उन लोगों ने खोपड़ी भी खोल दी ..."

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ! मैं कहता हूं कि इस बात की कोई चर्चा नहीं होनी चाहिये ! मेरा मतलब यह है कि किसी ऐसी बात की चर्चा न होनी चाहिये जिसका तुमसे निजी ताल्लुक़ न हो – यानी तुम सिर्फ़ अपने ख़ानदान, अपने घर और ऐसी ही चीज़ों के बारे में बात कर सकती हो !"

यह महसूस करते हुए कि वह गड़बड़ा गया है, वह फिर मेज़ पर जाकर बैठ गया और काग़ज़ उलटने-पुलटने लगा।

"इन सब बातों की ज़िम्मेदारी मुझ पर आती है," उसने उकताये हुए स्वर में उत्तर दिया।

मौक़ा देखकर मां ने जल्दी से रुक़्क़ा पावेल के हाथ में थमा दिया और संतोष की सांस ली।

"मालूम नहीं किन बातों के बारे में बात करने की इजाज़त है," उसने कहा।

"मालूम तो मुझे भी नहीं है," पावेल ने हंसकर कहा।

"तो फिर यहां आते क्यों हो!" नायब जेलर ने झुंझलाकर उत्तर दिया। "यह तक मालूम नहीं कि बात क्या करनी चाहिये, बस आ जाते हैं यहां लोगों को परेशान करने..."

"क्या मुक़द्दमा जल्दी चलनेवाला है?" मां ने पूछा।

"सरकारी वकील अभी कुछ दिन हुए आया था, वह कह रहा था कि मुक़द्दमा जल्दी ही होगा..."

उन्होंने इसी तरह की दो-चार छोटी-मोटी बातें कीं और मां ने देखा कि पावेल उसे बड़े प्यार से देख रहा है। वह हमेशा की तरह शान्त और गंभीर था। वह बिल्कुल भी नहीं बदला था। सिर्फ़ उसके हाथ कुछ सफ़ेद हो गये थे और दाढ़ी बढ़ गयी थी जिसके कारण उसकी उम्र बहुत ज्यादा मालूम होने लगी थी। मां उसे एक खुशखबरी सुनाना चाहती थी, वह उसे निकोलाई के बारे में बताना चाहती थी। इसलिए उसने उसी मासूमियत के साथ, जिससे कि वह अब तक छोटी-मोटी बातें कर रही थी, कहा:

"उस दिन तुम्हारे धर्मपुत्र से भेंट हुई थी..."

पावेल चुपचाप प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी आंखों में आंखें डालकर देखता रहा। मां उसे वेसोवश्चिकोव के चेहरे पर चेचक के दाग़ों की याद दिलाने के लिए अपने गालों पर उंगलियों से संकेत करने लगी।

"वह लड़का ठीक चल रहा है—उसे जल्दी ही काम मिल जायेगा।"

पावेल समझ गया और उसने सिर हिला दिया; उसकी आंखों में उल्लास-भरी मुस्कराहट नाच रही थी।

"यह तो बड़ा अच्छा हुआ!" उसने कहा।

"अच्छा, और तो कोई बात कहने को है नहीं!" मां ने कहा। वह अपनी सफलता पर बहुत प्रसन्न थी और अपने बेटे की खुशी में वह भी खुश थी।

पावेल ने विदा होते समय उसका हाथ कसकर दबाते हुए कहा:

"बहुत-बहुत धन्यवाद, मां!"

यह उल्लासमय आभास कि वे दोनों एक-दूसरे के कितने निकट हैं मां पर तेज़ शराब के नशे की तरह छा गया। उसका उत्तर देने को मां को शब्द नहीं मिल रहे थे, इसलिए वह चुपचाप उसका हाथ थामे रही।

जब वह घर पहुंची, तो साशा वहां उसका इंतज़ार कर रही थी। जिस दिन मां पावेल से मिलने जेल जाती थी, साशा आम तौर पर उस दिन उससे मिलने ज़रूर आती थी। वह कभी पावेल के बारे में कुछ नहीं पूछती थी और अगर मां ख़ुद भी उसका ज़िक्र न करती, तो वह मां की आंखों में आंखें डालकर देखती रहती और इस प्रकार अपनी उत्सुकता को शान्त करती। परन्तु इस बार उसने बड़ी उत्सुकता से पूछा:

"वह कैसा है?"

"ठीक है!"

"तुमने रुक़्क़ा दे दिया था उसे?"

"हां! तुम देखतीं कि मैंने किस चालाकी से उसके हाथ तक रुक़्क़ा पहुंचा दिया..."

"पढ़ा था उसने?"

"वहां? वहां कैसे पढ़ सकता था?"

"अरे हां, मैं तो भूल ही गयी थी!" साशा ने धीरे से कहा। "हमें एक हफ़्ते तक और इंतज़ार करना पड़ेगा—पूरे एक हफ़्ते! तुम्हारा क्या ख़्याल है, क्या वह राज़ी हो जायेगा?"

साशा भवें चढ़ाकर बड़ी उत्सुकता से मां को देखती रही।

"मैं कुछ कह नहीं सकती," मां ने सोचते हुए कहा, "अगर कोई ख़तरे की बात नहीं होगी, तो राज़ी क्यों नहीं हो जायेगा?"

साशा ने अपना सिर झटका।

"भला तुम्हें मालूम है कि रोगी को खाना क्या दिया जाता है?" साशा ने रुखाई से पूछा। "उसे भूख लगी है।"

"वह कुछ भी खा सकता है! ज़रा रुको मैं अभी..."

वह रसोई में चली गयी और साशा भी उसके पीछे हो ली।

"मुझे बताओ क्या करना है, मैं कर दूं।"

"अरे नहीं, रहने दो!"

मां ने झुककर चूल्हे में से एक लोटा निकाला।

"एक बात कहनी थी मुझे," लड़की ने धीमे से कहा।

उसका चेहरा पीला पड़ गया, आंखें मानो वेदना से फट गयीं और उसने कांपते हुए होंटों से बहुत ही दबी ज़बान में कहा:

"मैं यह कहना चाहती थी कि मुझे पूरा यक़ीन है कि वह राज़ी नहीं होगा! मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम किसी तरह समझा-बुझाकर उसे राज़ी कर लो! हम लोगों को उसकी बहुत सख़्त ज़रूरत

है। उससे कहना कि जिस लक्ष्य के लिए वह लड़ रहा है उसके लिए यह ज़रूरी है। उससे कहना कि मुझे उसके स्वास्थ्य की तरफ़ से बड़ी चिन्ता है। तुम ख़ुद ही देख लो – अभी तक मुक़द्दमे की तारीख़ भी तै नहीं हुई है ..."

यह स्पष्ट था कि उसे यह सब कहने के लिए बड़ा प्रयास करना पड़ रहा था। उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी, और वह आंखें चुराये सीधी तनकर खड़ी हुई थी। थोड़ी देर बाद उसने मानो थककर अपनी आंखें मूंद लीं और अपना होंट काटने लगी। मां को उसकी बंद मुट्ठी में उंगलियों के चटख़ने की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी।

साशा की इस आकस्मिक घोषणा से पेलागेया निलोवना कुछ बौखला गयी, पर साशा के हृदय की भावनाओं को समझकर उसने अपनी बांहें उसके गले में डाल दीं।

"मेरी बच्ची!" उसने उदास स्वर में कहा, "वह अपने अलावा किसी की बात सुनता कब है – किसी की नहीं सुनता!"

थोड़ी देर तक वे दोनों एक-दूसरे से लिपटी वहां चुपचाप खड़ी रहीं।

फिर साशा ने चुपचाप अपने आपको मां के बाहुपाश से छुड़ा लिया।

"तुम ठीक कहती हो!" उसने कांपते हुए कहा। "मेरी बेवकूफ़ी थी जो मैंने कहा। मेरे दिमाग़ पर एक बोझ था सो मैंने उतार दिया ..."

फिर बहुत ही कामकाजी ढंग से उसने शान्त भाव से कहा:

"अच्छी बात है, लाओ, अब घायल को खाना खिला दें ..."

वह इवान के पास बैठ गयी और उससे पूंछने लगी कि उसके सिर में दर्द तो नहीं हो रहा है।

"बहुत तो नहीं हो रहा है लेकिन अब भी हर चीज़ धुंधली-धुंधली दिखायी देती है! कमज़ोरी बहुत मालूम होती है," उसने उत्तर दिया और कुछ शरमाकर कम्बल अपनी ठोड़ी तक खींच लिया और इस तरह आंखें सिकोड़कर देखने लगा मानो रोशनी में उसकी आंखें चौंधिया रही हों। साशा समझ गयी कि वह इतना शर्मीला है कि उसके सामने खायेगा नहीं, इसलिए वह उठकर बाहर चली गयी।

इवान उठकर बैठ गया और उसे बाहर जाते हुए देखता रहा।

"कितनी ख़ूबसूरत है!" उसने आंख मिचकाकर कहा।

इवान की नीली आंखों में उल्लास भरा था, उसके दांत बहुत छोटे-छोटे और सुडौल थे और उसकी आवाज़ अभी बदल ही रही थी।

"तुम्हारी उम्र क्या है?" मां ने विचारमग्न होकर पूछा।

"सत्रह साल ..."

"तुम्हारे मां-बाप कहां हैं?"

"गांव में। मैं जब दस बरस का था तब से यहां हूं! स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करके सीधे यहीं चला आया था। कामरेड, आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम जानकर क्या करोगे?" मां ने मुस्कराकर कहा। जब कोई मां को 'कामरेड' कहकर पुकारता तो उसे गुदगुदी-सी होती।

"देखिये, बात यह है," उसने थोड़ी देर बाद कुछ खिसियाकर कहा, "हमारे मंडल में एक विद्यार्थी हम लोगों को पढ़ाने आता था, उसने हमें पावेल व्लासोव नाम के एक मज़दूर की मां के बारे में बताया था। आपको पहली मई के जुलूस की याद है?"

मां ने सिर हिलाया और फ़ौरन सतर्क हो गयी।

"वह पहला आदमी था जो सड़क पर हमारी पार्टी का झंडा लेकर निकला था!" लड़के ने बड़े गर्व के साथ कहा और उसका यह गर्व मां के हृदय में प्रतिध्वनित होने लगा।

"मैं उस वक़्त वहां नहीं था — हम लोग अपना अलग जुलूस निकालना चाहते थे मगर हम कामयाब न हो सके! हम लोग बहुत थोड़े थे। लेकिन आप देखियेगा अगले साल हम लोग जुलूस ज़रूर निकालेंगे!"

भविष्य के उत्साह में उसके लिए सांस लेना भी कठिन हो रहा था।

"मैं उसी व्लासोव की मां की बात कर रहा था," उसने अपना चम्मच हिलाते हुए आख़िर में कहा, "उसी के बाद वह भी पार्टी में भरती हुई। लोग कहते हैं वह सचमुच बहुत ही कमाल की औरत है!"

मां खिलकर मुस्करा दी। लड़के के मुंह से अपनी प्रशंसा सुनकर उसे बड़ी ख़ुशी हो रही थी। ख़ुशी भी हो रही थी और कुछ परेशानी भी। वह उससे कहना चाहती थी: "मैं ही हूं व्लासोव की मां!" लेकिन इसके बजाय उसने अपने मन में कोमल व्यंग से कहा, "तुम भी निरी बेवक़ूफ़ हो और कुछ नहीं!.."

"लो, थोड़ा-सा और खा लो! जल्दी से अच्छे हो जाओ, तुम्हें अपने लक्ष्य के लिए अभी बहुत काम करना है!" मां ने सहसा जोश में आकर लड़के की तरफ़ झुककर कहा।

सड़क की तरफ़वाला दरवाज़ा खुला और शरद ऋतु की नम ठंडी हवा का एक झोंका अन्दर आया। मां ने नज़र उठाकर दरवाज़े के पास खड़ी हुई सोफ़िया को देखा। वह वहां खड़ी मुस्करा रही थी और उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था।

"कमाल हो गया, जिस तरह जासूस मेरे पीछे चल रहे हैं उसे देखकर मालूम होता है कि मुझे कोई बहुत बड़ी जायदाद मिलनेवाली है! मुझे अब यहां से खिसक जाना चाहिये... अच्छा, इवान, तुम अब कैसे हो? तबियत पहले से अच्छी है न? निलोवना, पावेल की क्या खबर है? साशा यहां है?"

उसने एक सिगरेट जलाकर बड़ी प्यार-भरी नज़रों से मां और उस लड़के को अपनी भूरी आंखों से देखा और जवाब की प्रतीक्षा किये बिना एक के बाद एक सवाल पूछती रही। मां उसे देखकर मुस्कराती रही।

"मुझे भी अब इन नेक लोगों में गिना जाने लगा है!" उसने सोचा।

वह फिर इवान के पास चली गयी।

"बेटा, जल्दी से अच्छे हो जाओ!" उसने कहा।

यह कहकर वह खाने के कमरे में गयी जहां सोफ़िया साशा से बातें कर रही थी।

"उसने तीन सौ कापियां तैयार कर ली हैं! अगर इसी तरह वह काम करती रही, तो किसी दिन मर जायेगी! कमाल है! साशा, ऐसे लोगों के बीच रहना, उनकी साथी होना और उनके साथ काम करना, यह भी कितने सौभाग्य की बात है..."

"है तो!" साशा ने नर्मी से उत्तर दिया।

शाम को चाय पीते समय सोफ़िया ने मां को सम्बोधित करके कहा:

"निलोवना, तुम्हें एक बार फिर देहात जाना पड़ेगा।"

"अच्छी बात है! कब?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, तीन दिन में यह काम कर सकोगी?"

"कर लूंगी..."

"इस बार तुम्हें किराये की गाड़ी लेकर दूसरे रास्ते से, निकोल्स्कोये ज़िले से होकर जाना पड़ेगा," निकोलाई ने कहा।

वह बहुत परेशान और गंभीर था। यह मुद्रा उसे शोभा नहीं देती

थी ; उसकी हमेशा की शील तथा उदार मुद्रा इस प्रकार बिगड़ जाती थी।

"वह तो बहुत लम्बा रास्ता है, निकोल्स्कोये होकर!" मां ने कहा। "और फिर किराये की गाड़ी करना तो महंगा ..."

"सच पूछो तो," निकोलाई बोला, "मैं वहां जाने के खिलाफ़ हूं। वहां की हालत ठीक नहीं है – कुछ लोग गिरफ़्तार किये गये हैं। सुना है किसी मास्टर को गिरफ़्तार किया गया है। हमें ज़्यादा सावधान रहना चाहिये। क्या यह अच्छा न होगा कि हम कुछ दिन इंतज़ार करें?.."

"हमें उन लोगों के पास लगातार पढ़ने के लिए मसाला पहुंचाते रहना चाहिये," सोफ़िया ने उंगलियों से मेज़ पर तबला बजाते हुए कहा। "निलोवना, क्या तुम्हें जाने से डर लगता है?" उसने सहसा पूछा।

मां के दिल पर चोट-सी लगी।

"मुझे कभी डर लगा है? जब मैं पहली बार गयी थी, तब भी मुझे डर नहीं लगा था... मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर अब क्यों..." उसने वाक्य पूरा किये बिना ही अपना सिर झुका लिया। जब भी वे लोग उससे पूछते, 'तुम्हें डर तो नहीं लगता', या 'तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं है', या 'तुम यह काम कर सकोगी', तो उसे ऐसा लगता कि वे उससे कोई एहसान करने को कह रहे हैं और उसे सबसे अलग समझा जाता है, उसके साथ वैसा बर्ताव नहीं किया जाता जैसा वे आपस में एक-दूसरे के साथ करते हैं।

"मुझसे यह क्यों पूछा जाता है कि मुझे डर तो नहीं लगता?" उसने रुंधे हुए स्वर में कहा। "तुम एक-दूसरे से तो यह सवाल नहीं पूछते।"

निकोलाई ने अपना चश्मा उतारकर फिर पहन लिया और अपनी बहन को घूरकर देखने लगा। मां ख़ामोशी के इस तनाव को बर्दाश्त न कर सकी ; वह अपराधियों की तरह उठी और कुछ कहने ही जा रही थी कि सोफ़िया ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोक दिया।

"मुझे माफ़ कर दो! मैं अब कभी ऐसा नहीं कहूंगी!" उसने बड़ी नर्मी से कहा।

यह सुनकर मां के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी ; कुछ ही मिनट बाद वे तीनों मां के जाने की योजना पर बहस कर रहे थे।

१५

बहुत तड़के ही मां एक किराये की घोड़ागाड़ी पर खड़बड़ करती हुई एक ऐसी सड़क पर जा रही थी जिसे शरद ऋतु की वर्षा के जल ने धोया था। तेज़ हवा चल रही थी और चारों ओर कीचड़ के छींटे उड़ रहे थे। गाड़ीवान अपनी जगह पर से पीछे मुड़-मुड़कर नाक के सुर में उससे अपना दुखड़ा रो रहा था:

"मैंने उससे कहा, अपने भाई से – कि मैं कहता हूं कि तुम बंटवारा क्यों नहीं कर लेते! तो हमने बंटवारा कर लिया ..."

सहसा उसने बायीं तरफ़वाले घोड़े पर चाबुक फटकारा और ग़ुस्से से चिल्लाया:

"चल बे, हरामज़ादे!"

शरद ऋतु के मोटे-मोटे कौए ख़ाली पड़े खेतों में बड़ी उत्सुकता से फुदक रहे थे और चारों ओर ठंडी हवा सांय-सांय कर रही थी। हवा के झोंकों का मुक़ाबला करने के लिए कौए बहुत तन-तनकर चल रहे थे, लेकिन हवा उनके परों को छेड़ती हुई गुज़रती और उनके लिए अपने पांव जमाये रखना असंभव हो जाता और वे बड़े अनमनेपन से पर फड़फड़ाते हुए उड़कर दूसरी जगह जा बैठते।

"तो उसने किया क्या कि जाकर सारी चीज़ों पर क़ब्ज़ा जमा लिया और मैंने देखा कि मेरे लिए कुछ बाक़ी ही नहीं रह गया है..." गाड़ीवान कहता रहा।

मां उसकी बातें इस तरह सुनती रही मानो कोई स्वप्न देख रही हो। उसके स्मृति-पट पर पिछले कुछ वर्षों की घटनाएं घूम गयीं और उसने अपने आपको सक्रिय रूप से उनमें भाग लेता हुआ पाया। पहले उसे जीवन की परिस्थितियां ऐसी मालूम होती थीं कि जैसे किसी ने बहुत दूर बैठकर उन्हें निर्धारित कर दिया हो – किसने और किस उद्देश्य से, यह तो कोई भी नहीं जानता था; परन्तु अब बहुत-सी परिस्थितियां उसके देखते-देखते बदलती जा रही थीं और वह स्वयं भी इस परिवर्तन में भाग ले रही थी। इस बात पर वह अपने आप से संतुष्ट तो थी, पर उसे अपनी शक्ति पर विश्वास न था। वह बहुत परेशान और उदास थी...

उसके चारों ओर हर चीज़ बहुत मंद गति से चल रही थी, आकाश पर सुरमई बादल एक-दूसरे का पीछा कर रहे थे, सड़क के दोनों ओर

के पेड़ गाड़ी के गुज़रते समय अपनी भीगी हुई पल्लवहीन डालें हिला देते थे, खेतों के क्रम के बाद नीची-नीची पहाड़ियां आतीं और फिर वे भी ग़ायब हो जातीं।

गाड़ीवान का नाक का सुर, घोड़े के साज़ में लगी हुई घंटियों की टन-टन, नम हवा की सरसराहट – इन सब आवाज़ों ने मिलकर एक कम्पनशील धारा का रूप धारण कर लिया था जो खेतों पर निरन्तर प्रवाहित हो रही थी ...

"पैसेवाले के लिए स्वर्ग भी काफ़ी नहीं होता! .." गाड़ीवान अपनी जगह पर बैठे-बैठे झूम-झूमकर कहता रहा। "तो उसने मुझे और भी कसना शुरू किया – सारे हाकिमों से उसकी दोस्ती थी ..."

एक चौकी पर पहुंचकर उसने घोड़े खोल दिये।

"मुझे शराब पीने के लिए पांच कोपेक दे दो!" उसने बड़े विनय-भरे स्वर में कहा।

मां ने पांच कोपेक का एक सिक्का उसके हाथ में धर दिया। उसने अपनी हथेली पर उसे उछालकर कहा:

"तीन की वोदका लूंगा और दो की रोटी ..."

तीसरे पहर मां सर्दी में ठिठुरती और थकी हुई निकोल्स्कोये के बड़े गांव में पहुंची और चौकी पर एक गिलास चाय पीने के लिए गयी। अपना भारी सूटकेस बेंच के नीचे रखकर वह खिड़की के पास बैठ गयी। खिड़की से उसे एक छोटा-सा चौक दिखायी दे रहा था जिसमें रौंदी हुई पीली-पीली घास उगी हुई थी। सामने ही गहरे सुरमई रंग की एक इमारत थी जिसकी छत झुक गयी थी – यही ज़िले के हाकिम का दफ़्तर था। बरामदे में एक गंजा दाढ़ीवाला किसान खाली क़मीज़ पहने बैठा पाइप पी रहा था। चौक में एक सुअर घास पर चल रहा था। वह झुंझलाकर अपने कान फड़फड़ाता था और सिर हिलाकर अपनी थूथनी ज़मीन में गड़ा देता था।

काले-काले बादलों के बड़े-बड़े झुंड मंडला रहे थे। हर चीज़ शान्त और उदास और भयानक लग रही थी, ज़िन्दगी मानो कहीं जा छिपी थी, उसने दम साध लिया था।

सहसा एक पुलिस सार्जेन्ट घोड़ा दौड़ाता हुआ चौक की तरफ़ आया और दफ़्तर की इमारत के सामने पहुंचकर उसने घोड़ा रोक दिया। अपना चाबुक हवा में घुमाते हुए उसने किसान से चिल्लाकर कुछ कहा। चिल्लाने की आवाज़ कांपती हुई आकर खिड़की से टकरायी, पर शब्द

सुनायी न दे सके। किसान ने खड़े होकर दूर किसी चीज़ की ओर संकेत किया। सार्जेन्ट कूदकर घोड़े पर से उतरा और घोड़े की रास किसान को थमा दी। लड़खड़ाता हुआ वह सीढ़ियों तक गया और जंगले का सहारा लेकर बरामदे में जा पहुंचा और दरवाज़े में घुसकर ग़ायब हो गया ...

फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। घोड़े ने पोली ज़मीन पर दो बार अपने सुम मारे। एक लड़की, जो अभी बारह-तेरह बरस की रही होगी, कमरे में आयी; उसके पीले बालों की एक छोटी-सी चोटी गुंधी हुई थी और उसके गोल चेहरे पर उसकी कोमलता-भरी आंखें बड़ी सुन्दर मालूम होती थीं। तश्तरियों से भरी हुई एक टूटी-सी ट्रे ले जाते हुए वह बराबर अपना सिर हिला रही थी और होंट काट रही थी।

"बच्ची, सलाम!" प्रेम से मां ने कहा।

"सलाम!"

चाय का सामान मेज़ पर रखकर लड़की ने सहसा उत्तेजना-भरे स्वर में घोषणा की:

"अभी-अभी उन लोगों ने एक डाकू को पकड़ा है, उसे यहीं ला रहे हैं!"

"कौन है वह डाकू?"

"मालूम नहीं ..."

"उसको क्यों पकड़ा है?"

"मालूम नहीं!" लड़की ने फिर वही उत्तर दिया। "मैंने बस इतना सुना कि वह पकड़ा गया है! सन्तरी थानेदार को बुलाने गया है!"

मां ने खिड़की से बाहर झांककर देखा। बाहर चौक में किसान जमा हो रहे थे। कुछ लोग बहुत धीरे-धीरे आराम से आ रहे थे, कुछ लोग भागे हुए घटनास्थल की तरफ़ आ रहे थे और भागते हुए ही भेड़ की खाल के अपने कोटों के बटन लगा रहे थे। उस इमारत के सामने एकत्रित होकर वे बायीं तरफ़ देखते रहे।

लड़की ने भी झांककर खिड़की के बाहर देखा और झट से दरवाज़ा बंद करती हुई कमरे से बाहर भागी। यह आवाज़ सुनकर मां चौंक पड़ी, उसने अपना सूटकेस बेंच के और नीचे सरका दिया और सिर पर शाल ओढ़कर जल्दी से दरवाज़े की तरफ़ गयी। न जाने क्यों उसकी इच्छा हो रही थी कि वह झटपट चली जाये, वहां से भाग जाये, पर वह संभल गयी ...

जब वह बरामदे में पहुंची तो उसकी आंखों और सीने पर बर्फ़ जैसी ठंडी हवा का एक झोंका तीर की तरह लगा, उसकी सांस रुकने लगी और उसके पांव सहसा जवाब देने लगे – चौक के उस पार रीबिन चला आ रहा था, उसके दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे और गांव के दो चौकीदार ज़मीन पर अपनी लाठियां पटकते हुए उसके दोनों तरफ़ चल रहे थे। जनसमूह चुपचाप बरामदे के सामने खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था।

मां को जैसे काठ मार गया, वह अपनी नज़रें उधर से न हटा सकी। रीबिन कुछ कह रहा था; मां को उसकी आवाज़ तो सुनायी दे रही थी, पर उसके हृदय की अंधकारमय शून्यता में उसके शब्दों की कोई प्रतिध्वनि सुनायी नहीं दे रही थी।

उसने एक गहरी सांस लेकर अपने आपको संभाला। बरामदे के पास नीली आंखों और सुनहरे रंग की चौड़ी-सी दाढ़ीवाला एक किसान खड़ा बड़े ध्यान से उसे देख रहा था। मां ने खांसा और भय से कांपते हुए हाथ से अपना गला सहलाने लगी।

"क्या हुआ?" मां ने साहस बटोरकर उससे पूछा।

"ख़ुद ही देख लो!" उसने उत्तर देकर मुंह फेर लिया। एक और किसान आकर उसके पास खड़ा हो गया।

रीबिन को जो पुलिसवाले ला रहे थे वे भीड़ के सामने आकर रुक गये। भीड़ बढ़ती जा रही थी, पर लोग बिल्कुल शान्त थे। सहसा रीबिन का स्वर उनके सिरों पर से गूंजता हुआ सुनायी दिया।

"ऐ ईसा के भक्तो! तुम लोगों ने उन पर्चों के बारे में सुना है जिनमें हम किसानों की ज़िंदगी की हक़ीक़त बयान की गयी है? मुझे उन्हीं पर्चों के लिए सज़ा भुगतनी पड़ रही है, मैंने ही वे पर्चे लोगों में बांटे थे!"

भीड़ रीबिन के और पास आती गयी। उसका स्वर शान्त और उत्तेजनारहित था। उसकी आवाज़ सुनकर मां होश में आयी।

"सुना तुमने?" दूसरे किसान ने चुपके से उस नीली आंखोंवाले किसान से कहा। उसने सिर उठाकर फिर बिना कुछ उत्तर दिये मां की तरफ़ देखा। दूसरे किसान ने भी मां की तरफ़ देखा। वह पहलेवाले किसान से उम्र में छोटा था। उसके एक छिदरी-सी काली दाढ़ी थी और उसके चेहरे पर चित्तियां पड़ी थीं। कुछ देर बाद वे दोनों वहां से चले गये।

"मुझसे डर गये होंगे!" मां ने अनायास सोचा।

वह ज़्यादा सतर्क हो गयी। बरामदे में जहां वह खड़ी थी वहां से उसे मिखाइलो इवानोविच का स्याह चोट खाया हुआ चेहरा और उसकी आंखों की उत्तेजना-भरी चमक दिखायी दे रही थी। वह चाहती थी कि रीबिन भी उसे देख ले, इसलिए वह पंजों के बल खड़ी होकर गर्दन लम्बी करके देखने लगी।

लोग रीबिन को गंभीर अविश्वास की भावना के साथ देख रहे थे, पर कोई कुछ कह नहीं रहा था। केवल भीड़ में पीछे की तरफ़ कुछ लोगों की खुसुर-पुसुर सुनायी दे रही थी।

"किसान भाइयो!" रीबिन ने बहुत ज़ोर लगाकर ऊंची आवाज़ में कहा। "उन पर्चों में जो कुछ लिखा है उस पर यक़ीन करना। मुमकिन है उनके लिए मुझे अपनी जान की क़ीमत चुकानी पड़े। यह मालूम करने के लिए कि वे पर्चे मुझे कहां से मिले थे उन्होंने मुझे पीटा और बहुत यातनाएं दीं और वे मुझे फिर मारेंगे। लेकिन मैं सब कुछ बर्दाश्त करने को तैयार हूं क्योंकि उन पर्चों में सच्ची बातें कही गयी हैं और सच्चाई हमें अपनी रोज़ी से भी ज़्यादा प्यारी होनी चाहिये। यही असली बात है!"

"वह यह सब क्यों कह रहा है?" बरामदे के पास खड़े हुए एक किसान ने कहा।

"अब उसके लिए फ़रक़ भी क्या पड़ता है," नीली आंखोंवाले ने उत्तर दिया। "आदमी एक ही बार तो मर सकता है..."

लोग अभी तक वहां चुपचाप खड़े उदास भाव से रीबिन को देख रहे थे और ऐसा मालूम होता था कि कोई अदृश्य बोझ उन्हें नीचे दबा रहा था।

पुलिस सार्जेन्ट लड़खड़ाता हुआ बरामदे में आया।

"कौन बोल रहा था?" उसने नशीली आवाज़ में कहा।

सहसा वह फुर्ती से सीढ़ियों से नीचे उतरा और रीबिन के बाल पकड़कर उसे झंझोड़ दिया।

"क्यों, तू बोल रहा था, सुअर के बच्चे?" उसने चीखकर कहा।

भीड़ में खलबली मच गयी और लोग बुदबुदाकर कुछ कहने लगे। मां ने व्यथित होकर लाचारी से अपना सिर झुका लिया। एक बार फिर रीबिन का स्वर गूंज उठा:

"देख लिया तुम लोगों ने!.."

"चुप रहो!" पुलिस सार्जेन्ट ने उसकी कनपटी पर एक मुक्का

रसीद किया। रीबिन लड़खड़ाया और उसने कंधे भींच लिये।

"आदमी के हाथ बांधकर जैसा जी में आता है उसके साथ सलूक करते हैं..."

"सिपाहियो, ले जाओ इसे! और तुम सब लोग घर जाओ अपने-अपने!" पुलिस सार्जेन्ट रीबिन के सामने इस तरह उछलता रहा जैसे किसी कुत्ते को हड्डी मिल गयी हो, और उसे मुंह पर, सीने पर और पेट में घूंसे मारता रहा।

"मारो नहीं उसे!" किसी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा।

"आख़िर मारते क्यों हो?" किसी ने समर्थन में कहा।

"आओ, चलें!" नीली आंखोंवाले किसान ने सिर हिलाकर अपने साथी से कहा। वे दोनों धीरे-धीरे वहां से चल दिये और मां सहानुभूति-भरी दृष्टि से उन्हें देखती रही। जब उसने पुलिस सार्जेन्ट को लस्टम-फ़स्टम भागकर बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ते देखा, तो मां ने संतोष की सांस ली।

"यहां लाओ इसे! मैं क्या कह रहा हूं..." उसने अपना मुक्का हिलाते हुए चीख़कर कहा।

"ख़बरदार जो ऐसा किया!" किसी ने भीड़ में से कड़ककर कहा। मां ने देखा कि वह वही नीली आंखोंवाला किसान बोल रहा था। "लोगो, उसे वहां न ले जाने दो! अगर वे उसे वहां ले गये, तो मारते-मारते उसकी जान ले लेंगे। और फिर कह देंगे कि हम लोगों ने उसे मार डाला है! अन्दर न ले जाने देना!"

"किसान भाइयो!" मिख़ाइलो ने गरजकर कहा। "तुम लोगों की यह समझ में नहीं आता कि तुम्हारी ज़िंदगी क्या है? क्या तुम यह नहीं देखते कि वे लोग तुम्हें किस तरह लूटते हैं, तुम्हें धोखा देते हैं और तुम्हारा ख़ून चूस लेते हैं? हर चीज़ तुम्हारी ही बदौलत है – तुम इस धरती की सबसे बड़ी शक्ति हो – लेकिन तुम लोगों को किस बात का अधिकार है? सिर्फ़ भूखों मरने का!.."

सहसा किसान एक-दूसरे की बात काटते हुए चिल्लाने लगे:

"वह सच कह रहा है!"

"थानेदार कहां हैं? थानेदार साहब को बुलाओ!.."

"पुलिस सार्जेन्ट उन्हीं को बुलाने गये हैं..."

"कौन, वह शराबी?.."

"अफ़सरों को बुलाना कोई हमारा काम थोड़े ही है..."

शोर बढ़ता गया।

"तुम बोले जाओ! हम उन लोगों को तुम्हें हाथ भी न लगाने देंगे ..."

"इसके हाथ खोल दो ..."

"देखना कहीं तुम खुद न पकड़े जाना!.."

"रस्सियों से मेरे हाथों में दर्द हो रहा है!" रीबिन ने अपनी भारी सुरीली आवाज़ में कहा जिसमें बाक़ी सब आवाज़ें डूब गयीं। "किसान भाइयो, मैं भागूंगा नहीं! मैं सच्चाई से भागकर कहां जाऊंगा – वह तो मेरी नस-नस में बसी हुई है ..."

कुछ लोग भीड़ से अलग होकर एक तरफ़ को हटकर खड़े हो गये और सिर हिला-हिलाकर टीका-टिप्पणी करते रहे। लेकिन फटे-पुराने कपड़े पहने हुए और लोग बहुत उत्तेजित अवस्था में भागकर आते रहे। वे सब रीबिन के चारों ओर भीड़ लगाये खड़े थे। रीबिन उनके बीच एक वनदेवता की तरह खड़ा था और अपने सिर के ऊपर हाथ हिला-हिलाकर उनसे चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था:

"धन्यवाद, दोस्तो, तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! अगर हम लोग एक-दूसरे के हाथ नहीं खोलेंगे, तो कौन खोलेगा?"

उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और खून में सना हुआ हाथ ऊपर उठाया।

"यह मेरा खून है जो मैंने सच्चाई के लिए बहाया है!"

मां बरामदे की सीढ़ियों से नीचे उतरी, लेकिन चूंकि उसे भीड़ के कारण मिखाइलो की सूरत नहीं दिखायी दे रही थी, इसलिए वह फिर ऊपर चढ़ गयी। उसके हृदय में एक अस्पष्ट-सा हर्ष हिलोरें ले रहा था।

"किसान भाइयो! इन पर्चों को ढूंढ़कर पढ़ना! अगर पादरी लोग और सरकारी हाकिम तुमसे कहें कि सच्चाई का प्रचार करनेवाले ये लोग नास्तिक और विद्रोही हैं, तो उन पर विश्वास न करना। सच्चाई छुप-छुपकर पृथ्वी पर घूम रही है और वह जनता के बीच वास करने के लिए स्थान ढूंढ़ रही है। इन हाकिमों के लिए तो वह धधकती हुई आग और तलवार की तरह है। वे उसे स्वीकार नहीं कर सकते – वह उन्हें काटकर रख देगी और जलाकर भस्म कर देगी! तुम्हारे लिए सच्चाई एक दोस्त है, उनके लिए वह एक कट्टर दुश्मन है! इसी लिए वह पृथ्वी पर छुप-छुपकर घूमती है!.."

एक बार फिर भीड़ में से तरह-तरह की आवाज़ें आने लगीं।

"सुनो, ऐ ईसा के भक्तो!.."
"भैया, तुम्हारा अंजाम बुरा होगा..."
"तुम्हें पुलिस के हवाले किसने किया?"
"पादरी ने!" एक पुलिसवाले ने उत्तर दिया।
दो किसानों ने एक मोटी-सी गाली दी।
"देखना लोगो, होशियार रहना!" किसी ने चेतावनी दी।

१६

थानेदार भीड़ की तरफ़ आ रहा था। वह लम्बे क़द का, गठे हुए शरीर और गोल चेहरेवाला व्यक्ति था। वह अपनी टोपी एक कान के ऊपर झुकाकर पहनता था और उसकी एक तरफ़ की मूंछ ऊपर की ओर और दूसरी तरफ़ की मूंछ नीचे की ओर ऐंठी रहती थी, इसलिए उसके चेहरे पर हमेशा एक नीरस मुस्कराहट का टेढ़ापन क़ायम रहता था। वह अपने बायें हाथ में तलवार लिये था और दाहिना हाथ बहुत ज़ोर से झुला-झुलाकर चल रहा था। उसके भारी और जमे हुए क़दमों की आहट सबने सुनी। उसे रास्ता देने के लिए भीड़ हट गयी और सारा कोलाहल इस तरह शान्त हो गया जैसे धरती में पानी सोख जाये। सबकी मुद्राएं गम्भीर हो गयीं। मां को ऐसा लगा कि उसकी आंखें जल रही हैं और उसके माथे की पेशियां फड़क रही हैं। वह फिर जाकर भीड़ में मिल जाना चाहती थी। वह आगे झुकी और आशंकाओं से भरी हुई निश्चल खड़ी रही।

"क्या है यह?" थानेदार ने रीबिन के सामने रुककर उसे बड़े रोब से देखते हुए पूछा। "इसके हाथ क्यों नहीं बंधे हैं? सिपाहियो, इसके हाथ बांध दो!"

उसकी आवाज़ बहुत ऊंची और गूंजती हुई, पर सपाट थी।

"बंधे हुए तो थे, पर लोगों ने खोल दिये!" एक सिपाही ने उत्तर दिया।

"क्या मतलब? लोग क्या होते हैं? किन लोगों ने?" थानेदार ने अपने सामने अर्धवृत्त के रूप में खड़ी हुई भीड़ पर एक नज़र दौड़ायी।

"कौन हैं ये लोग?" उसने अपनी सपाट आवाज़ में पूछा; उसके स्वर में ज़रा भी उतार-चढ़ाव नहीं आने पाया। उसने अपनी तलवार की मूठ से नीली आंखोंवाले किसान को छूकर कहा:

"चुमाकोव, जिन लोगों का ज़िक्र हो रहा है, वह तुम हो? अच्छा, और कौन है? मीशिन, तुम भी?" थानेदार ने उनमें से एक की दाढ़ी अपने दाहिने हाथ से पकड़ ली।

"हरामज़ादो, चले जाओ यहां से, नहीं तो मैं अभी तुम्हारी अक़्ल ठिकाने कर दूंगा – अच्छी तरह मज़ा चखा दूंगा!"

उसकी मुद्रा में न क्रोध था न धमकी। वह बहुत ही आवेशरहित स्वर में बोल रहा था और अपने लम्बे-लम्बे हाथों से उन्हें ऐसे मार रहा था जैसे यह उसकी आदत हो। वे लोग मुंह लटकाये वापस हो गये।

"तुम लोग यहां खड़े क्या देख रहे हो?" उसने सिपाहियों से कहा। "मैं कहता हूं हाथ बांध दो इसके!"

थानेदार ने एक सांस में कई गालियां दीं और फिर रीबिन की तरफ़ देखा।

"ए, हाथ पीछे करो!" उसने गरजकर कहा।

"मैं अपने हाथ बंधवाना नहीं चाहता!" रीबिन ने कहा। "मैं न भागूंगा, न लड़ूंगा, इसलिए हाथ बंधवाने की क्या ज़रूरत है?"

"क्या कहा?" थानेदार ने उसकी तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

"वहशियो, अच्छा यही है कि लोगों को इस तरह सताना छोड़ दो!" रीबिन ने अपना स्वर ऊंचा करके कहा। "तुम्हारी बारी भी जल्द ही आनेवाली है..."

थानेदार उसका मुंह देखता रह गया, उसकी मूंछें फड़क रही थीं। वह एक क़दम पीछे हट गया और उसने आश्चर्य से सांप की तरह फुफकारकर कहा:

"सुअर के बच्चे! तेरी यह मजाल!"

फिर सहसा उसने रीबिन के मुंह पर ज़ोर का एक घूंसा मारा।

"आप अपने इन घूंसों से सच्चाई को नहीं मार सकते!" रीबिन ने उसकी तरफ़ बढ़ते हुए चिल्लाकर कहा। "ज़लील कुत्ते, तुझे मुझको मारने का कोई हक़ नहीं है!"

"मुझे कोई हक़ नहीं है? मुझे?" थानेदार ने सचमुच कुत्तों की तरह भूंककर कहा।

उसने एक बार फिर रीबिन के सिर का निशाना लेकर अपना मुक्का घुमाया। रीबिन ने सिर नीचे कर लिया और निशाना चूक गया; थानेदार मुंह के बल गिरते-गिरते बचा। किसी ने भीड़ में से चिढ़ाने के

लिए सीटी बजायी और एक बार फिर रीबिन का क्रोधपूर्ण स्वर सुनायी दिया :

"शैतान, ख़बरदार जो मुझे हाथ लगाने की हिम्मत की!"

थानेदार ने चारों ओर नज़र दौड़ायी और देखा कि भीड़ और पास आ गयी थी और उन लोगों ने चारों तरफ़ एक घेरा बना लिया था; यह बात बहुत अशुभसूचक और ख़तरनाक थी...

"निकीता!" थानेदार ने चिल्लाकर आवाज़ दी। "ए निकीता!"

एक छोटे क़द का गठे हुए शरीरवाला किसान भेड़ की खाल का कोट पहने भीड़ से बाहर आया। उसका उलझे हुए बालोंवाला बड़ा-सा सिर झुका हुआ था।

"निकीता!" थानेदार ने बड़े निश्चिन्त भाव से अपनी मूंछ ऐंठते हुए कहा। "ज़रा इसकी कनपटी पर एक मुक्का रसीद तो करना–ज़ोर का!"

किसान आगे बढ़ा और रीबिन के सामने पहुंचकर खड़ा हो गया। उसने सिर उठाया ही था कि रीबिन ने उसके ऊपर कठोर शब्दों की बौछार की और बड़े विश्वास के साथ अपनी भारी आवाज़ में बोला :

"भाइयो, देखा तुमने, किस तरह ये लोग आदमी को अपने ही हाथों अपना गला घोंटने पर मजबूर करते हैं। आंखें खोलकर देख लो और अच्छी तरह सोचो इसके बारे में!"

धीरे-धीरे उस किसान ने अपना हाथ उठाया और रीबिन के सिर पर एक बहुत ही हल्का-सा मुक्का मारा।

"हरामी, ऐसे मारा जाता है?" थानेदार ने चिल्लाकर कहा।

"ए निकीता!" किसी ने भीड़ में से धीमी आवाज़ में कहा। "यह न भूल जाना कि भगवान के सामने जवाब देना पड़ेगा!"

"मैं कहता हूं, मारो इसे!" थानेदार ने किसान की गर्दन को धक्का देते हुए उससे चिल्लाकर कहा। लेकिन निकीता अपना सिर झुकाये वहां से चल दिया।

"बस, मैं इससे ज़्यादा नहीं कर सकता..." उसने उदास होकर कहा।

"क्या कहा?"

थानेदार के चेहरे पर कालिमा दौड़ गयी; वह अपना पांव पटककर मोटी-सी गाली देकर रीबिन की तरफ़ झपटा। इसके बाद ही एक घूंसे की आवाज़ आयी और रीबिन चक्कर खाकर लड़खड़ा गया। उसने अपना

हाथ उठाया ही था कि इतने में दूसरा घूंसा पड़ा और वह गिर पड़ा। थानेदार उसके सिर और सीने पर तथा पसलियों में ठोकरें मारने लगा।

भीड़ में क्रोध की लहर दौड़ गयी। लोग थानेदार की तरफ़ बढ़े, पर यह देखकर वह उछलकर पीछे हट गया और जल्दी से अपनी तलवार म्यान में से निकालकर बोला:

"क्या मतलब है इसका? तुम लोग बग़ावत कर रहे हो? अच्छा, तो यह बात है!.."

उसकी आवाज़ कांपकर शान्त हो गयी और वह कुछ कहने के असफल प्रयास में चिंचियाने लगा। थानेदार की आवाज़ जवाब दे गयी और उसके हाथ-पांव भी। उसका सिर झुक गया, कंधे नीचे लटक गये और पीछे हटते हुए उसने हारे जुआरी की तरह चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। वह अपने क़दमों से ज़मीन टटोल-टटोलकर चल रहा था।

"अच्छी बात है!" उसने भर्राये हुए स्वर में चिल्लाकर कहा। "ले जाओ इसे यहां से – मैं जा रहा हूं। हरामज़ादो, तुम्हें मालूम नहीं कि वह राजनीतिक क़ैदी है? तुम्हें यह मालूम नहीं कि यह लोगों को ज़ार के ख़िलाफ़ भड़का रहा है? और तुम इसकी तरफ़दारी करते हो? इसलिए तुम भी बाग़ी हो, क्यों न?.."

मां पलक झपकाये बिना निश्चल खड़ी रही। उसकी सारी शक्ति जैसे किसी ने निचोड़ ली हो, उसका दिमाग़ बिल्कुल ख़ाली था जैसे उसने कोई भयानक स्वप्न देखा हो। वह भय और व्यथा में डूबी हुई थी। लोगों की उदासी, व्यथा और क्रोध से भरी हुई आवाज़ें मक्खियों की तरह उसके मस्तिष्क में गूंज रही थीं। उसने थानेदार की कांपती हुई आवाज़ और किसी की फुसफुस करके बोलने की आवाज़ सुनी...

"अगर वह अपराधी है, तो उस पर अदालत में मुक़द्दमा चलाया जाये!.."

"हुज़ूर, रहम खाइये उस पर..."

"यह सच है, किसी क़ानून में इस तरह के बर्ताव की इजाज़त नहीं है..."

"सचमुच कोई क़ानून ऐसा नहीं है! अगर ऐसा होता तो जिसका जी चाहता जिसे मार-पीटकर बराबर कर देता। यह भी कोई बात हुई?.."

लोग दो दलों में बंट गये: एक थानेदार को घेरकर खड़ा हो गया और उस पर चीख़ने-चिल्लाने लगा और उससे अनुनय-विनय करने

21-1065

लगा ; दूसरा समूह, जो छोटा था, धराशायी व्यक्ति को घेरे खड़ा था और चुनौती के स्वर में बुड़बुड़ाकर कुछ कह रहा था। इस समूह के कुछ लोगों ने सहारा देकर रीबिन को खड़ा किया और जब पुलिस-वालों ने फिर उसके हाथ बांधने का प्रयत्न किया, तो उन्होंने चिल्लाकर कहा :

"अरे, जल्लादो, इतनी जल्दी क्या है!"

मिख़ाइलो ने अपने मुंह और दाढ़ी पर से गर्द और ख़ून पोंछा और चुपचाप चारों ओर नज़र दौड़ायी। उसकी नज़र मां पर पड़ी। मां चौंक पड़ी और उसकी तरफ़ झुककर अनायास ही उसने अपना हाथ हिला दिया। रीबिन ने मुंह फेर लिया। कुछ देर बाद उसकी आंखों ने फिर मां को ढूंढ़ लिया। मां को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सिर ऊंचा करके तनकर खड़ा हो गया था और उसके ख़ून में सने हुए गाल कांपने लगे ...

"उसने मुझे पहचान लिया – क्या सचमुच उसने मुझे पहचान लिया ?.."

मां ने उसकी तरफ़ देखकर सिर हिलाया। एक तीव्र लालसा के वश उसका सारा शरीर कांप रहा था। दूसरे ही क्षण मां ने देखा कि वह नीली आंखोंवाला किसान रीबिन के बग़ल में खड़ा उसे देख रहा था। एक क्षण के लिए उसकी दृष्टि से मां भयभीत हो उठी ...

"मैं क्या कर रही हूं ? वे लोग मुझे भी पकड़ लेंगे !"

उस किसान ने रीबिन से कुछ कहा और रीबिन ने उत्तर में सिर हिला दिया।

"कोई फ़िकर की बात नहीं है !" रीबिन ने कांपते हुए स्वर में कहा, जो कम्पन के बावजूद स्पष्ट और साहसमय था। "मैं इस पृथ्वी पर अकेला नहीं हूं – वे सारी पृथ्वी के लोगों को तो गिरफ़्तार नहीं कर सकते ! जहां-जहां मैं रहा हूं वहां मेरी याद बाक़ी रहेगी ! वे हमारा घोसला नोचकर बर्बाद भी कर डालें, तमाम साथियों को पकड़ भी ले जायें, फिर भी ..."

"वह यह सब मुझसे कह रहा है !" मां ने अंदाज़ा लगाया।

"लेकिन वह दिन आयेगा जब ये उक़ाब आज़ादी से उड़ेंगे – जनता सारे बंधन तोड़ डालेगी !"

एक औरत बाल्टी में पानी लाकर रीबिन का मुंह धोने लगी और साथ-साथ आहें भरकर बड़बड़ाती रही। उसका यह विनयपूर्ण करुण क्रन्दन मिख़ाइलो के शब्दों में इस तरह घुल-मिल गया कि मां उनमें

अन्तर भी न कर सकी। थानेदार के पीछे-पीछे किसानों का एक समूह उधर बढ़ा।

"क़ैदी को ले जाने के लिए गाड़ी लाओ! अबकी किसकी बारी है?" किसी ने चिल्लाकर कहा।

इसके बाद थानेदार का स्वर सुनायी दिया जो अब बिल्कुल ही बदला हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि वह बहुत झुंझलाकर बोल रहा था।

"मैं तुझे मार सकता हूं," थानेदार ने कहा, "पर तू मेरे ऊपर हाथ नहीं उठा सकता। अब की बार हिम्मत न करना, गधे कहीं के!"

"अच्छा, यह बात है! आप अपने को समझते क्या हैं – क्या आप ख़ुदा हैं?" रीबिन ने चिल्लाकर कहा।

दबी हुई आवाज़ों के प्रवाह में उसकी आवाज़ डूब गयी।

"भाई, उससे बहस न करो! वह हाकिम है!.."

"हुज़ूर, आप उस पर ख़फ़ा न हों! वह इस वक़्त अपने होश में नहीं है..."

"चुप रह, बुद्धू कहीं का!"

"वे लोग अब तुम्हें शहर ले जायेंगे..."

"शहर में ज़्यादा क़ायदा-क़ानून चलता है!"

लोगों की आवाज़ों में विनय और अनुरोध था। इन तमाम आवाज़ों ने मिलकर एक अस्पष्ट गुंजन का रूप धारण कर लिया था जिसमें आशा की झलक तक न थी। पुलिसवाले रीबिन की बांहें पकड़कर उसे दफ़्तर की इमारत की सीढ़ियों के ऊपर ले गये और दरवाज़े के अन्दर चले गये। किसान धीरे-धीरे तितर-बितर हो गये, लेकिन मां ने नीली आंखोंवाले उस किसान को अपनी तरफ़ आते देखा। वह आंखें झुकाये उसे देख रहा था। मां के पांव जवाब देने लगे और घोर निराशा ने मानो उसके हृदय की सारी शक्ति चूस ली; उसकी आंखों के आगे अंधेरा-सा छाने लगा।

"मुझे यहां से नहीं हटना चाहिये!" उसने सोचा। "मुझे नहीं हटना चाहिये!"

वह जंगला पकड़कर प्रतीक्षा करने लगी।

थानेदार बरामदे में खड़ा अपने हाथ हिला-हिलाकर किसी को डांट रहा था; उसकी आवाज़ इस समय भी उतनी ही नीरस और बेजान थी।

"तुम लोग बिल्कुल बेवक़ूफ़ हो, सुअर के बच्चो! न कुछ जानें न

बूझें, हर बात में अपनी टांग अड़ाते हैं! गधो, यह सरकार का मामला है! मेरा एहसान मानो, तुम्हें तो मेरे सामने घुटने टेककर मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिये कि मैंने तुम्हारे साथ इतनी भलाई की! अगर मैं चाहता, तो सबको पकड़वाकर सख़्त क़ैद की सज़ा करवा देता..."

कोई बीस-पच्चीस किसान नंगे सिर खड़े उसकी बातें सुन रहे थे। बादल नीचे आते गये और अंधेरा छाता गया। नीली आंखोंवाला किसान बरामदे में आया जहां मां खड़ी हुई थी।

"देखा क्या हो रहा है?.."

"हां," मां ने नर्मी से उत्तर दिया।

"तुम यहां किस काम से आयी हो?" उसने मां की आंखों में आंखें डालकर पूछा।

"मैं किसान औरतों से लैसें ख़रीदती हूं और कपड़ा भी..."

किसान धीरे-धीरे अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा।

"यहां की औरतें तो ये चीज़ें बनाती नहीं," उसने इमारत के दरवाज़े की तरफ़ कनखियों से देखकर बड़ी बेपरवाही से कहा।

मां ने जल्दी से उस पर एक नज़र डाली और अन्दर जाने के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगी। किसान का चेहरा बहुत ख़ूबसूरत और गंभीर था और उसकी आंखों में उदासी थी। वह लम्बे क़द का चौड़े कंधोंवाला आदमी था; वह पैबंद लगा हुआ कोट, साफ़-सी सूती कमीज़ और गाढ़े का भूरा पतलून पहने था; उसके पांवों पर फटे हुए जूते थे, वह भी बिना मोज़ों के...

न जाने क्यों मां ने संतोष की सांस ली।

"क्या तुम आज रात-भर के लिए मुझे अपने यहां ठहरा सकते हो?" मां ने सहसा पूछा। यह प्रश्न उसने अन्तःप्रेरणा के वश पूछा था जो इस समय उसके भटकते हुए विचारों से ज़्यादा तेज़ी से काम कर रही थी।

यह प्रश्न पूछते ही उसका पूरा शरीर, उसकी एक-एक हड्डी, एक-एक मांस-पेशी मानो अकड़ गयी। वह तनकर सीधी खड़ी हो गयी और उस आदमी को निडर होकर देखने लगी। कुछ विचार उसके मस्तिष्क में कांटों की तरह चुभ रहे थे:

"मेरी वजह से निकोलाई इवानोविच की तबाही आ जायेगी। और मैं बहुत दिनों तक, न जाने कितने दिनों तक पावेल से नहीं मिल पाऊंगी! वे मुझे बहुत मारेंगे!"

किसान ने ज़मीन पर नज़रें गड़ाये हुए अपने कोट को सीने पर खींचते हुए धीरे-धीरे उत्तर दिया:

"तुम्हें रात-भर के लिए अपने यहां ठहरा लूं? क्यों नहीं? बस इतनी बात है कि मेरी झोपड़ी बहुत मामूली-सी है ..."

"मैं ही कौन महलों में रहने की आदी हूं!"

"अच्छी बात है," किसान राज़ी हो गया और आंखें उठाकर उसने मां को सिर से पांव तक देखा।

काफ़ी देर हो गयी थी और शाम के धुंधलके में उसकी आंखों में उदास चमक थी और उसका चेहरा बहुत पीला मालूम पड़ता था।

"अच्छा, तो मैं अभी चलती हूं और तुम मेरा सूटकेस ले चलोगे न?.." मां ने धीरे से कहा। उसे ऐसा लग रहा था कि वह बड़ी तेज़ी से किसी ढलान पर नीचे फिसलती जा रही है।

"अच्छी बात है, लेता चलूंगा," उसने कंधे ऊंचे करके अपना कोट फिर ठीक किया, "लो, वह गाड़ी आ गयी ..."

रीबिन फिर बरामदे में दिखायी दिया। उसके सिर और चेहरे पर भूरे रंग की कोई चीज़ लिपटी हुई थी और उसके हाथ बंधे हुए थे।

"अच्छा, दोस्तो, विदा!" गोधूलि-वेला में सर्दी को चीरता हुआ उसका स्वर सुनायी दिया, "सच्चाई की खोज में रहना और उसकी हिफ़ाज़त करना! जो आदमी तुमसे ईमानदारी की बात कहे उस पर विश्वास करना और सच्चाई के लिए लड़ने में अपनी जान की भी परवाह न करना!.."

"बंद कर ज़बान!" थानेदार चिल्लाया। "अबे पुलिसवाले, घोड़ों को हांकता क्यों नहीं?"

"तुम्हारे पास खोने के लिए है ही क्या? अपनी ज़िंदगी को देखो!.."

गाड़ी चल दी।

"आख़िर तुम लोग भूखों क्यों मरते हो?" रीबिन ने चिल्लाकर कहा; उसके दोनों तरफ़ एक-एक पुलिसवाला बैठा था। "अगर तुम्हें आज़ादी मिल गयी, तो तुम्हें रोटी और न्याय भी मिल जायेगा! अच्छा, दोस्तो, विदा!.."

उसकी आवाज़ पहियों की खड़खड़, घोड़ों की टापों की आवाज़ और थानेदार की चीख़-पुकार में दबकर रह गयी।

"बस, क़िस्सा ख़तम हो गया!" किसान ने सिर हिलाकर कहा

और फिर मां की तरफ़ मुड़कर बोला : "तुम यहीं मेरा इंतज़ार करो, मैं अभी एक मिनट में आया ..."

मां कमरे में चली गयी और समोवार के सामने मेज़ के पास बैठ गयी। उसने रोटी का एक टुकड़ा उठाकर देखा और फिर तश्तरी में वापस रख दिया। उसकी खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं हो रही थी – उसे फिर मतली-सी हो रही थी। उसे न जाने क्यों गर्मी लग रही थी जिसके कारण वह बेचैन थी। मतली के कारण उसकी शक्ति क्षीण होने लगी, उसके हृदय से मानो किसी ने सारा ख़ून निचोड़ लिया और उसकी आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। उस नीली आंखोंवाले किसान का चेहरा बराबर उसकी आंखों के सामने फिर रहा था – वह एक अजीब चेहरा था, उसमें किसी बात की कमी मालूम होती थी और उसे देखते ही न जाने क्यों अविश्वास की भावना जागृत होती थी। वह यह नहीं सोचना चाहती थी कि वह उसके साथ विश्वासघात करेगा, पर यह विचार उसके मस्तिष्क में प्रवेश कर गया था और उसके दिल पर एक बोझ बना हुआ था।

"उसने मुझे ध्यान से देखा!" उसने कमज़ोरी अनुभव करते हुए सोचा, "उसने मुझे ध्यान से देखा और – भांप गया ..."

यह विचार इससे आगे न बढ़ सका, मानो मतली और निराशा की दलदल में फंसकर रह गया हो।

चौक में अभी थोड़ी देर पहले के कोलाहल के बाद जो निस्तब्धता छा गयी थी उससे यह पता चलता था कि गांववाले डर गये थे। इससे मां की एकान्त की भावना और तीव्र हो उठी थी और उसकी आत्मा पर राख जैसा कोमल और सुरमई अंधकार-सा छा गया था।

वह लड़की फिर दरवाज़े पर दिखायी दी।

"आपके लिए अंडे तलकर ला दूं?" उसने पूछा।

"नहीं, रहने दो। मेरी खाने की इच्छा नहीं हो रही है, इन लोगों की चीख़-पुकार से मेरा तो दिल हिल गया!"

लड़की मेज़ के पास आ गयी।

"आपने देखा नहीं कि थानेदार ने उसे कितनी बुरी तरह पीटा!" उसने बड़ी उत्सुकता से दबे स्वर में कहा, "मैं तो पास ही खड़ी थी। उसने उसके सभी दांत तोड़ डाले। मैंने उस आदमी को थूकते देखा – कितना गाढ़ा और गहरे रंग का था उसका ख़ून! .. और उसकी आंखें तो सूजकर बिल्कुल बंद हो गयी थीं! वह तारकोल के कारख़ाने में काम

करता है। पुलिस सार्जेन्ट ऊपर नशे में धुत्त पड़ा है और अब भी शराब मांग रहा है। वह कहता है कि उनका एक पूरा गिरोह था और यह दाढ़ीवाला उनका सरदार था। उन्होंने तीन लोगों को पकड़ा था, पर एक भाग गया। उन्होंने एक मास्टर को भी गिरफ़्तार कर लिया। वह भी इनके गिरोह में था। वे ईश्वर पर यक़ीन नहीं रखते और दूसरों से भी कहते हैं कि ईश्वर पर विश्वास न रखें ताकि वे गिरजाघरों को लूट सकें – यही है इन लोगों का काम! कुछ किसानों को उस पर तरस आ रहा था मगर कुछ लोगों का कहना था कि उसे फांसी दे देनी चाहिये! हमारे गांव में ऐसे दुष्ट किसान भी हैं!"

मां लड़की की यह बेसिर-पैर की बातें ध्यान से सुनती रही। लड़की बड़ी तेज़ी से बोल रही थी। मां अपने भय और आशंकाओं को दबाने का प्रयत्न कर रही थी। लड़की इस बात पर ख़ुश थी कि कोई तो उसकी बात सुन रहा था, इसलिए वह और भी उत्साह के साथ बोलती रही:

"मेरे बाबा कहते हैं कि यह सब फ़सल ख़राब होने का नतीजा है! दो साल से धरती में कुछ उगा नहीं, किसान बड़ी मुसीबत में हैं! इसी लिए वे यह सब गड़बड़ करते हैं! गांव की सभाओं में वे चीख़ते-चिल्लाते और हाथापाई करते हैं। अभी उस दिन की बात है कि लगान न अदा करने के कारण जब वास्युकोव का सामान नीलाम किया जा रहा था, तो उसने गांव के मुखिया को इतने ज़ोर से मारा कि बस! वह बोला, 'लो, यह रहा मेरा क़र्ज़ ...'"

दरवाज़े के बाहर किसी के भारी क़दमों की आहट सुनायी दी। मां मेज़ का सहारा लेकर जल्दी से उठ खड़ी हुई ...

नीली आंखोंवाला किसान अपनी टोपी उतारे बिना अन्दर आया।

"कहां है तुम्हारा बक्सा?" उसने पूछा।

उसने बड़ी आसानी से उसे उठा लिया और हिलाकर कहा:

"ख़ाली है! मारका, इस औरत को मेरी झोपड़ी में पहुंचा देना।"

वह पीछे देखे बिना बाहर चला गया।

"क्या आप आज रात यहीं रहेंगी?" लड़की ने पूछा।

"हां, मैं लैसें ख़रीदने आयी हूं – मैं लैस ख़रीदने का काम करती हूं ..."

"यहां तो कोई लैसें बनाता नहीं! तिनकोवो और दारयिनो में

बनाते हैं। यहां तो बनाते नहीं!" लड़की ने सूचना दी।

"तो मैं कल वहां चली जाऊंगी..."

मां ने चाय के पैसे देने के बाद जब उस लड़की को तीन कोपेक बख़्शीश में दिये, तो वह बहुत ख़ुश हो गयी। वे दोनों बाहर निकलीं और लड़की गीली ज़मीन पर नंगे पांव जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाती हुई बोली:

"अगर कहो तो मैं दारयिनो जाकर वहां की औरतों से अपनी लैसें यहां ले आने को कह दूं," उसने कहा। "तुम वहां जाने से बच जाओगी। पूरे आठ मील का सफ़र है..."

"नहीं बच्ची, तुम फ़िकर न करो!" मां ने इस विचार से कि वह कहीं पीछे न रह जाये जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाये। ठंडी हवा से उसका जी कुछ ठीक हुआ और उसके हृदय में एक अस्पष्ट-सा दृढ़ संकल्प उत्पन्न होने लगा। यह संकल्प बहुत धीरे-धीरे और अनिश्चित गति से बढ़ रहा था, पर उसमें आशा थी और इस संकल्प को बढ़ाते रहने के लिए वह अपने मन में पूछती रही:

"मैं क्या करूंगी? अगर मैं साफ़-साफ़ सब कुछ कह दूं..."

रात सर्द और नम थी। झोपड़ियों की खिड़कियों में कुछ लाल-लाल झलक देती हुई रोशनियां अपलक चमक रही थीं। गड़रियों की हांक और मवेशियों की अलसायी हुई आवाज़ इस निस्तब्धता को भंग कर रही थी। सारा गांव अंधकार और गहरी चिन्ता में डूबा हुआ था...

"बस, यही जगह है!" लड़की ने कहा। "रात ठहरने के लिए आपने बहुत बुरी जगह पसंद की है—बहुत ही ग़रीब किसान है..."

लड़की ने टटोलकर दरवाज़ा खोला।

"काकी तत्याना!" उसने बड़े साहस के साथ पुकारा।

और फिर वह भाग गयी।

"अच्छा, विदा!.." अंधेरे को चीरता हुआ उसका स्वर सुनायी दिया।

१७

मां अन्दर चली गयी और आंखों पर हाथ का साया करके झोपड़ी को अच्छी तरह देखने लगी। झोपड़ी छोटी थी, पर मां उसकी सफ़ाई से बहुत प्रभावित हुई। एक नौजवान औरत ने चूल्हे के पीछे से झांककर

देखा, बिना कुछ कहे सिर हिलाया और फिर ग़ायब हो गयी। मेज़ पर लैम्प जल रहा था।

झोपड़ी का मालिक मेज़ के पास बैठा हुआ अपनी उंगलियों से मेज़ पर तबला बजा रहा था और मां की आंखों में कुछ खोजने का प्रयत्न कर रहा था।

"अन्दर आ जाइये!" उसने थोड़ी देर बाद कहा। "तत्याना, जाकर ज़रा प्योत्र को बुला लाओ; देखो, जल्दी बुलाकर लाना!"

वह औरत मां की तरफ़ देखे बिना बाहर चली गयी। मां उस आदमी के सामने एक बेंच पर बैठ गयी और कनखियों से चारों तरफ़ देखने लगी। उसका सूटकेस कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। झोपड़ी में एक भयावह निस्तब्धता छायी हुई थी जो बीच-बीच में बस लैम्प के भड़क उठने से कभी-कभी भंग हो जाती थी। उस किसान की चिन्तित और विचारग्रस्त मुद्रा को देखकर मां को उलझन हो रही थी। उसका चेहरा बार-बार उसकी आंखों के सामने घूम जाता था।

"मेरा सूटकेस कहां है?" उसने सहसा पूछा और अपने इस प्रश्न पर स्वयं ही घबरा उठी।

किसान ने अपने कंधे बिचका दिये।

"खोयेगा नहीं," उसने उत्तर दिया और फिर धीमे स्वर में बोला, "वहां चौकी पर मैंने जानबूझकर यह कहा था कि वह हल्का है ताकि वह लड़की सुन ले। लेकिन वह ख़ाली नहीं है! वह तो बहुत भारी है!"

"तो क्या हुआ?" मां ने पूछा।

वह उठकर मां के पास आ गया।

"तुम उस आदमी को जानती हो?" उसने बहुत झुककर मां के कान में कहा।

"हां!" मां ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया, यद्यपि उसका यह प्रश्न सुनकर वह कुछ विस्मित ज़रूर हुई थी। ऐसा मालूम हुआ कि उसके इस एक शब्द ने हर चीज़ को अन्दर से आलोकित कर दिया हो और सारी चीज़ें स्पष्ट हो गयी हों। मां ने संतोष की सांस ली और बेंच पर जमकर बैठ गयी...

किसान दांत खोलकर मुस्करा दिया।

"मैं तो उसी वक़्त समझ गया था जब तुमने उसे इशारा किया था और उसने भी जवाब में इशारा किया था। मैंने उससे कान में पूछा

था : 'तुम बरामदे में खड़ी हुई उस औरत को पहचानते हो ? '"

"तो उसने क्या कहा ?" मां ने जल्दी से पूछा।

"उसने कहा – 'हमारे साथी बहुत हैं।' बहुत से साथी हैं, उसने कहा था ..."

किसान अपनी मेहमान की आंखों में आंखें डालकर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा।

"वह भी बड़ा जीवट का आदमी है ! .." उसने मुस्कराकर कहा, "और बहादुर भी है ... वह साफ़ कहता है कि हां, मैंने यह काम किया ! उसे चाहे जितना मारा-पीटा जाये, पर उसे जो कहना होता है उसे कहकर ही रहता है ..."

उसका क्षीण और संकोचपूर्ण स्वर, उसका अधूरा चेहरा और उसकी उदास बेझिझक आंखें – इन सब बातों से मां को धीरे-धीरे ढाढ़स बंधता गया। धीरे-धीरे भय और विस्मय के स्थान पर उसके हृदय में रीबिन के प्रति एक गहरी समवेदना जाग उठी।

"बदमाश ! निर्दयी !" उसने कटु रोष से कहा और रोने लगी।

किसान उदास होकर अपना सिर हिलाता हुआ वहां से हट गया।

"हाकिमों के इसी बर्ताव की वजह से लोग इन लोगों से प्यार करने लगे हैं !"

मां की तरफ़ मुड़कर उसने फिर धीरे से कहा :

"सुनो, उस सूटकेस में अख़बार हैं न ?"

"हां, हैं तो !" मां ने अपने आंसू पोंछते हुए सीधा-सा उत्तर दिया। "मैं उसी के पास ले जा रही थी।"

किसान के माथे पर बल पड़ गये। उसने अपनी दाढ़ी कसकर मुट्ठी में पकड़ ली और कोने में घूरने लगा।

"वे लोग हमें यहां लाकर अख़बार दे जाते थे और किताबें भी," उसने कुछ देर बाद कहा। "हम उस आदमी को जानते हैं ... हमने उसे देखा है !"

वह रुका और एक क्षण तक कुछ सोचता रहा।

"अब तुम क्या करोगी उसका – उस सूटकेस का ?" उसने पूछा।

"तुम्हारे पास छोड़ जाऊंगी !" मां ने चुनौती के भाव से उसकी तरफ़ देखकर कहा।

उसने न कोई आपत्ति की, न विस्मय ही प्रकट किया।

"अच्छी बात है," उसने कहा।

स्वीकृति में सिर हिलाकर वह मेज़ के पास जाकर बैठ गया और अपनी दाढ़ी में उंगलियां फेरने लगा।

रीबिन का ख़ून से लथपथ घायल चेहरा क्रूर आग्रह के साथ मां के मस्तिष्क में घूमता रहा और अन्य सभी विचारों को उसके मस्तिष्क से दूर करता रहा। अन्य सभी भावनाएं व्यथा और रोष के इस प्रवाह में डूब गयीं। मां अब न अपने सूटकेस के बारे में सोच सकती थी न किसी और बात के बारे में। उसके आंसू लगातार बह रहे थे, पर उसकी मुद्रा कठोर थी, उसने दृढ़ स्वर में कहा:

"जिस तरह वे लोगों को लूटते हैं और उनका अपमान करते हैं, भगवान उन्हें ग़ारत करेगा!"

"उनके पास ताक़त है!" किसान ने धीरे से उत्तर दिया। "वे बहुत ताक़तवर हैं!"

"कहां से मिलती है उन्हें यह ताक़त?" मां ने ग़ुस्से में आकर कहा। "हमीं लोगों से, आम लोगों से उन्हें यह ताक़त मिलती है – हर चीज़ हमारे ही दम से है!"

मां को किसान का उदार, पर रहस्यमय चेहरा देखकर झुंझलाहट हो रही थी।

"हां!" उसने सोचते हुए आवाज़ खींचकर कहा, "चक्र..."

सहसा उसके कान खड़े हुए और वह दरवाज़े की तरफ़ झुककर देखने लगा।

"वे आ रहे हैं," उसने कहा।

"कौन?"

"मालूम होता है हमारे दोस्त ही हैं..."

उसकी बीवी झोपड़ी में आयी। उसके पीछे एक और किसान था जिसने अपनी टोपी एक कोने में फेंकते हुए मालिक के पास आकर पूछा:

"क्या बात है?"

मालिक ने सिर हिला दिया।

"स्तेपान!" गृहिणी ने चूल्हे के पास ही खड़े-खड़े कहा। "यह इतनी दूर से आयी हैं, इन्हें भूख लगी होगी?"

"नहीं, बहन, भूख तो नहीं लगी है मुझे!" मां ने उत्तर दिया।

दूसरा किसान मां की तरफ़ मुड़ा।

"मैं अपना परिचय क़रा दूं," उसने जल्दी-जल्दी उखड़ी हुई

आवाज़ में कहा। "मेरा नाम प्योत्र येगोरोव रियाबीनिन है। लोगों ने मेरा नाम 'सुतारी' रख छोड़ा है। मैं थोड़ा-बहुत जानता हूं कि आप किस काम से यहां आयी हैं। मैं लिखना-पढ़ना भी जानता हूं, बिल्कुल जाहिल नहीं हूं!"

उसने बढ़कर मां का अपनी ओर बढ़ा हुआ हाथ पकड़ लिया।

"देखो, स्तेपान," उसने मालिक से कहा, "मेरा ख़्याल है कि वरवारा निकोलायेवना यों तो बहुत भली महिला है मगर वह कहती है कि यह काम बहुत बेवक़ूफ़ी और पागलपन का है। वह कहती है कि नौजवान और छात्र आम लोगों के दिमाग़ों में न जाने कैसी-कैसी बातें ठूंस रहे हैं। लेकिन हम और तुम तो इस बात को जानते हैं कि उन्होंने आज एक ऐसे आदमी को गिरफ़्तार किया जो सोलह आने किसान था, और अब इन्हें ही देख लो – अधेड़ उम्र की औरत और मैं समझता हूं पैसेवाले घर की भी नहीं हैं। नहीं हैं, न?"

वह बहुत जल्दी-जल्दी, मगर स्पष्ट स्वर में बोल रहा था। बीच में वह सांस लेने के लिए भी नहीं रुकता था। उसकी दाढ़ी झटके के साथ हिल रही थी और उसकी नज़रें मां के चेहरे तथा उसकी पूरी आकृति को ऊपर से नीचे तक देख रही थीं। उसके कपड़े फटे हुए और तार-तार थे, उसके बाल उलझे हुए थे, मानो वह अभी कहीं से लड़कर आया हो और अपनी विजय पर फूला न समा रहा हो। उसमें जो जोश था और वह अपनी बात जितने सीधे-सादे और निष्कपट भाव से कहता था, वह मां को अच्छा लगा। उसके प्रश्न का उत्तर देते समय मां उसकी ओर देखकर मुस्करा दी और वह एक बार फिर मां से हाथ मिलाकर ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"यह ईमानदारी का काम है – नेक काम है, स्तेपान," उसने कहा। "मैं न कहता था तुमसे कि यह जनता का अपना काम है? लेकिन वह कुलीन महिला – वह सच बात नहीं बताती, अगर वह सच-सच बता दे, तो उसे नुक़सान पहुंच सकता है। मैं उसकी बड़ी इज़्ज़त करता हूं, इसमें तो शक नहीं! वह बहुत नेक है और हमारी मदद करना चाहती है – बहुत थोड़ी-सी – लेकिन वहीं तक जहां तक उसे कोई नुक़सान न हो। लेकिन जो आम लोग होते हैं वे इस बात से डरे बिना कि उन्हें क्या नुक़सान पहुंचेगा, सीधे जान की बाज़ी लगाकर मैदान में कूद पड़ते हैं। फ़रक़ समझ में आता है तुम्हारी? वे कुछ भी करें, नुक़सान तो हमेशा उन्हीं को पहुंचता है। इसलिए उनके लिए क्या फ़रक़

पड़ता है? वे जिस रास्ते पर भी आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, उन्हें बस एक ही शब्द सुनने को मिलता है 'ठहरो!'"

"मैं समझता हूं!" स्तेपान ने सिर हिलाकर कहा और फिर बोला, "इन्हें अपने बक्से की बड़ी फ़िकर लगी है।"

प्योत्र ने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से मां की तरफ़ देखकर आंख मारी।

"घबराओ नहीं!" उसने मां को आश्वस्त करते हुए कहा। "मां, सब ठीक हो जायेगा! तुम्हारा सूटकेस मेरे घर पर है। आज जब इसने मुझे तुम्हारे बारे में बताया कि तुम भी इसी काम में हो और उस आदमी को जानती हो, तो मैंने उससे कहा, 'स्तेपान, देखो होशियार रहना! अगर ऐसी बात है, तो हमें ज़रा भी चूक नहीं करनी चाहिये!' लेकिन जब हम लोग वहां तुम्हारे पास खड़े थे, तब शायद तुम भी समझ गयी थीं कि हम कौन लोग हैं। ईमानदार आदमी सूरत से पहचाना जाता है—सच तो यह है कि ईमानदार आदमी मिलते ही कितने हैं! सूटकेस मेरे घर पर है..."

वह मां के पास आकर बैठ गया और प्रश्न-भरी दृष्टि से उसे देखने लगा:

"उस सूटकेस में जो कुछ भरा है, अगर तुम उससे पिंड छुड़ाना चाहो, तो हम लोग बड़ी खुशी से तुम्हारी मदद कर सकते हैं! हमें किताबों की बड़ी ज़रूरत है..."

"यह तो सब कुछ हमारे पास ही छोड़ जाना चाहती हैं!" स्तेपान ने कहा।

"यह तो बड़ी अच्छी बात है, मां! हम सब चीज़ें रखने का इंतज़ाम कर लेंगे!.."

धीरे से हंसकर वह उछलकर खड़ा हो गया और टहलने लगा।

"हम लोग भी तक़दीर के सिकन्दर हैं! लेकिन इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं है—रस्सी एक जगह से टूटी, तो दूसरी जगह से जुड़ गयी! मां, अखबार बहुत अच्छा है, उससे बहुत फ़ायदा हो रहा है, लोगों की आंखों पर से पट्टियां खुलती जा रही हैं! जो पैसेवाले लोग हैं वे तो उसे बहुत अच्छा नहीं समझते। मैं यहां से कोई चार-पांच मील दूर पर एक कुलीन महिला के यहां बढ़ई का काम करता हूं। वैसे वह बहुत भली औरत है—हम लोगों को किताबें वग़ैरह पढ़ने के लिए देती है। उन किताबों में कभी-कभी सचमुच ऐसी बातें मिल जाती हैं कि पढ़कर आंखें खुल जाती हैं! हम लोग उसका बड़ा एहसान मानते

हैं। लेकिन एक बार मैंने उसे यह अखबार दिखाया था। आपसे क्या बताऊं कि इस अखबार को देखते ही उस पर क्या असर हुआ। वह बोली, 'प्योत्र, ये सब चीज़ें न पढ़ा करो! नासमझ लड़कों का एक गिरोह है जो ऐसी बेवक़ूफ़ी की बातें लिखता है। ये सब चीज़ें पढ़कर तुम मुसीबत में फंस जाओगे – जेल में बंद कर दिये जाओगे, साइबेरिया भेज दिये जाओगे...' वह यह कहती थी।"

वह फिर अचानक खामोश हो गया और कुछ सोचने के बाद उसने पूछा :

"मां, आज वह आदमी जो था न – वह तुम्हारा कोई रिश्तेदार है?"

"नहीं!" मां ने उत्तर दिया।

प्योत्र चुपचाप हंसने लगा और इस तरह सिर हिलाने लगा मानो किसी बात पर बहुत प्रसन्न हो।

"रिश्तेदार तो नहीं है मगर मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूं और अपने भाई की तरह, बड़े भाई की तरह, उसकी इज़्ज़त करती हूं!" मां ने जल्दी से सफ़ाई देते हुए कहा मानो यह कहकर कि वह रीबिन की रिश्तेदार नहीं थी उसने कोई भूल की हो।

उसे अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए उचित शब्द नहीं मिल रहे थे और इस बात से उसे इतना कष्ट हुआ कि वह फिर रोने लगी। झोपड़ी में एक घुटन और आशंकापूर्ण निस्तब्धता छा गयी। प्योत्र सिर झुकाये खड़ा था मानो कुछ सुन रहा हो। स्तेपान मेज़ पर कुहनियां रखे बैठा था और कुछ घबराहट के कारण उंगलियों से मेज़ पर तबला बजा रहा था। उसकी पत्नी चूल्हे का सहारा लिये खड़ी थी। मां को ऐसा आभास हुआ कि वह औरत एकटक उसे घूर रही है। मां स्वयं भी कभी-कभी कनखियों से उस औरत की सूरत देख लेती थी। उसका चेहरा लम्बोतरा और रंग सांवला था, नाक सीधी और ठोड़ी बहुत ठोस बनावट की थी। उसकी कंजी आंखों में चपलता थी और वे आंखें हर चीज़ को बड़े ध्यान से देखती थीं।

"तो वह तुम्हारा दोस्त था!" प्योत्र ने कुछ सोचते हुए कहा। "वह अपनी अक़ल से काम लेता है, सचमुच! .. अपनी क़दर पहचानता है, और क्यों न पहचाने! क्या आदमी है, तत्याना? और तुम कहती हो..."

"क्या उसकी शादी हो गयी है?" तत्याना ने अपने छोटे-से मुंह

के होंट भींचकर उसकी बात काटते हुए पूछा।

"शादी हुई थी, बीवी मर गयी!" मां ने उदास स्वर में उत्तर दिया।

"इसी लिए इतना बहादुर है!" तत्याना ने भारी गूंजती हुई आवाज़ में कहा। "बीवी-बच्चोंवाला कोई आदमी यह रास्ता नहीं अपनायेगा – उसे डर लगेगा..."

"और मैं जो हूं?" प्योत्र ने ऊंचे स्वर में कहा। "क्या मेरी शादी नहीं हुई?"

"चिः चिः, भैया, तुम करते ही क्या हो!" उस औरत ने प्योत्र की तरफ़ से नज़रें फेरकर एक व्यंगपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा। "बस, बातें बघारते हो, कभी-कभार एकाध किताब पढ़ ली। तुम और स्तेपान जो कोने में बैठे खुसुर-पुसुर किया करते हो उससे किसी का क्या फ़ायदा होता है?"

"मेरी बातें बहुत-से लोग सुनते हैं!" तत्याना के इस तिरस्कार पर तिलमिलाकर उस किसान ने प्रतिरोध करते हुए कहा। "तुम ऐसे समझ लो कि मैं यहां ख़मीर का काम कर रहा हूं। तुम्हें ऐसी बात नहीं कहना चाहिये..."

स्तेपान ने बिना कुछ कहे अपनी बीवी की तरफ़ देखा और फिर सिर झुका लिया।

"आख़िर किसान शादी करता ही क्यों है?" तत्याना ने पूछा। "इसी लिए न कि उसे अपना काम कराने के लिए एक औरत की ज़रूरत होती है? मैं पूछती हूं, कौन-सा काम?"

"तुम्हारे पास क्या करने को काफ़ी काम नहीं है?" स्तेपान ने मुरझाये हुए स्वर में कहा।

"इस काम को करने में क्या तुक है? आधा पेट खाकर खाकर ज़िंदगी के दिन काटते रहने से आख़िर क्या फ़ायदा? अगर बच्चे हों तो इस सब काम-काज के चक्कर में उन्हें देखने-भालने का भी वक़्त नहीं मिलता और तिस पर भी पेट-भर खाने को नहीं मिलता।"

वह मां के पास जाकर उसके बग़ल में बैठ गयी और बातें करती रही। उसकी बातों में न शिकायत थी न उदासी...

"मेरे दो बच्चे हुए। एक तो जब दो बरस का था तभी जलकर मर गया और दूसरा पैदा ही हुआ मरा हुआ, और यह सब कुछ इस मनहूस काम की वजह से हुआ! मुझे इससे भला कोई सुख मिला? मैं

तो कहती हूं कि किसान को ब्याह करना ही नहीं चाहिये। वह बेकार में अपने हाथ-पांव बांध लेता है जबकि वह बड़ी आसानी से मनमानी ज़िंदगी बसर कर सकता है और अपनी ज़िंदगी को बेहतर बनाने के लिए लड़ सकता है। उस हालत में हर किसान उस आदमी की तरह सच्चाई की खोज में निकल सकता है! क्यों है न, मां? .."

"हां, है तो!" मां ने कहा। "है तो यही बात। वरना हम इस ज़िंदगी को बदलने की कोई उम्मीद नहीं रख सकते..."

"तुम्हारा घरवाला है?"

"मर गया। एक बेटा है..."

"तुम्हारे साथ ही रहता है?"

"जेल में है!" मां ने कहा।

आम तौर पर यही बात कहकर मां दुःखी हो जाया करती थी, पर इस समय उसके स्वर में गर्व की भावना भी थी।

"यह दूसरी बार जेल गया है। उसका क़ुसूर बस इतना है कि वह लोगों को सच्चाई की बातें बताता है... वह अभी नौजवान है, बहुत खूबसूरत और होशियार है! उसी ने तुम लोगों के लिए इस अखबार की बात सोची थी। उसी ने मिखाइलो इवानोविच को सही रास्ता दिखाया था, हालांकि मिखाइलो उमर में उससे दुगना है! जल्द ही उन लोगों पर मुक़द्दमा चलाया जायेगा और मेरे बेटे को साइबेरिया भेज दिया जायेगा। लेकिन वह वहां से भाग आयेगा और यहां आकर फिर अपना काम शुरू कर देगा..."

बोलते-बोलते मां की गर्व की भावना बढ़ती गयी और उसके सामने अपनी इस कहानी के नायक का चित्र इतना स्पष्ट हो गया और उसका वर्णन करने के लिए शब्द एक प्रबल प्रवाह की तरह इतनी तेज़ी से उसके होंटों पर आने लगे कि उसका दम घुटने सा लगा। मां के लिए यह आवश्यक हो गया था कि उस दिन के अंधकार को दूर करने के लिए, उस अंधकार को जिसकी अर्थहीन भयावहता और निर्लज्ज क्रूरता मां के सीने पर बोझ की तरह रखी हुई थी, वह उसके मुक़ाबले पर किसी आशाजनक और तर्कसंगत चीज़ को ला खड़ा करे। अपनी समृद्ध आत्मा की इस मांग को पूरा करने के लिए उसने सारी शुद्ध और उज्ज्वल वस्तुओं को बटोरकर एक प्रबल ज्योति का रूप दे दिया जिसके प्रकाश से स्वयं उसकी आंखें चकाचौंध होने लगीं...

"उसके जैसे और भी बहुत से लोग हैं और हर रोज़ नये लोग

पैदा होते जाते हैं और ये लोग ज़िंदगी भर सच्चाई और आज़ादी के लिए लड़ते जायेंगे ..."

मां ने सतर्कता तजकर बिना किसी का नाम लिये जो कुछ उसे मालूम था सब बता दिया कि जनता को उत्पीड़न से मुक्त कराने के लिए क्या गुप्त काम हो रहा था। उन लोगों की चर्चा करते समय जो उसे बहुत प्रिय थे, वह अपने शब्दों में उस प्रेम की सारी शक्ति और प्रचुरता उंडेले दे रही थी जो जीवन के उतार-चढ़ावों के कारण इतनी देर में जाकर प्रस्फुटित हुआ था। और उसकी कल्पना में जिन लोगों के चित्र उभर रहे थे उन्हें वह स्वयं भी बहुत पुलकित होकर देख रही थी, उसकी भावनाओं ने उन्हें और भी प्रतिभामय और गौरवशाली बना दिया था।

"और यह काम सारी पृथ्वी पर, शहर-शहर में हो रहा है। ईमानदार लोगों की ताक़त की कोई हद नहीं है और उनकी यह ताक़त दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और उस वक्त तक बढ़ती ही जायेगी, जब तक हमारी जीत न हो जाये ..."

उसके स्वर में एक सुगम प्रवाह था और उसे शब्द ढूंढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हो रही थी, अपने हृदय से उस दिन के रक्त और गंदगी के हर चिन्ह को मिटा देने की इच्छा के मज़बूत धागे पर वह इन शब्दों को रंगीन मोतियों की तरह पिरोती जा रही थी। वह देख रही थी कि इन किसानों पर उसकी बातों का प्रभाव हो रहा था, वे उसके चेहरे पर अपनी नज़रें जमाये चुपचाप बैठे थे। मां को अपने पास बैठी हुई औरत की सांस लेने की झटकेदार आवाज़ सुनायी दे रही थी। और इससे उन बातों के प्रति उसका अपना विश्वास भी बढ़ता गया जो वह उन लोगों से कह रही थी और जिनका वह उन लोगों को यक़ीन दिला रही थी ...

"वे सब लोग जो मुसीबत की ज़िंदगी बिताते हैं, मुफ़लिसी और अन्याय ने जिनकी कमर तोड़ दी है, वे सब लोग जिन्हें अमीर लोगों ने और उनके ताबेदारों ने बेरहमी से कुचलकर रख दिया है – इन सबको उन लोगों का साथ देना चाहिये जो जेलों में सड़ते रहते हैं और जिन्हें अपने भाइयों की खातिर तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं। अपने बारे में सोचे बिना वे सभी लोगों के सुख का रास्ता बताते हैं, वे धोखा देने की कोशिश नहीं करते, साफ़ कहते हैं कि रास्ता कठिन है और वे किसी को इस रास्ते पर चलने पर मजबूर नहीं करते। लेकिन जो

आदमी भी एक बार उनका साथ पकड़ लेता है वह उन्हें कभी छोड़ नहीं सकता, क्योंकि वह देखता है कि यही रास्ता ठीक है – इस रास्ते के अलावा कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं!"

मां को इस बात से रोमांच हो रहा था कि वह इस समय ऐसा काम कर रही थी जिसकी लालसा बहुत समय से उसके मन में थी। वह स्वयं लोगों को सच्चाई की बातें बता रही थी!

"ऐसे लोगों के पीछे चलने में कोई ख़तरा नहीं है। वे थोड़ी-बहुत सफ़वाले जीव नहीं हैं। जब तक वे हर धोखेबाज़ी, हर लालच और हर बदी को जड़ से नहीं उखाड़ फेंकेंगे, तब तक वे दम नहीं लेंगे। वे अपने हाथ उस समय तक नहीं रोकेंगे, जब तक सब लोग मिलकर एक आवाज़ से यह न पुकार उठें, 'मैं मालिक हूं! मैं ख़ुद वे क़ानून बनाऊंगा जो सब के लिए एक जैसे होंगे! ..'"

सहसा उसे थकन सी महसूस होने लग़ी। उसने बोलना बंद करके अपने श्रोताओं पर एक नज़र डाली, उसे यह जानकर ख़ुशी हो रही थी कि उसने जो कुछ कहा था वह बेकार नहीं गया था। दोनों किसान बड़ी उत्सुकता से उसे देखते रहे। प्योत्र अपने सीने पर दोनों हाथ बांधे, आंखें सिकोड़े बैठा था, उसके होंटों पर मुस्कराहट खेल रही थी। स्तेपान मेज़ पर कुहनी टिकाये अपने पूरे शरीर का बोझ देकर इस तरह आगे झुका हुआ था, मानो अभी तक मां की बातें सुन रहा हो। उसके मुंह पर साया पड़ रहा था और शायद इसी लिए उसकी आकृति अब अधिक पूर्ण मालूम हो रही थी। उसकी पत्नी जो मां के बग़ल में बैठी थी, घुटनों पर कुहनियां टिकाये फ़र्श को ग़ौर से देख रही थी।

"यही तो बात है!" प्योत्र ने बहुत धीमे स्वर में कहा और धम से बेंच पर बैठ गया।

स्तेपान तनकर बैठ गया और बीवी की तरफ़ देखकर उसने अपनी बांहें इस तरह फैलायीं मानो वह वहां बैठे हुए तमाम लोगों को सीने से लगाना चाहता हो ...

"हां, यह बात तो है कि अगर एक बार इस काम में हाथ डाला," उसने बहुत विचारपूर्वक कहना शुरू किया, "तो फिर तो तन-मन से इसी में जुट जाना पड़ता है ..."

"पीछे लौटने का कोई सवाल ही नहीं!" प्योत्र ने कुछ झिझकते हुए कहा।

"ऐसा लगता है कि बहुत-से लोग इस काम में हाथ डालते हैं!" रीगान ने कहा।

"सारी दुनिया इसी की तरफ़ खिंचकर आती है!" प्योत्र ने कहा।

१८

मां दीवार का सहारा लेकर बैठ गयी और सिर पीछे टिकाकर सुनने लगी कि वे लोग किस प्रकार शान्त स्वर में विभिन्न विषयों पर अपना मत प्रकट कर रहे थे। तत्याना ने उठकर चारों तरफ़ नज़र डाली और फिर बैठ गयी। किसानों की ओर तिरस्कार तथा घृणा से देखते उसकी कंजी आंखों में एक क्रूर चमक थी। सहसा वह मां की ओर मुड़ी।

"तुमने तो अपनी ज़िंदगी में बहुत मुसीबत झेली होगी?" उसने कहा।

"हां, झेली तो है!" मां ने उत्तर दिया।

"तुम्हें बातें करते सुनना मुझे अच्छा लगता है – तुम्हारी बातों से दिल के तार झनझना उठते हैं। जब मैं तुम्हें बातें करते हुए सुनती हूं तो सोचने लगती हूं – हे भगवान, जैसे लोगों की तुम बातें करती हो अगर मैं ऐसे लोगों का दर्शन भी कर पाती तो मैं अपना सब कुछ न्योछावर कर देती! क्योंकि वही तो सच्चा जीवन है। हम अपनी ज़िंदगी में क्या देखते हैं? हम भेड़ों के गल्ले की तरह हैं, बस और कुछ नहीं! मुझे ही ले लो। मैं किताबें पढ़ती हूं और बहुत सोचती भी हूं – कभी-कभी तो मैं सोचने में इतना खो जाती हूं कि रात-रात भर मुझे नींद नहीं आती। लेकिन क्या फ़ायदा इससे? अगर मैं सोचना बंद कर दूं, तो मेरा जीवन यों ही व्यर्थ हो जायेगा और अगर मैं सोचती भी रहूं, तो वह भी बेकार है।"

उसकी आंखों में व्यंग था और कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता था कि वह अपने शब्दों को इतने झटके से तोड़ देती है जैसे सुई से धागा तोड़ लिया गया हो। किसानों ने कुछ नहीं कहा। हवा खिड़की के शीशों को थपक रही थी, चिमनी में मरमर ध्वनि करती हुई घुस रही थी और छत के फूस पर से सरसराती हुई गुज़र रही थी। कहीं से कुत्ते के भूंकने की आवाज़ आयी। बीच-बीच में वर्षा की कोई बूंद

खिड़की से टकरा जाती थी। लैम्प की लौ कांपी और प्रायः बिल्कुल बुझ गयी, पर शीघ्र ही वह फिर संभल गयी और स्थिर होकर तेज़ी से जलने लगी।

"जब मैंने तुम्हारी बातें सुनीं, तो मैंने अपने मन में कहा: 'लोग इसी के लिए पैदा हुए थे!' और यह बड़ी अजीब बात है कि मुझे ऐसा लगा कि यह सब तो मैं पहले से जानती हूं! लेकिन मैंने ऐसी बातें पहले कभी नहीं सुनी थीं और मेरे दिमाग़ में कभी ऐसे विचार नहीं आये थे..."

"आओ, हम लोग कुछ खा लें, और देखो, तत्याना, बत्ती बुझा दो!" स्तेपान ने त्योरियों पर बल डालकर धीरे से कहा। "लोग देखेंगे, तो सोचेंगे कि चुमाकोव के घर में आज रोज़ से ज़्यादा देर तक बत्ती क्यों जल रही है। हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर इन पर आंच आ सकती है..."

तत्याना उठकर चूल्हे की तरफ़ चली गयी।

"हां भाई, आजकल फूंक-फूंककर क़दम रखना पड़ता है!" प्योत्र ने मुस्कराकर कहा। "जैसे ही इन अख़बारों की ख़बर लगेगी..."

"मुझे अपनी फ़िकर नहीं है। अगर मुझे गिरफ़्तार कर लेंगे, तो कोई ऐसा बहुत नुक़सान नहीं होगा!"

उसकी बीवी मेज़ के पास आकर बोली:

"ज़रा उठो तो..."

स्तेपान उठ खड़ा हुआ और तत्याना को मेज़ पर खाना लगाते देखता रहा।

"भाई, हमारे तुम्हारे जैसे लोग तो टके सैकड़ा मिलते हैं," उसने व्यंगपूर्वक मुस्कराकर कहा।

मां को उस पर तरस आ रहा था, वह उसे जितना देखती थी उतना ही वह अच्छा लगता था। इतनी बातें कर चुकने पर अब उसे ऐसा लग रहा था जैसे दिन-भर की गंदगी से वह पाक हो गयी हो; वह मन ही मन अपने आप पर ख़ुश थी और उसके हृदय में सबके लिए सद्भावनाएं थीं।

"हमारा दोस्त है ही कौन?" उस किसान ने निराशा-भरे स्वर में कहा। "हम लोग तो हमेशा रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए लड़ते रहते हैं..."

"तुम ग़लत कहते तो!" मां ने कहा। "तुम्हारा ख़ून चूसनेवाले

लोग तुम्हारा जो मोल लगायें उसे तुम क्यों स्वीकार करते हो? तुम्हें अपना मोल खुद आंकना चाहिये – मोल तो तुम्हारे गुणों का होता है। तुम्हारा मोल वह है जो तुम्हारे दोस्त आंकें, न कि वह जो तुम्हारे दुश्मन लगायें ..."

"लेकिन मैं जो तुमसे कहती हूं कि आम लोगों के दोस्त हैं ..."

"होंगे, मगर यहां तो नहीं हैं!" स्तेपान ने कुछ सोचते हुए कहा।

"यहां भी ढूंढ़ने की कोशिश क्यों नहीं करते?"

स्तेपान ने कुछ देर सोचकर उत्तर दिया:

"हुं! हां, मैं भी यही सोचता हूं कि हमें यही करना पड़ेगा ..."

"आ जाओ, खाना लग गया!" तत्याना ने कहा।

खाना खाते समय प्योत्र में जैसे दुबारा जान आ गयी। ऐसा प्रतीत होता था कि मां ने जो कुछ कहा था उससे वह बहुत प्रभावित हुआ था।

"मां, तुम बहुत सबेरे उठकर यहां से चली जाना ताकि कोई देख न पाये," उसने कहा। "सीधे शहर में न जाकर दूसरी चौकी तक चली जाना। घोड़ागाड़ी कर लेना ..."

"आखिर क्यों? मैं गाड़ी पर पहुंचा आऊंगा," स्तेपान ने कहा।

"नहीं, तुम न जाना! अगर उन लोगों ने तुमसे सवाल-जवाब किया, तो क्या होगा – 'वह रात यहां ठहरी थी?' – 'हां, ठहरी थी।' – 'अब कहां गयी?' – 'मैं उसे घोड़ागाड़ी की चौकी पर पहुंचा आया था।' – 'अच्छा, तो तुमने उसे यहां से भाग निकलने में मदद दी!' और फिर तुम जेल भेज दिये जाओगे। समझे? इतनी जल्दी जेल जाने से फ़ायदा भी क्या? हर चीज़ का वक्त होता है। जिसे कहते हैं कि ज़ार भी तभी मरेगा जब उसका वक्त आयेगा। अगर अकेली जायेंगी, तो यह होगा कि रात यहां ठहरी थीं, सबेरे किराये की घोड़ागाड़ी करके चली गयीं! बहुत-से लोग रात यहां बसर करते हैं, हमारा गांव बड़ी सड़क पर जो है ..."

"प्योत्र, तुम्हें इतना दब्बूपन किसने सिखाया है?" तत्याना ने व्यंग से कहा।

"बहन, आदमी को सभी कुछ जानना चाहिये – कब नरम पड़ जाये, कब अकड़ जाये!" प्योत्र ने अपने घुटने पर हाथ मारते हुए कहा। "याद है जब वगानोव के पास अख़बार पकड़ा गया था, तब

उसकी कैसी ठुकाई हुई थी? अब कोई लाख कोशिश करे, पर वह किताब को हाथ तक नहीं लगाने का। मगर मां तुम मुझ पर भरोसा रखो। मैं बड़ा चलता पुर्ज़ा हूं। मैं तुम्हारे सब अख़बार और पर्चे बांट दूंगा – जितने तुम कहोगी – और ठीक जगहों पर बांटूंगा। यह सही है कि हमारे यहां के ज़्यादातर लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं और फिर वे डरते भी हैं लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इंसान चारों तरफ़ से इतनी बुरी तरह घिर जाता है कि उसे आंखें खोलनी ही पड़ती हैं और सोचना पड़ता है कि आखिर इसका क्या इलाज किया जाये? इन पर्चों में साफ़-साफ़ लिखा होता है: सोचो! अपनी अक़ल इस्तेमाल करो! कुछ बेपढ़े-लिखे लोग ऐसे भी होते हैं जो पढ़े-लिखों से, और ख़ास तौर पर उन लोगों से जिनके पेट भरे होते हैं, ज़्यादा जानते हैं! मैं इधर के इलाक़े के कोने-कोने में घूमा-फिरा हूं और मैंने यहां की हर चीज़ देखी है! हम सब इंतज़ाम कर लेंगे, लेकिन हमें अपनी अक़ल से काम लेना पड़ेगा और होशियार रहना पड़ेगा, नहीं तो हम शुरू में ही पकड़ लिये जायेंगे। अफ़सरों को इस बात की भनक मिल गयी है कि किसान का रवैया अब उनकी तरफ़ दोस्ती का नहीं रह गया – उसने मुस्कराना छोड़ दिया है और अफ़सरों के लिए उसके दिल में ज़रा भी इज़्ज़त नहीं है। मालूम तो यही होता है कि वह हाकिमों से अपना नाता बिल्कुल तोड़ लेगा! अभी उसी दिन की बात है, यहां पास ही स्मोल्याकोवो नाम का एक गांव है; जब सरकारी अफ़सर वहां लगान वसूल करने गये, तो किसानों ने हाथ में लाठियां लेकर उनका स्वागत किया! थानेदार तो साफ़ कहता है, 'तो तुम लोग ज़ार के ख़िलाफ़ हो, क्यों बदमाशो?' वह यही चिल्लाता रहता है। स्पिवाकिन नाम के एक किसान ने तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया, 'तुम भी ज़ार के साथ जहन्नुम में जा! किस काम का वह ज़ार जो आपके तन के लत्ते तक छीन ले?..' मां, बात यहां तक बढ़ चुकी है! उन्होंने स्पिवाकिन को तो जेल में डाल दिया, लेकिन उसकी बातों को तो जेल में बंद नहीं किया जा सकता। बच्चे-बच्चे को याद है कि उसने क्या कहा था। उसके शब्द आज तक चिल्ला-चिल्लाकर हमसे कुछ कहते हैं!"

प्योत्र ने कुछ खाया नहीं, बस धीमी आवाज़ में जल्दी-जल्दी बोलता रहा और अपनी धूर्त्त, चमकदार काली आंखों से चारों तरफ़ देखता रहा, वह किसानों के जीवन के बारे में अपने अनुभव मां को इस प्रकार सुना रहा था मानो बटुवे में से सिक्के उंडेल रहा हो।

बीच में दो बार स्तेपान ने उसे टोककर कहा:

"कुछ खा लो..."

दोनों बार प्योत्र ने एक रोटी का टुकड़ा और चम्मच उठा लिया और ऐसे सरल प्रवाह के साथ अपनी कहानियां सुनाता रहा मानो कोई पक्षी चहक रहा हो। जब खाना ख़त्म हुआ, तो वह सहसा उछलकर खड़ा हो गया।

"मुझे अब घर चलना चाहिये! .. अच्छा मां, तो मैं चलता हूं!" उसने मां से हाथ मिलाते हुए कहा। "मुमकिन है अब हमारी मुलाक़ात कभी न हो, लेकिन मैं तुम्हें इतना बता दूं कि मैं बहुत ख़ुश हूं – इस बात पर कि तुमसे मिला और तुम्हारी बातें सुनीं! तुम्हारे उस सूटकेस में काग़ज़ों के अलावा और कुछ भी है? एक ऊनी शाल होगी? अच्छा, ऊनी शाल आ जायेगी। स्तेपान, याद रखना! मां, तुम्हारा सूटकेस अभी एक मिनट में आ जायेगा! आओ, स्तेपान, चलो! अच्छा, सलाम! .."

उनके चले जाने के बाद तिलचटों के इधर-उधर भागने की आवाज़ तक सुनायी देने लगी। हवा छत पर ज़न्नाटे के साथ चल रही थी और चिमनी में गरजती हुई घुस रही थी; पानी की फुहारें खिड़की के शीशों पर पड़ रही थीं। तत्याना ने आतिशदान के ऊपर मचान पर से गद्दे वग़ैरह उतारकर एक बेंच पर बिछा दिये और मां के लिए बिस्तर तैयार कर दिया।

"बड़ा तेज़ आदमी है!" मां ने कहा।

तत्याना ने त्योरियां चढ़ाकर मां की तरफ़ देखा:

"बस बकता ही बहुत है, लेकिन इससे फ़ायदा कुछ नहीं होता।"

"और तुम्हारा पति?" मां ने पूछा।

"वह ठीक है – बहुत भला आदमी है। शराब बिल्कुल नहीं पीता। हम दोनों की अच्छी निभती है। लेकिन बहुत कमज़ोर दिल का आदमी है..."

वह तनकर खड़ी हो गयी।

"अब हम लोग क्या करें?" उसने कुछ देर रुककर कहा। "क्या हमें बग़ावत नहीं करनी चाहिये? ज़रूर करनी चाहिये! हर आदमी यही सोच रहा है, लेकिन हर आदमी बस अपने मन में ही सोचता है। उन्हें अपने मन की बात ज़ोर से कहनी चाहिये... किसी को तो पहल करनी ही चाहिये..."

यह कहकर वह बेंच पर बैठ गयी।

"तुम कहती हो कि कुलीन लड़कियां भी यह काम करती हैं– मज़दूरों से मिलती हैं, उन्हें किताबें पढ़कर सुनाती हैं। क्या ऐसा नहीं है कि यह काम इन भले घर की लड़कियों के बस का नहीं है? क्या उन्हें डर नहीं लगता?" उसने मां से सहसा पूछा।

मां का उत्तर सुनकर तत्याना ने गहरी सांस ली और सिर झुकाकर नज़रें नीची कर लीं।

"मैंने एक किताब पढ़ी थी जिसमें ये शब्द आये थे–'व्यर्थ जीवन'। पढ़ते ही मैं इसका मतलब पूरी तरह समझ गयी! मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूं कि यह ज़िंदगी कैसी होती है–मतलब तो सब समझ में आ गया। मगर हर बात मेरे दिमाग़ में बिखरी-बिखरी-सी रही– जैसे बिना गड़रिये के भेड़ें हों... व्यर्थ जीवन इसी को कहते हैं। अगर मेरा बस चले, तो मैं ऐसी ज़िंदगी को छोड़कर भाग जाऊं और एक बार भी मुड़कर न देखूं। जब बातें समझ में आने लगती हैं, तो आदमी बहुत दु:खी हो जाता है!"

उसकी कंजी आंखों की शुष्क चमक में, उसके मुरझाये हुए चेहरे में मां को यह व्यथा दिखायी दे रही थी, उसके स्वर में इस व्यथा की गूंज सुनायी दे रही थी। मां उसे दिलासा देना चाहती थी।

"लेकिन, बहन, रास्ता तो तुमने देख लिया है..."

"इतना ही काफ़ी नहीं है। हमें आगे बढ़ने का तरीक़ा भी मालूम होना चाहिये!" तत्याना ने बात काटते हुए बहुत धीरे से कहा। "अच्छा, लो तुम्हारा बिस्तर तैयार हो गया!"

वह चूल्हे के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो गयी–गंभीर, निश्चल, विचारों में खोयी हुई। मां वही कपड़े पहने-पहने लेट गयी। थकन के मारे उसके शरीर में इतनी पीड़ा हो रही थी कि उसके मुंह से एक हल्की-सी कराह निकल गयी। तत्याना ने लैम्प बुझा दिया और जब झोपड़ी में अंधेरा छा गया, तो वह बहुत ही मंद सपाट स्वर में बोलने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसका स्वर अंधकार की निष्प्रभ मुखाकृति पर से कुछ पोंछे ले रहा है।

"तुम भी प्रार्थना नहीं करतीं। मैं भी ईश्वर में विश्वास नहीं रखती। चमत्कारों को भी नहीं मानती।"

मां ने करवट बदली। खिड़की में से अभेद्य अंधकार उसे घूर-घूरकर देख रहा था और हल्की-हल्की आवाज़ें, क्षीण से क्षीण आहटें निस्तब्धता

में रेंगती हुई आ रही थीं। उसने भयभीत स्वर में प्रायः बिल्कुल कान में चुपके से तत्याना का उत्तर दिया:

"जहां तक ईश्वर का सवाल है मैं ठीक से नहीं कह सकती। पर ईसा मसीह पर मेरा विश्वास है... मुझे उनके इन शब्दों पर विश्वास है: 'दूसरों को भी अपनी ही तरह प्यार करो!' मैं इस बात में यक़ीन रखती हूं!.."

तत्याना चुप रही। आतिशदान की काली पृष्ठभूमि पर मां को उसकी तनी हुई आकृति की धुंधली रूपरेखा दिखायी दे रही थी। वह निश्चल खड़ी थी। मां ने उदास होकर अपनी आंखें मूंद लीं।

सहसा उसने तत्याना को कठोर स्वर में कहते सुना:

"अपने बच्चों की मौत के लिए मैं ईश्वर या मनुष्य दोनों में से किसी को भी माफ़ नहीं कर सकती। कभी नहीं! .."

पेलागेया निलोवना अत्यन्त विचलित होकर उठ बैठी। तत्याना के शब्दों के पीछे जो वेदना छुपी हुई थी उसे मां की आत्मा भली भांति समझती थी।

"अभी तुम्हारी उमर ही क्या है, —और बच्चे हो जायेंगे," मां ने बड़ी ममता से कहा।

"अब नहीं होंगे!" तत्याना ने कुछ देर रुककर मंद स्वर में कहा। "मेरे शरीर में कोई बिगाड़ हो गया है। डाक्टर ने कहा है कि अब मेरे बच्चे नहीं हो सकते..."

एक चूहा भागता हुआ फ़र्श पर से गुज़रा। किसी चीज़ के टूटने की आवाज़ आयी। ध्वनि के अदृश्य वज्रपात से निस्तब्धता भंग हो गयी। छत पर मेंह की सरसर ध्वनि फिर सुनायी देने लगी, ऐसा मालूम होता था कि कोई घबराया हुआ अपनी पतली-पतली उंगलियों से छप्पर के फूस में कुछ ढूंढ़ रहा है। पानी टपकने की भयावह ध्वनि शरद रात्रि के मंद प्रवाह की सूचना दे रही थी...

मां को नींद आने लगी। ऊंघते-ऊंघते उसने बाहर और फिर ड्योढ़ी में किसी के भारी क़दमों की आहट सुनी। बड़ी सावधानी से किसी ने दरवाज़ा खोला।

"सो गयीं, तत्याना?" मर्दानी आवाज़ सुनायी दी।

"नहीं तो।"

"वह सो गयीं?"

"मेरे ख़्याल से सो ही गयीं।"

सहसा प्रकाश हुआ, कुछ देर के लिए ज्योति की लौ कांपी और फिर अंधकार में विलीन हो गयी। किसान ने मां के बिस्तर के पास जाकर उसके पैरों पर पड़ा हुआ कोट संभाल दिया। यह देखकर कि वह उसके आराम का कितना ध्यान रखता है मां का हृदय कृतज्ञता से भर उठा और उसने मुस्कराकर फिर आंखें बंद कर लीं। स्तेपान ने कुछ कहे बिना कपड़े बदले और चबूतरे पर जाकर लेट गया। चारों ओर फिर निस्तब्धता छा गयी।

मां चुपचाप लेटी बड़े ध्यान से इस स्वप्निल निस्तब्धता के आरोहावरोह को सुन रही थी; उसकी आंखों के आगे रीबिन का रक्त-रंजित चेहरा घूमने लगा...

चबूतरे पर कोई फुसफुसाया:

"कैसे-कैसे लोग इस काम में खिंचकर आते हैं? अधेड़ उमर के लोग जिन्होंने अपने जीवन-भर व्यथा के घूंट पिये हैं। इन लोगों को अब आराम से बैठना चाहिये, पर वे यह काम करते हैं! तुम नौजवान और होशियार हो – ओह, मेरे स्तेपान..."

"मुझे पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिये," किसान ने अपनी भारी गूंजदार आवाज़ में कहा।

"मैं यह बात पहले भी सुन चुकी हूं..."

वे दोनों एक मिनट तक चुप रहे, फिर स्तेपान कहने लगा:

"हमें काम इस तरह शुरू करना होगा: पहले किसानों से अलग-अलग बात करनी पड़ेगी – जैसे अलेक्सेई माकोव से। वह पढ़ना जानता है, उसके दिल में जोश है और वह हाकिमों से बहुत जला बैठा है। सेर्गेई शोरिन भी बहुत होशियार किसान है। क्नियाज़ेव भी ईमानदार है और बिल्कुल नहीं डरता। काम शुरू करने के लिए इतने लोग काफ़ी हैं! हमें ऐसे लोगों से मिलना होगा जिनके बारे में वह बता रही थीं। मैं एक कुल्हाड़ा लेकर शहर की तरफ़ जाऊंगा ताकि लोग यह समझें कि मैं लकड़ी चीरकर कुछ फ़ालतू पैसे कमाने जा रहा हूं। हमें सावधान रहना है। वह ठीक ही कहती थीं कि आदमी को अपना मोल ख़ुद आंकना चाहिये। आजवाले उस किसान को ही ले लो। अगर वह ईश्वर के सामने भी खड़ा होता, तो अपनी बात से रत्ती भर न हटता। और वह निकीता? उसने भी यह दिखा दिया कि उसके भी आत्मा है। उससे उतनी उम्मीद किसे थी?"

"वे किसी आदमी को तुम्हारे सामने पीटते हैं और तुम लोग

मुंह बाये खड़े देखते रहते हो..."

"बस, रहने दो! अरे, तुम्हें खुश होना चाहिये कि हम लोगों को उसे मारना नहीं पड़ा!"

वह बड़ी देर तक खुसुर-पुसुर करता रहा; कभी तो वह इतने धीमे स्वर में बोलने लगता कि मां एक शब्द भी न समझ पाती और कभी वह फिर भारी गूंजती हुई आवाज़ में बोलने लगता। बीच-बीच में उसकी बीवी उसे टोक देती:

"धीरे बोलो, नहीं तो वह जाग जायेंगी! .."

मां गहरी नींद में सो गयी। नींद एक घने बादल की तरह आकर उस पर छा गयी।

जब प्रभात का धुंधलका खिड़कियों में झांकने लगा, तो तत्याना ने मां को जगा दिया। गिरजाघर के घंटे की आवाज़ शीत निस्तब्ध वातावरण में हवा की लहरों पर तैरती हुई आ रही थी और अलसाये हुए स्वर में रात का पहरा समाप्त होने की सूचना दे रही थी।

"मैंने समोवार गरम कर दिया है, एक गिलास चाय पी लो; उठते ही चल पड़ीं तो सर्दी लग जायेगी..."

स्तेपान ने अपनी उलझी हुई दाढ़ी में कंघी करते हुए मां से उसका शहर का पता पूछा। मां ने देखा कि रात-भर आराम कर लेने से स्तेपान के चेहरे पर ताज़गी आ गयी थी – उसकी आकृति अब अधिक पूर्ण दिखायी दे रही थी। चाय पीते समय स्तेपान ने हंसकर कहा:

"यह भी कैसी अजीब बात हुई!"

"क्या?" तत्याना ने पूछा।

"हम लोगों की जान-पहचान हो जाना! और इतनी आसानी से..."

"हमारे काम में हर चीज़ में यही सादगी है," मां ने विचारमग्न होकर कहा।

मां को विदा करते हुए किसान दम्पति ने विशेष कुछ कहा तो नहीं, पर असंख्य छोटी-छोटी बातों से यह साबित कर दिया कि उन्हें मां की सुविधा का कितना ध्यान था।

गाड़ी में बैठकर मां सोचने लगी कि स्तेपान चूहों की तरह सतर्क रहकर चुपके-चुपके अपना काम करेगा और कभी थककर बैठेगा नहीं। उसकी पत्नी की शिकायतें हमेशा उसके कानों में गूंजती रहेंगी; उसकी कंजी आंखों में वह ज्वाला हमेशा सुलगती रहेगी और जब तक वह

जीवित रहेगी उसके हृदय से अपने मृत बच्चों के लिए एक मां की हिंसक पशुओं जैसी प्रतिरोधपूर्ण व्यथा कभी दूर न होगी।

उसे रीबिन की याद आयी – उसके घाव, उसका चेहरा, उसकी धधकती हुई आंखें और उसकी बातें। और इस पाशविकता के सम्मुख लाचारी की कटु भावना से उसका हृदय मसोस उठा। शहर तक की पूरी यात्रा के दौरान मिखाइलो की आकृति उस नीरस दिन की पृष्ठ-भूमि पर उसकी आंखों के सामने नाचती रही। मां ने देखा कि वह उसकी आंखों के सामने खड़ा था – हट्टा-कट्टा शरीर, काली दाढ़ी, फटी क़मीज़, बिखरे बाल और हाथ पीछे बंधे हुए। यह एक ऐसे व्यक्ति का चित्र था जिसके हृदय में क्रोध की ज्वाला धधक रही थी और जो उस सत्य पर पूरा विश्वास रखता था जिसका वह प्रचार करता था। मां इस पृथ्वी के असंख्य विपदाग्रस्त गांवों के बारे में सोचने लगी, उन लोगों के बारे में सोचने लगी जो मन ही मन पृथ्वी पर न्याय का राज्य स्थापित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे; वह उन हज़ारों लोगों के बारे में सोचने लगी जो अपने जीवन भर चुपचाप निरुद्देश्य भाव से और अपने जीवन में किसी सुधार की आशा के बिना काम करते रहते थे।

मां को ऐसा लगा कि जीवन दूर तक फैला हुआ एक ऐसा खेत है जिसे कभी जोता न गया हो और जो चुपचाप इस प्रतीक्षा में हो कि कोई आकर उसे जोते। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह स्वतंत्र ईमानदार लोगों से कह रहा हो:

"मुझ में सत्य और न्याय के बीज बोओ, और मैं तुम्हें तुम्हारे परिश्रम का सौगुना फल दूंगा!"

स्वयं अपने प्रयासों की सफलता को याद करके उसे हर्ष का रोमांच हुआ जिसे उसने विनम्रता के कारण दबा दिया।

१६

निकोलाई ने मां के लिए दरवाज़ा खोला; उसके कपड़े अस्त-व्यस्त दशा में थे और हाथ में एक किताब थी।

"इतनी जल्दी लौट आयीं?" उसने पुलकित स्वर में मां का स्वागत करते हुए कहा।

ऐनक के पीछे उसकी स्नेहपूर्ण आंखें झपकती रहीं। उसने मां का

कोट उतरवाया और बड़ी प्यार-भरी मुस्कराहट के साथ उसे घूरता रहा।

"कल रात हमारे घर की तलाशी ली गयी थी," निकोलाई ने कहा। "मुझे डर हुआ कि कहीं तुम्हें कुछ हो न गया हो। लेकिन उन लोगों ने मुझे गिरफ़्तार नहीं किया। अगर तुम गिरफ़्तार हो गयी होतीं, तो वे मुझे भी ज़रूर पकड़ ले जाते! .."

वह मां को खाने के कमरे में ले गया और सारी देर बातें करता रहा:

"ख़ैर, मुझे नौकरी से तो निकाल दिया ही जायेगा। लेकिन मुझे उसकी कोई परेशानी नहीं है। मैं इस काम से उकता गया हूं कि मेज़ पर बैठा-बैठा यह हिसाब लगाता रहूं कि कितने किसानों के पास घोड़े नहीं हैं!"

कमरा ऐसा लग रहा था मानो किसी दानव ने गुस्से में आकर घर की एक-एक दीवार हिला दी हो और हर चीज़ उलट-पुलट दी हो। फ़र्श पर तस्वीरें बिखरी पड़ी थीं, दीवार का काग़ज़ कई जगह से नोच लिया गया था और उसकी धज्जियां लटक रही थीं, एक जगह फ़र्श का तख़्ता उखाड़ लिया गया था; एक खिड़की की चौखट उखाड़ ली गयी थी और चूल्हे की राख फ़र्श पर बिखरी पड़ी थी। मां ने यह चिर-परिचित दृश्य देखकर सिर हिलाया और बड़े ध्यान से निकोलाई को देखने लगी मानो उसने उसमें कोई नया गुण देखा हो।

मेज़ पर ठंडा समोवार रखा हुआ था और चाय के बर्तन बिना धुले पड़े थे; पनीर और सासेज तश्तरी के बजाय काग़ज़ पर रखे हुए थे; मेज़पोश पर किताबें, रोटी और समोवार के लिए कोयले के टुकड़े पड़े थे। मां धीरे से हंसी और निकोलाई उदास होकर मुस्करा दिया।

"निलोवना, इस तमाम गड़बड़ में मेरा भी हाथ है, लेकिन कोई बात नहीं है! मैंने सोचा मुमकिन है वे लोग फिर आयें, इसलिए मैंने सफ़ाई नहीं की। हां, यह तो बताओ कि सफ़र कैसा कटा?"

यह प्रश्न मां के हृदय पर एक भारी बोझ की तरह गिरा। रीबिन की सूरत एक बार फिर उसकी नज़रों के सामने फिरने लगी; मां इस बात पर लज्जित थी कि उसने रीबिन के बारे में फ़ौरन क्यों नहीं बताया। आगे झुककर बैठते हुए उसने अपनी दास्तान शुरू की। वह अपनी भावनाओं को वश में रखने का प्रयत्न कर रही थी कि कहीं कोई बात कहने से छूट न जाये।

"वह गिरफ़्तार कर लिया गया..."

निकोलाई का चेहरा उतर गया।

"सच?"

मां ने इशारे से उसे ख़ामोश कर दिया और इस प्रकार अपना वृत्तान्त सुनाती रही मानो वह स्वयं साकार न्याय के सामने खड़ी हो और उस अत्याचार के विरुद्ध प्रतिरोध कर रही हो जो उसने एक मनुष्य के साथ होते देखा था। निकोलाई का चेहरा बिल्कुल पीला पड़ गया था और वह अपनी कुरसी पर पीछे सहारा लगाये बैठा होंट काट रहा था। उसने धीरे-धीरे अपनी ऐनक उतारकर मेज़ पर रख दी और अपने मुंह पर इस तरह हाथ फेरा मानो कोई अदृश्य मकड़ी का जाला पोंछ रहा हो। सहसा उसकी मुखाकृति की रेखाएं और स्पष्ट हो गयीं, उसके गालों की हड्डियां और उभर आयीं और उसके नथुने कांपने लगे। मां ने उसका ऐसा रूप पहले कभी नहीं देखा था, और इससे वह कुछ भयभीत हो गयी।

जब मां अपनी बात पूरी कर चुकी, तो निकोलाई उठा और दूर तक अपनी बंद मुट्ठियां जेब में डालकर इधर-उधर टहलने लगा।

"वह बहुत ही बड़ा आदमी होगा," उसने दांत भींचकर अस्फुट स्वर में कहा। "उसे जेल में बड़ी तकलीफ़ होगी; ऐसे लोगों पर यह वक़्त बहुत बुरा गुज़रता है!"

अपने आवेश को दबाये रखने के लिए वह अपनी मुट्ठियों को जेबों में और दूर तक ठूंसकर टहल रहा था; परन्तु मां को उसकी उद्विग्नता का पता था और स्वयं उसके हृदय में भी यही उद्विग्नता थी। निकोलाई ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं, यहां तक कि वे ख़ंजर की नोक जैसी दिखायी देने लगीं। कमरे में इधर से उधर टहलते हुए वह तिरस्कार और क्रोध से कहता गया:

"ज़रा सोचो तो, कितनी भयानक बात है! जनता पर अपना विनाशकारी प्रभुत्व बनाये रखने के लिए मुट्ठी-भर सिरफिरे मार-पीट करते हैं, जानें ले लेते हैं, सभी को कुचलते हैं। बर्बरता बढ़ती जाती है और निर्दयता का ही चारों तरफ़ राज है। ज़रा सोचो! कुछ लोग तो बिल्कुल जंगली जानवरों की तरह मनमानी करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे क़ानून की पकड़ से बाहर हैं। दूसरों को सताने में उन्हें मज़ा आता है। यह दासता से मुक्त हुए ग़ुलामों की अपनी दासता की भावनाओं और पाशविक इच्छाओं को तृप्त करने की इच्छा के

अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कुछ ऐसे हैं जिनकी मनोवृत्ति बदला लेने की इच्छा से विषाक्त है। कुछ लोग ऐसे हैं जो कोड़ों की मार खा-खाकर किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गये हैं। लोगों को भ्रष्ट किया जा रहा है, सारी जनता को!"

वह बोलते-बोलते रुका और उसने अपने दांत भींच लिये।

"इस जानवरों जैसी ज़िंदगी में लाख न चाहने पर भी आदमी जानवर हो जाता है!" उसने धीरे से कहा।

बड़ी कोशिश करके उसने अपनी भावनाओं को वश में किया और प्रायः बिल्कुल शान्त भाव से मां की तरफ़ देखा। मां रो रही थी, उसकी आंखों में एक अविचल ज्योति थी।

"लेकिन निलोवना, हमें देर नहीं करनी चाहिये! प्रिय साथी, हमें अपनी भावनाओं को वश में रखना होगा..."

एक उदास मुस्कराहट के साथ वह मां के पास गया और उसका हाथ थाम लिया:

"तुम्हारा सूटकेस कहां है?"

"रसोई में!"

"फाटक पर राजनीतिक पुलिस के आदमी तैनात हैं। हम उनकी नज़रें बचाकर इतना बहुत-सा सामान तो ले नहीं जा सकते और छुपाने की कोई जगह ही नहीं है। मेरा ख़्याल है कि वे आज रात फिर तलाशी लेंगे, इसलिए हमें कलेजे पर पत्थर रखकर हर चीज़ जला देनी होगी।"

"क्या जलाना है?" मां ने पूछा।

"तुम्हारे सूटकेस में जो कुछ भी है।"

यकायक मां की समझ में आया कि निकोलाई का इशारा किन चीज़ों की तरफ़ है; अपनी व्यथा के बावजूद वह गर्व की भावना से बरबस मुस्करा उठी।

"उसमें तो कुछ भी नहीं है—एक पर्चा भी नहीं है!" उसने कहा और निकोलाई को अपना सारा क़िस्सा सुनाने लगी। बातें करते हुए धीरे-धीरे उसके शरीर में जैसे फिर शक्ति लौटकर आने लगी। शुरू में तो निकोलाई बहुत चिन्तित भाव से माथे पर बल डाले सुनता रहा, पर शीघ्र ही चिन्ता की यह मुद्रा विस्मय में बदल गयी और आखिरकार उसने बहुत उत्साह से बात काटते हुए कहा:

"लेकिन यह तो कमाल हो गया! तुम्हारी तक़दीर ने भी कैसा साथ दिया! .."

उसने मां के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये।

"लोगों पर तुम्हारा जितना विश्वास है उसे देखकर बड़ी ख़ुशी होती है और मैं तुमसे इतना प्यार करता हूं – जैसे तुम मेरी अपनी मां हो! .."

मां उसे देखकर मुस्करा दी, उसे आश्चर्य हो रहा था कि सहसा वह इतना स्पष्ट और सप्राण क्यों हो गया था।

"आम तौर पर तो परिस्थिति बड़ी आशाजनक है!" उसने अपने हाथ रगड़ते हुए गद्गद् स्वर में कहा। "पिछले कुछ दिनों से मैं भी बड़े आनंद की ज़िंदगी गुज़ार रहा हूं – पढ़ता हूं और मज़दूरों से बात करता हूं और उनका अध्ययन करता हूं। मज़दूरों के साथ थोड़ी देर भी बैठ लेने के बाद दिल में एक अजीब शान्ति और उत्साह पैदा हो जाता है। निलोवना, बहुत शानदार होते हैं ये लोग! मेरा मतलब नौजवान मज़दूरों से है – इतने दृढ़ और इतने संवेदनशील और सीखने के लिए इतने उत्सुक कि क्या कहूं! उन्हें देखकर अनायास ही यह विचार पैदा होता है कि किसी दिन रूस संसार का सबसे लोकतांत्रिक देश बन जायेगा!"

वह बात करते-करते रुक गया और इस तरह अपना हाथ ऊपर उठा लिया मानो शपथ ले रहा हो।

"लेकिन साल-भर तक किताबें पढ़ते-पढ़ते और आंकड़ों का हिसाब लगाते-लगाते मैं सील गया हूं। लानत है! मैं मज़दूरों के बीच रहने का आदी हूं। उनके अलावा मैं जहां भी जाता हूं मुझे यही लगता है कि यहां मेरी जगह नहीं है – न जाने क्यों दिमाग़ में एक तनाव-सा रहता है, दिल पर एक बोझ-सा रखा रहता है। लेकिन अब मैं फिर स्वछंद मनुष्य की तरह रहूंगा। मैं अब हमेशा उन्हीं के साथ रहूंगा और उन्हीं के साथ काम करूंगा। समझीं तुम? मैं वहां रहूंगा जहां नये विचार पनपते हैं, मैं यौवनमय सृजनात्मक शक्ति के सम्मुख रहूंगा। कितनी साधारण और सुन्दर, कितनी भव्य और जीवनप्रद! इस वातावरण में मनुष्य फिर जवान हो जाता है, उसमें शक्ति आ जाती है। निलोवना, यह भरपूर ज़िंदगी का रास्ता है!"

वह जी खोलकर कुछ झेंपता हुआ हंस दिया। मां उसके उल्लास को समझ गयी और स्वयं भी उसी उल्लास का अनुभव करने लगी।

"और तुम? बस कमाल हो तुम तो!" निकोलाई ने प्रशंसा के भाव से कहा। "तुम लोगों का वर्णन कितने स्पष्ट रूप से करती

हो और कितनी अच्छी तरह समझती हो उन्हें! ..."

वह मां के पास आकर बैठ गया। पहले तो अपनी खिसियाहट को छुपाने के लिए वह उल्लास से खिला हुआ अपना चेहरा उसकी ओर से फेरे बैठा रहा, पर थोड़ी देर बाद मां की तरफ़ मुंह करके बैठ गया और उसके अनुभव का सरल तथा रोचक वृत्तान्त सुनने लगा।

"बाल-बाल बच गयीं!" उसने कहा। "तुम बड़ी आसानी से गिरफ़्तार की जा सकती थीं, लेकिन उसके बजाय! .. सचमुच, ऐसा मालूम होता है कि किसान जाग रहे हैं—और यह स्वाभाविक भी है! वह औरत—मैं भली भांति कल्पना कर सकता हूं कि वह कैसी होगी! .. हमें गांव में काम करने के लिए ख़ास लोगों को भेजना पड़ेगा। लोग! हमारे पास हैं कहां काम करनेवाले लोग... हमें सैकड़ों लोगों की ज़रूरत है..."

"काश, पावेल जेल से बाहर होता! और अन्द्रेई भी!" मां ने धीरे से कहा।

निकोलाई ने कनखियों से मां की तरफ़ देखा और आंखें नीची कर लीं।

"निलोवना, मेरे मुंह से यह बात सुनकर शायद तुम्हें तकलीफ़ हो, लेकिन मैं पावेल को बहुत अच्छी तरह जानता हूं। वह जेल से भागने पर कभी राज़ी न होगा! वह चाहता है कि उस पर मुक़द्दमा चलाया जाये। वह इस बात का मौक़ा चाहता है कि वह सब को जता दे कि वह क्या है, और वह ऐसा मौक़ा अपने हाथ से कभी नहीं जाने देगा। और जाने भी क्यों दे? वह साइबेरिया से भाग आयेगा।"

"ख़ैर, अपना भला-बुरा वही सबसे अच्छी तरह जानता है," मां ने आह भरकर कहा।

"काश, वह तुम्हारावाला किसान जल्दी ही यहां आ जाये," निकोलाई ने एक क्षण रुककर अपनी ऐनक के पीछे से घूरते हुए कहा। "हमें किसानों के लिए रीबिन के बारे में एक पर्चा तैयार करना चाहिये। इससे उसे तो कोई नुक़सान होगा नहीं, क्योंकि वह ख़ुद बहुत मुंहफट है। मैं आज ही लिख दूंगा और लूदमीला उसे आनन-फ़ानन छाप देगी... लेकिन पर्चे उन लोगों के पास तक पहुंचेंगे कैसे?"

"मैं ले जाऊंगी..."

"नहीं, तुम्हारा बहुत शुक्रिया!" निकोलाई ने जल्दी से कहा। "लेकिन क्या वेसोवश्चिकोव यह काम नहीं कर सकता?"

23-1065

“मैं उससे बात करके देखूंगी।”

“अच्छा, बात करना! और उसे सब कुछ अच्छी तरह समझा देना।”

“लेकिन मेरे लिए क्या काम है?”

“अरे, तुम्हारे लिए कोई न कोई काम निकल आयेगा!”

निकोलाई जाकर मेज़ के पास बैठ गया। मां कनखियों से उसे देखते हुए मेज़ साफ़ करती रही। मां ने देखा कि निकोलाई के हाथ में उसकी क़लम कांप रही थी। बीच-बीच में उसकी गर्दन फड़क उठती और जब वह अपनी गर्दन पीछे डालकर आंखें मूंद लेता, तो मां देखती कि उसकी ठोड़ी कांप रही है। इससे उसे बड़ी चिन्ता हुई।

“तैयार हो गया!” उसने आख़िरकार उठते हुए कहा। “लो यह काग़ज़ कहीं अपने कपड़ों में छुपा लो – लेकिन अगर पुलिस आयी, तो वे तुम्हारी भी तलाशी ज़रूर लेंगे।”

“भाड़ में जायें, तलाशी लेकर मेरा क्या बिगाड़ लेंगे!” मां ने निश्चल भाव से उत्तर दिया।

उसी दिन शाम को डाक्टर इवान दनीलोविच उनके घर आये।

“यकायक सरकारी अफ़सरों में इतनी खलबली क्यों मच गयी है?” उसने तेज़ी से कमरे में इधर से उधर टहलते हुए पूछा। “कल रात उन्होंने सात घरों की तलाशी ली थी। मेरा मरीज़ कहां गया, क्यों?”

“वह कल चला गया!” निकोलाई ने उत्तर दिया। “आज सनीचर है और वह अपने मंडल की पढ़ाई छोड़ना नहीं चाहता था...”

“यह तो सरासर बेवक़ूफ़ी है – सिर फटा हुआ है, मगर मंडल की पढ़ाई में जाना ज़रूरी है...”

“मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मैं उसे रोक न सका...”

“मुझे यक़ीन है कि उसने शेख़ी के मारे ही ऐसा किया। उसने अपने मन में कहा होगा, ‘देखते हो – ख़ून बहाकर भी...’” मां ने कहा।

डाक्टर ने जल्दी से मां पर दृष्टि डाली और बनावटी कठोरता की मुद्रा धारण करते हुए अपनी भवें सिकोड़ लीं।

“तुम भी कितनी सख़्तदिल हो...” उसने कहा।

“अच्छा इवान, तुम्हें यहां कोई काम तो है नहीं, और हमारे मेहमान

भी आते होंगे। तुम जाओ! निलोवना, वह पर्चा इन्हें दे दो..."

"एक और पर्चा?" डाक्टर ने विस्मय से कहा।

"हां, ले जाकर छापेखाने में दे दो।"

"अच्छा भाई, ले लिया और दे आऊंगा। और कुछ?"

"बस, और कुछ नहीं। फाटक पर जासूस खड़ा है।"

"मैंने देखा था उसे। एक मेरे घर के दरवाज़े पर भी खड़ा है। अच्छा, तो मैं चला। निर्दयी औरत, तुम्हें भी सलाम। हां, दोस्तो, वह क़ब्रिस्तान की लड़ाई बहुत काम की साबित हुई! सारे शहर में उसकी चर्चा हो रही है। तुमने जो पर्चा लिखा था वह बहुत अच्छा था और निकला भी वह ठीक वक़्त पर। मैं तो हमेशा कहता हूं कि अच्छी लड़ाई बुरी शान्ति से बेहतर होती है..."

"अच्छा, अब तुम जाओ..."

"अच्छी आवभगत की तुमने हमारी आज! निलोवना, लाओ हाथ मिला लें! उस लड़के ने यहां से जाकर बड़ी बेवक़ूफ़ी की। तुम्हें कुछ मालूम है कि वह कहां रहता है?"

निकोलाई ने उसे उसका पता बता दिया।

"मैं कल उसे देखने जाऊंगा। बड़ा अच्छा बच्चा है, है न?"

"बहुत..."

"हमें उसकी देखभाल करनी चाहिये। बड़ा होनहार लड़का है!" डाक्टर ने बाहर निकलते हुए कहा। "ऐसे ही लोग हैं जिनसे हमें सर्वहारा बुद्धिजीवियों का निर्माण करना चाहिये ताकि जब हम लोग उस लोक के लिए कूच करें जहां मेरे विचार में कोई वर्गभेद नहीं है, तो वे हमारी जगह ले सकें..."

"इवान, तुम इधर कुछ दिनों से बहुत बातें करने लगे हो..."

"इसकी वजह यह है कि मैं आजकल बड़े जोश में हूं। तो तुम जेल जाने की तैयारी कर रहे हो? चलो, आराम करने को मिलेगा।"

"शुक्रिया, मगर मैं थका हुआ नहीं हूं।"

मां इस बात पर बहुत प्रसन्न थी कि इन लोगों को एक मज़दूर का कितना ध्यान था।

डाक्टर के चले जाने के बाद मां और निकोलाई खाना खाने बैठे। अपने रात्रिकालीन अतिथियों की प्रतीक्षा में वे दोनों बहुत चुपके-चुपके

बातें कर रहे थे। निकोलाई ने मां को निर्वासन में अपने साथियों के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं और उन लोगों के बारे में भी जो वहां से भाग आये थे और अपना नाम बदलकर अब भी काम कर रहे थे। सूनी दीवारों से टकराकर उसके शब्द इस प्रकार लौट रहे थे मानो संसार को बदलने के महान ध्येय के लिए अपने आपको बलि चढ़ा देनेवाले इन विनम्र सूरमाओं के बारे में उसके क़िस्से अविश्वसनीय हों। मां पर ममता की भावना छा गयी और उसका हृदय इन अज्ञात लोगों के प्रति प्रेम से भर उठा। उसकी कल्पना में इन सब लोगों ने मिलकर एक महान निर्भीक व्यक्ति का रूप धारण कर लिया जो धीरे-धीरे पर दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा था और झूठ की युगों पुरानी तह को हटा रहा था ताकि लोग जीवन के सरल और स्पष्ट सत्य को देख सकें। और जब इस महान सत्य का पुनर्जन्म होगा, तो वह सब लोगों को एक कर देगा और उन्हें लोभ, घृणा और झूठ के तीन पिशाचों से मुक्ति दिला देगा जिन्होंने पूरे संसार को आतंकित कर रखा है और गुलाम बना रखा है... इस कल्पना से मां के हृदय में जो भावना जागृत हुई वह उल्लास और कृतज्ञता की उसी भावना जैसी थी जो वह किसी ऐसे दिन के अन्त पर, जो अन्य दिनों की अपेक्षा कम कष्टदायक रहा हो, देव-प्रतिमा के सामने घुटने टेकने पर अनुभव करती थी। अतीत के इन इने-गिने दिनों को वह भूल चुकी थी, परन्तु उन्होंने जो भावना जागृत की थी वह बढ़ते-बढ़ते और भी ज्योतिर्मय और उल्लासपूर्ण हो गयी थी; इस भावना की जड़ें उसकी आत्मा में गहराई तक जम गयी थीं और वह भावना एक सजीव वस्तु के रूप में प्रस्फुटित हो उठी थी।

"अभी तक पुलिस नहीं आयी!" निकोलाई ने सहसा चौंककर कहा।

"मैं कहती हूं भाड़ में जाये पुलिस!" मां ने उस पर एक सरसरी नज़र डालकर कहा।

"हां, भाड़ में जाये! लेकिन, निलोवना, अब तुम्हारा सोने का वक़्त हो गया है। तुम बहुत थक गयी होगी। तुम्हारे शरीर में भी कितना दम है! इतने ख़तरे और इतनी परेशानी से गुज़रने के बाद भी तुम्हें ज़रा भी फ़िक्र नहीं! लेकिन तुम्हारे बाल सफ़ेद हो चले हैं। अच्छा, अब जाकर थोड़ी देर सो लो।"

रसोई के दरवाज़े पर किसी के ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ सुनकर मां की आंख खुल गयी। जो कोई भी था वह बड़े धैर्य के साथ लगातार दरवाज़ा भड़भड़ाता रहा। अभी तक अंधेरा छाया हुआ था और इस प्रकार निरन्तर दरवाज़ा खटखटाने में भय की भावना मिली हुई थी। मां ने जल्दी से कंधे पर एक कपड़ा डाला और रसोई में जाकर दरवाज़े पर रुक गयी।

"कौन है?" उसने पूछा।

"मैं हूं!" किसी के अपरिचित स्वर में उत्तर मिला।

"कौन?"

"दरवाज़ा खोलिये!" उस व्यक्ति ने बड़े विनीत स्वर में कहा।

मां ने कुंडी खोलकर पांव से दरवाज़े को ठेल दिया। इगनात अन्दर आया।

"तो मैं ठीक जगह पर आ गया!" उसने खुश होकर ऊंचे स्वर में कहा।

वह कमर-कमर तक कीचड़ में सना हुआ था। उसका चेहरा विवर्ण और आंखें धंसी हुई थीं और घुंघराले बाल उसकी टोपी के नीचे से चारों तरफ़ निकले हुए थे।

"हम लोग मुसीबत में फंस गये हैं!" उसने दरवाज़ा बंद करते हुए चुपके से कहा।

"मुझे मालूम है..."

लड़के को यह सुनकर कुछ आश्चर्य हुआ।

"आपको कैसे मालूम हुआ?" लड़के ने अपनी आंखें झपकाते हुए कहा।

मां ने संक्षेप में उसे सारा क़िस्सा सुना दिया।

"क्या पुलिस तुम्हारे उन दो साथियों को भी पकड़ ले गयी?"

"नहीं, वे वहां नहीं थे। वे फ़ौज में भरती हो गये हैं, हाज़िरी देने गये थे! पांच आदमी गिरफ़्तार किये गये जिनमें चाचा मिखाइलो भी थे..."

उसने एक गहरी सांस ली और धीरे से हंसकर कहा:

"सिर्फ़ मैं बच गया। वे मुझे ढूंढ़ रहे होंगे।"

"तुम बचकर निकल कैसे आये?" मां ने पूछा। दूसरे कमरे

का दरवाज़ा धीरे से खुला।

"मैं?" इगनात ने बेंच पर बैठकर चारों ओर नज़र डालते हुए कहा। "उनके आने से कोई एक-दो मिनट पहले जंगल का रखवाला भागा-भागा आया और उसने हमारी खिड़की को खटखटाया। उसने चिल्लाकर कहा, 'होशियार रहना, पुलिस तुम्हारी तलाश में है...'"

वह चुपचाप हंस दिया और अपने कोट के दामन से मुंह पोंछने लगा।

"मगर चाचा मिखाइलो रत्ती-भर नहीं घबराये। उन्होंने मुझसे कहा, 'इगनात, तुम जल्दी से भागकर शहर चले जाओ! वह बूढ़ी औरत तुम्हें याद है न?' और बातें करते-करते वह काग़ज़ के एक पुर्ज़े पर कुछ लिखने लगे, फिर मुझसे बोले, 'लो, यह ले जाकर उसे दे आओ!' मैं जल्दी से झाड़ी में दुबक गया और पुलिसवालों की आहट सुनता रहा। बहुत-से सिपाही चारों तरफ़ से दबे पांव रेंगते हुए आ रहे थे, शैतान कहीं के! उन्होंने हमारे तारकोल के कारखाने को घेर लिया। मैं झाड़ियों में चुपचाप दुबका पड़ा रहा। वे मेरे पास से होकर गुज़र गये! फिर मैं उठा और अपनी पूरी शक्ति लगाकर तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ चल पड़ा! मुझे चलते-चलते पूरी दो रातें और एक दिन हो गया है, बीच में मैं कहीं रुका भी नहीं।"

मां ने देखा कि वह अपनी इस सफलता पर बहुत प्रसन्न है। उसकी बादामी रंग की आंखों से मुस्कराहट झांक रही थी और उसके भरे हुए लाल होंट फड़क रहे थे।

"मैं तुम्हारे लिए अभी चाय बनाये लाती हूं!" मां ने समोवार की तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

"रुक्क़ा तो लीजिये..."

बड़ी कठिनाई से इगनात ने अपना पांव उठाया और दर्द के मारे कराहते हुए बहुत मुंह बनाकर पांव बेंच पर रख लिया।

इतने में निकोलाई दरवाज़े पर आया।

"सलाम, कामरेड!" उसने अपनी आंखें सिकोड़कर कहा। "लाओ, मैं तुम्हारी मदद करूं।"

वह झुका और इगनात के पांव पर बंधे हुए गंदे चीथड़े खोलने लगा।

"नहीं, रहने दीजिये," लड़के ने अपना पांव खींचते हुए आश्चर्य से मां की ओर देखा।

"हमें इसके पांवों पर वोदका की मालिश करनी पड़ेगी," मां ने उसकी दृष्टि की ओर कोई ध्यान न देते हुए कहा।

"सो तो है!" निकोलाई ने उत्तर दिया।

इगनात कुछ खिसियाकर बुड़बुड़ाने लगा।

निकोलाई ने रुक्क़ा उठाकर उस भिंचे हुए बादामी काग़ज़ को सीधा किया और आंख के पास लाकर पढ़ने लगा :

"मां, हमारे काम से हाथ न खींच लेना और उस लंबे क़दवाली महिला से कह देना कि वह हम लोगों के बारे में पहले से भी ज़्यादा लिखा करे। अच्छा, विदा। रीबिन।"

निकोलाई ने अपना वह हाथ जिसमें पर्चा था नीचे कर लिया।

"कमाल है!.." उसने अस्फुट स्वर में कहा।

इगनात बैठा उन लोगों को देख रहा था और बड़ी सावधानी से अपने नंगे पांव की गंदी उंगलियां चिटका रहा था। मां ने अपनी आंखों के आंसू छिपाने का प्रयत्न करते हुए पानी का एक तसला लाकर उसके सामने रख दिया और घुटनों के बल बैठकर उसके पांव की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

"नहीं, नहीं, रहने दीजिये!" इगनात भयभीत होकर चिल्लाया और उसने अपना पांव बेंच के नीचे कर लिया।

"लाओ, जल्दी से अपना पांव इधर लाओ..."

"मैं स्पिरिट लिये आता हूं," निकोलाई ने कहा।

लड़के ने अपना पांव बेंच के और नीचे खींच लिया।

"क्या है, यह कोई अस्पताल है क्या?" लड़का बुड़बुड़ाया।

मां उसके दूसरे पांव पर बंधे हुए चीथड़े खोलने लगी।

इगनात ने ज़ोर से नाक सिकोड़ी और गर्दन मोड़-मोड़कर मां को देखता रहा।

"उन लोगों ने मिखाइलो इवानोविच को बहुत मारा," मां ने कांपते हुए स्वर में कहा।

"सच?" लड़के ने भयभीत होकर धीरे से पूछा।

"हां, जिस वक़्त पुलिसवाले उसे निकोल्स्कोये लाये उसी वक़्त उसकी हालत बहुत ख़राब थी और वहां पुलिस के सार्जेन्ट और थानेदार ने उसे बहुत मारा–मुंह पर मारा, ठोकरें मारीं, यहां तक कि उसका सारा शरीर ख़ून से लथपथ हो गया!"

"मारने में तो वे बहुत उस्ताद हैं!" लड़के ने भवें चढ़ाकर कहा। उसके कंधे फड़क उठे। "मुझे तो जितना डर पुलिसवालों से

लगता है उतना अगर हज़ार राक्षस भी आ जायें तो न लगे! क्या किसानों ने भी उसे मारा?"

"थानेदार के हुकुम पर एक किसान ने मारा था। लेकिन बाक़ी लोग ठीक थे। उन्होंने तो उसका पक्ष भी लिया – उन्होंने चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि पुलिस को मारने का कोई हक़ नहीं है..."

"हु:! तो किसान अब समझने लगे हैं कि कौन किसकी तरफ़ है और किसलिए।"

"उनमें भी कुछ लोग समझदार हैं..."

"समझदार लोग हर जगह हैं। मुफ़लिसी ने लोगों को इस हालत में पहुंचा दिया है! समझदार लोग हैं तो, लेकिन उन्हें ढूंढ़ना मुश्किल होता है।"

निकोलाई स्पिरिट की बोतल लेकर आया और समोवार में कोयले डालकर बिना कुछ कहे बाहर चला गया। इगनात उसे चुपचाप देखता रहा।

"यह साहब कौन हैं – डाक्टर हैं क्या?" निकोलाई के बाहर चले जाने के बाद उसने मां से पूछा।

"यहां साहब कोई नहीं है। हम सब कामरेड हैं..."

"बड़ी अजीब बात मालूम होती है यह तो मुझे!" इगनात ने कहा। उसकी मुस्कराहट में शंका और खिसियाहट झलक रही थी।

"क्या बात अजीब मालूम होती है?"

"सभी बातें आम तौर पर। एक तरफ़ तो वे लोग हैं जो हमारी नाक तोड़ देते हैं और दूसरी तरफ़ इन्हीं में ऐसे लोग हैं जो हमारे पैर तक धोने को तैयार हो जाते हैं। इन दोनों के बीच में क्या है?"

दरवाज़ा खुला और निकोलाई ने कहा:

"बीच में वे लोग हैं जो नाक तोड़नेवालों के तलवे चाटते हैं और जिन लोगों की नाकें टूटती हैं उनका ख़ून चूसते हैं। बस यही है बीच में!"

इगनात ने बड़े आदर से उसकी तरफ़ देखा और कुछ देर रुककर कहा:

"मेरे ख़्याल से यही सच बात है!"

लड़का उठा और पैर जमाकर दो-चार क़दम चला।

"बिल्कुल ठीक हो गये मेरे पैर!" उसने कहा। "धन्यवाद..."

फिर वे लोग चाय पीने के लिए खाने के कमरे में चले गये और

इगनात ने गहरे और गंभीर स्वर में बोलते हुए उन्हें अपने जीवन के बारे में बताया:

"मैं अपने लोगों का अखबार बांटा करता था – मैं चलने में बहुत होशियार हूं।"

"क्या गांव में बहुत-से लोग यह अखबार पढ़ते हैं?" निकोलाई ने पूछा।

"जितने लोग भी पढ़ना जानते हैं सब पढ़ते हैं, अमीर लोग भी पढ़ते हैं। यह बात ज़रूर है कि अमीरों को यह अखबार हमसे नहीं मिलता... वे लोग इतने चालाक तो हैं ही कि इस बात को समझ सकें कि किसान अपना खून बहाकर उनके पैरों तले की ज़मीन खिसका देगा। और ज्यों ही यह हो गया वे हर चीज़ आपस में बांट लेंगे, यहां तक कि न कोई ज़मींदार रह जायेगा न खेत-मज़दूर। यह बात तो साफ़ है! नहीं तो लड़ाई शुरू ही क्यों की जाये?"

ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो वह बुरा मान गया हो, वह निकोलाई को प्रश्न और संदेह-भरी दृष्टि से देख रहा था। निकोलाई मुस्करा दिया, कुछ बोला नहीं।

"अगर हम आज सारी दुनिया के खिलाफ़ लड़कर जीत जायें और कल फिर सारी दुनिया में अमीर और ग़रीब बाक़ी रहें, तो इस लड़ाई से फ़ायदा ही क्या होगा? नहीं, माफ़ कीजिये! आप हमें बेवकूफ़ नहीं बना सकते। माया आनी-जानी है – वह एक जगह पर नहीं टिकती, चारों ओर घूमती रहती है! नहीं, हमें यह नहीं चाहिये!"

"अच्छा, अच्छा, नाराज़ न हो!" मां ने हंसकर कहा।

"मुझे फ़िकर इस बात की है कि रीबिन की गिरफ़्तारी के बारे में जो पर्चा तैयार किया गया है उसे तुम्हारे लोगों के पास तक जल्दी से जल्दी कैसे पहुंचाया जाये," निकोलाई ने सोच में पड़कर कहा।

इगनात के कान खड़े हुए।

"क्या कोई पर्चा ऐसा तैयार किया गया है?" उसने पूछा।

"हां।"

"मुझे दे दीजिये, मैं ले जाऊंगा!" लड़के ने उत्साह से अपने हाथ रगड़ते हुए कहा।

मां उसकी ओर देखे बिना चुपचाप हंस दी और बोली:

"मगर तुम तो थके हुए हो और तुम कह रहे थे कि तुम्हें डर भी लगता है।"

"डर अलग बात है, काम अलग बात है!" उसने अपना पंजा फैलाकर घुंघराले बाल पीछे करते हुए दो-टूक बात कह दी। "आप हंस किस बात पर रही हैं? आप भी ख़ूब हैं!"

"नादान बच्चे!" मां को इस लड़के की बात से जो ख़ुशी हुई थी उसे बिना छिपाये उसने कहा।

"हुः – बच्चा!" उसने तुनककर कहा।

"तुम अब वहां वापस नहीं जाओगे," निकोलाई ने बड़े प्यार से उसकी तरफ़ एक आंख दबाकर देखते हुए कहा।

"क्यों नहीं? फिर मैं कहां जाऊंगा?" इगनात ने कुछ सिटपिटाकर पूछा।

"पर्चा लेकर कोई और चला जायेगा; तुम बस अच्छी तरह उसे इतना समझा देना कि वह कहां जाये और क्या करे, समझा दोगे?"

"अच्छी बात है!" इगनात ने निराश भाव से कहा।

"हम लोग तुम्हारे लिए नये शिनाख़्ती काग़ज़ बनवाकर तुम्हें जंगल के रखवाले का काम दिलवा देंगे।"

लड़के ने जल्दी से नज़रें ऊपर उठाकर देखा।

"अगर किसान लकड़ी चुराने आयेंगे, तो मैं क्या करूंगा – उन्हें पकड़ लूंगा? यह काम तो मुझसे नहीं होगा," उसने कुछ घबराकर कहा।

मां हंस दी और निकोलाई भी; लड़के को यह बुरा लगा और वह फिर कुछ खिसिया गया।

"तुम्हें किसानों को पकड़ना नहीं पड़ेगा," निकोलाई ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "तुम इसकी फ़िकर न करो! .."

"तो फिर ठीक है!" इगनात ने संतोष से मुस्कराते हुए कहा। "लेकिन मैं तो किसी कारख़ाने में काम करना चाहता हूं। सुना है कारख़ाने में काम करनेवाले बड़े होशियार होते हैं..."

मां उठकर खिड़की के पास चली गयी।

"ज़िंदगी भी अजीब है – छिन में हंसना छिन में रोना!" उसने विचारों में डूबकर कहा। "अच्छा, इगनात, तुम्हारा सब काम हो गया? अब सो जाओ..."

"मुझे नींद नहीं आ रही है..."

"आओ, आओ, सो जाओ..."

"आप तो बहुत सख़्त हैं, क्यों हैं न? अच्छा, आता हूं... चाय

के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ... और आपकी हर मेहरबानी के लिए ..."

मां के बिस्तर पर लेटकर वह अपना सिर खुजाकर मन ही मन बुड़बुड़ाने लगा :

"हर चीज़ में अब तारकोल की बदबू बस जायेगी ... इस सब झमेले की क्या ज़रूरत थी ... मुझे नींद आ ही नहीं रही है ... वह दोनों के बीचवाली बात उसने कितनी चालाकी से समझा दी थी ... शैतान कहीं के ..."

उसे पता भी नहीं चला कि कब नींद ने उसे आ दबोचा ; वह खर्राटे ले रहा था, उसका मुंह आधा खुला और भवें तनी हुई थीं।

२१

उसी रात को इगनात एक छोटे से तहखाने में वेसोवश्चिकोव के सामने बैठा बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से उससे कह रहा था :

"बीचवाली खिड़की पर चार बार ..."

"चार बार ?" निकोलाई ने उत्सुकता से पूछा।

"पहले तीन बार – इस तरह ! "

और इगनात ने मेज़ पर खटखटाकर बताया :

"एक, दो, तीन। फिर ज़रा रुककर एक बार और।"

"समझ गया।"

"एक लाल बालोंवाला किसान दरवाज़ा खोलेगा और पूछेगा : 'दाई को बुलाने आये हो ?' तुम जवाब दोगे : 'हां, मैं कारखानेदारिन की ओर से आया हूं !' बस, वह समझ जायेगा ! "

वे दोनों सिर जोड़े बैठे थे, दोनों ही हट्टे-कट्टे बलिष्ठ जवान थे। वे बहुत ही दबी ज़बान में बातें कर रहे थे, मां हाथ बांधे खड़ी उन्हें देख रही थी। इन रहस्यमय खटखटाहटों और संकेत-वाक्यों पर उसे हंसी आ रही थी।

"अभी बच्चे ही हैं," उसने अपने मन में सोचा।

दीवार पर एक लैम्प जल रहा था। उसका प्रकाश फ़र्श पर पड़ी हुई कुछ टूटी-फूटी बाल्टियों और लोहे की चादरों को आलोकित कर रहा था। कमरे में ज़ंग, रंग-रोग़न और सीलन की बू बसी हुई थी।

इगनात बहुत खुरदरे कपड़े का बना हुआ एक भारी-सा कोट पहने था। ऐसा लगता था कि यह कोट उसे बहुत पसंद था। मां ने उसे

बड़े चाव से अपनी आस्तीन पर हाथ फेरते और गर्दन मोड़कर कोट के कंधों का निरीक्षण करते हुए देख लिया।

"बिल्कुल बच्चे हैं!" मां ने सोचा। "मेरे प्यारे बच्चे..."

"बस, यही है!" इगनात ने उठते हुए कहा। "पहले मुरातोव के यहां जाकर नाना के बारे में पूछना मत भूलना..."

"नहीं भूलूंगा!" वेसोवश्चिकोव ने उत्तर दिया।

पर इगनात को संतोष नहीं हुआ और उसने चलते-चलते हाथ मिलाने से पहले एक बार फिर सारे इशारे और संकेत-वाक्य उसे समझाये।

"सब से मेरा सलाम कहना!" उसने कहा। "तुम देखोगे कि वे लोग बहुत ही अच्छे हैं..."

उसने सिर झुकाकर अपने कोट पर एक नज़र डाली और बहुत ख़ुश होकर उस पर हाथ फेरने लगा।

"अब मैं चलूं न?" उसने मां से पूछा।

"तुम्हें रास्ता मिल जायेगा?"

"क्यों नहीं! अच्छा, कामरेड, मैं चलता हूं, सलाम!"

यह कहकर वह कंधे ऊंचे किये, सीना ताने, अपनी नयी टोपी एक कान पर झुकाये और दोनों हाथ बड़े रोब से जेबों में डाले बाहर चला गया। उसकी कनपटियों के पास घुंघराले सुनहरे बालों की लटें झूल रही थीं।

"तो अब मुझे भी काम मिल गया!" वेसोवश्चिकोव ने धीरे से मां के पास आकर कहा। "मैं तो ख़ाली बैठे-बैठे उकता चला था और पछताता था कि मैं जेल से भागा ही क्यों? यहां मैं दिन-रात छुपे पड़े रहने के अलावा करता ही क्या हूं। वहां तो कुछ सीखता भी था। पावेल ने हमें अपनी अक़ल से काम लेना सिखा दिया था! निलोवना, उनके जेल से भागने के बारे में क्या तै हुआ?"

"मालूम नहीं!" मां ने अनायास ही आह भरकर कहा।

निकोलाई ज़ोर से अपना हाथ मां के कंधे पर रखकर उसकी तरफ़ झुक गया।

"उनको किसी तरह समझा-बुझाकर राज़ी कर लो," उसने कहा। "वे तुम्हारी बात मान जायेंगे – यह बहुत ही आसान काम है! देखो, यह जेलख़ाने की दीवार, उससे मिला हुआ यह सड़क की बत्ती का खंभा है; सड़क के पार ख़ाली जगह है, बायीं ओर क़ब्रिस्तान और

दाहिनी ओर सड़कें और इमारतें हैं। लैम्प साफ़ करनेवाला हर रोज़ आता है। एक दिन वह दीवार के सहारे सीढ़ी खड़ी कर देगा और ऊपर चढ़कर दीवार पर लगी हुई ईंटों में रस्सी की एक सीढ़ी फंसा देगा और उसे जेलखाने के आंगन में लटका देगा और बस – झटपट चलता बनेगा! अन्दर लोगों को मालूम ही होगा कि यह सब किस वक़्त होगा; वे फ़ौजदारी के क़ैदियों को भड़काकर उस वक़्त कोई हो-हल्ला करा दें या खुद ही कोई झगड़ा कर दें ताकि संतरी उसमें फंसे रहें और जिन्हें भागना है वे सीढ़ी पर चढ़ जायें। एक, दो, तीन – बस ख़त्म! सच कहता हूं बहुत आसान है!"

वह हाथ हिला-हिलाकर अपनी योजना समझा रहा था, मालूम होता था कि उसने इस योजना पर खूब सोच-विचार किया था और वह बहुत स्पष्ट और सरल प्रतीत होती थी। मां उसे हमेशा से बहुत बुद्धू और निकम्मा समझती आयी थी और मां को ऐसा लगता था कि वह हर चीज़ को संशय और गंभीर द्वेष की भावना से देखता है। परन्तु इस समय उसकी आंखें पहले जैसी नहीं थीं – मां को समझाते समय उन आंखों में उत्साह की चमक थी...

"असल बात यह है कि उन्हें यह सब दिन के समय करना चाहिये! .. दिन में, यह ख़्याल रहे। यह बात किसी के ध्यान में भी नहीं आयेगी कि दिन के समय जब जेलखाने के सारे संतरी चौकस रहते हैं कोई क़ैदी भागने की कोशिश करेगा..."

"वे गोली तो नहीं चलायेंगे?" मां ने भय से कांपकर पूछा।

"कौन? वहां सिपाही तो होते नहीं और जेलखाने के संतरी अपनी पिस्तौलों से सिर्फ़ कीलें ठोंकने का काम लेते हैं..."

"यह तो इतना आसान मालूम होता है कि यक़ीन नहीं आता..."

"तुम देख लेना। बस किसी तरह उन्हें समझा-बुझाकर राज़ी कर लो। मेरे पास हर चीज़ तैयार है – रस्सी की सीढ़ी, ऊपर के लिए कुंडा – और मेरा मकान-मालिक बत्ती जलानेवाला बनकर जायेगा..."

दरवाज़े की दूसरी तरफ़ कोई खांसा, और अपने पैर घसीटता हुआ जो चला, तो पुराने लोहे के ढेर से टकरा गया और बड़े ज़ोर की खड़बड़ हुई।

"यह वही है!" निकोलाई ने कहा।

दरवाज़े में एक टीन का नहाने का टब दिखायी दिया और किसी ने भर्रायी हुई आवाज़ में बुड़बुड़ाकर कहा:

"अबे शैतान के बच्चे, घुस भी जा अंदर..."

टब के ऊपर एक अत्यंत सहृदय व्यक्ति के चेहरे की झलक दिखायी दी: उसकी आंखें बाहर को निकली पड़ रही थीं और उसके सिर और मूंछों के बाल बिल्कुल सफ़ेद थे।

निकोलाई ने टब उठाने में उसे सहारा दिया। कमरे में एक लम्बे क़दवाले आदमी ने प्रवेश किया जिसकी कमर कुछ झुकी हुई थी। वह दमे के रोगियों की तरह अपने गाल फुलाकर, जिन पर दाढ़ी नहीं थी, ज़ोर से खांसा और बलग़म थूककर उसने भर्राये हुए स्वर में मां का अभिवादन किया।

"आप कुशल से हैं?"

"लो, इनसे पूछ लो!" निकोलाई ने जल्दी से कहा।

"क्या पूछ लें मुझसे?"

"वही भगाने के बारे में..."

"अच्छा!" मालिक ने अपनी मैली उंगलियां मूंछों पर फेरते हुए कहा।

"याकोव वासील्येविच, इन्हें यक़ीन ही नहीं आता कि यह काम इतना आसान है।"

"नहीं आता, क्यों नहीं आता? मेरे ख़्याल से तो यह यक़ीन करना ही नहीं चाहतीं। लेकिन मैं और तुम यक़ीन करना चाहते हैं इसलिए हमें यक़ीन आ जाता है!" मालिक ने शान्त भाव से कहा। सहसा वह कमर दोहरी करके फिर खांसने लगा। जब खांसी का दौरा ख़त्म हुआ, तो वह कुछ देर तक कमरे के बीच में खड़ा अपना सीना मलता रहा और आंखें फाड़कर मां को ध्यान से देखता रहा।

"इस बात का फ़ैसला पावेल और उसके साथी करेंगे," मां ने कहा।

निकोलाई ने सोच में सिर झुका लिया।

"यह पावेल कौन है?" मालिक ने बैठते हुए पूछा।

"मेरा बेटा।"

"पूरा नाम क्या है?"

"व्लासोव।"

उसने सिर हिलाया और तम्बाकू का बटुआ निकालकर अपना पाइप भरने लगा।

"नाम तो सुना है," उसने कहा। "मेरा भतीजा उसे जानता

है। मेरा भतीजा भी जेल में है – येवचेन्को है उसका नाम – सुना है कभी उसका नाम? मेरा नाम गोबून है। थोड़े ही दिन में वे सारे नौजवानों को पकड़कर जेल में बंद कर देंगे – हम बूढ़ों के लिए बाहर और जगह हो जायेगी! एक पुलिस अफ़सर मुझसे कहता था कि मेरे भतीजे को साइबेरिया भेज दिया जायेगा। उन सुअरों से कुछ ताज्जुब नहीं!"

वह निकोलाई की तरफ़ मुड़ा और पाइप का कश लेने लगा। बीच-बीच में वह फ़र्श पर थूकता जाता था।

"तो यह यक़ीन करना नहीं चाहतीं? यह जानें इनका काम जाने!" उसने कुछ बिगड़कर कहा। "आज़ाद आदमी की बात ही दूसरी होती है, बैठे-बैठे थक गया – घूमे-फिरे, चलते-चलते थक गया – बैठकर आराम करे। वे हमें लूटें, तो आंखें बंद कर लें, पीटें तो रोयें नहीं, मार डालें – उफ़ न करें। इस बात को तो सभी जानते हैं। लेकिन मैं अपने भतीजे को तो बाहर निकाल ही लाऊंगा, सच कहता हूं, देख लेना।"

अपने छोटे-छोटे वाक्यों को उसने जैसे भूंक-भूंककर कहा, मां को उससे आश्चर्य हुआ, पर जिस दृढ़ विश्वास के साथ उसने अन्तिम शब्द कहे थे, उससे उसे ईर्ष्या भी हो रही थी।

सड़क पर चलते-चलते मां निकोलाई के बारे में सोच रही थी; ठंडी हवा के झोंके और मेंह की बौछार उसके मुंह पर लग रही थी।

"वह कितना बदल गया है! यक़ीन नहीं आता!"

गोबून को याद करके उसने प्रायः इस ढंग से कहा मानो ईश्वर की प्रार्थना कर रही हो:

"तो देखा तुमने कि मैं ही अकेली नहीं हूं जिसने नये सिरे से अपना जीवन आरंभ किया है!"

फिर वह अपने बेटे के बारे में सोचने लगी:

"बस, वह किसी तरह राज़ी हो जाये!"

२२

अगले इतवार को जब वह जेलख़ाने के दफ़्तर में पावेल से विदा होते समय उससे हाथ मिला रही थी, तो उसने अनुभव किया कि पावेल ने काग़ज़ की एक छोटी-सी गोली उसकी हथेली में रख दी। वह इस तरह चौंक पड़ी, मानो किसी ने हाथ पर अंगारा रख दिया

हो ; वह प्रश्न-भरी दृष्टि से पावेल की सूरत देखती रही, पर उसे वहां कोई उत्तर न मिला। पावेल की नीली आंखों में वही हमेशा जैसी शान्त और दृढ़ मुस्कराहट थी।

"अच्छा, तो चलती हूं!" मां ने आह भरकर कहा।

पावेल ने फिर अपना हाथ बढ़ा दिया और उसके चेहरे पर स्नेह की एक लहर सी दौड़ गयी।

"अच्छा, मां, विदा!"

वह थोड़ी देर तक उसका हाथ पकड़े रही।

"चिन्ता न करना, और मुझसे नाराज़ न होना!" उसने कहा।

इन शब्दों में और उसकी त्योरियों के बलों में मां को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया।

"मेरे लाल," उसने सिर झुकाकर बुदबुदाकर कहा, "क्या कह रहे हो तुम..."

वह पावेल की तरफ़ देखे बिना जल्दी से बाहर चली गयी ताकि वह कहीं उसकी आंखों में उमड़ते आंसू और उसके होंटों का कम्पन देख न ले। घर पहुंचने तक रास्ते-भर उसे ऐसा लगता रहा कि जिस हाथ में वह काग़ज़ का पुर्ज़ा लिये थी उसमें दर्द हो रहा है ; उसकी बांह इस तरह झूल रही थी, मानो किसी ने उसके कंधे पर ज़ोर की चोट मार दी हो। घर पहुंचते ही उसने रुक्क़ा निकोलाई को दे दिया और खड़ी प्रतीक्षा करती रही कि वह रुक्क़ा खोलकर पढ़े ; उसके हृदय में आशा पंख फड़फड़ा रही थी। पर निकोलाई ने उसकी तमाम आशाओं पर पानी फेर दिया। उसने कहा :

"मैं तो पहले से ही यह जानता था। उसने लिखा है : 'साथियो, हम भागने की कोशिश नहीं करेंगे। हम यह नहीं कर सकते। हममें से कोई भी नहीं। अगर हम भागे, तो हमारे आत्म-सम्मान को धक्का लगेगा। लेकिन उस किसान की मदद करने की कोशिश करो जो अभी गिरफ़्तार होकर आया है। उसे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है और वह तुम्हारी पूरी मदद पाने का हक़दार है। यहां उसकी बड़ी बुरी हालत है – रोज़ हाकिमों से उसका झगड़ा होता है। वह चौबीस घंटे काल-कोठरी में बिता चुका है। वे उसे सता-सताकर मार डालेंगे। हम सब यही चाहते हैं कि तुम लोग उसकी मदद करो। मेरी मां को समझा देना। उसे सब कुछ बता देना, वह समझ जायेगी।"

मां ने अपना सिर उठाया।

"बताने को है ही क्या? मैं सब समझती हूं!" उसने कांपते हुए स्वर में कहा।

निकोलाई जल्दी से एक तरफ़ मुड़ा और रूमाल निकालकर उसने ज़ोर से नाक छिनकी।

"मालूम होता है मुझे ज़ुकाम हो गया है..."

उसने चश्मा नाक के ऊपर सरकाकर कमरे में इधर-उधर टहलते हुए बुदबुदाकर कहा: "असल बात तो यह है कि हमारे पास सब इंतज़ाम करने का वक़्त भी नहीं था..."

"अच्छा, तो मुक़द्दमा ही हो जाने दो!" मां ने त्योरियां चढ़ाकर कहा; उसके हृदय पर उदासी कुहरे की तरह छा गयी।

"अभी मेरे पास पीटर्सबर्ग से एक साथी का ख़त आया है..."

"आख़िर, वह साइबेरिया से भी तो भागकर आ सकता है... है कि नहीं?"

"आ क्यों नहीं सकता है! इस साथी ने लिखा है कि मुक़द्दमा जल्दी ही होनेवाला है और सज़ाएं भी तै कर ली गयी हैं – सब लोगों को निर्वासित किया जायेगा। इन बदमाशों ने अपनी ही अदालतों को बिल्कुल एक ढोंग बना रखा है। ज़रा सोचो – मुक़द्दमा शुरू होने से पहले ही पीटर्सबर्ग में सज़ाएं भी तै कर ली गयी हैं..."

"निकोलाई इवानोविच, फ़िकर न करो!" मां ने दृढ़तापूर्वक कहा। "तुम्हें मुझे समझाने या तसल्ली देने की ज़रूरत नहीं। पावेल जो करेगा ठीक ही करेगा। वह अपने आपको और अपने साथियों को बेकार तकलीफ़ नहीं देगा! वह मुझे बहुत प्यार करता है! तुम ख़ुद ही देख लो वह मेरा कितना ख़्याल रखता है। उसने लिखा है तुम मां को समझा देना; उसे तसल्ली देना..."

मां का दिल धड़कने लगा और उसका सिर चकराने लगा।

"तुम्हारा बेटा बहुत ही कमाल का आदमी है!" निकोलाई ने अस्वाभाविक रूप से ऊंचे स्वर में कहा। "मैं बता नहीं सकता कि मैं उसकी कितनी इज़्ज़त करता हूं!"

"रीबिन की मदद करने की कोई तरकीब सोचनी चाहिये!"

मां चाहती थी कि इसी दम कुछ हो जाये – वह कहीं चली जाना चाहती थी, चलते-चलते थककर चूर हो जाना चाहती थी।

"अच्छी बात है!" निकोलाई ने कमरे में टहलते हुए कहा। "हमें साशा की ज़रूरत है..."

24–1065

“वह आयेगी। मैं जिस दिन पावेल से मिलने जाती हूं उस दिन वह ज़रूर आती है...”

निकोलाई कोच पर मां के बग़ल में बैठ गया। वह सिर झुकाकर विचारों में डूब गया और होंट काटकर अपनी दाढ़ी ऐंठने लगा।

“यह बहुत बुरा हुआ कि मेरी बहन यहां नहीं है...”

“अगर हम पावेल के वहां रहते हुए यह कर सकें, तो बहुत अच्छा हो, वह बहुत ख़ुश होगा!” मां ने कहा।

कुछ देर तक दोनों ने कुछ नहीं कहा।

“लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आख़िर वह क्यों नहीं चाहता? ..” मां ने अचानक कहा।

निकोलाई उछलकर खड़ा हो गया, लेकिन उसी समय घंटी बजी। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा।

“शायद साशा होगी!” निकोलाई ने धीरे से कहा।

“उससे कैसे कहेंगे?” मां ने भी उतने ही धीरे से पूछा।

“हुंः ...”

“मुझे उस पर बड़ा तरस आता है...”

घंटी फिर बजी, पर इस बार उसकी आवाज़ में वह ज़ोर नहीं था; ऐसा मालूम होता था कि जो आदमी घंटी बजा रहा था वह कुछ हिचकिचा रहा था। निकोलाई और मां दोनों दरवाज़े की तरफ़ चले, लेकिन रसोई में पहुंचकर निकोलाई रुक गया।

“तुम अकेली ही जाओ, तो अच्छा है...” उसने कहा।

“क्या उसने इंकार कर दिया?” मां के दरवाज़ा खोलते ही लड़की ने पूछा।

“हां।”

“मैं तो पहले ही जानती थी कि वह इंकार कर देगा!” साशा ने सादगी से कहा, पर उसके चेहरे का रंग उतर गया। उसने अपने कोट के बटन खोले, फिर कुछ बटन बंद करके कोट को अपने कंधों पर से नीचे सरका देने का प्रयत्न किया।

“हवा और पानी – बहुत बुरा मौसम है!” साशा ने कहा। “वह अच्छा तो है?”

“हां।”

“अच्छा भी है और ख़ुश भी,” साशा ने अपनी हथेली को बड़े ध्यान से देखते हुए धीरे से कहा।

"उसने लिखा है कि हमें रीबिन को छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिये!" मां ने साशा की तरफ़ देखे बिना ही कहा।

"अच्छा, यह लिखा है? अगर हमें उसे छुड़ाना है, तो हमें अपनी वही पुरानी तरकीब काम में लानी पड़ेगी," लड़की ने धीरे-धीरे कहा।

"मेरा भी यही ख़्याल है," निकोलाई ने सहसा दरवाज़े पर आकर कहा। "हेलो, साशा!"

लड़की ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

"इसमें बुराई ही क्या है? सभी लोग कहते हैं कि वह तरकीब अच्छी है?"

"लेकिन उसका इंतज़ाम कौन करेगा? हम सब लोग तो काम में फंसे हुए हैं..."

"मैं करूंगी!" साशा ने जल्दी से उठते हुए कहा। "मेरे पास वक़्त है।"

"अच्छी बात है! लेकिन तुम्हें दूसरे लोगों से मिलना पड़ेगा..."

"मैं मिल लूंगी! मैं अभी जाती हूं।"

वह फिर अपने कोट के बटन बंद करने लगी; इस बार उसकी पतली-पतली उंगलियां बड़े विश्वास के साथ काम कर रही थीं।

"तुम पहले थोड़ी देर आराम कर लो!" मां ने कहा।

"मैं थकी हुई नहीं हूं," लड़की ने चुपके से मुस्कराकर कहा।

चुपचाप वह सबसे हाथ मिलाकर चली गयी; उसकी मुद्रा हमेशा जैसी भावहीन तथा कठोर थी।

मां और निकोलाई ने खिड़की के पास जाकर देखा कि उसने बाग़ पार किया और फाटक के बाहर कहीं ग़ायब हो गयी। निकोलाई ने हल्की सी सीटी बजायी और मेज़ पर बैठकर फिर कुछ लिखने लगा।

"वह इस काम में फंसी रहेगी, तो ज़्यादा शांत रहेगी!" मां ने कुछ सोचते हुए कहा।

"यह तो है ही!" निकोलाई ने उत्तर दिया और फिर मुस्कराता हुआ मां की तरफ़ मुड़कर बोला, "इस मुसीबत से शायद तुम बची रहीं, निलोवना – तुम्हें तो अपने प्रेमी की याद में कभी तड़पना नहीं पड़ा न?"

"तड़पना!" मां ने हाथ झटककर कहा। "मुझे तो बस यही डर लगा रहता था कि किसी से मेरा ब्याह न कर दिया जाये।"

"क्या तुम्हें कभी किसी से प्रेम नहीं हुआ?"

उसने कुछ सोचकर जवाब दिया:

"मुझे तो याद नहीं पड़ता। शायद था तो। प्रेम तो किसी न किसी से ज़रूर रहा होगा, पर मुझे याद नहीं पड़ता किससे।"

मां ने उसकी तरफ़ देखा और सरलता तथा शान्त उदासी से अपनी बात यों समाप्त की:

"मेरे पति ने मुझे मार-मारकर ब्याह से पहले की सारी बातें मेरे दिमाग़ से निकाल दीं।"

निकोलाई फिर मेज़ के पास जाकर बैठ गया और मां एक क्षण के लिए कमरे से बाहर चली गयी। जब वह लौटकर आयी, तो वह पुरानी स्मृतियों में खोया हुआ था।

"जहां तक मेरा सवाल है, मुझ पर भी कुछ वही गुज़री जो साशा पर गुज़र रही है!" उसने बड़े प्यार से एकटक मां की तरफ़ देखते हुए कहा। "मुझे एक लड़की से प्रेम था – बहुत ही अच्छी लड़की थी वह। जिस समय मेरी उससे मुलाक़ात हुई, तब मैं कोई बीस बरस का था और तब से आज तक मैं उससे प्रेम करता आया हूं। अब भी मुझे उससे उतना ही प्रेम है जितना तब था! मैं अपने पूरे हृदय से, बड़ी कृतज्ञता के साथ हमेशा उससे प्रेम करता रहूंगा..."

मां उसके बिल्कुल पास खड़ी थी; उसे निकोलाई की आंखों में एक आशा-भरी निर्मल ज्योति की चमक दिखायी दे रही थी। वह एक कुर्सी की पीठ पकड़े अपने हाथों पर सिर रखे कहीं बहुत दूर शून्य में देख रहा था; उसका दुबला-पतला पर बलिष्ठ शरीर किसी स्वप्न की ओर इस तरह खिंच रहा था जैसे फूल सूर्य के प्रकाश की ओर खिंचता है।

"तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते?"

"चार साल हुए उसकी शादी हो गयी..."

"तुमने पहले क्यों नहीं कर ली?"

वह एक क्षण तक कुछ सोचता रहा।

"बस यों ही, हो नहीं पायी। जब मैं जेल से बाहर आता था, तो वह जेल या निर्वासन में होती थी और जब वह छूटकर आती, तो मैं जेल में होता। बिल्कुल साशा और पावेल जैसी हालत थी, क्यों है न? आखिरकार उसे दस साल के लिए साइबेरिया में कहीं बहुत दूर निर्वासित कर दिया गया! मैं उसके साथ-साथ जाना चाहता था, पर मुझे शर्म आती थी और उसे भी। वहां उसकी मुलाक़ात एक दूसरे

आदमी से हो गयी – बहुत अच्छा आदमी है वह, मेरा साथी है। वे दोनों वहां से साथ भाग निकले और अब विदेश में रहते हैं ...”

निकोलाई ने अपनी ऐनक उतारकर साफ़ की और रोशनी के सामने शीशों को देखकर एक बार साफ़ किया।

“हाय बेचारा!” मां ने सिर हिलाकर बड़ी ममता से कहा। मां को उस पर बड़ा तरस आ रहा था, पर साथ ही उसकी न जाने किस बात पर वह इस तरह मुस्करा रही थी जैसे मां बच्चे को देखकर मुस्कराती है। वह मुड़कर बैठ गया और क़लम उठाकर कुछ बोलने लगा, बोलते-बोलते वह अपने शब्दों की ताल पर क़लम हिलाता रहा:

“परिवार बसा लेने से क्रांतिकारी की शक्ति निचुड़ जाती है – इससे उसे कोई मदद नहीं मिल सकती! बच्चे, तंगदस्ती, बाल-बच्चों का पेट पालने के लिए काम करने की ज़रूरत। क्रांतिकारी को अपनी शक्ति बचाकर रखनी चाहिये ताकि ज़्यादा काम कर सके। यह वक़्त का तक़ाज़ा है – हमें हमेशा सबसे आगे चलना चाहिये, क्योंकि हम वे मज़दूर हैं जिन्हें इतिहास ने पुरानी दुनिया को बदलकर उसकी जगह एक नयी दुनिया बनाने के लिए चुना है। अगर हम पीछे रह जायें, थककर या अपनी किसी छोटी-सी विजय पर संतोष करके बैठे रहें, तो हम एक ऐसे अपराध के दोषी होंगे जो अपने लक्ष्य के साथ विश्वासघात से कम नहीं है! कोई दूसरा ऐसा नहीं है जिसके साथ हम अपने ध्येय को हानि पहुंचाये बिना चल सकें; और हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिये कि हमारा लक्ष्य कोई छोटी-मोटी जीत नहीं, बल्कि पूर्ण विजय है।”

उसके स्वर में दृढ़ता आ गयी थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आंखों में वही हमेशा जैसी गंभीरता की चमक थी। दरवाज़े पर फिर घंटी बजी। इस बार लूदमीला आयी; उसके गाल सर्दी के कारण लाल हो रहे थे; वह एक पतला-सा कोट पहने थी जो इस मौसम के लिए बिल्कुल काफ़ी नहीं था।

“मुक़द्दमा अगले हफ़्ते होगा!” उसने अपने फटे हुए रबड़ के जूते उतारते हुए चिड़चिड़ाकर कहा।

“पक्की तरह मालूम है?” निकोलाई ने दूसरे कमरे से चिल्लाकर पूछा।

मां भागी-भागी निकोलाई के पास गयी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसका सीना भय के कारण धड़क रहा है या ख़ुशी के

मारे। लूदमीला भी उसके साथ गयी।

"हां, मुझे पक्की तरह मालूम है! अदालत में सब लोग खुलेआम इस बात को मानते हैं कि सज़ाएं पहले से तै कर ली गयी हैं," उसने किंचित व्यंग के साथ कहा। "क्या ख़्याल है तुम्हारा इसके बारे में? क्या सरकार डरती है कि उसके अफ़सर उसके दुश्मनों के साथ नर्मी से पेश आयेंगे? क्या वह डरती है कि इतने दिन तक इतनी मेहनत के साथ अपने नौकरों के दिमाग़ों को दूषित करने के बावजूद वे फिर भी शरीफ़ साबित हो सकते हैं.."

वह कोच पर बैठ गयी और दोनों हाथों से अपने पतले-पतले गाल मलने लगी। उसकी आंखों में घोर तिरस्कार था और उसका स्वर अधिकाधिक रोषपूर्ण होता जा रहा था।

"लूदमीला, क्यों अपने आपको बेकार परेशान करती हो," निकोलाई ने उसे धीरज बंधाने का प्रयत्न करते हुए कहा। "जानती हो कि तुम्हारी बातें उन लोगों के कानों तक नहीं पहुंच सकतीं..."

मां लूदमीला की बातें सुनती रही, पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया। उसके दिमाग़ पर बस यही एक विचार छाया हुआ था कि "मुक़द्दमा अगले हफ़्ते होगा!"

सहसा उसे ऐसा लगा कि कोई क्रूर अमानुषिक शक्ति उसकी तरफ़ बढ़ी चली आ रही है।

२३

एक दिन तक, दो दिन तक मां उदासी, आशंका, और चिन्ता के वातावरण में घिरी रही; तीसरे दिन जाकर साशा आयी।

"सब तैयारियां हो गयी हैं! आज एक बजे..." उसने निकोलाई से कहा।

"इतनी जल्दी?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"क्या बहुत जल्दी हो गया? मुझे तो बस रीबिन के लिए कुछ कपड़ों और उसके छुपने के लिए एक जगह का ही इंतज़ाम करना पड़ा। बाक़ी सब गोबून ने कर लिया। रीबिन को भागकर कोने तक जाना पड़ेगा; वहां वेसोवश्चिकोव बहुरूपिया बनकर उसके लिए एक कोट और टोपी लिये खड़ा रहेगा और उसे रास्ता बतायेगा। मैं कुछ दूर आगे दूसरे कपड़े लेकर खड़ी रहूंगी।"

"ठीक है! लेकिन यह गोबून कौन है?" निकोलाई ने पूछा।

"तुम जानते हो उसे! तुम जब मिस्त्रियों के मंडल में पढ़ाने जाया करते थे, वह वहीं तो होता था।"

"हां, मुझे याद है। कुछ अजीब-सा आदमी है वह..."

"उसे फ़ौज से पेंशन हो गयी है–अब ठठेरे का काम करता है। बिल्कुल जाहिल है, मगर हर क़िस्म के जुल्म के ख़िलाफ़ उसके दिल में सख़्त नफ़रत है... कुछ थोड़ा-थोड़ा दार्शनिक भी है," साशा खिड़की के बाहर देखते हुए कुछ विचारों में खोयी-खोयी-सी बोली। उसकी बातें सुनकर मां के हृदय में एक अस्पष्ट-सा संकल्प जन्म लेने लगा।

"गोबून अपने भतीजे को छुड़ाना चाहता है–येवचेन्को की याद है न? तुम्हें वह बहुत पसंद था, हमेशा साफ़-सुथरा और चुस्त रहता था।"

निकोलाई ने सिर हिला दिया।

"उसने सब इंतज़ाम कर लिया है," साशा कहती रही, "लेकिन मुझे कुछ-कुछ डर लगने लगा है कि शायद हमारी यह कोशिश कामयाब नहीं होगी। यह सब कुछ उस वक़्त होना है जब क़ैदी हवा खाने के लिए बाहर निकाले जायेंगे, मुझे डर है कि जब वे सीढ़ी लगी हुई देखेंगे, तो बहुत-से लोग उसका फ़ायदा उठाने की कोशिश करेंगे..."

साशा आंखें बंद करके खामोश हो गयी। मां उसके और निकट आ गयी।

"वे लोग सब चौपट कर देंगे, कोई फ़ायदा नहीं उठा पायेगा..."

वे तीनों खिड़की के पास खड़े थे; साशा और निकोलाई आगे थे और मां उन दोनों के पीछे। वे दोनों जल्दी-जल्दी जो कर रहे थे उससे मां के हृदय में मिश्रित भावनाएं उत्पन्न हो रही थीं...

"मैं भी जाऊंगी!" सहसा मां ने कहा।

"क्यों?" साशा ने पूछा।

"न जाओ, मां! कहीं किसी मुसीबत में ही न फंस जाओ! न जाओ!" निकोलाई ने सलाह देते हुए कहा।

मां ने उसकी तरफ़ देखा।

"नहीं, मैं तो जाऊंगी..." उसने धीरे से पर दृढ़ता के साथ कहा।

दोनों ने जल्दी से एक-दूसरे को देखा।

"मैं समझती हूं," साशा ने कंधे बिचकाकर कहा और मां की ओर बढ़कर उसकी बांह पकड़ ली।

"लेकिन तुम्हें इस बात को समझना चाहिये कि बेकार उम्मीद बांधने से कोई फ़ायदा नहीं," उसने यह बात इतनी सादगी से कही कि मां का हृदय द्रवित हो उठा।

"मेरी बच्ची! मैं जानती हूं," उसने कांपते हुए हाथों से साशा को अपने और क़रीब खींचते हुए उत्तर दिया। "लेकिन मुझे अपने साथ तो ले चलो, मैं कोई रुकावट नहीं डालूंगी! मेरा जाना ज़रूरी है। मैं यक़ीन नहीं कर सकती कि यह मुमकिन है – कि कोई जेल से भाग भी सकता है!"

"मां हमारे साथ जायेंगी!" साशा ने निकोलाई से कहा।

"जैसा तुम कहो!" उसने सिर झुकाकर उत्तर दिया।

"लेकिन कोई हम लोगों को एक-दूसरे के साथ न देखने पाये। तुम उधर जाना जिधर बग़ीचे हैं; वहां से तुम्हें जेलख़ाने की दीवार दिखायी देगी। लेकिन अगर किसी ने तुमसे पूछा तो क्या कहोगी?"

"मैं कोई बात बना दूंगी! .." मां ने बड़ी ख़ुशी और उत्सुकता से उत्तर दिया।

"यह न भूलना कि जेलख़ाने के संतरी तुम्हें पहचानते हैं!" साशा ने मां को चेतावनी दी। "और अगर उन लोगों ने तुम्हें वहां देख लिया तो..."

"वे मुझे नहीं देख पायेंगे!"

मां के हृदय में जिस आशा की चिंगारी कुछ समय से धीरे-धीरे सुलग रही थी वह अब सहसा ज्वाला बनकर भड़क उठी और मां में जैसे फिर से जान आ गयी...

"मुमकिन है वह भी भाग आये..."

घंटे-भर बाद वह भी जेलख़ाने के पास खड़ी थी। तेज़ हवा चल रही थी। हवा के झोंके उसका साया खींच रहे थे, बर्फ़ से ढकी हुई ज़मीन पर थपेड़े मार रहे थे और जिस बग़ीचे के पास से होकर वह गुज़र रही थी उसके जीर्ण-शीर्ण जंगल को झंझोड़ते हुए जेलख़ाने की दीवार पर पूरे ज़ोर से प्रहार कर रहे थे। हवा के यही झोंके जेलख़ाने के आंगन से वहां के निवासियों के क्रन्दन को अपने साथ उड़ाते हुए आकाश पर पहुंचा रहे थे; एक-दूसरे का पीछा करते हुए बादल आकाश की नीली गहराइयों की पृष्ठभूमि पर एक झलक दिखाकर ग़ायब हो जाते थे।

मां के पीछे बग़ीचा था और सामने क़ब्रिस्तान। उससे कोई सत्तर

फ़ीट की दूरी पर दाहिनी तरफ़ जेलख़ाना था। क़ब्रिस्तान के पास एक सिपाही घोड़े को चक्कर खिला रहा था और पास ही एक दूसरा सिपाही खड़ा ज़मीन पर पैर पटक-पटककर चिल्ला रहा था, क़हक़हे लगा रहा था और सीटी बजा रहा था। जेलख़ाने के पास और कोई नहीं था।

मां उनके पास से गुज़रती हुई क़ब्रिस्तान की चहारदीवारी के पास जा पहुंची; वह नज़रें बचाकर अपने पीछे और दाहिनी तरफ़ देखती जा रही थी। सहसा उसे ऐसा लगा कि उसके घुटने जवाब दे रहे हैं और उसके पांव मानो ज़मीन में गड़ गये हैं। मोड़ के पास एक बत्ती जलानेवाला कमर झुकाये, एक कंधे पर सीढ़ी लटकाये लपका चला आ रहा था, जैसे बत्ती जलानेवाले आम तौर पर चलते हैं। भय से आंखें झपकाते हुए मां ने सिपाहियों की तरफ़ देखा: वे एक जगह पर खड़े थे और घोड़ा उनके चारों ओर चक्कर लगा रहा था; मां ने सीढ़ीवाले आदमी की तरफ़ देखा। उसने सीढ़ी दीवार के सहारे लगा दी थी और धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था। ऊपर पहुंचकर उसने ज़ोर से एक हाथ घुमाया और जल्दी से नीचे उतरकर मोड़ के कोने पर ग़ायब हो गया। मां का हृदय ज़ोर से धड़क रहा था; एक-एक क्षण उसे पहाड़ जैसा मालूम हो रहा था। जेलख़ाने की दीवार पर धब्बे पड़े हुए थे, जगह-जगह से उसका रंग उतर गया था और जहां पलस्तर टूट गया था वहां दीवार की ईंटें नीचे से झांक रही थीं। इस अंधकारमय पृष्ठभूमि पर सीढ़ी बिल्कुल दिखायी ही नहीं दे रही थी। सहसा दीवार के ऊपर किसी का काला सिर और फिर उसका पूरा शरीर दिखायी दिया; वह आदमी पैर लटकाकर दीवार पर इस प्रकार बैठ गया, मानो घोड़े पर सवार हो और फिर रेंगकर दीवार से नीचे उतर आया। फ़र की टोपी पहने एक दूसरा सिर दिखायी दिया और एक काला-सा गोला ज़मीन पर लुढ़कता हुआ मोड़ के पास जाकर ग़ायब हो गया। मिख़ाइलो तनकर सीधा खड़ा हो गया और चारों तरफ़ नज़र डालकर उसने अपना सिर हिलाया...

"भागो, भागो!" मां ने पैर पटकते हुए धीरे से कहा।

मां के कान गूंजने लगे; उसने ज़ोर-ज़ोर से लोगों के चिल्लाने की आवाज़ सुनी। दीवार के ऊपर एक तीसरा सिर दिखायी दिया। मां ने अपना सीना थाम लिया और दम साधे खड़ी देखती रही। एक नौजवान का सिर, जिसके बाल सुनहरे थे और जिसके चेहरे पर दाढ़ी

नहीं थी, झटके के साथ ऊपर उठा, मानो वह अपने आपको किसी से छुड़ा रहा हो, पर अचानक वह फिर दीवार के पीछे ग़ायब हो गया। चीख़-पुकार और तेज़ होती गयी; उसमें घबराहट भी बढ़ती गयी और सीटियों का कर्कश स्वर हवा की लहरों पर तैरने लगा। मिख़ाइलो दीवार के किनारे-किनारे चल रहा था। वह दीवार के सामने से गुज़रता हुआ जेलख़ाने और शहर के मकानों के बीच के खुले मैदान को पार कर गया। मां को लगा कि वह बहुत धीरे-धीरे चल रहा है और फ़ज़ूल ही अपना सिर इतना ऊंचा किये हुए है। जिस किसी ने उसे एक बार भी देखा है उसे उसकी सूरत ज़रूर याद होगी।

"जल्दी ... जल्दी ..." मां ने दबी ज़बान में कहा।

जेलख़ाने की दीवार के उस पार एक धमाका हुआ और मां को कांच टूटने की आवाज़ सुनायी दी। उन दोनों सिपाहियों में से एक ज़मीन पर पैर जमाये खड़ा था और घोड़े की रस्सी खींच रहा था; दूसरा अपना हाथ मुंह के पास किये जेलख़ाने की दिशा में चिल्लाकर कुछ कह रहा था। जब वह अपनी बात कह चुका, तो जवाब सुनने के लिए उसने अपना कान हवा के रुख़ पर कर दिया।

मां बहुत घबरायी हुई सीधी तनकर खड़ी थी और चारों तरफ़ सिर घुमा-घुमाकर देखती जा रही थी; उसकी आंखों ने देखा सब कुछ था, पर उसे किसी बात पर विश्वास नहीं आ रहा था। जिस चीज़ को वह इतना पेचीदा और ख़तरनाक समझ रही थी वह इतनी आसान निकली और इतनी जल्दी हो गयी; उसका इतनी जल्दी हो जाना ही उसके दिमाग़ पर छाया रहा और वह कोई दूसरी बात सोच ही नहीं पा रही थी। रीबिन ग़ायब हो गया था; एक लम्बा-सा आदमी लम्बा-सा कोट पहने सड़क पर चला आ रहा था; एक लड़की उससे आगे दौड़ रही थी। जेल की दीवार के कोने की तरफ़ से तीन संतरी एक-दूसरे से सटे हुए और अपने दाहिने हाथ आगे बढ़ाये लपके चले आ रहे थे। एक सिपाही उनसे मिलने के लिए भागा, दूसरा घोड़े के चारों तरफ़ चक्कर काट रहा था, वह कूदकर घोड़े की पीठ पर सवार होना चाहता था, पर वह अड़ियल घोड़ा सहसा हवा में उछला और ऐसा मालूम हुआ कि उसके साथ ही बाक़ी सब चीज़ें भी हवा में उछल गयीं। सीटियां बार-बार घबरा-घबराकर बजायी जा रही थीं। सीटियों के बौखलाये हुए कर्कश स्वर से मां को संकट का आभास हुआ; वह कांप उठी और सन्तरियों पर नज़रें गड़ाये क़ब्रिस्तान की

चहारदीवारी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी। पर तीनों संतरी और सिपाही जेल के दूसरे कोने पर पहुंचकर कहीं ग़ायब हो गये। शीघ्र ही उनके पीछे एक आदमी कोट के बटन खोले उधर से गुज़रा; मां ने पहचान लिया कि वह नायब जेलर था। पुलिस घटनास्थल पर आ गयी और भीड़ जमा होने लगी।

हवा नाचती हुई चल रही थी, मानो ख़ुशी मना रही हो, हवा के झोंकों के साथ मां के कानों में चीख़-पुकार और सीटियों की उखड़ी-उखड़ी आवाज़ें आ रही थीं... इस कोलाहल से वह बहुत प्रसन्न थी। उसने अपने क़दम और तेज़ कर दिये।

"मेरा बेटा भी इतनी ही आसानी से भाग सकता था!" मां ने सोचा।

सहसा दो पुलिसवाले दीवार के कोने की तरफ़ से झपटते हुए आये।

"ठहरो!" उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा; उसका दम फूल रहा था। "तुमने किसी आदमी को तो इधर जाते नहीं देखा है – दाढ़ी थी उसके?"

मां ने बग़ीचे की ओर इशारा करते हुए शान्त भाव से कहा:

"वह भागकर उधर गया है। क्यों, क्या हुआ?"

"येगोरोव! सीटी बजाओ!"

मां घर की तरफ़ चल दी। उसे किसी बात का दुःख था, उसके हृदय में कटुता और खेद की भावना थी। खुली जगह को पार करके जब वह सड़क पर निकली, तो एक घोड़ागाड़ी उसके पास से होकर गुज़री। उसने अंदर झांककर देखा; एक नौजवान गाड़ी में बैठा था। उसकी मूंछें सुनहरे रंग की थीं और चेहरा पीला तथा थका हुआ था। उसने भी मां को देखा। वह तिरछा बैठा हुआ था और इसी लिए उसका दाहिना कंधा उसके बायें कंधे से कुछ ऊंचा था।

निकोलाई ने बहुत ख़ुश होकर मां का स्वागत किया।

"बताओ, क्या हुआ?"

"सब ठीक हो गया..."

उसने निकोलाई को क़ैदियों के भागने का पूरा वृत्तांत सुनाया। वह कोशिश कर रही थी कि कोई छोटी-से-छोटी बात भी कहने से रह न जाये। परन्तु वह इस प्रकार बोल रही थी, मानो किसी दूसरे से सुना हुआ ऐसा क़िस्सा सुना रही हो जिस पर उसे स्वयं विश्वास न हो।

"क़िस्मत हमारे साथ है!" निकोलाई ने अपने हाथ रगड़ते हुए कहा। "सच कहता हूं कि मैं तो बहुत परेशान था कि तुम्हें कहीं कुछ हो न गया हो! सुनो, निलोवना, एक दोस्त की हैसियत से मेरी सलाह मानो, मुक़द्दमे से डरना छोड़ दो! जितनी जल्दी हो जायेगा उतनी ही जल्दी पावेल आज़ाद हो जायेगा! शायद वह निर्वासन-स्थान के लिए जाते समय रास्ते से ही भाग आयेगा। जहां तक मुक़द्दमे का सवाल है, तो उसमें होगा यह कि..."

वह बड़ी देर तक मुक़द्दमे की कार्रवाई बयान करता रहा। जब वह बोल रहा था, मां को ऐसा लगा कि यद्यपि वह उसे धीरज बंधाने का प्रयत्न कर रहा था, पर वह स्वयं किसी बात से डर रहा था।

"क्या तुम यह डरते हो कि मैं अदालत में कोई ऐसी बात कह दूंगी जो मुझे नहीं कहनी चाहिये?" मां ने अचानक उससे पूछा। "या यह कि मैं उनसे किसी चीज़ की प्रार्थना करूंगी?"

निकोलाई उछलकर खड़ा हो गया और हाथ हिलाने लगा।

"नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं!" उसने कुछ बुरा मानकर कहा।

"मैं इससे इंकार नहीं करती कि मुझे डर लगता है। लेकिन मुझे खुद भी नहीं मालूम कि मैं किस बात से डरती हूं!.." वह बोलते-बोलते रुक गयी और कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाने लगी:

"कभी-कभी मुझे यह डर लगता है कि वे पावेल से बदतमीज़ी से बात करेंगे: वे कहेंगे, 'अबे देहाती, किसान के बच्चे! आख़िर तू चाहता क्या है?' पावेल बहुत अभिमानी लड़का है और वह पलटकर उन्हें जवाब देगा! या अन्द्रेई ही उन पर फब्ती कसेगा। दूसरे लोग भी गरम मिज़ाज के हैं। मान लो अगर उन लोगों ने इन बातों को बर्दाश्त न किया और सज़ा बदल दी, तो फिर हमें कभी उनकी सूरत भी देखने को नहीं मिलेगी!"

निकोलाई के माथे पर बल पड़ गये। उसने कोई उत्तर नहीं दिया और अपनी दाढ़ी नोचने लगा।

"अब मेरे दिमाग़ में ऐसे विचार आते हैं, तो मैं क्या करूं!" मां ने धीरे से कहा। "इसी लिए मुक़द्दमे से मुझे इतना डर लगता है! अगर उन्होंने खोद-खोदकर हर बात का पता लगाना और हर बात पर विचार करना शुरू किया, तो क्या होगा! बहुत डर लगता है मुझे तो! मुझे सज़ा से डर नहीं लगता, बस मुक़द्दमे से डर लगता है। मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे समझाऊं तुम्हें अपनी बात..."

मां जानती थी कि निकोलाई उसकी बात समझा नहीं, इसी लिए अपने भय को शब्दों में व्यक्त करना उसके लिए और कठिन हो रहा था।

२४

मां का भय फफूंदी की तरह उसके हृदय में बढ़ता जा रहा था और उसका दम घोंटे दे रहा था। मुक़द्दमे के दिन अदालत की तरफ़ जाते समय उसके लिए अपना सिर उठाना या सीधे तनकर चलना भी कठिन हो गया।

फ़ैक्टरी के मज़दूरों की बस्ती के जान-पहचानवाले लोगों ने उसे सलाम किया, तो वह चुपचाप सिर हिलाकर उनके सलाम का जवाब देती हुई भीड़ को चीरती आगे बढ़ गयी। एकत्रित जन-समुदाय पर गंभीरता छायी हुई थी। बरामदे में और अदालत के कमरे में उसकी मुलाक़ात उन लोगों के रिश्तेदारों से हुई जिन पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा था; वे भी बहुत धीमी आवाज़ में बातें करते। मां को ऐसा लग रहा था कि ये सब शब्द बेकार थे; वह उन्हें समझ ही नहीं पा रही थी। सबके हृदय में एक ही पीड़ा थी। मां इस बात को समझ गयी और इससे उसकी व्यथा और भी बढ़ गयी।

"आओ, बैठ जाओ!" सिज़ोव ने बेंच पर एक तरफ़ को सरकते हुए कहा।

मां चुपचाप बैठ गयी और अपना साया ठीक करके उसने चारों ओर नज़र डाली। उसकी आंखों के आगे हरे और लाल धब्बे और धारियां और बहुत पतले-पतले पीले धागे नाच रहे थे।

"तुम्हारे बेटे ही के कारण मेरे ग्रीशा पर भी यह मुसीबत आयी!" मां के पास बैठी हुई एक औरत ने धीमी आवाज़ में कहा।

"बंद करो यह बकवास, नताल्या!" सिज़ोव ने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा।

मां ने उस औरत की तरफ़ देखा। वह समोइलोव की मां थी। उसके बग़ल में उसका पति बैठा था, जो एक गंजा, सुडौल आदमी था; उसका चेहरा पतला और लम्बी-सी लाल दाढ़ी थी। वह आंखें सिकोड़कर लगातार सामने घूर रहा था और उसकी दाढ़ी कांप रही थी।

ऊंची-ऊंची खिड़कियों से, जिन पर बाहर की तरफ़ बर्फ़ जमी

हुई थी, अदालत के कमरे में एक धुंधली-सी रोशनी आ रही थी। दो खिड़कियों के बीच में एक चमकदार सुनहरे फ़्रेम में ज़ार की तस्वीर लगी हुई थी। खिड़कियों पर पड़े हुए उन्नाबी रंग के मोटे-मोटे परदों की सिलवटों ने दोनों तरफ़ फ़्रेम का कुछ भाग ढक रखा था। तस्वीर के सामने एक मेज़ थी जिस पर हरी बनात बिछी हुई थी, मेज़ की लम्बाई लगभग एक दीवार से दूसरी दीवार तक थी। दाहिनी तरफ़ की दीवार से मिला हुआ एक कटहरा था जिसमें दो लकड़ी की बेंचें पड़ी हुई थीं, बायीं तरफ़ की दीवार के सहारे हत्थेदार कुर्सियों की दो कतारें लगी हुई थीं, इन कुर्सियों की गद्दियों पर भी उन्नाबी रंग का कपड़ा चढ़ा हुआ था। हरे कालरों और सुनहरे बटनों वाली वर्दियां पहने अदालत के चपरासी चुपचाप इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। घुटी हुई हवा में खुसुर-पुसुर की आवाज़ और दवाओं की बू बसी हुई थी। ये सब चीज़ें – ये रंग और चमक, आवाज़ें और ख़ुशबुएं – उसकी आंखों और कानों को दुःखदायी प्रतीत हो रही थीं और श्वास के साथ उसके शरीर में घुसकर उसके हृदय में एक खोखला कष्टप्रद भय उत्पन्न कर रही थीं।

सहसा कोई ऊंचे स्वर में बोला। मां चौंक पड़ी और जब सब लोग उठकर खड़े हो गये, तो वह भी सिज़ोव का हाथ पकड़कर खड़ी हो गयी।

बायीं तरफ़ एक ऊंचा-सा दरवाज़ा खुला और ऐनक लगाये हुए एक बूढ़ा फुदकता हुआ कमरे में दाख़िल हुआ। उसके भूरे चेहरे पर सफ़ेद गलमुच्छे झूल रहे थे। उसकी मूंछें बिल्कुल सफ़ाचट थीं और ऊपरवाले मसूढ़े में एक भी दांत न होने के कारण ऊपरवाला होंट अंदर को चला गया था, उसकी ठोड़ी और जबड़े उसकी वर्दी के ऊंचे से कालर पर इस तरह टिके हुए थे कि मानो उसके गर्दन हो ही नहीं। एक लम्बा-सा नौजवान, जिसके गोल चिकने चेहरे पर लाली थी, उसे सहारा दिये हुए था। उसके पीछे तीन आदमी सुनहरी झालरोंवाली वर्दियां पहने और तीन आदमी साधारण पोशाक में चले आ रहे थे।

उन्हें उस लम्बी-सी मेज़ के पास अपनी-अपनी जगहों पर बैठने में काफ़ी समय लगा। जब वे ठीक से बैठ गये, तो एक व्यक्ति जिसकी दाढ़ी सफ़ाचट थी और जिसके चेहरे पर हर चीज़ के प्रति एक विरक्ति का भाव था, सामने झुककर अपने मोटे-मोटे होंट हिला-हिलाकर उस बूढ़े के कान में कुछ कहने लगा। बूढ़ा विचित्र ढंग से तनकर सीधा

बैठा हुआ उसकी बात सुनता रहा; उसकी ऐनक के शीशों के पीछे मां को दो छोटे-छोटे नीरस धब्बे दिखायी पड़ रहे थे।

मेज़ के एक सिरे पर एक और लिखने की मेज़ रखी हुई थी जिसके पास एक लम्बा-सा आदमी खड़ा था, जिसका सिर कुछ-कुछ गंजा हो चला था; उसने दस्तावेज़ों के पन्ने उलटते हुए अपना गला साफ़ किया।

बूढ़ा आगे झुककर बोलने लगा। वह अपने वाक्यों के पहले शब्द तो बहुत साफ़ उच्चारित करता था, पर बाक़ी शब्द इस तरह गड्डमड्ड होकर निकलते थे कि उन्हें समझना भी कठिन था।

"मैं ऐलान करता हूं... मुलज़िमों को हाज़िर किया जाये..."

"देखो!" सिज़ोव ने मां को कुहनी से ठेलते हुए कहा और उठकर खड़ा हो गया।

कटहरे के पीछेवाला दरवाज़ा खुला और एक सिपाही कंधे पर नंगी तलवार लिये हुए अंदर आया, उसके पीछे पावेल, अन्द्रेई, फ़्योदोर माज़िन, दोनों गूसेव भाई, समोइलोव, बूकिन, सोमोव और पांच अन्य नौजवान थे जिनके नाम मां नहीं जानती थी। पावेल मुस्कराया और अन्द्रेई ने भी खीसें निकालकर सिर हिलाया; न जाने क्यों उनकी मुस्कराहट, उनके सप्राण चेहरों और हाव-भाव से अदालत के कमरे के अस्वाभाविक वातावरण का तनाव कम हो गया; सुनहरी झालरों की चमक फीकी पड़ गयी। क़ैदी अपने साथ जो आत्म-विश्वास और उत्साह की भावना लेकर आये थे उससे मां के हृदय में फिर साहस का संचार हुआ। पीछे की बेंचों से, जहां अब तक लोग निराश भाव से प्रतीक्षा कर रहे थे, एक शान्त मरमर ध्वनि सुनायी दी।

"वे बिल्कुल नहीं डर रहे हैं!" सिज़ोव ने चुपके से कहा; समोइलोव की मां धीरे-धीरे सिसक रही थी।

"ख़ामोश!" किसी ने कठोर स्वर में डांटा।

"मैं चेतावनी देता हूं..." बूढ़े ने कहा।

पावेल और अन्द्रेई एक-दूसरे के बग़ल में सामनेवाली बेंच पर माज़िन, समोइलोव और गूसेव के साथ बैठे थे। अन्द्रेई ने अपनी दाढ़ी मुंड़ा दी थी, पर मूंछें बढ़ा ली थीं, उसकी मूंछें नीचे को लटकी हुई थीं जिसके कारण उसकी सूरत बिल्लियों जैसी लगने लगी थी। उसके चेहरे पर एक नया भाव आ गया था – उसके मुंह पर कटुता और व्यंग का भाव था और आंखों में तिरस्कार। माज़िन के ऊपरी होंट

पर एक काली रेखा-सी दिखायी देने लगी थी और उसका चेहरा गोल हो गया था। समोइलोव के बाल हमेशा की तरह घुंघराले थे और इवान गूसेव हमेशा की तरह बत्तीसी खोलकर मुस्करा रहा था।

"आह, फ़्योदोर, फ़्योदोर!" सिज़ोव ने सिर झुकाकर कराहते हुए कहा।

मां उन अबोधगम्य प्रश्नों को सुनती रही जो वह बूढ़ा उन क़ैदियों की तरफ़ देखे बिना अपना सिर अपने कालर पर निश्चल भाव से टिकाये उनसे पूछ रहा था। उसने अपने बेटे के शान्त तथा संक्षिप्त उत्तर भी सुने और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि बड़े जज और उसके सहायक उन लोगों के साथ निर्दयता का व्यवहार नहीं करेंगे। यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करते हुए कि इस मुक़द्दमे का फल क्या होगा उसने जब मेज़ के सामने बैठे हुए लोगों के चेहरों को ध्यान से देखा, तो उसे अपने हृदय में बढ़ती हुई आशा का आभास हुआ।

उस चिकने-चुपड़े चेहरेवाले अफ़सर ने सपाट स्वर में एक काग़ज़ पढ़कर सुनाया। उसकी आवाज़ इतनी उकता देनेवाली थी कि श्रोता मूर्तिवत् बैठे रहे। चार वकील मुलज़िमों से बड़ी तल्लीनता से बातचीत कर रहे थे। उनकी गति में तेज़ी और ज़ोर था और उन्हें देखकर मां को अनायास ही बड़ी-सी काली चिड़िया की याद आती थी।

बूढ़े के एक तरफ़वाली हत्थेदार कुरसी में एक जज का स्थूल शरीर समा नहीं पा रहा था; इस जज की छोटी-छोटी आंखें चरबी की तहों में दबकर रह गयी थीं। बूढ़े के दूसरी तरफ़ एक गोल कंधों-वाला जज बैठा हुआ था जिसके गलमुच्छे ख़िज़ाबी रंग के और चेहरा पीला था। वह अपना सिर कुरसी की पीठ पर टिकाये आंखें बंद किये इस प्रकार कल्पना के पंखों पर उड़ रहा था मानो बहुत उकता गया हो। सरकारी वकील के चेहरे पर भी उकताहट और थकन के चिन्ह थे। जजों के पीछे तीन और आदमी बैठे थे; एक तो मेयर जो गठे हुए शरीर का रोबदार व्यक्ति था और लगातार अपने गालों को थपथपा रहा था; दूसरा मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी, जिसके बाल सफ़ेद और गाल लाल-लाल थे, उसके लम्बी-सी दाढ़ी और बड़ी-बड़ी प्यार-भरी आंखें थीं; तीसरा था ज़िलाधीश, जो शायद अपनी बड़ी-सी तोंद से बहुत परेशान था क्योंकि वह बार-बार उसे अपने कोट के दामनों से ढकता था पर वे बार-बार फिसल जाते थे।

"यहां न कोई अपराधी है न कोई जज," पावेल का दृढ़ स्वर

सुनायी दिया, "यहां सिर्फ़ क़ैदी हैं और वे लोग हैं जिन्होंने उन्हें क़ैदी बनाया है..."

अदालत में सन्नाटा छा गया। कुछ सेकंड तक मां को एक क़लम की तेज़ सरसराहट और अपने दिल की धड़कन के अलावा और कुछ भी सुनायी न दिया।

ऐसा प्रतीत होता था कि बड़े जज भी सारी बातें सुन रहे थे और आगे की कार्रवाई की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके सहकारी हिले-डुले। आख़िरकार बडे जज ने कहा:

"हुंः! अन्द्रेई नाख़ोदका! क्या तुम अपने जुर्म को क़बूल करते हो?.."

अन्द्रेई धीरे-धीरे उठा और अपने कंधे ऊंचे करके मूंछें ऐंठते हुए उसने आंखें तरेरकर बूढ़े की तरफ़ देखा।

"मैं इस जुर्म का इक़बाल कैसे कर सकता हू?" उसने अपनी धीमी सुरीली आवाज़ में कंधे बिचकाकर उत्तर दिया। "मैंने न किसी का क़त्ल किया है, न किसी के घर चोरी की है। मैं तो सिर्फ़ ज़िंदगी के उस ढर्रे के ख़िलाफ़ हूं जो लोगों को एक-दूसरे को लूटने और क़त्ल करने पर मजबूर कर देता है..."

"संक्षेप में जवाब दो!" बूढ़े ने बड़ी कोशिश करके कहा।

पीछे की बेंचों पर कुछ खलबली हुई। लोग कानाफूसी करने लगे और इधर-उधर सरकने लगे, मानो अपने आपको उस शब्दजाल से मुक्त कर रहे हों जो उस चिकनी सूरतवाले ने उनके चारों ओर बुन रखा था।

"सुना, क्या कह रहे हैं वे लोग?" सिज़ोव ने चुपके से कहा।

"जवाब दो, फ़्योदोर माज़िन..."

"नहीं, मैं जवाब नहीं दूंगा!" फ़्योदोर ने उछलकर खड़े होते हुए कहा। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था, आंखें चमक रही थीं और न जाने क्यों वह अपने हाथ पीछे किये हुए था।

सिज़ोव ने एक गहरी सांस ली और मां की आंखें आश्चर्य से फैल गयीं।

"मैंने अपनी सफ़ाई में वकील करने से इंकार किया था और मैं खुद अपनी सफ़ाई में कुछ कहने से भी इंकार करता हूं। मैं इस मुक़द्दमे को ग़ैर-क़ानूनी समझता हूं! आप हैं कौन? क्या जनता ने आपको हमारा न्याय करने का अधिकार दिया है? नहीं, कभी नहीं दिया और इसी लिए मैं आपके अधिकार को मानने से इंकार करता हूं!"

वह बैठ गया और उसने अपना तमतमाया हुआ चेहरा अन्द्रेई के कंधे के पीछे छुपा लिया।

मोटे जज ने बड़े जज की तरफ़ देखकर अपना सिर हिलाया और उसके कान में चुपके से कुछ कहा। पीले चेहरेवाले जज ने अपनी आंखें खोलीं, एक नज़र क़ैदियों को कनखियों से देखा और अपने सामने रखे हुए काग़ज़ पर पेंसिल से कुछ लिख लिया। ज़िलाधीश ने अपना सिर हिलाया और अपने पैर खिसकाये ताकि वह अपनी तोंद ज़्यादा आसानी से घुटनों पर टिका सके और उसे अपने हाथों से ढक सके। अपना सिर घुमाये बिना बूढ़े ने अपना पूरा शरीर उस लाल बालोंवाले जज की तरफ़ मोड़ा और बिना कुछ आवाज़ निकाले अपने होंट हिलाने लगा। दूसरे जज ने अपना सिर झुका दिया। मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी ने सरकारी वकील से कुछ कहा और मेयर, जो अब तक अपने गाल थपथपा रहा था, उसकी बात सुनने का प्रयत्न करने लगा। इसके बाद बड़ा जज फिर अपने नीरस स्वर में बोलने लगा।

"सुना, उसने कैसा जवाब दिया उन्हें?" सिज़ोव ने आश्चर्य के भाव से मां के कान में कहा। "सबसे अच्छा रहा उसका जवाब!"

मां परेशान होकर मुस्करा दी। इस समय जो कुछ हो रहा था वह उसे शीघ्र ही होनेवाली उस भयानक बात की एक उकता देनेवाली और अनावश्यक भूमिका मालूम हो रहा था जिसकी क्रूर भयावहता इन सारी बातों पर छा जानेवाली थी। परन्तु पावेल और अन्द्रेई के शब्दों में उसे वही निर्भीकता और दृढ़ता की गूंज सुनायी दी थी, मानो वे शब्द अदालत में नहीं बल्कि मज़दूरों की बस्ती के उसके छोटे से घर में कहे गये हों। फ़्योदोर के जोशीले भाषण से उसके हृदय में भी उत्साह जागृत हुआ था। इस मुक़द्दमे में कोई अत्यत साहसपूर्ण बात हो रही थी और मां के पीछे बैठे हुए लोगों की हलचल से यह अंदाज़ा होता था कि वह अकेली नहीं थी जिसे इस बात का आभास हो।

"आपकी क्या राय है?" बूढ़े ने पूछा।

गंजा सरकारी वकील उठा और छोटी मेज़ पर हाथ टिकाकर जल्दी-जल्दी बोलते हुए उसने एक भाषण दिया जिसमें उसने कुछ आंकडे बताये। उसके स्वर में कोई डरावनी बात नहीं थी।

इसी समय मां को ऐसा लगा कि उसका हृदय सूखता जा रहा है, जैसे उसके हृदय में चींटियां-सी काट रही हैं। उसे वातावरण में

किसी द्वेषपूर्ण वस्तु के अस्तित्व का अस्पष्ट-सा आभास हो रहा था, जो अपनी मुट्ठियां हिला-हिलाकर चिल्ला तो नहीं रही थी पर चुपके-चुपके बिना किसी के जाने हुए बढ़ती जा रही थी। वह वस्तु जजों के पास मंडला रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि उसने उन्हें एक अभेद्य बादल में ढक लिया है जिसके कारण उन पर बाहर की किसी चीज़ का प्रभाव हो ही नहीं सकता। मां ने जजों की तरफ़ देखा, पर उन्हें समझ न सकी। वे पावेल और फ़्योदोर पर नाराज़ नहीं हुए जैसा कि उसे डर था, उन्होंने उनका अपमान भी नहीं किया और उसे तो ऐसा लगा कि वे जो प्रश्न पूछते थे उनको वे स्वयं भी कोई महत्व नहीं देते थे। उनके रवैये में हर चीज़ के प्रति एक उदासीनता थी और वे मजबूर होकर अपने प्रश्नों का उत्तर सुनते थे, मानो सब कुछ उन्हें पहले से ही मालूम हो और किसी बात से कोई फ़रक़ पड़नेवाला न हो।

अब राजनीतिक पुलिस का एक सिपाही उनके सामने खड़ा गहरी भारी आवाज़ में कह रहा था:

"पावेल व्लासोव के बारे में कहा जाता है कि वही उकसाने में सबसे आगे था..."

"और नाखोदका?" मोटे जज ने क्षीण स्वर में पूछा।

"वह भी..."

एक वकील उठ खड़ा हुआ।

"मैं एक बात कह सकता हूं?" उसने पूछा।

"आपको कोई एतराज़ तो नहीं है?" बूढ़े ने किसी से पूछा।

सभी जज सूरत से बीमार लग रहे थे। उनके हाव-भाव और स्वर से एक अस्वस्थ उकताहट व्यक्त होती थी और उनके चेहरों पर भी यही थकन और उकताहट थी। यह स्पष्ट था कि वे इन सब चीज़ों से तंग आये हुए थे – वर्दियां, अदालत, राजनीतिक पुलिस के सिपाही, वकील, अपनी हत्थेदार कुर्सियों पर बैठकर प्रश्न पूछने और मुक़द्दमे की कार्रवाई सुनने की मजबूरी।

वह पीले चेहरेवाला अफ़सर, जिसे मां जानती थी, अब उनके सामने खड़ा नाक के सुर में ज़ोर-ज़ोर से पावेल और अन्द्रेई के बारे में जो कुछ वह जानता था बता रहा था।

"तुम्हें बहुत ज़्यादा मालूम नहीं है," उसकी बातें सुनकर मां सोचने लगी।

मां ने कटहरे के पीछे बैठे हुए लोगों को देखा, उसे अब उनके लिए न कोई डर था और न उसे उन पर तरस ही आ रहा था। उन पर तरस आ भी कैसे सकता था! उसके हृदय में केवल प्रेम और विस्मय की भावना थी – एक शान्त विस्मय, एक प्रफुल्लित प्रेम। वे दीवार के पास बैठे थे, नौजवानी से भरपूर और दृढ़; वे गवाहों और जजों की नीरस बातों और सरकारी वकील के साथ वकीलों की बहस की ओर प्रायः कोई ध्यान नहीं दे रहे थे। बीच-बीच में उनमें से कोई व्यंगपूर्वक हंस पड़ता और अपने साथियों से कुछ कहता और उन सबके चेहरों पर वही व्यंगपूर्ण मुस्कराहट दौड़ जाती। पावेल और अन्द्रेई प्रायः लगातार ही सफ़ाई के एक वकील से, जिसे मां ने पिछली रात निकोलाई के घर पर देखा था, कुछ खुसुर-पुसुर कर रहे थे। माज़िन, जो दूसरों की अपेक्षा अधिक चंचल और उत्तेजित था, उनकी बातें सुन रहा था। बीच में इवान गूसेव से समोइलोव कुछ कह देता और इवान उसे कुहनी मारकर अपनी हंसी रोकने की इतनी कोशिश करता कि उसका चेहरा लाल हो जाता, गाल फूल जाते और उसे मजबूर होकर अपना सिर नीचे झुका लेना पड़ता। दो बार तो वह ठहाका मारकर हंस भी पड़ा, पर इसके फ़ौरन ही बाद अपनी हंसी को वश में रखने के लिए कुछ देर तक बिल्कुल गठरी बना बैठा रहा। सब क़ैदी नौजवान थे और उनकी नौजवानी उनके उबलते हुए जोश को दबाने के हर प्रयत्न का मुक़ाबला कर रही थी।

सिज़ोव ने धीरे से मां को कुहनी से ठेला। मां ने मुड़कर देखा कि वह बहुत खुश है, पर साथ ही चिन्तित भी है।

"ज़रा देखो, ये लड़के कितने हिम्मतवाले हैं!" उसने मां के कान में कहा। "बिल्कुल किसी की परवाह नहीं करते!"

अदालत के कमरे में गवाह जल्दी-जल्दी और बेदिली से और जज लोग बड़े अनमनेपन तथा उदासीनता से आपस में बातें कर रहे थे। मोटे जज ने अपना मोटा-सा हाथ मुंह के सामने रखकर जम्हाई ली; लाल रंग के गलमुच्छोंवाले जज का चेहरा पहले से भी ज़्यादा पीला पड़ गया था और थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह कनपटी पर उंगली रखकर बड़ी व्यथित मुद्रा बनाकर सूनी आंखों से छत की तरफ़ देखने लगता था। बीच में कभी-कभी सरकारी वकील कुछ लिख लेता और फिर चुपके-चुपके मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी से बातें करने लगता, जो अपनी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरकर अपनी बड़ी-बड़ी खूबसूरत आंखें नचाता

और मुस्कराकर अपनी गर्दन पीछे तान लेता। मेयर टांग पर टांग रखे बैठा उंगलियों से एक घुटने पर तबला बजा रहा था और अपनी उंगलियों को घूर रहा था। ज़िलाधीश, जिसने अपनी तोंद घुटनों पर टिकाकर उसे अपनी बांहों में जकड़ रखा था, वहां पर शायद एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो इन सब आवाज़ों की उकता देनेवाली भनभनाहट सुन रहा था। संभव है कि वह बूढ़ा भी, जो इस तरह निश्चल बैठा था जैसे हवा न चलने पर वायु की दिशा बतानेवाली पंखी निश्चल हो जाती है, इस श्रेय का अधिकारी रहा हो। यह ढोंग इतनी देर तक चलता रहा कि दर्शकगण उकताहट के कारण बिल्कुल शिथिल हो गये।

"मैं ऐलान करता हूं..." बूढ़े ने खड़े होकर कहा। बाक़ी शब्द उसके पतले होंटों में खोकर रह गये।

लोगों के आहें भरने, सहसा चौंककर कुछ कहने, खांसने और पैर खिसकाने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। क़ैदियों को वहां से बाहर ले जाया गया। वे अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को देखकर मुस्कराये और उन्होंने सिर हिलाकर उनका अभिवादन किया।

"येगोर, हिम्मत न हारना!" इवान बूसेव ने चिल्लाकर कहा।

मां और सिज़ोव बाहर बरामदे में चले गये।

"चलकर कहीं एक-एक प्याली चाय न पी आयें?" बूढ़े ने पूछा। "अभी तो डेढ़ घंटे का वक़्त है हमारे पास।"

"मेरा जी नहीं चाह रहा है।"

"जी तो मेरा भी नहीं चाह रहा है। क्या ख़्याल है तुम्हारा उन लड़कों के बारे में, क्यों? वे वहां इस शान से बैठे थे जैसे दुनिया में उनके अलावा और कोई है ही नहीं, उन्हें और किसी बात की बिल्कुल परवाह ही नहीं थी। वह फ़्योदोर!"

समोइलोव का बाप अपनी हैट हाथ में लिये उनके पास आया।

"तुमने मेरे ग्रिगोरी को देखा?" उसने उदास मुस्कराहट के साथ कहा। "उसने अपनी तरफ़ से कोई सफ़ाई पेश करने से बिल्कुल इंकार कर दिया, उनसे बात तक नहीं की। सबसे पहले उसी ने यह किया। पेलागेया, तुम्हारा बेटा वकील करने के हक़ में था, पर मेरे बेटे ने साफ़ इंकार कर दिया! उसके बाद चार और लोगों ने इंकार किया..."

उसकी पत्नी उसके पास ही खड़ी थी। वह तेज़ी से पलकें झपकाकर अपने आंसू रोक रही थी और रूमाल के एक कोने से नाक पोंछती जाती थी।

"बड़ी अजीब बात है!" समोइलोव अपनी दाढ़ी पकड़े फ़र्श पर नज़रें जमाये हुए कहता रहा। "इन शैतानों को देखकर बड़ा अफ़सोस होता है कि ये नाहक़ इस झमेले में फंस गये। फिर यह भी ख़्याल होता है कि मुमकिन है वे ठीक ही हों? ख़ास तौर पर जब हम देखते हैं कि कारख़ाने में उनकी तादाद कितनी तेज़ी से बढ़ती जा रही है। पुलिस एक-एक करके सबको गिरफ़्तार करती जाती है, पर उनकी तादाद नदी में मछलियों की तरह बढ़ती जाती है! यह देखकर ख़्याल होता है कि शायद ताक़त उन्हीं की तरफ़ हो?"

"स्तेपान पेत्रोविच, हम लोगों के लिए इन बातों का सिर-पैर समझना मुश्किल है!" सिज़ोव ने कहा।

"हां, मुश्किल तो है!" समोइलोव ने सहमति प्रकट की।

"कमबख़्त, बड़े ही हृष्ट-पुष्ट हैं सबके सब," समोइलोव की पत्नी ने ज़ोर से नाक से सांस लेते हुए कहा।

फिर वह अपने चौड़े भरे हुए चेहरे पर मुस्कराहट लाकर मां को संबोधित करके बोली:

"निलोवना, मुझसे ख़फ़ा न होना – अभी थोड़ी देर पहले मैं तुम्हारे बेटे को दोष दे रही थी। मगर भगवान ही जानता है कि दोष सबसे ज़्यादा किसका है! तुमने सुना राजनीतिक पुलिस के सिपाहियों और जासूसों ने हमारे ग्रिगोरी के बारे में क्या कहा। उस लाल बालोंवाले शैतान ने भी कुछ कम हिस्सा नहीं लिया था इन सब बातों में!"

उसे अपने बेटे पर गर्व था, पर शायद वह स्वयं भी अपनी भावनाओं को नहीं समझ पा रही थी; पर मां उसकी भावनाओं को अच्छी तरह समझती थी, इसलिए उसने बड़े प्यार से मुस्कराकर हृदय से निकले हुए शब्दों में उत्तर दिया:

"नौजवानों के दिल सच्चाई को हमेशा ज़्यादा जल्दी पहचान लेते हैं..."

लोग बरामदे में टहल रहे थे और छोटे-छोटे झुंड बनाकर धीमी पर उत्तेजित आवाज़ में बातें कर रहे थे। शायद ही कोई ऐसा रहा हो जो अकेला खड़ा हो। हर व्यक्ति के चेहरे पर बात करने, सवाल पूछने और दूसरों की बातें सुनने की उत्सुकता थी। वे दीवारों के बीच उस पतले से सफ़ेद गलियारे में इस तरह टहल रहे थे, मानो तेज़ हवा उन्हें उड़ाये ले जा रही हो; ऐसा प्रतीत होता था कि वे किसी ऐसी ठोस चीज़ की तलाश में थे जिस पर वे लंगर डाल सकें।

बुकिन का बड़ा भाई, जो एक लम्बा-सा आदमी था और अपने भाई की तरह ही गोरा था, ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाकर कुछ साबित करने की कोशिश कर रहा था।

"वह क्लेपानोव, जिलाधीश, उसे यहां होने का कोई हक ही नहीं है..."

"कोंस्तांतीन, बस चुप रहो!" एक नाटे क़द के बूढ़े ने, जो उसका बाप था, चारों तरफ़ जल्दी से देखकर कहा।

"नहीं, मैं चुप नहीं रहूंगा! सुना गया है कि पारसाल उसने अपने एक क्लर्क को उसकी पत्नी के चक्कर में मार डाला और अब वह उसी औरत के साथ रहता है। आख़िर यह क्या है? इसके अलावा, हर आदमी जानता है कि वह चोर है..."

"कोंस्तांतीन, ईश्वर के लिए चुप रहो!"

"ठीक तो कहता है!" समोइलोव ने कहा। "बिल्कुल ठीक है! कोई नहीं कह सकता कि इस मुक़द्दमे में इंसाफ़ हो रहा है..."

बुकिन ने उसकी बात सुनी और अपने साथियों को लिये हुए वहीं आ गया। उसका चेहरा लाल हो रहा था और वह अपने दोनों हाथ हिला-हिलाकर बोल रहा था: [illegible]

"जब कोई क़त्ल या चोरी का मामला होता है तो जूरी के सामने मुक़द्दमा पेश होता है, जिसमें आम लोग होते हैं—किसान, शहर के लोग!" उसने चिल्लाकर कहा। "लेकिन जब लोग हाकिमों का विरोध करते हैं, तो यही हाकिम उनके मुक़द्दमे का फ़ैसला करते हैं। आख़िर यह क्या है? अगर कोई आदमी मेरा अपमान करे और मैं उसके जबड़े पर एक घूंसा रसीद कर दूं और वही आदमी मेरा फ़ैसला करने के लिए बिठा दिया जाये तो वह तो मुझे अपराधी ठहरायेगा ही। लेकिन इसमें पहले ग़लती किसने की? उसने!"

एक सफ़ेद बालोंवाले संतरी ने, जिसकी नाक बिल्कुल तोते की चोंच जैसी थी और सीना तमग़ों से ढका हुआ था, भीड़ को तितर-बितर कर दिया और बुकिन की तरफ़ उंगली हिलाकर बोला:

"चिल्लाओ नहीं! यह शराबख़ाना नहीं है!"

"ठीक है, मैं भी जानता हूं! लेकिन अगर मैं तुम्हें मारूं और ख़ुद ही फ़ैसला करने बैठ जाऊं, तो तुम्हारे ख़्याल से मैं किसे..."

"मेरा ख़्याल तो यह है कि मैं तुम्हें यहां से बाहर निकाल दूंगा, और कुछ नहीं होगा!" संतरी ने धमकाते हुए कहा।

“मुझे निकाल दोगे? किस लिए?”

“इतना शोर जो मचा रहे हो। सड़क पर निकाल दूंगा...”

बुकिन ने अपने चारों ओर खड़े हुए लोगों को देखा।

“वे सब लोगों की ज़बान बंद रखना चाहते हैं...” उसने आवाज़ धीमी करके कहा।

“क्यों न ज़बान बंद रखें। तुमने समझ क्या रखा है?!” बूढ़े ने रुखाई से चिल्लाकर कहा।

बुकिन ने अपने कंधे बिचका दिये और धीमी आवाज़ में बोलने लगा।

“आखिर लोगों को मुक़द्दमे की कार्रवाई सुनने की इजाज़त क्यों नहीं दी जाती? सिर्फ़ रिश्तेदारों ही को क्यों इजाज़त है? अगर मुक़द्दमा इंसाफ़ से हो रहा है, तो सबको सुनने दो! डर किस बात का है?”

“मुक़द्दमा तो इंसाफ़ से नहीं हो रहा है, इसमें तो किसी को भी शक नहीं हो सकता!..” समोइलोव ने ऊंचे स्वर में ज़ोर देकर कहा।

मां उसे बताना चाहती थी कि उसने निकोलाई को मुक़द्दमे के बारे में क्या कहते सुना था, पर पहली बात तो यह कि वह सब कुछ समझी नहीं थी और फिर वह कुछ शब्द भूल भी गयी थी। इन शब्दों को याद करने का प्रयत्न करती हुई वह एक तरफ़ को चली गयी और उसने देखा कि सुनहरी मूंछोंवाला एक नौजवान उसे देख रहा है। वह दाहिना हाथ अपने पतलून की जेब में डाले हुए था जिसके कारण उसका बायां कंधा दाहिने कंधे से कुछ नीचा लग रहा था, मां को उसकी यह विशिष्टता कुछ पहचानी हुई मालूम हुई। पर उसने जल्दी से अपनी पीठ फेर ली और मां उसे भूल गयी, वह अपने विचारों में खोयी हुई थी।

लेकिन एक मिनट बाद उसने किसी को चुपके से पूछते सुना:

“कौन, वह?”

“हां!” किसी ने खुशी-भरी ज़ोरदार आवाज़ में उत्तर दिया।

मां ने मुड़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। वह नौजवान, जिसका एक कंधा ऊंचा था, पास ही खड़ा एक दूसरे नौजवान से बातें कर रहा था जिसके काली दाढ़ी थी और जो छोटा-सा कोट और घुटनों तक के बूट पहने था।

मां ने परेशान होकर याद करने का प्रयत्न किया कि उसने उसे कहां देखा था, पर उसे याद न आया। उसकी प्रबल इच्छा हो रही थी कि वह लोगों को अपने बेटे के ध्येय के बारे में बताये। वह जानना चाहती थी कि आखिर लोग उसके खिलाफ़ क्या कहते हैं, ताकि वह अंदाज़ा लगा सके कि मुक़द्दमे का फ़ैसला क्या होगा।

"क्या यही तरीक़ा है मुक़द्दमा चलाने का?" उसने सतर्क रहकर सिज़ोव से कहना आरंभ किया। "वे सारी देर यही मालूम करने का प्रयत्न करते हैं कि किसने क्या किया, इस ओर कोई ध्यान ही नहीं देता कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया। और वे सब बूढ़े हैं। नौजवानों का मुक़द्दमा तो नौजवानों के सामने पेश होना चाहिये..."

"होना तो यही चाहिये," सिज़ोव ने सहमति प्रकट की। "हमारे लिए ये सब बातें समझना बहुत कठिन है, बहुत ही कठिन!" उसने विचारमग्न होकर अपना सिर हिलाया।

संतरी ने अदालत के कमरे का दरवाज़ा खोल दिया।

"क़ैदियों के रिश्तेदार! अपना टिकट दिखायें..." उसने आवाज़ लगायी।

"टिकट!" किसी ने व्यंग से कहा। "क्या कोई सर्कस है!"

लोगों में एक अस्पष्ट-सी झुंझलाहट दिखायी पड़ रही थी। वे ज्यादा बातें कर रहे थे, उनका तनाव कम हो गया था और वे बात-बात पर संतरियों से उलझ पड़ते थे।

२५

सिज़ोव ने बेंच पर अपनी जगह बैठते हुए बुदबुदाकर कुछ कहा।

"क्या हुआ?" मां ने पूछा।

"कोई ख़ास बात नहीं! लोग बेवकूफ़ हैं..."

घंटी बजी। किसी ने निरपेक्ष भाव में घोषणा की:

"जज आ रहे हैं!.."

जजों ने फिर लाइन लगाकर कमरे में प्रवेश किया और अपनी-अपनी जगहों पर उसी क्रम से बैठ गये जैसे पहले बैठे थे। जजों के आते ही सब लोग एक बार फिर खड़े हो गये। क़ैदियों को उनकी जगहों पर पहुंचाया गया।

"ज़रा कलेजा थामकर बैठो!" सिज़ोव ने मंद स्वर में कहा।

"सरकारी वकील भाषण करने जा रहे हैं।"

मां किसी भयानक बात की नयी आशंका से अपना पूरा शरीर आगे झुकाकर ध्यान से सुनने लगी।

सरकारी वकील जजों के बग़ल में उनकी तरफ़ मुंह किये एक कुहनी मेज़ पर टिकाये खड़ा था। गहरी सांस लेकर और अपना दाहिना हाथ घुमाकर वह बोलने लगा। उसके पहले शब्द मां को ठीक से सुनायी नहीं दिये। उसकी आवाज़ मोटी और प्रवाहमय थी पर प्रवाह की गति में असमानता थी – कभी तेज़ हो जाती थी, कभी धीमी। थोड़ी देर तक तो शब्द धीरे-धीरे और समान गति से आते रहते थे जैसे कोई बड़ी मेहनत से टप्पे डाल रहा हो फिर सहसा वे दल बांधकर इस तरह गूंज उठते जैसे गुड़ पर मक्खियां भिनभिनाती हैं। पर मां को इन शब्दों में कोई भयानक बात प्रतीत नहीं हुई। ये शब्द, जो बर्फ़ की तरह सर्द और राख की तरह बेरंग थे, कमरे के वातावरण में तैर रहे थे और धीरे-धीरे उसमें एक ऐसी वस्तु का संचार कर रहे थे जो बहुत बारीक सूखी धूल की तरह अरुचिकर थी। यह भाषण, जिसमें इतना प्रवाह होते हुए भी भावनाओं का सर्वथा अभाव था, पावेल और उसके साथियों के कानों तक मानो पहुंच ही नहीं रहा था; कम से कम उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं हो रहा था। वे वहां पहले की तरह ही निश्चिंत भाव से बैठे थे, चुपके-चुपके आपस में बातें कर रहे थे, कभी-कभी मुस्करा देते और कभी अपनी हंसी छुपाने के लिए त्योरियां चढ़ा लेते।

"झूठ बोलता है!" सिज़ोव ने दबी ज़बान में कहा।

मां इस विषय में निश्चय के साथ कुछ भी न कह सकती थी। सरकारी वकील बिना किसी अपवाद के सभी क़ैदियों पर आरोप लगा रहा था। पावेल के बारे में कह चुकने के बाद उसने फ़्योदोर के बारे में बोलना शुरू किया और जब वह फ़्योदोर के बारे में सब कुछ कह चुका, तो उसने बुकिन की ख़बर लेना शुरू किया। ऐसा प्रतीत होता था कि वह एक-एक करके उनको बड़ी विधि से एक थैले में रखता जा रहा है। पर उसके शब्दों के शाब्दिक अर्थ से मां संतुष्ट नहीं थी; इन शब्दों को सुनकर न वह उत्तेजित हो रही थी न भयभीत ही। उसके हृदय में अभी तक किसी भयावह चीज़ की आशंका बनी हुई थी और वह इन शब्दों से परे – उसके चेहरे में, उसकी आंखों में, उसकी आवाज़ में, उसके उस सफ़ेद हाथ में जिसे वह लगातार बड़े

आवाज़ से हिला रहा था—उस भयावह वस्तु को खोजने लगी। वहां कोई भयावह चीज़ थी ज़रूर। मां जानती थी कि वह है, पर अपने हृदय की चेतावनी के बावजूद वह उसे पकड़ नहीं पा रही थी, उसकी व्याख्या नहीं कर पा रही थी।

उसने जजों की तरफ़ देखा। वे सरकारी वकील के भाषण से ऊब गये थे। उनके निष्प्राण, बेरंग और पीले चेहरों पर कोई भाव व्यक्त नहीं हो रहा था। सरकारी वकील के शब्दों से एक अदृश्य कुहरा-सा छा गया, यह कुहरा जजों के चारों तरफ़ बहुत घना हो गया था और उसने उन्हें उदासीनता और शैथिल्यपूर्ण प्रतीक्षा के बादलों में छुपा लिया था। बड़ा जज लकड़ी की तरह सीधा तनकर बैठा हुआ था और थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसकी ऐनक के पीछेवाले दो बेरंग धब्बे द्रवीभूत होकर उसकी मुखाकृति के विवर्ण विस्तार में घुल-मिल जाते थे।

इस निश्चेत उदासीनता, इस भावहीन विरक्ति को देखकर मां के मन में बरबस यह प्रश्न उठता था:

"क्या ये लोग सचमुच इंसाफ़ करने बैठे हैं?"

यह प्रश्न उठते ही उसका हृदय संकुचित हो उठा, धीरे-धीरे उसके हृदय से सारा भय निचुड़ गया और उसमें केवल ठेस की एक तीव्र भावना बाक़ी रह गयी।

सरकारी वकील का भाषण अचानक समाप्त हो गया। उसने भाषण समाप्त करते हुए कुछ टप्पे और मारे और जजों की तरफ़ बड़े सम्मान से झुककर बैठ गया और अपने हाथ मलने लगा। मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी ने उसकी तरफ़ देखकर सिर हिलाया और अपनी आंखें नचाने लगा; मेयर ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया और ज़िलाधीश बैठा अपनी तोंद को घूरता रहा और मुस्कराता रहा।

यह बात स्पष्ट थी कि जज उसके भाषण से ख़ुश नहीं थे। उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

"अब," बूढ़े ने एक काग़ज़ अपनी आंखों के बहुत पास लाकर कहना शुरू किया, "अदालत फ़ेदोसेयेव, मारकोव और ज़गारोव के वकील का बयान सुनेगी।"

वह वकील, जिसे मां ने निकोलाई के घर पर देखा था, उठकर खड़ा हुआ। उसका चेहरा चौड़ा और हंसमुख था; उसकी छोटी-छोटी आंखें इस तरह चमकती थीं, मानो उसकी लाल भवों के नीचे से दो तेज़ छुरियां बाहर निकली हुई हों जो कैंचियों की तरह हवा को काट

रही थीं। वह ऊंचे स्वर में, साफ़-साफ़ और बड़े इत्मीनान से बोल रहा था, पर मां उसका भाषण समझ नहीं सकी।

"समझीं उसने क्या कहा?" सिज़ोव ने चुपके से मां के कान में कहा। "समझीं? उसने कहा कि क़ैदी उस वक़्त अपने होश में नहीं थे। मेरा फ़्योदोर तो ऐसा नहीं मालूम होता।"

मां इतनी क्षुब्ध थी कि वह कोई उत्तर न दे सकी। उसकी ठेस की भावना बढ़ती गयी, यहां तक कि वह उसके दिल पर एक बोझ बन गयी। अब उसकी समझ में साफ़ आ रहा था कि उसने न्याय की आशा की थी। उसे आशा थी कि उसके बेटे और उस पर आरोप लगानेवालों के बीच बड़ी ईमानदारी से फ़ैसला किया जायेगा, उसे आशा थी कि जज उससे बड़ी देर तक और बहुत ध्यान देकर यह मालूम करने का प्रयत्न करेंगे कि किन भावनाओं ने उसे ऐसा करने पर उत्प्रेरित किया; कि वे उसके समस्त विचारों तथा कर्मों को पैनी दृष्टि से जांचेंगे। और जब वे सच्चाई को देखेंगे, तो वे न्यायप्रियता के साथ ऊंचे स्वर में घोषणा करेंगे:

"यह आदमी सही है!"

पर यह कुछ भी नहीं हुआ। ऐसा प्रतीत होता था कि अभियुक्तों और जजों के बीच एक अपार दूरी थी और यह स्पष्ट था कि क़ैदियों के लिए ये जज बिल्कुल बेकार थे। अपनी थकन के कारण मां को मुक़द्दमे की कार्रवाई में कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी और जो कुछ वहां कहा जा रहा था उसे वह अब सुन भी नहीं रही थी।

"मुक़द्दमा इसी को कहते हैं?" उसने झुंझलाकर अपने मन में सोचा।

"कस-कसके लगाये जाओ!" सिज़ोव ने प्रशंसा के भाव से दबे स्वर में कहा।

इस समय एक दूसरा वकील बोल रहा था। वह एक छोटे-से डीलडौल का आदमी था, नाक-नक़्शा बहुत उभरा हुआ, चेहरे का रंग पीला, ऐसा मालूम होता था कि मुंह चिढ़ा रहा है। जज बीच-बीच में उसे टोकते जा रहे थे।

सरकारी वकील सहसा क्रोध में आकर उछल खड़ा हुआ और उसने अदालत की कार्रवाई के बारे में कुछ कहा जिस पर बूढ़े जज ने उसे धीरे से मना लिया। वकील बड़े सम्मान से सिर झुकाये सुनता रहा और फिर उसने अपना भाषण जारी रखा।

"बात की तह तक पहुंच जाओ!" सिज़ोव ने कहा।

वकील के तीक्ष्ण आरोप इन मोटी खालवाले जजों पर छुरी की तरह वार कर रहे थे; श्रोताओं की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके वाक्‌चातुर्य के तीखे प्रहार का मुक़ाबला करने के लिए तीनों जज मुंह लटकाये उदास-उदास-से एक-दूसरे से सटे बैठे थे।

इसके बाद पावेल उठकर खड़ा हुआ और कमरे में बिल्कुल ख़ामोशी छा गयी। मां आगे झुककर सुनने लगी। पावेल बड़े शान्त भाव से बोल रहा था।

"पार्टी के एक सदस्य की हैसियत से मैं केवल अपनी पार्टी के फ़ैसले को ही मानता हूं, इसलिए मैं अपनी सफ़ाई में कुछ नहीं कहूंगा; लेकिन अपने साथियों के कहने पर, जिन्होंने भी अपनी सफ़ाई में कुछ कहने से इंकार कर दिया है, मैं आप लोगों को कुछ ऐसी बातें समझाने की कोशिश करूंगा जिन्हें आप नहीं समझ सके हैं। सरकारी वकील ने कहा है कि सामाजिक-जनवाद के झंडे के नीचे हमारा प्रदर्शन शासन-सत्ता के खिलाफ़ विद्रोह था और उसने हमेशा हमें इस नज़र से देखा है कि हम ज़ार का तख़्ता उलटने की कोशिश कर रहे थे। मैं इस बात को साफ़ कर देना चाहता हूं कि हम ज़ार के निरंकुश शासन को एकमात्र बंधन नहीं समझते जिसने हमारे देश को जकड़ रखा है; यह केवल पहली ज़ंजीर है जिससे अपने देश की जनता को मुक्त कराना हमारा कर्तव्य है..."

पावेल अपने दृढ़ स्वर में बोलता रहा और कमरे में निस्तब्धता और गहरी होती गयी; ऐसा प्रतीत होता था कि वह कमरा बड़ा होता जा रहा है और पावेल का क़द कुछ और बढ़ गया है और वह सब पर छाया हुआ है।

जज कुछ बेचैन होकर अपनी कुर्सियों पर पहलू बदल रहे थे। मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी ने उस उदासीन सूरतवाले जज के कान में कुछ कहा और उसने सिर हिलाकर बूढ़े जज के दाहिने कान में कुछ कहा और इसी समय उस बीमार सूरतवाले जज ने उसके बायें कान में कुछ कहा। दाहिनी बायीं दोनों तरफ़ डोलने से झुंझलाकर बूढ़े जज ने ऊंचे स्वर में कुछ कहा, पर पावेल के भाषण के पाटदार तथा सुगम प्रवाह में उसकी आवाज़ डूबकर रह गयी।

"हम समाजवादी हैं। इसका मतलब है कि हम निजी सम्पत्ति

के ख़िलाफ़ हैं; निजी सम्पत्ति की पद्धति समाज को छिन्न-भिन्न कर देती है, लोगों को एक-दूसरे का दुश्मन बना देती है, लोगों के परस्पर हितों में एक ऐसा द्वेष पैदा कर देती है जिसे मिटाया नहीं जा सकता, इस द्वेष को छुपाने या न्याय-संगत ठहराने के लिए वह झूठ का सहारा लेती है और झूठ, मक्कारी और घृणा से हर आदमी की आत्मा को दूषित कर देती है। हमारा विश्वास है कि वह समाज, जो इंसान को केवल कुछ दूसरे इंसानों को धनवान बनाने का साधन समझता है, अमानुषिक है और हमारे हितों के विरुद्ध है। हम ऐसे समाज की झूठ और मक्कारी से भरी हुई नैतिक पद्धति को स्वीकार नहीं कर सकते। व्यक्ति के प्रति उसके रवैये में जो बेहयाई और क्रूरता है उसकी हम निंदा करते हैं। इस समाज ने व्यक्ति पर जो शारीरिक तथा नैतिक दासता थोप रखी है, हम उसके हर रूप के ख़िलाफ़ लड़ना चाहते हैं और लड़ेंगे; कुछ लोगों के स्वार्थ और लोभ के हित में इंसानों को कुचलने के जितने साधन हैं हम उन सबके ख़िलाफ़ लड़ेंगे। हम मज़दूर हैं; हम वे लोग हैं जिनकी मेहनत से बच्चों के खिलौनों से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनों तक दुनिया की हर चीज़ तैयार होती है; फिर भी हमें ही अपनी मानवोचित प्रतिष्ठा की रक्षा करने के अधिकार से वंचित रखा जाता है। कोई भी अपने निजी स्वार्थ के लिए हमारा शोषण कर सकता है। इस समय हम कम से कम इतनी आज़ादी हासिल कर लेना चाहते हैं कि आगे चलकर हम सारी सत्ता अपने हाथों में ले सकें। हमारे नारे बहुत सीधे-सादे हैं: निजी सम्पत्ति का नाश हो—उत्पादन के सारे साधन जनता की सम्पत्ति हों—सत्ता जनता के हाथ में हो—हर आदमी को काम करना चाहिये। अब आप समझ गये होंगे कि हम विद्रोही नहीं हैं!"

पावेल धीरे से मुस्कराया और धीरे-धीरे अपने बालों में उंगलियां फेरने लगा। उसकी नीली आंखों की चमक पहले से बहुत बढ़ गयी थी।

"मैं तुमसे कहता हूं कि बस मतलब भर की बात कहो!" बूढ़े ने ज़ोर से स्पष्ट स्वर में कहा और पावेल की ओर मुड़कर देखा। मां की कल्पना में यह बात आयी कि उस जज की निस्तेज बायीं आंख में लोलुपता और कुत्सा की चमक थी। तीनों जज उसके बेटे को देख रहे थे, उनकी नज़रें उसके चेहरे पर जमी हुई थीं, ऐसा मालूम होता था कि वे अपनी पैनी नज़रों से उसकी शक्ति चूसे ले रहे हैं; वे उसके ख़ून के प्यासे लग रहे थे, मानो इससे उनके शक्तिहीन शरीर में फिर

मे जान आ जायेगी। परन्तु पावेल अपना लम्बा-चौड़ा बलिष्ठ शरीर लिये साहस के भाव से सीधा तनकर खड़ा था और अपना हाथ उठाकर कह रहा था:

"हम क्रान्तिकारी हैं और उस वक़्त तक क्रान्तिकारी रहेंगे जब तक इस दुनिया में यह हालत रहेगी कि कुछ लोग सिर्फ़ हुक्म देते हैं और कुछ लोग सिर्फ़ काम करते हैं। हम उस समाज के ख़िलाफ़ हैं जिसके हितों की रक्षा करने की आप जज लोगों को आज्ञा दी गयी है। हम उसके कट्टर दुश्मन हैं और आपके भी और जब तक इस लड़ाई में हमारी जीत न हो जाये, हमारी और आपकी कोई सुलह मुमकिन नहीं है। और हम मज़दूरों की जीत यक़ीनी है! आपके मालिक उतने ताक़तवर नहीं हैं जितना कि वे अपने आपको समझते हैं। वही सम्पत्ति जिसे बटोरने और जिसकी रक्षा करने के लिए वे अपने एक इशारे पर लाखों लोगों की जान क़ुर्बान कर देते हैं, वही शक्ति जिसकी बदौलत वे हमारे ऊपर शासन करते हैं, उनके बीच आपसी झगड़ों का कारण बन जाती है और उन्हें शारीरिक तथा नैतिक रूप से नष्ट कर देती है। सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए उन्हें बहुत भारी क़ीमत चुकानी पड़ती है। असल बात तो यह है कि आप सब लोग, जो हमारे मालिक बनते हैं, हमसे ज़्यादा ग़ुलाम हैं। हमारा तो सिर्फ़ शरीर ग़ुलाम है, लेकिन आपकी आत्माएं ग़ुलाम हैं। आपके कंधे पर आपकी आदतों और पूर्व-धारणाओं का जो जुआ रखा है उसे आप उतारकर फेंक नहीं सकते। लेकिन हमारी आत्मा पर कोई बंधन नहीं है। आप हमें जो ज़हर पिलाते रहते हैं वह उन ज़हरमार दवाओं से कहीं कमज़ोर होता है जो आप हमारे दिमाग़ों में अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उंडेलते रहते हैं। हमारी चेतना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और सबसे अच्छे लोग, वे सभी लोग जिनकी आत्माएं शुद्ध हैं हमारी ओर खिंचकर आ रहे हैं; इनमें आपके वर्ग के लोग भी हैं। आप ही देखिये—आपके पास कोई ऐसा आदमी नहीं है जो आपके वर्ग के सिद्धान्तों की रक्षा कर सके; आपके वे सब तर्क खोखले हो चुके हैं जो आपको इतिहास के न्याय के घातक प्रहार से बचा सकें, आपमें नये विचारों को जन्म देने की क्षमता नहीं रह गयी है, आपकी आत्माएं निर्जन हो चुकी हैं। हमारे विचार बढ़ रहे हैं, अधिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं, वे जन-साधारण में प्रेरणा फूंक रहे हैं और उन्हें स्वतंत्रता के संग्राम के लिए संगठित कर रहे हैं। यह जानकर कि मज़दूर वर्ग की भूमिका कितनी महान है,

सारी दुनिया के मज़दूर एक महान शक्ति के रूप में संगठित हो रहे हैं – नया जीवन लाने की जो प्रक्रिया चल रही है, उसके मुक़ाबले में आपके पास क्रूरता और बेहयाई के अलावा और कुछ नहीं है। परन्तु आपकी बेहयाई बहुत भोंडी है और आपकी क्रूरता से हमारा क्रोध और बढ़ता है। जो हाथ आज हमारा गला घोंटने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं वही कल साथियों की तरह हमारे हाथ थाम लेने को आगे बढ़ेंगे। आपकी शक्ति धन बढ़ाते रहने की मशीनी शक्ति है, उसने आपको ऐसे दलों में बांट दिया है जो एक-दूसरे को खा जाना चाहते हैं। हमारी शक्ति सारी मेहनतकश जनता की एकता की निरन्तर बढ़ती हुई चेतना की जीवन-शक्ति में है। आप लोग जो कुछ करते हैं वह पापियों का काम है, क्योंकि वह लोगों को ग़ुलाम बना देता है। आप लोगों के मिथ्या प्रचार और लोभ ने पिशाचों और राक्षसों की अलग एक दुनिया बना दी है जिसका काम लोगों को डराना-धमकाना है। हमारा काम जनता को इन पिशाचों से मुक्त कराना है। आप लोगों ने मनुष्य को जीवन से अलग करके उसे नष्ट कर दिया है ; समाजवाद आपके हाथों टुकड़े-टुकड़े की गयी दुनिया को जोड़कर एक महान रूप देता है और यह होकर रहेगा ! "

पावेल रुका और उसने एक बार फिर ज़्यादा ज़ोर देकर पर धीमे स्वर में कहा :

"यह होकर रहेगा ! "

जज आपस में कानाफूसी करने और तरह-तरह के मुंह बनाने लगे, पर उन्होंने अपनी ललचायी हुई नज़रें पावेल के चेहरे पर से नहीं हटायीं। मां को ऐसा लगा कि वे अपनी वक्र दृष्टि से, जिसमें पावेल के स्वास्थ्य और बल तथा स्फूर्ति के प्रति ईर्ष्या भरी हुई थी, उसके बलिष्ठ शरीर को विषाक्त कर रहे हैं। क़ैदी अपने साथी का भाषण बड़े ध्यान से सुन रहे थे, उनके चेहरों का रंग यद्यपि पीला था, पर उनकी आंखें हर्ष से चमक रही थीं। मां अपने बेटे के शब्दों को अमृत की बूंदों की तरह पी रही थी और वे उसके मस्तिष्क पर इस प्रकार अंकित हो गये, मानो किसी ने वे पंक्तियां उसके मस्तिष्क पर गर्म लोहे से दाग़ दी हों। कई बार किसी न किसी बात के स्पष्टीकरण के लिए बूढ़े जज ने पावेल को बीच में टोका और एक बार तो वह उदास भाव से मुस्कराया भी। पावेल हर बार रुक जाता, पर फिर शान्त दृढ़ता के साथ बोलने लगता जिसके कारण लोग उसकी बात

मानने पर बाध्य होते; उसकी इच्छाशक्ति ने जजों की इच्छाशक्ति को अपने वश में कर लिया था। परन्तु आखिरकार बूढ़ा जज हाथ उठाकर कुछ चिल्लाया, इस पर पावेल के स्वर में किंचित व्यंग का पुट आ गया।

"मैं बस खतम ही कर रहा हूं। मैं आपकी निजी भावनाओं को कोई ठेस पहुंचाना नहीं चाहता, बल्कि इसके विपरीत जब मैं यहां बैठा अपनी इच्छा के विरुद्ध आपके इस ढोंग को देख रहा था, जिसे आप मुक़द्दमा कहते हैं, तो मुझे आपके साथ बड़ी हमदर्दी होने लगी। आखिरकार आप भी इंसान हैं और किसी भी इंसान को, चाहे वह हमारे लक्ष्य का दुश्मन ही क्यों न हो, पाशविक बल की सेवा में इतने लज्जा-स्पद ढंग से पतित होते देखकर, मानव सम्मान की भावना से इतनी पूर्णतः वंचित देखकर, बड़े अपमान का अनुभव होता है..."

यह कहकर वह जजों की तरफ़ देखे बिना बैठ गया, पर मां दम साधे उन्हें देखती रही।

कसकर पावेल का हाथ दबाते समय अन्द्रेई का चेहरा खिल उठा। समोइलोव, माज़िन और दूसरे अभियुक्त उसकी तरफ़ आगे झुके और उनके इस प्रशंसा के व्यवहार पर पावेल कुछ शरमाकर मुस्करा दिया। उसने मां की ओर देखकर इस भाव से सिर हिलाया, मानो पूछ रहा हो:

"तुम संतुष्ट तो हो?"

मां ने एक हर्ष-भरी आह से उसका उत्तर दिया और उसके चेहरे पर ममता की एक लहर दौड़ गयी।

"अब असली मुक़द्दमा शुरू होता है!" सिज़ोव ने मंद स्वर में कहा। "उसने बहुत खरी-खरी सुना दी, क्यों है न?"

मां ने बिना कुछ उत्तर दिये सिर हिला दिया, उसे इस बात की खुशी थी कि उसका बेटा इतना निडर होकर बोला था – शायद उसे इस बात की और भी ज़्यादा खुशी थी कि उसने अपना भाषण समाप्त कर लिया था। परन्तु एक प्रश्न उसके मस्तिष्क को निरंतर कोंचता रहा:

"अब वे क्या करेंगे?"

२६

उसके बेटे ने कोई बात ऐसी नहीं कही थी जो मां के लिए नयी रही हो। मां उसके सभी विचारों से भली भांति परिचित थी, पर

यहां अदालत के सामने पहली बार उसे यह आभास हुआ कि उसका बेटा जिस विचारधारा का अनुयायी है उसमें कितना विचित्र आकर्षण है। पावेल के गंभीर तथा शान्त स्वभाव पर मां को आश्चर्य हुआ और उसका भाषण तो उसके लिए एक ऐसे चमकदार सितारे की तरह था जो अपने ध्येय के प्रति उसकी आस्था और अन्ततः अपनी विजय के प्रति उसके विश्वास का प्रतीक था। मां सोच रही थी कि अब जज लोग उससे गरमागरम बहस छेड़ देंगे, क्रोधपूर्वक उसकी हर बात का खंडन करेंगे और स्वयं अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। लेकिन इसके बजाय अन्द्रेई उठा और कुछ झूमकर उसने भवें तानकर जजों की तरफ़ देखा और बोला :

"माननीय वकीलो ..."

"तुम जजों से बात कर रहे हो वकीलों से नहीं!" उस बीमार सूरतवाले जज ने क्रुद्ध होकर ऊंचे स्वर में कहा। मां ने अन्द्रेई के चेहरे पर शरारत का भाव देखा; उसकी मूंछें फड़क रही थीं और उसकी आंखों में वही चिर-परिचित बिल्लियों की आंखों जैसी चमक थी। उसने अपने पतले-पतले लम्बे हाथ से अपना सिर ज़ोर से रगड़ा और एक आह भरी।

"अच्छा, यह बात है?" उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मुझे तो ऐसा लगता है कि आप जज नहीं केवल वकील हैं ..."

"मैं कहता हूं मतलब की बात करो!" बूढ़े ने रुखाई से कहा।

"मतलब की? अच्छी बात है, तो मान लीजिये मैं थोड़ी देर को इस बात पर यक़ीन किये लेता हूं कि आप लोग सचमुच जज हैं, मान-मर्यादा और स्वतंत्र विचारवाले लोग हैं ..."

"अदालत को तुम्हारी सनद की ज़रूरत नहीं है!"

"सच? ख़ैर मैं तो अपनी बात जारी रखता हूं ... अच्छा, तो मान लीजिये आप निष्पक्ष लोग हैं, आप पहले से किसी के बारे में कोई राय नहीं क़ायम करते, आपके दिल में 'तेरा' और 'मेरा' बिल्कुल नहीं है। आपके सामने दो आदमी लाये जाते हैं। एक कहता है: 'इसने मुझे लूटा है और मारते-मारते मेरा कचूमर निकाल दिया है!' दूसरा कहता है: 'मुझे लोगों को लूटने और मारते-मारते उनका कचूमर निकाल देने का अधिकार है, क्योंकि मेरे हाथ में बन्दूक़ है ...'"

"क्या तुम्हें मतलब की कोई बात नहीं कहनी है?" बूढ़े ने अपना

स्वर ऊंचा करते हुए पूछा। उसका हाथ कांप रहा था; मां खुश हुई कि वह बहुत ग़ुस्सा है। पर उसे अन्द्रेई का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा – वह उसके बेटे के भाषण से मेल नहीं खाता था। वह चाहती थी कि उनके तर्क में गंभीरता और मर्यादा हो।

उक्रइनी फिर बोलना आरंभ करने से पहले चुपचाप बूढ़े जज को देखता रहा।

"मतलब की?" उसने अपना माथा पोंछकर गंभीर मुद्रा बनाते हुए कहा। "मैं आपसे मतलब की बात क्यों करूं? इस वक़्त आपके लिए जितना जानना ज़रूरी है वह सब मेरे साथी ने आपसे कह दिया है। बाक़ी जो है वह दूसरे लोग अपनी बारी आने पर आपसे कहेंगे..."

बूढ़ा जज अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया और चिल्लाया:

"बैठ जाओ! इसके बाद – ग्रिगोरी समोइलोव!"

उक्रइनी अपने होंट भींचकर बड़े इत्मीनान से बैठ गया। समोइलोव उठा और अपने घुंघराले बाल पीछे को झटककर उसके बग़ल में खड़ा हो गया।

"सरकारी वकील ने मेरे साथियों को जंगली कहा है, सभ्यता का दुश्मन कहा है..."

"सिर्फ़ वही बातें कहो जिनका इस मुक़द्दमे से संबंध हो!"

"मेरी बात का संबंध इस मुक़द्दमे से ही है। ऐसी कोई बात है ही नहीं जिसमें ईमानदार लोगों को दिलचस्पी न हो। आप मेहरबानी करके मुझे बीच में मत टोकिये। मैं यह जानना चाहता हूं कि आख़िर आप सभ्यता कहते किसे हैं?"

"हम लोग यहां तुमसे शास्त्रार्थ करने के लिए नहीं बैठे हैं! इधर-उधर की बातें बिल्कुल न होनी चाहिये!" बूढ़े ने अपने दांत खोलकर कहा।

अन्द्रेई के व्यवहार से जजों के रवैये में एक परिवर्तन आ गया था – ऐसा मालूम होता था कि जैसे उन पर से कोई छिलका उतार लिया गया हो। उनके बेरंग चेहरों पर धब्बे-से पड़ गये और उनकी आंखों में हरी-हरी ठंडी चिंगारियां चमकने लगीं। उन्हें पावेल का भाषण सुनकर झुंझलाहट तो हुई थी, पर उसके शब्दों में जो शक्ति थी उससे वे उसका सम्मान करने और दिखावे के लिए की सही शान्त तथा गंभीर बने रहने पर बाध्य हुए थे। उक्रइनी ने उनका ऊपरी आवरण चीर दिया था और उसके नीचे की वास्तविकता को सामने खोलकर

रख दिया था। जज आपस में कानाफूसी कर रहे थे और मुंह बना-बनाकर बड़े ज़ोरों से हाथ हिला रहे थे; सहसा उनमें इतनी स्फूर्ति न जाने कहां से आ गयी थी।

"आप लोगों को जासूस बनाते हैं, आप औरतों और लड़कियों को भ्रष्ट करते हैं, आप मर्दों को चोर और हत्यारा बना देते हैं, आप उनकी आत्मा में वोद्का का ज़हर घोलते हैं, लोगों के बीच सभी तरह के युद्ध, झूठ, व्यभिचार और बर्बरता – यही है आपकी सभ्यता! हम ऐसी सभ्यता के दुश्मन हैं!"

"मैं तुमसे कहता हूं!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। पर समोइलोव का भी चेहरा तमतमाया हुआ था, उसकी आंखें चमक रही थीं, उसने चीखकर उत्तर दिया:

"हम उस दूसरी सभ्यता का सम्मान और क़दर करते हैं जिसका प्रचार करनेवालों को आप जेलों में सड़ाते तथा पागल बना देते हैं..."

"बैठ जाओ! अब फ़्योदोर माज़िन!"

छोटे क़दवाला फ़्योदोर माज़िन उछलकर तीर की तरह सीधा खड़ा हो गया।

"मैं... मैं क़सम खाकर कहता हूं! मैं जानता हूं कि आप लोगों ने मेरे लिए सज़ा पहले से तै कर ली है," उसने हांपते हुए कहा, उसका चेहरा इतना पीला पड़ गया था कि बस उसकी आंखें ही दिखायी दे रही थीं। "लेकिन मैं क़सम खाकर कहता हूं कि आप मुझे चाहे जहां भी भेज दें मैं वहां से भाग आऊंगा और अपना काम करता रहूंगा, ज़िंदगी भर यही काम करता रहूंगा।" उसने एक हाथ ऊपर उठाया मानो शपथ ले रहा हो और बोला, "मैं क़सम खाकर कहता हूं!"

सिज़ोव ज़ोर से गुर्राया और अपनी जगह पर पहलू बदलकर बैठ गया। दर्शकों में उत्तेजना की एक लहर दौड़ गयी और वे बड़े अर्थपूर्ण ढंग से अस्फुट स्वर में कुछ कहने लगे। किसी औरत ने सिसकी ली और किसी को खांसी का दौरा पड़ गया। संतरियों ने क़ैदियों को बुद्धुओं की तरह आश्चर्य से और श्रोताओं को क्रोध से देखा। जज अपनी कुर्सियों पर बैठे झूम रहे थे।

"इवान गूसेव!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा।

"मैं कुछ कहना नहीं चाहता!"

"वासीली गूसेव!"

"मैं भी कुछ नहीं कहना चाहता!"

"फ़्योदोर बुकिन!"

वह सफ़ेद विवर्ण चेहरेवाला व्यक्ति बहुत अलसाता हुआ उठा।

"आप लोगों को अपने आप पर शर्म आनी चाहिये!" उसने अपना सिर हिलाते हुए धीरे-धीरे कहना आरंभ किया। "मैं बड़ा टेढ़ा आदमी हूं, लेकिन मैं तक इसको समझता हूं कि इंसाफ़ किस बात में है!" उसने अपनी एक बांह सिर के ऊपर उठायी और चुप होकर अपनी आंखें इस प्रकार आधी मूंद लीं कि जैसे बहुत दूर किसी चीज़ को देख रहा हो।

"क्या मतलब है तुम्हारा?" बूढ़े जज ने अपनी कुरसी पीछे झुकाते हुए आश्चर्य और झुंझलाहट से चिल्लाकर कहा।

"बस, रहने दीजिये..." इतना कहकर बुकिन मुंह लटकाकर बैठ गया। उसके शब्दों में कोई अत्यंत महत्वपूर्ण बात छिपी हुई थी – कोई बहुत ही भोलेपन की बात जिसमें उदासी भी थी और भर्त्सना भी। सबने इस बात को अनुभव किया, जजों के भी कान खड़े हुए, ऐसा प्रतीत होता था कि वे उस प्रतिध्वनि की प्रतीक्षा में थे जो शायद बुकिन ने जो कुछ कहा था उससे अधिक स्पष्ट हो। कमरे में चारों ओर जमी हुई बर्फ़ का सा सन्नाटा छाया हुआ था, बीच-बीच में केवल किसी के रोने की दबी हुई आवाज़ से ही यह निस्तब्धता भंग हो जाती थी। आखिरकार सरकारी वकील अपने कंधे बिचकाकर धीरे से हंसा, मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी को खांसी आ गयी और लोग खुसुर-पुसुर करने लगे।

"अब क्या जज लोग बोलेंगे?" मां ने सिज़ोव के कान में कहा।

"सब कार्रवाई पूरी हो गयी... अब सिर्फ़ सज़ा सुनाना बाक़ी है..."

"बस?"

"हां, बस..."

मां को विश्वास नहीं हुआ।

समोइलोव की मां कुछ बेचैन होकर बेंच पर कसमसायी और उसने अपने कन्धे तथा कुहनी से पेलागेया को ठेल दिया।

"क्या मतलब? क्या मुक़द्दमा खत्म हो गया? यह कैसे हो सकता है?" उसने अपने पति से पूछा।

"क्यों नहीं हो सकता, अभी खुद ही देख लेना!"

"हमारे ग्रीशा को क्या सज़ा देंगे?"

"मेरा पिंड छोड़ो..."

हर आदमी को इस बात का आभास था कि किसी बात का उल्लंघन किया जा रहा है, कोई गड़बड़ हो रही है, कोई चीज़ टूट रही है। लोगों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था; वे अपनी आंखें इस प्रकार झपका रहे थे, मानो किसी ऐसी जलती हुई चीज़ का चकाचौंध कर देने-वाला प्रकाश देख रहे हों जिसकी रूपरेखा निर्धारित न की जा सकती हो, जिसका महत्व अस्पष्ट हो, पर जिसकी शक्ति अदम्य हो। चूंकि वे उस बहुत बड़ी बात को समझने में असमर्थ थे जिसका रहस्योद्घाटन सहसा उनके सामने हुआ था, इसलिए वे अपने दिल का सारा गुबार उन छोटी-छोटी बातों पर बहस करके निकाल रहे थे जिन्हें वे समझते थे।

"सुनो, आख़िर उन लोगों ने उन्हें अपनी बात पूरी तरह कहने क्यों नहीं दी?" बुकिन के बड़े भाई ने साफ़ तौर से कहा। "सरकारी वकील को तो उन्होंने जो उसके जी में आया कहने का पूरा मौक़ा दिया..."

एक अफ़सर बेंचों के पास खड़ा लोगों के सिरों के ऊपर अपना हाथ हिला-हिलाकर डांटकर कह रहा था:

"ख़ामोश रहो! ख़ामोश..."

समोइलोव अपनी बीवी की पीठ के पीछे झुका हुआ उखड़े-उखड़े वाक्य बोल रहा था:

"अच्छा, मान लिया कि क़सूर था उनका। मगर उन्हें अपनी सफ़ाई देने का मौक़ा तो दिया जाना चाहिये था! वे किसके ख़िलाफ़ हैं? मैं तो बस यह जानना चाहता हूं! मैं भी अपने स्वार्थ रखता हूं..."

"शः!" उस अफ़सर ने समोइलोव की तरफ़ उंगली उठाकर चेतावनी दी।

सिज़ोव उदास होकर अपना सिर हिलाने लगा।

मां अपनी नज़रें जजों पर जमाये रही और उसने देखा कि आपस में बातें करते हुए उनकी उत्तेजना बढ़ती ही जा रही है। उनकी आवाज़ की सर्द और चिपचिपी ध्वनि उसके चेहरे का स्पर्श कर रही थी, जिसके कारण उसके गाल कांप रहे थे और उसके मुंह में एक अत्यंत बेहूदा और अरुचिकर स्वाद पैदा हो गया था। न जाने क्यों उसे ऐसा लगा कि वे उसके बेटे और उसके साथियों के शरीरों के बारे में, उनके जवानी से भरपूर अंगों और मांसपेशियों के बारे में

बातें कर रहे थे, जिनकी नस-नस में जवानी का ख़ून और स्फूर्ति भरी हुई थी। ऐसे शरीरों को देखकर उनके हृदय में भिखारियों जैसी नीच ईर्ष्या और रोगियों तथा अशक्त लोगों जैसी अदम्य लोलुपता उत्पन्न होती थी। उनके मुंह में पानी भर आता था और वे चाहते थे कि उनके शरीर भी ऐसे ही होते, जो काम कर सकते और धन बटोर सकते, सुख का सृजन और भोग कर सकते। अब ये शरीर उनके दैनिक जीवन के क्षेत्र से हटाये जा रहे थे, उन्हें रद्द किया जा रहा था, जिसका अर्थ यह था कि अब उन पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता था, उनका शोषण नहीं किया जा सकता था, उनका उपभोग नहीं किया जा सकता था। और यही कारण था कि इन नौजवानों को देखकर उन बूढ़े जजों के हृदय में उन जीर्ण-शीर्ण हिंसक पशुओं जैसा प्रतिशोधपूर्ण तीव्र क्रोध उत्पन्न होता था जो अपने सामने ताज़ा शिकार देखते थे, पर उसे प्राप्त करने की शक्ति नहीं रखते थे, ऐसे पशु जिनमें अन्य पशुओं की शक्ति से अपना पेट भरने की क्षमता नहीं रह गयी थी, और जो अपनी तृप्ति के साधन को अपने हाथों से निकलता देखकर केवल ग़ुर्राकर कराह उठते थे।

जजों को और ध्यान से देखने पर ऐसे विचित्र तथा बेतुके विचार उसके मस्तिष्क में और स्पष्ट रूप धारण करते गये। उनमें उन क्षुधाग्रस्त पशुओं जैसी लोलुपता थी जो अपने ज़माने में अच्छे से अच्छे शिकार का स्वाद ले चुके थे और साथ ही उन्हें अपनी बेबसी पर क्षोभ भी था; और वे अपनी इन भावनाओं को छुपाने का भी कोई प्रयत्न नहीं कर रहे थे। उसके लिए, जो एक औरत थी और एक मां थी, जिसे अपने बेटे का शरीर आत्मा से भी बढ़कर प्रिय था, यह देखना अत्यंत भयानक बात थी कि उन लोगों की नीरस आंखें उसके बेटे के चेहरे पर रेंगें, उसके सीने को, उसके कंधों को, उसकी बांहों को छुएं, जीवन से भरपूर उसके मांस से इस तरह रगड़ खायें, मानो इस घर्षण से स्वयं उनकी गठियाई हुई नसों में बहते हुए ख़ून और अशक्त मांसपेशियों में फिर से गर्मी आ जायेगी। इन नौजवानों को ध्यान से देखकर, जिन्हें वे सज़ा देने का निश्चय कर चुके थे, और जिनके शरीरों से वे अपने आपको हमेशा के लिए वंचित करने जा रहे थे, उनके हृदय में जो लिप्सा और ईर्ष्या उत्पन्न हुई थी उससे उनके शरीर में फिर कुछ जान पड़ गयी थी। मां कल्पना करने लगी कि पावेल को भी इस चिपचिपे अरुचिकर स्पर्श का आभास था और उसने उसे सिहरकर देखा।

पावेल मां को बड़े शान्त भाव से और प्यार से देख रहा था, उसकी दृष्टि में किंचित शैथिल्य था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह मां की ओर देखकर सिर हिला देता और मुस्करा देता।

"शीघ्र ही – आज़ादी!" मां ने उसकी मुस्कराहट में ये शब्द पढ़े; अपने बेटे की मुस्कराहट उसे ऐसी लग रही थी मानो वह उसे बड़े प्यार से सहला रही हो।

इसी समय सब जज उठ खड़े हुए। मां भी उठ खड़ी हुई।

"लो, वे चल दिये!" सिज़ोव ने कहा।

"सज़ा तै करने?" मां ने पूछा।

"हां ..."

अब तक मां के हृदय में जो तनाव था वह सहसा टूट गया और थकन के मारे उसे मूर्च्छा-सी आने लगी। उसकी भवें फड़कने लगीं और उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलक आयीं। उसके हृदय पर व्यथा और निराशा का एक बोझ-सा गिरा और शीघ्र ही अदालत और जजों के प्रति तिरस्कार में बदल गया। मां के सिर में पीड़ा हो रही थी; उसने अपने एक हाथ से माथा दबाया और ऊपर देखा: क़ैदियों के सगे-संबंधी कटहरे के पास चले गये थे और अदालत का कमरा लोगों की बातचीत से गूंज रहा था। वह भी पावेल के पास चली गयी और उसका हाथ पकड़कर रोने लगी, उसका हृदय व्यथा और हर्ष से आन्दोलित हो उठा था, वह परस्पर विरोधी भावनाओं के जाल में फंसी हुई थी। पावेल बड़े प्यार से उससे बातें कर रहा था और उक्रइनी हंसी-मज़ाक़ कर रहा था।

सभी औरतें रो रही थीं, व्यथा के कारण इतना नहीं जितना आदत से मजबूर होकर। उन पर अनजाने में अचानक कोई मुसीबत का पहाड़ तो टूट नहीं पड़ा था; उन्हें केवल अपने बच्चों से मजबूर होकर बिछुड़ना पड़ रहा था और इसी लिए वे उदास थीं। पर दिन भर में उन्होंने जो कुछ देखा और सुना था उससे उनकी यह व्यथा भी कम हो गयी थी। माता-पिता अपने बेटों को मिश्रित भावनाओं से देख रहे थे, जिसमें नौजवानी के प्रति अविश्वास और अपने को श्रेष्ठ समझने की हमेशा की भावना ने विचित्र ढंग से घुल-मिलकर एक ऐसी भावना का रूप धारण कर लिया था जो बहुत कुछ सम्मान की भावना से मिलती-जुलती थी। अपने भावी जीवन के बारे में उनके हृदय में जो निराशापूर्ण विचार थे वे आश्चर्य की उस भावना में दब गये जो इन

नौजवानों ने उनके हृदय में उत्पन्न की थी, जो जीवन के एक दूसरे और बेहतर तरीक़े की संभावना के बारे में इतना निडर होकर बोले थे। भावनाएं दबकर रह गयी थीं, क्योंकि लोग उन्हें व्यक्त करने में असमर्थ थे; शब्दों के भंडार लुटाये जा रहे थे, पर कपड़ों, उनकी धुलाई और स्वास्थ्य जैसी साधारण चीज़ों पर।

बड़े बुकिन ने अपने छोटे भाई से बातें करते हुए हाथ हिलाकर कहा :

"इंसाफ़ बड़ी चीज़ है! बस और कुछ नहीं!"

"मैना का ख़याल रखना..." छोटे भाई ने उत्तर दिया।

"हां, ज़रूर! .."

सिज़ोव ने अपने भतीजे की बांह पकड़कर कहा :

"अच्छा फ्योदोर, तो तुम हम लोगों को छोड़कर जा रहे हो..."

फ्योदोर ने झुककर उसके कान में कुछ कहा और बहुत ख़ुश होकर मुस्कराने लगा। संतरी भी मुस्करा दिया, पर शीघ्र ही अपनी मुस्कराहट रोककर गला साफ़ करने लगा।

दूसरी औरतों की तरह मां भी अपने बेटे से कपड़ों और उसके स्वास्थ्य के बारे में बातें कर रही थी, पर वह उससे साशा के बारे में, अपने बारे में और स्वयं उसके बारे में हज़ारों सवाल पूछना चाहती थी। इन सब बातों के ऊपर अपने बेटे के प्रति असीम प्यार, और उसे ख़ुश करने की, उससे प्यार-भरा व्यवहार करने की इच्छा छायी हुई थी। भावी की आशंका धीरे-धीरे ग़ायब हो गयी, केवल जजों को और मुक़द्दमे की भयानक बात को याद करके वह खिन्न होकर कांप उठती थी। उसके हृदय में किसी अत्यंत उल्लासमय और ज्योतिर्मय वस्तु का वास हो गया था; वह पूरी तरह तो नहीं समझ सकी कि वह क्या चीज़ थी, पर उसने झिझकते-झिझकते उसे स्वीकार कर लिया। उक्रइनी को दूसरे लोगों से बातें करते देखकर और यह अनुभव करके कि उसे पावेल से भी ज़्यादा किसी की ममता की ज़रूरत है, मां उसकी तरफ़ मुड़ी।

"नहीं पसन्द आया मुझे तुम्हारा यह मुक़द्दमा!" मां ने कहा।

"क्यों, मां?" उसने बड़ी कृतज्ञता से मुस्कराते हुए पूछा। "बड़ी पुरानी चक्की है, पीसती चली जा रही है..."

"उससे किसी के दिल में डर पैदा नहीं हुआ और किसी को कुछ पता भी नहीं चला। कौन सही है, कौन ग़लत?" मां ने रुक-रुककर कहा।

"ओहो, तो तुम यह चाहती थीं!" अन्द्रेई ने आश्चर्य से कहा। "तो तुम्हारा यह ख़याल था कि उन्हें सच्चाई का पता लगाने में दिलचस्पी है?.."

"मैं तो समझती थी कि मुक़द्दमा बहुत भयानक होगा..." मां ने गहरी सांस लेकर मुस्कराते हुए कहा।

"जज आ रहे हैं!"

लोग जल्दी-जल्दी जाकर अपनी जगहों पर बैठ गये।

बड़े जज एक हाथ मेज़ पर टिकाये और दूसरे में एक काग़ज़ अपनी आंखों के सामने किये आगे को झुके हुए खड़े थे। उन्होंने भौंरे की तरह भनभनाती हुई बारीक आवाज़ में पढ़ना शुरू किया।

"सज़ा सुना रहे हैं!" सिज़ोव ने आगे झुककर ध्यान से सुनते हुए कहा।

कमरे में सन्नाटा छा गया। सब लोग बूढ़े पर नज़रें ज़माये खड़े थे। वह छोटा सा दुबला-पतला आदमी सीधा तनकर खड़ा हुआ – ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी का अदृश्य हाथ एक डंडा उठाये हो। दूसरे जज भी खड़े हो गये: ज़िलाधीश एक तरफ़ को सिर झुकाये छत पर अपनी नज़रें जमाये हुए था; मेयर अपने दोनों हाथ सीने पर बांधे हुए था और मार्शल आफ़ दि नोबिलिटी अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था। वह बीमार सूरतवाला जज, उसका तोंदल साथी और सरकारी वकील सब क़ैदियों को घूर रहे थे; जजों के पीछे ज़ार तस्वीर के चौखटे में से नीचे घूरकर देख रहा था, वह बड़ी तड़क-भड़कदार लाल वर्दी पहने हुए था और उसके चेहरे पर उदासीनता का भाव था और इस समय उसके चेहरे पर एक मक्खी रेंग रही थी।

"निर्वासन!" सिज़ोव ने बड़े संतोष की सांस लेकर कहा। "चलो, शुक्र है, फ़ैसला तो हो गया। मैं तो डर रहा था कि कठोर परिश्रम के साथ निर्वासन की सज़ा होगी! मां, यह बेहतर है!"

"मैं तो पहले ही से जानती थी कि यही होगा," मां ने थके हुए स्वर में कहा।

"ख़ैर, अब तो यक़ीन हो गया! उनका कुछ ठीक नहीं, न जाने क्या कर देते!" उसने मुड़कर क़ैदियों की तरफ़ देखा जिन्हें बाहर लाया जा रहा था।

"विदा, फ़्योदोर!" उसने चिल्लाकर कहा। "और तुम बाक़ी सब लोगों को भी! भगवान तुम्हें सुखी रखे!"

मां ने चुपचाप अपने बेटे और दूसरे लोगों की तरफ़ देखकर सिर हिलाया। वह रोना चाहती थी, पर ऐसा करते उसे शरम आती थी।

२७

अदालत के कमरे से बाहर निकलकर जब मां ने देखा कि रात हो चुकी है, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। चौराहों पर बत्तियां जल रही थीं और आकाश पर तारे चमक रहे थे। कचहरी के पास लोगों के झुंड के झुंड जमा हो गये थे; सर्द हवा में बर्फ़ के चरमराने की आवाज़ गूंज रही थी; युवकों के स्वर सुनायी दे रहे थे। एक आदमी ने जो भूरे रंग का कंटोप पहने था, सिज़ोव के चेहरे को घूरकर देखा।

"क्या सज़ा सुनायी गयी?" उसने जल्दी से पूछा।

"निर्वासन।"

"सबको?"

"हां।"

"शुक्रिया!"

वह आदमी चला गया।

"देखा?" सिज़ोव ने कहा। "लोगों को बड़ी दिलचस्पी है..."

सहसा लगभग एक दर्जन नौजवान लड़के-लड़कियों ने उन्हें घेर लिया और उनके ज़ोर-ज़ोर से जोश में आकर बोलने की आवाज़ सुनकर दूसरे लोग भी उस छोटी-सी भीड़ की तरफ़ खिंचकर आ गये। मां और सिज़ोव रुक गये। उन लोगों ने उनसे पूछा कि क्या सज़ा मिली, क़ैदियों का बर्ताव कैसा रहा, कौन-कौन बोला और किसने-किसने क्या-क्या कहा; ये सब प्रश्न इतनी सच्ची उत्सुकता से पूछे जा रहे थे कि मां ने बड़ी ख़ुशी से उनका जवाब दिया।

"सज्जनो! यह पावेल व्लासोव की मां हैं. किसी ने कहा और फ़ौरन ख़ामोशी छा गयी।

"मैं आपसे हाथ मिलाना चाहता हूं!"

किसी ने अपने मज़बूत हाथ में मां की उंगलियां दबा लीं और किसी ने उत्तेजित स्वर में कहा:

"आपके बेटे का साहस हम सब के लिए एक आदर्श है..."

"रूसी मज़दूर ज़िंदाबाद!" किसी ने ज़ोर से नारा लगाया।

नारे बढ़ते गये और तेज़ होते गये; कभी यहां से नारा लगता तो कभी वहां से। लोग चारों तरफ़ से भागे हुए आ रहे थे और सिज़ोव

तथा मां के चारों ओर भीड़ लगाकर खड़े होते जा रहे थे। पुलिसवालों ने सीटियां बजायीं, पर वे इन नारों की आवाज़ को दबा न सकीं; सिज़ोव हंसने लगा। मां को यह सब एक सुखद स्वप्न सा लग रहा था। वह मुस्करा रही थी और झुक-झुककर लोगों से हाथ मिला रही थी, उसकी आंखों में हर्ष के आंसू छलक आये थे। थकन के मारे उसके पांवों में पीड़ा हो रही थी पर भावनाओं से उमड़ते हुए उसके हृदय में उसके अनुभवों का प्रतिबिम्ब उतना ही साफ़ दिखायी दे रहा था जैसे किसी झील के निर्मल पानी में। उसके पास ही खड़ा हुआ कोई व्यक्ति स्पष्ट स्वर में, पर गुस्से से बोलने लगा।

"साथियो, जो राक्षस रूस की जनता को खाये जा रहा है आज उसने अपने लालची जबड़ों में..."

"मां, आओ, हम लोग चलें!" सिज़ोव ने कहा।

उसी समय साशा वहां आयी और मां की बांह पकड़कर उसे सड़क के दूसरी तरफ़ लेकर चली गयी।

"इससे पहले कि कोई लड़ाई-झगड़ा शुरू हो या लोग गिरफ़्तार किये जाने लगें, तुम यहां से चली आओ," उसने मां से कहा। "निर्वासन हुआ? साइबेरिया भेजे जायेंगे?"

"हां!"

"वह कैसा बोला? लेकिन मैं तो जानती हूं – वह सबसे दृढ़ पर सबसे सादा है। और साथ ही सबसे कठोर भी। उसका स्वभाव बहुत कोमल और संवेदनशील है, पर वह अपना यह स्वभाव प्रकट करने से डरता है।"

साशा के ये प्यार-भरे शब्द सुनकर, जो उसने इतने उत्साह से दबी ज़बान में कहे थे, मां का हृदय शान्त हुआ और उसमें नयी शक्ति आ गयी।

"तुम कब उसके पास जाओगी?" मां ने साशा की बांह बड़े प्यार से दबाते हुए उससे पूछा।

"ज्यों ही कोई दूसरा आदमी मेरा काम संभालने के लिए मिल जायेगा," लड़की ने बड़े विश्वास के साथ अपने सामने शून्य में घूरते हुए उत्तर दिया। "बात यह है कि मुझे भी सज़ा सुनायी जानेवाली है। मेरा ख़याल है कि मुझे साइबेरिया निर्वासित कर दिया जायेगा। अगर ऐसा हुआ, तो मैं कहूंगी कि मुझे भी वहीं भेज दिया जाये जहां वह है।"

"अगर ऐसा हो, तो उससे मेरा सलाम कहना!" सिज़ोव की आवाज़ आयी। "बस इतना कह देना 'सिज़ोव ने सलाम कहा है।' वह मुझे जानता है। मैं फ़्योदोर माज़िन का चाचा हूं..."

साशा ने मुड़कर अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"मैं फ़्योदोर को जानती हूं। मेरा नाम साशा है।"

"बाप का नाम क्या है?"

साशा नज़रें जमाये उसे देखती रही।

"मेरा बाप नहीं है," उसने कहा।

"मर गया?"

"नहीं, मरा तो नहीं है!" लड़की के स्वर में एक हठ और दृढ़ता का भाव आ गया था जो उसके चेहरे पर भी प्रतिबिम्बित हो रहा था। "वह ज़मींदार है और आजकल गांवों का हाकिम है–किसानों को लूटता है..."

"हुं:!" सिज़ोव ने कुछ बौखलाकर कहा। इसके बाद ख़ामोशी छा गयी; वह उस लड़की के बग़ल में चलता रहा और कनखियों से उसे देखता रहा।

"अच्छा, मां, मैं तो चलता हूं!" उसने आख़िरकार कहा। "मुझे यहां से बायीं तरफ़ मुड़ना है। अच्छा, बेटी, मैं चलता हूं। अपने बाप की तरफ़ तुम्हारा रवैया बहुत सख़्त है, क्यों, है न? ख़ैर, वह तुम्हारा मामला है, तुम जानो..."

"अगर तुम्हारा बेटा निकम्मा होता, दूसरों को नुक़सान पहुंचाता और तुम्हें उससे नफ़रत होती, तो क्या तुम उसकी निंदा न करते?" साशा ने जोश में आकर ऊंचे स्वर में कहा।

"हां–मुमकिन है मैं करता!" बूढ़े ने एक क्षण रुककर उत्तर दिया।

"अगर तुम्हें इंसाफ़ अपने बेटे से ज़्यादा प्यारा होता, तो तुम ज़रूर करते और मुझे इंसाफ़ अपने बाप से ज़्यादा प्यारा है..."

सिज़ोव ने मुस्कराकर सिर हिला दिया।

"ख़ैर, तुमसे पार पाना मुश्किल है!" उसने आह भरकर कहा। "अगर तुम इसी तरह अपने हठ पर क़ायम रहीं, तो बूढ़ों को भी नीचा दिखा दोगी–बड़ा जोश है तुममें!.. अच्छा, तो मैं चला, ख़ुश रहो! लेकिन अगर लोगों के साथ इतनी सख़्ती का रवैया न रखो, तो क्या हर्ज है, क्यों? अच्छा, पेलागेया निलोवना, मैं चलता हूं!.

जब पावेल से मुलाक़ात हो, तो कहना कि मैंने उसका भाषण सुना था। सब बातें तो मेरी समझ में नहीं आयीं, कुछ बातों को पचाना आसान भी नहीं था, लेकिन कुल मिलाकर भाषण ठीक था!"

उसने टोपी उठाकर सलाम किया और धीरे-धीरे नुक्कड़ पर मुड़ गया।

"अच्छा आदमी मालूम होता है!" साशा ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से उसे जाता देखकर मुस्कराते हुए कहा।

मां ने देखा कि आज उस लड़की के चेहरे पर हमेशा से ज़्यादा कोमलता और मधुरता थी।

घर पहुंचकर वे दोनों कोच पर एक-दूसरे के बग़ल में बैठ गयीं और साशा की पावेल के पास जाने की योजना के बारें में बातें करती रहीं। निस्तब्धता शान्तिमय थी। साशा ने अपनी भवें ऊपर उठाकर अपनी बड़ी-बड़ी स्वप्निल आंखों से दूर शून्य में देखना आरंभ किया; उसके पीले चेहरे पर शान्त चिंतन का भाव था।

"जब तुम्हारे बच्चे होंगे मैं उनकी धाय बनकर आऊंगी। फिर वहां हमारी ज़िंदगी किसी भी प्रकार यहां से बदतर नहीं रहेगी। पावेल को काम ढूंढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी – वह अपने हाथों से कोई भी काम कर सकता है..."

साशा ने मां को प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा।

"क्या तुम अभी उसके साथ जाना नहीं चाहतीं?" उसने पूछा।

"किस काम आऊंगी मैं उसके?" मां ने आह भरकर उत्तर दिया। "अगर उसने भागना चाहा, तो मैं उसकी राह में बाधा बन जाऊंगी। वह नहीं चाहेगा कि मैं जाऊं..."

साशा ने सिर हिला दिया।

"तुम ठीक कहती हो। वह नहीं चाहेगा।"

"और फिर मुझे यहां अपना भी काम है!" मां ने किंचित गर्व के भाव से कहा।

"हां!" साशा ने विचारमग्न होकर उत्तर दिया। "यह अच्छी बात है..."

सहसा उसने अपना हाथ इस प्रकार हिलाया, मानो कुछ फेंक रही हो और शान्त भाव से सीधे-सादे ढंग से बोलने लगी:

"वह वहां हमेशा तो रहेगा नहीं। वह ज़रूर भाग आयेगा..."

"और तुम?.. और अगर बच्चा हुआ तो.."

"जब होगा तब देखा जायेगा। उसे मेरे बारे में नहीं सोचना चाहिये और मैं भी कभी उसके रास्ते में बाधा बनकर नहीं आऊंगी। उससे अलग रहना मेरे लिए कठिन होगा, पर मैं बर्दाश्त कर लूंगी। मैं उसकी राह में कभी बाधा नहीं बनूंगी!"

मां जानती थी कि साशा जो कुछ कह रही है उसे पूरा करने की वह क्षमता रखती है और यह सोचकर उसे उस लड़की पर तरस आने लगा।

"मेरी बच्ची, तुम्हें बहुत दुःख उठाना पड़ेगा!" मां ने साशा को सीने से लगाकर कहा।

साशा धीरे से मुस्करा दी और मां से और चिपटकर खड़ी हो गयी।

उसी समय निकोलाई अंदर आया। वह थका हुआ और परेशान था।

"साशा, अभी मौक़ा है तुम यहां से खिसक जाओ!" उसने अपना कोट उतारते हुए कहा। "दो जासूस सुबह से मेरे पीछे लगे हैं – इतने खुले ढंग से मेरा पीछा कर रहे हैं कि मालूम होता है मैं गिरफ़्तार कर लिया जाऊंगा। इस मामले में मेरी अन्तरात्मा मुझे कभी धोखा नहीं देती। कुछ हुआ ज़रूर है। हां, यह रहा पावेल का भाषण – हमने इसे छापने का फ़ैसला किया है। तुम इसे लूदमीला के पास ले जाओ और उससे कहना कि इसे जल्दी से जल्दी छाप दे। पेलागेया निलोवना, पावेल ने बहुत अच्छा भाषण दिया!.. साशा, जासूसों से होशियार रहना..."

बात करते हुए वह अपने सर्दी से ठिठुरे हुए हाथ ज़ोर से रगड़ता रहा और फिर मेज़ के पास जाकर दराज़ों में से काग़ज़ निकालने लगा। कुछ काग़ज़ तो उसने फाड़ डाले और कुछ को अलग रख दिया। वह परेशान हुआ और चिंतित दिखायी दे रहा था।

"अभी बहुत दिन नहीं हुए मैंने इन दराज़ों को साफ़ किया है – न जाने कहां से ये नये काग़ज़ फिर आ गये! पेलागेया निलोवना, मेरी राय में अच्छा यही होगा कि तुम भी रात घर पर न रहो। तुम्हारा क्या ख़्याल है? वह तमाशा देखकर तुम ऊब जाओगी। और फिर इसका भी डर है कि शायद वे लोग तुम्हें भी गिरफ़्तार कर लें। पावेल का भाषण बांटने के लिए हमें इधर-उधर भेजने के लिए तुम्हारी ज़रूरत होगी..."

"वे लोग मुझे गिरफ़्तार करके क्या करेंगे?"

निकोलाई ने अपना हाथ झटककर दृढ़तापूर्वक कहा:

"मैं इस तरह के ख़तरे को बहुत दूर से सूंघ लेता हूं। और फिर तुम लूदमीला की भी बड़ी मदद कर सकती हो। बेकार ख़तरा मोल लेने से क्या फ़ायदा..."

मां यह सोचकर गद्गद् हो उठी कि वह अपने बेटे का भाषण छापने में मदद देगी।

"अगर ऐसा है, तो मैं चली जाऊंगी," उसने कहा।

और फिर कुछ देर रुककर उसने दृढ़तापूर्वक कहा:

"ईश्वर की कृपा से अब मुझे किसी भी चीज़ का डर बाक़ी नहीं रह गया!" और उसे अपनी इस बात पर स्वयं ही आश्चर्य होने लगा।

"अच्छा है!" निकोलाई ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा। "मगर यह तो मुझे बताती जाओ कि मेरा सूटकेस और कपड़े कहां हैं। तुमने तो घर को इतनी पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में कर लिया है कि मैं अपनी चीज़ें भी नहीं ढूंढ़ सकता।"

साशा अंगीठी में काग़ज़ जला रही थी और राख कोयलों में मिलाती जा रही थी।

"साशा, अब तुम जाओ!" निकोलाई ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। "अच्छा, विदा! अगर कोई अच्छी किताब आये, तो मुझे भेजना न भूलना। विदा, प्रिय साथी! सावधान रहना..."

"क्या लम्बी सज़ा होने का डर है?" साशा ने पूछा।

"कौन जाने? शायद मेरे ख़िलाफ़ कुछ तो है ही। पेलागेया निलोवना, तुम भी साथ क्यों न चली जाओ? एक साथ दो आदमियों का पीछा करना मुश्किल होता है।"

"अच्छी बात है!" मां ने उत्तर दिया, "मैं अभी कपड़े पहने लेती हूं..."

उसने निकोलाई को बड़े ध्यान से देखा पर उसमें कोई अन्तर नहीं हुआ था; केवल उसके चेहरे पर हमेशा जो कोमलता और मृदुता का भाव रहता था उस पर चिन्ता के हल्के-हल्के बादल छा गये थे। उसके व्यवहार में बिल्कुल घबराहट नहीं थी; इस व्यक्ति में, जो मां को दूसरों से अधिक प्रिय हो गया था, न ही उत्तेजना के कोई चिन्ह थे। उसने हमेशा सब का बराबर ध्यान रखा था, वह हमेशा सबके साथ उदारता और शान्त स्वभाव से पेश आता और गंभीरता के साथ सबसे

अकेला रहता था। और इस समय भी वह सबके लिए वही था जो हमेशा से था – एक ऐसा आदमी जिसका अपना एक गुप्त आन्तरिक जीवन था और यह जीवन दूसरों के जीवन से श्रेष्ठतर था। मां जानती थी कि निकोलाई अपनी और मां की आत्मा में एक समानता पाता था और मां के हृदय में उसके प्रति ऐसा प्यार था जो अभी तक कोई निश्चित रूप धारण नहीं कर पाया था। अब उसके हृदय में निकोलाई के लिए जो वेदना थी वह असह्य थी, पर वह उसे प्रदर्शित करने का साहस नहीं कर सकती थी, क्योंकि इससे निकोलाई बिल्कुल बौखला जाता और कुछ खिसिया भी जाता। उस दशा में वह कुछ हास्यास्पद भी प्रतीत होता और मां नहीं चाहती थी कि वह हास्यास्पद प्रतीत हो।

वह जब फिर कमरे में आयी, तो उसने देखा कि निकोलाई साशा का हाथ पकड़े खड़ा है।

"बहुत ही उम्दा! मैं दावे से कहता हूं कि तुम दोनों के लिए यही सबसे ठीक भी है," वह कह रहा था। "थोड़े से निजी सुख से किसी को कोई नुक़सान नहीं होता। पेलागेया निलोवना, तुम तैयार हो गयीं?"

निकोलाई अपना चश्मा ऊपर को सरकाकर मुस्कराता हुआ मां के पास आ गया।

"अच्छा, विदा – तीन या चार महीने के लिए, ज़्यादा से ज़्यादा छः महीने का ख़्याल है मेरा। छः महीने – ज़िंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा होता है... अपना ध्यान रखना, रखोगी न? लाओ, चलने से पहले एक बार प्यार कर लूं..."

वह देखने में बहुत दुबला-पतला और नाज़ुक था; उसने अपने मज़बूत हाथ मां के गले में डाल दिये और उसकी आंखों में आंखें डालकर देखने लगा।

"ऐसा मालूम होता है कि मुझे तुमसे प्रेम हो गया है," उसने हंसकर कहा। "तुम्हें इस तरह सीने से लगाये खड़ा हूं कि..."

मां ने बिना कुछ कहे उसके माथे और गालों पर प्यार किया, पर उसकी बांहें कांप रही थीं। उसने जल्दी से अपने हाथ हटा लिये कि कहीं वह देख न ले।

"कल ख़ास तौर पर सावधान रहना! सुबह किसी लड़के को इधर भेज देना कि आकर ख़बर ले जाये – लूदमीला जानती है एक ऐसे लड़के को। अच्छा, साथियो, विदा! सब ठीक है!.."

बाहर निकलकर साशा ने चुपके से कहा:

"अगर इसे कभी मौत का सामना करने भी जाना पड़ा, तो इतने ही सीधे-सादे ढंग से चला जायेगा, बस थोड़ी-सी जल्दी और करेगा। और जब मौत आंखों में आंखें डाले इसे घूर रही होगी, तब भी यह अपना चश्मा ऊपर को सरकाकर मरने से पहले कहेगा: 'बहुत खूब!'"

"मैं उसे बहुत प्यार करती हूं!" मां ने धीमे स्वर में कहा।

"उसे देखकर मुझे आश्चर्य ज़रूर होता है, पर मैं उससे प्यार नहीं करती! मेरे दिल में उसकी बेहद इज़्ज़त है। वह बहुत नेक है और कभी-कभी उसके बर्ताव में कोमलता भी आ जाती है, पर उसमें एक नीरसता है, उसमें मानव भावनाओं की कुछ कमी है... मुझे ऐसा लगता है कि कोई हमारा पीछा कर रहा है। बेहतर यही है कि हम लोग यहां से अलग-अलग हो जायें। अगर तुम्हें ख़्याल हो कि कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है, तो लूदमीला के यहां न जाना।"

"मैं जानती हूं!" मां ने कहा।

"बिल्कुल न जाना!" साशा ने आग्रह करते हुए कहा। "मेरे यहां चली आना। अच्छा, तो मैं चलती हूं, नमस्ते!"

वह जल्दी से मुड़ी और जिधर से आयी थी उधर ही लौट पड़ी।

२८

कुछ ही मिनट बाद मां लूदमीला के छोटे-से कमरे में अंगीठी के सामने बैठी आग ताप रही थी। लूदमीला काली पोशाक पहने और चमड़े की पेटी लगाये धीरे-धीरे कमरे में टहल रही थी; कमरा उसकी पोशाक की सरसराहट और उसकी रोबदार आवाज़ से गूंज रहा था।

अंगीठी से लकड़ी के चटचटाने की आवाज़ आ रही थी और आग की लपटें हवा को अपनी ओर खींचकर गरज रही थीं; लूदमीला की आवाज़ सुगम प्रवाह से बह रही थी।

"लोग दुष्ट उतने नहीं हैं जितने कि वे मूर्ख हैं। वे सिर्फ़ उसी चीज़ को देखते हैं जो बिल्कुल उनकी आंख के सामने हो और जिसे वे आसानी से समझ सकें। लेकिन जो चीज़ बिल्कुल पास होती है उसकी कोई क़दर नहीं होती – दूर की चीज़ों की ही क़दर होती है। जब हम इस बात की तह में जाकर देखते हैं तो मालूम होता है कि अगर ज़िंदगी का ढर्रा

दूसरा होता, अगर ज़िंदगी ज़्यादा आसान होती और लोग ज़्यादा समझदारी से काम लेते तो सभी लोग ज़्यादा सुखी रहते और उनका जीवन बेहतर हो जाता। पर इस सबके लिए बहुत यत्न करना पड़ेगा ..."

सहसा वह मां के सामने आकर ठहर गयी।

"मुझे लोगों से मिलने का ज़्यादा मौक़ा नहीं मिलता और जब मिलती हूं, तो व्याख्यान देने लगती हूं," उसने मानो सफ़ाई पेश करते हुए कहा। "अजीब-सा लगता है न?"

"ऐसी क्या बात है?" मां ने कहा। वह यह मालूम करने का प्रयत्न कर रही थी कि यह औरत पर्चे कहां छापती है, पर वह कुछ भी पता न लगा सकी। इस कमरे में, जिसकी तीन खिड़कियां सड़क पर खुलती थीं, एक कोच, एक किताबों की अल्मारी, एक मेज़, कुछ कुर्सियां और एक पलंग था। एक कोने में हाथ धोने का तसला लगा था और दूसरे कोने में चूल्हा था। दीवार पर तस्वीरें टंगी थीं। हर चीज़ साफ़-सुथरी और क़रीने से रखी हुई थी और इन सब चीज़ों पर मकान की मालकिन के कठोर व्यक्तित्व की नीरस छाप थी। मां समझ रही थीं कि कहीं कुछ छुपा ज़रूर है, पर वह समझ नहीं पा रही थी कि कहां। उसने दरवाज़ों की तरफ़ देखा। एक दरवाज़े से तो वह अंदर आयी थी जो बाहर एक छोटी-सी ड्योढ़ी में खुलता था; चूल्हे के बग़ल में एक और पतला-सा ऊंचा दरवाज़ा था।

"मैं काम से आयी हूं!" मां ने कहा; यह देखकर कि लूदमीला उसे बड़े ध्यान से देख रही है वह कुछ सिटपिटा गयी थी।

"मैं जानती हूं! काम के अलावा कोई मुझसे मिलने आता ही नहीं है ..."

मां को लूदमीला के स्वर में एक विचित्र-सी बात नज़र आयी। उसके पतले-पतले होंटों पर मुस्कराहट की एक हल्की-सी झलक थी और चश्मे के पीछे उसकी धुंधली-सी आंखें चमक रही थीं। मां ने नज़रें फेरकर पावेल का भाषण उसकी तरफ़ बढ़ा दिया।

"लो, यह लो, उन लोगों ने कहा है कि जितनी जल्दी हो सके इसे छाप दो ..."

फिर उसने उसे बताया कि निकोलाई के गिरफ़्तार होने का ख़तरा है।

लूदमीला ने चुपके से पर्चा अपनी पेटी में खोंस लिया और बैठ गयी। उसकी ऐनक के शीशों में आग की लाल-लाल रोशनी चमक रही

थी और उसकी निश्चल मुखाकृति पर आग का उष्ण प्रकाश नाच रहा था।

"अगर वे लोग मुझे गिरफ़्तार करने आये, तो मैं उन्हें गोली मार दूंगी!" मां जब अपनी बात ख़त्म कर चुकी तो लूदमीला ने धीरे से पर दृढ़तापूर्वक कहा। "मुझे हिंसा के विरुद्ध अपनी रक्षा करने का अधिकार है और जब मैं दूसरों को लड़ने के लिए ललकारती हूं, तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं भी लड़ूं।"

आग की लपटों की चमक उसके चेहरे पर से ग़ायब हो गयी और उसकी मुद्रा हमेशा की तरह गंभीर और कठोर दिखायी देने लगी।

"यह ज़िंदगी का कोई तरीक़ा नहीं है!" मां के दिमाग़ में अचानक यह विचार आया और उसका हृदय लूदमीला के प्रति समवेदना से भर गया।

लूदमीला अनमने भाव से पावेल का भाषण पढ़ने लगी, पर जैसे-जैसे वह आगे पढ़ती गयी उसकी दिलचस्पी बढ़ती गयी और आख़िर में पहुंचकर वह बड़ी अधीरता और उत्सुकता से पन्ने पलटने लगी। भाषण पूरा पढ़कर वह उठी और अपने कंधे सीधे करके मां के पास आयी।

"बहुत अच्छा भाषण है!" उसने कहा।

एक क्षण तक वह सिर झुकाये विचारों में डूबी खड़ी रही।

"मैं तुमसे तुम्हारे बेटे के बारे में बात करना नहीं चाहती थी – मैं उससे कभी नहीं मिली हूं और मैं दुःखद विषयों को छेड़ना नहीं चाहती। मैं जानती हूं कि जब किसी ऐसे आदमी को, जो हमें बहुत प्यारा हो, कहीं दूर निर्वासित किया जाता है, तो कितना दुःख होता है। लेकिन मैं सोच रही थी क्या सचमुच तुम्हें ऐसे बेटे की मां होने की बहुत ख़ुशी है?.."

"बहुत!" मां ने कहा।

"और डर भी नहीं लगता?"

"अब नहीं लगता..." मां ने गंभीर मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया।

लूदमीला अपने सीधे बालों को एक हाथ से ठीक करती हुई खिड़की की तरफ़ देखने लगी। उसके चेहरे पर एक परछाईं-सी दौड़ गयी – कदाचित यह दबी हुई मुस्कराहट की छाया थी।

"मैं अभी अक्षर बिठाये देती हूं। तुम लेट जाओ। आज का दिन तुम्हारे ऊपर बहुत सख़्त बीता है, तुम थक गयी होगी। यहां इस बिस्तर

पर लेट जाओ। मैं तो सोऊंगी नहीं, मुमकिन है रात को मैं तुम्हें मदद करने के लिए जगाऊं। जब सोने लगो तो बत्ती बुझा देना।"

उसने अंगीठी में दो लकड़ियां डाल दीं और उस पतले-से दरवाज़े से अंदर जाकर दरवाज़ा कसकर बंद कर लिया। मां ने उसे अंदर जाते देखा और कपड़े बदलते समय भी वह उसी के बारे में सोचती रही:

"उसे किसी बात का बड़ा दुःख ..."

मां बहुत थक गयी थी, पर वह एक विचित्र शान्ति का अनुभव कर रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि हर चीज़ एक कोमल मंद प्रकाश से आलोकित हो उठी है और यही प्रकाश उसकी आत्मा में भी फैला हुआ है। वह पहले भी इस शान्ति का अनुभव कर चुकी थी। जब भी उसकी भावनाओं पर कोई बहुत बड़ा दबाव पड़ता था उसके बाद हमेशा उसे इस शान्ति का आभास होता था। एक समय ऐसा भी था जब उसे इससे डर लगता था पर अब इससे उसकी आत्मा और भी विस्तृत हो उठती थी और उसमें एक महान शक्तिशाली भावना का बल आ जाता था। बत्ती बुझाकर वह ठंडे बिस्तर पर कम्बल ओढ़कर आराम से लेट गयी और शीघ्र ही गहरी नींद में सो गयी ...

जब उसकी आंख खुली, तो कमरे में सर्दियों के निर्मल दिवस का शीतल श्वेत प्रकाश फैला हुआ था। लूदमीला ने कोच पर से, जहां वह हाथ में एक किताब लिये लेटी हुई थी, आंख उठाकर देखा और एक असाधारण ढंग से मुस्करा दी।

"कमाल हो गया!" मां ने कुछ खिसियाकर कहा। "मैं भी अजीब हूं! क्या बहुत देर हो गयी?"

"सलाम!" लूदमीला ने उत्तर दिया। "दस बजनेवाले हैं, उठो, चाय पियेंगे।"

"तुमने मुझे जगा क्यों नहीं लिया?"

"मैं जगाने जा रही थी, लेकिन जब मैं तुम्हारे पास गयी, तो तुम सोते-सोते इतने प्यारे ढंग से मुस्करा रही थीं कि मेरा जी उठाने को नहीं हुआ ..."

वह बड़ी फुर्ती से कोच पर से उठी और मां के पलंग के पास जाकर उसके ऊपर झुक गयी। उस औरत की आंखों में मां ने एक ऐसा भाव देखा जिसे वह पहचानती थी और प्यार करती थी।

"मुझे ऐसा लगा कि तुम्हारी नींद में विघ्न डालना तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय होगा। तुम शायद कोई सुखद स्वप्न देख रही थीं ..."

"नहीं तो!"

"कोई बात नहीं है! मुझे तुम्हारी मुस्कराहट बहुत अच्छी लगी। वह इतनी शान्त और इतनी अच्छी और... इतनी सर्वव्यापी थी कि बस!"

लूदमीला हंस दी, उसकी हंसी में मख़मल जैसी नरमी थी।

"तुम्हें मुस्कराता देखकर मैं तुम्हारे बारे में सोचने लगी... क्या तुम्हारा जीवन बहुत दुःखी है?"

मां की भवें फड़कने लगीं और वह ख़ुद भी सोचने लगी कि उसका जीवन दुःखी है कि नहीं।

"ज़रूर है!" लूदमीला ने सहसा कहा।

"मैं ठीक से नहीं कह सकती!" मां ने धीरे से कहा। "कभी-कभी दुःख ज़रूर होता है। लेकिन मेरा जीवन इतना भरपूर है—और उसमें हर चीज़ इतनी महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक है और सारी बातें एक के बाद एक इतनी जल्दी-जल्दी होती रहती हैं कि..."

जैसा कि बहुधा होता था इस समय भी सहसा उसके हृदय में उत्साह का एक तूफ़ान उमड़ने लगा; उसके मस्तिष्क में विचारों और कल्पनाओं की भीड़ लग गयी; वह उठकर पलंग पर बैठ गयी और विचारों तथा कल्पनाओं को शब्दों में सजाने-संवारने लगी।

"ज़िंदगी का क्रम चलता रहता है—हमेशा एक लक्ष्य की दिशा में... लेकिन कभी-कभी बहुत दुःख भी होता है! लोग मुसीबतें उठाते हैं, मार खाते हैं, बड़ी बेरहमी से मारे जाते हैं और उनसे बहुत-सी ख़ुशियां छीन ली जाती हैं। यह देखकर तो दुःख होता ही है!"

लूदमीला अपना सिर पीछे को झटककर मां को बड़े प्यार से देखने लगी।

"लेकिन तुम अपने बारे में तो कुछ बताती ही नहीं!"

मां पलंग से उठी और कपड़े पहनने लगी।

"जब आदमी को इससे भी प्यार हो, उससे भी प्यार हो और सबके लिए उसका दिल डरता हो, सब पर उसे तरस आता हो, तो आदमी अपने आपको दूसरों से अलग करके अपने बारे में कैसे सोच सकता है?.. वह अपने आपको उनसे अलग कैसे कर सकता है?"

वह एक क्षण तक आधे कपड़े पहने हुए कमरे के बीच में विचारों में खोयी-खोयी खड़ी रही। मां को ऐसा आभास हुआ कि अब वह वही औरत नहीं रह गयी है जिसका हृदय अपने बेटे के लिए इतना भयभीत

और आतंकित था, जो अपने बेटे के शरीर को बचाने के लिए इतनी बेताब थी। अब उस औरत का अस्तित्व ही बाक़ी नहीं रह गया था। वह कहीं छुप गयी थी, कहीं बहुत दूर चली गयी थी, या कदाचित वह अपने ही भावावेश की ज्वाला में जल गयी थी और इस आग में तपकर उसकी आत्मा शुद्ध होकर निखर आयी थी और उसमें नयी शक्ति का संचार हुआ था। उसने अपने हृदय को टटोला, उसका स्पंदन सुना और डरने लगी कि पुरानी आशंकाएं कहीं फिर न पैदा हो जायें।

"क्या सोच रही हो?" लूदमीला ने उसके पास जाकर पूछा।

"मालूम नहीं!" मां ने उत्तर दिया।

वे दोनों चुपचाप एक-दूसरे को देखकर मुस्कराती रहीं; फिर लूदमीला यह कहती हुई कमरे से बाहर चली गयी:

"मालूम नहीं मेरे समोवार को क्या हो गया है?"

मां ने खिड़की के बाहर देखा। सर्दी पड़ रही थी और चारों ओर धूप फैली हुई थी। उसके हृदय में भी इसी धूप जैसा प्रकाश फैला हुआ था और गर्मी भी थी। वह हर चीज़ के बारे में बातें करना चाहती थी—बड़ी देर तक और उल्लास के साथ बातें करना चाहती थी। उसकी आत्मा में जो कुछ समाया हुआ था और जो वहां सूर्यास्त से पहले की सुन्दर ज्योति से जगमगा रहा था, उसके लिए उसके हृदय में किसी के प्रति कृतज्ञता की एक अस्पष्ट-सी भावना थी। बहुत दिन बाद उसके हृदय में ईश्वर की प्रार्थना करने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसके मस्तिष्क में किसी का नौजवान चेहरा बिजली की तरह कौंध गया और उसने किसी को स्पष्ट स्वर में पुकारकर कहते सुना, "यह पावेल व्लासोव की मां हैं!.." उसने साशा की भीगी हुई चमकदार आंखें, रीबिन की काली आकृति, अपने बेटे की कांसे की मूर्ति जैसी कठोर मुखाकृति, निकोलाई की शर्मीली आंख मारती हुई नज़रें देखीं और सहसा ये सब चीज़ें एक गहरी आह में घुल-मिल गयीं, और उन्होंने इन्द्रधनुष के रंग के बहुत ही पतले बादल का रूप धारण कर लिया, जो उसके समस्त विचारों पर छा गया और उसे शान्ति का अनुभव होने लगा।

"निकोलाई ठीक कहता था!" लूदमीला ने कमरे में वापस आकर कहा। "वह गिरफ़्तार कर लिया गया। तुम्हारे कहने के मुताबिक़ मैंने लड़के को भेजा था। उसने बताया कि आंगन में उसने कई पुलिसवालों को देखा और एक पुलिसवाला फाटक के पीछे भी छुपा हुआ था। चारों तरफ़ से जासूसों ने उस जगह को घेर रखा है।"

"बेचारा!" मां ने सिर हिलाते हुए कहा।

उसने आह भरी, पर उसके हृदय में कोई व्यथा नहीं थी और इस पर उसे मन ही मन बड़ा आश्चर्य भी हुआ।

"वह इधर कुछ दिनों से शहर में मज़दूरों को पढ़ाता था। उसके पकड़े जाने का वक़्त आ गया था!" लूदमीला ने शान्त स्वर में कहा, पर उसकी भवें तनी हुई थीं। "उसके साथियों ने उससे कहा था कि वह कहीं भाग जाये, पर उसने एक न सुनी। मेरा तो ख़्याल है कि लोगों को ऐसी हालत में समझाने-बुझाने के बजाय उन्हें ज़बरदस्ती कहीं भेज देना चाहिये ..."

इसी समय काले बालों और लाल गालोंवाला एक लड़का दरवाज़े पर दिखायी दिया; उसकी नीली आंखें बहुत ख़ूबसूरत और नाक तोते की चोंच की तरह मुड़ी हुई थी।

"समोवार ले आऊं?" उसने ऊंची आवाज़ में पूछा।

"ले आओ तो बड़ी मेहरबानी होगी, सेर्गेई।" फिर वह मां की तरफ़ मुड़कर बोली, "इसे मैंने पाला है।"

आज मां को लूदमीला कुछ बदली हुई, ज़्यादा सीधी-सादी और अधिक घनिष्ठ लग रही थी। उसके शरीर के लोच में आज पहले से ज़्यादा सौन्दर्य और शक्ति थी और इससे उसके पीले कठोर चेहरे पर एक कोमलता आ गयी थी। रात-भर काम करने के कारण उसकी आंखों के नीचे के काले घेरों का रंग कुछ और गहरा हो गया था और उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी आत्मा में एक तनाव है, धनुष की प्रत्यंचा जैसा तनाव।

लड़का समोवार ले आया।

"सेर्गेई, आओ तुम्हारा परिचय करा दूं! यह पेलागेया निलोवना हैं; कल जिन मज़दूरों को सज़ा हुई है उनमें इनका बेटा भी था।"

सेर्गेई ने बिना कुछ कहे झुककर मां से हाथ मिलाया और कमरे से बाहर चला गया; थोड़ी देर बाद वह एक डबलरोटी लेकर लौटा और आकर मेज़ के पास अपनी जगह बैठ गया। चाय उंडेलते हुए लूदमीला ने मां को इस बात पर राज़ी करने का प्रयत्न किया कि वह उस समय तक घर लौटकर न जाये जब तक यह मालूम न हो जाये कि पुलिस वहां किसकी ताक में है।

"शायद तुम्हारे इंतज़ार में ही हों! शायद तुम्हें भी पूछताछ के लिए बुलायेंगे ..."

"बुलाने दो!" मां ने कहा, "और अगर चाहते हैं, तो मुझे गिरफ़्तार कर लें – ऐसा कौन बड़ा नुक़सान हो जायेगा। बस इतना है कि पहले पावेल का भाषण छपकर बंट जाये।"

"मैंने अक्षर तो बिठा दिये हैं। कल तक शहर में और मज़दूरों की बस्ती में बांटने भर को काफ़ी पर्चे तैयार हो जायेंगे... तुम नताशा को जानती हो?"

"हां, जानती क्यों नहीं हूं!"

"उसके पास ले जाना..."

लड़का अख़बार पढ़ रहा था और ऐसा मालूम हो रहा था कि वह उसकी बातें सुन ही नहीं रहा है, लेकिन बीच-बीच में वह मां के चेहरे पर एक सरसरी दृष्टि डाल लेता था। मां को उसकी चमकदार आंखें बहुत अच्छी लगती थीं, इसलिए वह भी उसे देखकर मुस्करा देती थी। निकोलाई की बात करते समय लूदमीला के हृदय में कोई व्यथा नहीं थी; मां को यह बात स्वाभाविक ही मालूम हुई। समय बहुत जल्दी बीतता गया; जब उन लोगों ने नाश्ता ख़त्म किया उस समय लगभग दोपहर हो चुकी थी।

"कितनी देर हो गई!" लूदमीला ने विस्मय से कहा।

इतने में किसी ने बहुत घबराकर दरवाज़ा खटखटाया। लड़का उठा और उसने लूदमीला को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"सेर्गेई, दरवाज़ा खोल दो। कौन हो सकता है?"

बिना विचलित हुए लूदमीला ने अपने साये की जेब में हाथ डाल लिया और मां से बोली:

"देखो, अगर पुलिस हो तो, पेलागेया निलोवना, तुम वहां कोने में खड़ी हो जाना और सेर्गेई तुम..."

"मैं जानता हूं!" लड़के ने बाहर जाते हुए कहा।

मां मुस्करा दी। अब इन तैयारियों से उसे कोई उलझन नहीं होती थी – उसे यह नहीं लगता था कि जैसे कोई बहुत बड़ी विपदा आनेवाली है।

लेकिन आगन्तुक वही छोटे क़दवाला डाक्टर था।

"पहली बात तो यह है," उसने जल्दी से कहा, "निकोलाई गिरफ़्तार कर लिया गया है। अहा, तो यहां हो तुम, निलोवना? जब वह पकड़ा गया तब क्या तुम घर पर नहीं थीं?"

"उसी ने मुझे यहां भेजा था।"

"हुं: ! मेरे ख़्याल में इससे काम नहीं चलेगा !.. और दूसरी बात यह है कि कल रात कुछ नौजवानों ने भाषण की कोई पांच सौ कापियां साइक्लोस्टाइल करके छापी हैं। मैंने देखा है उन्हें, बुरी नहीं छापी हैं, बड़ी साफ़-सुथरी छपाई है। वे आज रात उन्हें शहर में बांटना चाहते हैं, लेकिन मैं इसके ख़िलाफ़ हूं। मेरा ख़्याल है कि शहर में छपी हुई कापियां बांटना ही अच्छा होगा और उन्हें किसी दूसरी जगह के लिए रखा जा सकता है।"

"मैं उन्हें नताशा के पास लेकर चली जाऊंगी !" मां ने उत्सुकता से कहा। "मुझे दे दो !"

वह अपने पावेल के भाषण को जल्दी से जल्दी प्रसारित करने के लिए, अपने बेटे के शब्दों को सारी पृथ्वी पर फैला देने के लिए बहुत बेचैन थी ; उत्तर की प्रतीक्षा में वह बड़ी विनय-भरी दृष्टि से डाक्टर के चेहरे को देखती रही।

"मालूम नहीं तुम्हें यह काम इस वक़्त करना भी चाहिये कि नहीं !" डाक्टर ने अपनी घड़ी निकालकर देखते हुए संशय के भाव से कहा। "इस वक़्त बारह बजने में सत्रह मिनट बाक़ी हैं। दो बजकर पांच पर एक गाड़ी जाती है जो तुम्हें वहां सवा पांच बजे पहुंचा देगी। उस वक़्त शाम का वक़्त होगा, लेकिन बहुत देर नहीं हुई होगी। लेकिन असल बात यह नहीं है ..."

"नहीं, यह असल बात नहीं है !" लूदमीला ने भवें तानकर कहा।

"फिर असल बात क्या है ?" मां ने उसके निकट आकर पूछा। "बस यही न कि काम अच्छी तरह पूरा हो जाये ..."

लूदमीला ने उसे बड़े ग़ौर से देखा, मानो उसके चेहरे में कुछ ढूंढ़ रही हो।

"तुम्हारे लिए यह काम ख़तरनाक है ..." लूदमीला ने अपने माथे पर हाथ फेरते हुए कहा।

"क्यों ?" मां ने बड़े उत्साह और हठ से पूछा।

"इसकी वजह यह है," डाक्टर ने बहुत जल्दी-जल्दी उखड़े हुए स्वर में कहना शुरू किया, "तुम निकोलाई के गिरफ़्तार होने से ठीक घंटे भर पहले घर से निकली थीं। तुम उस कारख़ाने में गयी थीं जहां लोग तुम्हें नताशा की चाची की हैसियत से जानते हैं। उसके थोड़ी ही देर बाद कारख़ाने में ग़ैरक़ानूनी पर्चे पाये गये। ये सब बातें मिलकर तुम्हारे गले में फंदा डालने के लिए काफ़ी सबूत हो जायेगा।"

"मुझे कोई नहीं देख पायेगा!" मां ने उत्सुकता से कहा। "और अगर उन्होंने मेरे वापस आने पर पूछा कि मैं कहां गयी थी तो..."

वह एक सेकंड के लिए रुकी।

"मैं जानती हूं मैं क्या कहूंगी!" उसने ज़ोर से कहा। "मैं वहां से सीधे बस्ती में जाऊंगी, वहां मेरा एक दोस्त है सिज़ोव। मैं कह दूंगी कि मुक़द्दमे के बाद मैं सीधे उसके घर चली गयी थी ताकि हम दोनों एक-दूसरे को धीरज बंधा सकें। उसके भतीजे को भी सज़ा हुई है। वह आखिर तक मेरा साथ देगा।"

मां को विश्वास था कि वे उसकी यह इच्छा पूरी कर देंगे और वह इस मामले को जल्दी तै कर लेने के लिए उत्सुक थी, इसी लिए वह आग्रह करती रही। आखिरकार वे राज़ी हो गये।

"अच्छी बात है, ले जाओ!" डाक्टर ने अनिच्छा से कहा।

लूदमीला कुछ नहीं बोली, वह बस विचारों में डूबी हुई इधर-उधर टहलती रही। उसका चेहरा बहुत क्षीण दिखायी दे रहा था; उसकी गर्दन की पेशियां जिस तरह तनी हुई थीं उससे मालूम होता था कि अपने सिर को सीने पर लुढ़क जाने से रोकने के लिए उसे कितना प्रयास करना पड़ रहा था। मां ने यह देख लिया।

"तुम लोग मेरे कारण परेशान हो रहे हो!" उसने मुस्कराकर कहा, "लेकिन तुम अपनी चिन्ता बिल्कुल नहीं करते..."

"करते क्यों नहीं हैं!" डाक्टर ने कहा। "हमें करनी पड़ती है! और हम उन लोगों के साथ बड़ी सख़्ती से पेश आते हैं जिन्हें हम अपनी शक्ति व्यर्थ नष्ट करते देखते हैं! अच्छी बात है, तो तुम्हें भाषण की कापियां स्टेशन पर मिल जायेंगी..."

उसने मां को समझा दिया कि इसके लिए क्या प्रबंध किया जायेगा।

"सलामत रहो!" उसने अपनी बात ख़तम करते हुए कहा।

लेकिन जब वह बाहर गया, तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी बात से असंतुष्ट है। लूदमीला मां के पास चली आयी।

"मैं समझती हूं..." उसने धीरे से हंसकर कहा।

वह मां की बांह पकड़कर फिर इधर-उधर टहलने लगी।

"मेरा भी एक बेटा है, वह १३ साल का है। वह अपने बाप के साथ रहता है। मेरे पति छोटे सरकारी वकील हैं और लड़का उन्हीं के साथ रहता है। उसका क्या होगा? मैं अक्सर इस बात के बारे में सोचती हूं..."

उसका स्वर रुंध गया।

"जनता के एक कट्टर दुश्मन के हाथों उसका पालन-पोषण हो रहा है – उन लोगों के शत्रु के हाथों जिन्हें मैं प्यार करती हूं और जिन लोगों को मैं इस पृथ्वी पर सबसे अच्छा समझती हूं। मुमकिन है कि मेरा बेटा बड़ा होकर स्वयं मेरा दुश्मन बन जाये। मैं उसे अपने साथ नहीं रख सकती – मैं अपना नाम बदलकर जो रहती हूं। मैंने उसे आठ बरस से नहीं देखा है – आठ बरस! कितने दिन हो गये!"

वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गयी और बाहर फीके रंग के शून्य आकाश को देखने लगी।

"अगर वह मेरे साथ रहता होता, तो मुझमें ज़्यादा शक्ति आ जाती। मेरे हृदय में तब यह निरंतर पीड़ा न होती ... अगर वह मर जाता, तो भी मुझे संतोष हो जाता ..."

"हाय बेचारी!" मां ने एक लम्बी सांस लेकर कहा; उसका हृदय वेदना से फटा जा रहा था।

"तुम भी कितनी भाग्यवान हो!" लूदमीला ने एक कटु मुस्कराहट के साथ अस्फुट स्वर में कहा। "मां और बेटे का कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलना कितनी शानदार बात है और ऐसा बहुत कम ही होता है!"

"हां, बहुत ही शानदार बात है!" पेलागेया ने कहा और उसे अपनी बात पर स्वयं विस्मय होने लगा। फिर उसने अपना स्वर धीमा करके इस प्रकार कहा, मानो कोई भेद बता रही हो, "और आप सभी लोग – तुम, निकोलाई इवानोविच, और वे सभी जो सच्चाई के रास्ते पर चल रहे हैं – एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। अचानक सब लोग एक जैसे हो गये हैं और मैं तुम सब लोगों की भावनाएं भली भांति समझती हूं। तुम लोग जो कुछ कहते हो उसे तो मैं पूरी तरह समझ नहीं पाती, पर और सब बातें मैं समझती हूं!"

"हां, यही बात है!" लूदमीला ने अस्फुट स्वर में कहा। "यही बात है ..."

मां अपना हाथ लूदमीला के सीने पर रखकर इतने धीमे-धीमे बोलती रही, मानो जो कुछ वह कह रही थी उसे वह अपनी कल्पना में देख भी रही हो।

"हमारे बच्चे दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं! मैं तो इसे इसी तरह देखती हूं – वे सारी दुनिया में फैल गये हैं और दुनिया के कोने-कोने से आकर वे एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं! जिन लोगों के हृदय सबसे

शुद्ध हैं, जिनके मस्तिष्क सबसे श्रेष्ठ हैं वे पाप के ख़िलाफ़ बढ़ रहे हैं और झूठ को अपने ताक़तवर पांवों तले कुचल रहे हैं। वे नौजवान हैं और स्वस्थ हैं और उनकी सारी शक्ति एक ही लक्ष्य – न्याय – को प्राप्त करने के लिए, व्यय हो रही है। वे मनुष्य के दुःख को मिटाने के लिए, इस पृथ्वी पर से विपदा का नाम-निशान मिटा देने के लिए और कुरूपता पर विजय प्राप्त करने के लिए मैदान में उतरे हैं – और विजय उनकी अवश्य होगी! जैसा कि किसी ने कहा है वे एक नया सूर्य उगाने के लिए निकले हैं और वे इस सूर्य को उगाकर रहेंगे! वे टूटे हुए दिलों को जोड़ने के लिए निकले हैं और वे उन्हें जोड़कर रहेंगे!"

उसे भूली हुई उन प्रार्थनाओं के शब्द याद आने लगे, जो उसके हृदय में चिंगारियों की तरह भड़क रही थीं और एक नये विश्वास की ज्योति जगा रही थीं।

"हमारे बच्चे सच्चाई और न्याय के पथ पर चल रहे हैं, लोगों के हृदय में एक नये प्रेम का संचार कर रहे हैं, उन्हें एक नये स्वर्ग का चित्र दिखा रहे हैं और पृथ्वी को एक नयी ज्योति से आलोकित कर रहे हैं – आत्मा की अखंड ज्योति से। इसकी नयी ज्वाला से एक नये जीवन का उदय हो रहा है; यह जीवन समस्त मानवता के प्रति हमारे बच्चों के प्रेम से उत्पन्न हो रहा है। इस प्रेम की ज्योति को कौन बुझा सकता है? कौन बुझा सकता है? कौन सी शक्ति इसे नष्ट कर सकती है और इसका मुक़ाबला कर सकती है? इस प्रेम को पृथ्वी ने जन्म दिया है और स्वयं जीवन उसकी विजय के लिए लालायित है – स्वयं जीवन!"

अपने भावावेश के उद्वेग से मां की शक्ति क्षीण हो गयी और वह वहां से दूसरी तरफ़ जाकर बैठ गयी और हांपने लगी। लूदमीला भी चुपचाप बड़ी सतर्कता से क़दम रखती हुई वहां से चली गयी, मानो उसे यह डर हो कि कहीं कोई चीज़ टूट न जाये। बहुत ढीले-ढीले क़दमों से वह कमरे में टहल रही थी और अपनी निस्तेज आंखों से सामने शून्य में घूर रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह कुछ और लम्बी हो गयी थी, उसका शरीर कुछ और तन गया था और वह कुछ और नाज़ुक हो गयी थी। उसके दुबले-पतले कठोर चेहरे पर गहरी चिन्ता की छाप थी और उसके होंट घबराहट के कारण भिंचे हुए थे। कमरे की निस्तब्धता के कारण थोड़ी देर बाद मां का उद्वेग शान्त हो गया।

"मैंने कोई ऐसी बात तो नहीं कह दी जो मुझे नहीं कहनी चाहिये थी ?.." लूदमीला को चिंतित देखकर उसने क्षमा-याचना के भाव से पूछा।

लूदमीला ने मुड़कर प्रायः भयातुर होकर मां की तरफ़ देखा, फिर वह जल्दी-जल्दी बोलने लगी और इस प्रकार हाथ फैला दिया जैसे कुछ रोकना चाहती हो।

"नहीं नहीं! तुमने जो कहा वही सच बात है, पर हम अब उसके बारे में कुछ नहीं कहेंगे। बस, जो तुमने कहा है उसमें कुछ बदलने की ज़रूरत नहीं।" उसका स्वर कुछ और शान्त हो गया और वह बोली, "तुम्हें बस अब जल्दी ही चल देना चाहिये – बहुत दूर है!"

"काश तुम्हें मालूम होता कि मैं कितनी ख़ुश हूं! दूसरों के पास अपने बेटे के शब्द, स्वयं अपने रक्त-मांस के शब्द ले जाते हुए मुझे कितनी ख़ुशी हो रही है! ऐसा मालूम होता है जैसे मैं स्वयं अपनी आत्मा बांटने जा रही हूं!"

यह कहकर मां मुस्करायी पर लूदमीला के चेहरे पर उसकी इस मुस्कराहट का केवल एक हल्का-सा ही प्रतिबिम्ब दिखायी दिया। मां को ऐसा लगा कि इस औरत के संयम के कारण उसका उल्लास मंद पड़ता जा रहा था और सहसा उसकी यह उत्कट इच्छा हुई कि वह अपनी आत्मा की आग लूदमीला की कठोर आत्मा में उंडेल दे, और उसमें भी हर्ष के तूफ़ान से उमड़ते हुए एक हृदय के प्रति समवेदना जागृत कर दे। उसने लूदमीला के दोनों हाथ अपने हाथों में कसकर दबा लिये और बोली:

"प्यारी बहन! यह जानकर कितनी ख़ुशी होती है कि एक ज्योति ऐसी भी है जो दुनिया के सारे लोगों को रास्ता दिखा रही है, कि एक दिन ऐसा समय भी आयेगा जब सब लोग इस ज्योति को देखेंगे और सच्चे हृदय से इसका अनुसरण करेंगे!"

मां के बड़े-से उदार चेहरे पर कम्पन की एक लहर दौड़ गयी; उसकी आंखें चमकने लगीं और आंखों के ऊपर उसकी भवें इस प्रकार फड़कने लगीं, मानो आंखों की चमक पंख लगाकर उड़ रही हो। उसके मस्तिष्क में वे महान विचार चक्कर काट रहे थे जिनमें उसने अपनी समस्त आत्मा, अपना सारा अनुभव और सारी वेदना भर दी थी। उसने इन विचारों के सार-तत्व को शब्दों के कठोर चमकदार स्फटिकों के रूप में ढाल लिया था जो उसके पतझड़ जैसे निर्जन हृदय में आकार

ब संख्या में बढ़ते जा रहे थे और वसन्त ऋतु के सूर्य की सृजनात्मक शक्ति से आलोकित होकर उत्तरोत्तर बढ़ती हुई ज्योति से उद्दीप्त हो रहे थे।

"ऐसा मालूम होता है कि जैसे मनुष्य के लिए एक नये ईश्वर का जन्म हुआ हो! हर चीज़ सब के लिए — सब एक-दूसरे के सुख-दुःख के साझेदार! मैं तो इसे इसी ढंग से समझती हूं। वास्तव में ही तुम लोग साथी हो, सब एक ख़ून के रिश्ते से बंधे हो, सब एक ही मां की सन्तान हो और वह मां है सत्य!"

एक बार फिर वह भावनाओं की लहरों पर तैरने लगी। उसने रुककर एक गहरी सांस ली और अपने हाथ फैलाकर बोली:

"और जब भी मैं अपने मन में 'साथी' शब्द कहती हूं, तो मैं अपने हृदय में अपने साथियों की आहट सुनती हूं!"

मां जो चाहती थी उसमें वह सफल हो गयी — लूदमीला के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, उसके होंट कांपने लगे और आंसू की बड़ी-बड़ी गोल बूंदें उसके गालों पर ढलकने लगीं।

मां ने उसे अपनी भुजाओं में जकड़ लिया और बड़े कोमल भाव से मुस्कराने लगी; अपने हृदय की विजय पर वह अत्यंत मधुर पुलक का अनुभव करने लगी।

जब वे एक-दूसरे से विदा हुए, तो लूदमीला मां के चेहरे की तरफ़ देखकर धीरे से बोली:

"तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारे साथ रहकर कितनी ख़ुशी होती है!"

२६

बाहर क़दम रखते ही ठंडी हवा ने बड़ी क्रूरता से उसे आ दबोचा, उसकी नाक पर हवा तीर की तरह लगने लगी और उसकी सांस फूलने लगी। उसने रुककर अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी। सड़क के नुक्कड़ पर एक घोड़ागाड़ीवाला फ़र की टोपी पहने खड़ा था; उससे कुछ आगे एक आदमी कमर दोहरी किये अपना सिर दोनों कंधों के बीच दुबकाये सड़क पर चला जा रहा था और उसके आगे एक सिपाही अपने कानों को मलता हुआ भागा जा रहा था।

"सिपाही को शायद किसी ने दूकान तक भेजा होगा!" मां ने सोचा और आगे बढ़ गयी; अपने पांवों तले बर्फ़ के चरमराने की

ज़ोरदार आवाज़ सुनकर वह बहुत खुश हो रही थी। वह गाड़ी के वक़्त से पहले ही स्टेशन पहुंच गयी, लेकिन तीसरे दर्जे के गंदे, धुएं से काले मुसाफ़िरखाने में लोगों की भीड़ लगी हुई थी। सर्दी से बचने के लिए रेल की लाइन पर काम करनेवाले मज़दूर, घोड़ागाड़ीवाले और फटे-पुराने कपड़े पहने बहुत-से बेघरबार लोग वहां आ गये थे। कुछ यात्री भी थे, जिनमें कुछ किसान, रीछ की खाल का कोट पहने हुए एक मोटा-सा बनिया, एक पादरी और उसकी चेचकरू बेटी, पांच या छः सिपाही और कुछ बौखलाये हुए टुटपुंजिये थे। लोग सिगरेट का धुआं उड़ा रहे थे, बातें कर रहे थे और चाय और वोद्‌का पी रहे थे। रेस्तरां में कोई ठहाका मारकर हंस पड़ा; हर चीज़ पर धुएं के घने बादल छा गये। जब दरवाज़ा खोला जाता, तो उसमें चूं-चूं की आवाज़ निकलती और जब बंद किया जाता, तो खिड़कियों के शीशे हिलकर खड़खड़ा उठते। कमरे में तम्बाकू और नमक लगी मछली की बू बसी हुई थी।

मां दरवाज़े के पास ही एक ऐसी जगह पर बैठकर प्रतीक्षा करने लगी जहां उसे आसानी से देखा जा सके। जब भी दरवाज़ा खुलता मां ठंडी हवा का तेज़ झोंका अंदर आता हुआ अनुभव करती; यह हवा उसे बहुत सुखकर प्रतीत होती और दरवाज़ा खुलने पर हर बार वह गहरी-गहरी सांसें लेने लगती। अधिकांश लोगों के पास गठरियां थीं और दरवाज़े से घुसते समय वे उसमें फंस जाते थे; वे गालियां बकते हुए अपनी गठरियां फ़र्श पर या बेंच पर पटक देते और अपनी आस्तीनों और कालर, मूंछों और दाढ़ियों पर से बर्फ़ झाड़ते हुए गुर्राते थे।

एक नौजवान चमड़े का सूटकेस लिये हुए दरवाज़े से अंदर आया और जल्दी से चारों ओर नज़र डालकर सीधे मां के पास चला गया।

"मास्को जा रही हैं आप?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"हां, तान्या के पास," मां ने उत्तर दिया।

"यह लीजिये!"

उसने सूटकेस बेंच पर मां के पास रख दिया और एक सिगरेट सुलगाकर अपनी हैट तिरछी करके दूसरे दरवाज़े से बाहर चला गया। मां ने सूटकेस के ठंडे चमड़े को हाथ से थपथपाया और उस पर कुहनी टिकाकर बड़े संतोष के भाव से अपने चारों ओर लोगों को ध्यान से देखने लगी। एक मिनट बाद वह वहां से उठकर दूसरी जगह बैठ गयी जो बाहर निकलने के दरवाज़े से ज़्यादा निकट थी। वह अपना सिर ऊंचा किये चल रही थी और पास से गुज़रनेवालों के चेहरों पर नज़र

डालती जाती थी; सूटकेस बहुत भारी नहीं था, उसे ले चलने में उसे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी।

एक नौजवान, जो बंद गले का छोटा कोट पहने हुए था, आकर उससे टकरा गया। चुपके से वह एक तरफ़ को हट गया और अपना हाथ उठाकर हैट तक ले गया। मां को उसमें कोई पहचानी हुई बात दिखायी दी। उसने पीछे मुड़कर उस आदमी पर एक नज़र डाली और देखा कि एक भूरी आंख उसके कालर के ऊपर से उसे घूर रही है। उसका इस प्रकार घूरना मां के कलेजे पर छुरी की तरह लगा; जिस हाथ में वह सूटकेस लिये हुए थी वह रह-रहकर कांपने लगा और सहसा उसका बोझ भारी होने लगा।

"मैंने उसे पहले कहीं देखा है!" मां ने सोचा। उसे देखकर मां के हृदय में जो अरुचिकर भावना उत्पन्न हुई थी उसका स्थान इस विचार ने ले लिया; वह उस भावना की व्याख्या करने से इंकार कर रही थी जिसके कारण धीरे-धीरे पर अदम्य वेग से उसका दिल बैठा जा रहा था। पर यह भावना बढ़ती गयी और उसके गले में आकर अटक गयी; उसके मुंह का स्वाद कड़वा हो गया। बार-बार पीछे मुड़कर उसे देखे बिना मां का जी नहीं मानता था। वह पैर बदलता हुआ उसी जगह खड़ा था, मानो यह फ़ैसला करने का प्रयत्न कर रहा हो कि क्या करे। वह बायां हाथ अपनी जेब में और दाहिना कोट के बटनों के बीच रखे हुए था; उसका दाहिना कंधा बायें कंधे से कुछ ऊंचा लग रहा था।

मां बेंच के पास जाकर धीरे से और बड़ी सावधानी से उस पर बैठ गयी, मानो उसे यह डर हो कि उसके शरीर के अंदर किसी चीज़ को ठेस न लग जाये। आशंकाओं में ग्रस्त वह अपने मस्तिष्क पर ज़ोर देने लगी और उसे याद आया कि उसने इससे पहले दो बार इस आदमी को देखा था: एक बार तो शहर के सिरेवाले खुले मैदान में जब रीबिन जेल से भागा था और दूसरी बार मुक़द्दमे के समय अदालत में। अदालत के कमरे में वह उसी पुलिसवाले के बग़ल में खड़ा था जिसे मां ने रीबिन का पीछा करने के लिए ग़लत रास्ता बता दिया था। मां समझ गयी कि वे उसे जानते हैं और उसका पीछा कर रहे हैं। अब इसमें कोई संदेह हो ही नहीं सकता था।

"पकड़ी गयी?" उसने अपने आपसे पूछा।

"मुमकिन है अभी नहीं," उसने कांपकर स्वयं ही उत्तर दिया।

"पकड़ी गयी!" एक ही क्षण बाद उसने सच्चाई का सामना करने

28–1065

का फ़ैसला करते हुए अपने मन में घोषणा की।

वह चारों ओर नज़रें दौड़ा रही थी, पर देख कुछ भी नहीं रही थी। उसके दिमाग़ में विचार चिंगारियों की तरह भड़क रहे थे।

"क्या मैं सूटकेस यहीं छोड़कर चली जाऊं?"

एक दूसरी चिंगारी ने, जो ज़्यादा चमकदार थी, इस विचार का स्थान ले लिया:

"क्या? अपने बेटे के शब्दों को इस तरह छोड़ जाऊं? उन्हें ऐसे हाथों में सौंप जाऊं?"

उसने सूटकेस मज़बूती से पकड़ लिया।

"क्या मैं इसे लेकर चली जाऊं?.. यहां से भाग जाऊं?.."

ऐसे विचार उसके शत्रु थे, वे बाहर से ज़बरदस्ती उस पर थोपे जा रहे थे। वे उसके मस्तिष्क को झुलसा दे रहे थे, उसके हृदय को मानो आग के धागे से सी रहे थे। इन विचारों की पीड़ा से व्याकुल होकर मां अपने आपको भूल गयी, पावेल को और हर उस चीज़ को भूल गयी जो उसे इतनी प्रिय थी। उसे ऐसा लगा कि कोई शत्रुतापूर्ण शक्ति उसके कंधों और सीने पर बोझ की तरह रखी हुई है, और इस घातक भय से उसका गला घोंटे दे रही है। उसकी कनपटियों की नसें ज़ोर से धड़कने लगीं और उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसके बालों की जड़ों में गरमी रेंगकर आ रही है।

सहसा अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसने अपने विचारों को दूर हटा दिया, इन सब तुच्छ कमज़ोर चिंगारियों को कुचल दिया और बड़े गर्व से अपने मन में कहा:

"धिक्कार है मुझे!"

उसकी तबीयत फ़ौरन संभल गयी; वास्तव में उसमें साहस आ गया और उसने अपने मन में कहा:

"अपने बेटे के नाम पर कलंक का टीका न लगाओ! डर की ऐसी-तैसी!"

उसकी आंखों ने दो नीरस और भीरु घूरती हुई आंखों को देखा; उसके मस्तिष्क में रीबिन का चेहरा बिजली की तरह कौंध गया। संकोच में उसने जो कुछ क्षण बिताये थे उनसे अब उसका विश्वास और दृढ़ हो गया था।

"अब क्या होगा?" उसने चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए सोचा।

जासूस ने एक गार्ड को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा और

आंखों से मां की तरफ़ इशारा किया। गार्ड ने उसे देखा और वापस चला गया। इतने में दूसरा गार्ड आया और उसकी बात सुनकर उसकी भवें तन गयीं। यह गार्ड एक बूढ़ा आदमी था – लम्बा क़द, सफ़ेद बाल, दाढ़ी बढ़ी हुई। उसने जासूस की तरफ़ देखकर सिर हिलाया और उस बेंच की तरफ़ बढ़ा जिस पर मां बैठी हुई थी। जासूस कहीं ग़ायब हो गया।

गार्ड बड़े इत्मीनान से आगे बढ़ रहा था और त्योरियां चढ़ाये. मां को घूर रहा था। मां बेंच पर सिमटकर बैठ गयी।

"बस, कहीं मुझे मारें न!" मां ने सोचा।

गार्ड मां के सामने आकर रुक गया और एक क्षण तक कुछ नहीं बोला।

"क्या देख रही हो?" उसने आख़िरकार पूछा।

"कुछ भी नहीं," मां ने उत्तर दिया।

"अच्छा यह बात है, चोर कहीं की! इस उमर में यह सब करते शरम नहीं आती!"

उसके शब्द मां के गालों पर तमाचों की तरह लगे – एक... दो; उनमें कुत्सा का जो घृणित भाव था वह मां के लिए इतना कष्ट-दायक था कि जैसे उसने किसी तेज़ चीज़ से मां के गाल चीर दिये हों या उसकी आंखें बाहर निकाल ली हों...

"मैं? मैं चोर नहीं हूं, तुम ख़ुद झूठे हो!" उसने पूरी आवाज़ से चिल्लाकर कहा और उसके क्रोध के तूफ़ान में हर चीज़ उलट-पुलट होने लगी। उसने सूटकेस को एक झटका दिया और वह खुल गया।

"सुनो! सुनो! सब लोग सुनो!" उसने चिल्लाकर कहा और उछलकर पर्चों की एक गड्डी अपने सिर के ऊपर हिलाने लगी। उसके कान में जो गूंज उठ रही थी उसके बीच उसे चारों तरफ़ से भागकर आते हुए लोगों की बातें साफ़ सुनायी दे रही थीं।

"क्या हुआ?"

"वह वहां – जासूस..."

"क्या बात है?"

"कहते हैं कि यह चोर है..."

"देखने में तो बड़ी शरीफ़ औरत मालूम होती है! छिः छिः!"

"मैं चोर नहीं हूं!" मां ने चिल्लाकर कहा; लोगों की भीड़ अपने चा-रों तरफ़ एकत्रित देखकर उसकी भावनाओं का प्रबल वेग थम गया था।

"कल राजनीतिक क़ैदियों पर एक मुक़द्दमा चलाया गया था और उनमें मेरा बेटा पावेल व्लासोव भी था। उसने अदालत में एक भाषण दिया था – यह वही भाषण है! मैं इसे लोगों के पास ले जा रही हूं ताकि वे इसे पढ़कर सच्चाई का पता लगा सकें ..."

किसी ने बड़ी सावधानी से उसके हाथ से एक पर्चा ले लिया। मां ने गड्डी हवा में उछालकर भीड़ की तरफ़ फेंक दी।

"तुम्हें इसका मज़ा चखा दिया जायेगा!" किसी ने भयभीत स्वर में कहा।

मां ने देखा कि लोग झपटकर पर्चे लेते हैं और अपने कोट में तथा जेबों में छुपा लेते हैं। यह देखकर उसमें नयी शक्ति आ गयी। वह अधिक शान्त भाव से और ज़्यादा जोश के साथ बोलने लगी; उसके हृदय में गर्व और उल्लास का जो सागर ठाठें मार रहा था उसका उसे आभास था। बोलते-बोलते वह सूटकेस में से पर्चे निकालकर दाहिने बायें उछालती जा रही थी और लोग बड़ी उत्सुकता से हाथ बढ़ाकर इन पर्चों को पकड़ लेते थे।

"जानते हो मेरे बेटे और उसके साथियों पर मुक़द्दमा क्यों चलाया गया? मैं तुम्हें बताती हूं, तुम एक मां के हृदय और उसके सफ़ेद बालों का यक़ीन करो – उन लोगों पर मुक़द्दमा सिर्फ़ इसलिए चलाया गया कि वे लोगों को सच बातें बताते थे! और कल मुझे मालूम हुआ कि इस सच्चाई से ... कोई भी इंकार नहीं कर सकता – कोई भी नहीं!"

भीड़ बढ़ती गयी, सब लोग चुप थे और इस औरत के चारों तरफ़ सप्राण शरीरों का घेरा खड़ा था।

"ग़रीबी, भूख और बीमारी – लोगों को अपनी मेहनत के बदले यही मिलता है! हर चीज़ हमारे ख़िलाफ़ है – ज़िंदगी-भर हम रोज़ अपनी रत्ती-रत्ती शक्ति अपने काम में खपा देते हैं, हमेशा गंदे रहते हैं, हमेशा बेवक़ूफ़ बनाये जाते हैं और दूसरे हमारी मेहनत का सारा फ़ायदा उठाते हैं और ऐश करते हैं, वे हमें ज़ंजीर में बंधे हुए कुत्तों की तरह जाहिल रखते हैं – हम कुछ भी नहीं जानते, वे हमें डराकर रखते हैं – हम हर चीज़ से डरते हैं! हमारी ज़िंदगी एक लम्बी अंधेरी रात की तरह है!"

"ठीक बात है!" किसी ने दबी ज़बान में समर्थन किया।

"बंद कर दो इसका मुंह!"

भीड़ के पीछे मां ने उस जासूस और दो राजनीतिक पुलिसवालों को देखा और वह जल्दी-जल्दी बचे हुए पर्चे बांटने लगी। लेकिन जब उसका

हाथ सूटकेस के पास पहुंचा, तो किसी दूसरे के हाथ से छू गया।

"ले लो, और ले लो!" उसने झुके-झुके कहा।

"चलो, हटो यहां से!" राजनीतिक पुलिसवालों ने लोगों को धकेलते हुए कहा। लोगों ने अनमने भाव से पुलिसवालों को रास्ता दिया; वे पुलिसवालों को दीवार बनाकर पीछे रोके हुए थे; शायद वे जानबूझकर ऐसा नहीं कर रहे थे। लोगों के हृदय में न जाने क्यों इस बड़ी-बड़ी आंखों और उदार चेहरे तथा सफ़ेद बालोंवाली औरत के प्रति इतना अदम्य आकर्षण था। जीवन में वे सबसे अलग-थलग रहते थे, एक-दूसरे से उनका कोई संबंध नहीं था, पर यहां वे सब एक हो गये थे; वे बड़े प्रभावित होकर इन जोश-भरे शब्दों को सुन रहे थे; जीवन के अन्यायों से पीड़ित होकर शायद उनमें से अनेक लोगों के हृदय बहुत दिनों से इन्हीं शब्दों की खोज में थे। जो लोग मां के सबसे निकट थे वे चुपचाप खड़े थे; वे बड़ी उत्सुकता से उसकी आंखों में आंखें डालकर ध्यान से उसकी बातें सुन रहे थे और वह उनकी सांसों की गर्मी चेहरे पर अनुभव कर रही थी।

"खिसक जा यहां से, बुढ़िया!"

"वे अभी तुझे पकड़ लेंगे!.."

"कितनी हिम्मत है इसमें!"

"चलो यहां से! जाओ अपना काम देखो!" राजनीतिक पुलिस-वालों ने भीड़ को ठेलते हुए चिल्लाकर कहा। मां के सामने जो लोग थे वे एक बार कुछ डगमगाये और फिर एक-दूसरे से सटकर खड़े हो गये।

मां को आभास हुआ कि वे उसकी बात को समझने और उस पर विश्वास करने को तैयार थे और वह जल्दी-जल्दी उन्हें वे सब बातें बता देना चाहती थी जो वह जानती थी, वे सारे विचार उन तक पहुंचा देना चाहती थी जिनकी शक्ति का उसने अनुभव किया था। इन विचारों ने उसके हृदय की गहराई से निकलकर एक गीत का रूप धारण कर लिया था, पर मां यह अनुभव करके बहुत क्षुब्ध हुई कि वह इस गीत को गा नहीं सकती थी – उसका गला रुंध गया था और स्वर भर्रा गया था।

"मेरे बेटे के शब्द एक ऐसे ईमानदार मज़दूर के शब्द हैं जिसने अपनी आत्मा को बेचा नहीं है! ईमानदारी के शब्दों को आप उनकी निर्भीकता से पहचान सकते हैं!"

किसी नौजवान की दो आंखें भय और हर्षातिरेक से उसके चेहरे पर जमी हुई थीं।

किसी ने उसके सीने पर एक घूंसा मारा और वह बेंच पर गिर पड़ी। राजनीतिक पुलिसवालों के हाथ भीड़ के ऊपर ज़ोर से चलते हुए दिखायी दे रहे थे, वे लोगों के कंधे और गर्दनें पकड़कर उन्हें ढकेल रहे थे; उनकी टोपियां उतारकर मुसाफ़िरख़ाने के दूसरे सिरे पर फेंक रहे थे। मां की आंखों के आगे धरती घूम गयी, पर उसने अपनी कमज़ोरी पर क़ाबू पाकर अपनी बची-खुची आवाज़ से चिल्लाकर कहा:

"लोगो, एक होकर ज़बरदस्त शक्ति बन जाओ!"

एक पुलिसवाले ने अपने मोटे-मोटे बड़े से हाथ से उसकी गर्दन पकड़कर उसे ज़ोर से झंझोड़ा।

"बंद कर अपनी ज़बान!"

मां का सिर दीवार से टकराया। एक क्षण के लिए उसके हृदय में भय का दम घोंट देनेवाला धुआं भर गया, पर शीघ्र ही उसमें फिर साहस पैदा हुआ और यह धुआं छंट गया।

"चल यहां से!" पुलिसवाले ने कहा।

"किसी बात से डरना नहीं! तुम्हारी ज़िंदगी जैसी अब है उससे बदतर और क्या हो सकती है..."

"चुप रह, मैंने कह दिया!" पुलिसवाले ने उसकी बांह पकड़कर उसे ज़ोर से धक्का दिया। दूसरे पुलिसवाले ने उसकी दूसरी बांह पकड़ ली और दोनों उसे साथ लेकर चले।

"उस कटुता से बदतर और क्या हो सकता है जो दिन-रात तुम्हारे हृदय को खाये जा रही है और तुम्हारी आत्मा को खोखला किये दे रही है!"

जासूस मां के आगे-आगे भाग रहा था और मुट्ठी तान-तानकर उसे धमका रहा था।

"चुप रह, कुतिया!" उसने चिल्लाकर कहा।

मां की आंखें चमकने लगीं और क्रोध से फैल गयीं; उसके होंट कांपने लगे।

"पुनर्जीवित आत्मा को तो नहीं मार सकते!" उसने चिल्लाकर कहा और अपने पांव पत्थर के चिकने फ़र्श पर जमा दिये।

"कुतिया कहीं की!"

जासूस ने उसके मुंह पर एक थप्पड़ मारा।

"इसकी यही सज़ा है, इस चुड़ैल बुढ़िया की!" किसी ने जलकर कहा।

एक क्षण के लिए मां की आंखों के आगे अंधेरा छा गया; उसके सामने लाल और काले धब्बे से नाचने लगे और उसका मुंह रक्त के नमकीन स्वाद से भर गया।

लोगों के छोटे-छोटे वाक्य सुनकर उसे फिर होश आया:

"ख़बरदार, जो उसे हाथ लगाया!"

"आओ, चलो यार!"

"बदमाश कहीं का!"

"एक दे ज़ोर का!"

"वे हमारी चेतना को तो ख़ून से नहीं उंडेल सकते!"

वे मां की पीठ और गर्दन पर घूंसे बरसा रहे थे, उसके कंधों और सिर पर मार रहे थे; हर चीज़ चीख़-पुकार, क्रन्दन और सीटियों की आवाज़ों का एक झंझावात बनकर उसकी आंखों के सामने नाच रही थी और बिजली की तरह कौंध रही थी। उसके कान में एक ज़ोर का घुटा हुआ धमाका हुआ; उसका गला रुंध गया; उसका दम घुटने लगा और उसके पांवों तले कमरे का फ़र्श धंसने लगा; उसकी टांगें जवाब देने लगीं; वह तेज़ छुरी के घाव जैसी चुभती हुई पीड़ा से तिलमिला उठी, उसका शरीर बोझल हो गया और वह निढाल होकर झूमने लगी। पर उसकी आंखों में अब भी वही चमक थी। उसकी आंखें बाक़ी सब लोगों की आंखों को देख रही थीं; उन सब आंखों में उसी साहसमय ज्योति की आग्नेय चमक थी जिसे वह भली भांति जानती थी और जिसे वह बहुत प्यार करती थी।

पुलिसवालों ने उसे एक दरवाज़े के अंदर ढकेल दिया।

उसने झटका देकर अपनी एक बांह छुड़ा ली और दरवाज़े की चौखट पकड़ ली।

"सच्चाई को तो ख़ून की नदियों में भी नहीं डुबोया जा सकता..."

पुलिसवालों ने उसके हाथ पर ज़ोर से मारा।

"अरे बेवक़ूफ़ो, तुम जितना अत्याचार करोगे, हमारी नफ़रत उतनी ही बढ़ेगी! और एक दिन यह सब तुम्हारे सिर पर पहाड़ बनकर टूट पड़ेगा!"

एक पुलिसवाला उसकी गर्दन पकड़कर ज़ोर से उसका गला घोंटने लगा।

"कमबख़्तो..." मां ने सांस लेने का प्रयत्न करते हुए कहा। किसी इसके उत्तर में ज़ोर से रो पड़ी।

परिशिष्ट

"मां" उपन्यास के नायकों के गाढ़े समय में गोर्की अपने पाठकों से विदा ले लेते हैं। पावेल व्लासोव हज़ारों किलोमीटर की दूरी पर सदा के लिए साइबेरिया में निर्वासित किया जानेवाला है और उसकी मां पेलागेया निलोवना उस सूटकेस के साथ, जिसमें मुक़दमे के समय पावेल के भाषण के छपे हुए ग़ैरक़ानूनी पर्चे भरे थे, राजनीतिक पुलिसवालों के हत्थे चढ़ जाती है। वे उसका अपमान करते हैं, मारते-पीटते हैं, मगर वह इर्द-गिर्द जमा लोगों को जीवन की सच्चाई बताने का मौक़ा हाथ से नहीं जाने देती ... वह चिल्लाकर अपने जल्लादों से कहती है – "सच्चाई को तो ख़ून की नदियों में भी नहीं डुबोया जा सकता ... बेवक़ूफ़ो, तुम जितना अत्याचार करोगे, हमारी नफ़रत उतनी ही बढ़ेगी!"

गोर्की के उपन्यास के मुख्य पात्रों के मूल रूपों – प्योत्र ज़ालोमोव और उनकी मां आन्ना किरील्लोवना के साथ आगे क्या बीती?

प्योत्र ज़ालोमोव बहुत साल ज़िन्दा रहे और १६५५ में ७८ साल के वृद्ध होकर परलोक सिधारे। उनकी मां आन्ना किरील्लोवना ने भी काफ़ी लम्बी उम्र पायी। उनके बारे में गोर्की ने लिखा है – "सोर्मोवो में पहली मई के जुलूस के लिए १६०२ में सज़ा पानेवाले प्योत्र ज़ालोमोव की मां का ही रूप पेलागेया निलोवना थीं। वे गुप्त संगठन में काम करती थीं और भिक्षुणी के भेस में साहित्य ले जाती थीं ..."

आन्ना किरील्लोवना का जन्म १८४६ में एक मोची के घर में हुआ। उनकी ज़िन्दगी कठिन रही। पति की मृत्यु के बाद तो उन्हें ख़ास तौर पर बहुत बुरा वक़्त देखना पड़ा – उनके सात बच्चे थे ... वे "विधवा घर" के अंधेरे और ठंडे तहख़ाने में अपने बच्चों के साथ रहती थीं। मां की दृढ़ता और श्रमप्रियता ने ही परिवार को बचाया। बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते गये – कुछ काम करने लगे, कुछ पढ़ते रहे। प्योत्र क्रान्तिकारी मंडल में शामिल हो गये और "हमारे जीवन में ताज़गी और स्फूर्ति लानेवाली हवा का झोंका आया," प्योत्र की छोटी बहन वर्वारा ज़ालोमोवा ने स्मरण करते हुए बाद में कहा। जल्दी ही पूरा ज़ालोमोव-

परिवार क्रान्तिकारी आन्दोलन में हिस्सा लेने लगा।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद आन्ना किरील्लोवना अपने बच्चों के साथ रहीं – कभी तो छोटी बेटी के पास लेनिनग्राद में और कभी बेटों के पास सोर्मोवो में।

छोटा क़द, अत्यधिक सजीव आंखें और मधुर मुस्कान – ऐसी थीं यह बुजुर्ग महिला। अपने पके बालों पर वे अक्सर पुराने ढंग का लैसवाला काला रूमाल बांधे रहती थीं। लेनिनग्राद की उरीत्स्की फ़ैक्टरी की मज़दूरिनों, नीज्नी नोवगोरोद के स्कूली छात्रों, सोर्मोवो के मज़दूरों और उन सभी लोगों के मानस-पट पर आन्ना किरील्लोवना का ऐसा ही चित्र अंकित होकर रह गया है, जिन्होंने उन्हें देखा और सुना था। वे बहुत ही सीधे और सरल ढंग से अतीत की, अपने क्रान्तिकारी काम और बेटे की चर्चा किया करती थीं...

आन्ना किरील्लोवना का देहान्त १९३८ में हुआ।

तो आइये, अब प्योत्र ज़ालोमोव की ओर लौटें... ज़ारशाही अदालत की सज़ा के मुताबिक़ प्योत्र ज़ालोमोव को १९०३ में साइबेरिया के लिए रवाना कर दिया गया। एक साल तक पैदल चलने के बाद वह येनीसेई नदी पर पहुंचे और क्रास्नोयार्स्क से ३०० किलोमीटर के फ़ासले पर माक्लाकोव्का नाम की एक छोटी-सी बस्ती में रहने लगे... "निर्वासन में दो साल बिताये, स्थानीय किसानों में प्रचार करता रहा, ज़िले के मुंशी और उसके दो सहायकों को अपने विचारों से प्रभावित कर लिया। अलेक्सेई मक्सिमोविच गोर्की मुझे हर महीने जो आठ रूबल भेजते थे, उन्हें थानेदार हज़म कर जाता था। मैं भूखों मरता था और मुझे शीताद हो गया..." प्योत्र ज़ालोमोव ने अपने संस्मरणों में लिखा है।

१९०४ के मार्च महीने की धूप नहायी सुबह प्योत्र के जीवन का एक सुखद दिन लेकर आयी। वे अपने छोटे-से कमरे में स्की बना रहे थे। "दिल चैन और सम-गति से धड़क रहा था। अचानक दरवाज़ा खुला। हज़ारों किलोमीटर का फ़ासला तय करके जोज़ेफ़ीना मेरे यहां आयी थी। वह गिलहरी की फ़र का पुराना-सा कोट पहने थी और पाले से लाल हो रही थी।"

इन दो पेशेवर गुप्त क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं का प्रेम-मार्ग बड़ा कठिन रहा था। मास्कोवासिनी अध्यापिका जोज़ेफ़ीना (जो जाति की फ़ांसीसी थीं) के साथ प्योत्र का परिचय १९०१ में ही हो गया था। वे मज़दूरों की बैठकों, सभाओं में, नीज्नी नोवगोरोद की सड़कों पर मिलते,

मगर अपनी प्रणय-भावनाओं को छिपाये रहे। हां, प्योत्र ज़ालोमोव जब गिरफ़्तार होने के बाद बुतिर्स्कीया जेल में अपने भाग्य-निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब जोज़ेफ़ीना "मंगेतर" के रूप में आन्ना किरील्लोवना के साथ उनसे मिलने आयीं ...

गोर्की की मदद से ज़ालोमोव के साइबेरिया से भाग निकलने की व्यवस्था की गयी। वे पीटर्सबर्ग में गुप्त बोल्शेविक संगठन में काम करने लगे और १६०५ की क्रान्ति के समय उन्होंने मास्को के हथियारबंद मज़दूर दस्तों के संगठन में भाग लिया।

गोर्की के साथ प्योत्र ज़ालोमोव की पहली मुलाक़ात १६०५ की गर्मी में पीटर्सबर्ग के निकट कुओक्काला में गोर्की के देहाती बंगले पर हुई।

भावी उपन्यास के लेखक और भावी पावेल व्लासोव के मूल रूप कई साल से एक-दूसरे को जानते थे, मगर केवल पत्रों द्वारा ही। सोर्मोवो के मई दिवस के पहले ही गोर्की ने ज़ालोमोव से मिलना चाहा। किन्तु प्योत्र को डर था कि इससे गोर्की को हानि पहुंच सकती है, क्योंकि उनका नाम पुलिस की काली सूची में आ चुका था और उन्हें यह भी मालूम था कि राजनीतिक पुलिसवाले क्रान्तिकारी लेखक को बदनाम करने का कोई भी मौक़ा हाथ से नहीं जाने देंगे। प्रथम मई के जुलूस और उसके नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद गोर्की ने ज़ालोमोव और उनके साथियों की बड़ी देखभाल की। प्योत्र की मां आन्ना ज़ालोमोवा के द्वारा उन्होंने अपने नगर-भाइयों, नीज्नी नोवगोरोद के साथियों की मदद का वादा किया। गोर्की हर महीने उन्हें ख़र्च के लिए साइबेरिया पैसे भेजते रहे और जब उन्हें ज़ालोमोव की पारिवारिक चिन्ताओं का पता चला, तो दुगनी रक़म भेजने लगे। आख़िर वहां से भागने के लिए तीन सौ रूबल भेजे।

तो निर्वासित ज़ालोमोव भागकर पीटर्सबर्ग आ गये। पहली बार गोर्की से मिलने पहुंचे।

इस ख़्याल से कि कोई जासूस पीछे न लग जाये, वह स्टेशन तक न जाकर पहले ही गाड़ी से उतरकर जंगल में चले गये। बंगले के फाटक के पास रुके और आंगन में उन्हें चित्रों द्वारा अच्छी तरह जाना-पहचाना लम्बा, दुबला-पतला व्यक्ति दिखायी दिया।

"अलेक्सेई मक्सिमोविच!.." प्योत्र ने उन्हें सम्बोधित किया और अपना नाम बताया।

गोर्की मुस्कराते हुए उनकी ओर बढ़े। नगर-भाई गले मिले। गोर्की ने खुश होते हुए ज़ालोमोव को सिर से पांव तक ग़ौर से देखकर कहा – "तो ऐसे हैं आप!"

कुछ देर बाद दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठ गये और विस्तार-पूर्वक बातचीत शुरू हुई। गोर्की ने लेखक की व्यावसायिक कुशलता के अनुरूप प्योत्र से उनके जीवन, माता-पिता, क्रान्तिकारी काम और सोर्मोवो के जुलूस के बारे में पूछ-ताछ शुरू की। मज़दूर प्रचारक ने कामकाजी ढंग से तथ्य बताये, अपनी मनःस्थिति की बहुत कम चर्चा की और सपनों का तो उल्लेख ही नहीं किया। यह भेंट बहुत ही मधुर और स्नेहपूर्ण रही और उन्होंने भावी मुलाक़ातों के बारे में तय किया। इन्हीं दिनों गोर्की ने अपने एक मित्र को प्योत्र के बारे में यह लिखा – "मेरे यहां एक सोर्मोवोवासी आता है। कैसा कमाल का है वह नौजवान!"

प्योत्र ने एक के बाद एक, पार्टी के कई उत्तरदायित्वपूर्ण काम पूरे किये। "मुझे मास्को में हथियारबंद मज़दूर दस्तों का संगठनकर्त्ता नियुक्त किया गया। मास्को के सशस्त्र विद्रोह के आरम्भ होने से कुछ पहले अपनी पत्नी जोज़ेफ़ीना एडुआर्डोव्ना के साथ मिलकर, जो दस महीने की बेटी लिये हुए साइबेरिया से मेरे पास आयी थी, बमों के खोल बनाता रहा... विद्रोह के समय मोर्चेबन्दियों की लड़ाइयों में भाग लिया। १९०६ की गर्मियों के बीच मुंह से खून आने और पूरी तरह शक्तिहीन हो जाने के कारण गुप्त काम छोड़ना पड़ा।"

गुप्त काम छोड़ने पर ज़ालोमोव राजधानी से चले गये। नीज्नी नोवगोरोद के कारीगर प्योत्र ज़ालोमोव अपने परिवार के साथ कूर्स्क गुबेर्निया के छोटे-से सूद्ज नगर में जा बसे। सूद्ज का जीवन प्योत्र के लिए वास्तव में दूसरा निर्वासन ही हो गया। उन्हें शहर से बाहर जाने और कहीं भी काम करने की इजाज़त नहीं थी। पुलिस उनकी हर गतिविधि पर कड़ी नज़र रखती थी। फ़ाक़ों, जेलों और निर्वासन से जर्जर ज़ालोमोव का स्वास्थ्य इन वर्षों के दौरान और बिगड़ गया। पत्नी जोज़ेफ़ीना एडुआर्डोवना सूद्ज के हाई-स्कूल में अध्यापिका हो गयी थीं और उन्हीं के वेतन से परिवार का खर्च चलता था। इस वक़्त के बारे में खुद ज़ालोमोव ने यह लिखा है – "१९१७ की फ़रवरी क्रान्ति तक मुझ पर जासूसों और राजनीतिक पुलिसवालों की गुप्त कड़ी नज़र रही अलग-अलग किसानों के बीच ही काम कर पाया।"

१९१७ की फ़रवरी क्रान्ति आयी और उसके पीछे अक्तूबर क्रान्ति

की गूंज सुनायी दे रही थी। सोर्मोवो के ध्वजवाहक, साहसी क्रान्तिकारी फिर से संघर्ष-क्षेत्र में आ डटे। पहली आम सभा में ही ज़ालोमोव ने ज़ोरदार भाषण दिया, सभा में एकत्रित किसानों और मज़दूरों को पीटर्सबर्ग की घटनाओं का सार स्पष्ट किया।

अपने भाई अलेक्सान्द्र के नाम लिखे गये एक पत्र में प्योत्र ज़ालोमोव ने क्रान्ति और गृह-युद्ध के वर्षों में अपने जीवन का सजीव वर्णन यों किया है – " ... १६१७ में मैंने ज़िले में सोवियत सत्ता की स्थापना में हिस्सा लिया ... जल्दी ही श्रम-कमिसार चुन लिया गया।

"सूद्ज पर सफ़ेद गार्डों के क़ब्ज़े के वक़्त उन्होंने कई बार मुझे सूली देनी चाही, मगर तीन बार मैं बच निकलने में कामयाब हो गया। आख़िरी बार देनीकिनवालों ने मुझे गिरफ़्तार किया और फ़ौजी अदालत में मुझ पर मुक़द्दमा चलाया गया। जेलर मेरी खिल्ली उड़ाते थे और लगभग हर दिन मुझे सूली देने या गोली से उड़ाने की धमकी देते थे ... अगर लाल सेना न आ जाती तो वे अपने निर्णय को अमली शक्ल दे भी देते।"

लाल सेना ने ज़ालोमोव को मौत से बचाया। मगर शरीर बिल्कुल जवाब दे गया था – डटकर इलाज कराने की ज़रूरत थी। ज़ालोमोव मास्को गये और देर तक अस्पताल में रहे। जिस्म में कुछ जान आयी, पुराने मैत्री-सम्बन्ध बहाल हुए (प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, लेनिनवादी ग्लेब क्रजिजानोव्स्की के परिवार के साथ) और गोर्की के नायक के जीवन ने नया मोड़ लिया।

जन्मजात प्रचारक प्योत्र ज़ालोमोव ने किसानों में बहुत प्रचार-कार्य किया – वे उन्हें समाचारपत्र पढ़कर सुनाते, देहातों में लोगों को सोवियत सत्ता की नीति, सरकार की नयी आज्ञप्तियां और निर्णय सीधे-सादे और साफ़ ढंग से समझाते।

जब सामूहिक फ़ार्मों का आन्दोलन शुरू हुआ, तो प्योत्र ने सूद्ज के किसानों का "लाल अक्तूबर" फ़ार्म संगठित किया। कई साल तक वे उसके अध्यक्ष और बाद में प्रबन्ध-समिति के सदस्य रहे।

सख़्त और जानलेवा बीमारी और डाक्टरों की मनाही के बावजूद प्योत्र ज़ालोमोव काम करते रहे। उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी जवानी और गोर्की से मुलाक़ातों के संस्मरण लिखे, गोर्की के "मां" उपन्यास के पाठकों के साथ बड़ा पत्र-व्यवहार करते रहे। अपने मित्रों – क्रजिजा-नोव्स्की परिवारवालों – को एक पत्र में ज़ालोमोव ने अपना जीवन-

दृष्टिकोण यों व्यक्त किया था – "मेरे ख़्याल में तो दास वह है जो अपने दयनीय जीवन को बदलने के लिए छटपटाता नहीं; जो आज़ादी के लिए संघर्ष करने का फ़ैसला कर लेता है, वह आज़ाद व्यक्ति हो जाता है, चाहे उसके हाथों में हथकड़ियां ही क्यों न पड़ी हों। मैं चाहता हूं कि दास न हों, दास मुझे पसन्द नहीं हैं, संघर्षकर्त्ता, ऐसे लोग ही मुझे अच्छे लगते हैं जिनमें स्वतंत्र व्यक्ति का दम-ख़म है।"

प्योत्र ज़ालोमोव क्रान्ति के साधारण सैनिक थे। अपने समय में उन्होंने गोर्की का मन मोह लिया था और उनकी दृढ़ता, उनकी नैतिक निर्मलता आज हमें भी मुग्ध कर लेती है। उनके व्यक्तित्व, उनके जीवन और भाग्य में बीसवीं सदी के सजग रूसी मज़दूर क्रान्तिकारी के श्रेष्ठ गुण प्रतिबिम्बित हुए हैं।

पाठकों से

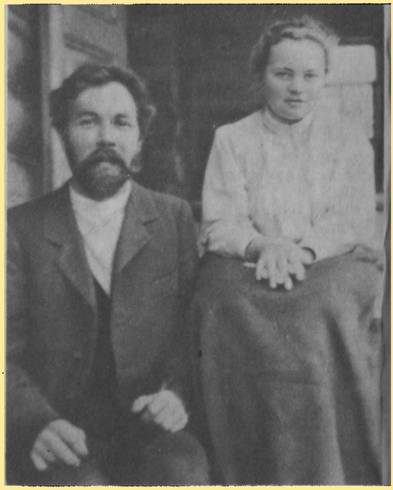
राडुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

राडुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

Максим Горький.
МАТЬ
На языке хинди.



आन्ना किरील्लोवना ज़ालोमोवा, जिन्हें म० गोर्की ने अपने "मां" उपन्यास की नायिका पेलागेया निलोवना व्लासोवा के रूप में ढाला है।



प्योत्र ज़ालोमोव और उनकी पत्नी जोज़े-फ़ीना। प्योत्र ज़ालोमोव ही "मां" उपन्यास के नायक पावेल व्लासोव के मूल रूप थे।

गोर्की को मैं प्रतिभाशाली और यूरोप के प्रतिष्ठित लेखक के रूप में ही नहीं, बल्कि समझदार, दयालु और प्रिय व्यक्ति के रूप में ज़ाती तौर पर जानता और प्यार करता हूं।

लेव तोलस्तोय की डायरी से

गोर्की जैसा व्यक्ति तो सारी दुनिया की थाती है।

अनातोल फ़्रांस

नयी साहित्य-ध्वजा पर गोर्की का दिल अंकित है और इस दिल में विश्व-शान्ति की कामना है।

कृष्ण चन्द्र

"निलोवना वास्तव में थी या नहीं? क्रान्ति की तैयारी, गुप्त कार्य में मांएं भी हिस्सा लेती थीं... निलोवना प्योत्र ज़ालोमोव की मां का ही प्रारूप है। वह गुप्त संगठन में काम करती थी, तीर्थयात्री के भेस में साहित्य ले जाती थी... वह अपने ढंग की अकेली नारी नहीं थी।"

"पावेल व्लासोव भी कोई दुर्लभ पात्र नहीं है। ऐसे ही नौजवानों ने तो बोल्शेविक पार्टी की स्थापना की थी।"

म० गोर्की

ISBN 5-05-00062